प्रकाशक,

विहारीलाल कठनेरा

प्रोप्राईटर—हिन्दी जैनसाहित्यप्रसारक कार्यालय;

हीराबाग पो० गिरगाँव–बम्बई।

मुद्रक,

गणेश नारायण कुलकर्णी

[illegible]

निवेदन ।

यह महान् ग्रंथ हमने स्व० पंडित-प्रवर टोडरमलजीकृत भाषा-वचनिका सहित ही छपाय
है । संस्कृत टीका इसमें इस लिए नहीं दी कि यह 'माणिकचन्द्र ग्रंथमाला'में मूलसहित छप चुकी
है । कुछ लोगोंकी राय है कि पुरानी भाषाके ग्रंथ वर्तमान हिन्दीमें परिवर्तित कर दिये जाने चाहिये;
परन्तु हमें भाषाकारके गौरवकी रक्षा करना इष्ट था; अतएव हमने उसका परिवर्तन कराना उचित
नहीं समझा ।

हमारी बड़ी इच्छा थी कि इसके यंत्र-भागको ग्रंथके साथ ही लगा दिया जाता; परन्तु कुछ
ऐसे कारण उपस्थित हो गये जिनसे तत्काल यंत्रोंका तैयार करवाना कठिन हो गया । यंत्रोंके
तैयार करानेमें कुछ विलम्ब अवश्य होगा; परन्तु तैयार होते ही उन्हें हम सब ग्राहकोंके पास पोष्ट
द्वारा भेज देंगे । हम उन सज्जनोंसे प्रार्थना करते हैं कि जिन जिनके पास यह ग्रंथ पहुँचे वे एक
कार्ड द्वारा अपना पता लिख भेजनेकी कृपा करें ।

इसका सम्पादन तथा संशोधन-कार्य श्रीयुत पं० मनोहरलालजी शास्त्रीने किया है । हमें
जहाँ तक विश्वास है पंडितजीने अपनी जिम्मेवरीका ध्यान रख कर ही इस कार्यका सम्पादन
किया है; और इस लिए दृष्टि दोषकी साधारण भूलोंको छोड़ कर सैद्धान्तिक भूलोंका रहना बहुत
कम संभव है । अतःपर भी कोई भूल रह गई हो तो उसका संशोधन कर हमें भी उसकी सूचना
देनेकी कृपा करें; जिससे दूसरी आवृत्तिमें उसके संशोधनका ध्यान रक्खा जाये ।

उदयलाल काशलीवाल

हमारी छपाई पुस्तकें ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—स्व० पं० सदासुखजीकृत भाषाटीकासहित। श्रावकाचारसम्बन्धी भा-के जितने ग्रंथ इस समय मिलते हैं, उन सबसे यह बहुत बड़ा ग्रन्थ है। यह मुले पत्रोंमें, बड़े टाइपमें बड़ी सुन्दरतासे छपाया गया है। पृष्ठ संख्या ५७५ के लगभग है। मूल्य पाँच रुपया।

पुण्यास्रव—इसमें मनोरंजक और धार्मिक भावोंसे परिपूर्ण कोई ५६ छोटी मोटी कथायें हैं। इसे यह दूसरी बार छपाया है। पृष्ठसंख्या ३४० के लगभग। मूल्य तीन रुपया।

भक्तामर कथा—(मंत्र-यंत्र-सहित) यह ग्रन्थ स्वर्गीय ब्रह्मचारी रायमल्लके बनाये भक्तामरके आधार बड़ी सीधी-साधी हिन्दी-भाषामें छपाया गया है। अन्तमें मंत्र, ऋद्धि और उनकी साधनविधि तथा तालीस यंत्र भी दिये गये हैं। मूल्य कपड़ेकी जिल्दका एक रुपया छह आने, सादी जिल्दका एक रुपया।

चन्द्रप्रभचरित—महाकवि—श्रीवीरनन्दी आचार्यकृत, संस्कृत जैन काव्योंमें यह उच्च कोटीका काव्य इसमें आठवें तीर्थंकर श्रीचंद्रप्रभ भगवानका पवित्र चरित वर्णन किया गया है। मूल्य कपड़ेकी जिल्द रुपया; सादी जिल्द एक रुपया।

नेमिपुराण—यह ब्रह्मचारी नेमिदत्तके संस्कृत नेमिपुराणका हिन्दी अनुवाद है। इसमें बाईसवें तीर्थंकर नाथ भगवानका पवित्र चरित है। मूल्य कपड़ेकी जिल्द सवा दो रुपया, सादी जिल्द दो रुपया।

सम्यक्त्वकौमुदी—यह भी कथाका एक सुन्दर ग्रन्थ है। इसमें सम्यक्त्वके प्राप्त करनेवाले, राजा तोदय, सुयोधन, अर्हद्दास, चन्दनश्री, विष्णुश्री, नागश्री, पद्मलता, कनकलता और विद्युल्लताकी आठ यें हैं। मूल्य कपड़ेकी जि० एक रुपया छः आने, सादी जि० एक रुपया दो आने।

सुदर्शनचरित—यह सकलकीर्तिकृत संस्कृत सुदर्शन चरितका हिन्दी अनुवाद है। सुदर्शन बड़ा -निश्चयी था, कामी स्त्रियोंने उसके साथ अनेक प्रकारकी बुरी चेष्टायें कीं उसे शीलधर्मसे गिरानेका खूब ही ल किया परंतु सुदर्शन अपने शीलधर्म पर सुमेरुसा अचल-अडिग बना रहा। मूल्य नौ आने।

नागकुमारचरित—षट्भाषा कवि चक्रवर्ती मल्लिषेण सूरिके संस्कृत ग्रंथका अनुवाद। मूल्य छः आने।

यशोधरचरित। महाकवि वादिराज सूरिके एक सुन्दर संस्कृतकाव्यका हिन्दी अनुवाद। इसमें शोधरका सुन्दर चरित वर्णन किया गया है। पुस्तक करुण रससे भरी हुई है। पढ़ते पढ़ते हृदय भर ता है। मूल्य मात्र चार आना।

पवनदूत (काव्य) *कालिदासके मेघदूतके समान रचा गया है, हिन्दी भाषामें है।* कीमत चार आना।

श्रेणिकचरितसार। ब्रह्मचारी नेमिदत्तके संस्कृत श्रेणिककथासारका यह अनुवाद है। मूल्य तीन आने।

अकलंकचरित। इसमें अकलंक-स्तोत्र और उसका भावार्थ तथा हिन्दी पद्यानुवाद भी शामिल कर या है। मूल्य तीन आने।

सुकुमालचरितसार। इसके बनानेवाले ब्रह्मचारी नेमिदत्त हैं। उन्हींके ग्रन्थका यह अनुवाद है। ल्य डेढ़ आना।

पंचास्तिकाय-समयसार। मूलग्रन्थके बनानेवाले भगवान कुन्दकुन्दाचार्य हैं। उस पर स्व० पं० रानन्दजीने दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया आदिमें छन्दोबद्ध टीका लिखी है। कीमत एक रुपया।

चौरासटाणा-चर्चा—यह गोम्मटसारके आधार पर लिखी गई है। इसमें चौबीस दण्डक भी शामिल र दिये हैं। मूल्य आठ आने।

छहढाला—(सार्थ) स्व० पं० दौलत रामजी कृत। अ० शीतलप्रसादजीकृत अर्थसहित है। तीन आने।

नियमपोथी—इसे भी ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने संग्रह किया है। मूल्य आधा आना।

हिन्दी भक्तामर—यह संस्कृत भक्तामरका सरल बोलीकी कवितामें सुन्दर अनुवाद है। मूल्य सवा आना।

हिन्दी कल्याणमन्दिर। भक्तामरके समान यह भी सरल बोलीकी कवितामें संस्कृत कल्याण मंदिरका द है। मूल्य एक आना।

कर्मदहन-विधान। इसमें कर्मदहन पूजा आदि सब छपे हैं। मूल्य पाँच आने।

भाषाटीकाकार पंडितवर
टोडरमल्लजी लिखित

भूमिका

इस शास्त्रकी संस्कृत टीका पूर्व भई है तथापि तहां संस्कृत गणितादिकका ज्ञानविना प्रवेश होइ सकता नाहीं। तातैं स्तोक ज्ञानवालोंके निलोकके स्वरूपका ज्ञान होनेके अर्थि तिसही अर्थकों भाषा करि लिखिए है। याविषैं मेरा कर्तव्य इतना ही है जो क्षयोपशमके अनुसारि तिस शास्त्रका अर्थकों जानि धर्मानुरागतैं औरनिके जाननेके अर्थि जैसैं कोऊ मुखतैं अक्षर उचारि करि देशभाषारूप व्याख्यान करै तैसैं मैं हस्ततैं अक्षरनिकी स्थापना करि लिखौंगा। बहुरि छंदनिका जोडना नवीन युक्ति अलंकारादिकका प्रगट करना इत्यादि नवीन ग्रंथकारकनिके कार्य हैं तेसो मोतैं बनैं ही नाहीं। तातैं ग्रंथका कर्तापना मोहैं है नाहीं। इहां कोऊ कहै तुम तौ अमूर्तीक आत्मा हो तुम करि लिखनेका कार्य कैसैं बनैगा। ताका समाधान। मैं जु हौं आत्मद्रव्य सो अनंत गुण पर्यायनिका पुंज हौं तिनि विषैं श्रुतज्ञान अर धर्मानुराग अर शक्तिपना इन मेरे पर्यायनिके निमित्ततैं लिखनेरूप कार्य बनै है। तातैं कारणविषै कार्यका उपचार करि मैं लिखौंगा। ऐसा व्यवहार मात्र वचन जानना। निश्चय विचारतैं मैं मेरे ज्ञानादि भावनिहीका कर्ता हौं। लिखनेका कर्ता मैं नाहीं हौं। बहुरि प्रश्न। इनके निमित्त नैमित्तिक संबंध कैसे होइ है सो कहो? तहां कहिए है। मेरा ज्ञान स्वभाव है सो ज्ञानावरणके निमित्ततैं हीन होइ मतिश्रुत पर्यायरूप भया है। तहां मतिज्ञान करि शास्त्रके अक्षरनिका जानना भया। बहुरि मोहके उदयतैं मेरे औपाधिक भाव रागादिक पाईए है। तहां प्रशस्तराग करि मेरे ऐसी इच्छा भई जो शास्त्रका अर्थ भाषारूप अक्षरनि करी लिखिए सो इस क्षेत्रकालविषै मंद बुद्धि घने हैं तिनका भी कल्याण होइ। अर इस कार्यकौं करतैं अप्रशस्त भावके अभाव करि किछू धर्म प्राप्ति होनेतैं मेरा भी कल्यान होइ। तातैं जैसे ताका लिखना बनैं सो करना। बहुरि प्रदेशनिकौं चलावनेरूप शक्तिपना मेरे पाईए है। तहां तिस इच्छाके वशतैं जैसैं तिस कार्यकी सिद्धि होइ। तैसैं मैं मेरे प्रदेशनिकौं चलत करौं हौं। ऐसैं इतने पर्याय तौ मेरे होइ है। बहुरि पुद्गल द्रव्य भी सक्रिय है। अर शरीर है सो पुद्गलवर्गणानिका पिंड है। अर नामकर्मके निमित्ततैं शरीरके अर मेरे एक बंधान है। तातैं मेरे प्रदेश चंचल होनेतैं तिनकी साथि हस्तादिक शरीरके अंग भी चंचल हो है। बहुरो हस्तादि अंगकी [illegible] पुद्गल स्कंध है ते अन्य क्षेत्र लिये जाय तिसे विलक्षण होइ प्रवर्तैं। तब अक्षरनिका आकार पर्याय विषै स्थापन हो है। ऐसे यह निमित्त [illegible]

ताका उत्तर—जो अर्थ प्रत्यक्ष अनुमान गोचर होइ ताकों तौ प्रत्यक्ष अनुमान करि प्रमाण करना। बहुरि जो प्रत्यक्ष अनुमानतैं अगोचर होइ ताकों आगम प्रमाण करि मानना। कोऊ कहै है कि अन्यमतके आगम अप्रमाण तुम्हारा आगम प्रमाण ऐसा कैसैं मानिए? ताका उत्तर। आगम विषैं केई अर्थ प्रत्यक्ष अनुमान गोचर हैं केई अगोचर हैं। तहां प्रत्यक्ष अनुमान गोचर अर्थ करि आगमकी परीक्षा करनी। जिस मतके आगम विषैं प्रत्यक्ष अनुमान गोचर ही अर्थ विरुद्ध भासै तौ तिसका कह्या अगोचर अर्थ कैसैं प्रमाण करिए। अर जिस मतका आगम विषैं प्रत्यक्ष अनुमान गोचर अर्थ सत्य ही कहै भासै तौ तिसका कह्या अगोचर अर्थ भी सत्य ही होसी। सो ऐसैं परीक्षा कीएं अन्यमतके आगम अप्रमाण जैनमतके प्रमाण प्रतिभासैं हैं। सो यहु शास्त्र जैनमतका आगम है तातैं प्रमाण है। या प्रकार इस शास्त्रकों फलदायक जानि वक्ता श्रोताका लक्षण युक्त होइ बांचो सुनो अर प्रमाणीक जानि याका श्रद्धान करो। याके अभ्यासतैं तत्त्व श्रद्धानी होइ तत्त्वज्ञानकों बधाइ रागादिककों घटाइ मोक्षमार्गी होऊ। बहुरि तिस साधनतैं तुम्हारें निरुपाधि आत्मस्वभावकी सिद्धि है लक्षण जाका ऐसा सिद्ध अवस्था प्रगट होऊ।

त्रिलोकसारकी विषयसूची ।

विषय	पृष्ठ.
लोकसामान्याधिकार ॥ १ ॥	
मूल ग्रन्थविषै मंगलाचरण करि	१
तहां पंच अधिकारनिकी सूचना करि... ...	४
सर्व आकाशादिविषै लोकावस्थानका वर्णन करि लोकका स्वरूप आकार	५
तहां प्रसंग पाइ राजू आदिका वर्णन	६
प्रमाणका वर्णन है तहां ताके लौकिक अलौकिक भेदनिके भेद कहि	७
अलौकिक मानविषै संख्यामानके जघन्य संख्यातादिक इक्कीस भेदनिका वर्णन	८
तहां जघन्य परीत असंख्यातका स्थापनेकौं कुंडनिका क्षेत्रफल	९
तहां शलाकाका प्रमाण कहनेकौं सात क्षेत्रफल...	११
सूची क्षेत्रफलशलाकानिका भेद इत्यादिकौं कारण करणसूत्र	१३
श्रुत ज्ञानादिकके विषयनिका प्रमाणका वर्णन...	२१
संख्यामानके विशेष लीएं सर्वधारा आदि चौदह धारानिका वर्णन। तहां तिनके स्थाननिका अनुक्रमका अर जिस धाराका स्थानविषै जाका प्रमाण आवै ताका अर सर्व स्थाननिके प्रमाण वर्णन	२४
तिन विषै द्विरूप वर्ग आदि तीन धारा है तिनके स्थाननिका विशेष वर्णन है	११
तहां द्विरूप वर्गधाराका कथनके अनंतरि अर्द्धछेद वर्ग शलाका जाननेके करण सूत्र	१५
अर द्विरूप घनाघन धारा विषै अभिकायिक जीवनिका प्रमाण विशेष करि कह्या है	१८
उपमा मानके पल्यादिक आठ भेदनिका वर्णन ...	४२
तहां पल्यके रोमनिकी संख्या जाननेकौं सूत्र सात पाल करनेके करण सूत्रका अर रोम अंगुलादिकका प्रमाणकी उत्पत्तिका अनुक्रमका वर्णन है	४१
अक्षर संदृष्टि अंक जाननेका उपदेश सूत्र आया विषै कह्या है।	४५
सागरोपमकूं सार्थक कहनेके अर्थि लवण समुद्रका क्षेत्र फलादिकका वर्णन है।	४७
सूच्यंगुलादिकका वर्णन है।	४९
पल्यादिकनी वर्ग शलाका अर अर्द्धछेदके प्रमाणका वर्णन। तहां तिनके जाननेकौं वा प्रास-	

विषय.	पृष्ठ.
पिक अर्द्धछेदादिके विधानके जाननेकौं करण सूत्र कहे है।	५१
लोकके स्थानादिकका अर जहां जितना व्यास पाईए ताका वर्णन	५१
अधोलोकका आठ प्रकार करि ऊर्द्ध लोकका पांच प्रकार करि क्षेत्रफलका वर्णन है	५५
तहां चतुरस्रादि क्षेत्रके क्षेत्रफल करनेका विधान वर्णन है	५६
बहुरि लोकका परिधिका वर्णन है तहां करणादिक जाननेके करण सूत्र है	६१
बहुरि वातवलयनिका वर्णन है। तहां तिनके वर्णादिकका अर तिनकी जहां जैसी मुटाई है ताका अर इनकरि जेता क्षेत्र रोक्या है ताका वर्णन है	६१
बहुरि तनुवातवलयमें सिद्ध विराजे हैं तिनकी अवगाहनाका वर्णन है...	७१
बहुरि त्रसनालीके स्वरूप स्थान प्रमाणादिका वर्णन	७२
बहुरि ताके अधो भागविषै सात पृथ्वी हैं तिनके नामका	७३
अर तहां पहली पृथ्वी विषै तीन भाग हैं तिनके नाम अर मुटाईके प्रमाणका अर पहला भाग विषै सोलह पृथ्वी हैं तिनके नामका अर तीनों भागनि विषै जे बसै हैं तिनका अर छह पृथ्वीनिकी मोटाईका वर्णन है...	७४
बहुरि पहली पृथ्वीका तृतीय भाग अर छह नीचली पृथ्वीनि विषै नारकनिके बिल हैं। तहां तिन पृथ्वीनि विषै पटलनिकी वा बिलनिकी वा तहां तीन उष्ण बिलनिकी वा इन्द्रकादिक बिलनिकी संख्याका वर्णन है	७५
बहुरि इन्द्रक बिलनिके अर तिनके समीप श्रेणीबद्ध हैं तिनके नामका वर्णन है	७७
बहुरि श्रेणीबद्धनिकी संख्या स्थापनेका विधान है। तहां समान चयकरि बधता गच्छका जोड़ देनेका वा पृथ्वीनि विषै इन्द्रकनिकी संख्या स्थापनेका कारण सूत्र कहे है	८०
बहुरि प्रकीर्णकनिकी संख्याका वर्णन है। बहुरि बिलनिका विस्तार अर बाहुल्य अर अंतरालका वर्णन है।	८१

विषय.	पृष्ठ.
बहुरि पृथ्वीनिका अंत आदि पटलनिका अंतराल अरविलनिका निर्यक अंतराल अर आकाराद्दिक तिनका वर्णन है	८५
बहुरि तहां दुर्गंधताका अर उपजनेके स्थानका अर तिन स्थाननिके प्रमाणका अर उपजनेका स्वरूपका अर तहांते पडि उछलनेके प्रमाणका अर नवीन पुराण नारकीनिका कर्तव्यका अर तिन विलनि विषैं क्रूर पर्वत नदी आदि पाइए है तिनका अर तहां नारकीनिकी प्रवर्तिका अर बाह्य दुःख साधनका अर तिनके दुःखका अर तिनके आहारादिकका अर तीर्थंकर सत्त्ववालाकैं तहां जब दुःख निवारण हो है ताका अर नारकीनके मरणका वा दुःख मेटनिका वर्णन है।	८७
बहुरि पृथ्वी प्रति वा तिनके पटल पटल प्रति नारकीनका जघन्य उत्कृष्ट आयुका अर शरीरकी उचाईका वर्णन है।	९३
बहुरि नारकीनके अवधि क्षेत्रका अर नारकी निकलि जहां उपजै अर जे पद न पावै ताका अर जे जीव जिस पृथ्वी ताईं उपजै ताका अर तिनके दुःखकी अधिकताका वर्णन है ...	९६
ऐसैं नरक वर्णन करि लोकका सामान्य वर्णन समाप्त कीया है।	९८
भवनाधिकार ॥ २॥	
तहां मंगल करि भवनवासीनिके कुल भेदनिके नामका अर तिनके इंद्रनिके नामका अर परस्पर ईर्षा जिनकैं है ताका अर असुरादिकनिके जे चिन्ह हैं तिनका अर चैत्यवृक्षनिके भेदनिका वा तहां प्रतिमा मानस्तंभादिकका अर तिनके भवननिकी संख्याका व स्वरूपका व स्थानका वर्णन है।	९९
बहुरि देवनिके इंद्रादिक दश भेद हैं तिनका अर तिनके संभवनेका वर्णन है। बहुरि भवनवासीनिविषैं इंद्रादिक दशभेद पाइए है तिनकी संख्यादिकका वर्णन है।	१०१
तहां सेनाकी संख्या स्थापनेकौं गुणकारका जो प्रमाण तिनके जोर देनेका करणसूत्र कह्या है।	१०६
बहुरि इंद्रनिके वा अन्य देवनिका प्रमाणादिका वर्णन है।	१०९

विषय.	पृष्ठ.
बहुरि भवन वासी व्यंतरनिका आयुका [illegible]	१११
बहुरि भवनवासीनिके कुलभेदनिविषैं अर तिनकी देवी अर तिनके अंगरक्षादिक तिनके अनुक्रम विशेष कह्या है।	
अर तिन कुलनिविषैं उपजने आकारका अनुक्रम अर तिनके शरीरकी उचाईका वर्णन है। ...	११४
व्यंतरलोकका अधिकार ॥ ३॥	
तहां तिनकर प्रमाण करि गर्भित मंगल करि तिनके कुलनिका अर तिन कुल भेदनि विषैं वर्णन अर चैत्य वृक्षकर अर तहां प्रतिमा मानस्तंभादिक वर्णन है।	११
बहुरि तिनके कुल भेदनि विषैं भेद पाइए है तिनका अर कुलनिके इंद्र हैं तिनकी देवीनिके प्रमाणका अर कुलभेदनिविषैं भेद हैं अर तिन विषैं जे इंद्र अर इंद्रनिकी महादेवी हैं तिनके नामका वर्णन है।	११
बहुरि इंद्रनिके जुदे नाम कहि तिनके गणिका महत्तरी हैं तिनके नामका अर सामानिकादि देवनिकी संख्याका तहां अनीकके विशेषका वर्णन है	११६
बहुरि इंद्रनिके नगरनिका स्थान नाम आयामका अर तिनके कोटादिकका वर्णन है। ...	१११
अर गणिकानिके नगरनिका अर कुल भेद अपेक्षा स्थाननिका वर्णन है।	१२१
बहुरि नीचोपपादादि वान व्यंतरनिका स्थान नाम आयुका वर्णन है।	१२१
बहुरि व्यंतरनिके रहनेके निलय तिनके भेदका अर व्यंतरनिके सर्व क्षेत्रका अर ते निलय जैसे पाइए है ताका अर निलयनिके व्यासादिकका वा स्वरूपका अर व्यंतरनिके आहार उश्वासका वर्णन है।	१२१
ऐसैं द्वितीय अधिकार समाप्त हो है। ...	१२६
ज्योतिर्लोकाधिकार ॥ ४॥	
तहां ज्योतिष्क विमाननिका प्रमाण गर्भित मंगल करि ज्योतिष्कनिके पंच भेद कहि प्रसंग पाइ तिनके आधार भूत केते इक द्वीप समुद्रनिके नाम कहि सर्व द्वीपसमुद्रनिके वलयव्यास सूचीव्यास व्यावनेके विधान वा प्रमाणका अर तिनका बादर सूक्ष्म परिधि अर बादर सूक्ष्म	

विषय.	पृष्ठ.
क्षेत्रफल स्यावनेका विधान प्रमाणादिकका वा जंबूद्वीप समान औरनिके खंड प्रमाण स्यावनेके विधानका वा समुद्रनिके रसादिक विशेषका अर तिनि विषैं भोगभूमि कर्मभूमि क्षेत्रके विधानका अर कर्म भूमिविषैं उत्कृष्ट अवगाहना लीएं एकेंद्रियादिक जीवनिके प्रमाणादिकका इत्यादि वर्णन है।	१२७
बहुरि प्रसंग पाइ पृथ्वीकायादिकका आयु वा पेदनिका वर्णन है। ऐसैं प्रासंगिक वर्णन है। ...	११७
ऐसैं प्रासंगिक वर्णन करि ज्योतिष्कनिका स्थानका अर तारानिका अंतरालका अर विंबनिके स्वरूपका अर चौडाई मोडाईके प्रमाणका अर किरणनिके प्रमाणका चंद्रमासी वृद्धिहानि होनेके विशेषका विंबनिके चलावने वाले देवनिके प्रमाणका गमन करनेके विशेषका जंबूद्वीपादि विषैं तिनके प्रमाणका वर्णन है।	१४१
तहां प्रसंग पाइ राजूके अर्द्धछेद पडनेके स्थान कहि सर्व ज्योतिष्कनिका प्रमाणका वर्णन है...	१४९
बहुरि एकचन्द्रमाके परिवारका प्रमाणका अठ्यासीग्रहनिका नामका जंबूद्वीपके तारानिके प्रमाणका चन्द्रमा सूर्यका अंतराल वा क्षेत्रका अर दिन रात्रिके प्रमाण स्यावनेके विधानका तहां ताप तम फैलनेका वा सूर्य दीखनेका इत्यादि अनेक वर्णन है।	१५८
बहुरि चन्द्रमा सूर्य ग्रहनिके नक्षत्र भुक्ति स्यावनेका विधान अर अयन विथि आगादिकका विधान	१८३
अर नक्षत्रनिके तारा आकारादिक तिनका वर्णन है	२०२
बहुरि चंद्रमादिकके आयुका अर देवीनिका वर्णन है	२०३
बहुरि भवनत्रिक विषैं उपजनेवाले जीवनिका वर्णन है ऐसैं तृतीय अधिकार समाप्त हो है ...	२०४

वैमानिक लोकका वर्णन ॥ ५ ॥

विषय.	पृष्ठ.
तहां मंगल करि स्वर्गादिकके नाम वा स्थान अर तहां विमाननिकी संख्या वा नाम स्थान वा तिनका विस्तारादिकका प्रमाण वर्ण आकार अर इन्द्रनिका स्थान वा भेद अर इन्द्रनिका नगर आवासादिक अर इन्द्रनिके सामन्तादि देवनिका प्रमाण अर नगर विषैं स्वभाव भेद अर इत्यादिकका देवी आदिका प्रवीचारादिक अर देवनिका आस्थान सभा अवस्थानादिक अर इंद्र व देवांगनाके उपजनेके स्थान अर वैमानिकनिके प्रवीचार विक्रिया अवधिज्ञान अंतराल अर तहां उपजनेवाले जीव अर तिनका आयु। अर लौकांतिक देवनिका स्थान कुलादिक अर देवीनिका आयु देवनिके शरीर उश्वास आहारादिकका प्रमाण अर स्वर्ग जाने आवनेवाले जीव एका भवतारी जीव वाला पुरुषनिकी आगामी देवनिके उपजने रहनेका विधान बहुरि सिद्धनिका स्थान स्वरूप इत्यादि अनेक वर्णन है। ...	२०५

मनुष्य तिर्यग्लोकका अधिकार ॥ ६ ॥

विषय.	पृष्ठ.
तहां मंगल करि पंच मेरुनिका स्थान कहि भरतादि क्षेत्र अर हिमवत् आदि कुलाचल अर कुलाचलनिके ऊपरि ह्रद ह्रदनिविषैं कमल, कमलनिके ऊपरि मंदिरनिविषैं परिवारसहित वसती देवी अर ह्रदनितैं निकसी गंगादि नदी अर नदीके पडनेके कुंड अर नदीनिका गमन अर समुद्रविषैं प्रवेश इत्यादिक तिनका स्वरूप इत्यादिकका वर्णन है।	२४१
बहुरि क्षेत्र कुलाचलनिका प्रमाण स्यावनेका विधान कहि अर मेरुनिविषैं अर ताके वन अर वननिविषैं मंदिरादिक तिनके प्रमाण स्वरूपादिक का वर्णन है।	२५१
बहुरि परिवार सहित जंबू आदि वृक्ष वृक्षनिका स्थान स्वरूपादिकका वर्णन है।	२६१
बहुरि भोग भूमि कर्मभूमिके विभाग अर दशक्षेत्र अर क्षीरा क्षीरोदा विषैं वाईए है दीप ह्रद अर तिनके निकटि कांचन गिरि अर दिग्गज पर्वत गजदंत पर्वतनिका वर्णन है। ...	२७१
बहुरि विदेह क्षेत्रके देशनिका विभाग अर वक्षार गिरि विभंगा नदी देवारण्य वन तिनका वर्णन	२८१
बहुरि विदेह क्षेत्रनि विषैं आर्यादिक अर इक्ष्वाकु अर आर्यखंडादि तीर्थ देव अर तहां वर्षादिक प्रवृत्ति अर तीर्थंकरादि होनेकी सख्यादिका वर्णन है।	२८९
बहुरि प्रसंग पाइ चक्रवर्ती का स्वरूपादिक का [illegible] वरणी [illegible] वर्णन है	...
बहुरि विदेह [illegible]	...

विषय.	पृष्ठ.
बहुरि विजयार्द्धकी श्रेणी विषैं नगरादिक हैं अर म्लेच्छ खंड विषैं वृषभाचल है। अर आर्य खंड विषैं राजधानीके नगर हैं। बहुरि भोग भूमि विषैं तिष्टते नामिगिरिनका स्थान प्रमाणादिक अर कुलाचलनिके कूट वा वनादिक तिनका वर्णन	२८५
बहुरि जंबू द्वीप विषैं पर्वत नदीनिकी संख्या वा तिनकी वेदीनिकी संख्याका वर्णन है। बहुरि भरत ऐरावतका विजयार्द्धके कूट अर गजदंतनिके कूट अर वक्षार गिरिनके कूट तिनका नाम प्रमाण स्थानादिक अर तिन कूटनि उपरि वर्से हैं तिनके नामादिक तिनका वर्णन है। ...	२९१
बहुरि गंगादि नदीनिकी परिवार नदी अर सर्व नदीनिका प्रमाण वर्णन है।	२९९
बहुरि पूर्व पश्चिम अपेक्षा मेरु आदिका व्यास वर्णन	३००
बहुरि धातुकी खंड पुष्करार्द्ध विषैं मेरु भद्रसाल विदेह देव गजदंत हैं तिनके व्यासादिकका वर्णन है	३०१
बहुरि जंबूद्वीपविषैं देवकुरु उत्तरकुरु अर कुलाचल अर क्षेत्र अर भरत ऐरावत संबंधी विजयार्द्ध तिनका पनुः पृष्ठ बाण जीवा वृत्त विष्कंभ चूलिका पार्श्व भुजाका प्रमाण वर्णन है। ...	३०३
तहां अनेक प्रकार जीवादिस्थापनेके करण सूत्रनिका वर्णन है।	३०५
बहुरि भरत ऐरावत क्षेत्र विषैं कालादिक पलटनि हो है। अर तहां जैसैं प्रवृत्ति हो है ताका वर्णन	३१६
तहां इस भरत क्षेत्र विषैं इस अवसर्पिणी काल विषैं चौदह कुल कर चौबीस तीर्थंकर बारह चक्रवर्ती नव नारायण प्रतिनारायण बलभद्र भए तिनिका नाम आयु आदिकका अर ए सब भए ताका अर तीर्थंकरका वंश वर्णका अर दुखमाकाल विषैं शक अर कल्की हो है ताका अर आदि अंतके कल्कीका कर्तव्यका अर दुखमा काल के अंति धर्मादि नाश होनेका अर दुखमदुखमा कालकी प्रवृत्तिका अर तहां अंति प्रलय होनेका तहां केई युगल बचनेका अर बहुरि दुखमदुखमा काल आदि अंति चौदह कुलकरनिका अर दुखम सुखमा काल विषैं तेईस तीर्थंकर चक्रवर्ती नारायण प्रतिनारायण बलभद्र होनेका तिनके नामादिकका अर जहां काल जैसा अवस्थान है अर क्षेत्रका स्वरूप जैसैं वर्ण	

विषय.	पृ
पलटै है ताका वर्णन है	३१
बहुरि द्वीप समुद्रनिका अंत विषैं जंबूद्वीपका वेदी है ताका वर्णन है। ऐसैं जंबूद्वीपका वर्णन पीछै लवण समुद्रका वर्णन है।	३१
तहां ताके अभ्यंतर पातालं हैं तिनका अर ताके जलकी उचाईका बधने घटनेका अर ताके व्यासका अर ताका जलके अर चंद्रमा सूर्यके अंतरालादिकका अर पातालनिके अंतरालका अर तिस समुद्रविषैं वेलंधर नागकुमार वर्से हैं तिनका अर पर्वतादिक हैं अर तिन विषैं देव वर्से हैं तिनका अर द्वीप हैं तिन विषैं वेलंधर नागकुमार वर्से हैं तिनका अर तीन द्वीप हैं तिन विषैं मागधादि देव वर्से हैं तिनका अर द्वीपनिविषैं कुभोगभूमियां वर्से हैं तिनका स्थान नाम प्रमाणादिकका वर्णन है।	३१
बहुरि धातकी खंड पुष्करार्द्धका वर्णन हैं तहां च्यारि इष्वाकार पर्वतनिका अर तहां पाईए है कुलाचल आदि तिनके प्रमाणका अर कुलाचल क्षेत्रनिके आकारका अर तिनि द्वीपनिका परिधिका प्रमाण स्याय कुलाचल क्षेत्रनिके व्यासका अर विदेह देशादिकके आयामका अर कुरु वृक्ष अर नदीनिका गमन विशेष है ताका वर्णन है। ...	३१
बहुरि मानुषोत्तर पर्वतके प्रमाणादिकका अर ताके उपरि कूट हैं तहां देवादि वर्से हैं तिनका वर्णन है	३१
बहुरि कुंडलगिरि रुचक गिरिका स्थान प्रमाणादिकका अर तिनके उपरि कूट हैं तिन विषैं जे वर्से हैं तिनका वर्णन है।	३१
बहुरि द्वीपसमुद्रनिके स्वामीनिका वर्णन है ...	
बहुरि नंदीश्वर द्वीप विषैं बावन पर्वत तिन उपरि चैत्यालय अर सोलह बावड़ी चौसठि वन है। तिनका स्थान प्रमाणादिकका वर्णन है। तहां अष्टाह्निक पर्वका महोत्सव देव करै हैं ताका अर चैत्यालयनिके अपन्यारि प्रमाणका अर चैत्यालयनि विषैं अनेक रचना है ताका अर तिन विषैं स्वरूपका वर्णन है।	३४
बहुरि अंतमंगल करि कर्ता अपना नाम सूचन करि सब परम गुरुनै अभीष्ट फल दीया चाहिए ग्रंथ समाप्त हो है।	३५
बहुरि अर्थदृष्टि देइ समाचार कहि ग्रंथ पूर्ण। ऐसैं इस शास्त्र विषैं वर्णन है। . .	३५

इति विषयसूची समाप्त।

त्रिलोकसारका परिशीष्ट ।

अब इस ग्रंथके अर्थ जाननेकों गणितका ज्ञान अवश्य चाहिए । जातैं यह करणानुयोग-रूप शास्त्र है, या विषै जहां तहां गणितका प्रयोजन पाईए है । तातैं पहलैं गणित शास्त्रनिका अभ्यास करना । सर्व शास्त्रनिका ज्ञान होनेकों कारणभूत दोय विद्या हैं । एक अक्षरविद्या एक अंकविद्या । सो व्याकरणादि करि अक्षर ज्ञान भए अर गणितशास्त्रनि करि अंकज्ञान भए अन्य शास्त्रनिका अभ्यास सुगम हो है । पहले श्रीकरभदेवजी एक पुत्रीकों अक्षरविद्या एक पुत्रीकों अंकविद्या सिखाई । सो दोऊ ही विद्या कार्यकारी हैं । तहां जे तुच्छबुद्धी व्याकरणादि ज्ञानरहित हैं तिनके अर्थि यह भाषा रचना करी । अब इस विषै जे जीव गणितज्ञानरहित हैं तिनके अर्थि इहां प्रयोजनमात्र शास्त्रोक्त गणित विधान वर्णन करिए है । बहुरि अन्य शास्त्रनितैं विशेष जाननां । तहां एकादिक गणना अर तिनके अंक मांडनेका विधान प्रवृत्ति विषै प्रसिद्ध है सो सीखलेना । बहुरि प्रवृत्ति विषै पहले अंकका नाम इकवाई दूसरे अंकका नाम दाहाकी तृतीयादि अंकनिका नाम सैकड़ा हजार दशहजार लाख दशलाख कोडि कहिए है । संस्कृत विषै इनका नाम एक दश शत सहस्र अयुत लक्ष दशलक्ष कोटि ऐसे नाम हैं । बहुरि याके उपरि दशकोडी शतकोडि सहस्रकोडि इत्यादि नाम जोडिलेनें । बहुरि अंकनिकी बांई तरफतैं गति है । तातैं इकवाईका अंक लिख ताके पीछैं पीछैं दाहाकी आदिकके अंक लिखनें । जैसें दोयसैं छप्पन लिखने होइ तहां इकवाईका छहा लिखना ताकैं पीछैं दाहाकीका पांचा अर ताके पीछैं सैकड़ाका दूवा लिखनां । बहुरि तहां छहाकों पहला अंक कहिए पांचकों दूसरा अंक कहिए दूवाकों अंतका अंक कहिए ऐसैं परिपाटी जाननी । बहुरि परिकर्माष्टकनकों सीखना । सो संकलन १ व्यवकलन १ गुणकार १ भागहार १ वर्ग १ वर्गमूल १ घन १ घनमूल इनकों परिकर्माष्टक कहिए है । तहां प्रवृत्ति विषै जाका नाम जोड देना है ताका नाम इहां संकलन जाननां । जाकों जोडिए ताका नाम धनराशि कहिए, जाविषै जोडिए सो मूलराशि जाननां । सो मूलराशिकों धनराशितैं अधिक कहिए । बहुरि मूल राशिके उपरि धनराशि लिखिए जैसें पांच अधिक पिचाणवे ऐसें लिखिए ९५ तहां मूलराशि धनराशिके अंकनिकों यथास्थान जोडिए । इकवाईका अंक दाहाकीका अंक विषै दाहकीका ऐसे क्रमतैं जोडिए जो इकवाई आदिकके अंक जोडें अधिक प्रमाण आवै तौ तहां इकवाईका अंक मांडि दाहकी आदिकका अंक अवशेष रहै ताकों दाहकी आदिकके अंकनि विषै जोडि दीजिए । याका नाम प्रवृत्ति विषै हाथिलागा कहिए है । इहां उदाहरण । जैसें दोयसैं छप्पनविषै चौरासी जोडना होइ तहां इकवाईके अंक छह प्यारि जोडें दश भए तहां इकवाईकी जायगा बिंदी मांडि अवशेष एका अर दाहकी के अंक पंच आठ जोडें चौदह भए सो एकाके पीछै दाहकाकी जायगा चौका लिखि अवशेष एका अर दोय जोडें तीन भए सो ताके पीछैं सैकडाकी जायगा लिखना । ऐसैं इनका जोड़ तीनसैं चालीस ३४० भया । अथवा दूसरी तरफतैं जोडिए तो सैकड़ाकी

जाएगा दूना माडि दाहकोंके अंक पांच आठ जोडे तेरह भए सो दाहकोंको जायगा सीधा लिखि एक सैकडा विषै जोडे ऐसा भया ३३। बहुरि इकवाईका एह स्थानि जोडे दश होइ तहां इकवाईकी जायगा बिंदी लिखि एक दाहकोंका अंक विषै जोडे ऐसा २४० भया। या प्रकार औरनिकाभी संकलन जाननां। बहुरि व्यकलन नाम राशि विषै घटावनेका है प्रति विषै याका नाम बाकीका काढना है। तहां जाको घटाईए ताका नाम ऋण राशि है। जाविषै घटाईए ताका नाम धनराशि है वा मूलराशि है। तिन ऋणराशि करि मूलराशिको हीन वा सोधित इत्यादि कहिए। सो मूलराशिके ऊपरि ऋणराशिको लिखी ताके आगै पूर्ववत्काला आकार विंदी सहित कहिए जैसे दोय काटि डोकसै ऐसे लिखिए २०, अथवा मूलराशिके आगै ऐसे – सहनानी करी ऋण राशि लिखिए। जैसे सातसैकों ऐसे लिखिए ७००–२ अथवा मूलराशिके मीचि बिंदी लिखि ऊपरै ऋणराशि लिखिए जैसे सातसैकों ऐसे लिखिए ७ बहुरि अन्य प्रकार भी लिखना है है। ऋण मूलराशिके अक्षरनिमैंली ऋणराशिके अंक घटाए जैसे घटाईए इकवाईके अंकनिमैंली इकवाईके अंक दाहकोंके अंकनिमैंली दाहकोंके अंक ऐसे जैसे घटाईए [illegible]

जाकरि गुणिए ताका नाम गुणक वा गुणाकार है। बहुरि गुण्य हूवा राशिका नाम गुणित वा हृत वा ग इत्यादि जानने। सो गुण्य आगैं गुणककौं लिखिए जैसें चौसठि गुणां एकसौ अठाईसकौं ऐसें लिखिए १२८।६४ अब गुणनेका विधान कहिए है। गुणकारके अंकनिकरि पहलैं गुण्यका अंत अंककौं गुणिए तहां गुणकारका इकवाईका अंक करि गुणें अंक आवै तिन विषैं इकवाईका अंककौं तिस अंत अंकके उपरि लिखिए। दाहकी आदिके अंक आवै सौ ताके पीछे पीछैं लिखिए। बहुरि जो गुणकारका अंक दाहकीका होइ तौ तिसकरि तिस गुण्यका अंत अंककौं तैसें ही गुणिए तहां पूर्वं इकवाईका अंक आया था ताके पीछैं तिसकौं लिखिए। वा पूर्वं तहां अंक होइ तौ जोड़ दीजिए। बहुरि ऐसें ही गुणकारके सैकड़ा आदि अंक होंइ तौ तिनकरि क्रमतैं गुणि जो प्रमाण आवै ताकौं पीछैं पीछैं लिखिए वा जोडिए। ऐसें अंत अंकका गुणन किया। बहुरि जो गुण्यके अनेक अंक होइ तौ तैसें ही उपांत आदि अंकनिकौं क्रमतैं तहां गुणैं इकवाईका अंक आवै सो तौ पूर्व इकवाईका अंक लिख्या था ताके आगैं लिखिए अर अन्य अंक आवैं तिनकौं पूर्व अंकनि विषैं अनुक्रमतैं जोड़ते जाइए। ऐसें कीएं जो प्रमाण आवै सो गुण्य हूवा राशि जानना। इहां उदाहरण। जैसें एकसो अठाईसकौं चौंसठि करि गुणना तहां प्रथम गुण्यका एकाकौं चौंसठि करि गुणिए तहां गुणकारका चौका करि गुणें च्यारि भया सो एका उपरि लिख्या छक्का करि गुणें छह भया सो ताके पीछैं लिख्या तब ऐसा भया १६। बहुरि गुण्यका उपांत अंक दूवा ताकौं चौंसठि करि गुणिए। तहां चौका करि गुणें बतीस होइ तहां दूवा सौ पूर्व अंकनिके आगैं लिख्या अर हाथिलेगा तीन सो पूर्व अंकनि विषैं जोड्या। बहुरि छक्का करि गुणें अठानवैं होइ सो पूर्व अंकनि विषैं जोडिए तब ऐसा भया १३२ ऐसें गुण्य हूवा प्रमाण इक्यासीसै बाणवै भया। ऐसें ही अन्यत्र जानना। बहुरि अन्य विधान कहिए है। गुणाकारके अंकनि करि गुण्यके प्रथम अंककौं गुणें जो प्रमाण आवै सो जुदा लिखिए अर गुण्यका द्वितीय अंककौं गुणें जो प्रमाण आवै ताके आगैं एक बिंदी देइ जुदा लिखिए ऐसें ही क्रमतैं गुण्यका चतुर्थादि अंकनिकौं गुणें जो जो प्रमाण आवै ताके आगैं च्यारि आदि बिंदी देइ जुदे जुदे लिखिए। बहुरि तिन सबनिकौं जोडिए जो प्रमाण आवै सो गुण्य हूवा राशि जानना। जैसें चौंसठि करि एकसौ अठाईसकौं गुणना तहां गुण्यका आठकौं गुणें पांचमैं बारह भए सो लिख्या अर दूवाकौं गुणें आगैं एक बिंदी दीएं बारहसै असी भए सो लिख्या अर एकाकौं गुणें आगैं दोय बिंदी दीए चौंसठिसै कोई इनकौं जोडें १३२; सोइ इक्यासीसै बाणवै आवै है। अथवा यत्रविधान करि गुणन हो है सो जेते गुण्यके अंक होइ तिनकी संख्यानि विषैं जेते गुणकारके अंक होइ तिनते तिनते कोटे करने। बहुरि तिन कोटानिकौं ऐसें चौंडे बहुरि गुणकारके [illegible] अंक करि गुण्यका प्रथम अंककौं गुणें जो [illegible] आवै तिनकौं प्रथम पंक्तिके प्रमाणमें [illegible]। अर गुणें जो एक [illegible] आवै तौ [illegible] ऐसें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अंक आवै तौ दाहकौका अंक उपरिम भाग विषै इकवाईका अंक द्वितीय भाग विषै लिखिए। बहुरि ऐसेंही गुणकारके प्रथमादि अंकनि करि गुण्यके द्वितीयादि अंकनिकौं गुणि द्वितीयादि पंक्तिनि विषै लिखनें। बहुरि तिस यंत्रका ड्योढा जोड दीजिए जो प्रमाण आवै सो गुणित राशि जाननां। उदाहरण—जैसें एक अठाईसकौं चौंसठि करि गुणना होइ तहां ऐसा यंत्र करिए। बहुरि याकौं ऐसें ड्योढा चौंरिए.....बहुरि याविषै छक्का चौका करि गुण्यका प्रथम अंक एककौं गुणि प्रथम पंक्ति विषै द्वितीय अंक दूवाकौं गुणि तृतीय पंक्ति विषै लिखने..... बहुरि इनका ड्योढा जोड दीजिए तब दूवाका दूवा लिख्या अर आठ तीन आठकौं जोडें उगणीस ताका पीछैं नांवां लिख्या हाथ एकलागा सो अर च्यारि दोय च्यारि जोडें ग्यारह भए ताका ताके पीछैं एका लिख्या बहुरि हाथि लागा एक अर एका छक्का जोडें आठ भया सो वाके पीछैं लिख्या ऐसें इक्यासीसै बाणवै प्रमाण आवै हैं। अथवा संभेदन करि गुणन हो हैं। तहां जैसैं सुगम गुणन होय तैसैं गुण्यका वा गुणकारका खंडकरि जुदे जुदे तिन खंडनिकौं गुणि जोड दीजिए। उदाहरण। जैसें एकसौ अठाईसकौं चौंसठि करि गुणना होइ तहां चौंसठिकौं दोय खंड कीये साठि अर च्यारि तहां साठि करि गुणें छिहंतरिसै असी होइ अर च्यारि करि गुणें पांचसैं बारह होइ, बहुरि ताकौं सोलह करि गुणें इक्यासीसै बाणवै ही होइ। बहुरि जहां गुण्यगुणकार बहुत होइ तहां परस्पर गुणन करना। जैसें च्यारि सोलह चौंसठि दोय ऐसें च्यारि राशि ४।१६।६४।२ गुण्य गुणकार हैं। इनकौं परस्पर गुणिए तहां च्यारिकौं सोलह करि गुणें चौंसठि बहुरि याकौं चौंसठि करि गुणें च्यारि हजार छिनवै याकौं दोयकरि गुणें इक्यासीसै बाणवै। अथवा गुण्य गुणकारनि विषै काहूका गुणकार रूप संभेदन करिए। काहूकौं किसी करि गुणि लिख दीजिए पीछैं तिनकौं परस्पर गुणिए। जैसें तिन गुण्य गुणकारनि विषै चौंसठिका संभेदन करि च्यारि गुणा सोलह लिख्या। बहुरि पूर्वै च्यारिका अंक था ताकौं इस च्यारिका अंक करि गुणें सोलह भए। ऐसें कीएं ऐसा १६।१६।१६।२ राशि भया इनकौं परस्पर गुणें भी इक्याससीसै बाणवै होइ। ऐसें विधान जानना। संभेदनादि करनेका प्रयोजन इस शास्त्र विषै आवैगा तिसतैं इहां स्वरूप दिखाया है। ऐसें वा अन्य प्रकार भी गुणन विधान जानना। बहुरि इहां इतना जाननां गुण्यगुणकार विषै कोई राशि विषै एक घटाईए वा बधाईए तो अन्य राशि एक ही होइ तौ तितनेही घटैं बधैं। अर अन्य राशि बहुत होइ तौ तिनकौं परस्पर गुणें जितने होइ तितने घटैं बधैं। जैसें चौंसठि करि एकसौ अठाईसकौं गुणें इक्यासीसै बाणवै होइ अर जो चौंसठिमेंस्यौं एक घटाईए बधाईए तौ तिस प्रमाणमेंस्यौं एकसौ अठाईस घटै बधै। अर एकसौ अठाइसमेंस्यौं एक घटाए बधाए चौंसठि घटै बधै। बहुरि जैसें च्यारि सोलह चौंसठि दोय ऐसें गुण्य गुणकार होइ तिनकौं परस्पर गुणें इक्यासीसै बाणवै होइ। बहुरि जो सोलहमें एक घटाए बधाए अन्य राशि च्यारि चौंसठि दोय इनकौं परस्पर गुणें जितने होइ तितने घटैं बधैं। बहुरि एक घटाए बधाए जेता प्रमाण घटै बधै तहां आधा आदि वा दोय आदि घटाए बधाए तिस प्रमाणतैं आधा आदि

का दूणा आदि प्रमाण घटै बधै ऐसा जानना। ऐसैं और भी विशेष अनेक प्रकार हैं। ते यथा-संभव जानने। बहुरि भाग देइ प्रमाण स्थापनेका नाम भागहार है। जैसैं प्रवृत्ति विषै टकानिके रुपैये पठाइए। बहुरि राशिके घट करनेकी पद्धति है। सो भाग हार रूप जाननी। जैसे दोयसैंका आठ घट कीए पचीस कला तहां दोयसैंकों आठका भाग हार जानना अर जाकों भाग दीजिए ताका नाम भाज्य है वा हार्य है। जाका भाग दीजिए ताका नाम भाजक वा हार वा भागहार इत्यादि कहिए है। बहुरि भाग दीए राशिका नाम भक्त वा भाजित इत्यादि कहिए। बहुरि लिखनेमें भाज्यकों ऊपर लिखिए भाजकनकों ताके नीचें लिखिए। जैसैं इक्यासीसै बावनवेंका चौंसठिका भागकों ऐसैं लिखिए $\frac{८१}{५२}$। अब याका विधान कहिए है—भाज्य राशिके अंकादिक जेते अंकनिकरि भाजक राशितैं प्रमाण बधता होइ तितने अंकरूप राशिकों भाजकका भाग दीजिए। बहुरि जिस अंक करि भाजकनकों गुणें जाकों भाग दीया था तातैं घटाइ अवशेष तहां लिख दीजिए अर वह पाया अंक जुदा लिखिए। बहुरि जेठै भाज्यके अंक रहे तिनके अंतादि अंकनिकों तैसैं ही भाग देइ जो अंक आवै ताकों तिस पाया अंकके आगैं लिखिए। ऐसैंही यावन्मात्र भाज्यके अंक निःशेष होइ तावत् विधान करै तहां पाए अंक-निकरि जो प्रमाण आवै सो तहां भाग दीए जो राशि भया ताका नाम लब्धराशि है ताकरि प्रमाण जानना। इहां उदाहरण। इक्यासीसै बावनवेंकों चौसठिका भाग दीया $\frac{८१}{५२}$ तब पाकों दोय आदि अंक करि गुणें सो बहुत प्रमाण होइ तातैं एक करि गुणें चौसठि हूवा ताकों इक्यासीमें घटाय तहां सतरह लिख्या अर पाया अंक एका जुदा बहुरि वह राशि ऐसा १७९२ भया तहां आदि तीन अङ्क करि एकसौं गुण्या भाज-कनैं बधता प्रमाण होइ ताकों चौसठिका भाग दीजिए $\frac{१७९२}{६४}$ तब तीन आदिकरि ताकों गुणें जो बधता प्रमाण होइ तातैं भाजकनकों दोय करि गुणें एकसो अठाईस होय सो घटाए तहां इक्या-यन रह्या सो लिख्या अर पाया अंक दूवा तिस एकाके आगैं लिख्या। बहुरि वह राशि ऐसा ५१२ भया ताकों चौंसठिका भाग दीजिए $\frac{५१२}{६४}$ तहां ताकों आठ गुणा कीएं पांचसै बारह होइ सो भाज्यमेंस्यौं घटाए राशि निःशेष होइ अर पाया अंक आठ तिस दूवाके आगैं लिख्या ऐसैं पाया अंकनिकरि लब्धराशि एकसौ अठाईस होइ ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि जहां भाग टूटि जाय भाजकनकों जिसी अंक करि गुणें भाज्यके अंक भाये पहलें ही अंक निःशेष होइ जाय तहां अंक घटनेनैं भाग टूट्या कहिए सो जहां भाग टूटै तहां पाया अंकके आगैं बिंदी लिखि बहुरि तैसैं विधान करना। जैसें छह हजार च्यारिसै चोईसकों आठका भाग दीया $\frac{६४१४}{८}$ तहां चौंसठिकों आठका भाग दीएं आठ पाया सो आठकों आठकरि गुणें चौंसठि होइ सो चौंसठिमें घटाएं निःशेष भया तहां पाया अंक आठके आगैं बिंदी लिखि बहुरि चौईसकों आठका भाग दीएं तीया पाया सो लिख्या तब लब्धराशिका प्रमाण आठसै तीन आया। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि कहीं भाग देते भाज्यराशि निःशेष न होइ कि अवशेष रहिजाय तहां लब्धराशि प्रमाणके आगैं अवशेषकों भागहारकर भाग लिख देना। जैसैं इक्यासीसै चौरानवेंकों चौंसठिका भाग दीया $\frac{८१}{९४}$ तहां

दूणा करे तहां आठ छठा भाग मिल्या $\frac{8}{6}$ या विषै दोय छठा भाग मिल्याएं दश छठा भाग तिनका जोड भया । याका दोय करि अपवर्तन कीएं पांच तीसरा भाग प्रमाण हो है । अथवा छह हारनिकों आधा कीएं तीन हार होइ तब समान छेद होइ तातैं छह हारनिकों अर याके दोय अंशनिकों आधा करि तहां एकका तीसरा भाग लिख्या $\frac{1}{3}$ याकों प्यारि तीसरा भाग विषै मिलाएं पांच तीसरा भाग मात्र प्रमाण आया । बहुरि हजार चवालीसवां भाग विषै दोयसै बाईसवां भाग पचीस ग्यारहवां भाग घटावना होय $\frac{1000}{44} - \frac{200}{44} - \frac{25}{44}$ तहां बाईसकों दूणा कीए ग्यारह, ग्यारहकों चौगुणा कीएं समान छेद होइ । तातैं दोयसै अंश अर बाईस हार इनकै दूणे कीए प्यारिसै चवालीस भाग भए अर पचीस अंश ग्यारह हार इनकों चौगुणे करिए सब चवालीस भाग भए $\frac{400}{44} - \frac{100}{44} - \frac{100}{44}$ बहुरि प्यारिसै अर सब जोडें पांचसै भए सो हजारमें घटाएं अवशेष राशि पांचसै चवालीसवां भाग हो है । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । इहां इतनौ जाननां । अंश अर हार इन दोऊनिकों समान प्रमाण करि गुणें समानका भाग दीएं जेतेका तेताही प्रमाण रहै है । जैसैं जो पंद्रह आठवां भागका प्रमाण सोई दोयसै सत्तरि एकसौ चवालीसवां भागका प्रमाण है । दोऊ जायगा अष्टमांश करि हीन दोय प्रमाण हैं । इहां अंश अर हारनि विषै दोऊनि विषै अठारहका गुणाकार वा भागहार है । बहुरि समान छेद करनेका प्रयोजन यहु है सो समान छेद भए पीछै समानरूप अंश होइ जाय तहां पीछै अंशनिकों अंशनि विषै मिलावना होइ तौ जोड दीजे । घटावना होइ तौ घटा दीजे । बहुरि जहां कोई राशिकै हार न होय तहां हारका प्रमाण एक कल्पना । जातैं ऐसा कह्या है 'कल्पो हरो रूपमहारराशेः' जैसैं दश अर पांच तृतीय भागका समछेद करनां होइ तहां दशके नीचैं एकका हार लिखना $\frac{10}{1}$ बहुरि पूर्वोक्त विधान कीएं तिनका जोड पैंतीस तृतीय भाग आया । अर दश विषै पांच तृतीय भाग घटाएं अवशेष पचीस तृतीय भाग प्रमाण आवै है । बहुरि जहां ऐसी राशि गुणकारादि विधान विषै होइ तहां पहलैं ऐसैं विधान करि पीछै गुणनादि करनां । जैसैं गुणकारादि विषै कोई राशि एकका सोलहां भाग अधिक पंद्रह प्रमाण होइ तहां समछेद विधानतैं पंद्रह विषै एकका सोलहवा भाग जोडें दोयसै इकतालीसका सोलहां भाग हो है सो तहां स्थापि गुणनादि करनां । बहुरि भिन्न गुणकार विषै गुण्य गुणकारकों अंशनिका अंशनि करि अर हारनिका हारनि करि गुणन करनां । जैसैं पंद्रह आठवां भागका पांच तृतीय भाग करि गुणनां होइ $\frac{15}{8} \times \frac{5}{3}$ तहां पंद्रह अंशनिकों पांच अंश करि गुणें पचहत्तरि अंश होइ अर आठ हारकों तीन हार करि गुणें चौईस हार होइ ऐसैं तिनका गुणन कीएं पचहत्तरि चौईसवां भाग आया । बहुरि एक हजारकों दोय तृतीय भाग तीन दशवां भाग करि गुणनां होइ तहां एक हजारकै भाग हार नाहीं है तातैं तहां एक भागहार करिए $\frac{1000}{1} \times \frac{2}{3} \times \frac{3}{10}$ तहां अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि परस्पर गुणन कीएं छह हजारका तीसवां भाग आया दोयसै है । बहुरि एकका तृतीय भागकै एकका अष्ट भाग करि गुणना होइ तहां पूर्वोक्त विधानतैं एकका चौईसवां भाग प्रमाण आवै है । इहां इतना जाननां एकतैं हीन करि गुणन कीएं गुण्य राशिका प्रमाणतैं घटता प्रमाण

आवै है । बहुरि जैसें एकका चौथा भाग अधिक बीसकों पांच फारे गुणनां होइ तहां समछेद विधानतें चौथा भाग दिये एकका चौथा भाग जोडें इक्यासीका चौथा भाग भया अर पांचके भाग हार नाहीं है । तहां एक भाग हार कल्पि पूर्ववत् गुणन कीएं प्यारिसै पांचका चौथा भाग प्रमाण हो है । ऐसें ही अन्यत्र जाननां । बहुरि भिन्न भाग हार विषैं भाज्यके अंश हार होंइ तिनकों तौ तैसें ही राखिए अर भाजकके अंश हार होंहि तिनकों पलटि दीजिए । अंशनिकों हार कीजिए अर हारनिकों अंश कीजिए । ऐसें स्थापि अंशनिकों अंशनि फारि अर हारनिकों हारनि फारि गुणिए जो करने जो प्रमाण आवै सो लब्ध राशि जाननां । जैसें पिचहत्तरि चौईसवां भागकों पांच तृतीय भागका भाग देना ७५/२४ ÷ ५/३ तहां भाजकके पांच अंशनिकों हार कीजिए अर तीन हारनिकों अंश कीजिए १५/९ बहुरि अंशनिकों अंशनि फारि अर हारनिकों हारनि फारि गुणन कीजिए तब दोयसै पचीसकों एक सौ बीसका भाग आया। तहां पंद्रह फारि अपवर्तन कीएं पंद्रह आठवां भाग प्रमाण लब्धराशि आवै है । बहुरि दोयसैकों दोय तिहाई अर तीन दशव भागका भाग देना २००/२३ तहां पूर्ववत् दोऊ भाजकनिके अंशहारनिकों पलटना अर दोय सैकै हार हैं नाहीं तातैं तहां एक हार कल्पना २००/१ ऐसें स्थापि अंशनिका अंशनि फारि हारनिका हारनि फारि गुणन कीए छह हजारका छठा भाग आया सो एक हजार लब्धि राशि जाननां । बहुरि जैसें एकका चौईसवां भागकों एकका आठवां भागका देना १/२४ तहां पूर्ववत् भाजकके अंशहार पलटि १/८ गुणन कीएं आठका चौईसवां भाग हो है । बहुरि इहां आठ फारि अपवर्तन कीएं एकका तृतीय भाग मात्र लब्धराशि हो है । इहां इतना जाननां एकतैं घाटिका भाग दीएं भाज्य राशितैं लब्धराशिका प्रमाण बहुत आवै है । बहुरि जैसें दोयसैकों सात सोलहां भाग अधिक सोलहका भाग देना होइ तहां दोयसैके नीचैं भागहार नाहीं तातैं तहां एक भागहार कल्पना अर सात सोलहां भागकों सोलह विषैं समछेद विधानतैं जोडें दोयसै तरेसठिका सोलहां भाग भया सो लिखना २००/१६ बहुरि भाजकके अंशहार पलटि पूर्ववत् गुणन कीएं बत्तीससैंकों दोयसै तरेसठिका भाग आया सो लब्धराशि जाननां । ऐसें ही अन्यत्र जाननां । बहुरि भिन्नवर्ग विषैं जेनेका वर्ग करनां होइ ताका अंश अर हार दोऊ दोय जायगा मांडि गुणकारवत् अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन करनां जैसें पचीस छठा भागका वर्ग करना तहां तिस प्रमाण दोय राशि मांडि २५/६ अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन कीएं छसै पचीसका छत्तीसवां भाग भया ताका तेरह छत्तीसवां भाग अधिक सतरह प्रमाण वर्ग भया १७१३/३६ बहुरि एकका आठवां भागका वर्ग करना १/८ तहां पूर्ववत् विधान कीएं ताका वर्ग एकका चौसठिवां भाग हो है । बहुरि दोयका आठवां भाग अधिक तीनका वर्ग करनां तहां समछेद करि तिनकों जोडें छतीसका आठवां भाग भया ताका पूर्ववत् विधान कीएं छसै छिहत्तरिका चौसठिवां भाग भया ऐसें ही अन्यत्र जाननां । बहुरि भिन्न घनविषैं जेनेका घन करना होइ ताका अंश अर हार दोऊ तीन जायगा स्थापि गुणकारवत् अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन करना । जैसें पचीसका चौथाईका घन करनां होइ त

तीह प्रमाण तीन राशि स्थापि $\frac{1}{2}|\frac{1}{2}|\frac{1}{2}$ अंशनिकी अंशनिकरि हारनिकी हारनिकरि गुनें पंद्रह हजार छसै पचासका चौसठिवां भाग प्रमाण घनराशि हो है। $\frac{1}{15625}$ बहुरि एकका आठवां भागका घन कीएं $\frac{1}{8}|\frac{1}{8}|\frac{1}{8}$ पूर्ववत् विधानतैं एकका पांचमैं बारहां भागमात्र $\frac{1}{1200}$ घनराशि हो है। बहुरि चतुर्थ भाग अधिक दोयका घन करनां। तहां समछेद करि जोडें नवका चतुर्थ भाग भया ताका पूर्ववत् घन कीएं $\frac{9}{4}|\frac{9}{4}|\frac{9}{4}$ सातमैं गुणनीसका चौसठिवां भाग मात्र ताका घन भया। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्न वर्गमूल विषैं जाका वर्गमूल करना होइ ताके अंशनिका वर्गमूल काढें जो प्रमाण आवै सो तौ ताके वर्ग मूलविषैं अंश जाननां। अर हारनिका वर्गमूल काढें जो प्रमाण आवै सो तहां हार जाननां। इहां भी वर्गमूल काढनेविषैं विषम समछेद सहनानी करि अंत विषम विषैं वर्ग घटावनां इत्यादि पूर्व विधान कह्या सोई जाननां। जैसें छसै पचासका छतीसवां भागका $\frac{625}{36}$ वर्गमूल करना तहां पूर्ववत् विधान कीएं छसै पचास अंशनिका वर्गमूल पचीस सो तौ अंश अर छतीसका वर्गमूल छह सो हार ऐसैं ताका वर्गमूल पचीस छठा भाग मात्र $\frac{25}{6}$ आवै है। बहुरि जहां राशि निःशेष न होय तहां अवशेषके अंश करने जैसैं दोयसैका छठा भागका वर्गमूल करना होइ तो पूर्वोक्त विधानतैं दोयसैका वर्गमूल चौदह अर किंचिदून च्यारिका अठाईसवां भागमात्र आवै है। तहां अपवर्तन कीएं एकका सातवां भाग मात्र भया $\frac{1}{196}$ इहां समछेद करि जोडें किंचिदून निन्याणवैका सातवां भाग मात्र आया सो $\frac{13}{14}$ तौ अंश जाननां अर छहका वर्गमूल किंचिदून दोय अर दोयका चौथा भाग आवै है। इहां भी अपवर्तन करि अर समछेदतैं जोडै पाचका दोय भाग मात्र आवै है सो हार जाननां $\frac{2}{7}$ अर इहां निन्याणवैका पांच अर सात दोऊ हार भए तातैं तिनकों परस्पर गुणें पैंतीस तौ हार हूवा अर भागहारका भागहार राशिका गुणकार होइ इस न्याय करि निन्याणवैकों दोय करि गुणें एक सौ अठ्याणवै अंश हूवा। ऐसैं तिस राशिका वर्गमूल किंचित ऊन एकसौ अठ्याणवैका पैंतीसवां भागमात्र हो है। $\frac{196}{35}$ ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्न घनमूल विषैं जाका घनमूल काढना होइ ताके अंशनिका घनमूल कीए जो प्रमाण आवै सो तो ताके घनमूलके अंश अर हारनिका घनमूल कीए जो प्रमाण आवै सो तहां हार जाननें। इहां भी घनमूल काढनेका विधान पूर्वै जैसैं घन अघनकी सहनानी करि अंत घनस्थानतैं घन घटावनां आदि विधान कह्या था सोई जाननां। इहां उदाहरण—जैसें च्यारि हजार छिनवैका सतांईसवां भागका घनमूल काढना होइ $\frac{4096}{27}$ तहां पूर्वोक्त विधानतैं च्यारि हजार छिनवै अंशनिका घनमूल काढें सोलह आए सो तो अंश अर सतांईसका घनमूल काढें तीन हार भए ऐसैं ताका घनमूल सोलहका तृतीय भागमात्र आया $\frac{16}{3}$ बहुरि जहां राशि निःशेष न होइ तहां अवशेष विषैं अंश कल्पना जैसैं वर्गमूल विषैं कही थी तैसैं इहां यथा संभव करना। या प्रकार भिन्न परिकर्माष्टक जानना॥ अब शून्य परिकर्माष्टक कहिए हैं। इहां बिंदीका संकलनादि जाननां तहां संकलन विषैं अंक अर बिंदीका जोड दीए अंक ही रहै कछू बधै नाहीं। जैसैं पचावन विषैं दश जोडे एकस्थानीय पाचा विषैं बिंदी जोडें पाच ही रह्या अर दशस्थानीय पांचा अर एका जोडें छह भया ऐसैं पैसठि हो है। अर बिंदी विषैं बिंदी जोडें बिंदी ही रहै

जैसें दस विषै बीस जोडिए तहा एकस्थानीय विंदीविषै विंदी जोडे विंदी होइ । अर दशस्थानीय एक अर दोय जोडें तीन होइ ऐसें तिनका जोड तीस हो है । बहुरि व्यवकलन विषै अंक विषै विंदी घटाएं अंक ही रहै । कछु घटै नाही जैसें पैंसठि विषै दश घटाएं एकस्थानीय पांचा विषै विंदी घटै पांच ही रहा अर दशस्थानीय छहा विषै एक घटै पांचा भया ऐसें अवशेष पचावन रहै हैं । बहुरि विंदी विषै विंदी घटाएं विंदी रहै है । जैसें तीस विषै दश घटाएं एकस्थानीय विंदी विषै विंदी घटाएं विंदी रहै । अर दशस्थानीय तीन विषै एक घटाएं दूवा रहा अवशेष बीस रहै है । बहुरि गुणाकार विषै विंदीकों अंक करि वा अंककों विंदी करि गुणें विंदी ही हो है । जैसें पचासकों पांचकरि गुणना ५०।५। तहां गुण्यरूप अंत अंक पांचनाकों गुणाकार पांच करि गुणें पचीस भया अर ताके आगें विंदीकों पांचकरि गुणें विंदी भई ऐसें दोयसै पचास भया । अथवा जैसें पांचकों बीस करि गुणना ५ २० तहां दूवा करि पांचकों गुणें दस भया अर आगें विंदी करि पांचकों गुणें विंदी भई ऐसें एक सौ दूवा । बहुरि विंदीकों विंदीकरि गुणें विंदी ही होइ । जैसें बीसकों तीस करि गुण्या तहां दूवाकों तीस करि गुणें साठि दूवा । अर विंदीकों गुणें विंदी भई सो आगें लिखी ऐसें छहसै भया । बहुरि गुण्यराशि अर गुणकार राशिनके आगें विंदी होइ तौ तिन सर्व विंदीनकों मिलाय करि आगें लिखिए अर जे अवशेष गुण्य गुणकारनिके अंक रहे तिनकों परस्पर गुणें जो प्रमाण आवे ताकों तिन विंदीनिके पीछें लिखिए । ऐसें गुणित राशि आवै है । जैसें बीस अर पांचसै इनका गुणन करना २०×५०० तहां दोऊ राशिकी एक दोय विंदी मिलाएं तीनै विंदी भई सो आगे लिखी । अर दूवा पांचकों दशगुणें दशभया सो तिनके पीछें लिख्या ऐसें गुणित राशि दश हजार प्रमाण आया । बहुरि जैसें आठ अर दोयसै अर पंद्रह लाख परस्पर गुणन करना ८×२००×१५००००० तहां इनकी विंदी मिलाए सात विंदी भई सो आगें लिखी अर अंकनिकों परस्पर गुणें दोयसै आठ्यासी दूवा सो पीछें लिख्या । ऐसें दोयसै चालीस कोडि प्रमाण गुणित राशि हो है । ऐसें ही अन्यत्र जानना । बहुरि भागहारविषै विंदीकों अंकका भाग दीएं विंदी ही होइ । जैसें पचासकों दशका भाग दीया ५० तहां भाज्य राशिका पांचकों पांचका भाग दीएं एका एक्या सो लिख्या बहुरि ताके आगें विंदीकों पांचका भाग दीएं विंदी होइ सो लिखी ऐसें एक सै राशि दश आवै है । बहुरि अंककों केवल विंदीका भाग दीएं अवक्तव्य प्रमाण है । जातैं एकनै घटना प्रमाणका भाग दीएं एकप्रमाण भाज्य राशिनै घटना होइ सो एकका प्रमाणका भागका भाग दीएं एकप्रमाण भाज्य राशिनै घटना होइ । एकको कोडिका भागका भाग दीएं कोडि गुणा होइ । ऐसें अन्य हार घटतें एकप्रमाण घटना होता जाय । जहां विंदीका भाग दीया तहां भागहार अवक्तव्यनै घटना भया तहां एकप्रमाणका प्रमाण अवक्तव्य हो है । एकको कार्य करिए । या विधि पैंडे सो है हर कहिए भागहार जाका ऐसा यह राशिनै इच्छा करिए । बहुरि विंदीकों विंदीका भाग दीएं विंदी ही आवै है ताका उदाहरण आगें वर्गमूल प्रकरणविषै लिख्या है सो जानना बहुरि जहां भाज्य वा भागहार राशिके आगें विंदी होय तहां ऐसा विधि अवक्तव्यके आगें होय

तिननी विंदीनका अपवर्तन करना । जैसें बारह हजारको आठसैका भाग होइ [illegible] तहां दोय विंदीनिका अपवर्तन कीएं एकसौ बीसकौं आठका भाग रह्या तहां लब्ध राशि पंद्रह आवै है ऐसें ही अन्यत्र जाननां । बहुरि वर्ग अर घनविषैं गुणकारवत् विधान जाननां । जातैं दोय जायगा राशि मांडि परस्पर गुनन कीएं वर्ग हो है । तीन जायगा राशि मांडि परस्पर गुणन किएं घन होइ है । जैसें दोयमैं एकका वर्ग चारीस हजार च्यारिसै एक हो है, बहुरि एकसौ एकका घन दसलाख तीस हजार तीनसै एक हो है । बहुरि जिस राशिके आगें विंदी होय तिस राशिका वर्ग करना होय तौ अंकनिका वर्ग करि आगें जेती विंदी थी तिनतैं तिगुना विंदी लिख देनी । जैसें दोयसैका वर्ग करना होय तहां दोयका वर्ग च्यारि लिखि आगें दोयतैं दूणी च्यारि विंदी लिखनी अर तिनका घन करना होय तौ दोयका घन आठ लिखि आगें दोयतैं तिगुनी छह विंदी लिखनी । ऐसें ही अन्यत्र जाननां । बहुरि वर्गमूल अर घनमूल जिसैं पूर्वं जैसें सहजतैं वर्गमूल घनमूल काढनेका विधान कह्या था सोई जाननां । इहां जहां विंदीकौं अंकका भाग देने तहां विंदी लिखि देनी । जैसें चारीस हजार च्यारिसै एकका वर्गमूल काढना होइ तहां अंकनिविषैं चौकाका मूल दोय लिख्या ताके आगें सम विंदी ताकौं पाया अंक दोय ताकौं दूणा करि चौकाका भाग दीएं विंदी पाई बहुरि इस विंदीका वर्ग विंदी ताकौं च्यारिमैं घटाएं कछू न रह्या बहुरि अवशेष चौका सहित अगिला सम चारीस ताकौं दुहरी पंक्ति विषैं बांस थे लिखे दूने चारिका भाग दीएं एका पाया बहुरि अवशेष एका रह्या तिस विषैं एकका वर्ग वह घट्या सर्व निःशेष भया । ऐसें ताका वर्गमूल दोयसै एक हो है । बहुरि जैसें दसलाख तीस हजार तीनसै एकका घनमूल काढना होइ तहां अंकनविषैं एकका घनमूल एका लिखि एका दूरि करि ऊपरि दूसरी ठाहे पाया अंक एकका वर्गनैं तिगुणा तीन ताका भाग दीएं विंदी पाई [illegible] विंदी ताकौं दूणा करि [illegible] विंदी भई ताकौं तिगुणा किए भी विंदी वही ताकौं घटाएं भी तहां [illegible] । बहुरि इस अवशेष सहित आगैं घन तीन तारिषैं पाई विंदी ताका घन भी विंदी [illegible] । बहुरि इस सहित अगिला आन तीनसै तीन ताकौं दुहरी पंक्ति विषैं [illegible] वर्ग करि तिगुणा करि दूनि तीनका भाग दीए एका आया सो दूसरे आगैं [illegible] । अवशेष [illegible] । बहुरि इस अवशेष सहित अगिला अयन तीस ताकैं [illegible] दुहरी पंक्ति विषैं [illegible] करि तिगुणा कीए तीस होय सो घटाएं [illegible] । बहुरि आगैं घन एक तारिषैं पाया सो एकका घन एक घट्या [illegible] । बहुरि [illegible] वर्गमूल [illegible] [illegible] [illegible]

दूवा आगै लिखनी । ऐसैं दोयसै वर्गमूल आया । बहुरि सत्ताईस हजारका घनमूल काढना होइ तहां घनमूल काढै तीया पाया अर सत्ताईस निःशेष हुवा । आगैं तीन विंदी थी ताकी तिहाई एक विंदी तीयाके आगैं लिखनी ऐसैं घनमूल तीस आया सो पूर्व विधानतैं भी ऐसैं ही सिद्ध हो है । परंतु सुगमताके अर्थि एक यहु भी विधान कह्या है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । या प्रकार शून्य परिकर्माष्टक कह्यो ॥

बहुरि अज्ञात राशि आदि जाननेके अनेक विधान गणित ग्रंथ विषैं हैं सो इहां विशेष प्रयोजन न जानि न कह्या । बहुरि त्रैराशिकका स्वरूप इस शास्त्र विषैं प्रयोजन भूत जानि कहिए है । तहां प्रमाण फल इच्छा ए तीन राशि जाननें । जिस प्रमाण करि जो फल निपजै सो तौ प्रमाण राशि अर फल राशि है । बहुरि जितनी अपनी इच्छा होइ ताका नाम इच्छा राशि है। इहां प्रमाण राशि इच्छा राशिकी तौ एक जाति है । अर फल राशिकी अन्य जाति है । सो ऐसें ए तीन राशि स्थापि तिन विषैं फल राशिकों इच्छाराशि करि गुणिए बहुरि ताकों प्रमाण राशिका भाग दीजिए जो प्रमाण आवै सो इहां लब्ध प्रमाण जाननां । फल राशिकी अर इस लब्ध राशिकी एक जाति जाननी । इहां उदाहरण । जैसैं प्यारि हाथके छिनवै अंगुल होयं तौ दश हाथके केते अंगुल होयं । ऐसैं त्रैराशिक किया। इहां प्रमाण राशि हाथ प्यारि अर अर फल राशि अंगुल छिनवै अर इच्छा राशि हाथ दश । तहां दशकों छिनवै करि गुणि प्यारिका भाग दीएं दोयसै चालीस अंगुल लब्ध राशि भया । बहुरि जैसैं तिहाई अधिक पंद्रह रुपैयानिका सवा पचीस मण अन्न आवै तौ आध पाव दश रुपैयोंका केता आवै इहां भिन्न गणित आश्रयतैं अंशनिकों जोडें प्रमाण राशि छियालीसका तीसरा भाग फल राशि एकसौ एकका चौथा भाग इच्छा राशि इक्यासीका आठवां भाग प्र. ४६, फ. १०१ इ. ८१ इहां भिन्न गणित विधानतैं फलकों इच्छा करि गुणें आठ हजार एकसौ इक्यासीका बत्तीसवां भाग भया याकों प्रमाणका भाग दीएं चौईस हजार पांचसै तियालीसकों चौदहसै बहत्तरिका भाग आया । ताका सोलह अर किंचिदून दोय तिण मात्र प्रमाण आया । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । बहुरि जहां जिस राशिका प्रमाण बधै फल थोरा होइ प्रमाण घटै फल बहुत होइ तहां व्यस्त त्रैराशिक हो है । इहां प्रमाण राशिकों फल करि गुणि इच्छाका भाग दीएं लब्ध राशिका प्रमाण हो है । जैसैं जिस वस्तुका दोय बरस पुराणीका सौ रुपैया आवै तो दश बरस पुराणीका केता रुपैया आवै । इहां प्रमाण राशि दोयकों फल राशि सौ करि गुणि इच्छा राशि दशका भाग दीएं बीस रुपैया आवै सो लब्ध-राशि जाननां । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । बहुरि पांच राशि समराशि आदि विषैं प्रमाणराशि संबंधी दोय तीन आदि राशि होय सो तो एक तरफ नीचैं नीचैं लिखिए अर याहीके नीचैं फल राशि लिखिए । अर इच्छा राशिसम्बन्धी दोय तीन आदि राशि होइ सो दूसरी तरफ लिखिए । बहुरि प्रमाणका फल राशि होइ ताकों इच्छा राशिकी तरफ लिखि दोऊ तरफ जे राशि होइं तिनका जुदा परस्पर गुणन करि बहुत प्रमाणको स्तोक प्रमाणका

भाग दीएं जो प्रमाण आवै सो इच्छा राशिका फलभूत लब्धराशि जाननां। इहां उदाहर
जैसें एक मास विषै सौ रुपैयांका दोय रुपये ब्याज आवै तौ पांच मासविषैं दोयसै पैंसठि
योंका कितना ब्याज आवैं। ऐसे पंचराशिक भया। तहां एक अर सौ तौ प्रमाण राशि त
एक तरफ लिखै अर ताके नीचैं दोय फलराशि लिखै अर पांच दोयसै पैंसठि इच्छाराशि
एक तरफ लिखै। १०० । २ । २६५ बहुरि फलराशिकों तहांतैं दूसरी इच्छाकी तरफ लिखै
१०० । २ । २६५ बहुरि परस्पर दोऊनिकों जुदे जुदे गुणें एक तरफ सौ भये एक तरफ छ्व्वी
पचास भए। बहुरि बहुत राशिकों तुच्छ राशिका भाग दीएं साढा छ्व्वीस रुपैया आए
इच्छा राशिका फलभूत लब्धराशि जाननां। बहुरि जो प्रमाणादि अंश अर हाररूप होइ तौ
पूर्ववत् फल राशिकों पलटि पीछैं दोऊ तरफके हारनिकों परस्पर पलटि दीजिए। बहुरि दोऊ
फके जुदे जुदे हार अंश होहिं तिनां परस्पर करि गुणि बहुत राशिकों अल्पराशिका
दीएं। लब्ध राशिका प्रमाण आवै है। इहा उदाहरण। जैसे—सवामास विषैं साढा
रुपैयोंका आधा रुपैया ब्याज आवै तौ साढा छह महीना विषैं सवाबारह रुपैयोंका
ब्याज आवैं। इहां भिन्न गणिततै अंश अंशनिकों मिलाएं प्रमाणराशि पांचका चौथा
अर पंद्रहका दूजा भाग भया फलराशी एकका दूजा भाग है इच्छा राशि तेरहका दूजा
अर गुणचासका चौथा भाग भया। सो ऐसैं लिखि ५ । ४ । १५ । २ फलराशिकों पलटि हारनि
पलटैं ऐसा भया ५ । २ । १५ । ४ । १ बहुरि अंश हारनिका गुणन कीएं एक तरफ तौ बारहसै
आए। एकतरफ पांच हजार छिनवै आया। बहुरि बहुत राशिकों अल्प राशिका भाग दीएं कि
ऊन सवा ब्यारि रुपैया लब्धराशि आया ऊनका प्रमाण एकका तीनसै भाग कीजै तामें एक भा
मात्र जाननां। ऐसैंही अन्यत्र जानना। बहुरि इसही विधानतैं सतराशिक नवराशिक ए
दशराशिक हो है। सो इहां विशेष प्रयोजन न जानि नाही लिखें हैं। बहुरि मिश्रक व्यवहार
विशेष प्रयोजन इहां नाहीं लिख्या हैं। कहीं प्रयोजन आवैगा तो तहां हीं वर्णन लिखैंगे॥

बहुरि श्रेढी व्यवहार लिखिए है। जहा अनेक राशिनि विषैं समानरूप बधता व घट
प्रमाण होइ अथवा गुणकार होइ तहा श्रेढी व्यवहार गणितका विधान हो है। जैसें आ
विषैं पांच अर स्थान प्रति ब्यारि ब्यारि बधता वा घटता होइ अथवा ब्यारिका गुणाकार हो
ऐसैं दशस्थान होइ तहां आदि श्रेढी व्यवहार गणितका विधान हो है तहा संज्ञा कहिए है
जो आदि विषैं प्रमाण होइ ताका नाम आदि है वा मुख है वा प्रभव है। बहुरि अंत वि
प्रमाण होइ ताका नाम अन्त है वा भूमि है। बहुरि स्थान स्थान प्रति जितना बधै वा
ताका नाम चय है वा उत्तर है। बहुरि जो स्थान स्थान प्रति गुणकार होय तौ जेतेका
गुणकार होय ताका नाम उत्तर है वा गुण है। बहुरि चयकरि बधता वा घटता अथवा गुण
कारकरि जेते संख्यारूप स्थान होइ ताका नाम पद है वा गच्छ है। बहुरि सर्व स्थानकिके
जोड़का नाम संकलन है वा पदधन है। बहुरि चयनिकों जुदे राशि आदि स्थान प्रमाण सर्व
स्थान स्थान तिनका जोड़का नाम आदि धन है। बहुरि सर्व चयनिकों जोड़ें जो प्रमाण होय

ताका नाम चयवन है वा उतरधन है। बहुरि मध्यस्थान विषै जेता प्रमाण होइ ताका नाम मध्यधन है। इत्यादि ऐसें संज्ञा जाननी। बहुरि अनेक प्रमाण जाननेके साधनभूत करणसूत्र गणित शास्त्रनि विषै कहे हैं तहां जानने। अर इस शास्त्र विषै जाका प्रयोजन आवेगा ताका करणसूत्र इस शास्त्र ही विषै लिखे हैं। तातैं जहां प्रयोजन आवे तहां ही तिनकों जानि लेने। बहुरि क्षेत्र व्यवहार कहिए है। इस शास्त्र विषै क्षेत्रका अधिकार है तातैं क्षेत्रव्यवहारका ज्ञान अवसि चाहिए। तहां प्रथम संज्ञा कहिए है। लंबाई चौडाई उचाई इन तीनां विषै जहां एक ही की विवक्षा होइ दोयकी न होइ तहां सूची क्षेत्र कहिए। बहुरि जहां दोयकी विवक्षा होइ एककी न होइ तहां प्रतरक्षेत्र कहिए वा वर्गरूप क्षेत्र कहिए। बहुरि जहां तीनांकी विवक्षा होइ तहां खात क्षेत्र कहिए वा घन क्षेत्र कहिए। ऐसें तीन प्रकार क्षेत्र कह्या। तिनमें सूची क्षेत्र विषै तौ आकारादि विशेष वा क्षेत्रफलादिक विशेष हैं नाहीं। जेता लंबाईका प्रमाण सोई तिस सूची क्षेत्रका प्रमाण है। जैसें—पचीस हाथ डोरि कहिए। बहुरि प्रतर क्षेत्र विषै आकार विशेष है सो कहिए है। तीन प्यारि कूणें जिनमें पाईए तिन क्षेत्रनिका क्रमतैं त्रिकोण चतुःकोण नाम जानने। बहुरि एक कोणतैं दूसरा कौण पर्यंत जेता क्षेत्र होइ ताका नाम भुजा है सो त्रिकोण क्षेत्रविषै तीन भुजा हो हैं तातैं ताका नाम त्रिभुज भी कहिए। चतुःकोण विषै प्यारि भुजा हैं तातैं ताका नाम चतुर्भुज भी कहिए। बहुरि इन भुजानि विषै काहूका नाम भुज वा काहूका नाम कोटि भी कहिए है। जैसें त्रिभुज क्षेत्र विषै एक भुजाकों कोटि कहिए दोय भुजानिकों भुज कहिए। चतुर्भुज क्षेत्र विषै सन्मुख दोय भुजानिका नाम कोटि कहिए। अवशेष दोय भुजानिका नाम भुजा कहिए। बहुरि इन त्रिभुज आदि क्षेत्रनिका तिस चतुरस्र आदि भी नाम है। भाषा विषै निकोटा चौकोर इत्यादि नाम हैं। बहुरि ए त्रिभुजादिक क्षेत्र अनेक प्रकार हैं। तहां जिस त्रिभुज क्षेत्रकें दोय भुजा सूधी एक टेढी ऐसी..... होय ताकों जाति त्रिभुज कहिए। तहां जो यह टेढी भुजा है ताका नाम कर्ण है वा श्रुति है। जैसें पांच हाथ ऊंचा बासके उपरितैं सूत्र लगाय तिस बासतैं सात हाथ परैं पृथ्वी विषै सूत्र स्थाप्या तिस सूत्रका जेता प्रमाण ताका नाम कर्ण जानना। बहुरि जहां एक भुज सूधी दोय टेढी होय तहां.....सिंघाडाकासा ऐसा त्रिभुज क्षेत्र होइ। याका मध्यतैं दोय भाग करिए सो दोय जाति त्रिभुज होइ जाय। बहुरि इन तीनों भुजानि विषै समान प्रमाण होइ वा अधिक हीन होइ तौ तहां सम विषम संज्ञा यथासंभव जाननी। बहुरि चतुर्भुज क्षेत्र विषै जहां समान प्रमाण दोएं प्यारौं भुज ऐसें होइ.....ताका नाम सम चतुर्भुज कहिए। बहुरि लंबाई चौडाई विषै एकका प्रमाण हीन एकका अधिक ऐसा.....होइ ताका नाम आयत चतुरस्र कहिए। बहुरि जहां प्यारौं भुजानि विषै काहूका प्रमाण हीन काहूका अधिक ऐसें.....होइ ताका नाम विषम चतुर्भुज है। बहुरि जिस क्षेत्रके पांच कूणे छह कूणे आदि होइ ताका नाम पंचकोण षटकोण कहिए। भाषाविषै पच पहलू छह पहलू इत्यादि नाम हैं। तहां पच कोणादि क्षेत्रनि विषै सम प्रमाण भएं समसंज्ञा विषम प्रमाण भएं विषम संज्ञा इत्यादि संज्ञा जाननी। इन क्षेत्र-

निके गिरदका जो प्रमाण ताका नाम परिधि है। बहुरि जहां गोलाकार त्रिये क्षेत्र ऐसा होइ। ताका नाम वृत्त क्षेत्र वा गोलक्षेत्र कहिए। तिस क्षेत्र विषैं बीचमें जेता प्रमाण ताका नाम इष्ट विष्कंभ है वा विस्तार है वा व्यास है। बहुरि इसके गिरदका जेता प्रमाण होइ ताका नाम परिधि है। बहुरि जो गोलक्षेत्रके चौगिरदा गोलक्षेत्र ऐसा होइ तहां याके अभ्यंतर तटतैं बाह्य तटपर्यंत जेता प्रमाण होइ ताका नाम बाह्य व्यास है। बहुरि अभ्यंतर दोऊ तटनिके बीचि जेता प्रमाण होइ ताका नाम अभ्यंतर सूची व्यास है। अर बाह्य दोऊ तटनिके बीचि जेता अंतराल ताका नाम बाह्य सूची व्यास है। बहुरि अभ्यंतर तटके गिरदका जो प्रमाण ताका नाम अभ्यंतर परिधि है। बाह्य तटका गिरदका जो प्रमाण ताका नाम बाह्य परिधि है। इत्यादि संज्ञा जाननी। बहुरि जो धनुषके आकार ऐसा.....क्षेत्र होइ ताका नाम धनुराकार क्षेत्र कहिए वा चापक्षेत्र कहिए तिसक्षेत्र विषैं जो सूधा प्रत्यंचावत् लंबाईका प्रमाण ताका नाम जीवा है वा ज्या है। बहुरि तिस जीवाकी एक तरफतैं लगाय दूजी तरफ धनुषकी पीठिवत् आधा गोल क्षेत्रकी परिधि रूप गिरदका प्रमाण ताका नाम धनुःपृष्ट है। बहुरि तिस जीवाकी मध्यतैं लगता धनुःपृष्टका मध्यवर्त्तपर्यंत बाणवत् सूधा क्षेत्र ताका प्रमाणका नाम बाण है। बहुरि जो जीवाकी चौडाई बहुत होय तौ तिस जीवाकी छोटा तटतैं बड़ातट दोऊ तरफ जितना जितना बधता होइ ताका नाम चूलिका है। बहुरि बड़ा तटतैं छोटा तटपर्यंत जेता परिधिका प्रमाणरूप धनुः पृष्ट रूप होय ताका नाम पार्श्वभुजा है। इत्यादि संज्ञा जाननी। बहुरि अन्य अनेक आकार लीएं क्षेत्र है तिनका स्वरूप संज्ञादिक गणित शास्त्रनि विषैं क्षेत्रव्यवहार विषैं कह्या है वा इस शास्त्र विषैं जाका वर्णन होइगा ताका तहांही स्वरूप संज्ञादिक लिखेंगे तैं जाननें। बहुरि ऐसैं जे ए क्षेत्र हैं तिनिका विवक्षित योजनादिरूप चौडा लंबा खंड कल्पना करि प्रमाण कीजिए ताका नाम क्षेत्र फल है। प्रवृत्ति विषैं याका नाम मुकसर करना कहिए हैं। जैसें च्यारि हाथ लंबा पांच हाथ चौडा क्षेत्र ताका क्षेत्रफल बीसहाथ हूवा। तहां ऐसा भाव जाननां। तिसक्षेत्रके एक हाथ लंबा एक हाथ चौडा ऐसे खंड कीजिए तौ बीस होइ। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। ऐसैं प्रतर क्षेत्रका स्वरूप संज्ञादिक कहे॥ अब घन क्षेत्रका कहिए है। जहां ऊंचाई तथा औंडाई भी होइ तहां घन क्षेत्रही है ऊंचाई औंडाईका भाव एक है। नीचेतैं ऊपरकी विवक्षा होइ तौ ऊंचाई कहिए। ऊपर तैं नीचेकी विवक्षा होइ तौ औंडाई कहिए। सो याका नामा बेध है वा खात है वा उच्छ्राय है इत्यादि नाम हैं। बहुरि जो याका क्षेत्रफल करिए ताका नाम खात फल वा घन फल जानना। इहां विवक्षित चौडा लंबा ऊंचा खंड कल्पना करि प्रमाण कीजिए। जैसें च्यारि हाथ लंबा च्यारि हाथ चौडा पांच हाथ ऊंचा क्षेत्रका खात फल असी हाथ होइ तहां ऐसा भाव जाननां। एकहाथ लंबा एक हाथ चौडा एक हाथ ऊंचा ऐसें खंड कीजिए तौ असी होइ। बहुरि जो समभूमि उपरि अन्नादिकका राशि करिए ताका क्षेत्रफलको सूची फल कहिए है। बहुरि कोई गिंदडीके आकारि क्षेत्र होइ कोई बगडीके आकार होइ इत्यादि घनरूप विषैं भी अनेक आकार पाईए है। ऐसें ही और भी सर्व स्वरूप जानना। बहुरि जो क्षेत्र अनेक आकार लीए होइ तिसक्षेत्र विषैं

संभवते जुदे जुदे आकार कल्पना करने। जैसें ऐसा.....आकार रूप क्षेत्र विषैं एक चतुर्भुज एक त्रिभुज.....ऐसें दोय खंड कल्पने बहुरि तिनं खंडनिके जुदे जुदे क्षेत्रफल करि जोडें तिसका क्षेत्रफल हो है। बहुरि कहीं त्रिभुज क्षेत्र विषैं अनेक प्रकार खंड कल्पना करि तिनके क्षेत्रफल करि जोडि तिस क्षेत्रका क्षेत्रफल कहिये है। ऐसें क्षेत्र व्यवहार विषैं केती इक संज्ञा वा तिनका स्वरूप इहां कह्या बहुरि इन विषैं किसीका प्रमाण जानि किसीका प्रमाण जाननेके अर्थि करणसूत्र हो हैं। जैसें त्रिभुजक्षेत्र विषैं भुजकोटि कहि करणं जाननेकों करणसूत्र कहिए। वा गोल क्षेत्रविषैं व्यास कहि परिधि जाननेकों करणसूत्र कहिए सर्व विधि क्षेत्रनि विषैं प्रमाण जानि क्षेत्र फल जाननेकों करणसूत्र कहिए। सो करणसूत्र गणित शास्त्रनि विषैं कहे है। अर इस शास्त्र विषैं जिनका प्रयोजन पाईए है ते करणसूत्र इस ही शास्त्र विषैं भी कहे हैं। सो जहां वर्णन होइगा तहां तिनकों जाननें। ऐसें क्षेत्र व्यवहार कह्या। या प्रकार कछू गणित वर्णन इहां लौकिक गणित अपेक्षा कीया॥

बहुरि अलौकिक गणित अपेक्षा अलौकिक गणितनिकी संदृष्टि वा संख्यातादिकनकी संदृष्टिका वर्णन गोमट्टसार शास्त्रकी भाषा टीका विषैं संदृष्टि अधिकार कीया है तहां लिखी है सो तहांतैं जाननी। इहां विशेष प्रयोजन जानि विशेष लिखी है। इहां स्तोक प्रयोजन जानि स्तोकसा वर्णन लिख्या है। तहां अलौकिक गणित लिखनेमें ऐसी संदृष्टि जाननी। सामान्यपनें संख्यातकी ऐसी....असंख्यातकी ऐसी....अनंतकी ऐसी ख। विशेषपनें जघन्य संख्यात दोय तातकी ऐसी २ मध्यम संख्यातकी अनेक प्रकार उत्कृष्ट संख्यातकी ऐसी १५ अथवा ऐसी १६। इहां जघन्य परीतासंख्यात विषैं एक घटावनेकी ऊपर सहनानी है ऐसें सर्वत्र जाननां। बहुरि जघन्य परीतासंख्यातकी ऐसी १६ मध्य परीतासंख्यातकी नाना प्रकार उत्कृष्ट परीतासंख्यातकी ऐसी ६ जघन्य युक्तासंख्यातकी ऐसी २ यहु ही आवलीकी सहनानी है। मध्य युक्तासंख्यातकी नाना प्रकार उत्कृष्ट युक्तासंख्यातकी ६ जघन्य असंख्यातासंख्यातकी ऐसी ४ सोई प्रतरावलीकी सहनानी है। मध्य असंख्यातासंख्यात विषैं आठ उपमा प्रमाण पाईए है। तिन विषैं पल्यकी ऐसी प सागरकी ऐसी सा सूच्यंगुलकी ऐसी २ प्रतरांगुलकी ऐसी ४ घनांगुलकी ऐसी ६ जगच्छ्रेणीकी ऐसी—जगत्प्रतरकी ऐसी=घनलोककी ऐसी ७ बहुरि इहां ही जगच्छ्रेणीकों सातका भाग दीएं लोकरूप राजू हो है तातकी ऐसी ७ जगत्प्रतरकों पुनश्चासका भाग दीएं प्रतर राजू हो है तातकी ऐसी ४९ घनलोकको तीनसै तियालीसका भाग दीएं घनरूप राजू हो है तातकी ऐसी ३४३ बहुरि अन्य क्षेत्रनिकी अनेक प्रकार उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातकी ऐसी २५५ अथवा ऐसी २५६ बहुरि जघन्य परीतानंतकी ऐसी २५६ मध्य परीतानंतकी नाना प्रकार उत्कृष्ट परीतानंतकी ऐसी ज ज क जघन्य युक्तानंतकी ऐसी ज ज मध्य युक्तानंतकी नाना प्रकार उत्कृष्ट युक्तानंतकी ऐसी ज ज क जघन्य अनंतानंतकी ज ज क ब मध्य अनंतानंत विषैं जीव राशिकी ऐसी १६ इहां भी सर्वत्र जीव राशिकी ऐसी १६ सिद्ध राशिकी ऐसी ३ पुद्गल राशिकी ऐसी १६ वा अन्य क्षेत्रनिकी एक योग्य अनेक प्रकार उत्कृष्ट अनंतानंतकी केवलज्ञान प्रमाणरूप सर्वकी ऐसी (के. ऐसे अक्षरनि

गणित विषैं संदृष्टि जाननी । बहुरि इनके संकलनादि विषैं जैसैं लौकिक गणित विषैं लिखनेका विधान कह्या तैसैं ही इहां जाननां । जैसैं पंच अधिक हजार ऐसैं लिखिए ५, तैसैं ही सूच्यंगुल अधिक जगच्छ्रेणीकों ऐसैं लिखिए २ । बहुरि जैसैं पांच गुणा हजार ऐसैं १०००।५ लिखिए तैसैं ही असंख्यात गुणा लोक ऐसैं लिखिए ≡ 9 इत्यादि जाननां । बहुरि राशि उक्त किंचित् मिलावनां होइ तहां ऊपरि ऊभी लीक करि दीजिए। जैसैं किंचित् अधिक लोककी संदृष्टि ऐसी ⊥ बहुरि राशि विषैं किंचित् घटावना होइ तहां आगैं आडी लीक करि दीजिए। जैसैं किंचिदून जीव राशिकी संदृष्टि ऐसी १६—बहुरि गुणकारादि विषैं जैसैं लौकिक गणित विषैं वर्णन किया है तैसैं ही जाननां । विशेष इतनां इहां जैसा जहां संभवै तैसा तहां अलौकिक संदृष्टि रूप प्रमाण जाननां । बहुरि कहीं अक्षरादि रूप संज्ञा जाननी है । जैसैं अर्द्धछेदनिकी संदृष्टि ऐसी (छे) बहुरि अन्य अनेक प्रकार लौकिक संदृष्टि जाननी । ऐसैं अलौकिक गणित विषैं सरूप दिखाया सो इस शास्त्रविषैं जहां प्रयोजन आवैगा तहां लिखन होगा सो जाननां ॥

इति परिशिष्ट समाप्त.

अगरचंद भैरोंदान सेठिया
जैन ग्रन्थालय,
बीकानेर, (राजपूताना.)

श्रीमन्नेमिचंद्राचार्यविरचित

त्रिलोकसार

पंडितवर श्रीटोडरमल्लकृत हिंदीभाषाटीका सहित।

दोहा—त्रिभुवनसार अपारगुन, ज्ञायक नायकनंत।
त्रिभुवनहितकारी नमौं, श्री अरहंत महंत ॥ १ ॥
तीनभवनके मुकुट मनि, गुन अनंतमय शुद्ध।
नमौं सिद्ध परमातमा, वीतराग अविरुद्ध ॥ २ ॥
तीनभुवनथिति जानिवे, आप आपमय होय।
परतें भये विरक्त अति, नमौं महामुनि सोय ॥ ३ ॥
तीनभुवन मंदिर विषैं, अर्थ प्रकाशन हार।
जैनवचनदीपक नमौं, ज्ञानवरन गुनसार ॥ ४ ॥
तीनभुवनमाहिं जे थली, धर्मक्षेत्रसाकार।
ते सब वंदौं भावजुत, सुभवरन सुखसार ॥ ५ ॥
ऐसे मंगलरूप सब, निनवे बंदे पाय।
अब निजु रचना कारन हो, नानाविधि सुखदाय ॥ ६ ॥

अथ मंगलाचरण करि श्रीमत् त्रिलोकसार नाम ग्रंथकी भाषाटीका करिहैं है। ताके [illegible] टीका अनुसार लिए मूलग्रंथका अर्थ लिखिए है।

कवित्त—तीनभुवन थिति जिनपतिकी अति भक्तिभावसे करि स्तुति एम,
ग्रंथ त्रिलोकसारकी टीका करनेको लिखिवे सुखधाम।
विविधमात्र ज्ञानके धारी भव्य जीव जे हैं अधिकार,
तिनके संबोधनको कारण ऐसा जानहु मंदविचार ॥ १ ॥

अडिल्ल—अरहंतादिक गुरि भूरि गुणधारी है, अनुचर्मके धारक अति उदार है।
जिनमतके विपरीत कुमतमल काटया, वादिगजूथ हनन हेतु केहरि है ॥ २ ॥
आगे सर्व मुनिनिको जिनवरवाणिसी, अरथी अर्थ प्रगटि करनको धारिहै।
टीका सहित त्रिलोकसारको हृदै करी सदा, सज्जनपुरुषनिके मुद करनको है ॥ ३ ॥

---

१ यहांसे आगे "इस ग्रन्थकी [illegible] टीका [illegible] आगे [illegible] अब यहां ही देख लें।

ऐसें संस्कृत टीकाकार मंगलाचरण करैं है। श्रीमत् बहुरि कादाचित्क नाहीं ऐसा नित्य बहुरि प्रतिमान जो मर्यादारूप प्रमाण ताकरि सहित बहुरि प्रतिपक्षी कर्मकरि रहित बहुरि इंद्रियवत् अनुक्रमतें जाननेंकी रहित ऐसा जो केवलज्ञानरूपी लोचन तेहकरि अवलोके हैं सकल पदार्थनिका समूह जिहिं ऐसा, बहुरि संसारदुःखतें छुडावनेंकों है देशना जाकी ऐसा भव्यनिका समूह जिहिं ऐसा, बहुरि तीर्थंकर प्रकृतिरूप पुण्यकी महिमाकरि भव्यजननिकें उपजाया है समवसरण आठ प्रातिहार्य चौंतीस अतिशय आदि बहिरंग लक्ष्मीका विशेष जाके ऐसा, बहुरि निर्दोष हैं अठारह दोष जाने ऐसा, बहुरि सर्वांगपनें करि आत्मास्वरूप करी है अनंत चतुष्टयरि गुण समूहरूप अंतरंग लक्ष्मी ताकरि प्रकट किया है परमात्मस्वरूप प्रभाव जाने ऐसा जो श्रीवर्द्धमान नामा तीर्थंकर देव तीह सों सर्व भाषामई दिव्यध्वनि करि जाका अर्थ लिया है। बहुरि सात ऋद्धिनिकरि संपूर्ण जो गौतमस्वामी समस्त विद्याका परमेश्वर केवली तीह जाका शब्दब्रह्म नाका विशेष रच्या है। बहुरि तिस अर्थका ज्ञान अर कवित्वादि विज्ञानकरि संयुक्त बहुरि पापतें भयभीत ऐसो जु गुरु तिनकी परंपराका अनुक्रमनेंकरि विच्छेदरहित प्रवर्तमान है। बहुरि सूत्रका अर्थ अन्यथा होइ नष्ट न भया है तातैं केवल ज्ञानहीके समान है-ऐसा जु करणानुयोग नाम परमागम ताहि कालके अनुसार संक्षेपरूपकरि निरूपण करनेका है अभिप्राय जाका ऐसा जो भगवान् नेमिचंद्र नामा सैद्धांतदेव चारि अनुयोगरूपी चारि समुद्रनिका पारगामी सो चामुंडरायके सबोधनेंके मिसकरि समस्त शिष्यजननिके संबोधनेके अर्थि त्रिलोकसार नामा ग्रंथकों रचतासता ताकी आदिविषैं प्रथम ही निर्विघ्नपनैं शास्त्रकी समाप्तता होइ इत्यादि फलसमूहकों विचार विशिष्ट जो अपना इष्टदेव ताहि स्तवै है;—

वलगोविंदसिहामणिकिरणकलावरुणचरणणहकिरणं।
विमलयरणेमिचंदं तिहुवणचंदं णमंसामि ॥ १ ॥

वलगोविन्दशिखामणिकिरणकलापारुणचरणनखकिरणम्।
विमलतरनेमिचंद्रं त्रिभुवनचंद्रं नमस्यामि ॥ १ ॥

अर्थ—कहिये हैं। **नमस्यामि** कहिए नमस्कार करौं हौं। किसहिं नमस्कार करौं हौं। **विमलतरनेमिचंद्रं** विगत कहिए विनष्ट भया है मल कहिए द्रव्यभाव भेदकौं लिए आत्माके गुणका घातक कर्म वा शरीरका मल धातु जातै सो विमल जानना। बहुरि आप विशुद्धताका जु उदय ताकी परम उत्कृष्टताकौं प्राप्त होतसता अन्य जे आपकौं आश्रित भए भव्य जीव तिनिके भी कर्ममलके दूरि करनेकों कारण है तातैं अतिसय करि विमल है सो विमलतर जानना। इस विशेषणकर अपाय अतिशय प्रगट किया। अपाय नाम नासका है सो इंद्रादिक भी जाके नाश करनेकौं समर्थ नाहीं ऐसें कर्ममलका नाश किया ऐसा अतिशय भगवतविषैं ही है। ऐसा इस विशेषणका अभिप्राय है। बहुरि नेमिनाथ नामा बाईसवां तीर्थंकर परमदेव सो नेमिचंद्र जानना। विमलतर जो नेमिचंद्र ताहि नमस्कार करौं हौं। कैसा है विमलतर नेमिचंद्र। **त्रिभुवनचंद्रं** त्रिभुवन कहिये तीन लोक तिनका चंद्र कहिए चंद्रमावत् प्रकास करनहारा है। **भावार्थ**—तीन लोकके

स्वरूपका उपदेस दाता है वा तीन लोकके स्वरूपका ज्ञाता है। इस विशेषणकर वाक् अतिशय वा प्राप्ति अतिशय प्रगट किया है। तहां वाक् नाम वानीका है, सो गणधर इंद्रादिकनिके वचनतैं अगोचर ऐसा तीन लोकका स्वरूप वानीकरि कहिये है ऐसा वाक् अतिशय भगवंत विषैं है। बहुरि प्राप्ति नाम लाभका है सो गणधर इंद्रादिकके ज्ञानतैं अगोचर ऐसा तीन लोकका ज्ञायक केवल ज्ञानका लाभ भया है ऐसा प्राप्ति अतिशय भगवंतविषैं है। बहुरि 'त्रिभुवनचंद्र' ऐसा विशेषण इस अवसर विषैं योग्य है जातैं तीन लोकके स्वरूपका निरूपण विषैं किया है उत्तम जानैं ऐसा जो आचार्य ताकै शब्द ज्योतिकरि वा ज्ञानज्योतिकरि तीन लोकके स्वरूपका प्रकाशककों ही नमस्कार करना योग्य ही है। बहुरि कैसा है विमलतर नेमिचंद्र। **बलगोविंदशिरवामणिकिरणकलापारुण-चरणनखकिरणं** बलगोविंद कहिए अपने चरणकमलकों नमस्कार करते ,जे बलभद्र नारायण तिनका शिरवामणि कहिए मुकुटका अग्रभागविषैं लागा हुआ पद्मरागमणि ताकी जु किरणकलाप कहिये प्रभानका समूह ताकरि अरुण कहिए अतिरक्त भया है चरणनखकिरण कहिए चरणकमलके नखनिकी किरणनिका पुंज जाका ऐसा है। इस विशेषणकर भगवंतका पूजा अतिशय और अतिशयनिका सहचारी प्रगट किया। पूजा नाम पूजनेका है सो जिनको लोकविषैं पूज्य मानिए हैं ऐसे बलभद्र नारायण तेऊ भगवंतके चरणकमलकों पूजैं हैं ऐसा पूजा अतिशय भगवंतविषैं है। इहां प्रासंगिक श्लोक कहिए हैं "अपाय" इत्यादि। याका अर्थ—अपायप्राप्ति वाक् पूजारूप अतिशय बहुरि निरालंब विहार वा स्थिति वा आहारादिक विना शरीरकी प्रवृत्ति इत्यादिक ये प्रगट जिनदेवके अतिशय हैं। अथवा अन्य अर्थ कहिए हैं 'नमस्यामि' कहिए नमों हौं। काहि "विमलतरनेमिचंद्र" नेमि ऐसा नाम चक्रधुरा जो पहाकी धुर ताका है। सो जैसें चक्रधरा रथके चलनेकों कारण है तैसें धर्मरथके प्रवर्तनेकों कारण हैं तातैं नेमि कहिए। बहुरि चंद्रपति कहिए तीन लोकके भव्य जीवनिके नेत्र अर मनकौं आल्हाद करै है तातैं चंद्र कहिए। **भावार्थ**—इंद्रादिकनिकै भी न संभवै ऐसा जो रूप अतिशय ताकरि संयुक्त हैं। नेमि अर सोई चंद्र सो नेमिचंद्र अर विमलतर कहिए अतिशयकर निर्मल ऐसो जो नेमिचंद्र सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए। अथवा नयति कहिए यथार्थ पदार्थ ताकौं जानैं ऐसा जु नेमि कहिए ज्ञान बहुरि विगत भया है मल कहिए अज्ञान जानैं सो विमल अतिशय कर विमल होइ सो विमलतर कहिए। विमलतर जो नेमि सो विमलतर नेमि सकल विमल केवलज्ञान जानना। तिह करि संयुक्त जो चंद्र कहिए आल्हादकारी सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए। अथवा विमलतराः कहिए रत्नत्रयकर पवित्र भया है आत्मा जिनका ऐसे जु आचार्यादिक तेई भए नेमि कहिए नक्षत्र तिनका चंद्र कहिए जैसें नक्षत्रनिका स्वामी चंद्रमा है तैसें जो स्वामी सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए। ऐसें विमलतर नेमिचंद्र जो अंतका वर्द्धमान तीर्थंकर देव वा चौवीस तीर्थंकरनिका समुदाय ताहि नमों हौं। कैसा है। त्रिभुवनचंद्र त्रिभुवन कहिए तीन लोकविषै [illegible] तिनका चन्द्रमावत् अज्ञान अंधकार नाश करै है ऐसा है। बहुरि कैसा है।

[illegible] अवृत्तावः परिवर्तनरूप जो पराक्रम सामर्थ्य ताका वर अथवा इंद्रादिक देवनिका मेल्या जो [illegible] अतिमनोहर रूप सो वर जाके पाइए ताकौं वर कहिए [illegible]

प्रासंगिक श्लोक "बले" इत्यादि है। याका अर्थ—शक्ति अर सैन्य अर स्थूलपनौं अर रूप इत्यादि नाम बल है सो यहु बल शब्द नपुंसकलिंगी है बहुरि बल वीर्य अर दैत्य अर काक अर बलवान् इत्यादि नाम बल है। सो यहु बल शब्द पुल्लिंगी है सो यहां बलशब्द करि शक्ति सैन्य रूप—ऐसा अर्थ ग्रहे। बहुरि गां कहिए स्वर्ग ताहि विंदति कहिए पावै सो गोविंद देवनिका इंद्र जानना। बहुरि अर सोई गोविंद सो बलगोविंद ताकी शिरोमणिकी किरणनिका समूहकरि अरुण भए हैं चरणनिके नखनिका किरण जाकी ऐसा है। **भावार्थ**—भक्तिके समूहतैं नम्रीभूत भए इंद्रादिक समस्त देव तिनिकी मुकुटमणिकी किरणनिकी पंक्तिकरि रक्त किया है चरणनिके नखनिकी किरण जाकी ऐसे भगवंत हैं। अथवा अन्य अर्थ कहैं हैं। नमस्यामि कहिए नमौं हौं। काहि? विमलतरज्ञानिन पच्चीसमलरहित सम्यक्तैं युक्त हैं वा विशुद्धज्ञानकरि पूर्ण है वा अतीचार रहित मनोज्ञ चारित्र करि पवित्र भया है तातैं विमलतर कहिए। विमलतर जो नेमिचंद्र नामा आचार्य सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए ताहि नमौं हौं। ऐसें चामुंडराय अपने गुरुकों नमस्कारपूर्वक इस शास्त्रकी प्रारंभै है कैसा है। 'त्रिभुवनचंदं' तीनलोकके जीवनकैं चंद्रमासमान धर्मरूपी अमृतके श्रवनेतैं चंद्र समान है। अथवा चंद्र सोनां तिंह समान आदर करने योग्य है। बहुरि कैसा है। "बल" इत्यादि बल कहिए बहत्तरि नियोगकी प्रवृत्तिरूप पराक्रम वा हस्ती आदि सैन्य जाके पाइए ऐसा चामुंडराय बहुरि गां कहिए पृथ्वी ताहि विंदति कहिए पावै ऐसा गोविंद कहिए राचमल्लदेव राजा इन दोऊनिके मुकुटमणिकी किरणनिका समूह करि लाल किया हैं चरणनिके नखनिकी किरण जाकी ऐसा है ऐसें प्रथमसूत्रका अर्थ जानना ॥ १ ॥

आगैं पहली दूसरी जो दोय गाथा तिनकरि किया जो जिन अर जिनबिंब अर जिनमंदिर तिनकौं नमस्कार तीहकरि अर्हंत सिद्ध आचार्य बहुश्रुत साधु जिनवच जिनधर्म जिनबिंब जिनमंदिर-जो नवदेवता तिनकौं नमस्कार करता संता इस ग्रंथविषैं पांच अधिकार हैं ताकी सूचना करता संता गाथा कहै है;—

भवणव्वितरजोइसविमाणणरतिरियलोयजिणभवणे।
सव्वामरिंदणरवइसंपूजियवंदिए वंदे ॥ २ ॥

भवनव्यंतरज्योतिर्विमाननरतिर्यग्लोकजिनभवनानि।
सर्वामरेंद्रनरपतिसंपूजितवंदितानि वंदे ॥ २ ॥

अर्थ—भवनवासीनिके भवन बहुरि व्यंतरनिके स्थान बहुरि ज्योतिष्कनिके विमान बहुरि मानुषोत्तरके अभ्यंतर मनुष्यलोक, बाह्य तिर्यंचलोक इनविषैं जे जिनभवन हैं सर्व देवेंद्र अर नरपति राजा तिनकरि पूजनीक हैं अर वंदनीक हैं तिनकौं मैं वंदौं हौं। इस ही क्रमतैं इस ग्रंथविषैं भवनवासी व्यंतर जोतिषी वैमानिक मनुष्य तिर्यंच लोकका वर्णनरूप पांच अधिकार जानने। बहुरि पहले जो (भूमिकामें) मान आदिकका वा लोकादिकका वा नारकनिका वर्णन किया है सो प्रसंग पाइ किया है ॥ २ ॥

आगैं तिन जिनमंदिरनिका आधारभूत लोक सो कहां है ऐसी आशंका होत संतैं सूत्र कहैं हैं;—

सव्वागासमणंतं तस्स य बहुमज्झदेसभागम्हि ।
लोगोसंखपदेसो जगमेंढियणप्पमाणो हु ॥ ३ ॥
सर्वाकाशमनंतं तस्य च बहुमध्यदेशभागे ।
लोकोऽसंख्यप्रदेशो जगच्छ्रेणिघनप्रमाणो हि ॥ ३ ॥

अर्थ—सर्व आकाश अनंत प्रदेशी है ताका बहुमध्यप्रदेशभागे, यत्रतत्र कहिए अनियतरूप वा रचनारूप असंख्याते जे आकाशके मध्यप्रदेश सोई भाग कहिए आकाशका संख्यातवां भाग तिस विषै लोक है अथवा बहु कहिए आठ जे गऊका स्तनके आकारि आकाशके मध्यप्रदेश ते हैं मध्यप्रदेशविषै जाके ऐसे संस्थानविषै लोक है । लोकके प्रदेश असंख्य गिनती लिए हैं तातैं असंख्यातैं एक प्रदेश हीन ताही तातैं दोय प्रदेश मध्य कहने । अर लोक घनरूप है तातैं दोय प्रदेशनिका घनरूप ऐसे आठ प्रदेश प्रमाण होइ तातैं आठ हैं मध्यप्रदेश जाके ऐसा लोक कह्या है । जैसे सौ हाथ चौडा सौ हाथ लंबा चौरासी हाथ ऊंचा क्षेत्रविषै मध्यवर्ती आठ हाथ ही दोय तैसें जानना । सो लोक असंख्यात प्रदेशी है सो आगें जाका स्वरूप कहिए है ऐसी जो जगच्छ्रेणी ताका घन सौ प्रमाण जानना ॥ ३ ॥

आगें लोकके स्वरूपका अन्यथा अज्ञान दूरि करनेकौं कहै है;—

लोगो अकिट्टिमो खलु अणाइणिहणो सहावणिव्वत्तो ।
जीवाजीवेहिं फुडो सव्वागासावयवो णिच्चो ॥ ४ ॥
लोकः अकृत्रिमः खलु अनादिनिधनः स्वभावनिर्वृत्तः ।
जीवाजीवैः स्फुटः सर्वाकाशावयवः नित्यः ॥ ४ ॥

अर्थ—लोकका तौ अधिकार था ही बहुरि लोक शब्दका अर्थ विशेष है सो लोकहीं बारंबार कहि सूत्रकारौंके दृढ करनेके अर्थ लोक है ऐसा कह्या है । इस विशेषण करि लोकका अन्यथा मानै है जो सूत्रकारौं ताका निराकरण किया । कैसा है लोक । अकृत्रिम कहिए बनावटी किया नाहीं है । इस विशेषण करि लोकका ईश्वरादि कर्ता मानै है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । अनादिनिधनः कहिए आदि अंतकरि रहित है । इस विशेषण करि जो बहुरि कोई करै है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । स्वभावनिर्वृत्तः कहिए स्वयं अकृत्रिमरूप सिद्ध है । इस विशेषण करि परमाणुनिकरि लोकका आरंभ हो है ऐसे मानैहीका निराकरण किया है । बहुरि कैसा है । जीवाजीवैः स्फुटः कहिए जीव अजीव द्रव्यनिकरि भर्या है । इस विशेषणकरि शून्यकौं लोक मानै है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । सर्वाकाशावयवः कहिए सर्व आकाशरूप है । इस विशेषणकरि अलोकाकाशका अभाव मानै है ताका निराकरण किया । बहुरि कैसा है । नित्यः कहिए शाश्वता है । इस विशेषणकरि लोकको क्षणिक कहै ऐसा बौद्धमतका निराकरण किया । इहां कोऊ कहै लोकको कहिए आदि बहुत देखिए तो लोक ऐसे बहु द्रव्यरूप बहुत कालतैं लोकना कह्या है ॥ ४ ॥

आगें जिस बहु द्रव्यका बहुतपना अवयवनिके अवलंबनतैं संभवै कहिए है—

धम्माधम्मागासा गदिरागदि जीवपोग्गलाणं च ।
जावत्तावल्लोगो आयासमदो परमणंतं ॥ ५ ॥

धर्माधर्माकाशा गतिरागतिः जीवपुद्गलयोः च ।
यावत्तावल्लोक आकाशं अतः परमनंतम् ॥ ५ ॥

अर्थ—धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य अर जीव पुद्गलनिका गमनागमन अर चलने कालाणू जे ते आकाशकों अभिव्यापक होइ वर्तें तितनें आकाशकों लोक कहिए, याके पीछे अलोकाकाश है सो अनंत है संख्यादिरूप नाहीं है ॥ ५ ॥

आगें अन्यवादीनिकरि कल्पना किया हुवा लोकका आकार ताके निराकरण करनेकों कहै हैं;—

उड्ढियदलेक्कमुरवद्धयसंचयसण्णिहो हवे लोगो ।
अद्धुदयो मुरवसमो चोद्दसरज्जूदओ सव्वो ॥ ६ ॥

उद्धृतदलैकमुरजध्वजसंचयसन्निभो भवेत् लोकः ।
अर्धोदयः मुरजसमः चतुर्दशरज्जूदयः सर्वः ॥ ६ ॥

अर्थ—ऊभी करी हुई आधी मृदंग सहित ऐसा ध्वजा मृदंगके आकारि लोक है। कोऊ जानैंगा जैसें मृदंग बीचिमें सून्य है तैसें लोक भी शून्य होगा तहां कहै हैं कि ध्वजानिका जु समूह ताके समान मध्यविषैं भरितावस्था लिएं लोक है। तहां अर्धमृदंगका उदयसमान अधोलोक अर एक मृदंगका उदयसमान ऊर्ध्वलोक मिलि सब लोक चौदह राजू ऊंचा जानना ॥ ६ ॥

आगें प्रसंग पाइ राजूके स्वरूपकी प्रतीतिके अर्थ सूत्र कहैं हैं;—

जगसेढिसत्तभागो रज्जू सेढीवि पल्लछेदाणं ।
होदि असंखेज्जदिमप्पमाणविंदंगुलाण हदी ॥ ७ ॥

जगच्छ्रेणिसप्तमभागः रज्जुः श्रेणिरपि पल्यच्छेदानाम् ।
भवति असंख्येयप्रमाणवृंदांगुलानां हतिः ॥ ७ ॥

अर्थ—अंकसंदृष्टि दिखावनेके द्वारि गाथाका अर्थ वर्णिए हैं। जगच्छ्रेणीका सातवा भाग प्रमाण रज्जु है। ऐसें अंकसंदृष्टिकरि जैसें जगच्छ्रेणीका प्रमाण बादालकरि गुण्या हुवा एकडी प्रमाण ताकों सातका भागदिएं एक भाग प्रमाण रज्जु होइ १८=४२=३ बहुरि जगच्छ्रेणी कहा सो कहिए है। पल्यके जेते अर्धच्छेद हैं तिनकों असंख्यातका भाग दिएं एक भागविषैं जो प्रमाण आवै तितनें घनांगुल मांडि तिनकों परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी हो है। अंक संदृष्टिकरि जैसें पल्यका प्रमाण सोलह ताके अर्धच्छेद चारि ताकों असंख्यातकी सहनानी दोय ताका भाग दिएं पाया दोय तहां घनांगुलका प्रमाण पगडी करि गुण्या हुवा बादाल प्रमाण इनकों दोय जायगा मांडि परस्पर गुणें बादालकी गुणित एकडी प्रमाण जगच्छ्रेणी हो है ॥ ७ ॥

आगे घनांगुलका स्वरूपकी प्रतीतिके अर्थ कहै हैं;—

पल्लछिदिमेत्तपल्लाण्णोण्णहदीए अंगुलं सूई ।
तव्वग्गघणा कमसो पदरघणंगुल समक्खादो ॥ ८ ॥

पल्यच्छेदमात्रपल्यानामन्योन्यहत्या अंगुलं सूची ।
तद्वर्गघनौ क्रमशः प्रतरघनांगुलं समाख्याते ॥ ८ ॥

अर्थ—पल्यके जेते अर्धच्छेद होहि तिनतें पल्य मांडि तिनकों परस्पर गुणें सूच्यंगुल हो । जैसें पल्यका प्रमाण सोलह ताके अर्धच्छेद चारि सो चारि जायगा सोला सोला मांडि इनकों परस्पर गुणें ६५५३६ होइ सोई सूच्यगुलका प्रमाण जानना । बहुरि सूच्यंगुलका जो वर्ग सो प्रतरांगुल जानना । जैसें पण्णट्ठीका वर्ग बादाल होइ सो प्रतरांगुल है । बहुरि सूच्यंगुलका घन घनांगुल जानना । जैसे पण्णट्ठीका घन है सो पण्णट्ठी करि गुणा हुवा जो बादाल तिह प्रमाण हो सो घनांगुल होय । ऐसें क्रमतें कहे हैं । इहां एकट्ठी आदिक वा अर्धच्छेद आदि जे कहे हैं तिनका स्वरूप आगे कहिएगा सो जानना ॥ ८ ॥

आगें मानकी प्रतीतिके अर्थ प्रक्रिया कहैं हैं;—

माणं दुविहं लोगिग लोगुत्तरमेत्थ लोगिगं छद्धा ।
माणुम्माणावमाणं गणिपडितप्पडिपमाणमिदि ॥ ९ ॥
मानं द्विविधं लौकिकं लोकोत्तरमत्र लौकिकं षोढा ।
मानोन्मानावमानं गणिप्रतितत्प्रतिप्रमाणमिति ॥ ९ ॥

अर्थ—मान दोय प्रकार है लौकिक मान अर लोकोत्तरमान । इहां लौकिकमान छह प्रकार है—मान, उन्मान, अवमान, गणिमान, प्रतिमान, तत्प्रतिमान, ऐसें जानना ॥ ९ ॥

आगें इन छहोंनिकी दृष्टांतपूर्वक उत्पत्ति कहैं हैं;—

पत्थतुलचुलयपगप्पहुदी गुंजातुरंगमोल्लादी ।
दव्वं खित्तं कालो भावो लोगुत्तरं चदुधा ॥ १० ॥
प्रस्थतुलाचुलकैकप्रभृति गुंजातुरंगमूल्यादि ।
द्रव्यं क्षेत्रं कालो भावो लोकोत्तरं चतुर्धा ॥ १० ॥

अर्थ—प्रस्थ जो मागी इत्यादिकनौं मान कहिए जैसें पाई मागी इत्यादिक करि अन्नादिकका प्रमाण करिए । बहुरि तुला जो तालडी इत्यादिकनौं उन्मान कहिए । जैसें तालडीकरि तौलि प्रमाण करिए । चुलुक जो चटु इत्यादिकनौं अवमान कहिए, जैसें चटु प्रमाण जल है इत्यादिक कहिए । बहुरि एक इत्यादिकनौं गणिमान कहिए, जैसें एक दोय तीन आदि गणना करि प्रमाण करिए । बहुरि गुंजा जो चिरमटी इत्यादिकनौं प्रतिमान कहिए, जैसें रत्ती मासा इत्यादि प्रमाण करिए । बहुरि तुरंगमोलि जो घोडेका मोल इत्यादिकनौं तत्प्रतिमान कहिए, जैसें अरबादिक देनि घोडेका मोल करिए । ऐसें लौकिकमान जानना ॥ बहुरि लोकोत्तरमानके भेद अब कहिए है । द्रव्य क्षेत्र काल भाव—ऐसें लोकोत्तरमान चारि प्रकार है ॥१०॥

आगें तिन चारोंकी क्रमतें जघन्य उत्कृष्टकी प्रतीतिके अर्थ चारि गाथा कहे हैं;—

परमाणु सयलदव्वं एगपदेसो य सव्वपागासं ।
इगिसमय सव्वकालो सुहुमणिगोदेसु पुण्णेसु ॥ ११ ॥

३ × × १००० यो। इहां तीन लक्षकी सहनानी ऐसी ३ ल, लक्षकी चौथाईकी ऐसी ¾ ल, हजारकी ऐसी १००० इनकी चौथाईतै परिधिकौं गुणें क्षेत्रफल कह्या सो ताका विधानरूप वासनाका वर्णन संस्कृत टीकातैं जानना ॥ १७ ॥

आगैं स्थूल खातफलविषैं जे प्रमाण योजन कहे तिनका व्यवहार योजन करता संता सूत्र कहै है;—

थूलफलं ववहारं जोयणमवि सरिसवं च कादव्वं।
चउरस्ससरिसवा ते णवसोडस भाजिदा वट्टं ॥ १८ ॥

स्थूलफलं व्यवहारं योजनमपि सर्षपश्च कर्तव्यः।
चतुरस्रसर्षपास्ते नवषोडश भाजिता वृत्तम् ॥ १८ ॥

अर्थ—तारतम्य विना स्थूलपनैं करि जो क्षेत्रफल होइ सो स्थूलफल कहिए। सूक्ष्म परिधिकरि सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है सो ताका विधान आगैं वर्णन होईगा। इहां स्थूल क्षेत्रफलकी अपेक्षा ही वर्णन है सो इहां स्थूल क्षेत्रफलविषै प्रमाण योजन इतने हैं—३ ल ¾, १०००। तहां इस प्रमाणयोजनके पांचसै व्यवहार योजन होइ तौ इतने योजननिका कितनें व्यवहार योजन होइ ऐसैं त्रैराशिक विधिकरि इनके व्यवहार योजन करनें। तहां अंगुल तीन प्रकार है—उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल, आत्मांगुल। तहां उत्सेधांगुलतैं जहां योजनका प्रमाण होइ सो व्यवहार योजन जानना बहुरि प्रमाणांगुलतैं योजनका प्रमाण होय सो प्रमाणयोजन जानना। सो उत्सेधांगुलतैं प्रमाणांगुल पांचसै गुणा है तातैं योजनविषैं भी पांचसै हीका गुणकार कह्या। बहुरि अपि शब्दतैं त्रैराशिक विधिकरि ही एक योजनके च्यारिकोश, एक कोशके दोय हजार धनुष, एक धनुषकै च्यारि हाथ एक हाथका अंगुल चौवीस १, ४, २०००, ४, २४, इनकौं परस्पर गुणें एक योजनके सात लाख अडसठि हजार अंगुल भए, ते करनें। बहुरि एक अंगुलका आठ यव, एक यवका आठ सरसौं करनें सो घनराशिके गुणकार वा भागहार घनरूप ही होइ, जैसे एक हाथ लंबा चौडा डेढ होई ताकी अंगुल करिए तब एक हाथकी चौईस अंगुल। सो इहां चौईसका घनकीएं जो प्रमाण होइ तितना एक अंगुल लंबा चौडा ऊंडा खंड होइ तैसैं इहां भी जो ए गुणकाररूप राशि कहे तिनका घन करना सो घन करनेके अर्थ तीन तीन जायगा मांडि परस्पर गुणन करना। तहां क्षेत्रफल ऐसा ३ ल। ¾। १००० याके गुणकार ऐसे ५००, ५००, ५०००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, ८, इनकौं परस्पर गुणें चौकोर सरसोंका प्रमाण होइ, इनकौं नवका सोळहां भाग ९/१६ दिएं वृत्त जो गोल सरसोंका प्रमाण होइ। सो "हारस्य हारगुणकोंशराशौ" इस वचनतैं भागहारका भागहार सो राशिका गुणकार होइ। जैसैं हजारका सौवां भाग कीजै ताका भाग दीजै तहां हजारकौं व्यासिकरि गुणिए अर सौवां भाग दीजिए। इहां नवका सोळहां भागका भाग है सो पूर्वोक्त राशिकौं सोळा गुणाकरि नवका भाग दीजै तो सोळा ही गुणकार ही भया। ऐसे करते सब गुण्य गुणकार ऐसा भया ३०००००, १०००००, १०००, ५००, ५००, ५००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, ८,

१६ इनकी परस्पर गुणनी सर्व पावै सौधै चारिका अर नवका भागहार देना ४, ९। तहां गुणकारविषै जहां आठका अंक था तहां दोयकरि विरलन करि आठकी जायगा तीन दूवा मांडि २, २, २, जातै इनकी परस्पर गुणें भी आठ ही हो है। बहुरि इनि तीनौं दूवानिकरि तीन जायगा पांचौं आठका था तिनकौं गुणें तीन जायगा हजार हजार हुवा, हर एक आठका गुणकारपना होइ हुवा तब ऐसा हुवा १०००००, १०००००, १०००, १०००, १०००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, १६। बहुरि इन विषै जे इकतीस विरली है तिनकौं तौ जुदी काढ़िए अर एकका गुणकारनैं किछू करै नाहीं तातैं एक जहां होइ तहां छोड़ करिए तब ऐसा होइ ३, ७६८, ७६८, ७६८, ८, ८, ८, ८, ८, १६, विरली ३१। बहुरि इन विषै एक आठका अंककौं दोयकरि वेरी विरलन करि तहां जे तीन दूवा भए तिन करि आठका जे तीन अंक तिनकौं गुणें आठका अंककौं तीन जायगा सोलह सोलहका अंक होइ अर एक आठका अंकका छेद होइ अर एक सोलहका अंक गुणकारविषैं था ही। ऐसैं चारि जायगा सोलहके अंक भए १६, १६, १६, १६। इनकौं परस्पर गुणें पगही होइ। पैंसठि हजार पांचसै छत्तीसकौं पगही करिए है। तब ऐसा भया ३, ७६८, ७६८, ८, ६५५३६, विरली ३१। बहुरि तीन जायगा सातकी अट्ठसठिका अंक था तिनकौं जायगा दोयसै छप्पन अर तीनका अंक करना, जातैं दोयसै छप्पनकौं तीन करि गुणें सातसै अट्ठसठि होइ। बहुरि तीन जायगा दोयसै छप्पन लिखे तिन विषै दोय जायगाके दोयसै छप्पनकौं परस्पर गुणें पगही होइ अर एक आगैं पगही थी, इन दोऊनिकी परस्पर गुणें बाहत्तर होइ। चारिसै गुणतीस कोडि गुणबासठ लाख सतसठि हजार दोयसै तिरानवैकौं बाहत्तर करिए। ताकी सहनानी ऐसी ४२८। ऐसैं करते ऐसा भया ३,२५६, ३,३,३,८,४२८, विरली ३१। बहुरि दोय जायगा तीनका अंक है तिनकौं परस्परगुणें नव होइ। बहुरि एक जायगा आठका अंक है ताकौं भागहारविषैं चारिका अंक था तीहकरि अपवर्तन कीए आठ की जायगा दोयका अंक भया तीहकरि नवकौं गुणें अठार भए, तब ऐसा २५६,३,३,१८ ४२८, ३१ विरली। बहुरि दोय जायगा तीनका अंक है तिनकौं परस्पर गुणें नव भए, ताकौं भागहारविषै नवका अंक था ताकरि अपवर्तन कीए दोय भया। ऐसैं करतैं ऐसा भया ४२८, २५६,१८, विरली ३१। ऐसा प्रकार बाहत्तरकौं दोयसै छप्पन अर अठारहकरि गुणि आगैं इकतीस विरली दीजिए। इतना सर्व गोल सरभीनिकरि सो पूर्ण भए हैं ॥ १८ ॥

आगैं नवका सोलहां भागका भाग दीएं गोल होइ इसका वासनारूप निपज्या गणितफलकौं कहै हैं;—

वासद्धयणं दलियं णवगुणियं गोलयस्स घणगणियं।
सव्वेसिंपि घणाणं फलत्तिभागप्पिया सूई ॥ १९ ॥

व्यासार्द्धघनः दलितः नवगुणितः गोलकस्य घनगणितम्।
सर्वेषामपि घनानां फलत्रिभागात्मिका सूची ॥ १९ ॥

अर्थ—जितना व्यास होइ ताके आधाका घन करिए बहुरि ताकौं आधा करिये। बहुरि नव करि गुणिए ऐसैं करतैं गोल वस्तुका घनफल होइ। तहां विवक्षित व्यास एक ताका आधाका

प्रतिशलाका कुंड विषै मेलिए। बहुरि जिस शलाका कुंडको रीता करि पूर्वोक्त प्रकार की है तथा बहुत प्रमाणको लीए अनवस्था कुंड करि करि भरिए तब एक सरसों शलाका कुंड विषै मेलिए ऐसे करते करते दूसरी बार भी शलाका कुंड भरै तब एक सरसों और प्रतिशलाका कुंड विषै मेलिए पर करना। ऐसेही एक एक बार शलाकाकुंडको रीता करि करि भरिए तब तब एक एक सरसों प्रतिशलाकाकुंड विषै मेलते जाईए ॥ ३३ ॥

आगै ऐसें भरे भी कहा सो कहै हैं:—

एवं सारिं व पुण्णा एगं णिक्खिव महासलागम्हि ।
एमादि कमा भरिदा चत्तारि भरंति तक्काले ॥ ३४ ॥
एवं सारि व पूर्णा एकं निक्षिप महाशलाकायाम् ।
एतादि क्रमाद्गता चत्वारि भियंते तत्काले ॥ ३४ ॥

अर्थ—ऐसेही क्रमतैं पहला अनवस्था कुंड विषै जेते सरसों मरे गए थे तिस प्रमाण बहुत बहुत अनवस्था कुंड भरै प्रतिशलाका कुंड भी भऱ्या जाय तब एक सरसों महाशलाका कुंड विषै मेलिए। बहुरि जिस प्रतिशलाका कुंडकौं भरि ताकरि पूर्वोक्त प्रकार अनवस्था कुंड भरते करते जे शलाका कुंडनि अर शलाका कुंडनिके भरणें करि प्रतिशलाका कुंडकौं एक एक बार एक एक सरसों महाशलाका कुंड विषै मेलते जाईये। ऐसें करतें जब महाशलाका कुंड भरि जाय तहां तीन बार तीन तीन प्यालाही कुंड भरिये है। पहला अनवस्था कुंड विषै जेते सरसों मरे थे तिस प्रमाणका जो धन ताके समान अनवस्था कुंड भरे महाशलाका कुंड भरया है। बहुरि जे अनवस्था कुंड करना बहुत व्याप्त प्रमाणकौं लीएं हैं। जातैं अनवस्था कुंड करते करते आठवां द्वीप वा समुद्र विषै एक एक सरसों दीए जिस द्वीप वा समुद्र कौं आठवां कुंड जिस ही द्वीप वा समुद्रका सूची व्यासके समान नवीन कीया हुवा जम्बूद्वीप आदि है। तीहीं का नाम अनवस्थित कुंड है। ऐसाई सर्व कुंडनिविषै [illegible] ॥ ३४ ॥

आगै इसि आगै कहा कहै हैं:—

वरिसवरदीवदुदहे गिट्ठवा मेलिया पमाणं तं ।
अवरदिसम्मं करणं जेट्ठं संगेहं ॥ ३५ ॥
[illegible]

अर्थ—[illegible] अनवस्थित कुंड [illegible] जेते प्रमाणको धरे [illegible] ॥ ३५ ॥

[illegible]

अवरपरित्तस्सुवरिं एगादीवड्ढिदे हवे मज्झं ।
अवरपरित्तं विरलिय तमेव दादूण संगुणिदे ॥ २६ ॥
अवरपरीतस्योपरि एकादिवर्द्धिते भवेन्मध्यम् ।
अवरपरीतं विरल्य तदेव दत्वा संगुणिते ॥ २६ ॥

अर्थ—जघन्य परीतासंख्यातके उपरि एकादि बधाए मध्य परीतासंख्यात होइ बहुरि जघन्य परीतासंख्यातकौं एक एक करि विरलन करि रूप प्रति तिस ही जघन्य परीतासंख्यातकौं देइ परस्पर गुणन करिए । जैसें प्यारिकौं विरलन करिए तब प्यारि जायगा एक एक मांडिए । १।१।१।१ । बहुरि रूप प्रति प्यारिकौं दीजिये तब एक एककी जायगा प्यारि प्यारि होंहिए २।२।२।२ । अब इनका परस्पर गुणन करिए तब दोयसैं छप्पन होइ ऐसेंही इहां विधान जानना ॥२६॥

सो ऐसें गुणनकीएं कहा सो कहै हैं:—

अवरं जुत्तमसंखं आवलिसरिसं तमेव रूऊणं ।
परिमिदवरमावलिकिदि दुगवारवरं विरूव जुत्तवरं ॥ २७ ॥
अवरं युक्तमसंख्यं आवलिसदृशं तदेव रूपोनम् ।
परिमितवरं आवलिघनिर्द्विकवारवरं विरूपं युक्तवरम् ॥ २७ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त विधान कीए जघन्य युक्तासंख्यात होइ सो ही आवली समान है । जातें जघन्य युक्तासंख्यात समयनिका समूहकौं आवली कहिए है । सोई यहु एक घाटि हुवा उत्कृष्ट परीतासंख्यात जानना । बहुरि आवली जो जघन्य युक्तासंख्यात तामैं जु इति कहिए वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ सो जघन्य असंख्यातासंख्यात है । सोई जो घाटि होइ सो उत्कृष्ट युक्तासंख्यात है ॥ २७ ॥

अवरे सलागविरलणदिज्जे विदिये तु विरलिदूण तहिं ।
दिज्जं दाऊण हदे सलागदो रूवमवणिज्जं ॥ २८ ॥
अवरे शलाकाविरलनदेये द्वितीये तु विरल्य तस्मिन् ।
देयं दत्वा हते शलाकातः रूपमपनेतव्यम् ॥ २८ ॥

अर्थ—जघन्य असंख्यातासंख्यातकौं शलाका विरलन दीयमान रूप करि तीन प्रकार करिए । दूसरा विरलन राशिकौं विरलन करि तहां एक एक प्रति दिये एक एक दीयमान राशिकौं परस्पर गुणन करिए ऐसें करतें शलाका राशितैं रूप घाटि कीजिये ।

भावार्थ—जघन्य असंख्यातासंख्यातके समान तीन राशि करिए । शलाकाराशि, विरलन-१, देयराशि । तहां विरलनराशिकौं एक एक करि जुदा जुदा बरोबरि दीजिए, बहुरि तिस एक एक रूप देयराशिकौं दे बाद तहां तिसे देयराशिनिकौं परस्पर गुणिए । ऐसें विरलन करिकै उत्पन्न भएसो एक घाटय ही अब । जैसें उत्पन्न प्रमाणकौं ही शलाका विरलन देय रूप करि विरलन राशिकौं एक एक करि जुदा जुदा बरोबरि दीजिए । बहुरि एक एक रूप देयराशिकौं दे

१।३।१।२ । इन्हीं परस्पर गुणित लब्ध दोनसें उत्पन्न होइ । ऐसें विधान करि दोनका ए
[illegible] एक घटाइ दीजिए । ऐसेंही इहां विधान जानना ॥ ३८ ॥

तम्मुप्पण्णं विरलिय तमेव दाऊण संगुणं किच्चा ।
अवणय पुणरवि रूवं पुव्विल्लसलागरासीदो ॥ ३९ ॥

तत्तोत्पन्नं विरल्य तदेव दत्वा संगुणं कृत्वा ।
अपनयेत् पुनरपि रूपं पूर्वतनशलाकाराशितः ॥ ३९ ॥

अर्थ—बहुरि परस्पर गुणन कीएं भया था जो राशि ताकौं विरलन करि रूपा प्रति
देइ करि परस्पर गुणन करि पूर्वराशिका राशितैं बहुरि एक घटावना ।

भावार्थ—बहुरि परस्पर गुणन कीएं जो राशि भया तीहि प्रमाण विरलनराशि का करि
[illegible] विरलनराशिकौं एक एक करि कीजिए । बहुरि एक एक जायगा एक एक देयराशि दीजि
बहुरि सर्व ठौर देय राशिकौं परस्पर गुणिए । ऐसें विधान करि जो शलाकाराशि था ताकैं एक
घाटि कीएं एक ओर घटावना । जैसें दोय परस्पर गुणन कीएं दोयसें उत्पन्न हुवा ति
विरलन करि ऐसी ठवना । जायगा एक एक लिखिए । बहुरि एक एक की जायगा दोयसें
देय करि एक करी ठवना था सो एक ओर घटावना । ऐसें ही इहां विधान जानना ॥ ३

एवं सलागरासिं णिट्ठाविय लद्धरूवपरिहीणं ।
विरलिय दिण्णं दिण्णवगादिहदादी कुणदि पुण्ण व ॥ ४० ॥

एवं शलाकराशिं निष्ठाप्य लब्धरूपपरिहीनम् ।
कृत्वा विरल्य दत्तं दत्तवर्गादिहतादीन् कुरुते पूर्णवत् ॥ ४० ॥

अर्थ—या प्रकार दूसरी शलाका बहुरि तीसरी शलाकाकौं निष्पन्नरूप होत संतें तहां जो मध्य असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण भया तीह प्रमाण विषै ए आगैं कहिए जु हैं राशि ते प्रक्षेपण करनें मिलावनें जोइनें ॥ ४१ ॥

पल्लापल्लिगिजीवगलोगागासप्पदेसपत्तेया।
तत्तो असंखगुणिदा पदिट्ठिदा छप्पि रासीओ ॥ ४२ ॥

धर्माधर्मैकजीवकलोकाकाशप्रदेशप्रत्येकाः।
ततः असंख्यगुणिता प्रतिष्ठिताः षडपि राशयः ॥ ४२ ॥

अर्थ—धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य एक जीवद्रव्य लोकाकाश इन च्यारौंनिका प्रदेशनिका प्रमाण बहुरि अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति जीवनिका प्रमाण तिस लोकाकाशके प्रदेशनितैं असंख्यात गुणां। बहुरि तातैं भी प्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पती जीवनिका प्रमाण असंख्यात लोक गुणां ए छहौं राशि पूर्वोक्त मध्य असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण विषै मिलाइ दीजिए ॥ ४२ ॥

तं कयतिप्पडिरासिं विरलादिं करिय पढमविदियसलं।
तादियं च परिसमाणिय पुव्वं वा तत्थ दायव्वा ॥ ४३ ॥

तं कृतत्रिःप्रतिराशिं विरलादिं कृत्वा प्रथमद्वितीयशलाम्।
तृतीयां च परिसमाप्य पूर्वं वा तत्र दातव्याः ॥ ४३ ॥

अर्थ—तिनकौं मिलाएं जो मध्यम असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण भया तीह प्रमाण त्रिः प्रतिराशि कहिए शलाका आदि तीन राशि करि बहुरि विरलादि कृत्वा कहिए विरलन देय करि परस्पर गुणें शलाका राशिमें एक एक घटाइ प्रथम शलाका राशिकौं समाप्त करि बहुरि तहां जो प्रमाण होइ तीह प्रमाण पूर्वोक्त प्रकार शलाकादि करि द्वितीय शलाका राशिकौं समाप्त करि बहुरि तहां जो प्रमाण होइ तीह प्रमाण शलाकादि करि पूर्वोक्त प्रकार तृतीय शलाका राशिकौं निष्पन्न करि तहां जो प्रमाण होइ तीह विषै ए राशि दैनैं मिलावनैं ॥ ४३ ॥

कप्पट्ठिदिबंधपयडिरसबंधज्झवसिदा असंखगुणा।
जोगुक्कस्सविभागप्पडिच्छिदा विदियपक्खेवा ॥ ४४ ॥

कल्पस्थितिबंधप्रत्ययरसबंधाध्यवसिता असंख्यगुणाः।
योगोत्कृष्टविभागप्रतिच्छेदाः द्वितीयप्रक्षेपाः ॥ ४४ ॥

अर्थ—उत्सर्पिणी अवसर्पिणी मिलिकरि भया जु कल्पकाल ताके समयनिका प्रमाण संख्यात पल्यमात्र। बहुरि तातैं स्थिति बंधाध्यवसायस्थान असंख्यात लोक गुणां, बहुरि तातैं योगका उत्कृष्ट अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यात लोक गुणां ए च्यारि राशि दूसरा प्रक्षेप जाननें। दूसरी बार ए च्यारि राशि मिलावनें ॥ ४४ ॥

तं रासिं पुव्वं वा तिप्पडि विरलादिकरणमेत्थ किदे।
अवरपरित्तमणंतं रूऊणमसंखसंखवरं ॥ ४५ ॥

इहां अंक संदृष्टि अपेक्षा समधारा विषै आदिस्थान दोय अंतस्थान सोलह तहां सोलह में दोय घटाएं रहे चौदह याकौं स्थान स्थान प्रति वृद्धिका प्रमाण दोयका भाग दीएं पाए सात तामैं एक मिलाएं पाए आठ, सो आठ समधाराके स्थान हैं। बहुरि विषमधारा विषै आदि स्थान एक अंतस्थान पंद्रह आदिकौं अंतमैं घटाएं अवशेष चौदह वृद्धि दोयका भाग दीएं सात तामैं एक मिलाएं आठ स्थान जाननें। ऐसैं ही जहां समान प्रमाणकौं दीएं स्थान स्थान प्रति चय बधती होइ तहां स्थानवर्तिनि प्रमाण स्यावनैकौं करणसूत्र जाननां ॥ ५७ ॥

आगैं कृतिधाराकौं कहैं हैं:—

इगि चादि केवलंतं कदी पदं तप्पदं कदी अवरं ।
इगिहीणतप्पदकदी हेट्ठिममुक्कस्स सव्वत्थ ॥ ५८ ॥

एक चत्वार्यादिः केवलांता कृतिः पदं तत्पदं कृतिः अवरं ।
एकहीनतत्पदकृतिः अधस्तनमुत्कृष्टं सर्वत्र ॥ ५८ ॥

अर्थ—एक च्यारि इत्यादि केवलज्ञानपर्यंत कृतिधारा हो हैं। एक आदि एक एक बधता केवलज्ञानका प्रथम वर्गमूल पर्यंत जे वर्गमूल तिनका वर्ग कीएं जो जो राशि होइ सो सो इस धाराके स्थान जाननें। सो वर्गमूलनिका प्रमाण केवलज्ञानका प्रथम वर्गमूल प्रमाण जाननां। तितने ही इस धाराके स्थान हैं। बहुरि इस धारा विषै संख्यातकौं आदिदै करि संख्याके भेद तिनका जघन्यभेद तौ वर्गस्थान स्वरूप ही है। बहुरि संख्यातादिकनिका जो जघन्य भेद ताका वर्गमूलमैं एक घटाय अवशेष रहै ताका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ सो इस धारा विषै तिस संख्या भेदतैं अधस्तनवर्ती जो संख्यातादिक तिनिका उत्कृष्टपनां जाननां। उदाहरण। जैसैं अंकसंदृष्टि अपेक्षा जघन्य असंख्यातका प्रमाण सोलह सो तौ च्यारिका वर्गस्थानरूप है ही। बहुरि सोलहका वर्गमूल च्यारि तामैं एक घटाएं तीन रहे ताका वर्ग कीएं नव भए सो असंख्यातके नीचैं जो परीतासंख्यात सो इस धारा विषै संख्यातका उत्कृष्ट नव ही है। यद्यपि दसकौं आदि दै करि उत्कृष्ट संख्यात पर्यंत संख्यात ही के भेद हैं तथापि ते भेद इस धारा विषै संभवै नहीं। तातैं इहां उत्कृष्ट संख्यात नव कह्या। ऐसैं ही अन्यत्र भी जानना। अंकसंदृष्टिविषै पाके स्थान ऐसे १, ४, ९, केवलज्ञान ॥ इहां एकका वर्ग एक सो प्रथम स्थान दोयका वर्ग च्यारि सो दूसरा स्थान तीनका वर्ग नव सो तीसरा स्थान केवलज्ञानका वर्गमूल अंकसंदृष्टि करि च्यारि ताका वर्ग सोलह सो अंक[illegible] जानना ॥ ५८ ॥

आगैं अवहिरणा कहिए है —

रूवहिदि रूवजुदकेवलणाणावरणमग्गणप्पहुदी ।
समविहीणं विसमं वा समदलणं केवलं ठाणं ॥ ५९ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ ५९ ॥

अर्थ—दोयकौं आदि दै करि एक घाटि केवलज्ञानपर्यंत अवृतिधारा है। बहुरि या विषै अवरोर स्थान संख्यातादिकका जघन्य उत्कृष्टपनां सो विषम धारावत् जाननां। जघन्य भेद विषै एक मिलाएं इहां जघन्यभेद होइ। उत्कृष्ट भेद जो है सोई इहां है। जातैं इस धाराविषै वर्गरूप स्थानकनिका रहितपनां है। बहुरि इस धाराके सर्व स्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल करि हीन ऐसा केवलज्ञान प्रमाण जाननां। अंकसंदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें हैं। २,३,५,६,७,८,१०,११,१२, १३,१४, एक घाटि केवल १५। इहां सर्व धाराके स्थानकनि विषै वृतिधाराके स्थान दूरि करि अवशेष अवृतिधाराके स्थान कहे हैं॥ ५९॥

आगैं घनधारा कहिए हैं:—

इगिअट्ठपहुदिं केवलदलमूलस्सुवरि चढिदठाणजुदे।
तग्घणमंतं विंदे ठाणं आसण्णघणमूलं॥ ६०॥

एकाष्टप्रभृति केवलदलमूलस्योपरि चटितस्थानयुते।
तद्घनमंतं धृदे स्थानं आसन्नघनमूलम्॥ ६०॥

अर्थ—एक आटकौं आदि दै करि १,८,२७ अंत घन स्थान जाईये।

भावार्थ—एकका घन एक सो याका प्रथम स्थान दोयका घन आठ सो याका दूसरा स्थान तीनका घन सताईस सो याका तीसरा स्थान ऐसें अनंत घनस्थान जाइ करि केवलज्ञानका आधा प्रमाण है सो घनस्थानरूपही है। ताका जो घनमूल ताकै उपरि चढितस्थान कहिए; उपरि उपरि प्राप्त भए जो घनमूलके स्थान तिनकी संख्या तिस घनमूल विषै मिलाएं जो प्रमाण होइ सो इहां आसन्न घनमूल कहिए ताका घन कीएं जो प्रमाण होइ सोई इस धाराका अंतस्थान जाननां। जातैं आसन्न घन तैं एक अधिकका भी घन ग्रहें केवलज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ सो है नाही। इस कथनकौं अंकसंदृष्टि करि दिखाईए है। जैसें केवलज्ञानका प्रमाण पणट्ठी ६५५३६ ताका आधा ऐसा ३२७६८। सो यह घनस्थानरूप हैं। याका घनमूल बतीस। ३२। ताकै उपरि घनमूल स्थान ऐसे ३३,३४,३५,३६,३७,३८,३९,४०। ए आठ स्थान बत्तीस में मिलाएं चालीस हूवा याकौं इहां आसन्न घनमूल कहिए। याका घन ६४००० । सोही इस धाराका अंतस्थान है। जातैं आसन्न घनमूल तैं एक अधिक इकतालीस ४१। ताका भी घन ग्रहें अडसठि हजार नौसैं इकईस होय सो केवलज्ञानतैं अधिक राशि उपजै तातैं आसन्न घनमूलका जु घन ६४००० सोई घनधाराका अंतस्थान है। इसकौं आसन्नघन कहिए है। याका घनमूलकौं आसन्न घनमूल कहिए है। बहुरि इस धाराके सर्वस्थान केवलज्ञानके आसन्न घनमूल प्रमाण जाननें॥६०॥

आगैं केवलज्ञानका अर्द्धप्रमाण घनधारास्वरूप कैसें जानिएं, ताका व्यवस्थानकौं पूर्व आचार्य सूत्र करि दिखावता संता उत्तर आधासूत्र करि अघनधाराकौं कहैं है:—

समकदिसंख विकदीए दलिदे घणमेत्थ विसमगे तुरिए।
अघणस्स दु सव्वं वा विघणपदं केवलं ठाणं॥ ६१॥

समकृतिशला द्विकृतौ दलिते घनः अत्र विषमके तुरिये ।
अघनस्य तु सर्वं वा विघनपदं केवलं स्थानम् ॥ ६१ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै जिस वर्गस्थानरूप राशिकी वर्गशलाका सम होइ, दोय च्यारि इत्यादिरूप होइ तिस राशिका आधा प्रमाण घनरूप होइ ही होइ । दोयका वर्ग तैं लगाय पूर्वपूर्वका वर्ग करतैं जेतीवार होइ तितनां ही ताकी राशि सोलह ताकी वर्गशलाका दोय सो समरूप है ताका आधा प्रमाण आठ सो दोयका घनरूप हैं । बहुरि राशि पणट्ठी ताकी वर्गशलाका च्यारि सो समरूप है, ताका आधा प्रमाण बत्तीस हजार सातसैं सडसठि सो बत्तीसका घनरूप है । ऐसें ही एकट्ठी आदि विषै भी जानि लेनां । बहुरि इस ही द्विरूप वर्गधारा विषै जिस राशिकी विषमरूप वर्गशलाका होइ तिस राशिका चौथा भाग घनराशिरूप हो है । जैसें द्विरूप वर्गधारा विषै राशि च्यारि ताकी वर्गशलाका एक है सो विषमरूप है । याका चौथा भाग एक सो एकका घनरूप है। ऐसें ही बादालादिक विषैं भी जानना । ऐसें कह्या जु न्याय तीह करि केवलज्ञानकी वर्गशलाका समरूप ही हैं, तातैं तीह केवलज्ञानका आधा प्रमाण घनस्थानरूप है ऐसा सिद्ध भया । बहुरि केवलज्ञानकी वर्गशलाका समरूप हैं ऐसा कैसें जानिए ? तहां कहिए हैं । जो केवलज्ञानकी वर्गशलाकारूप राशि भी द्विरूप वर्गधारा ही विषै उत्पन्न है, द्विरूप वर्गधारा विषै जो राशि है सो समरूप ही है । बहुरि प्रश्न, जो केवलज्ञानकी वर्गशलाका द्विरूप वर्गधारा विषै ही हैं ऐसा कैसे जानिए ? तहां कहिए है जो 'अवरा खाइयलद्धी वग्गसलागा तदो सगद्धछिदी' ऐसा सूत्र आगैं कहिएगा, तिस सूत्र करि केवलज्ञानकी वर्गशलाका द्विरूप वर्गधारा विषै ही कहिएगी । बहुरि [illegible] घनधारा कहिए हैं । अघनधाराके स्थान आदि प्रक्रिया सर्वधारावत् जाननी । इतना विशेष, विघनपदं कहिए जो घनधारारूपि जे जे स्थान हैं ते ते धारा विषै नांही हैं और सर्वस्थान सर्व धारावत् जाननें । बहुरि काकका नेत्रका गोलक जैसें एक ही नेत्र विषै पाईए, तैसें जे सर्व धाराके स्थान हैं तिन विषै जो स्थान घनरूप है सो अघनरूप नांही, अघनरूप है सो घनरूप नांही, तातैं इन धारा के सर्व स्थान घनस्थानकनिका प्रमाण रहित केवलज्ञान समान हैं । अंकसंदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें हैं २,३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३,१४,१५,१६ ॥ ६१ ॥

आगैं वर्गमातृक धाराकौं कहै हैं:—

इह वग्गमाउआए सव्वगधारव्व चरिमरासी दु ।
पढमं केवलमूलं तट्ठाणं चावि तत्थेव ॥ ६२ ॥
इह वर्गमातृकायां सर्वकधारा इव चरमराशिस्तु ।
प्रथमं केवलमूलं तत्स्थानं चापि तत्रैव ॥ ६२ ॥

अर्थ—इस वर्गमातृक धारा विषै सर्वधारावत् स्थानादिककी प्रक्रिया जाननी, विशेष इतना जो अन्तस्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल जानना । जातैं याके उपरांतकी समस्त राशि अपने अपने विरल इस धारा विषै कह्या ताके भाग वर्गमातृक धारा है । सो एकको आदि केवलज्ञानका प्रथम मूलपर्यंत सर्वराशि भई है ताके [illegible] एक भी बारनिका वर्ग कीजिए

तौ केवलज्ञानतैं उपरि प्रमाण होइ सो है नाहीं, जैसे केवल ज्ञानका प्रमाण सोलह ताका वर्गमूल च्यारि तहां पर्यंत तौ वर्ग होइ अर उपरि पांचका वर्ग कीए तौ केवलज्ञान तैं अधिक प्रमाण होइ जाय। तातैं याका अंतस्थान केवलज्ञानका प्रथम मूलही कह्या। इस धाराके सर्व स्थानक तितनें ही केवलज्ञानका प्रथम मूल प्रमाण ही जानना। अंक संदृष्टि लिये याके स्थान ऐसे १,२,३, केवल प्रथममूल ४ ॥ ६२ ॥

आगैं अवर्गमातृक धाराकौं कहैं हैं:—

अट्ठीमाउअ आदी केवलमूलं सव्वमंतं तु।
केवलमणेय मज्झं मूलूणं केवलं ठाणं ॥ ६३ ॥

अष्टनिमातृकाया आदिः केवलमूलं सर्वमंतं तु।
केवलमनेकं मध्यं मूलोनं केवलं स्थानम् ॥ ६३ ॥

अर्थ—अष्टनिमातृक धाराका प्रथम स्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल एक ही गर्भित जानना। जातैं केवलज्ञानका प्रथम मूल पर्यंत तौ सर्व अंक वर्गमूल रूप पाइए है, सबनिका वर्ग होइसकै है। बहुरि जिनका वर्ग कीएं केवलज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ तिनका स्थान इस धारा विषै है, तातैं याका प्रथम स्थान एक अधिक केवलज्ञानका प्रथम मूल कह्या। बहुरि अंत स्थान याका केवलज्ञान है, मध्यस्थान अनेक प्रकार है। इस धाराके सर्व स्थान केवलज्ञानका प्रथममूल रहित केवलज्ञान प्रमाण जानना। अंकसंदृष्टि लिये याके स्थान ऐसे है, ५,६,७,८,९, १०,११,१२,१३,१४,१५,१६। इहां केवल ज्ञानका प्रमाण सोलह ताका प्रथम वर्गमूल कह्या तातैं एक अधिकतैं लगाय स्थान कहे हैं ॥ ६३ ॥

आगैं घनमातृक धाराकौं कहैं हैं:—

घणमाउगस्स सव्वगयारं वा सव्वपच्छिमो रासी।
आयण्णविंदमूलं तमेव ठाणं विजाणाहि ॥ ६४ ॥

घनमातृकाया: सर्वकयारा इव सर्वपश्चिमो राशि।
आयनबिंदमूलं तदेव स्थानं विजानीहि ॥ ६४ ॥

अर्थ—घनमातृक धाराकी स्थानादिककी प्रक्रिया सर्वधारावत् जाननी, इतना विशेष याका सर्व पश्चिम राशि करिए अंकका स्थान सो केवलज्ञानका आयत घनमूल प्रमाण ही जानना। इहां जितका घन होइ ऐसे घनमूलरूप संख्या विशेष कहे है सो केवलज्ञानका आयत घनमूल पर्यंत तौ सबनिका घन होइ सके है अर याकै एक अधिकका भी जो घन कीजिए तौ केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाय तातैं एक आदि केवलज्ञानका आयत घनमूलपर्यंत याके स्थान कहे हैं। जैसे संदृष्टि अपेक्षा [illegible] १,२,३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३, १४,१५,१६ [illegible] २०,२५ [illegible] आयत घन [illegible]

आगैं अघनमातृक धारा कहिए हैं:—

तं रूवसहिदमादी केवलमवसाणमघणमाउस्स ।
आसण्णघणपदूणं केवलणाणं हवे ठाणं ॥ ६५ ॥

तत् रूपसहितं आदिः केवलमवसानमघनमातृकायाः ।
आसन्नघनपदोनं केवलज्ञानं भवेत् स्थानम् ॥ ६५ ॥

अर्थ—इहां जिनका घन कीएं केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ ऐसे संस्थान विशेषनिका ग्रहण है । सो घनमातृक धाराका जो अंतका स्थान सो रूपसहित करिए, एक अधिक होइ तौ इस अघन मातृकधाराका प्रथम स्थान होइ, इहां तैं लगाय केवल ज्ञानपर्यंत सर्व स्थान इस धारा विषै जानने । याके सर्व स्थान केवलज्ञानका आसन्न घनमूलरहित केवलज्ञान प्रमाण जानने । अंक संदृष्टि विषै याके स्थान ऐसे ४१,४२,४३, इत्यादि अंतस्थान ६५= । इहां घन मातृकका अंतस्थान बत्तीस, तातैं एक अधिक कीएं याका आदि स्थान इकतालीस, अंतस्थान केवल ज्ञान सो पणट्ठी प्रमाण । याके सर्व स्थान केवलज्ञान पणट्ठी प्रमाण. ६५५३६, तातैं आसन्न घन पैंसठि हजारका मूल बत्तीस घटाएं पैंसठि हजार च्यारिसै छिनवै ६५४९६ जानने ॥ ६५ ॥

आगैं द्विरूप वर्गधाराकी सात गाथानि करि कहै हैं:—

बेरूवरूवधारा चउ सोलस बिसदसहियछप्पण्णं ।
पण्णट्ठी बादालं एकट्ठं पुव्वपुव्वकदी ॥ ६६ ॥

द्विरूपवर्गधारा चत्वारः षोडश द्विशतसहितषट्पंचाशत् ।
पंचषष्टिः द्वाचत्वारिंशत् एकषष्टिः पूर्वपूर्वकृतिः ॥ ६६ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा कहिए है । दोयका वर्ग तैं लगाय पूर्व पूर्व स्थानकनिका वर्ग कीएं इस द्विरूपस्थान इस धारा विषै हो है, तातैं याका नाम द्विरूप वर्गधारा है । तहां याका आदिस्थान दोयका वर्ग कीएं ४, याका वर्ग दूसरा स्थान सोलह १६, याका वर्ग तीसरा स्थान दोय सै छप्पन कीएं २५६, याका वर्ग चौथास्थान पैंसठी, पणट्ठी कहा ? 'पण्णट्ठी पंचसया छत्तीसा' ऐसैं इस गाथाविषै कह्या इस अंकनितैं पणट्ठी प्रमाण हो है, ६५५३६ याकी संदृष्टि ऐसी । बहुरि याका वर्ग पांचवां स्थान बादाल । बादाल कहा ? 'बादाल बारणउदी-इगणउदी तिसदतीस इगिसट्ठी' तिरेपन, तेतीसौ, तिरानवै, बारासौ, तिरेसठि इन अंकनि करि बादाल हो है । ४२९४९६७२९५ याकी संदृष्टि ऐसी (४२=) । बहुरि याका वर्ग छठा स्थान एकट्ठी । एकट्ठी कहा ? 'एकट्ठं चउ छक्कं पण छक्कं छक्क सत्त तिण्णिमा । सुण्णं णव पण पंचय एक्क छक्केक्कगो दुगं च ।' एक, दोय, तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नव, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पंद्रह, सोलह इन अंकनि करि एकट्ठी हो है । १८४४६७४४०७३७०९५५१६१५ याकी संदृष्टि ऐसी (१८=) ॥ ६६ ॥

आगैं पूर्व पूर्व स्थानका वर्ग करि इस इस स्थान हो है —

सो संखट्ठाणाणं वग्गसलागट्ठिदिप्पमाणं हि ।
अवरं जुत्तासंखं आदि पदसलाकदी य हवे ॥ ६७ ॥

तत: संख्यस्थानगमने वर्गशलाकार्धच्छेदप्रथमपदम् ।
अवरपरीतासंख्यं आवलिः प्रतरावली च भवेत् ॥ ६७ ॥

अर्थ—तातैं पूर्वपूर्वका वर्ग करतैं संख्यात स्थान गए जघन्य परीतासंख्यातका वर्गशलाका राशि उपजै है । दोयका वर्ग तैं च्यारि जेती बार वर्ग कीए जो राशि उपजै तिस राशिका तितनां वर्गशलाका राशिक हो है । जैसे सोलहकी वर्ग शलाका दोय, जातैं दोयका वर्ग च्यारि अर च्यारिका वर्ग सोलह, ऐसें दोय बार वर्ग भए सोलह राशि हो है, ऐसें ही अन्यत्र जाननां । बहुरि तातैं संख्यात स्थान गएं जघन्य परीतासंख्यातकी अर्द्धछेद राशि हो है । जिस राशिकों जेती बार आधा कीएं एक अवशेष रहैं तिस राशिके तितने अर्द्धछेद जाननें । जैसे सोलहके अर्द्ध-छेद च्यारि है । जाते एक बार सोलहकी आधा कीएं आठ होइ, दूसरी बार च्यारि होइ, तीसरी बार दोय होइ, चौथी बार एक होइ, ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां । बहुरि तातैं परैं संख्यात स्थान गएं जघन्य परीतासंख्यातका प्रथम मूल हो है । राशिका एक बार वर्गमूल कीजिए सो प्रथम मूल कहिए, जैसें सोलहका प्रथम मूल च्यारि हो है, ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां । बहुरि तिस प्रथम मूलका एक बार वर्ग कीएं जघन्य परीतासंख्यात राशि उपजै है । बहुरि तातैं परैं संख्यात स्थान जाइ जघन्य युक्तासंख्यात प्रमाण आवली उपजै है । इहां 'उवरुवरि जो रासी' इत्यादिक सूत्र आगैं कहैंगे तिस करि आवलीकी वर्गशलाकादिकका इस धारा विषै निषेध जाननां । इहां संख्यात स्थान जाइ करि आवली उपजै है । ऐसा कह्या सो कैसे है ? तहां कहिए है । देय राशिकैं उपरि विरलन रूप करी जो राशि, ताके जेते अर्धच्छेद होंहि तितनें वर्गस्थान जाइ करि विवक्षित राशि उपजै है । जैसें देयराशि च्यारि ताके उपरि विरलन राशि च्यारिके अर्द्ध छेद दोइ, सो दोय बार वर्गस्थान गएं विवक्षित दोयसें उपजै है । जातैं च्यारिका वर्ग सोलह सोलहका वर्ग दोयसैं उपजै है । सोई च्यारिका विरलन करि एक एक जायगा च्यारि च्यारि दीएं, ४,४,४,४ परस्पर गुणें दोय सै उपजै हैं । तैसेंही यहां देय राशि जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धच्छेद संख्यात, सो संख्याते स्थान गएं ही विवक्षित राशि आवली उपजै है । बहुरि तिस आवलीका एक बार वर्ग भएं प्रतरावली हो है ॥ ६७ ॥

गमिय असंखं ठाणं वग्गसलद्धच्छिदी य पढमपदं ।
पढं च मूइअंगुल पदरं जगसेढिघणमूलं ॥ ६८ ॥
गत्वा असंख्यं स्थानं वर्गशलार्द्धच्छिदिश्च प्रथमपदम् ।
पल्यं च सूच्यंगुलं प्रतरं जगश्रेणिघनमूलम् ॥ ६८ ॥

अर्थ—तातैं परैं असंख्यात स्थान जाइ अद्धापल्यका वर्गशलाका राशि उपजै है, तातैं असं-ख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धछेद राशि हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है । ताका एक बार वर्ग कीएं अद्धापल्य हो है । बहुरि तातैं परैं असंख्यात स्थान जाइ सूच्यंगुल उपजै है, जातैं [illegible] राशिका अर्द्धछेद प्रमाण वर्गस्थान गएं विवक्षित राशि आइ सो इहां सूच्यं-गुलका प्रमाण [illegible] जगत्प्रतर पल्य है । विरलन राशि पल्यका अर्द्धछेद [illegible]

च्छेद असंख्याते हैं। तातैं पल्यकै उपरि असंख्यात वर्गस्थान भएं सूच्यंगुल होइ ऐसा कह्या है। इहां भी उपज्जदि जो रासी इत्यादि सूत्रका अभिप्राय करि विरलनदेयका अनुक्रम करि यह राशि भया है। तातैं याके वर्गशलाका अर्द्धच्छेद राशि इस धारा विषै नाहीं कहे हैं। बहुरि तिस सूच्यंगुलका एक बार वर्ग भएं प्रतरांगुल उपजै हैं। बहुरि तातै असंख्यात स्थान जाइ करि जगच्छ्रेणीका घनमूल हो उपजै है। जाका घन कीएं जगच्छ्रेणी होइ ऐसी प्रमाण हो है ॥ ६८ ॥

तिविह जहण्णाणंतं वग्गसलादलछिदी सगादिपदं ।
जीवो पोग्गल कालो सेढीआगास तप्पदरं ॥ ६९ ॥

त्रिविधं जघन्यानंतं वर्गशलादलच्छेदाः स्वकादिपदम् ।
जीवः पुद्गलः कालः श्रेण्याकाशं तत्प्रतरम् ॥ ६९ ॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ जघन्य परीतानंतका वर्गशलाका राशि उपजै हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धच्छेद राशि उपजै हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल उपजै है। ताका एक बार वर्ग भएं जघन्य परीतानंत हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ जघन्य युक्तानंत उपजै है। जाते देय राशिके उपरि विरलन राशिके अर्द्धच्छेद प्रमाण वर्गस्थान भएं निश्चित राशि हो है, सो इहां देयराशि जघन्यपरीतानंत है ताके उपरि विरलन राशि जघन्य परीतानंत ताके अर्द्धच्छेद असंख्यात हैं, सो इतनें ही वर्गस्थान भएं जघन्य युक्तानंत हो हैं। इहां भी पूर्वोक्त प्रकार वर्गशलाकादिकका निषेध जानना। बहुरि तिस जघन्य युक्तानंतका एक बार वर्ग भएं जघन्य अनंतानंत हो है। बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ जीवराशि प्रमाणकी वर्गशलाका हो है, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं जीवराशिका प्रमाण उपजै है। इस गाथा विषै वर्गशलाकादिकनिका उपलक्षण करि कथन है तातैं इस जीवराशितैं परै पुद्गलादिक जो जो राशि कहिए है तिनका जीवराशि विषै जैसैं कहा तैसैं वर्गशलाकादि जाननें। बहुरि तिस जीवराशितैं अनंतस्थान जाइ पुद्गलराशिका प्रमाण उपजै है, तातैं अनंतस्थान जाइ श्रेणी आकाश निपजै है। सर्व आकाशका लेवा प्रदेशनिकी पंक्तिका जु प्रमाण सो श्रेणी आकाश कहिए। बहुरि ताका एक बार वर्ग भएं प्रतराकाश उपजै है। तातैं आकाशका लेवा वा चौड़ा प्रदेशनिका जु प्रमाण सो प्रतराकाश कहिए। इहां उपाई न कीजी ॥६९॥

धम्माधम्मागुरुलघुगणिजीवागुरुलघुस्स होंति पदा ।
सुहुमणिअपुण्णगाणं अवरे अविभागपडिछेदा ॥ ७० ॥

धर्माधर्मागुरुलघोरेकजीवागुरुलघोः भवंति तत्पदाः ।
सूक्ष्मनिर्वृत्तापूर्णांगानां अवरे अविभागप्रतिच्छेदाः ॥ ७० ॥

अर्थ—बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ धर्म द्रव्य, अधर्मद्रव्य अगुरुलघुगुणके अविभागप्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है। अथवा विभाग न हो सका जु कोई शक्तिका अंश ताको अविभागप्रतिच्छेद कहिए है। बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ सूक्ष्मनिगोद लब्ध्यपर्याप्तक जीवके जे अवयव प्रदेश तिनविषै अगुरुलघुगुणके अविभागप्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है ॥ ७० ॥

अवरा खाइयलद्धी वग्गसलागा तदो सगद्धछिदी।
अट्ठसगछप्पणतुरियं तदियं विदियादिमूलं च ॥ ७१ ॥'
अवरा क्षायिकलब्धिः वर्गशलाका ततः स्वकार्धच्छिदिः।
अष्टसप्तषट्पंचतुरीयं तृतीयं द्वितीयादिमूलं च ॥ ७१ ॥

अर्थ—बहुरि तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ तिर्यंच गति विषै असंयत सम्यग्दृष्टीके क्षायिक सम्यक्त्वरूप जो लब्धि ताके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है। बहुरि तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ केवलज्ञानकी वर्गशलाका हो है, तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतवर्गस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीका अष्टम मूल हो हैं। ताका एक बार वर्ग भए ताहीका सप्तम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भए ताहीका षष्ठम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं ताहीका पंचम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं ताहीका चतुर्थ मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं ताहीका तृतीय मूल हो है। ताका एक वर्ग भएं ताहीका द्वितीय मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं ताहीका प्रथम मूल हो है, राशिका वर्गमूलकौं प्रथम मूल कहिए, प्रथम मूलके वर्गमूलकौं द्वितीय मूल कहिए, द्वितीयमूलके वर्गमूलकौं तृतीयमूल कहिए, तृतीयमूलके वर्गमूलकौं चतुर्थ मूल कहिए ऐसेंही पंचमादि मूल जाननें। जैसें एकहीका प्रथममूल बारह, द्वितीयमूल पणही, तृतीयमूल दोयसैं छप्पन, चतुर्थमूल सोलह, पंचममूल च्यारि, षष्ठममूल दोय ऐसें ही अन्यत्र जाननां ॥ ७१ ॥

सइमादिमूलवग्गे केवलमंतं पमाणजेट्ठमिणं।
वरखाइयलद्धिणामं सगवग्गसला हवे ठाणं ॥ ७२ ॥
सकृदादिमूलवर्गे केवलमंतं प्रमाणजेष्ठमिदम्।
वरक्षायिकलब्धिनाम स्वकवर्गशला भवेत् स्थानम् ॥ ७२ ॥

अर्थ—तिस केवल ज्ञानके प्रथम वर्गमूलका सकृत् कहिए एक बार वर्ग प्रहें केवलज्ञानके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो हैं। एतावन्मात्रही द्विरूप वर्गधारा विषैं अंतस्थान हो हैं॥ यह ही उत्कृष्ट प्रमाण है—यहही उत्कृष्ट क्षायिक लब्धि नाम है। बहुरि इस द्विरूप वर्गधाराके सर्वस्थान केवल ज्ञानकी वर्गशलाका प्रमाण है ॥ ७२ ॥

आगैं द्विरूप वर्गधारादिक तीन धारा विषैं सर्वत्र विशेषरहित वर्गशलाकादिककी प्राप्ति विषैं नियम है सो कहै हैं:—

उप्पज्जदि जो रासी विरलणदिज्जकमेण तस्सेत्थ।
वग्गसलद्धच्छेदा धारातिदए ण जायंते ॥ ७३ ॥
उत्पद्यते यः राशिः विरलनदेयक्रमेण तस्याम्।
वर्गशलार्धच्छेदा धारात्रितये न जायंते ॥ ७३ ॥

अर्थ—जिस धारा विषैं विरलन देयका अनुक्रम करि जो जो राशिका वर्गशलाका अर्द्धच्छेद तिसही धारा विषैं न होइ, अन्य धारा विषैं होइ, ऐसी यह नियमरूप व्याप्ति सो द्विरूप वर्ग

लाका जाननी, बहुरि परस्थान विषै जैसें द्विरूप वर्गधारा विषै प्रथम स्थानकी एक वर्गशलाका तैसेंही द्विरूप घनधाराका प्रथम स्थान आठ ताकी एक वर्गशलाका है। बहुरि जैसें द्विरूप र्गधारा विषै द्वितीय स्थान सोलहकी दोय वर्गशलाका हैं तैसेंही द्विरूप घनधारा विषै द्वितीय थान चौसठि ताकी दोय वर्गशलाका हैं। ऐसें परस्थान अपेक्षा स्वसमान वर्गशलाका जाननी। हुरि अपनी वर्गशलाका जेता प्रमाण तितनां दूवा मांडि परस्पर गुणें अर्द्धच्छेद होंहि। जैसें ोयसैं छप्पनकी वर्गशलाका तीन सो तीन जायगा दूवा मांडि २।२।२ परस्पर गुणें आठ होइ ोई दोयसैं छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद हैं। ऐसें अन्यत्र भी जाननां। सो यहु नियम द्विरूप वर्ग- ारा ही विषैं सो पाईए है। बहुरि द्विरूप घनधारा अर द्विरूप घनाघनधारा विषैं नियम ऐसा ाही हैं। बहुरि राशिके जेते अर्द्धच्छेद होंहि तितनें दूवे मांडि परस्पर गुणें राशि हो हैं। जैसें ोयसैं छप्पनके अर्द्धच्छेद आठ सो आठ जायगा दोयका अंक मांडि (२,२,२,२,२,२,२,२,) रस्पर गुणें दोयसैं छप्पन हो हैं। ऐसेंही अन्यत्र जाननां, सो यहु नियम तीनों धारा विषैं ाननां ॥ ७५ ॥

आगैं वर्गशलाका अर अर्द्धच्छेद इनका स्वरूप कहे हैं:—

वग्गिदधारा वग्गसलागा रासिस्स अद्धछेदस्स।
अद्धिदधारा वा खलु दलधारा होंति अद्धछिदी ॥ ७६ ॥

वर्गितधारा वर्गशलाका राशेः अर्द्धच्छेदस्य।
अर्धितधारा वा खलु दलधारा भवंति अर्धच्छेदाः ॥ ७६ ॥

अर्थ—राशिका जो वर्गितधार कहिए दोयका वर्गते उपाय पूर्व पूर्वका अेकबार वर्ग कीए ो राशि ताका तितनां वर्गशलाका राशि जाननां। जैसें प्यारिकी वर्गशलाका एक जातें एक ार वर्ग कीए प्यारि हो हैं। पगडीकी प्यारि जाते दोयका वर्ग प्यारि, ताका वर्ग सोलह, ताका र्ग दोयसैं छप्पन, ताका वर्ग पणडी। ऐसें प्यारिबार वर्ग भए पणडी हो है। ऐसें ही जाननां। हु नियम तीनों धारा विषै हैं। विशेष इतनां द्विरूप घनधारा विषै दोयका घनतें उपाय अर द्विरूप घनाघनधारा विषै दोयका घनतें उपाय पूर्व पूर्वका वर्ग अेकबार कीए राशि होइ तितनी ाकी वर्गशलाका जाननी। अथवा राशिके जेते अर्द्धच्छेद होंहि तिन अर्द्धच्छेदनिके जेते अर्द्धच्छेद ोंहि तितनी तिस राशिकी वर्गशलाका जाननी। जैसें दोयसैं छप्पनके अर्द्धच्छेद आठ, आठके र्द्धच्छेद तीन सो दोयसैं छप्पनकी तीनही वर्गशलाका जाननी। सो यहु नियम द्विरूप वर्गधारा विषै ही है। बहुरी राशिका दलधार कहिए तितनी बार राशिको आधा आधा करते एक अरोहण तितनां तिस राशिका अर्द्धच्छेद जाननां। जैसें दोयसैं छप्पनका आधा, एकसौ अट्ठाईस, ताका आधा चौसठि, ताका आधा बत्तीस, ताका आधा सोलह, ताका आधा आठ, ताका आधा चार, ताका आधा दोय, ताका आधा एक। ऐसें आठ बार आधा आधा भया। तातें दोयसैं छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद है। ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां, सो यहु नियम तीनों धारा विषै है ॥ ७६ ॥

आगैं छह गाथानि करि द्विरूप घनधारा कौं कहे हैं:—

बेरूवविंदधारा अड चउसट्ठी चडित्तु संखपदे ।
आवलिघनमावलिया कदिविंदं चावि जायेज्ज ॥७७॥

द्विरूपवृंदधारा अष्ट चतुःषष्टिः चटित्वा संख्यपदानि ।
आवलिघन आवल्याः कृतिवृंदं चापि जायेत ॥ ७७ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो राशि वर्गरूप है तिनि राशिनिका जु घनरूप ए तिनकी जो धारा सो द्विरूप घनधारा है । सो याका प्रथम स्थान आठ है, जातैं दोयका घन आठ है । बहुरि याका वर्ग द्वितीयस्थान चौसठि जातैं च्यारिका घन चौसठि ही है । बहुरियाका वर्ग तृतियस्थान च्यारि हजार छिनवै, जातैं सोलहका घन च्यारिहजार छिनवै हो हैं । ऐसें ही पूर्व पूर्व स्थानरूप राशिका वर्ग करतैं उत्तर उत्तर स्थान होइ, संख्यात स्थान जाइ जघन्य परीतासंख्यातका घन हो हैं । बहुरि देयराशिकैं उपरि विरल्न राशिका अर्द्धच्छेद प्रमाण वर्गस्थान गएं यहु राशि हो हैं, सो जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धच्छेद संख्यात ही हैं । तातैं जघन्य परीतासंख्यातका घनतैं संख्यात जाइ आवलीका घन उपजै हैं । ताका एक बार वर्ग भएं आवलीका वर्गका घन हो हैं ॥७७॥

पल्लघणं विंदंगुलजगसेढीलोयपदरजीवघणं ।
तत्तो पढमं मूलं सव्वागासं च जाणेज्जो ॥ ७८ ॥

पल्यघनं वृंदांगुलजगच्छ्रेणीलोकप्रतरजीवघनम् ।
ततः प्रथमं मूलं सर्वाकाशं च जानीहि ॥ ७८ ॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ पल्यकी वर्गशलाकाका घन हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ पल्यका अर्द्धच्छेद राशिका घन हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ पल्यका प्रथममूलका घन हो हैं । ताका एकवार वर्ग भएं पल्यका घन हो हैं । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ घनांगुल हो हैं । इहां 'उपजदि जो रासी' इत्यादिक सूत्र करि घनांगुलकी वर्गशलाकादिकका अभाव इस धारा विषै जाननां । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ जगच्छ्रेणी उपजै है । इहां भी उपजदि जो रासी इत्यादिक सूत्रके अभिप्राय करि जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकादिकका अभाव इस धारा विषै जाननां । बहुरि ताका एकवार वर्ग कीएं जगत्प्रतर उपजै है, तातैं अनंतस्थान जाइ जीवराशिकी वर्गशलाकाका घन हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ जीवराशिका अर्द्धच्छेद राशिका घन हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ जीवराशिका प्रथममूलका घन हो है, ताका एकवार वर्ग भएं जीवराशिका घन हो हैं । बहुरि उपजदि जो रासी इत्यादिक सूत्रका अभिप्राय करि सर्व आकाशकी वर्गशलाकादिकनिका तौ अभाव है, तातैं जीवराशितैं अनंतस्थान जाइ सर्वाकाशका प्रथम मूल हो हैं । ताका वर्ग भएं सर्वआकाश हो है । लंबा, चौड़ा, ऊँचा ऐसा सर्व घनरूप आकाशके प्रदेशनिका प्रमाण हो है ॥ ७८ ॥

संखमसंखमणंतं वग्गट्ठाणं कमेण गंतूण ।
संखासंखाणंताणुप्पत्ती होदि सव्वत्थ ॥ ७९ ॥

संख्यमसंख्यमनंतं वर्गस्थानं क्रमेण गत्वा ।
संख्यासंख्यानंतानामुत्पत्तिः भवति सर्वत्र ॥ ७९ ॥

अर्थ—जघन्य असंख्यातासंख्यातरूप राशि पर्यंत तौ संख्यात वर्गस्थान जाइ करि, बहुरि तातैं उपरि जघन्य अनंतानंतरूप राशि पर्यंत असंख्यात वर्ग स्थान जाय करि, बहुरि तातैं उपरि केवलज्ञान पर्यंत अनंतवर्गस्थान जाइ करि यथासंख्य क्रमतैं संख्यात वा असंख्यात वा अनंतानंत रूप राशि उपजै हैं सर्वत्र तीनौं धारा विषैं जाननां । भावार्थ—संख्यातरूप राशिकी उत्पत्ति विषै पूर्वस्थानतैं संख्यात वर्गस्थान जाइ करि राशिकी उत्पत्ति कहिए । बहुरि ऐसें ही असंख्यात वा अनंतरूप राशिकी उत्पत्ति विषै पूर्वस्थानतैं असंख्यात वा अनंत वर्गस्थान जाइ करि उपजना कहिए । परन्तु इतना विशेष है, जो देय राशितैं उपरि विरलन राशिका अर्द्धच्छेद मात्र वर्गस्थान गए राशि हो है, तातैं जघन्य असंख्यातासंख्यात पर्यंत असंख्यातरूप राशी विषै भी संख्यात वर्गस्थान जाइ करि ही राशिका उपजना कहिए वा जघन्य अनंतानंत पर्यंत अनंतरूप राशि विषै भी असंख्यात वर्गस्थान जाइ करि ही राशिका उपजना कहिए ॥ ७९ ॥

जत्थुद्देसे जायदि जो जो रासी विरूवधाराए ।
घणरूवे तद्देसे उप्पज्जदि तस्स तस्स घणो ॥ ८० ॥
यत्रोद्देशे जायते यो यो राशिः विरूपधारायां ।
घनरूपे तद्देशे उत्पद्यते तस्य तस्य घनः ॥ ८० ॥

अर्थ—जिस उद्देश विषै, विरूप वर्गधारा विषै जो जो वर्गरूप राशि होइ तिस उद्देश विषै, विरूप घनधारा विषै तिस तिस राशिका घन उपजै है । जैसें विरूप वर्गधारा विषै दोयका वर्ग च्यारि ये इहां दोयका घन आठ है, तहां च्यारिका वर्ग सोलह ये इहां ताका घन चौंसठि जानना । ऐसें जो जो राशि विरूप वर्गधारा विषै कही है तिनका इहां सर्वका घन जाननां ॥८०॥

एवमणंतं ठाणं णिरंतरं गमिय केवलस्सेव ।
विदियपदविंदमंतं विदियादिममूलगुणिदसमं ॥ ८१ ॥
एवमनंतं स्थानं निरंतरं गत्वा केवलस्येव ।
द्वितीयपदवृंदमंतो द्वितीयादिममूलगुणितसमः ॥ ८१ ॥

अर्थ—ऐसें सर्वाकाशके उपरि अनंत वर्गस्थान निरंतर जाइ केवल ज्ञानका द्वितीय मूलका घन हो है । सोई इस विरूप घनधाराका अंत स्थान है, सो कितना है ? द्वितीय मूल अर प्रथम मूल कौं परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ तीह समान है । जैसें पणहीका प्रथम मूल दोयसे उपजै, द्वितीय मूल सोलह, इनकौं परस्पर गुणें च्यारि हजार छिनवै होइ सोई पणहीका द्वितीय मूल सोलह ताका घन भी च्यारि हजार छिनवै ही होइ ऐसें ही इहां जानना ॥ ८१ ॥

यह ही अंत स्थान कैसे है सो कहै हैं —

चरिमस्स दुचरिमस्स य णेव घणं केवलव्वदिक्कमदो ।
तम्हा विरूवहीण [illegible] रासिसला इवे ठाणं ॥ ८२ ॥

चरमस्य द्विचरमस्य च नैव घनः केवलव्यतिक्रमतः ।
तस्मात् द्विरूपहीना स्वकवर्गशला भवेत् स्थानम् ॥८२॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधाराका चरम राशि केवलज्ञान अर द्विचरम राशि केवल ज्ञान प्रथम मूल, तिनके घनका इहां ग्रहण नांही हैं । काहे तैं, जो इनके घनका ग्रहण करिए तौ केवल ज्ञान अधिक प्रमाण होइ जाइ । बहुरि इस द्विरूप घनधाराके सर्व स्थान दोय घाटि केवल ज्ञानकी वर्ग शलाका प्रमाण जाननें । इहां अंक संदृष्टि भी जाननीं । जैसें केवल ज्ञानका प्रमाण पणट्ठी ताके घन वा ताके प्रथम मूल दोयसैं छप्पनका घन करिए तौ पणट्ठीतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ तातैं ग्रहण करना ॥ ८२ ॥

आगैं अब द्विरूप घनधाराकौं आठ गाथानि करि कहे हैं:—

तं जाण विरूवगयं घणाघणं अट्ठविंदतव्वग्गं ।
लोगो गुणगारसला वग्गसलद्धच्छिदादिपदं ॥ ८३ ॥
तं जानीहि द्विरूपगतं घनाघनं अष्टवृंदतद्वर्गम् ।
लोको गुणकारशला वर्गशलार्धच्छेदादिपदम् ॥ ८३ ॥
तेउक्काइयजीवा वग्गसलागत्तयं च कायठिदी ।
वग्गसलादित्तिदयं ओहिणिबद्धं वरं खेत्तं ॥ ८४ ॥
तेजस्कायिकजीवा वर्गशलाकात्रयं च कायस्थितिः ।
वर्गशलादित्रितयं अवधिनिबद्धं वरं क्षेत्रम् ॥ ८४ ॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो राशि वर्ग रूप हैं ताका घनाघन इस द्विरूप घन धारा विषै हैं । घनका जु घन ताकौं घनाघन कहिए । कैसें सो कहे हैं । याका प्रथम स्थान आठका घन जो पाचसै बारह सो जाननां, जातैं दोयका घनाघन इतनां ही हैं । बहुरि ताका दूसरा दोय छप्पन कोडाकोडि एक सौ बयालीस (२६२१४४) सो याका दूसरास्थान जाननां जातैं याकी घनाघन इतनां ही हैं । ऐसेंही पूर्व पूर्व स्थानकका वर्ग कीएं उत्तर उत्तरस्थान हो है । इस प्रकारैं असंख्यात स्थान जाइ लोकाकाशके प्रदेशनिका प्रमाणरूप लोक उपजै है । याका वर्गशलाकादिक इस धारा विषै नाही हैं तातैं न कहे । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ तेजस्कायिक जीवराशिका संख्या स्थानकैं अर्थि लोकका परस्पर जेतीवार गुणन होइ तीह प्रमाण गुणकारशलाका उपजै है । तातैं असंख्यात स्थान जाइ तेजस्कायिक जीवराशिकी वर्गशलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताकी अर्द्धच्छेद हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताकी प्रथममूल हो है । ताकौं एकवार वर्गरूप कीएं तेजस्कायिक जीवराशिकी संख्या उपजै है । [illegible] ॥ ८४ ॥

[illegible] । बहुरि जैसे ए [illegible] लोक जितनी संख्या मुणित । जैसे कीए जो यह लोक-[illegible] संख्या, जैसे संख्या गुणी जो महाराशि भया ताकी गुणकार [illegible], एक भई जो एकवार स्थापन गुणन भया है । बहुरि वर्गशलाका पर्यंत अर्द्धच्छेदनि [illegible] । जातै द्वितीयादि वर्गशलाका, अर्द्धच्छेद तिनके अर्द्धच्छेद इन दोऊनिविषै [illegible] वर्गशलाका प्रमाण हो है । इहां अंकसंदृष्टि कीए है । लोकको सात्तानी संख्या ४, [illegible] संख्या जितना देवराशि स्थापिए (ल. ४, वि. ४, दे. ४) बहुरि तिस राशिकी विरलन १,१,१,१ करि प्रति देवराशिको दीजिए, ४,४,४,४ एकत्र मुणे सोलमै प्रमाण भए, तहां [illegible] गुणन भया सो गुणकारशलाका एक । बहुरि देवराशि स्थापिको वर्गशलाका एक, [illegible] राशि स्थापिके अर्द्धच्छेद दोय तिनि करि दोयसै [illegible] लोक वर्गशलाका भई । बहुरि [illegible] अर्द्धच्छेद दोय तिनि करि तिसप्रमाणि स्थापिको गुणे दोयसै छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद भए, [illegible] जानना । बहुरि जैसे अंकसंदृष्टि विषै सोलमै छप्पन भए तैसे परस्पर गुणे जो महाराशि [illegible] सोई विरलन राशि अर देय राशि रूप स्थापिए । तहां विरलन राशिका विरलन करि अरु रूप प्रति देय राशिको देइ परस्पर गुणि जो लोकप्रमाण शलाका राशि ता सामैं एक और घटाईए, तहां परस्पर गुणे जो महाराशि भया ताकी गुणकार शलाका दोय जाने दूसरी बार गुणन भया । बहुरि वर्ग शलाका अर अर्द्धच्छेदनि शलाका करि असंख्यात लोक प्रमाण है तथापि वर्गशलाका-[illegible] अर्द्धच्छेद असंख्यात लोक गुणे है । बहुरि इस ही प्रकारे परस्पर गुणनेंमें जो जो महाराशि [illegible] तीह प्रमाण विरलनराशि, देय राशि स्थापि विरलन राशिका विरलन करि रूप प्रति देय [illegible] देइ परस्पर गुणन करि एक एक शलाका राशिमैं घटावते घटावते जहां लोक प्रमाण [illegible] राशि शून्य भए तहां परस्पर गुणन तैं जो महाराशि भया ताकी गुणकार शलाका तौ [illegible] लोकप्रमाण ही है । जातै लोकप्रमाण बार गुणकार भया । बहुरि वर्गशलाका अर अर्द्धच्छेदतैं [illegible] प्रकार तीन अधिक है तथापि आगमनें असंख्यात लोक प्रमाण कहिए । ऐसें पहिली बार [illegible] स्थापन कीया जो शलाका राशि ताका निष्ठापन जो समाप्तपना सो भया । बहुरि तहां परस्पर गुणें [illegible] महाराशि भया ताकी शलाका, विरलन, देय रूप तीन प्रकार स्थापिए । बहुरि जैसैं प्रथम [illegible] शलाकाका निष्ठापन कीया, तैसैंही अनुक्रमतैं दूसरी बार स्थापन करी जु यह शलाका ताका निष्ठापन करना । बहुरि तहां परस्पर गुणन तैं जो महाराशि होइ तीह प्रमाण शलाका, विरलन, [illegible] राशि स्थापि पूर्वोक्त प्रकार करि ही तीसरी बार स्थापन करी जु यह शलाका राशि ताका निष्ठापन करना । बहुरि तहां परस्पर गुणें जो महाराशि भया तीह प्रमाण शलाका, विरलन, देय [illegible] राशि स्थापि, पूर्वोक्त प्रकार करि जो चौथी बार इस शलाका राशिका प्रमाण था तामैं पूर्वै तीन [illegible] शलाकाका प्रमाण घटाइ अवशेष शलाकाका प्रमाणको सामान्यपनें आधी शलाका करी ताका [illegible] प्रमाण घटाइ [illegible] तीन बार शलाका निष्ठापन भए अद्धिकाद्धिक जीवनिका प्रमाण हो [illegible] [illegible] [illegible]

जाइ कायस्थितिकी वर्गशलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग करै कायस्थितिका प्रथम हो है। सो कहा? अन्यकायनैं आय करि अग्निकायिकविषै कोई जीव उपज्या, सो उपज्यां यावत् काल अग्निकायिकपणां छोडि अन्य काय विषै न उपजै तहांही अवस्थित रहै, अग्निकायके पर्याय धर्या करै, तितकालके समयनिका प्रमाण सो इहां कायस्थितिका प्रमाण जानना। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ अवधिक्षेत्रकी वर्गशलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकौं एक बार वर्गरूप करै सर्वावधिका विषयभूत उत्कृष्ट क्षेत्रके प्रदेशनिका प्रमाण हो है. यद्यपि अवधि रूपीहीकौं जाने है रूपी पदार्थ लोक विषै ही है। तथापि शक्ति अपेक्षा असंख्यात लोक प्रमाण क्षेत्र कह्या है॥ ८३।८४।

वग्गसलागत्तिदयं ततो ठिदिबंधपयडिठाणा।
वग्गसलादीरसबंधज्झवसाणाण ठाणाणि॥ ८५॥

वर्गशलाकात्रितयं ततः स्थितिबंधप्रकृतिस्थानानि।
वर्गशलादिरसबंधाध्यवसानां स्थानानि॥ ८५॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताका एकवार वर्ग कीएं ज्ञानावरणादिकर्मनिका स्थितिबंधकौं कारणभूत जे कषाय परिणाम तिनके स्थानकनिका प्रमाण हो है। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ अनुभाग बंधाध्यवसाय स्थानकी वर्ग शलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ तहांके अर्द्धच्छे हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ तहांके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकौं एक बार वर्ग कीएं ज्ञानावणादि कर्मनिका तीव्रादि शक्तिकौं लीएं रसबंध जो अनुभागबंध ताको कारण भूत कषाय परिणामनिके स्थानकनिका प्रमाण हो है॥ ८५॥

वग्गसलागप्पहुदी णिगोदजीवाण कायवरसंखा।
वग्गसलागादितयं णिगोदकायट्ठिदी होदि॥ ८६॥

वर्गशलाकाप्रभृति निगोदजीवानां कायवरसंख्या।
वर्गशलाकादित्रयं निगोदकायस्थितिर्भवति॥ ८६॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ निगोद शरीर संख्याकी वर्ग शलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकौं एक बार वर्ग रूप किएं निगोद जीवनिके सर्व शरीर तिनकी उत्कृष्ट संख्या हो हैं,। नियत जे अनंत संख्याकरि धरें जीव तिनकौं गां कहिए क्षेत्र ताहि ददाति कहिए देव सो निगोद कर्म कहिए तीह संयुक्त जे जीव ते निगोद जीव कहिए, तिनके साधारण शरीर जेते लोकविषै उत्कृष्टपनैं होंहि तिनकी संख्या ऐसी जाननी। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ निगोद कायस्थितिकी वर्गशलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकौं एकबार वर्गरूप कीएं निगोद कायस्थिति हो है। सो यहां निगोद कायस्थिति ऐसा कहनें करि एक जीवका

निगोद विषै उत्कृष्ट रहनेका काल न ग्रहण करना। जातें एकजीव इतरनिगोदविषै उत्कृष्ट रहै तौ अढाई पुद्गल परावर्तन काल पर्यंत रहै सो काल अनंत है। तौ कहा ग्रहण करना? निगोद शरीररूप परिणए जे पुद्गल ते तीह शरीररूप आकारकौं यावत्काल उत्कृष्ट पनैं छाड़ै नांही सो काल इहां ग्रहण करना॥ ८६॥

तत्तो असंखलोग कंडिदाणे चडिय वग्गसलतिदयं।
दिस्संति सव्वजेट्ठा जोगस्सविभागपडिछेदा॥ ८७॥
ततो असंख्यलोकं कृतिस्थानं चटित्वा वर्गशलाकात्रितयम्।
दृश्यंते सर्वज्येष्ठा योगस्याविभागप्रतिच्छेदाः॥ ८७॥

अर्थ—बहुरि तीह निगोद काय स्थितितैं उपरि असंख्यात लोक प्रमाण वर्गस्थान चढ़िकरि सर्वोत्कृष्ट योगके उत्कृष्ट अविभाग प्रतिछेदनिकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात लोक प्रमाण वर्गस्थान चढ़िकरि ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात लोकमात्र कृतिस्थान चढ़िकरि ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकौं एकवार वर्गरूप कीएं सर्वोत्कृष्ट योगके उत्कृष्ट अविभाग प्रतिछेदनिका प्रमाण हो हैं। कर्म आकर्षण करनेकी शक्ति सो योग कहिए, ताके अविभाग प्रतिछेद कहिए जिनका विभाग न होइ ऐसे सूक्ष्म अंश तिनका प्रमाण हो है॥ ८७॥

जो जो रासी दिस्सदि विरूववग्गे सगिट्ठवाणम्हि।
तट्ठाणे तस्सरिसा पणापणे णवणवुद्दिट्ठा॥ ८८॥
यो यो राशिः दृश्यते द्विरूपवर्गे स्वकेष्टस्थाने।
तत्स्थाने तत्सदृशा धनाधने नव नव उद्दिष्टाः॥ ८८॥

अर्थ—द्विरूप वर्गधारा विषै अपना इष्ट स्थान जो विवक्षित स्थान तीह विषै जो जो राशि वर्गरूप दीसै हैं, तीह स्थान विषै इहां द्विरूप धनाधन धारा विषैं द्विरूप वर्गधारावत् स्थानके समान राशि नव नवबार परस्पर गुणें राशि हो हैं ऐसा कह्या है। जैसें द्विरूप वर्गधारा विषैं राशि विषैं द्वितीय स्थान च्यारिका वर्ग सोलह इहां च्यारिकौं नवबार मांडि (४,४,४,४,४,४,४,४,४) इनकौं परस्पर गुणें दोय लाख बासठि हजार एक सौ चवालीस होइ, सो इस धारा विषै द्वितीय स्थान जानना। ऐसें ही सर्व द्विरूप वर्गधाराके स्थानक वर्गरूप हैं तिनकौं नवबार परस्पर गुणें द्विरूप घनाघन धाराके स्थान हो हैं ऐसा जानना॥ ८८॥

चडिदूणेवमणंतं ठाणं केवलचउत्थपदविंदं।
सगवग्गगुणं चरिमं सुरियादिपदाहदेण समं॥ ८९॥
चटित्वैवमनंतं स्थानं केवलचतुर्थपदलब्धम्।
स्वकवर्गगुणमन्त्यं सूर्यादिपदाहतेन समम्॥ ८९॥

अर्थ—तीह योगका उत्कृष्ट अविभाग प्रतिछेद स्थानतैं अनंत वर्ग स्थान चढ़ि करि केवलज्ञानका चौथा मूल ताका। पनकौं इस चौथा मूलका वर्ग करि गुण्या प्रमाण होइ सो इस धाराका अंत्यस्थान जानना। सो ५६ चौथा मूल का प्रथम पुरुषके [illegible]

समान जाननां। याकों अंकसंदृष्टि करि कहिए है। जैसें केवल ज्ञान पणट्ठी प्रमाण(६५५३६) ताका चौथा वर्गमूल दोय (२) ताका घन आठ (८) ताकों इस घनका कों चौसठि करि गुणें पांचसें बारा होइ (५१२) सोई पणट्ठीका चौथा मूल दोय (२) अर प्रथम मूल दोयसें छप्पन (२५६) इनकों परस्पर गुणें भी पांच सौ बारा होय (५१२) ऐसें यहु अंक स्थान जाननां ॥ ८९ ॥

औरनिके अंत स्थानपनां कैसें न संभवै सो कहै हैं:—

चरिमादिचउक्कस्स य घणावणा एत्थ णेव संभवदि।
हेदू भणिदो तम्हा ठाणं चउहीणवग्गसला ॥ ९० ॥

चरमादिचतुष्कस्य च घनावना अत्र नैव संभवति।
हेतुः भणितः तस्मात् स्थानं चतुर्हीनवर्गशलम् ॥ ९० ॥

अर्थ—केवलज्ञानादिक नीचैके द्विरूप वर्गधारा विषैं कहे च्यारि स्थान केवलज्ञान १ तहां प्रथम मूल १, द्वितीय मूल १, तृतीय मूल १ इन च्यारोंका घनाघन इस द्विरूप घनाघन धारा विषै न संभवै है। जो इनका घनाघन करिए तौ केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ। अंकसंदृष्टी करि जैसें केवल ज्ञान पणट्ठी प्रमाण (६५५३६) ताका प्रथम मूल दोयसें छप्पन (२५६) द्वितीय मूल सोलह (१६) तृतीय मूल च्यारि (४) इनके घनका घन करिए तौ पणट्ठीतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ, तातैं इस द्विरूप घनाघन धाराके सर्वस्थानकनिका प्रमाण च्यारि घाटि केवलज्ञानके वर्गशलाका प्रमाण जाननें ॥ ९० ॥

आगें कही जु ए धारा तिनका संहार कहे हैं:—

ववहारुवजोग्गाणं धाराणं दरिसिदं दिसामेत्तं।
वित्थरदो वित्थरुहासिस्सा जाणंतु परियम्मे ॥ ९१ ॥

व्यवहारोपयोग्यानां धारानां दर्शितं दिशामात्रम्।
विस्तरतो विस्तररुचिशिष्या जानंतु परिकर्मणि ॥ ९१ ॥

अर्थ—संख्या व्यवहारकों उपयोगी ऐसे जु धारा तिनका स्वरूप इहां दिशा मात्र दिखाया जैसें कोऊ अंगुली करि पूर्वादिक दिशाकों दिखावै तैसें इहां अति संक्षेप धारानिका स्वरूप दिखाया है। जे विस्तार रुचिके धारक शिष्य हैं, ते विस्तार तैं वृत्तधारा परिकर्म नामा ग्रंथ विषै धारानिका स्वरूपकों जानहु ॥ ९१ ॥ ऐसें संख्याप्रमाण समाप्त भया।

अब संख्याप्रमाणके विशेषभूत ऐसी जु चौदह धारा तिनहुं सविस्तर दिखाइ अब तिनिमें जे उत्तम प्रमाणका अष्टक ताकों निरूपण करैं हैं:—

पढमो सायर मुहं पदरं य घणंगुलो य जगसेढी।
लोयपदरं य लोगो उवमपमा एवमट्ठविहा ॥ ९२ ॥

प्रथमः सागर मुखी प्रतरं च घनांगुलः च जगच्छ्रेणी।
लोकप्रतरं च लोक उपमाप्रमा एवमष्टविधा ॥ ९२ ॥

अर्थ—पल्य १, सागर २, सूच्यंगुल ३, प्रतरांगुल ४, घनांगुल ५, जगच्छ्रेणी ६ जगत्प्रतर ७, घनलोक ८ ऐसे उपमा प्रमाण आठ प्रकार हैं ॥ ९२ ॥

आगैं इन विषै पल्यका भेदकौं अपनां अपनां विषयका निर्णय पूर्वक कहै हैं:—

ववहारुद्धारद्धापल्ला तिण्णेव होंति णायव्वा।
संखा दीवसमुद्दा कम्मट्ठिदि वण्णिदा जेहिं ॥ ९३ ॥

व्यवहारोद्धाराद्धापल्यानि त्रीण्येव भवंतीति ज्ञातव्यानि।
संख्या द्वीपसमुद्राः कर्मस्थितयो वर्णिता यैः ॥ ९३ ॥

अर्थ—व्यवहार पल्य १, उद्धारपल्य २, अद्धापल्य, ३, ऐसें पल्य तीन प्रकार ही हैं ऐसा जानना। जिन तीन प्रकार पल्यनिकरि क्रमतैं संख्या अर द्वीप समुद्र अर कर्मस्थिति आदि वर्णन कीए हैं। तहां व्यवहार पल्य करि तौ रोमनिकी संख्या वर्णिए हैं, अर उद्धारपल्यकरि द्वीप समुद्रनिकी संख्या वर्णिए हैं, अर अद्धापल्य करि कर्मकी स्थिति वर्णिए है, आदि शब्दतैं और भी यथासंभव जानना ॥ ९३ ॥

आगैं पल्यके जाननेकौं विधान कहै हैं:—

सत्तमजम्मावीणं सत्तदिणब्भंतरम्हि गहिदेहिं।
सण्णहं सण्णिचिदं भरिदं वालग्गकोडीहिं ॥ ९४ ॥

सप्तमजन्मादीनां सप्तदिनाभ्यंतरे गृहीतैः।
संनष्टं संनिचितं भरितं बालाग्रकोटिभिः ॥ ९४ ॥

अर्थ—सातवां जन्म जुक्त ऐसे जु ऊरणें गाढर तिनके जन्मतें सात दिन मांही ग्रहे जु रोम तिनके अग्रभाग रूप खंड तिनके कोटिनिकरि संयुक्त किया बहुत संचयरूप किया भर्या ॥ ९४ ॥

ऐसा कह्या सो कहै हैं:—

जं जोयणवित्थिण्णं तत्तिउणं परिरयेण सविसेसं।
तं जोयणमुव्विद्धं पल्लं परिदोवमं णाम ॥ ९५ ॥

यत् योजनविस्तीर्णं तत्त्रिगुणं परिधिना सविशेषम्।
तत् योजनमुद्विद्धं पल्यं पल्योपमं नाम ॥ ९५ ॥

अर्थ— जो एक योजन प्रमाण तौ विस्तीर्ण करिए चौडा, बहुरि तातैं त्रिगुणा परिधि करि सविशेष।

भावार्थ— जो सूक्ष्म परिधिकी अपेक्षा चौडाईतैं त्रिगुणा किछू अधिक परिधिकी प्रमाण करि संजुक्त, बहुरि एक योजन उंडा ऐसा जु कुंड सो रोमनि करि भर्या तीह विषै जो रोमनिका प्रमाण तावौ पल्योपम कहिए वा पल्योपम कहिए ॥ ९५ ॥

आगै परिधिका सविशेष ऐसा विशेषण कह्या ताके जाननेकौं सूक्ष्म परिधि करनेका करणसूत्र कहै हैं—

विक्खंभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरयो होदि।
विक्खंभचउब्भागे परिरयगुणिदे हवे गणियं ॥ ९६ ॥

विष्कंभवर्गदशगुणकरणिः वृत्तस्य परिधिः भवति ।
विष्कंभचतुर्भागे परिधियुणिते भवेत् गणितम् ॥ ९६ ॥

अर्थ—विष्कम्भ कहिए चौड़ाईका प्रमाण तीहका वर्ग करिए, ताकौं दसगुणा करिए ऐसे करतैं जो प्रमाण होइ सो वृत्त जो गोल क्षेत्र ताका करणिरूप परिधि जाननां । जिस राशिका वर्गमूल ग्रहण करनां होइ तिस राशिका तहां करणि ऐसी संज्ञा जाननी । बहुरि निरंतर भए जेते प्रमाण होइ सो सूक्ष्म परिधि जाननां । जो तारतम्यरूप परिधि होइ सो सूक्ष्म परिधि कहिए । सो इहां कुंडका विष्कम्भ एक योजन है । विष्कम्भ १ ताका वर्ग कीएं भी एक क्षेत्रफल होइ, ताकौं दसगुणा कीएं दश योजन होइ सो इतनां करणि राशि भया, सो याका इहां वर्गमूल ग्रहण करनां । सो दश योजनका वर्गमूल तीन योजन अर एक योजनका छठा भाग इतनां भया (३$\frac{१}{६}$) याकौं समच्छेद करि जोड़ें उगणीसका छठा भाग भया ($\frac{१९}{६}$) ऐसें इस कुंडका सूक्ष्म परिधिका प्रमाण हो है । बहुरि परिधिकौं विष्कम्भका चौथा भागतैं गुणें क्षेत्रफल होइ सो इहां विष्कम्भ एक योजन ताका चौथा भाग $\frac{१}{४}$ करि गुणें उगणीसकौं चौईसका भाग दीजिये ऐसा क्षेत्रफल भया ($\frac{१९}{२४}$) । बहुरि याकौं बेध जो उंडाई एक योजन प्रमाण तीहकरि गुणें भी तितनां ही भया ($\frac{१९}{२४}$) । ऐसें इस कुंडका घनरूप समस्त सूक्ष्म क्षेत्रफल उगणीसका चौबीसमां भाग प्रमाण जानना । बहुरि यहु कह्या जो प्रमाण योजनरूप सूक्ष्म क्षेत्रफल ताके व्यवहार योजनादिक करने कैसे ? सो कहे है । एक प्रमाणयोजन रूप क्षेत्र ताका पांचसै व्यवहारयोजन होइ तो उगणीस प्रमाण योजनका चौबीसवां भागकौं कितने व्यवहार योजन होइ ऐसें त्रैराशिक करना, तहां फलराशि पांचसै इच्छाराशि उगणीस प्रमाण घनरूप ही होइ तातैं तिन प्रमाण योजननिके भागनिकौं पांचसैका घन करि तिनि पांचसैकौं तीन जायगा लिखिए । बहुरि ऐसेंही एक व्यवहारयोजनके घनरूप अष्टोत्तरशत अंगुल, एक अंगुलके आठ यव, एक यवके आठ लिख, एक लिखके आठ जूंव, एक जूंवके आठ कर्मभूमियांके रोम, एक कर्मभूमियांके रोमके आठ जघन्य भोगभूमियांके रोम, एक जघन्य भोगभूमियांके रोमके आठ मध्यम भोगभूमियांके रोम, एक मध्यम भोगभूमियांके रोमके आठ उत्तम भोगभूमियांके रोम, सो इनका त्रैराशिक करि घनरूप राशि है सो इन [illegible] ($\frac{१९}{२४}$, ५००,५००,५००,७६८०००,७६८००० ७६८०००८,८ इनसबनिकौं परस्पर गुणें बहुरि इस विष्कम्भके वर्गनैं दशगुणा वर्गकरणिरूप परिधिका प्रमाण कैसें होइ सो वासनाका लिए [illegible] ॥ ९६ ॥

[illegible] कहे है —

[illegible]
[illegible]
[illegible]

अर्थ—एकटी (१८४४६७४४०७३७०९५५१६१६) बदरि एकटी (६५५३६) बदरि इकतीस (१९) बदरि अठारह (१८) इतनी पासत गुणें जे अंक होहिं तिनकौं आगैं द्विगुण नवशून्य जो अठारह बिंदी तिन करि संयुक्त कीजिए यह पल्योपमके रोमनिकी संख्या जाननी (१८=६५=१९,१८, बिंदी १८) ॥ ९७ ॥

आगैं पासत गुणें जो प्रमाणरूप पल्य तामैं दिखावै हैं:—

वट्टलवणरोचगोनगननरनगंकाससासयधमयरकधरं।
दिगुणणवसुण्णसहिदं पल्लस्सदु रोमपरिसंखा ॥ ९८ ॥

वट्ट..... .....।

द्विगुणनवशून्यसहितं पल्यस्य तु रोमपरिसंख्या ॥ ९८ ॥

अर्थ—इहां अक्षर संज्ञानैं अंक जाननैं। ताका उक्तं च सूत्र—' कटपयपुरस्थवर्णैर्नव नव पंचाष्टकल्पितैः क्रमशः। स्वरमनशून्यं संख्या मात्रोपरिमाक्षरं त्याज्यं ॥ याका अर्थ—ककारादिक नव, अर टकारादिक नव, अर पकारादिक पांच, अर यकारादिक आठ। इन अक्षरनि विषै क्रमतैं जेएवां अक्षर होइ सो तहां अंक जाननां। बहुरि अकारादिक स्वर अर अकार, नकार ए जहां होइ तहां बिंदी जाननां। बहुरि अक्षरनिके जो मात्रा होइ अथवा कोई संजोगी अक्षर होइ तौ ताका किछू प्रयोजन न प्रमाण करनां। सो इस सूत्र करि इहां व कहिए प्यारि जातैं यकारतैं यकार चौथा अक्षर है। बहुरि ट कहिए एक जातैं टकार पहला अक्षर है। बहुरि र कहिए तीन जातैं रकारतैं रकार तीसरा अक्षर है। बहुरि य कहिए प्यारि जातैं यकार तैं यकार चौथा अक्षर है। बहुरि ण कहिए पांच जातौं टकारतैं णकार पांचवां अक्षर है। ऐसैं ही क्रमतैं रोचगो नगनजर नगंकास ससय ध मयर कधरनि इन अक्षरकरि दोय, छह, तीन, बिंदी, तीन, एक, सात, सात, सात, प्यारि, नव, पांच, एक, दोय, एक, नव दोयके अंक जाननैं। बहुरि आगैं द्विगुण नव शून्य कहिए अठारह बिंदीनि करि सहित कीजिए। ऐसैं जो प्रमाण होइ सो पल्यके रोमनिकी संख्या जाननी। (४१३४५२६३०३०८२०३१७ ७७४९५१२१९२०००००००००००००००००) ॥ ९८ ॥

आगैं व्यवहार पल्यके समयकौं दिखावै हैं:—

वस्ससदे वस्ससदे एक्केक्के अवहिदम्हि जो कालो।
तक्कालसमयसंखा णेया ववहारपल्लस्स ॥ ९९ ॥

वर्षशते वर्षशते एकैकस्मिन् अपहृते यः कालः।
तत्कालसमयसंख्या ज्ञेया व्यवहारपल्यस्य ॥ ९९ ॥

अर्थ—एक सौ वर्ष, एक सौ वर्ष गएं एक एक रोम तिन रोमनिमैंस्यौं ग्रहण कीजिए। इस ग्रहण करने का जेता काल बीतै होइ तावन्मात्र कालके जेते समय सो व्यवहार पल्यका समयसंख्या जाननी। भावार्थ यह जो एक रोमका ग्रहण किये सौवर्ष होइ, तो पूर्वोक्त प्रमाण सर्व रोमनि ग्रहण किए केते वर्ष होइ ऐसा विचारिकै कीजे बहुरि एक वर्षके तीनसै साठि दिन, एक

विषै केते कुंड होंहि, ऐसा त्रैराशिक करिए, तहां प्रमाण राशि ऐसा (१० ½) फल राशि १, इच्छाराशि ऐसा (६ ल्ल, ६ ल्ल, १०) इच्छाकौं फल करि गुणि प्रमाणका दीएं दशका गुणकार वा भागहारका अपवर्त्तन कीएं लब्धराशि ऐसा होइ (६ ल्ल, ½ ६ ल्ल ½) बहुरि 'हारस्य हारो गुणकोंशराशेः' इस वचनतैं भागहारका, भागहार राशिका गुणकार होइ तैं यहां भागहार एक, ताका भागहार च्यारि है सो राशिका गुणकार भया तब ऐसा भया (२४ ल्ल, २४ ल्ल) ऐसें वर्गरूप शलाका होहिं, याका वर्गमूल ग्रहण करिए तब एक लाख गुणा चौवीस लाख हूवा (२४ ल्ल) याकौं लवण समुद्रकी चौडाई हजार योजन प्रमाण करि गुणें सर्व कुंडनिका प्रमाण ऐसा भया (२४ ल्ल १०००) ॥ १०३ ॥

आगैं अन्यगुणकारकौं दिखावैं हैं:—

रोमहदं छक्केसजलोस्सेगे पण्णुवीससमयात्ति ।
संपादं करिय हिदे केसेहिं सागरुप्पत्ती ॥ १०४ ॥

रोमहतं षट्केशजलोत्सेके पंचविंशसमया इति ।
संपातं कृत्वा हिते केशैः सागरोत्पत्तिः ॥ १०४ ॥

अर्थ—बहुरि व्यवहार पल्यकैं रोम च्यारि, एक आदि अंकरूप तिनकी सहनानी ऐसी (४१=) बहुरि तिनि तैं असंख्यात गुणें उद्धार पल्यके रोम तिनकी सहनानी ऐसी (४१=ह) बहुरि अद्धापल्यके रोम तीह स्यौंमी असंख्यात गुणें तिनकी सहनानी ऐसी (४१=हह) इहां असंख्यातकी सहनानी ऐसी ■ जाननी, सो एक कुंडमैं इतने रोम पाईए तैं पूर्वोक्त प्रमाण कुंडनि विषै केते रोम पाईए ऐसें त्रैराशिक करि पूर्वोक्त कुंडनिके प्रमाणको रोमनिके प्रमाण करि गुणिन करे लवण समुद्र विषै कल्पित किए सर्व कुंड तिन विषै रोमनिका प्रमाण होइ (२४ ल्ल १०००, ४१=हह बहुरि छह रोम जितना क्षेत्र रोकैं, तितने क्षेत्रका जलकौं काढतैं पचास समय होइ तौ पूर्वोक्त प्रमाण रोमनिका क्षेत्र संबंधी जलकौं उलीचन करतैं केते समय होंहि, ऐसें त्रैराशिक करना । तहां प्रमाण राशि छह रोम (६), फलराशि पचास समय (२५), इच्छाराशि सर्व रोम (२४ , ल्ल १०००४१=हह) इहां इच्छा राशि विषै चौवीसको प्रमाण राशि छह करि अपवर्त्तन कीएं, अर फल करि इच्छा राशिकौं गुणें लब्ध राशि ऐसा (२५,४, ल्ल १०००,४१=हह) बहुरि पल्यके अर्द्ध छेदनि पूर्वोक्त इतने (४१=हह) होइ तौ इतने समयनिके केते पल्य होइ तहां ऐसा (४१=हह) प्रमाणका अपवर्त्तन कीएं पचास, अर लाख गुणा च्यारि लाख अर हजार इनकौं परस्पर गुणें दशकोडि भया सो इतने पल्य भएं एक सागरकी उत्पत्ति हो है ॥ १०४ ॥

आगैं दिगम्बर वर्गणाविषैं सागरोपमकी उत्पत्ति नाहीं तातैं सागरोपमके अर्द्धच्छेदको अन्य प्रकार मंत्र सूत्र कहै है —

गुणयारद्धच्छेदा गुणिदमाणस्स भद्धछेदजुदा ।
इट्ठस्सद्धच्छेदा अहियस्स छेदणा णत्थि ॥ १०५ ॥

गुणकारार्धच्छेदा गुण्यमानार्धच्छेदयुता ।
लब्धार्धच्छेदा अधिकस्य छेदना नास्ति ॥ १०५ ॥

अर्थ—गुणकारके जेते अर्द्धछेद होंहि ते गुण्यमानराशिके अर्द्धछेदनिकरि जोडिए तब तिस राशिके अर्द्धछेद होंहि । जैसे गुणकार आठ गुण्य सोलह सो गुणकार करि गुण्यकों गुणें लब्धराशि एकसौ अट्ठाईस तहां गुणकार आठके अर्द्धछेद तीन अर गुण्य सोलहके अर्द्धछेद च्यारि ४ इन दोऊनिकों जोडें लब्धराशि एकसौ अट्ठाईसके अर्द्धछेद सात ७ हो हैं । तैसे इहां भी गुणकार जो पोडशवादि अर गुण्य पल्य सो गुणकार करि गुण्यकों गुणे सागर होइ तहां गुणकार दश कोडाकोडि अर गुण्य पल्य तिनके अर्द्धछेदनि करि जोडें लब्धराशि सागरके अर्द्धछेद हो है । बहुरि जातें अधिकको छेदना नाहीं है । तातें सागरोपमकी वर्गशलाका नाहीं है । भावार्थ.—गुणकारादच्छेदा इत्यादि सूत्र करि गुण्यके अर्द्धछेदनि करि गुणकारके अर्द्धछेद जोडें तहां जो गुणकारके अर्द्धछेद जोडे तिनतें अधिक छेद चाहिये तिन अधिक छेदनिके अर्द्धछेद नाहीं हैं परंतु प्रयोजन नाहीं। तातें ऐसा कह्या कि अधिक छेदनिके अर्द्धछेद नाहीं । प्रयोजन तौ यहु है जो राशिके जेते अर्द्धछेद हो हैं तिन अर्द्धछेदनिके जेते अर्द्धछेद हों हैं तावन्मात्र वर्गशलाका होइ । सो सो यहां प्रयोजन है नातें जातें यहु राशि वर्गरूप नाहीं है तातें सागरोपमकी वर्गशलाकाका अभाव जानना ॥ १०५ ॥

आगें गुण्यगुणकारके अर्द्धछेदनिका स्वरूप दिखावतें प्रसंग पाइ भाज्य भाजकके भी अर्द्धछेदनिका स्वरूपको दिखावें हैं.—

भज्जस्सद्धच्छेदा हारद्धच्छेदणाहिं परिहीणा ।
अद्धच्छेदसलागा लद्धस्स हवंति सव्वत्थ ॥ १०६ ॥

भाज्यस्यार्धच्छेदा हारार्धच्छेदनाभिः परिहीनाः ।
अर्धच्छेदशलाका लब्धस्य भवंति सर्वत्र ॥ १०६ ॥

अर्थ—भाज्यके जेते अर्द्धछेद हों हि ते हार जो भाजक ताके अर्द्धछेदनिकरि हीन कीएं जो लब्धराशिकी अर्द्धछेदशलाका सर्वत्र होइ । अंक संदृष्टि जैसें भाज्य चौंसठि ६४ हार च्यारि ४ लब्धका भाग भाज्यकों दीएं लब्धराशी सोलह १६ । तहां भाज्य चौसटिके अर्द्धछेद छह ६ ते भाजक च्यारिके अर्द्धछेद दोय तिन करि हीन किएं अवशेष लब्धराशि सोलहके अर्द्धछेद च्यारि जाननें । ऐसें ही अन्यत्र भी जानना ॥ १०६ ॥

आगें मूल्यगुलके अर्द्धछेदको दिखावता सूत्र कहे हैं:—

विरलिज्जमाणरासिं दिण्णस्सद्धच्छिदीहिं संगुणिदे ।
अद्धच्छेदा होंति हु सव्वत्थुप्पण्णरासिस्स ॥ १०७ ॥

[illegible] ॥

[illegible] ७

अर्थ—विरलनमान जो राशि ताकौं देय राशिके अर्द्धच्छेदनकरि गुणें उत्पन्न [illegible] अर्द्धच्छेद सर्वत्र होहि। जैसें विरलन राशि च्यारि, देय राशि सोलह, तहां विरलन राशिका [illegible] करि देयराशिकौं रूप प्रति देइ १६।१६।१६।१६। परस्पर गुणें पणट्ठी ६५५३६ [illegible] तहां विरलन राशि च्यारि ताकौं देयराशि सोलहके अर्द्धच्छेद च्यारि तिन करि गुणें उत्पन्न [illegible] पणट्ठी ताके अर्द्धच्छेद सोलह हो हैं। तैसें इहां विरलनराशि पल्यके अर्द्धच्छेद तिनकौं देय [illegible] पल्य ताके अर्द्धच्छेदनि करि गुणें उत्पन्नराशिके अर्द्धच्छेद पल्यके अर्द्धच्छेदनिका वर्गप्रमाण हो है॥१०

आगैं सूच्यंगुलकी वर्गशलाकाकौं दिखावता सूत्र कहैं हैं:—

विरलिदरासिच्छेदा दिण्णद्धच्छेदछेदसंमिलिदा।
वग्गसलागपमाणं होंति समुप्पण्णरासिस्स॥ १०८॥

विरलितराशिच्छेदा देयार्धच्छेदछेदसंमिलिताः।
वर्गशलाकाप्रमाणं भवंति समुत्पन्नराशेः॥ १०८॥

अर्थ—विरलन राशिके जेते अर्द्धच्छेद होंहि ते देयराशिके अर्द्धच्छेदनिके अर्द्धच्छेदनि [illegible] मिलाईए जोडिए। तब विरलनदेयका क्रम करि उत्पन्न भया जो राशि ताकी वर्गशलाका [illegible] होइ। जैसें विरलनराशि च्यारि ताके अर्द्धच्छेद दोय बहुरि देयराशि सोलहके अर्द्धच्छेद च्यारि [illegible] अर्द्धच्छेद दोय इनकौं मिलाएं उत्पन्नराशि जो पणट्ठी ताकी वर्गशलाकाका प्रमाण च्यारि होइ। [illegible] इहां विरलनराशि पल्यके अर्द्धच्छेद ताके अर्द्धच्छेद पल्यकी वर्गशलाका प्रमाण बहुरि देयराशि [illegible] ताके अर्द्धच्छेदनिके अर्द्धच्छेद भी पल्यकी वर्गशलाकातैं दूणी हो हैं। बहुरि—**वग्गादुपरिमवग्ग दुगुणा दुगुणा हवंति अद्धछिद्दी।** इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय कर सूच्यंगुलके अर्द्धच्छेदनतैं दूणे प्रतर [illegible] गुलके अर्द्धच्छेद हो हैं। बहुरि—**वग्गसला रूवहिया**—इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय करि सूच्यं [illegible] गुलकी वर्गशलाकातैं एक अधिक प्रतरांगुलकी वर्गशलाका हो है। बहुरि द्विरूप वर्गधारावियें उत्पन्न [illegible] जो सूच्यंगुल सो जिस स्थानविषैं उपजै है तिसहीके समान स्थान विषैं द्विरूप घनधारावियें घनांगुल उपजैं हैं तातैं '**तिगुणा तिगुणा परहाणे**'—इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय करि सूच्यंगुलके अर्द्ध [illegible] च्छेदनितैं तिगुणें घनांगुलके अर्द्धच्छेद हो हैं। बहुरि '**सपदे पर सम**'—इस पूर्वोक्त न्यायकरि [illegible] सूच्यंगुलकी वर्गशलाकाके समान ही घनांगुलकी वर्गशलाका है। बहुरि '**विरलज्जमाणरासि**' इत्यादि [illegible] सूत्रके न्याय करि विरलनमानराशि पल्यका अर्द्धच्छदनिका असंख्यातवां भाग ताकौं देयराशि घनांगुलके [illegible] अर्द्धच्छेदनि करि गुणें उत्पन्नराशि जगच्छ्रेणी ताके अर्द्धच्छेद हो हैं॥ १०८॥

आगैं जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाका दिखावनैकौं सूत्र कहैं हैं:—

दुगुणपरीतासंखेणवहरिदद्धारपल्लवग्गसला।
विंदंगुलवग्गसलासहिया मेढिस्स वग्गसला॥ १०९॥

द्विगुणपरीतासंख्येनापहृताद्धारपल्यवर्गशलाकाः।
वृंदांगुलवर्गशलासहिता श्रेण्या वर्गशलाका॥ १०९॥

अर्थ—दूणा जघन्यपरीतासंख्यात करि भाजित जो अद्धारपल्यकी वर्गशलाका सो घनांगुलकी वर्गशलाकासहित जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाका हो है।

भावार्थ—पल्यकी वर्गशलाकाकौं जघन्य परीतासंख्यातवैं भागका भाग दीएं जो प्रमाण होइ ताकौं घनांगुलकी वर्गशलाकासहित जोडिए तब जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकाका प्रमाण हो है। इहां भागका जघन्यपरीतासंख्यातका भाग कैसें दीया सो कहिए है। अद्धापल्यका अर्द्धच्छेद राशिके अर्द्धच्छेदपल्यकी वर्गशलाका प्रमाण है। बहुरि पल्यका अर्द्धच्छेदराशिका प्रथम वर्गमूलके अर्द्धच्छेद-पल्यकी वर्गशलाकाके अर्द्धप्रमाण है। बहुरि ताहीका द्वितीय मूलके अर्द्धच्छेद तातैं आधे हैं। तृतीय मूलके तातैं आधे हैं ऐसें वर्गमूल वर्गमूल प्रति आधे आधे अर्द्धछेद तावत् करने तावत् पल्यका अर्द्धच्छेद-राशिके नीचैं जघन्य परीतासंख्यातका अर्द्धच्छेद एक अधिक प्रमाण वर्गमूलपर्यंत जाइ अंत विषैं जो वर्गमूल होइ ताके दूणां जघन्यपरीतासंख्यात करि भाजित अद्धापल्यकी वर्गशलाका प्रमाण अर्द्धच्छेद होंहि। इहांतैं उपरि उपरि वर्ग कीएं जैसें दूणे दूणे अर्द्धच्छेद होंहि तैसें उपरि तैं नीचैं नीचैं वर्गमूलनि विषैं आधे आधे अर्द्धच्छेद होंहि। इस युक्ति करि जघन्यपरीतासंख्यातका अर्द्धच्छेद एक अधिकप्रमाण वर्गमूलके अर्धच्छेद इतने भये। एक अधिक जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें दूणां जघन्य परीतासंख्यात होइ ताका भाग अद्धापल्यकी वर्गशलाकाकौं दीएं जो प्रमाण होइ तितने भए। भावार्थ—जगच्छ्रेणीविषैं विरलनराशि पल्यके अर्द्धच्छेदनिके असंख्यातवैं भागि करा सो पल्यकी अर्द्धच्छेदराशिके नीचे जघन्यपरीतासंख्यातका एक अधिक अर्द्धच्छेद प्रमाण जे पल्यके अर्द्धच्छेदनिके वर्गमूल तिन विषैं अंतके वर्गमूलका प्रमाण जानना। ताके अर्द्धच्छेद दूणां जघन्यप-रीतासंख्यातका भाग पल्यकी वर्गशलाकाकौं दीएं जो प्रमाण होइ तितना भया। बहुरि 'दिण्णद्ध-च्छेदछेदसम्मिलिदा' इस वचन करि देयराशि घनांगुल ताके अर्द्धच्छेदनिके अर्द्धच्छेद जो घनांगुलकी वर्गशलाका सो तिन विषैं जोडिए मिलाईए ऐसें करतैं उत्पन्न राशि जो जगच्छ्रेणी तातैं वर्गशला-काका प्रमाण हो है ऐसें मनविषैं विचारि 'दुगुणपरीतासंखे'—इत्यादि सूत्र आचार्यने कह्या है। बहुरि 'वग्गादुवरिमवग्गे' इत्यादि सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीके अर्द्धच्छेदनितैं दूणे जगत्प्रतरके अर्द्धच्छेद हैं। बहुरि 'वग्गसला रूवहिया'—इत्यादि सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीकी वर्ग-शलाकातैं एक अधिक जगत्प्रतरकी वर्गशलाका है। बहुरि 'तिगुणा तिगुणा परिहाणे'—इस सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीके अर्द्धच्छेदनितैं तिगुणें घनलोकके अर्द्धच्छेद हैं। बहुरि 'तप्पदे पदमव' इस सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकाके समान ही घनलोककी वर्गशलाका है ॥ १०९ ॥

आगैं 'तम्मेत्तदुगे गुणे रासी' इस सूत्र करि जितना अर्द्धच्छेदनिका प्रमाण होइ तितने दूवा मांडि परस्पर गुणें राशि होइ। तहां जो साधिक अर्द्धच्छेद होइ सो कैसे होइ सो कहे है—

विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि अहियरूवाणि।
तेसिं अण्णोण्णहदी गुणगारो रूवरासिस्स ॥ ११० ॥

विरलितराशेः पुनः यावन्मात्राणि अधिकरूपाणि।
तेषां अन्योन्यहतिः गुणकारो रूपराशेः ॥ ११० ॥

अर्थ [illegible] जितना साधिक अर्द्धच्छेद होइ तितने [illegible] प्रमाण [illegible] अंक मांडि परस्पर [illegible] प्रमाण होइ तितना एकराशिका गुणकार जानना। जैसें [illegible]

च्छेदनिका प्रमाण संख्यात अधिक पल्यका अर्द्धच्छेद प्रमाण है। तहां पल्यके अर्द्धच्छेद विरलनरूपराशि कहिये। अर ताके उपरि संख्याते अर्द्धच्छेद तिनकों अधिक रूप करि अधिक रूप प्रमाण दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें दश कोडाकोडि प्रमाण सो विरलनरा दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें भया जो पल्य प्रमाण लब्धराशि ताका गुणाकार जान पल्यप्रमाण गुण्यकों दश कोडाकोडि प्रमाण गुणकार करि गुणें सागरोपम हो है। अंक स जैसें सागरके अर्द्धच्छेद सात तहां विरलनराशि तौ पल्यका अर्द्धच्छेद च्यारि ताके उपरि तीनसो तीन जायगा दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें आठ भया सो विरलनराशिप्रमाण परस्पर गुणें भया जो पल्यका प्रमाण सोलह लब्धराशि ताका गुणकार हो है। तहां सोल करि गुणें सागरोपमका प्रमाण एकसौ अठाईस हो है। ऐसें ही अन्यत्र भी जानना।

भावार्थ—इहां ऐसा है कि जैसें केतेइक अर्द्धच्छेदनि विषैं केतेइक अर्द्धच्छेद मि मिलाए अर्द्धच्छेदनिकों अर्द्ध एकरूप कहे तैसें मिन मिलाए अर्द्धच्छेद प्रमाण दूवा मांडि प जो राशि होइ सो मूल अर्द्धच्छेद प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो लब्धराशि होइ तिस वि योग्य न हो हैं गुणकाररूप हो हैं॥ ११०॥

आगें प्रसंगपाइ हीन अर्द्धच्छेदनिका कहा सो कहैं हैं:—

विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि हीणरूवाणि।
तेसिं अण्णोण्णहदी हारो उप्पण्णरासिस्स॥ १११॥

विरलितराशितः पुनः यावन्मात्राणि हीनरूपाणि।
तेषामन्योन्यहतिः हार उत्पन्नराशेः॥ १११॥

अर्थ—विरलनरूपराशितैं यावन्मात्र हीनरूप होइ तिन हीन रूप प्रमाण दूवे मांडि गुणें जो प्रमाण होइ सो उत्पन्नराशि जो लब्धराशि ताका भागहार होइ। अंक संदृष्टि उदाहरण ऐसा। जैसें पणट्ठी ६५५३६ के अर्द्धच्छेद सोलह तिन तैं च्यारि घाटि अर्द्धच्छे हजार तिनके हो हैं। तहां पणट्ठीके अर्द्धच्छेदनिकों विरलित राशि कहिए, अर घाटि अर्द्धच्छेद तिनकों हीनरूप करिए। सो हीनरूपप्रमाण दूवा मांडि २।२।२।२। परस्पर गु भए। सोई विरलनराशिप्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें भया जो पणट्ठी ६५५३६ प्रमाण ताका भागहार हो है। तहां भाज्य पणट्ठी ६५५३६ को भागहारि सोलहका भाग दीजै च्यारि हजार तिनसै हो है।

भावार्थ—अर्द्धच्छेदनि विषैं केतेइक अर्द्धच्छेद घटाए तिन घटाए अर्द्धच्छेदनिकों करिए। सो हीनरूप प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो राशि होइ सो सर्व अर्द्धच्छेद मां मांडि परस्पर गुणें जो राशि होइ ताका भागहार हो है। भाग दीजै जो राशि आवै सो दीजै अवशेष अर्द्धच्छेद रहे तिनि प्रमाण दूवे मांडि परस्पर गुणें राशि हो है ऐसा जानना॥

आगें तुल्य करिए तें प्रमाण आवी इत्यादिका रूप गणनाकों कहै है—

जगसेढीए वग्गो जगपदरं होदि तप्पणो कोगो।
इदि वारियसंगाणसमेतो पदरंगुलो॥ ११२॥

जगच्छ्रेण्या वर्गः जगत्प्रतरो भवति तद्घनो लोकः।
इति बोधितसंख्यानस्य इतः प्रहतं प्ररूपयामः॥ ११२॥

अर्थ—आठ प्रकार उपमा प्रमाण विषैं पल्य और सागरका तौ वर्णन कीया ही। बहुरि सूच्यंगुल प्रतरांगुल घनांगुल जगच्छ्रेणीका वर्णन पूर्वं ही जगच्छ्रेणीका घनप्रमाण लोक है इस कथन का प्रसंग पाइ वर्णन कीया था। बहुरि जगच्छ्रेणीका वर्ग सो जगप्रतर है। बहुरि तिस जगच्छ्रेणीका घन सो घनलोक है। तहां पल्यके समयनिका प्रमाण सो तौ पल्य जानना। दश कोडाकोडि पल्यका समूह सो सागर जानना, पल्यका अर्द्धच्छेद प्रमाण पल्य मांडि परस्पर गुणें सूच्यंगुल होइ सो एक अंगुल लंबे प्रदेशनिका प्रमाण जानना। ताका वर्ग प्रतरांगुल सो एक अंगुल लंबा एक अंगुल चौडा प्रदेशनिका प्रमाण जानना। तिस सूच्यंगुलका घन सो घनांगुल है सो एक अंगुल लंबा एक अंगुल चौडा एक अंगुल ऊंचा प्रदेशनिका प्रमाण जानना। बहुरि पल्यका अर्द्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण घनांगुल मांडि परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी होइ सो लोकका मध्यतैं ऊर्ध्व वा अधः पर्यंत लंबे राजूके प्रदेशनिका प्रमाण जानना। बहुरि ताका वर्ग जगत्प्रतर सो जगच्छ्रेणी प्रमाण लंबे वा चौडे क्षेत्रके प्रदेशनिका प्रमाण जानना। बहुरि तिसही जगच्छ्रेणीका घन सो घनलोक है सो जगच्छ्रेणी प्रमाण लंबा ऊंचा क्षेत्रका प्रदेशनिका प्रमाण जानना। सो इहां ऐसा प्रमाणहीका ग्रहण करना किछू समय प्रदेशादिकनैं प्रयोजन नांही। जैसें काल वर्णन विषैं जगच्छ्रेणी प्रमाणकाल कह्या तहां तिसने समयनिका ग्रहण करना किछू प्रदेशनिनैं प्रयोजन नाही। ऐसेंही अन्यत्र जानना। ऐसैं हम थोरि जान्या है संख्याका स्वरूप जानैं ऐसा जु शिष्य ताके तांई यातैं परैं अब प्रकरणभूत जो लोकका वर्णन ताहि प्रमाणरूप करैं हैं॥ ११२॥

ऐसें उपमा प्रमाणका प्रकरण समाप्त भया॥

आगैं जो कथन करिए है ताकी पातनिका पूर्वं गाथाही करि कही सो जाननी:—

उदयदले आयामं वासं पुव्वावरेण भूमिमुहे।
सत्तेक्क पंचएक्क य रज्जू मज्झम्हि हाणिचयं॥ ११३॥

उदयदले आयामः व्यासः पूर्वापरेण भूमिमुखे।
सप्तैक पंचैक च रज्जुः मध्ये हानिचयम्॥ ११३॥

अर्थ—लोकका उदय जो उंचाईका प्रमाण सो चौदह राजू पूर्वं कह्या था ताका दल कहिए तथा सात राजू प्रमाण आयाम कहिए दक्षिण उत्तर दिसा विषैं चौडाईका प्रमाण जानना जातैं पूर्वं पश्चिम विषैं चौडाईका हानिचयरूप आगैं कथन करिए है तातैं इहां दक्षिण उत्तर दिसा विषैं नीचैं लगाय उपरि चौदह राजूकी उंचाई पर्यंत सर्वत्र सात राजू चौडा लोक जानना [illegible] नाधिक नहीं। बहुरि पूर्व पश्चिम दिसा विषैं व्यास भूमि अर मुख [illegible] च राजू, एक राजू, जानना।

भावार्थ—पूर्वतैं पश्चिम पर्यंत लोक नीचैं ही नीचैं तौ सात राजू चौड़ा है। उ
घटता मध्यलोक विषैं एक राजू चौड़ा है। उपरि क्रमतैं बधता ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच
है उपरि क्रमतैं घटता अंतविषैं एक राजू चौड़ा है। तहां आदि प्रमाणकौं भूमि क
प्रमाणकौं मुख कहिए तिन विषैं हानि अर चय हैं ते साधनैं। हानि नाम घटनेका है चय
जितनां जितनां बधै ताका नाम है ॥ ११३ ॥

आगैं तिन हानि चयके साधनेका विधान कहता संता सूत्र कहैं हैं:—

मुहभूमीण विसेसे उदयहिदे भूमुहादु हाणिचयं ।
जोगदले पदगुणिदे फलं घणो वेधगुणिदफलं ॥ ११४ ॥
मुखभूम्योः विशेषे उदयहिते भूमुखतः हानिचयं ।
योगदले पदगुणिते फलं घनो वेधगुणितफलम् ॥ ११४ ॥

अर्थ—मुख अर भूमि विषैं अधिक प्रमाणमें स्यौं हीन प्रमाण घटाएं जो अवशेष
उचाईका भाग दीएं भूमि मुखतैं हानिचय हो है। सो इहां अधोलोक विषैं नीचैं चौड़ा
सो भूमि कहिए। उपरि घटता घटता एक राजू रह्या सो मुख कहिए सो भूमिमें स्यौं
घटाएं सातराजू रहे तहां सात राजूकी उचाईमें छहराजू घटै तो एक राजू की उचाई में कितन
त्रैराशिक करैं उंचाई सात राजूका भाग छहराजूकौं दीजिए इतनां इतनां प्रमाण एक
बाइ चौड़ाईमें घटती हुवा तहां नीचेंही नीचैं सातराजू चौड़ा है तातैं एक राजू उपरि ज
एक पृथ्वीके निकटि छह राजूका सातवां भाग घट्या ताकौं समछेद विधान करि घटा
सतराजूका सात भागमें स्यौं छहराजूका सातवां भाग घटैं तिथालीस राजूका सातवां भ
भाग रह्या। ऐसें ही एक एक राजू उपरि जाइ छह राजूका सातवां भाग घटावतैं
पृथ्वीके निकटि तेतालिसका सातवां भाग पंचमीके निकटि इकतीसका सातवांभाग चौथी
पचासका सातवां भाग तीसरीके निकटि उगणसठिका सातवां भाग दूसरीके निकटि तेरह
भाग प्रथम पृथ्वीके क्षेत्र मध्यलोक निकटि सातका सातवां भाग प्रमाण व्याप्त
बहुरि आगा ऊर्ध्व लोकका चय ल्यावनैं विषैं मुख तौ मध्य लोकके निकटि एकराजू अर
स्वर्गके निकटि पांच राजू तहां भूमिमें स्यौं मुख घटाएं अवशेष च्यारि राजू। बहुरि मध्य लोक
तैं सो माड़ा तीन राजू ऊंचा अर सौधर्म युगल देढ़राजू ऊंचा। सो जो माड़ा तीन राजू
च्यारि राजू चै तो डेढ़ राजूकी उंचाईमें कितना चै ऐसें त्रैराशिक करिए तब तिन
डेढ़ राजूका सातवां भाग प्रमाण बधती आवा। याकौं एक राजूका व्याप्त मध्यलोक
संबंधी समछेद विधान करि तिहां सौधर्म युगलका अंतके निकटि उगणसठिका सातवां भा
प्रमाण जान। बहुरि सौधर्म युगली तैं ब्रह्मयुगल पांच राजू ऊंचा तातैं पूर्वोक्त डेढ़
[illegible]

आधा राजूमें कितना वर्ग ऐसे त्रैराशिक कीएं प्यारे राजूका सातवां भाग प्रमाण वर्ग सो पूर्व चय इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाणमें मिलाएं ब्रह्मयुगलका अंतके निकटि पैंतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास भया। बहुरि अब उपरिका ऊर्द्धलोक विषै हानि स्याईए है। तहां ब्रह्मवर्गके निकटि तौ पांचराजू व्यास सो भूमि कहिए। अर लोकका अंतविषै एकराजू व्यास सो मुख कहिए। भूमिमैं सौं मुख घटाएं अवशेष प्यारि राजू। बहुरे साढा तीन राजूकी ऊंचाईमें प्यारि राजू घटै तौ आधा राजूकी ऊंचाईमें कितना घटै ऐसे त्रैराशिक करतें प्यारि राजूका सातवां भाग आया, सो ब्रह्मयुगलतैं लांतवादि युगल आध आध राजू ऊंचे है तातैं ब्रह्मवर्गके निकटि पैंतीसका सातवा भाग प्रमाण थोड़ा घटा तातैं प्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं लांतव युगलका अंतके विषै इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रहा। यामें प्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं शुक्र युगलका अंतके निकटि सताईस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रहा यामें तितनाही घटाएं सतार युगलका अंतके निकटि तेईस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रहा यामें तितनाही घटाएं आनत युगलका अंतके निकटि उगणीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रहा। यामें तितना ही घटाएं आरण युगलका अंतके निकट पन्द्रह राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रहा। बहुरि यहांतें लोकका अंत एक राजू ऊंचा है सो साढा तीन राजूकी ऊंचाईमें प्यारि राजू घटै सौ एक राजूकी ऊंचाईमें कितना घटै ऐसे त्रैराशिक कीएं आठ राजूका सातवां भाग आया सो पैंद्रह राजूका सातवां भागमें सौं घटाएं सात राजूका सातवां भाग रहा सो अपवर्तन कीएं लोकका अंत विषै एक राजू प्रमाण व्यास जानना। ऐसे पूर्व पश्चिमकी अपेक्षा लोकका व्यास हीनाधिक जानना। बहुरि अधोलोकका समस्त क्षेत्रफल करिए है। मुख अर भूमिका योग करि ताकौ आधा करि पदयोग ॥ तीह करि गुणिए तब क्षेत्रफल होइ। बहुरि ताकौ बेध करि गुणिए तब घनफल होइ सो इहां पूर्व पश्चिम अपेक्षा नीचें ही नीचें व्यास प्रमाणरूप भूमि सो सातराजू अर अधो लोकका अंत विषै व्यासका प्रमाण सो मुख एक राजू इन दोऊनिकौं मिलाएं आठराजू इस ताकौ आधा कीएं प्यारि राजू हुवा। बहुरि इहां दक्षिण उत्तर अपेक्षा सर्वत्र व्यासकौं पद करिए सो सातराजू प्रमाण तीह करि गुणें अठाईस राजू प्रमाण क्षेत्रफल भया। बहुरि याकौ बेध जो अधोलोककी ऊंचाईका प्रमाण सातराजू तीह करि गुणें एकसौ तिनवे राजू प्रमाण घनफल होई। अधो लोकका एक एक राजू प्रमाण ऐसा चौदा ऊंचा खंड करिए तौ एकसौ तिनवे खंड होइ ऐसा अर्थ जानना ॥ ११४॥

आगें अधोलोकको क्षेत्र अपेक्षा आठ प्रकार भेदकरि कहै है:—

सामण्णं उड्ढायद जवमुर जवमज्झ मंदरं दूसं।
गिरिकटएण विजाणह अट्ठवियप्पो अधोलोगो ॥ ११५॥

सामान्यं ऊर्द्धायतं यवमुरजं यवमध्यं मंदरं दूष्यं।
गिरिकटकेन विजानीहि अष्टविकल्पः अधोलोकः ॥ ११५॥

अर्थ—सामान्य १ ऊर्द्धायत १ तिर्यगायत १ यवमुरज १ यवमध्य १ मंदर १ दूष्य १ गिरिकटक १ ऐसे आठ प्रकार अधोलोक जानहु। तहां प्रथम ही उत्तर दक्षिण लंबाईकी अपेक्षा अर पूर्व पश्चिम चौड़ाईकी अपेक्षा अठाईस राजू क्षेत्रफल करिए है सर्वत्र दक्षिण उत्तरकी अपेक्षा सात राजू

की गुणे एकसौ तिनसै रज्जु प्रमाण घनक्षेत्र जानना। तहां सामान्यपनैं क्षेत्रकी चौड़ाई की क्षेत्रफल इहां कहिए है सो सामान्य जानना सो इहां 'मुहभूमी जोगदले, इत्यादि सूत्रके अनुसार मुख तौ एक रज्जु, भूमि सातरज्जु इनका योग आठ रज्जु ताका आधा चारि पद जो उचाई सात रज्जु की गुणे अठाईस रज्जु क्षेत्रफल भया। बहुरि ऊर्ध्वलोक विषै मृदंगोपम क्षेत्र कहिए है जो क्षेत्रफल इहां कहिए है सो ऊर्ध्वायत जानना। सो अधोलोक का आधा करि तेरि दोय खंड करिए। बहुरि एक खंडको उपरि नीचैं उलटा करि जैसैं अधोलोक विषै क्षेत्र कह्या तैसैं स्थापित करे यहु क्षेत्र स्थापि राजू चौड़ा सातराजू ऊंचा ऐसा आयत चतुरस्र क्षेत्र भया, इत्यादि सूत्र करि क्षेत्रफल करना। तहां आधी साधी दोय दिशा संबंधी मृदंग कहिए अर्धोपम दोय दिशा संबंधी प्रमाणकों कोटि कहिए इनको परस्पर गुणें होंइ तिनकरि स्थापित्यो गुणें अठाईस रज्जु प्रमाण क्षेत्रफल भया। बहुरि निर्यगायत क्षेत्र विषै क्षेत्र कहिए जो इहां क्षेत्रफल करिए सो निर्यगायत जानना, सो 'मुखभूमि समास' इत्यादि सूत्र एक रज्जु भूमि सात रज्जु इनका समास जो जोड़ सो आठ रज्जु ताका आधा चारि रज्जु प्रमाण कीजिए तहां चौड़ाईका प्रमाण होई। बहुरि सात रज्जुकी उंचाई क्षेत्रको इहां स्थापि ताके उपरि आया क्षेत्र या ताकौं चौड़ाई विषैं स्थापित्या चारि रज्जु प्रमाण क्षेत्र कार्ड गुणें तिस आया क्षेत्रके दोऊ पार्श्वनि दिशैं चौथाई क्षेत्र स्थापित्या तहां एक एक आधा चौड़ा ऐसा निर्यगायत क्षेत्र भया ताका 'गुण कोटि वध, इत्यादि सूत्र प्रमाण क्षेत्रफल हो है ॥ ११५ ॥

अब लोकके क्षेत्रफलकी आणै है:—

रज्जुतयस्योसारणं सत्तुब्भो तदि हवेज्ज एक्कारे।
तिदिदि कदे संवादे एक्कजउस्सेहमाणमिणं ॥ ११६ ॥

रज्जुत्रयस्योत्सारणं सप्तोदयो यदि भवेत् एकस्य।
त्रिषट्त्रि कृते संवादे एकजोत्सेधमानमिदम् ॥ ११६ ॥

अर्थ—[illegible] आकृति आर मृदंगके आकृति क्षेत्र करिकरि इहां क्षेत्रफल कहिए है सो सामान्य जानना। ताहि दूणा करि [illegible] प्रमाण कीए आया मृदंगका आकार क्षेत्र [illegible] सो इहां अधोलोक विषै अठाईस रज्जु तौ [illegible] प्रमाण कहिए है [illegible] चौड़ा सातराजू [illegible]

रूप क्षेत्रका क्षेत्रफल ' मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि कहिए है। मुख तौ शून्य जातैं तिकूटा त्र विषैं मुखकी चौडाईका अभाव है। बहुरि भूमि एक रज्जु जोडैं भी एकरज्जु ताका आधा आधरज्जु कों उचाई सातका छटा भाग करि गुणें सात राजूका बारव्हां भाग प्रमाण आधा यवका क्षेत्र-ल भया। याकों अटारह गुणा कीएं साढा दस रज्जू प्रमाण क्षेत्रफल तौ यवाकार क्षेत्रनिका भया। हुरि आधा मृदंगाकारका क्षेत्रफल ' मुह भूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि कहिए है। मुख तौ क रज्जू भूमि च्यारि रज्जू जोडें पांच रज्जू ताका आधा अढाई रज्जु ताकों पद जो उंचाईका प्रमाण ढा तीन रज्जु करि गुणें पोंणानव रज्जु क्षेत्रफल भया। याकों दूणां कीएं साढा सत्रह रज्जु माण सम्पूर्ण मृदंग क्षेत्रका क्षेत्रफल भया यामें साढा दस रज्जु यव क्षेत्रफल मिलाएं अठाईस जु प्रमाण क्षेत्रफल भया। इहां यहु भाव जाननां। अधोलोक जहां च्यारि राजू चौडा है तहा दंगका मध्य ठहराया ताके उपरि अनुक्रमतैं हीन चौडा हैही सो आधा मृदंग सौ उपरि भया। हुरि जैसैं उपरि चौडाई है तैसें ही नीचें चौडाई मध्यतैं क्रमहीन रूप कल्पना करी सो आधा मृदंग वै भया ऐसैं दोऊनिकौं मिलाएं सम्पूर्ण मृदंग क्षेत्र भया। बहुरि नीचें दोऊ पार्श्वनि विषैं चौडाई वती रही तहां अठारह त्रिकूटा क्षेत्र अर्द्ध यवाकार कल्पना कीएं। इहां ऐसा आकार जानना। इहां चेतैं एक राजूकी चौडाई जहां घटी तहां पर्यंत अर्द्ध यव ठहराया। सो नीचें सात राजूकी चौडाई तहां मध्य विषैं एक राजू सौ मृदंगाकार विषैं रह्या अर एक पार्श्व विषैं तीनि राजू रह्या तहां तै न सौ नीचैं तैं क्रमहीनरूप आधे यव ठहराए। अर तिनके बीचि दोय उपरितैं क्रम हीनरूप आधे ठहराए। ऐसैं पांच आधे यव भए। बहुरि तिनके उपरि सात राजूका छटा भाग प्रमाण उचाई चेतैं भई जहां दोय राजूकी चौडाई रही तहां तैं तैसेंही दोयकी नीचेतैं क्रमहीनरूप एक उपरितैं महीनरूप ऐसैं तीन आधे यव ठहराए, ताके उपरि तहांतैं तितना ही उचाई भई जहां एक राजूकी चौडाई रही तहां एक नीचेतैं क्रम हीनरूप आधा यव ठहराया। ऐसैंही दूसरे पार्श्व विषैं नव धे यव जाननें। ऐसें अटारह आधे यव भए। ऐसें एक मृदंग नव यव कल्पना करि क्षेत्रफल कह्या। हुरि यवहीके आकारि क्षेत्र कल्पिकरि इहां क्षेत्रफल कहिए है सो यव मध्य जाननां। सो अधो-क विषैं चौईस यवाकार क्षेत्रके खंड कल्पिए है। तहां आधा यवका क्षेत्रफल सात रज्जुका रह्या भाग कह्या था ताकों दूणा कीएं सात रज्जुका छटा भाग प्रमाण एक यवका क्षेत्रफल होइ कों चौईस गुणा कीएं अठाईस रज्जु प्रमाण यव मध्य क्षेत्रफल हो है। इहां यहु भाव जाननां। तैं पूर्व पार्श्वनि विषैं यवाकार कल्पना कीया तैसें इहां सर्व ही अधोलोक विषैं अठ्यालीस अर्द्ध ाकार ऐसैं कल्पनें। इहां नीचें सात राजू चौडा तहां तै दूर्वत् नीचें तैं क्रमहीन सौ सात अर निके बीचि उपरितैं क्रमहीन छह आधे यव ठहराए। तिनके उपरि दूर्वत् उचाई होने पर, पंच, पांच, अर पांच, च्यारि च्यारि तीन अर तीन दोय अर दोय, एक, आधे यव कल्पना कीए रके चौवीस सम्पूर्ण यव ठहराय क्षेत्रफल कह्या है ॥ ११६ ॥

आगे मद्य [illegible] भावनका कहिए है —

अद्ध चउत्थभागो मगसारसमं तिदाल वारंसो।
मग वारस दिवड्ढ रज्जुदओ मंदरे रंरे ॥ १

अर्धं चतुर्थभागः सप्तद्वादश त्रिचत्वारिंशत् द्वादशांशः।
सप्त द्वादशांशं द्वयर्धं रज्जूदयो मंदरे क्षेत्रे ॥ ११७ ॥

अर्थ—मंदर जो मेरु ताका आकार कल्पि क्षेत्रफल जो इहां कहिए है सो मंदर जाननां। तहां अधोलोककी सात राजूकी उचाई है। तामैं आधारज्जु चौथाई रज्जु मिलाएं पौंणरज्जु। बहुरि सात रज्जुका बारव्हां भाग बहुरि तियालीस रज्जुका बारव्हां भाग बहुरि ड्योढ राजू इतनां प्रमाण लीएं जुदी जुदी उंचाई मंदर क्षेत्र विषैं कल्पिए। बहुरि 'मुहभूमीण विसेसे उदयहिदे, इत्यादि पूर्वसूत्रके अनुसारि मुख एकराजू भूमि सातराजू, । भूमिमैं स्यों मुख घटाएं छहराजू भया सो सात राजूकी उंचाई विषैं छहराजू घटै तौ पौंणराजूकी उंचाईमें केता घटै ऐसैं त्रैराशिक करि नवराजूका चौदह्वां भाग प्रमाण घट्या सो सात राजूमें स्यों घटाएं तियासी राजूका चौदह्वां भाग अवशेष रह्या इतना नीचेतैं पौंणराजू उपरि जाइ चौडाईका प्रमाण जाननां। ऐसैंही ताके उपरि सातराजूका बारव्हां भाग उपरि जाय सातराजूका चौदव्हां भाग घटि बियासीका चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रह्या ताके उपरि तियालीस राजूका बारव्हां भाग उपरि जाय तियालीसका चौदव्हां भाग घटि गुणतालीस राजूका चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रह्या ताके उपरि सात राजूका बारव्हां भाग उपरि जाय सातराजूका चौदव्हां भाग घटि बतीस राजूका चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रह्या ताके उपरि ड्योढ राजू उपरि जाय नवराजूका सातवां भाग घटि चौदह राजूका चौदहा भाग ऐसा एक राजू प्रमाण आयाम मध्यलोकके निक रह्या। तहां चूलिका स्थापनेंके अर्थि सातराजूका बारव्हां भाग प्रमाण उचाई रूप दोयक्षेत्र तिनकों लंबा चौकोर जैसैं होइ तैसैं एककों सुल्टा एककों उल्टा स्थापि तिन दोऊ क्षेत्रनि विषैं अपनी अपनी भूमिमेंस्यों मुख घटाए सातराजूका चौदव्हा भाग प्रमाण घाटि होनेंका प्रमाण कह्या। सो अपवर्तन कीएं आध आध राजू भया तहां एक एकके दोय दोय खंड कीएं च्यारि खंड भए तहा एक खंडकी भूमि पाव राजू प्रमाण ताकों तौ उपरि स्थापिए अर अवशेष तीन खंडनिका भूमि पौंणराजू प्रमाण ताकौं उपरि स्थापिए अर अवशेष तीनि खंडनिकी भूमि पौंणराजू प्रमाण सो नीचैं स्थापिए इतनां तौ चौडाईका प्रमाण। अर सातराजूका बारव्हां भाग उचाईका प्रमाण जाका भया ऐसी चूलिका करिए पीछै विषम चतुर्भुज क्षेत्रका तौ क्षेत्रफल 'मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि ल्याईए। अर आयत चतुरस्र क्षेत्रका क्षेत्रफल 'भुजकोटि वेध, इत्यादि सूत्र करि ल्याईए। बहुरि छहों क्षेत्रफलनिकों समच्छेद विधान करि जोडिए तब चौरासैं सै आठ राजूकी तीनसैं छत्तीसका भाग दीजिए इतना भया सो अठाईस राजू प्रमाण क्षेत्रफल भया। इहा ऐसा भाव जाननां। जैसैं मेरुगिरि नीचेतैं केतीइक उचाई पर्यंत तौ चौडाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि केतीइक उंचाई पर्यंत चौडाई समान रूप है। ताके उपरि केती इक उंचाई पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि केतीयक उचाई पर्यंत चौडाई समान रूप है ताके उपरि केतीइक उचाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि चूलिका है सो क्रमतैं हीनरूप चौडाई लीएं है ऐसैं यहु आकार है तैसैं अधोलोककी उंचाई विषै पाच भाग कल्पैं तहा पौंण राजकी उचाई पर्यंत तो चौडाई क्रमतैं हीन रूप ही ग्रहण कीन्ही इहा मेरु विषैं नींचैं तैं केती

उचाई पर्यंत तौ भूमि विषै कंद हैं । ताके उपरि भूमि उपरि उचाई है ऐसैं दोय भाग हैं । तैं आध राजू पावराजू उचाई रूप दोय भाग कीए परंतु इहां पर्यंत क्रमतैं चौडाई हीन रूप ही । तातैं मिलाय पौण राजू कही । बहुरि ताके उपरि सात राजूका बारम्हा भाग पर्यंत क्रमहीन टाई है । तिस चौडाई विषै उपरि बियाळीसका चौदम्हां भाग प्रमाण चौडाई रही तिस प्रमाण ान चौडाई कल्पी । अर दोऊ तरफा बधती चौडाई रही सो जुदी राखी सो यह चौडाई दोऊ फकी मिलाए नीचैं आधराजू उपरि क्रमतैं हीन निकूंटी जाननी । बहुरि ताके उपरि तियाळीस राजूका म्हां भाग पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप हैं सोई ग्रहण कीन्ही । बहुरि ताके उपरि सातराजूका बारम्हां ा पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप है । तिस विषै पूर्ववत् बत्तीसराजू चौदहां भाग प्रमाण समान डाई ग्रहण कीन्ही । अर दोऊ तरफांकी चौडाई पूर्ववत् प्रमाण लीए जुदी राखी । बहुरि ताके उपरि ोड राजू उचाई पर्यंत क्रमतैं हीनरूप चौडाई है सोई ग्रहण कीन्ही । बहुरि जो दोय जायगा चौडाई ी राखी थी तिस विषै एक जायगाकी चौडाई मुलटी एक जायगा उलटी स्थापै आधा राजू चौडा त राजूका बारम्हां भाग प्रमाण ऊंचा क्षेत्र भया । तहां उपरिकी चौडाई घटाय नीचैं मिलाए चैं पौणराजू चौडा उपरि पावराजू चौडा क्षेत्र कल्पना कीया अर याकी उचाई सातराजूका बारम्हां ग प्रमाण है सो यह क्षेत्र मेरुकी चूलिकाकी जायगा कल्पना कीया ऐसैं मेरुगिरि समान अधो-कका आकार कल्पि क्षेत्रफल कहा है । बहुरि अब ऊर्ध्व क्षेत्रफल करिए है । पूर्वं अर्द्धयवकी ाई सात राजूका छठा भाग कहा था सो सात राजूमें समछेद विधान करि घटाएं पैंतीसका ठा भाग रहा । सो एक तौ खंड यहु भया यहां भूमिका प्रमाण सात राजू अर मुखका प्रमाण तीस राजूका छठा भाग जानना । बहुरि दूसरा खंड विषै भूमि तो पैंतीस राजूका छठा भाग अर मैं सात राजूका छठा भाग घटाएं मुखका प्रमाण अठाईस राजूका छठा भाग । ऐसैं पूर्व पूर्व डविषै जो मुख होइ सो उत्तर उत्तर खंडविषै भूमि जाननी । पूर्व पूर्व खंडका मुखमैं यही अर्द्ध यकी उंचाईका प्रमाण घटाएं उत्तर उत्तर खंडनि विषै मुख जानना । ऐसैं एक खंड भए । मुह भूमी जोग दले' इत्यादि सूत्र करि इन दोनों खंडनिका क्षेत्रफल स्याई जोडिए तब दोनमैं नका बारम्हां भाग भया सो इकईस राजू हुवा । यामैं सात राजू मिलाएं ऊर्ध्व क्षेत्रफल विषै) क्षेत्रफल अठाईस राजू हुवा । सो इस ऊर्ध्वक्षेत्रफलका भाव मोकौं भी नीकै नाही प्रतिभास्या तैं नाही लिख्या है बुद्धिवान जानियो ॥ बहुरि गिरिकटकका क्षेत्रफल करिए । इस अठतालीस र्द्धयवरूप क्षेत्र कल्पना करिए है सो एक अर्द्धयवका क्षेत्रफल सात राजूका बारम्हां भाग कह्या था यातैं अठतालीस गुणा कीए गिरिकटक क्षेत्रफल विषै भी अठाईस राजू प्रमाण आया । ऐसैं अठ कार करि अधोलोकका क्षेत्रफल दिखाया । इहां यहु भाव जानना । पूर्वे जैसे अब मध्य कह्या तैसैं गिरिकटक जानना । विशेष इतना यहां दोय दोय निकूटे क्षेत्र मिलाय पंचावन कह्या था । इहां एक क निकूटा क्षेत्र ग्रहण करि अठतालीस पैंतालीस कह्या सो आकार ऐसे जानना ॥ ११७ ॥

अब ऊर्ध्व लोक प्रमाणको कहै है

सामण्ण एयरज्जू अट्ठण्हं तह य होइ पिण्णट्ठी ।
पंच पयारा लायकसंठाणहि जायव्वा ॥ ११८ ॥

सामान्यं प्रत्येकं अर्धस्तंभं तथैव पिनष्टिः ।
एते पंचप्रकाराः लोकक्षेत्रे ज्ञातव्याः ॥ ११८ ॥

अर्थ—सामान्य १ प्रत्येक १ अर्धस्तंभ १ स्तंभ १ पिनष्टि १ ऐसें ऊर्द्धलोकके क्षेत्रमें ए पांच प्रकार जानने । सो इहां पूर्वपश्चिम अपेक्षा चौडाई अर उचाईकी अपेक्षा करि क्षेत्रफल इकईस राजू कहिए है । याकौं दक्षिण उत्तर अपेक्षा सात राजूकी चौडाई करि गुणें एकसौ सैंतालीस राजू घनरूप क्षेत्रफल ऊर्द्धलोकका जानना । एक एक राजूका लंबा चौडा ऊंचा ऊर्द्धलोकका संड कीजें एकसौ सैंतालीस हो है । तहां सामान्यकौं समीकृत भी कहिए । जातैं हीनाधिक चौडाईकौं समान करि क्षेत्रफल इहां कहिए है । सो ' मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि तौ इहां मध्यलोक निकटि एक राजू अर भूमि ब्रह्मस्वर्गनिकटि पांच राजू तिनकौं जोडें आधा कीजें तौ राजू ताकौं उचाई साढा तीन राजू करि गुणें साढा दश राजू प्रमाण क्षेत्रफल आधा ऊर्द्धलोकका भया । याकौं दूणां कीजें इकईस राजू प्रमाण सब ऊर्द्धलोकका क्षेत्रफल भया । उपरिका आधा ऊर्द्धलोकविषैं मुख तौ लोकके अंति एक राजू अर भूमि ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच राजू जानना । ऊर्द्धलोकका आकार ऐसा जानना । सो इहां नीचैं तैं ब्रह्मस्वर्गपर्यंतका जुदा क्षेत्रफल कीया तातैं उपरि लोकपर्यंतका जुदा क्षेत्रफल कीया दोऊनिकौं मिलाय ऊर्द्धलोकका क्षेत्रफल कीया है । अब प्रत्येक क्षेत्रफल कहिए है । तहां मध्यलोकतैं सौधर्मद्विक ड्योढ राजू ऊंचा सो 'मुहभूमीजोगदले' इत्यादि पूर्वोक्त सूत्रका अनुसारतैं इहां मध्यलोकके निकटि एक राजू सो तो मुख जानना । बहुरि साढा तीन राजूकी उचाईमें च्यारि राजू बधै तौ ड्योढ राजूकी उचाईमें कितना बधै । ऐसें त्रैराशिक कीजें बारह राजूका सातवां भाग प्रमाण बधाएं उगणीस राजूका सातवां भाग चौदा होइ । इहां भूमिका भागके निकटि भया सो एक सौ बहू संड भया इस विषैं मुखतौ एक राजू भूमि उगणीस राजूका सातवां भाग प्रमाण है । बहुरि ऐसेही ताके उपरि ड्योढ राजू ऊंचा सोडविषैं मुखतौ उगणीस राजूका सातवां भाग पूर्वै बारहका सातवां भाग मिलै भूमि इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण हो है । बहुरि ताके उपरि आध राजू ऊंचा सोडविषैं मुखतौ इकतीस राजूका सातवां भाग अर पूर्वै च्यारि राजूका सातवां भाग मिलै भूमि पांच राजू प्रमाण हो है । बहुरि ताके उपरि आधा राजू ऊंचा लोकविषैं भूमि तौ पांच राजू तातैं साढा तीन राजूकी उचाईमें च्यारि राजू बधै तौ आध राजूकी उचाईमें कितना बधै ऐसें त्रैराशिक करि च्यारिका सातवां भाग बधाएं मुख इकतीस राजूका सातवां भाग है । बहुरि ऐसें ही ताके उपरि आधा राजू ऊंचा सोडविषैं भूमि इकतीस राजूका सातवां भाग तातैं च्यारि राजूका सातवां भाग बधाएं मुख सैंतीस राजूका सातवां भाग हो है । सो उपरि आधा राजू ऊंचा लोकविषैं भूमि सैंतीस राजूका सातवां भाग तातैं च्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं मुख तेतीस राजूका सातवां भाग है । ऐसें क्रमतैं ऊंचा ऊंचा मुख इकतीस राजूका सातवां भाग हो है । ताके उपरि आधा राजू ऊंचा लोक विषैं भूमि इकतीस राजूका सातवां भाग तातैं च्यारिका सातवां भाग घटे मुख सत्ताईस राजूका सातवां भाग हो है बहुरि ताके उपरि एक राजू ऊंचा लोक विषैं भूमि

पैंडा राजूका सातवां भाग तामें आठका सातवां भाग घटै मुख एकराजू प्रमाण हो है। ऐसें भूमि मुखका प्रमाण जानि मुखभूमी जोगदले, इत्यादि सूत्रकरि सब खंडनिका जुदा जुदा क्षेत्रफल जो होइ तायों जोडिए तब दोयसै चौराणवेका चौदहवां भाग ऐसा इकईस राजू प्रमाण प्रत्येक क्षेत्रफल होइ। इहां यहु भाव जाननां जुदा जुदा क्षेत्रफल कहि करि जोड्या तातैं याकों प्रत्येक क्षेत्रफल कह्या है। बहुरि अर्द्धस्तंभ अर स्तंभ क्षेत्रका क्षेत्रफल सुगम है इहां ऐसा भाव जाननां। ऊर्द्धलोकका आकारकों मध्यविषैं छेदि तहां बीचिका एकराजू क्षेत्र ताका तौ आधा आधा राजू दोऊ पार्श्वनि विषैं स्थापिए। अर जो दोऊ पार्श्वनिका अवशेष क्षेत्र तहां उपरला नीचला क्षेत्रकों उलटा सुल्टा स्थापन कीजे चौकोर क्षेत्र होइ सो मध्यविषैं स्थापन करिए ऐसें अर्द्धस्तंभ क्षेत्रका जुडनां हो है। तहां आकार ऐसा जाननां। इहां स्तंभाकार लोकका मध्यविषैं छेदि स्थापन किया तातैं याका नाम अर्द्धस्तंभ है। बहुरि ऊर्द्धलोकका आकार विषैं बीचि एक राजू चौडा क्षेत्र तौ बीचिमें लिखना अर दोऊ पार्श्वनिका बधता क्षेत्र मध्यविषैं दोय दोय राजू रह्या था तिसविषैं दोय खंड करि दोऊ पार्श्वनिका उलटा सुलटा जोडें दोय लंबे चौकोर क्षेत्र होइ सो दोऊ पार्श्वनि विषैं जोडिए ऐसें स्तंभ क्षेत्रका जुडनां हो है। ताका आकार ऐसा॥ बहुरि अर्द्धस्तंभ वा स्तंभ क्षेत्र विषैं जोड्या हूवा क्षेत्र तीन राजू ऊंचा हूवा सो भुजकोटिका वध करि इकईस राजू हूवा सो यहु क्षेत्रफल सुगम है॥ ११८॥

बहुरि पिनष्टि क्षेत्रफल जाननेंको त्रिभुजकी उंचाई आदि जानी चहिए सो कहै हैं:—

रज्जुदुगहाणिठाणे आउड्ढदलो जदीह एक्किस्से।
किमिदि तिरासियकरणे फलं दलोणं तिबाहुदओ॥ ११९॥

रज्जुद्विकहानिस्थाने अर्धचतुर्थोदयो यदीह एकस्य।
किमिति त्रैराशिककरणे फलं दलोनं त्रिबाहूदयः॥ ११९॥

अर्थ—एक पार्श्वकी अपेक्षा चौडाई करि दोय राजूका घटनेका स्थान विषैं साढा तीन राजूकी उचाई होइ तौ एक राजूका घटने विषैं केती उचाई होइ ऐसें त्रैराशिक करनें विषैं सातका चौथा भाग आया। तामैं आधा राजू घटाएं सवाराजू प्रमाण त्रिभुजकी उचाईका प्रमाण आया॥ ११९॥

तिभुजुदयूणुदयुदं सूईखेत्तस्स भूमिमुहसेसे।
भूमी तप्फलहीणं चदुरस्सघराफलं सुद्धं॥ १२०॥

त्रिभुजोदयोनोदयोद्धं सूचीक्षेत्रस्य भूमिमुखशेषे।
भूमिः तत्फलहीनं चतुरस्रघराफलं शुद्धम्॥ १२०॥

अर्थ—बहुरि उचाईका प्रमाण विषैं त्रिभुजकी उचाईका प्रमाण घटाएं बाह्य सूची क्षेत्रकी उचाईका प्रमाण आया। बहुरि भूमिमें स्यों मुख घटाइ अवशेष भूमि होइ ताका क्षेत्रफल करि हीन शुद्ध चौकोर क्षेत्रका क्षेत्रफल होइ। सो यहु कथन नीकें मेरे समझनेमें न आया है। तातैं पिनष्टि क्षेत्रके क्षेत्रफलका विधान इहां नाहीं लिख्याहै संस्कृत टीकातैं जानना॥ ऐसें ऊर्द्धलोकका पांच प्रकार करि क्षेत्रफल कह्या है॥ १२०॥

आगैं पूर्व पश्चिम अपेक्षा करि व दक्षिण उत्तर अपेक्षा करि लोकका परिधिकों दिखावते संता कहै हैं:—

पुव्वावरेण परिही उगुदालं साहियं तु रज्जूणं ।
दक्खिणउत्तरदो पुण वादालं होंति रज्जूणं ॥ १२१ ॥

पूर्वापरेण परिधिः एकोनचत्वारिंशत् साधिका तु रज्जूनाम् ।
दक्षिणोत्तरतः पुनः द्वाचत्वारिंशत् भवंति रज्जूनाम् ॥ १२१ ॥

अर्थ—पूर्व पश्चिम अपेक्षाकरि लोकका परिधि गुणतालीस राजू सो साधिक कहिए जिसमें सात सौ बीस राजूका एकसो बीसवां भाग करि अधिक प्रमाण जाननां । बहुरि दक्षिण उत्तर अपेक्षा बियालीस राजू प्रमाण जाननां । गिरहका नाम परिधि है सो दक्षिण उत्तर अपेक्षा तौ परिधि जाननां सुगम है । जातैं लोक दक्षिण उत्तर दिशाकी अपेक्षा सात राजू तौ नीचैं चौड़ा सात राजू उपरि चौड़ा, एक तरफ चौदह राजू ऊंचा तातैं दोन्यों तरफां अठाईस राजू हूवा सर्व मिलि बियालीस राजू प्रमाण परिधि भया ॥ १२१ ॥

बहुरि पूर्व पश्चिम अपेक्षा साधिक गुणतालीस राजू परिधि कैसैं है ताके जाननेंको करणसूत्र कहै हैं:—

भुजकोडिकदिसमासो कण्णकदी होदि वग्गरासिस्स ।
गुणयारमागहारा वग्गाणि हवंति णियमेण ॥ १२२ ॥

भुजकोटिकृतिसमासः कर्णकृतिः भवति वर्गराशेः ।
गुणकारभागहारौ वर्गौ भवतः नियमेन ॥ १२२ ॥

अर्थ—भुज और कोटिका जो वर्ग ताका समास कहिए जोड़ सो कर्णका वर्ग हो है । जैसे कोउ वांस खड़ा है । सो वांस बीचमें स्यों टूटिकरि पृथ्वीके आनि लागा तहां पृथ्वी अर लागा वांस अर टूटा वांसके बीचि जो त्रिभुज क्षेत्रभया तहां खड़ा वांसका प्रमाण अर टूटा वांस जहां पृथ्वी कौं आनि लाग्या तहांतैं लगाय जहां वांस खड़ा है तहां पर्यंत पृथ्वीका प्रमाण इन दोऊनि मिलैं एक की वृद्धि करिए एकको कोटि करिए है । बहुरि जहां तैं टूटा तहां तैं लगाय पृथ्वी मिलै आनि लाग्या तहां पर्यंत टूटा वांसका जो प्रमाण सो कर्ण कहिए है । तहां ऐसा आकार जाननां । तहां भुज और कोटि इन दोऊनिका जो प्रमाण ताका जुदा जुदा वर्ग करिए । इन दोऊनिकौं जोड़ें जो प्रमाण होइ सो कर्णके प्रमाण लाका वर्ग जाननां । ताका मूल लेइ कर्णका प्रमाण आवै है । बहुरि वर्गराशिके गुणकार वा भागहार वर्गरूप ही हो है । कोउ राशि वर्गरूप नांय होइ ताकौं किसी गुणकार करि गुणना होइ वा भागहार करि भाजना होइ तो जिस गुणकार वा भागहारका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ ताकरि गुणिए वा भाजन कीजिए है । जैसे कहीं चौदहि प्रमाण वर्गरूप है ताकौं दोय करि गुणना होइ तो चार करि गुणे वर्ग करि गुणना सो चौदहिका वर्ग दोयका वर्ग चारि करि गुणे दोयसै छप्पन होइ । बहुरि चौदहिकौं दोय करि भाजन होइ तो चार करि भाजे सात होइ । सो चौदहिका वर्ग दोयका वर्ग चारि करि भाजे सात होइ है । ऐसैं लोक लंबा है सो सात राजू प्रमाण है

कहिए। बहुरि नीचैं तौ सात राजू चौड़ा अर ऊपरि एक राजू चौड़ा तहां नीचैं एक राजू तौ ऊपरिके समान चौड़ा पणां हूवा। अवशेष दोन्यौं तरफां तीन तीन राजू बधता भया सो एक पार्श्वविषैं जो तीन राजू बधता भया सो तीन राजू प्रमाण कोटि कहिए है। बहुरि भुजका वर्ग तौ गुणचास राजू अर कोटिका वर्ग नव राजू इन दोऊनिकौं मिलाएं अधोलोकका ऊपरितैं लगाय नीचैं पर्यंत एक पार्श्वविषैं जो परिधिका प्रमाण सो वर्ग कहिए ताका वर्ग अठावन राजू प्रमाण हो है। बहुरि जो एक पार्श्वविषैं इतना भया तौ दोऊ पार्श्वनिविषैं केता होइ तातैं दोयका गुणकार करना सो इहां वर्गरूप राशि है। तातैं इहां दोयका वर्ग करि गुणैं दोन्यौं तरफका वर्गके वर्गका प्रमाण दोयसै बत्तीस राजू हूवा। याका वर्गमूल गहैं अधोलोकके दोऊ तरफ उचाई विषैं परिधिका प्रमाण पंद्रह राजू अर सात राजूका तीसवां भाग मात्र भया। ऐसैं ही आधा ऊर्ध्वलोकविषैं भुजका प्रमाण साढा तीन राजू ताका वर्ग सवा बारा राजू $\frac{25}{4}$ अर कोटिका प्रमाण दोय राजू ताका वर्ग च्यारि राजू इन दोऊनिकौं समछेद करि मिलाए पैंसठिका चौथा भाग प्रमाण भया $\frac{65}{4}$ बहुरि एक पार्श्वविषैं इतना होइ तौ दोय पार्श्व तौ आधा ऊर्ध्व लोककैं अर दोय पार्श्व आधा ऊर्ध्व लोककैं ऐसैं च्यारि पार्श्वनिविषैं कितना होइ ऐसैं विचारतैं च्यारिका गुणकार कहिए सो इहां वर्गमाहीं है तातैं च्यारिका वर्ग करि गुणैं अर च्यारिका भागहार था तातैं अपवर्तन कीएं दोयसौ साढि सात राजू प्रमाण ऊर्ध्वलोकके च्यारयौ वर्णनिके वर्गका प्रमाण भया याका वर्गमूल गहैं ऊर्ध्वलोककी उचाई विषैं दोऊ तरफां परिधिका प्रमाण सोलह राजू अर च्यारि राजूका बत्तीसवां भागमात्र भया। बहुरि सर्व लोककैं नीचैं चौड़ाईका प्रमाणरूप परिधि सात राजू अर लोकका अंतविषैं चौड़ाईका प्रमाणरूप परिधि एक राजू। ऐसैं सर्वका जोड़ कीएं गुणतालीस सौ राजू हूवा। अर अधिक प्रमाण सात राजूका तीसवां भाग अर च्यारि राजूका बत्तीसवां भाग इन दोऊनिके हारकौं समछेद विधान करि आधा भाग्य भाजक मांडि $\frac{343}{30}$। $\frac{65}{4}$ जोडि $\frac{343}{30}$ च्यारिका अपवर्तन दीएं तियालीस राजूका एकसौ बीसवां भाग भया। ऐसैं पूर्वपश्चिम अपेक्षा लोकका परिधि गुणतालीस राजू अर तियालीस राजूका एकसौ बीसवां भाग प्रमाण जानना॥ १२२॥

आगैं लोकके सर्व तरफनैं परिवेष्टित जो वात वलय तिन स्वरूपादिकका निर्णयके अर्थि सूत्र कहै है:—

गोमुत्तमुग्गवण्णाणवण्णाण घणंबुघणतणूण हवे।
वादाणं वलयतयं एक्करसस तयं च लोगस्स॥ १२३॥

गोमूत्रमुद्गवर्णानां घनांबुघनतनूनां भवेत्।
वातानां वलयत्रयं एकरज्वां तच्च लोकस्य॥ १२३॥

अर्थ [illegible]

आगैं ताकौं उपरि पार्श्वनिविषैं क्षेत्रफल ल्यावनेके अर्थि कहै हैं;—

किंचूणरज्जुवासो जगसेढीदीहरं हवे वेहो ।
जोयणसट्ठिसहस्सं सत्तमखिदिपुव्वअवरे य ॥ १२८ ॥
किंचिदूनरज्जुव्यासः जगच्छ्रेणिदैर्घ्यं भवेत् वेधः ।
योजनषष्टिसहस्रं सप्तमक्षितिपूर्वापरे च ॥ १२८ ॥

अर्थ—लोकके पार्श्वनि विषैं नीचेतैं ल्याय एक राजूकी उचाईपर्यंत घाट बध्या सो एक हजार योजन मोटे हैं सो तहां क्षेत्रफल कहिए है । उचाई एक राजू तामैं साठि हजार योजन करी अधस्तनक्षेत्रका कह्या क्षेत्रफल तामैं आय गई तातैं इहां किंचित् ऊन रज्जु प्रमाण व्यास सो तौ मुख जानना । बहुरि लंबाई लोककी लंबाईके समान जगच्छ्रेणी प्रमाण सो कोटि कहिए । बहुरि वेधनकौं साठि हजार योजन सो वेध कहिए । तहां मुख और कोटिकौं परस्पर गुणें जगप्रतरका सातवां भाग मात्र ताकौं साठि हजार योजन करि गुणें सातवीं पृथ्वीपर्यंत पूर्व पश्चिम अपेक्षा एक पार्श्वनिका क्षेत्रफल भया ॥ १२८ ॥

एक पार्श्वका इतना क्षेत्रफल भया तौ दोऊ पार्श्वनि विषैं केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि दोऊ पार्श्वनिका क्षेत्रफल ल्यावनेकौं कहै हैं:—

जगपदरसत्तभागं सट्ठिसहस्सेहि जोयणेहि गुणं ।
दिगगुणिदमुभयपासे वादफलं पुव्वअवरेण ॥ १२९ ॥
जगत्प्रतरसप्तभागः षष्टिसहस्रैः योजनैः गुणः ।
द्विकगुणितः उभयपार्श्वे वातफलं पूर्वापरयोः ॥ १२९ ॥

अर्थ—जगप्रतरका सातवां भागकौं साठि हजार योजन करि गुणिए बहुरि तातैं दूणा करिए तैसैं करते एक लाख बीस हजार योजन गुणां जगप्रतरका सातवां भाग प्रमाण दोऊ पार्श्वनिविषैं वातवलयका क्षेत्रफल पूर्व पश्चिम दिशाविषैं सो है ॥ १२९ ॥

ऊर्ध्व इत्यादि तीन विषैं वातवलयका क्षेत्रफल ल्यावनेका विधान करै हैं;—

उदयमुहभूमिरेहा रज्जुगणसमपछरज्जुगेही य ।
जोयणसट्ठिसहस्सं सत्तमखिदिदक्खिणुत्तरदो ॥ १३० ॥
उदयमुखभूमिरेखाः पदार्थहता रज्जुसमपक्षरज्जुभक्ताश्च ।
योजनषष्टिसहस्रं सप्तमक्षितिदक्षिणोत्तरतः ॥ १३० ॥

अर्थ—[illegible]

क्षेत्रफल होइ योका दूणा कीएं सप्तम पृथ्वी पर्यंत दोऊ पार्श्वनि विषैं दक्षिण उत्तर एकी बाजूका क्षेत्रफल होइ ॥ १३० ॥

आगें जो यहु फल भया ताकौं कहैं हैं;—

तस्स फलं जगपदरो सट्ठिसहस्सेहि जोयणेहि हदो ।
बाणउदिगुणो सगघणसमजिदो उभयपासम्हि ॥ १३१ ॥
तस्य फलं जगत्प्रतरः षष्टिसहस्रैः योजनैः हतः ।
द्वानवतिगुणः सप्तघनसंभक्तः उभयपार्श्वे ॥ १३१ ॥

अर्थ—ताका क्षेत्रफल जगत्प्रतरकौं साठि हजार योजन करि गुणिए बहुरि ताकौं बाणवै करि गुणिए तब पचावन लाख बीस हजार योजन गुणां जगत्प्रतर भया ताकौं सातका घन तीनसै तियालीस ताका भाग दीजिए इतना क्षेत्रफल दोऊ पार्श्वनि विषैं भया । इतना क्षेत्रफल कैसैं भया सो कहिए हैं । मुख सौ समछेद करि जोड्या हुवा $\frac{1}{343}$ तियालीस राजूका सातवां भाग अर भूमि सात राजू सौ गुणचास राजूका सातवां दोऊनिकौं जोडें बाणवै राजूका सातवां भाग $\frac{92}{7}$ पार्श्वौ भाग करना अर दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थि दूणा करना तब तितनाही रह्या अर इहां प्रमाणरूप क्षेत्र है तातैं जगत्प्रतरकौं तीनसै तियालीसका भाग सोई एक प्रतर राजूका सातवां भाग है । बहुरि बाण बत्यनिकी मोटाई साठि हजार योजन करि गुणें पूर्वोक्त क्षेत्रफल आवै है ॥ १३१ ॥

आगें ऊपरि पश्चिम संबंधि पार्श्वनि विषैं बालवत्यका क्षेत्रफलकौं कहै हैं;—

सेढी छरज्जु चोद्दसजोयणमायामबाससुस्सेहं ।
पुव्वावरपासजुगले सत्तमदो तिरियलोगोत्ति ॥ १३२ ॥
श्रेणी षड्रज्जुः चतुर्दशयोजनं आयामव्यासोत्सेधम् ।
पूर्वापरपार्श्वयुगले सप्तमतः तिर्यग्लोकांतं ॥ १३२ ॥

अर्थ—सप्तम पृथ्वीतैं लगाय तिर्यग्लोक पर्यंत पार्श्वनि विषैं बालवत्यका क्षेत्रफल कहिए सो पूर्व पश्चिम अपेक्षा करि लोककी लंबाईके समान लंबाईका प्रमाण जगश्रेणी सो ताकी भुज कहिए । बहुरि सप्तम पृथ्वीतैं तिर्यग्लोक ऊंचा सह राजू सो व्यास है । ताकी कोटि करिए । बहुरि तीनों बालवत्य आदि बाथिकौं समान कीएं मोटा चौदह योजन सो उत्सेध है ताकौं बेध कहिए । सो इहां भुज और कोटिकौं परस्पर गुणे जो प्रमाण होइ ताकौं बेध करि गुणि सातका अपवर्तन करिए तब एक पार्श्व विषैं फल होइ । बहुरि दोऊ पार्श्वनिके अर्थि दूणा दोऊ करि गुणि क्षेत्रफल स्थापना ॥ १३२ ॥

आगें ताका सिद्ध भया क्षेत्रफल ताकौं कहै हैं ।

तच्चादरुद्धरूवेण जोयणचउदसगुणिदजगपदर ।
उभयदिसासत्तमणिद णादव्व गणिदकुसलेहिं ॥ १३३ ॥
[illegible]
[illegible]

अर्धचतुर्थरज्जुश्रेणिः योजनचतुर्दश च व्यासमुज्वेधः।
ब्रह्मांते पूर्वापरे फलमेतत् चतुर्गुणं सर्वम् ॥ १३६ ॥

अर्थ— तिर्यग् लोकतैं ब्रह्मस्वर्ग पर्यंत पूर्व पश्चिमका एक पार्श्व विषैं क्षेत्रफल कहिए है तिर्यग् लोकतैं ब्रह्मस्वर्ग साढातीनि राजू ऊंचा है सो यहू व्यास है ताकों तौ इहां कोटि कहिए बहुरि जगच्छ्रेणी प्रमाण सर्वत्र चौडा है सो इहां भुज कहिए। बहुरि तीनौं थान सर्वत्र चौदह योजन मोटा सो वेध कहिए सो 'भुजकोटि' इत्यादि सूत्र करि भुज अर कोटिकों परस्पर गुणि वेध करि गुणें एक पार्श्व विषैं क्षेत्रफल सो इहां साढा तीनि राजू है सो जगच्छ्रेणीका आधा है २ याकों जगच्छ्रेणि अर चौदह करि गुणें सात गुणा जगत्प्रतर भया। बहुरि ब्रह्मस्वर्ग पर्यंत आधा ऊर्ध्वलोकके दोय पार्श्व अर ताके उपरि आधा ऊर्द्धलोकके दोय पार्श्व ऐसें च्यारि पार्श्व हैं तिनकी अपेक्षा पूर्वोक्त फलकों चौगुणा कीएं सर्व क्षेत्रफल होइ ॥ १३६ ॥

आगैं ऊर्द्धलोक विषैं दक्षिण उत्तर संबंधि च्यारों पार्श्वनि विषैं वातका क्षेत्रफलकों कहै हैं;—

पंचादुट्ठिगिरज्जू भूतुंगमुहं विसत्तजोयणयं।
वेहो सं चउगुणिदं खत्तफलं दक्खिणुत्तरदो ॥ १३७ ॥

पंचार्धचतुर्थैकरज्जवः भूतुंगमुखं द्विसप्तयोजनकः।
वेधः तच्चतुर्गुणिते क्षेत्रफलं दक्षिणोत्तरतः ॥ १३७ ॥

अर्थ—ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच राजू चौडा सो इहां भूमि कहिए। बहुरि तिर्यग् लोकतैं ब्रह्मस्वर्ग साढा तीनि राजू ऊंचा सो तुंग है। सो इहां पद कहिए गच्छ जानना। तिर्यग् लोक निकटि एक राजू चौडा सो इहां मुख जानना तीनौं थानवर्त्ती मोटाई चौदह योजन सो इहां वेध जानना। सो 'मुह भूमी' इत्यादि सूत्र करि मुख अर भूमिको जोडि ताका आधाको पद करि गुणिए सो प्रमाण होइ ताकों वेध करि गुणें एक पार्श्व विषैं क्षेत्रफल होइ सो इहां मुख भूमिका जोड देइ आधा कीएं तीनि राजू सो तिगुणा जगच्छ्रेणीका सातवां भाग ७।२ याको साढा तीन राजू सो आधा जगच्छ्रेणी ताकरि अर चौदह करि गुणें चौगुण जगत्प्रतर भया =४ याको चौगुणा कीएं दक्षिण उत्तर अपेक्षातैं सर्व ऊर्द्ध लोक विषैं वातका क्षेत्रफल होइ। इहां प्रश्न उपजै है कि लोकका वर्णन विषैं तौ पूर्व पूर्व पश्चिम अपेक्षातैं व्यासका हीनाधिकपनां कह्या था। दक्षिण उत्तर अपेक्षा सर्वत्र जगच्छ्रेणी प्रमाण समान व्यास कह्या था इहां वातवलयका कथन विषैं पूर्व पश्चिम अपेक्षा व्यास सर्वत्र समान कह्या दक्षिण उत्तर अपेक्षा हीनाधिक व्यास कह्या सो कारण कहा। ताका समाधान जैसें कोऊ मंदिर है ताकी दक्षिण वा उत्तरकी तरफ जे भींति तिनकी लंबाईका जहां प्रमाण करना होइ तहां पूर्व दिशाकी तरफ जो कूट तीहस्यौं लगाय पश्चिमकी तरफ जो भींतिकी कूट तीह पर्यंत मापिए। बहुरि पूर्व वा पश्चिमकी तरफ जे भींति तिनकी लंबाईका जहां प्रमाण करना होइ तहां भींतिकी दक्षिणकी तरफकी कूटतैं उत्तरकी कूट पर्यंत मापिए। ऐसैंही लोकका दक्षिण वा उत्तर दिशाका वातवलयका व्यास कहना भया तहां तौ लोकका पूर्व पश्चिम संबंधि व्यास करि कथन कीया अर लोकके पूर्व पश्चिम दिशाका वातवलयका व्यास कहना भया तहां

लोकका दक्षिण उत्तर सेवधी व्यास करि कथन कीया। अर लोकके पूर्व पश्चिम दिशाका वातवल्यका व्यास कहनां भया तहां लोकका दक्षिण उत्तर सम्बन्धी व्यास करि कथन कीया है ॥१३७॥

आगें लोकका अग्रभाग विषैं वायुका फलकों कहै हैं;—

वासुदयभुजं रज्जू इगिजोयणवीसतिसदखंडेसु ।
सतितिसदं सेढी फलमीसिपभारुवरि दंडवाऊणं ॥ १३८ ॥

व्यासोदयभुजा रज्जुः एकयोजनविंशत्रिशतखंडेषु ।
सप्तत्रिशतं श्रेणिः फलमीषत्प्राग्भारोपरि दंडवायूनाम् ॥ १३८ ॥

अर्थ—पूर्व पश्चिम अपेक्षा लोकका व्यासके समान तौ इहां वातवल्यका एक रज्जु प्रमाण व्यास जानना ताकौं कोटि कहिए बहुरि तीनों वात वल्यकी मोटाई एक योजनके तीनिसै बीस खंड करिए तिनविषैं तीनिसैं तीनि खंड प्रमाण सो इहां उदै जाननां। ताकौं वेध कहिए। बहुरि दक्षिण उत्तर अपेक्षा लोकका व्यासके समान वातवल्यकी जगच्छ्रेणी प्रमाण भुजा जाननी। इहां भुज और कोटिकों परस्पर गुणि करि ताकौं वेध करि गुणें ईषत्प्राग्भारनामा अष्टम पृथ्वीके उपरिका धनुषनिकी मोटाई लीएं जु वायु तिनका क्षेत्रफल हो है इहां एक योजनके तीनसै बीस खंडनि विषैं तीनसै तीन खंड प्रमाण तीनों वातवल्यका मोटापना कह्या ताका बीज कहिए है। घनोदधि तौ दोय कोश मोटा ताके च्यारि हजार धनुष अर घनवात एक कोश मोटा ताके दोय हजार धनुष अर तनुवात सवा च्यारिसै धनुष हीन एक कोश मोटा ताके पंद्रह सै पिचत्तरि धनुष इन सबनिकौं मिलाएं सात हजार पांच सै पिचहत्तरि धनुष भए। अर एक योजनके आठ हजार धनुष हैं। सो इहां पचीस करि अपवर्तन कीएं सात हजार पांचसै पिचहत्तरि की जायगा तीनसै तीन भया अर आठ हजारकी जायगा तीनसै बीस भया। ऐसैं करि एक योजनके तीनिसै बीस भागनि विषैं तीनिसै तीनि भाग प्रमाण लोकके उपरि तीनों वातवल्यनिका मोटापनां कह्या है सो इहां जगच्छ्रेणीकों एक राजू जगच्छ्रेणीका सातवां भाग ताकरि गुणें जगत्प्रतरका सातवां भाग ताकौं वेध करि गुणें ऐसा गुणें ऐसा क्षेत्रफल हो है। $\frac{=३०१}{७३२०}$ बहुरि इहां लोकका अग्रभाग विषैं कह्या जु वायुका फल ताको छोडि और सर्व वायुफल ऐसैं भए। इहां जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी = जाननी।

लोकके तीवैं	सप्तम पृथ्वीपर्यंत	सप्तम पृथ्वीपर्यंत	तिर्यग्लोकपर्यंत	तिर्यग्लोकपर्यंत	ऊर्द्धलोकपर्यंत
=१००००	पूर्वपश्चिम	दक्षिण उत्तर	पूर्वपश्चिम	दक्षिण उत्तर	पूर्वपश्चिम
	=१२००००	=५४२०००	=२४	४९ ६००	=१८
		३ ४१			

ऊर्द्धलोकपर्यंत दक्षिण उत्तर =१२

ऐसैं ए भए क्षेत्रफल तिनकौं समच्छेद विधान करि मिलावनें सो इन सातनिके हारनिकौं सातका घन अर सातका वर्ग अर एक अर सातका घन अर सात अर सातका घन करि क्रमतैं गुणिऐ सर्वत्र सातका घनका भाग दीजिए ॥ भावार्थ ॥ पूर्वोक्त सातौं क्षेत्रफलनि विषैं जहां भागहार न था तहां सातका घन करि गुण्या जहां सातका भागहार था तहां सातका वर्ग करि गुण्या जहां तीनसै तियाल्लीसका भागहार था तहां एक करि गुण्या जहां गुणचासका भागहार था तहां

सात करि गुण्या जाँ समच्छेद विधान विषैं जिस गुणकार करि गुणे हारनिकी समानता होइ तिस गुणकार करि अंशनिकों गुणने सो इहां कह्या करनेके अर्थि ऐसें कीया तब ऐसें भए॥ १-५८०००० / १४१ ५८८०००० / १४१ ५५१०००० / १४१ ८११२ / १४१ ४१०० / १४१ ९६४ / १४१ ४११६ / १४१ इन सबनिकों जोडिए तब तीनि कोडि बीस लाख एक हजार बावनकों तीनसै तियालीसका भाग दीजिए इतने भए २२००९१५१ बहुरि लोकका असंख्यातवाँ क्षेत्रफल ऐसा =१०१ / ७१२० इहां भाग हार सात अर तीनसै बीसकों गुणे बाईस से चालीस होइ। बहुरि समच्छेद विधान करना। तातैं इस राशि विषैं हार तीनसै तीन अर अंश बाईस सै चालीस इन दोऊनिकों सातका वर्ग गुणचास ४९ करि गुणें ऐसा भया =१४८४७ अर पूर्वोक्त राशि ऐसा २२००९१५१ याके हार अंशनिकों तीनसै बीस करि गुणें ऐसा १०९७६० / १४१ १०१४११६८१४० ऐसें करते दोऊ राशिनके समान भागहार भए बहुरि इन दोऊ राशिनके हारनिकों मिटाएं ऐसा भया =१०९४१९८१४८७ / १०९७६० ऐसें इतना सर्व वातवलयनि करि रोक्या हुवा क्षेत्रका क्षेत्रफल हो है॥ १३८॥

आगें यहू सिद्ध भया क्षेत्रफल ताकों कहै हैं:—

सत्तासीदिचदुस्सदसट्ठिसहस्सतेसीदिलक्खउणवीसं।
पण्णासहियं कोडीसहस्सगुणियं तु जगपदरं॥ १३९॥

सप्ताशीतिचतुःशतषष्टिसहस्रत्र्यशीतिलक्षैकोनविंशं।
पञ्चाशदधिकं कोटिसहस्रगुणितं तु जगत्प्रतरम्॥ १३९॥

अर्थ—चौबीस अधिक एक हजार कोडि उगणीस लाख तियालीस हजार च्यारिसै सित्यासी करि जगत्प्रतरकों गुणिए॥ १३९॥

बहुरि याका भागहार कहै हैं:—

सट्ठीसत्तसएहि णवयसहस्सेगलक्खभजियं तु।
सव्वं वादारुद्धं गणियं भणियं समासेण॥ १४०॥

षष्टिसप्तशतैः नवकसहस्रैकलक्षभक्तं तु।
सर्वं वातारुद्धं गणितं भणितं समासेन॥ १४०॥

अर्थ—एक लाख बहत्तरि हजार सातसै साठिका भाग दीजिए। इतना सर्व वातवलय करि रोक्या हुवा क्षेत्रका गणित कह्या है जोडि करि लोकके चौगिरद वातवलय है। तिनका क्षेत्र ग्रहण कीया है। अष्टपृथ्वीनिके नीचे वातवलय है तिनका क्षेत्र ग्रहण न कीया है॥ १४०॥

आगें लोकका असंख्यात विषैं तनुवातवलयमें विराजमान सिद्ध भगवान् तिनका जघन्य वा उत्कृष्ट अवगाहका क्षेत्रकों कहै हैं:—

णवपण्णारसलक्खा सयाणं खंडाणमेयखंडम्हि।
सिद्धाण तणुवादे जहण्णमुक्कस्सयं ठाणं॥ १४१॥

नवपंचदशलक्षं शतानां खंडानामेकखंडे ।
सिद्धानां तनुवाते जघन्यमुत्कृष्टं स्थानम् ॥ १४१ ॥

अर्थ—तनुवातवलयका बाहुल्यका नव लाख खंड कीजिए तहां खंड विषैं सिद्धनकी जघन्य अवगाहनाका प्रमाण जानना अर ताहीका पंद्रह सै खंड कीजिए तहां एक खंड विषैं सिद्धनिकी उत्कृष्टि अवगाहनाका प्रमाण जानना । ऐसैं तनुवातवलय विषैं सिद्धनका जघन्य उत्कृष्ट स्थान है ॥ १४१ ॥

आगैं तिस अवगाहनाकौं व्यवहाररूप करता संता कहै हैं:—

पणसयगुणतणुवादं इच्छिदउग्गाहणेण पविभत्तं ।
हारो तणुवादस्स य सिद्धाणोगाहणाणयणे ॥ १४२ ॥
पंचशतगुणतनुवातः इच्छितावगाहनेन प्रविभक्तः ।
हारस्तनुवातस्य च सिद्धानामवगाहनानयने ॥ १४२ ॥

अर्थ—तनुवातवलयका बाहुल्य तौ प्रमाणांगुल अपेक्षा है अर सिद्धनिकी अवगाहनाका प्रमाण व्यवहारांगुल अपेक्षा है । तातैं तनुवातका बाहुल्य पंद्रहसौ पिचत्तरि धनुष प्रमाण ताकौं पांचसैं गुणा कीएं ताके व्यवहार धनुषनिका प्रमाण सात लाख सित्यासी हजार पांचसै होइ । ७८७५०० । याकौं विवक्षित जघन्यादि सिद्धनिकी अवगाहनाका भाग दीएं सिद्धनिकी अवगाहना ल्यावनैं विषैं भागहारका प्रमाण हो है । भावार्थ । सात लाख सित्यासी हजार पांचसैकौं जघन्य अवगाहनाका प्रमाण सात धनुषका आठवां भाग दीएं भागहारका प्रमाण नव लाख आया सो नव लाखका भाग तनुवात वलयका बाहुल्यकौं दीएं एक भाग प्रमाण सिद्धनिकी जघन्य अवगाहनाका प्रमाण हो है । बहुरि सात लाख साढा सित्यासी हजारकौं उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रमाण पांचसै पचीस धनुष ताका भाग दीएं भागहारका प्रमाण पंद्रहसै आया सो पन्द्रहसैका भाग तनुवातके बाहुल्यकौं दीएं एक भाग प्रमाण सिद्धनिकी उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रमाण हो है । तहां भागहारका भाग दैना ऐसैं जानना जो नव लाख खंडनिका सात लाख साढा सित्यासी हजार व्यवहार धनुष होइ तौ एकखंडके कते धनुष होइ ऐसैं त्रैराशिक करिए । बहुरि इहां भाज्य और भागहारकौं एक लाख बारह हजार पांचसै करि अपवर्तन करिए तब भाज्य सात लाख साढा सित्यासी हजारकौं जायगा तौ सात होइ अर भागहार नव लाखकौं जायगा आठ होइ ऐसैं सात धनुषका आठवां भाग प्रमाण जघन्य अवगाहना होइ । ऐसैं ही उत्कृष्ट अवगाहना जानना । बहुरि व्यारि प्रकार अपवर्तनका विधान जानना ॥ १४२ ॥

आगैं त्रसनाडीका स्वरूपकौं कहै हैं:—

लोयबहुमज्झदेसे रुक्खे सारव्व रज्जुपदरजुदा ।
चोद्दसरज्जुउत्तुंगा तसणाली होदि गुणणामा ॥ १४३ ॥
लोकबहुमध्यदेशे वृक्षे सार इव रज्जुप्रतरयुता ।
चतुर्दशरज्जूत्तुंगा त्रसनाली भवति गुणनामा ॥ १४३ ॥

अर्थ—लोकाकाशका बहुत मध्यके प्रदेशनि विषैं त्रस नाली है। सो कैसी है, रज्जुप्रतर कही पुरुष है। भावार्थ। एक राजू तौ लंबी है अर एक राजू चौडी है। बहुरि चतुर्दश राजू उत्तुंग है। भावार्थ। लोकके अधोभागतै लगाय ऊर्ध्वभागपर्यंत चौदह राजू ऊंची है। कौन दृष्टान्त। इहे सार इव। जैसे वृक्ष विषैं सोटा इत्यादिक तौ उपरि उपरि है। तिनके मध्य सार लकडी पाईए है। तैसे लोक विषै मध्य त्रसनाली पाईए है। बहुरि यहु त्रसनाली कैसी है। गुणनामा कहिए सार्थक नामकी धरनहार है जातैं बेंद्रियादिक जे त्रस जीव ते इसही विषैं पाईए है। याके बाहैं अवशेष लोक क्षेत्र विषैं स्थावर जीव ही पाईए है त्रस जीव नाही है। उपपाद वा मारणान्तिक केवल समुद्घातवाले जीवनिके प्रदेशनिका त्रस नाली बाह्य भी सत्व पाईए है परन्तु तिनकी मुख्यता नाही। ऐसे यहां त्रस जीवनिका सद्भाव त्रस नाली विषैं ही जानना बाह्य नाही। बहुरि यहां त्रस नालीका लंबाई चौडाई एक राजू सो तौ मुज अर कोटि जानना उंचाई चौदह राजू सो उत्सेध जानना बहुरि कोटिकों परस्पर गुणि ताकौं उंचाई करि गुणें त्रस नालीका क्षेत्रफल घनरूप चौदह राजू प्रमाण है। भावार्थ। तीनसै तियालीस घनरूप रज्जु प्रमाण लोक है। तामें चौदह राजूमें तौ त्रस नाली है। अवशेष तीनसै गुणतालीस राजू विषैं त्रस नाहीं पाईए है इहां ऐसा आकार जानना ॥ १४३ ॥

आगे त्रस नालीका अधोभाग विषैं तिष्ठता पृथ्वी भेदादिकनकौं कहे हैं:—

मुरवदले सत्तमही उवरीदो रयणसक्कराबालू।
पंका धूमतमोमहतमप्पहा रज्जुअंतरिया ॥ १४४ ॥

मुरजदले सप्त मह्यः उपरि रत्नशर्करा बालुः।
पंका धूमतमोमहातमप्रभा रज्ज्वंतरिताः ॥ १४४ ॥

अर्थ—ऐसा मृदंगके आकारि सर्व लोक कह्या था तामें आधा मृदंगके आकारि अधो लोक कह्या था। तीह आधा मृदंगका आकार विषैं सात पृथ्वी पाईए है तिनका आकार ऐसा। उपरितैं लगाय रत्नप्रभा १ शर्कराप्रभा १ बालुकाप्रभा, १ पंकप्रभा १ धूमप्रभा १ तमप्रभा १ महातमप्रभा १ ऐसैं तिनके नाम जानने इहां प्रभा शब्द प्रत्येक लगाइ लेना तातैं रत्नप्रभा इत्यादि नाम हैं। बहुरि ए नाम सार्थक हैं जातैं इन विषैं रत्न मिश्री रेत कादो धूंवां अंधकार महा अंधकारके समान अनुक्रमतैं प्रभा पाईए है। बहुरि ते सर्व पृथ्वी एक एक राजूके अंतर संयुक्त जाननी। भावार्थ। मध्य लोकतैं लगती तौ पहली रत्नप्रभा पृथ्वी है। बहुरि तातैं एक राजू नीचैं शर्कराप्रभा है तातैं एक राजू नीचैं बालुका प्रभा है ऐसेंही अन्य पृथ्वीनिका एक एक राजूका अंतराल जानना ॥ १४४ ॥

आगैं तिन पृथ्वीनिके अन्य नाम कहैं हैं:—

घम्मा वंसा मेघा अंजनरिट्ठा य होंति अणिउज्झा।
छट्ठी मघवी पुढवी सत्तमिया माघवी णामा ॥ १४५ ॥

घर्मा वंशा मेघा अंजनारिष्टा च भवंति अनियोज्याः।
षष्ठी मघवी पृथ्वी सप्तमिका माघवी नाम ॥ १४५ ॥

अर्थ—घर्मा १ वंशा १ मेघा १ अंजना १ अरिष्टा १ बहुरि छठी पृथ्वी मघवी १ सातमी माघवी नाम पृथ्वी ऐसैं अनियोग्या कहिए अर्थरहित अनादि रूढि रूप नामकौं धरैं ए सात पृथ्वी हैं ॥ १४५ ॥

आगैं तहां प्रथम पृथ्वीके भेद कहैं हैं:—

रयणप्पहा तिहा खरभागा पंकापबहुलभागात्ति ।
सोलस चउरासीदी सीदी जोयणसहस्सबाहल्ला ॥ १४६ ॥

रत्नप्रभा त्रिधा खरभागा पंकाप्बहुलभागा इति ।
षोडश चतुरशीतिः अशीतिः योजनसहस्रबाहुल्या ॥ १४६ ॥

अर्थ—रत्नप्रभा नामा पृथ्वी तीन प्रकार है । खरभागा १ । पंकभागा १ अब्बहुलभागा १ ऐसैं हैं । बहुरि सोलह चउरासी असी हजार योजन बाहुल्यरूप है । भावार्थ । रत्नप्रभा पृथ्वी एक लाख अस्सी हजार योजन मोटी है तीह विषैं उपरितैं सोलह हजार योजन तौ खरभागा है । चौरासी हजार योजन पंकभागा है । असी हजार अब्बहुल भागा है । ऐसै एक पृथ्वीस्कंध विषैं तीनि भाग जानने ॥ १४६ ॥

आगैं खरभाग विषैं सोलह पृथ्वी पाईए हैं तिनकी संज्ञाकौं दोय गाथानि करि कहै हैं:—

चित्ता वज्जा वेलुरियलोहिदक्खा मसारगल्लवणी ।
गोमेदा य पवाला जोदिरसा अंजणा णवमी ॥ १४७ ॥

चित्रा वज्रा वैडूर्या लोहिताख्या मसारकल्पावनिः ।
गोमेदा च प्रवाला जोतिरसा अंजना नवमी ॥ १४७ ॥

अर्थ—चित्रा १ वज्रा १ वैडूर्या १ लोहिता १ कामसारकल्पा १ गोमेदा १ प्रवाला १ ज्योतीरसा १ अंजना १ नवमी पृथ्वी है ॥ १४७ ॥

अंजणमूलिय अंका फलिहा चंदण सवत्थगा वकुला ।
सेलक्खाय सहस्सा एगेगा लोगचरिमगया ॥ १४८ ॥

अंजनमूलिका अंका स्फटिका चंदना सर्वर्यका बकुला ।
शैलाख्या च सहस्रा एकैका लोकचरमगता ॥ १४८ ॥

अर्थ—अंजनमूलिका १ अंका १ स्फटिका १ चंदना १ सर्वर्थका १ बकुला १ शैला १ ऐसैं ए सोलह पृथ्वी हैं । एक एक पृथ्वी हजार हजार योजन प्रमाण मोटी है ॥ भावार्थ । खरभाग सोलह हजार योजन मोटा कह्या था तामें उपरि तौ हजार योजन मोटी चित्रा पृथ्वी है । ताके नीचै हजार योजन मोटी वज्रा पृथ्वी है ऐसे ही हजार हजार योजन मोटी सोलह पृथ्वी जाननी । बहुरि ते ए पृथ्वी लोकका अंतकौं प्राप्त जाननी । भावार्थ । लंबाई चौडाई इन पृथ्वीनिकी लोकके समान जाननी सो इस खरभाग विषैं अर पंक भाग विषैं तौ भवनवासी व्यंतर देवनिका वास है सो वर्णन आगैं होगा । बहुरि अब्बहुल भाग विषैं प्रथम नरकके बिल पाईए है । बहुरि ऐसैं भाग कीए तिनके बीच कोई छेवटि नाहीं है । जैसें एक पर्वत विषैं कोई अपेक्षा भाग करिए तैसैं इहां भाग कीए है ॥ १४८ ॥

आगैं द्वितीयादि पृथ्वीनिका बाहुल्य कहैं हैं:—

बत्तीसमट्ठवीसं चउवीसं वीस सोलसट्ठाणि।
हेट्ठिमउप्पुढवीणं सहस्समाणेहिं बाहुल्लियं ॥ १४९ ॥
द्वात्रिंशदष्टाविंशतिः चतुर्विंशतिः विंशति षोडशाष्टौ।
अधस्तनषट्पृथ्वीनां सहस्रमानैः बाहुल्ये ॥ १४९ ॥

अर्थ—बत्तीस हजार अठाईस हजार चौवीस हजार बीस हजार सोलह हजार आठ हजार योजन प्रमाण द्वितीयादिक नीचली छह पृथ्वीनिका बाहुल्य कहिए मोटापना सो क्रमतैं जानना ॥ १४९ ॥

आगैं तिन पृथ्वीनि विषैं तिष्ठते जु पटल तिनके स्थान कहैं हैं.—

सत्तमखिदबहुमज्झे विलाणि सेसासु आपबहुलाच्च।
हेट्ठुवरिं च सहस्सं वज्जिय पडलक्कमे होंति ॥ १५० ॥
सप्तमक्षितिबहुमध्ये बिलानि शेषासु अम्बहुलांत।
अध उपरि च सहस्रं वर्जयित्वा पटलक्रमेण भवंति ॥ १५० ॥

अर्थ—सातमी पृथ्वीका तौ बहु मध्य भाग विषैं बिल हैं। बहुरि अवशेष पृथ्वीनि विषैं अम्बहुल भाग पर्यंत नीचे वा उपरि हजार हजार योजन छोडि पटलनिका अनुक्रम करि बिल पाईए है।

भावार्थ—सातमी पृथ्वी आठ हजार योजन मोटी है तामें नीचें वा उपरि बहुत मोटाई छोडि बीचि विषैं बिल पाईए है। बहुरि अन्य पृथ्वी वा प्रथम पृथ्वीका अम्बहुल भाग तिनकी मोटाई विषैं नीचें वा उपरि हजार हजार योजनको छोडि बीचि विषैं जेते जेते पटल पाईए तिन विषैं अनुक्रम करि बिल पाईए है ॥ १५० ॥

आगैं प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं बिलनिकी संख्या कहैं हैं:—

तीसं पणुवीसं पण्णरसं दस तिण्णि पंचहीणेक्कं।
लक्खं सुद्धं पंच य पुढवीसु कमेण णिरयाणि ॥ १५१ ॥
त्रिंशत् पंचविंशतिः पंचदश दश त्रीणि पंचहीनैकं।
एकं शुद्धं पंच च पृथ्वीषु क्रमेण निरयाणि ॥ १५१ ॥

अर्थ—तीस लाख पचीस लाख पंद्रह लाख दश लाख तीनि लाख पांच घाटि एक लाख ऐसैं एती लक्ष विशेषणसहित बिल हैं। अर सातमी पृथ्वी विषैं शुद्ध कहिए लक्ष विशेषणरहित पांच ही बिल हैं। ऐसैं प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं अनुक्रम करि निरय कहिए बिल पाईए है ॥१५१॥

आगैं तिन विषैं अति शीत अति उष्णका विभाग कहैं हैं;—

रयणप्पहपुढवीदो पंचमतिचउत्थओत्ति अतिउण्हं।
पंचमतुरिए छट्ठे सत्तमिए होदि अदिसीदं ॥ १५२ ॥
* नप्रतौ पाठोऽयं पंचमत्रिचतुर्यांते अत्युष्णम्।
पंचमतुरीये षष्ठ्यां सप्तम्यां भवति अतिशीतम् ॥ १

अर्थ—रत्नप्रभा पृथ्वीतैं लगाय पंचम पृथ्वीके तीनि चौथा भाग पर्यंत तो अति उष्ण है। पंचम पृथ्वीका चौथा भाग अर छठी सातवीं पृथ्वी विषैं अति शीत हैं। भावार्थ— पहली दूसरी तीसरी चौथीके तो सर्व बिल अर पांचवी पृथ्वीके बिलनिका च्यारि भाग करिए तहां तीन भाग प्रमाण बिल ए तौ अति उष्ण पाईए है। इन विषैं अग्न्यादिकतैं भी बहुत अधिक उष्णता जाननी। बहुरि पांचई पृथ्वीका चौथाई बिल अर छठी सातवीं पृथ्वीके सर्व बिल अति शीत पाईए है। इन विषैं हिमादिकतैं भी बहुत अधिक शीतता जाननी। जैसी इहां उत्कृष्ट शीतता पाईए है तातैं उपरांतैं कोई पदार्थ नाहीं। तहां शीतता वा उष्णताकी महा वेदना है॥ १५२॥

आगैं तिन बिलानि विषैं इन्द्रक श्रेणीबद्ध बिलनिकी संख्या कहैं हैं। सो इन्द्रकादिकनिका स्वरूप जाननेकौं किछु इस भाषा टीका विषैं वर्णन करिए है। सो प्रथम दृष्टान्त कहिए है। इस पृथ्वी विषैं केते इक खनका भूमिगृह बनाईए। बहुरि एक एक खन विषैं ऐसे कोठे बनाईए ए तौ कोठे वीथिमें करिए बहुरि ताकी च्यारि दिशा अर च्यारि विदिशानि विषैं पंक्तिबंध केते इक कोठे करिए। बहुरि दिशा विदिशानिके बीचि केते इक कोठे करिए बहुरि जे ए कोठे कीए तिनि विषैं आपने जानेकौं द्वारादिक न राखिए। ऐसैं जो भूमि गृह बनें ताका दृष्टान्त नरक रचना विषैं जाननी। तहां दृष्टान्त विषैं जैसैं खन कहे तैसैं इहां नर्करचना विषैं उपरि नीचैं पटल जानने तहां इन्द्रक ही नाम प्रस्तार जानना। बहुरि तहां जैसैं खन खन विषैं कोठे कोठडी कहे तैसैं इहां पटल पटल विषैं बिल जानने। बहुरि तहां जैसैं वीथिका कोठाके दिशा विदिशा विषैं इन्द्रक कोठे कहे। तैसैं इहां इन्द्रक बिलके च्यारि दिशा वा च्यारि विदिशानि विषैं पंक्तिबंध जे बिल कहे तिनका नाम श्रेणीबद्ध बिल है। बहुरि तहां जैसैं दिशा विदिशानिकी बीचि कोठे कहे तैसैं इहां श्रेणीबद्धनिकी बीचि अंतर दिशानि विषैं बिल जानने इनका नाम प्रकीर्णक बिल है। बहुरि तहां दृष्टान्त विषैं भूमिगृह इस भाग तें कह्या है जो जैसैं भूमिगृह पृथ्वी विषैं हो है। तैसैं नरक रचना भी पृथ्वी विषैं जाननी। जैसैं पृथ्वी उपरि आकाश विषैं बसि हो है तैसैं नरक रचना जाननी। बहुरि तहां दृष्टांत विषैं द्वारादिकका अभाव इस भागतैं कह्या है जो लोक विषैं भूमिगृह बनावै है तहां आपने जानेकौं द्वार सीढी इत्यादि करै है। सो रचना विषैं तिन तिन विषै इन्द्रिय करै है। ऐसैं दृष्टांत करि नरक रचनाका स्वरूप जानना। इहां एक पटल विषै केते इन्द्रिय बिल कहने। बहुरि ऐसी रचना कहां कहां विषै ही है। अरु कौन कौन जातीं कौन पृथ्वी विषै कहां कहां है ऐसा जानना॥ तहां प्रथमादि पृथ्वीनि विषै इन्द्रक श्रेणीबद्ध केते केते हैं सो कहै है;—

सेढीगद चउवीसं सत्तमखिदिवज्जिदासु विदिसासु।
इगिहीणकमा सेढी पडिदिसमेक्कूणया कमसो॥ १५३॥
[illegible] ॥ १५४॥

अर्थ—[illegible] ॥ [illegible]

इंद्रक है सो पटल भी इतने पाईए है। बहुरि श्रेणीबद्ध विदिशानि विषैं गुणचास अर अडतालीसकों आदि दै करि पटल पटल प्रति एक एक घटता क्रमतैं जानना । भावार्थ । प्रथमादि पृथ्वीनिके तेरह ग्यारह नव सात पांच तीन एक पटल मिलाए हुए गुणचास पटल है तहां प्रथम पृथ्वीका पहला पटल तामें एक एक दिशानि विषैं तो गुणचास गुणचास श्रेणीबद्ध है। अर एक एक विदिशानि विषैं अडतालीस अडतालीस श्रेणीबद्ध है । बहुरि द्वितीयादि पटल तैं लगाय पृथ्वीका पटल पर्यंत एक एक दिशा अर विदिशानि विषैं एक एक श्रेणीबद्ध घटता घटता जानना । ऐसैं करि अंतका गुणचासवां पटल विषैं दिशानि विषैं एक एक श्रेणीबद्ध पाईए है । विदिशानि विषैं श्रेणीबद्धका अभाव है ॥ १५३ ॥

आगैं तिन पृथ्वीनि विषैं कहे जु इंद्रक तिनके नाम दोय गाथानि करि कहै है;—

सीमंतणिरयणीरय भंतुब्भंतिंदया य संभनो ।
तत्तोवि असंभंतो वीभंतो णवमओ तत्थो ॥ १५४ ॥
सीमंतनिरयनीरयभ्रांतोद्भ्रांतेंद्रकाः च संभ्रांतः ।
तत्तोपि असंभ्रांतः विभ्रांतः नवमः ज्ञातः ॥ १५४ ॥

अर्थ—सीमंत १ निरय १ रौरव १ भ्रांत १ उद्भ्रांतनामा इंद्रक १ संभ्रांत १ तहां पीछे असंभ्रांत १ विभ्रांत १ नवमा इंद्रक ज्ञात १ ॥ १५४ ॥

तसिदो वक्कंतयसो होदि अवक्कंतणाम विक्खो ।
पढमे तदणो धणणो वणणो मणणो खडा खडिगा ॥ १५५ ॥
त्रसितो वक्रांताख्यः भवति अवक्रांतनाम विख्यातः ।
प्रथमायां ततकः स्तनकः वनकः मनकः खडा खडिका ॥ १५५ ॥

अर्थ—त्रसित १ वक्रांतनामा इंद्रक १ विख्यात १ ऐसे प्रथम पृथ्वी विषै तेरह इंद्रक जानने। बहुरि ततक १ स्तनक १ वनक १ मनक १ खडा १ खडिका १ ॥ १५५ ॥

जिब्भा जिब्भिगसण्णा तो लोलिंग लोलवत्थ वग्गूओ ।
दिदिए तत्तो तविदो तवणो तावणणिदाहा य ॥ १५६ ॥
जिह्वा जिह्विकासंज्ञा तत्तो लोलिक लोलवत्सं वल्गवः ।
द्वितीयायां तप्तः तपितः तपनः तापननिदाघौ च ॥ १५६ ॥

अर्थ—जिह्वा १ जिह्विकनाम १ तहां पीछे लोलिक १ लोलवत्स १ वल्गु १ ऐसे द्वितीय पृथ्वी विषै ग्यारह इंद्रक जानने। बहुरि तप्त १ तपित १ तापन १ निदाघ १ ॥ १५६ ॥

उज्झिदो पज्झिदो संजलिदो सपज्जलिदणामा य ।
तदिए आरा मारा तारा चडा य तमकी य ॥ १५७ ॥
उज्झितः प्रज्झितः संज्वलितः सप्रज्वलितनामा च ।
तृतीयायां अरा मारा तारा चर्चा च तमकी च ॥ १५७ ॥

अर्थ—सज्वलित १ प्रज्वलित १ संज्वलितनाम १ ऐसैं तीसरी पृथ्वी विषैं नव इंद्रक हैं। बहुरि आरा १ मारा १ तारा १ चर्चा १ तमकी ॥ १५७ ॥

घाडा घडा चउत्थे तमगा भमगा य झसग अद्धिदा ।
तिमिसा य पंचमे हिमवद्दललल्लुगितयं छट्ठे ॥ १५८ ॥

घटा घटा चतुर्थ्यां तमका भ्रमका च झषगा अर्धेंद्राः ।
तिमिश्रा च पंचम्यां हिमवार्दलिल्लकित्रयं षष्ठ्याम् ॥ १५८ ॥

अर्थ—घाटा १ घटा १ ऐसैं चौथी पृथ्वी विषैं सात इंद्रक हैं। बहुरि तमका १ भ्रमका १ झषका १ अर्धेंद्रा १ तिमिश्रका १ ऐसै पंचम पृथ्वी विषैं पांच इंद्रक हैं। हिम १ वार्दलि १ लल्लकि ऐसै छठी पृथ्वी विषैं तीन इंद्रक हैं ॥ १५८ ॥

ओहिट्ठाणं चरिमे तो सीमंतादिसेढिविलणामा ।
पुव्वादिदिसे कंखा पिवास महकंख अइपिवासा य ॥ १५९ ॥

अप्रतिस्थानं चरमे ततः सीमंतादिश्रेणिबिलनामानि ।
पूर्वादिदिशायां कांक्षा पिपासा महाकांक्षा अतिपिपासा च ॥ १५९ ॥

अर्थ—अवधिस्थान १ वा दूसरा नाम अप्रतिष्ठित स्थान सो अंतकी सातवीं पृथ्वी विषैं एक इंद्रक है। ऐसैं क्रमतैं इंद्रक बिलनिके नाम कहे। अब जो आगै अर्थ कहिए ताकी पातनिकाकों गर्भित करि तीन गाथा कहैं हैं। सो तहां पीछैं अब सीमंतादिक इंद्रक संबंधी पूर्वादि दिशानिविषैं जे श्रेणीबद्ध हैं तिनके नाम कहिए है। भावार्थ—प्रथमादि पृथ्वीका पहला पहला जो इंद्रक ताके समीप वर्ती जे पूर्वादि दिशानि विषै च्यारि च्यारि श्रेणीबद्ध हैं तिनके नाम कहिए हैं। इन अठाईस विना और श्रेणी बद्ध वा प्रकीर्णक बिलनिके नामका वर्णन इस शास्त्र विषैं नाही हैं तहां घर्मा पृथ्वीका सीमंत इंद्रककी पूर्वादि दिशानि विषैं कांक्षा १ पिपासा १ महाकांक्षा १ महापिपासा १ ए च्यारि हैं ॥ १५९ ॥

वंसातदगे अणिच्छा अविज्ज महणिच्छ महअविज्जा य ।
तत्ते दुक्खा वेदा महदुक्ख महादिवेदा य ॥ १६० ॥

वंशातनके अनिच्छा अविद्या महानिच्छा महाऽविद्या च ।
तप्ते दुःखा वेदा महादुःखा महादिवेदा च ॥ १६० ॥

अर्थ—वंशाका तप्त इंद्रक विषैं अनिच्छा १ अविद्या १ महानिच्छा १ महाविद्या १ ए च्यारि हैं। बहुरि मेघाका तप्त इंद्रक विषैं दुःखा १ वेदा १ महादुःखा १ महावेदा १ ए च्यारि हैं ॥ १६० ॥

आराए दु णिसट्ठा णिरोह अणिसिट्ठ महणिरोहा य ।
तमग णिरुद्धविमद्दण अइपुव्वणिरुद्ध महविमद्दणया ॥ १६१ ॥

आरां तु निसृष्टा निरोधा अनिसृष्टा महानिरोधा च ।
तमके निरुद्धनिमर्दनअतिपूर्वनिरुद्धमहाविमर्दना ॥ १६१ ॥

अर्थ—बहुरि अंजनाका आर ईंदक विषै निसृष्टा १ निरोधा १ अनिसृष्टा १
१ ए च्यारि हैं। बहुरि अरिष्टाका तमक ईंदक विषै निरुद्ध १ विमर्दन १ अनिरुद्ध १
नक १ ए च्यारि हैं ॥ १६१ ॥

हिमगा णीला पंका महणील महादिपंक सत्तमए।
पढमो कालो रउरवमहकालमहादिरउरवया ॥ १६२ ॥

हिमके नीला पंका महानीला महादिपंका सप्तमायाम्।
प्रथमः कालः रौरवमहाकालमहादिरौरवाः ॥ १६२ ॥

अर्थ—मघवीका हिमक ईंदक विषै नीला १ पंका १ महानीला १ महापंका १ ए
हैं। बहुरि सातमी पृथ्वी विषै पहला श्रेणीबद्ध काल १ बहुरि रौरव १ महाकाल १ महारौरव
ए च्यारि हैं। ऐसैं इनके नाम जानने ॥ १६२ ॥

आगैं पृथ्वी पृथ्वी प्रति प्रथम पटल संबंधी श्रेणीबद्ध बिलनिका प्रमाणरूप जो धन त
धरि फरि अंतके पटलका धन स्यावनेकों अर अंतके पटलका धनकों धरि प्रथम पटलके धन स्या
नेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

वेगपदं चयगुणिदं भूमिहि मुहम्मि रिणधनं च कए।
मुहभूमीजोगदले पदगुणिदे पदधणं होदि ॥ १६३ ॥

व्येकपदं चयगुणितं भूमौ मुखे ऋणं धनं च कृते।
मुखभूमियोगदले पदगुणिते पदधनं भवति ॥ १६३ ॥

अर्थ—जे ते स्थान होंहि तिनकों पद कहिए वा गच्छ कहिए। बहुरि स्थान स्थान प्रति जे ते
बधते जाहिं वा घटते जाहिं तिनकों चय कहिए। बहुरि आदिस्थान वा अंतस्थान विषै जो हीन
प्रमाण होइ ताकों मुख कहिए अधिक प्रमाण होइ सो भूमि कहिए सो इहां एक घाटि जो पद तार्को
चयकरि गुणें जो प्रमाण होइ तितना भूमि विषै ऋण कीएं घटाएं मुख होइ। अथवा मुख विषै
धनकीएं जोडें भूमि होइ बहुरि मुख और भूमि इन दोऊनिका योग कहिए जोड ताकों दले कहिए
आधाकीएं बहुरि ताकों पदगुणिते कहिए पदकरि गुणें पदधन कहिए सर्व स्थानकनिका
जोडरूप प्रमाण हो है। ऐसैं जहां आदिस्थान विषै किछु प्रमाण होइ अर पीछे स्थान प्रति बरोबरी
घटते जाहिं वा बधते जाहिं तहां इस सूत्रकी प्रवृत्ति जाननी। ताका इहां उदाहरण, प्रथम पृथ्वीविषै
प्रथम पटल तहा दिशा विषै गुणचास अर विदिशा विषै अडतालीस श्रेणीबद्ध है तिनकों मिलाएं
तित्याणवै भए। बहुरि दिशा वा विदिशाका प्रमाण च्यारि हैं ताने इनकों चौगुणा कीएं प्रथम पटल
विषै सर्व श्रेणीबद्धनिका प्रमाण तीनसै अस्सी भया सो सो इहां भूमि कहिए। बहुरि अंतका
[illegible] दोऊन बाणव [illegible] विषै [illegible] तीनसै श्रेणीबद्ध है जोडे तिनसै भए चौगुणे
[illegible] पटल विषै दिशा विषै [illegible] बहुरि इहां पटल तेरह १३
पदका प्रमाण [illegible] [illegible] अन्त्य [illegible] श्रेणीबद्ध [illegible] सो भए
तीह करि [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] । अवरा मुख दोवसै वालसैमें जिनवैकर घनकीए जोई भूमि तीनिसै अठासी हो। बहुरि मुखको दोवसै वालसै अर भूमि तीनिसै अठासी इनको जोडें इसै असी धारा भए तीनसै चवालीस इनको पद तेरह करि गुणे च्यारि हजार च्यारिसै बीस सर्व प्रथम पृथ्वी विषै हो पद सैतेसी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है। बहुरि इंद्रक सहित श्रेणीबद्धनिका प्रमाण भी ऐसे ही जानना। मुख और भूमि विषै एक एक और बधावना तब मुख दोवसै तेरहो भूमि तीनसै चवालीस प्रमाण कीए प्रथम पृथ्वीविषै इंद्रक सहित श्रेणीबद्ध च्यारि हजार च्यारिसै बीस होहि ४४२० बहुरि ऐसेही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषै भी प्रमाण स्थापना। बहुरि सप्तम पृथ्वीके श्रेणीबद्धका प्रमाण ऐसे ही स्थापना इहां मुख तो सवत पृथ्वी विषै श्रेणीबद्ध च्यारि भूमि प्रथम पृथ्वी विषै श्रेणी बद्ध तीनसै अठासी पद सर्व पटल गुणचास घर आठ जानना। इहां सप्तम पृथ्वीविषै इंद्रक सहित श्रेणीबद्धका प्रमाण भी ऐसे ही स्थापना। इहां मुख पांच भूमि तीनिसै तिरासी पद गुणचास का घर आठ जानना ॥ १६३ ॥

आगे इंद्रक श्रेणीबद्धका प्रमाण स्थापनेको सकलनसूत्र अरु करण सूत्र कहे हैं:—

पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं।
पभवजुदं पदगुणिदं पदधणमिदि ते विजाणाहि ॥ १६४ ॥
पदमेकेन विहीनं द्विभाजितं उत्तरेण संगुणितं।
प्रभवयुतं पदगुणितं पदधनमिति तान् विजानीहि ॥ १६४ ॥

अर्थ—पदको एक घाटि करि आधा दीजिए बहुरि उत्तर सो गुणा करि [illegible] । बहुरि मुख सो मूल करि जोडि बहुरि पदकरि गुणिए ऐसे करे हुए [illegible] । बहुरि मुख सो मूल करि जोडि बहुरि पदकरि गुणिए ऐसे करे हुए [illegible] आदिधन विषै विशेष प्रमाण होई सो स्थान स्थान [illegible] । सो इहां प्रथम [illegible] । इहां मुख दोवसै बालसै [illegible] । इहां मुख आदि [illegible] ॥ १६४ ॥

आगे अन्य [illegible] कहे हैं —

पुव्वावरजेट्ठूणं अट्ठहदं सेढिगं च सव्वत्थं।
अट्ठूणं वड्ढीयं पुव्वावरवड्ढिदं च पुव्वधणं ॥ १६५ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ १६५ ॥

अर्थ—[illegible]

मूल छह मिलाय बियाळीस इनकों आठगुणा कीएं तीनिसै छत्तीस इनमें च्यारि मिलाएं तीनिसै चालीस इनकों इंद्रकका प्रमाण तेरह करि गुणें च्यारि हजार च्यारिसै बीस प्रथम पृथ्वी विषैं सर्व श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है। ऐसें ही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैभी प्रमाणल्यावना। अब इहां ऐसा सूत्र कैसें कह्या सो जाननेकों याकी वासनाका स्वरूप संस्कृत टीकातैं जानना। या प्रकार प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं चौवालीससै बीस, छवीससै चौरासी, चौदासै छहत्तरि, सातसैं, दोयसैं साठि, साठि, च्यारि। ४४२०।२६८४।१४७६।७००।२६०।६०।४। श्रेणीबद्ध जानने। सर्व मिलाएं नव हजार छसै च्यारि श्रेणीबद्ध हो हैं। इंद्रक तेरह ग्यारह नव सात पांच तीन एक जानने। मिलाएतैं सर्वइंद्रक गुणचास होहैं इन दोऊनिकों मिलाएं इंद्रक सहित श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है ॥ १६५ ॥

आगैं प्रकीर्णकनिकी संख्या ल्यावनेकों कहैं हैं;—

सेढीणं विच्चाले पुप्फपइण्णय इव ट्ठिया णिरया।
होंति पइण्णयणामा सेढिंदयहीणरासिसमा ॥ १६६ ॥

श्रेणीनां अंतराले पुष्पप्रकीर्णकानि इव स्थितानि निरयाणि।
भवंति प्रकीर्णकनामानि श्रेणीद्रकहीनराशिसमानि ॥ १६६ ॥

अर्थ—जैसें पुष्पप्रकीर्णक कहिए पुष्पांजलि करि क्षेपे हूए पृथ्वीविषैं ते क्रम पंक्ति रहित जहां तहां पाईए तैसें श्रेणीबद्धनिकैं बीचि दिशा विदिशानिका अंतराल विषैं पंक्ति रहित जहां जहां जे बिल पाईए ते प्रकीर्णक नाम बिल हो हैं ते श्रेणीबद्ध और इंद्रकनकी संख्या रहत राशि जो सर्व बिलनिकी संख्या तीह समान जाननें। तहां प्रथम पृथ्वीविषैं च्यारि हजार च्यारिसै श्रेणीबद्ध अर इंद्रक तेरह इन दोऊनिकों राशि तीस लाख तामें घटाएं गुणतीस लाख पिच्यानवे हजार पांचसै सतसटि रहे सो इतने प्रथम पृथ्वी विषैं प्रकीर्णक बिल जाननें। ऐसें ही द्वितीयादि पृथ्वीनिविषैं जानना ॥ १६६ ॥

आगैं नरक बिलनिका विस्तार कहनेके अर्थि कहैं हैं;—

पंचमभागपमाणा णिरयाणं होंति संखवित्थारा।
सेसचउपंचभागा असंखवित्थारया णिरया ॥ १६७ ॥

पंचमभागप्रमाणा निरयाणां भवंति संख्यविस्ताराः।
शेषचतुःपंचभागा असंख्यविस्ताराणि नरकाणि ॥ १६७ ॥

अर्थ—पृथ्वीनि विषैं जो पूर्वे बिलनिका प्रमाण कह्या तिन विषैं पांचवां भाग प्रमाण बिल तौ संख्यात योजन विस्तार करि संयुक्त हैं। अर अवशेष च्यारि पांचवां भाग प्रमाण असंख्यात योजन विस्तार करि संयुक्त हैं। तहां इंद्रक तो सर्व ही संख्यात योजन विस्तारयुक्त जाननें। अर श्रेणीबद्ध सर्व असंख्यात योजन विस्तारयुक्त जाननें। अवशेष संख्यात वा असंख्यात विस्तारयुक्त प्रकीर्णक जाननें। तहां प्रथम पृथ्वीविषैं बिल तीस लाख तिनकों पांचका भाग दीएं एक भाग प्रमाण छह लाख बिल तौ संख्यात योजन विस्तार युक्त हैं। अवशेष च्यारि भाग प्रमाण चौईस लाख बिल असंख्यात योजन विस्तारयुक्त जाननें। तहां संख्यात योजन विस्तारयुक्त छह

लाख बिलनि विषैं तेरह तौ इंद्रक अर अवशेष पांच लाख निन्यानवै हजार नौसै सित्यासी प्रकीर्णक जानने। बहुरि असंख्यात योजन विस्तारयुक्त चौईस लाख बिलनिविषैं च्यारि हजार बत्तीस तौ श्रेणीबद्ध अर अवशेष तेईस लाख पिच्याणवै हजार पांचसै असी प्रकीर्णक जानने। ऐसे ही द्वितीयादि पृथ्वीनिविषैं भी जाननां। वा सर्व पृथ्वीनिके सर्व बिलनिविषैं भी ऐसैं ही प्रकीर्णक स्थाननां ॥ १६७ ॥

आगैं संख्यात असंख्यात विस्तारविषैं नियम दिखावता कहैं हैं;—

इंदयसेढीबद्धापइण्णयाणं कमेण वित्थारा।
संखेज्जमसंखेज्जं उभयं च य जोयणाण हवे ॥ १६८ ॥

इंद्रकश्रेणीबद्धप्रकीर्णकानां क्रमेण विस्ताराः।
संख्येयमसंख्येयमुभयं च च योजनानां भवेत् ॥ १६८ ॥

अर्थ—इंद्रक अर श्रेणीबद्ध अर प्रकीर्णक इनका विस्तार अनुक्रमतैं संख्यात योजन अर असंख्यात योजन अर उभय कहिए संख्यात वा असंख्यात योजनका है ॥ १६८ ॥

आगैं इंद्रकनिके विस्तारका विशेष कहैं हैं;—

माणुसखेत्तपमाणं पढमं चरिमं तु जंबुदीवसमं।
उभयविसेसे रूऊणिंदयभजिदम्हि हाणिचयं ॥ १६९ ॥

मानुषक्षेत्रप्रमाणं प्रथमं चरणं तु जंबूद्वीपसमम्।
उभयविशेषे रूपोनेंद्रकभक्ते हानिचयं ॥ १६९ ॥

अर्थ—प्रथम इंद्रक मनुष्य क्षेत्र प्रमाण है। अंत इंद्रक जंबूद्वीप समान है। दोऊनिका [illegible] एक घाटि इंद्रकका भाग दीए हानि चय हो है। सो पहला पटल संबंधी पहला इंद्र[illegible] तैं दूसरा इंद्र योजन घाटा है। अर तृतीयादि पटल संबंधी अंतका इंद्रक एकलाख घाटा है। इहां संदृष्टि करि दूसरा इंद्रकविषैं एक लाख घटाए अवशेष चवालीस लाख रहे तिनकौं एक घाटि इंद्रकनिका प्रमाण अठतालीस ताका भाग दीए इक्यासी हजार छसै छयासठि योजन [illegible] अर कनिष्ठ योजन अठतालीसवां भाग आया तहां कनीयका अठतालीसवां भागका योजन कीजै अर कनिष्ठ योजन दोय अर अठतालीसवां भाग तीन भाग ऐसे करि इहां इहां [illegible] इहां ऐसे इकट्ठे योजन अर दोय योजनका तीसरा भाग प्रमाण हानि चय आया इहां इंद्र[illegible] इंद्रक प्रति अठतीस लाख प्रमाण ताका भाग हानि चय जानना सो पैंतालीस लाख योजनकौं एक घाटि इंद्रकनिका ताका भाग दीए इक्यासी हजार छसै छयासठि योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण द्वितीय इंद्रकका विस्तार है। ऐसैं ही तृतीयादि इंद्रकका विस्तारका जो प्रमाण आगैं सूत्रोक्त हानि चय [illegible] घटाए तिसतैं इंद्रकका प्रमाण आवै इंद्रक प्रति जानना ॥ १६९ ॥

आगैं इंद्रकनिके [illegible] विस्तारका प्रमाण कहैं हैं,—

एयट्ठचउक्काटमु पंचट्ठमुणट्ठमेक्कसंगु।
छत्तिं भाजिदमु वरहु इंदयसेढीपइण्णाण ॥ १७० ॥

पट्टादिषूरणादिषु प्रतिपृथ्वीमुरणार्धसहितकोशेषु।
षड्भि मनोरु इंदकश्रेणीप्रकीर्णानाम् ॥ १७० ॥

अर्थ—इह आठ चौदानें आदि दै करि पृथ्वी प्रति मुरका अर्द्ध प्रमाण संयुक्त जे तिनकों इहका भाग दीए इंदक श्रेणीबद्ध प्रकीर्णकनिका बाहुल्य हो है। इहां विलानेकी भू उच्चाय तानि पर्यंत उचाईका प्रमाण ताका नाम बाहुल्य जाननां। सो प्रथम पृथ्वी विषैं इह को इहका भाग दीए एक कोश भया सो इंदकनिका बाहुल्य जानना। बहुरि आठकों इहका दीए च्यारि कोशका तीसरा भाग सो श्रेणी बद्धनिका बाहुल्य जाननां। बहुरि चौदहकों इह भाग दीए सातकोशका तीसरा भाग भया सो प्रकीर्णकनिका बाहुल्य जानना। ११॥१। ऐसैं प्रथ पृथ्वी विषै इंदकादिकका बाहुल्य कह्या ताका नाम इहां मुख जाननां। ताका आधा कीएं जो प्रमा होइ तितनां तितनां उपरिकी पृथ्वीके इंदकादिकनिका बाहुल्य विषैं जोडें नीचली पृथ्वीके इंदका- दिकका बाहुल्य हो है। सो इंदकनिविषैं तीनका छटा भाग श्रेणीबद्धनिविषैं च्यारिका छटा भगा प्रकीर्णकनि विषै सातका छटा भाग पृथ्वी पृथ्वी प्रति जोडना सो प्रथम पृथ्वी विषैं इह आठ चौदह तिनमें तीन च्यारि सात अर छह आठ चौदह अर नव बारा इकईस अर बारा सोलह अठा- ईस अर पंदरह बीस बैं-तीस अर अठारह चौंईस शून्य इतने अनुक्रमतैं मिलाएं इहका भाग दीएं द्वितीयादि पृथ्वीनि विषै इंदकादिकनि बाहुल्यका प्रमाण आवै है। तहां सप्तम पृथ्वी विषैं प्रकीर्ण- कनिका अभाव है। तातैं तीसरी जायगा शून्य कह्या है। तहां छे आठ चौदह विषैं तीनि च्यारि सात जोडे तब नौ बारा इकईस हूवा इनकों इहका भाग दीएं अपवर्तन कीएं द्वितीय पृथ्वीविषैं इंद- कनिका द्योढकोश श्रेणीबद्धनिका दोय कोश प्रकीर्णकनिका साढा तीनि कोश बाहुल्य [१॥३॥] हो है। तृतीयादि पृथ्वी विषैं जानना ॥ १७० ॥

आगैं बहुरि इस बाहुल्यकों अन्य प्रकार करि कहै है;—

रूवहियपुढविसंखे तियचउसत्तोहि गुणिय छब्भजिदे।
कोसाणं बेहुलियं इंदयसेढीपइण्णाणं ॥ १७१ ॥
रूपाधिकपृथ्विसंख्या त्रिकचतुःसप्तभिः गुणयित्वा षड्भक्ते।
कोशानां बाहुल्यं इंदकश्रेणीप्रकीर्णानाम् ॥ १७१ ॥

अर्थ—जेतवी पृथ्वी होइ तीह संख्या विषैं एक अधिक कीएं जो संख्या होइ, ताकों तीन च्यारि सात करि गुणें छहका भाग दीएं जो प्रमाण होइ तितनी कोशनिका बाहुल्य जो उचाईका भाग सो जानना। तहां प्रथम पृथ्वी विषैं एक अधिक कीएं दोय भए सो तीन जायगा दोय दोय कै तिनकों च्यारि सात करि गुणें छह आठ चौदह भए तिनकों छहका भाग दीएं [१][१][३] इंदकादिकनिका कोशरूप बाहुल्य आवै है। बहुरि द्वितीय पृथ्वी विषैं एक अधिक संख्या तीन सो जायगा मांडि तीन च्यारि सात करि गुणें नव बारह बाईस होइ इनकों छहका भाग दीएं कोशरूप इंदकादिकनिका बाहुल्य आवै है। ऐसें ही तृतीयादि पृथ्वीनि विषै जाननां ॥१७१॥

आगैं इंदकादि विमानका अवगाहका प्रमाण कहै है,—

पदराहय विलबहलं पदरहिदभूमिदो विसोहित्ता।
रूऊणपदहिदाए विलंतरं उड्ढगं तीए ॥ १७२ ॥

प्रतराहतं विलबाहल्यं प्रतरस्थितभूमितः विशोध्य।
रूपोनपदहृतायां विलांतरं ऊर्ध्वगं तस्याः ॥ १७२ ॥

अर्थ—प्रतर कहिए पटल तिनका प्रमाण करि आहत कहिए गुण्या हूवा ऐसा बाहुल्य कहिए इंद्रकादि विलनिका बाहुल्यका प्रमाण सो प्रतरस्थित भूमितः कहिए प संयुक्त जो नरक पृथ्वीका प्रमाण तातैं विशोधयित्वा कहिए घटाय करि अवशेषकों ... एक घाटि पटलका प्रमाण रूप गच्छ ताकरि हृतायां कहिए भाग दीएं सतैं तीह विषै विषै ऊर्द्धग विलांतर कहिए उचाई विषै प्राप्त ऐसा विलनिके अंतराल हो है। जैसैं मंदिर बनै हैं। तिन दोऊ मंदिरनिके बीचि छांति हो है। तिस छातिकी मोटाईका सो ऊर्द्धग मंदिरांतर कहिए तैसैं उपरले नीचले पटल संबंधी विलनिके बीचि जो ता पृथ्व ईका प्रमाण सो इहां ऊर्द्धग मंदिरांतर कहिए तैसैं उपरिले नीचले पटल विलांतर जा प्रथम पृथ्वी विषै पटलनिका प्रमाण तेरह ताकरि इंद्रक विलका बाहुल्य एक कोश श्रे ण्यारि कोशका तीसरा भाग प्रकीर्णकनिका सात कोशका तीसरा भाग इनकों गुणें बावन कोशका तीसरा भाग इक्याणवै कोशका तीसरा भाग भया [१३।१।१] बहुरि ण्यां एक योजन होइ तौ इतने कोशनिका केते योजन होय ऐसैं तिन कोशनिके योजन योजनका चौथा भाग बहुरि बावन योजनका बारह्वां भाग बहुरि इक्याणवै योजनका ब्रा भया [१।१।१]। बहुरि इहां अब्बहुल भाग असी हजार योजन छोडि बीचि पटल पाईए स्थित भूमि अठहत्तरि हजार योजन तिनमें पूर्वोक्त योजननिकों समच्छेद विधान करि घटा विषै तीनि लाख ग्यारह हजार नवसै सित्यासी योजननिका चौथा भाग अर श्रेणी ण्यारिका अपवर्तन कीएं दोय लाख तेतीस हजार नौसै सित्यासी योजननिका तीसरा प्रकीर्णकनि विषै नौ लाख पैंतीस हजार नौसै नवका बारह्वां भाग प्रमाण आया बहुरि ए घाटि पटलका प्रमाणरूप पदका प्रमाण बारह ताका भाग दीएं उपरले नीचले इंद्रकनिकैं बीचि लाख ग्यारह हजार नवसै सित्यासी योजनका अडतालीसवां भाग प्रमाण अंतराल है। बहुरि श्रेण बीचि दोय लाख तेतीस हजार नौसै सित्यासी योजनका छत्तीसवां भाग प्रमाण अंतराल है प्रकीर्णकनिके बीचि नव लाख पैंतीस हजार नवसै नौका एक सो चवालीसवां भाग प्रमाण [९।३५।९।९] ऐसे ही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषै तीस हजार छत्तीस हजार आ स्थित भूमि विषै अपना अपना पटल प्रमाण करि गुण्या हूवा विल बाहुल्य घटाइ एक घा प्रमाणका भाग दीएं ऊर्द्ध गत अंतरालका प्रमाण आवै है। ऐसैं एक पृथ्वी विषै तिष्ठते तिनका परस्पर अंतराल वर्णन किया ॥ १७२ ॥

आगैं उपरली पृथ्वीका अंतपटल अर नीचली पृथ्वीका आदि पटल तिन विषै अंतरा पन करै है;—

उवरिमपच्छिमपडला हेट्ठिमपडमिल्लपत्थरंतरयं।
रज्जू तिसहस्सूणिद्घम्मा वंसुदयपरिहीणा॥ १७३॥

उपरिमपश्चिमपटलात् अधस्तनप्रथमप्रस्तरांतरका।
रज्जुः त्रिसहस्रोनितघर्मा वंशोदयपरिहीना॥ १७३॥

अर्थ—उपरिकी घर्मा पृथ्वी ताका पश्चिम पटल कहिए अंतका पटल अर ताके अधस्तन कहिए नीचली वंशा पृथ्वी ताका प्रथम पटल इनिविषैं एक रज्जु अंतराल है। सो रज्जु कैसा। तीन हजार घाटि घर्मा अर वंशाकी मोटाईका प्रमाण जामें घटाईए ऐसा एक रज्जु प्रमाण अंतराल है। कैसें सो कहिए है। इहांतें एक हजार योजन पर्यंत चित्रा पृथ्वी है सो चित्रा पृथ्वीकी मोटाई तौ ऊर्द्ध लोककी उचाई विषै गिनी है। अर ताके नीचें वंशा पृथ्वीका अंतपर्यंत एक राजू उंचाई है। बहुरि एक लाख असी हजार योजन घर्मा पृथ्वीकी मोटाई विषैं चित्रा पृथ्वीकी हजार योजनकी मोटाई आय गई है तातैं हजार योजन तौ चित्रा पृथ्वी संबंधी घटाए बहुरि घर्मा पृथ्वीका अंत पटलके नीचें हजार योजन विषैं पटल नाही सो घटाए बहुरि वंशा पृथ्वीका प्रथम पटलके उपरि हजार योजन विषैं पटल नाही सो घटाए ऐसैं तीन हजार योजन घर्मा अर वंशाकी मोटाई विषैं घटाईए तहां घर्माकी मोटाई एक लाख असी हजार योजन वंशाकी मोटाई बत्तीस हजार योजन दोऊनिको मिलाएं दोय लाख बारह हजार योजन घटाएं दोय लाख नव हजार रहे सो इतने एक राजू विषैं घटाएं घर्माका अंत पटल अर वंशाका प्रथम पटल विषैं अंतरालका प्रमाण हो है। इस अंतराल विषैं हजार योजन घर्माकी नीचली पृथ्वी अर हजार योजन वंशाकी उपरली पृथ्वी अर अवशेष सर्व ठौरिमें अवकाश पाईए है॥ १७३॥

आगैं तातैं नीचली पृथ्वीनिका अंतादि पटलनि विषैं अंतराल निरूपण करैं हैं;—

कमसो विसहस्सूणियमेघादीणं च वेहपरिहीणा।
चरिमे तितिभागाहियजोयणतिसहस्सपरिवज्जा॥ १७४॥

क्रमशो द्विसहस्रोनितमेघादीनां च वेधपरिहीना।
चरमे द्वित्रिभागाधिकयोजनत्रिसहस्रपरिवर्जा॥ १७४॥

अर्थ—अनुक्रमतैं दोय हजार योजन घाटि मेघादि पृथ्वीनिका वेधकरि हीन ऐसा रज्जु प्रमाण अंतर है। तहां मेघादि पृथ्वीका मोटाईका प्रमाण अठाईस हजार योजन तिनमें दोय हजार घटाएं छबीस हजार योजन तिन करि हीन ऐसा एक रज्जु प्रमाण अंतराल वंशाका अंतपटल अर मेघाका आदि पटलके बीचि जानना। बहुरि अंजना पृथ्वीकी मोटाई चौडाई चौईस हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाए बाईस हजार योजन रहे तिन करि हीन एक राजू प्रमाण मेघाका अंतपटल अर अंजनाका आदि पटल विषैं अंतराल जानना। बहुरि अरिष्टा पृथ्वीकी मोटाई बीस हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाए अठारह हजार योजन रहे तिनकरि हीन एक राजू प्रमाण अंजनाका अंत पटल अर अरिष्टाका प्रथम पटल बीचि अंतराल है। बहुरि मघवी पृथ्वीकी मोटाई सोलह हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाए चौदह हजार योजन तिन करि हीन एक राजू प्रमाण अरि-

आगैं तिन उपपाद स्थानकनिका व्यास वा बाहल्य कहैं है;—

इगिवितिकोसो वासो जोयणमवि जोयणं सयं जेट्ठं।
उट्टादीणं बहल्लं सगवित्थारेहिं पंचगुणं ॥ १८० ॥

एकद्वित्रिक्रोशः व्यासः योजनमपि योजनशतं ज्येष्ठं।
उष्ट्रादीनां बाहल्यं स्वकविस्तारैः पंचगुणम् ॥ १८० ॥

अर्थ—एक कोश दोय कोश तीन कोश बहुरि योजनमपि कहिए एक योजन दोय तीन योजन बहुरि योजनानां शतं कहिए सौ योजन इतना घर्मादि सप्त पृथ्वीनिका क्रमतैं आकारके धारक जे उपपादस्थान तिनका उत्कृष्ट व्यास जो चौडाई ताका प्रमाण जानना। अपना अपना प्रमाणतैं पांच गुणा बाहुल्य कहिए उचाईका प्रमाण जानना ॥ १८० ॥

आगैं तिन उपपाद स्थानकनिविषैं उपजे जे जीव कहा करैं हैं सो कहैं हैं;—

अंतोमुहुत्तकाले तदो चुदा भूतलम्मि तिक्खाणं।
सत्थाणमुपरि पडिदूणुट्ठीय पुणोवि णिवडंति ॥ १८१ ॥

अंतर्मुहूर्तकाले ततश्च्युता भूतले तीक्ष्णानाम्।
शस्त्राणामुपरि पतित्वा उत्थाय पुनरपि निपतंति ॥ १८१ ॥

अर्थ—अंतर्मुहूर्त कालविषैं तहां पर्याप्ति पूर्ण करि तिस उपपाद स्थानतैं छूटि नरकनिका पृथ्वी तल विषैं जे तीक्ष्ण शस्त्र हैं तिन उपरि पडैं हैं। बहुरि तहांस्यों उठीय कहिए ऊपजि करि बहुरि तिनही उपरि निपतंति कहिए पडैं हैं ॥ १८१ ॥

आगैं कितना उछलैं हैं सो कहैं हैं;—

पणघणजोयणमाणं सोलहिदं उप्पडंति णेरइया।
घम्माए वंसादिसु दुगुणं दुगुणंति णादव्वं ॥ १८२ ॥

पंचघनयोजनमानं षोडशहृत उत्पतंति नैरयिकाः।
घर्मायां वंशादिषु द्विगुणं द्विगुणं इति ज्ञातव्यम् ॥ १८२ ॥

अर्थ—पांचका घन एक सो पचीस ताकौं सोलाका भाग दीएं जो आवै तितने योजन घर्मा पृथ्वी विषैं नारकी उछलैं हैं। बहुरि यातैं वंशादिक पृथ्वीनि विषैं क्रमतैं दूणे दूणे उछलना ऐसा जानना ॥ १८२ ॥

आगैं तहां तिष्ठते थे जु पुरातन नारकी ते उछलि करि पडे जे नवीन नारकी तिनकौं करैं हैं सो कहैं हैं;—

पोराणिया तदा ते दट्ठूणइणिट्ठुरारवागम्म।
खोवंति णिसिंचंति य वणेसु बहुखारवारीणि ॥ १८३ ॥

पौराणिका तदा तान् दृष्ट्वा अतिनिष्ठुरारवा आगम्य।
क्षिपंति निषिंचंति च वनेषु बहुक्षारवारीणि ॥ १८३ ॥

अर्थ—पुरातन नारकी तहां तिन नवीन नारकीनिकों देखे करि अत्यन्त कठोर वचन कहते ते सुनि करि तिन नवीन नारकीनको धावें हैं। बहुरि शस्त्रनि उपरि पड़नेतें भए जु शरीर विषैं न कहिए घात तिन विषैं बहुत खण्डा जालनिकों सांचे हैं ॥ १८३ ॥

आगें ते नवीन नारकी कहा करें हैं सो कहैं हैं;—

तेवि विहंगेण तदो जाणिदपुव्वावरारिसंबंधा ।
असुहापुधविकिरिया हणंति हण्णंति वा तेहिं ॥ १८४ ॥
तेपि विभंगेन ततः ज्ञातपूर्वापरारिसंबंधाः ।
अशुभापृथग्विक्रिया घ्नंति हन्यंते वा तैः ॥ १८४ ॥

अर्थ—ते नवीन नारकी भी विभंग जो कुअवधि तीह करि तहां पर्याप्ति पूर्ण भए पीछें ाख्या है पिछला वैरीपणाका संबंध जिनतें ऐसे बहुरि अशुभ अपृथक् विक्रिया जिनके पाईए ऐसे त सतें अन्य नारकीनिकों हनें हैं। वा तिन नारकीन करि आप हनिए हैं। ऐसें परस्पर ात प्रवर्तें है ॥ भावार्थ ॥ नारकीनिकें ऐसा कुअवधि हो है। जाकरि परस्पर वैरकों जानि परस्पर ोध रूप ही प्रवर्तें बहुरि जो पूर्वभव विषैं कोई उपकार किया होय तो ताकों जानि तहां परस्पर तिरूप न प्रवर्तें। बहुरि तिनके अशुभ जो आपापरकों दुःखदायक ऐसी ही विक्रिया होय सकै। बहुरि सो अपृथक् विक्रिया हो है। अपने शरीरकों तो अनेक रूप परनवावे अपने शरीरतें जुदी क्रिया करनेकी सामर्थ्य नाहीं। ऐसें ए नारकी परस्पर घात करें हैं ॥ १८४ ॥

आगें अपृथक् विक्रिया करनेका विधान कहैं हैं;—

वयवग्घघूयकागोहविच्छियभल्लूकगिद्धसुणयादिं ।
सूलग्गिकोंतमोग्गरपहुदी संगे विकुव्वंति ॥ १८५ ॥
वृकव्याघ्रघूककाकाहिवृश्चिकभल्लूकगृध्रशुनकादिं ।
शूलाग्निकुंतमुद्गरप्रभृतिं स्वांगे विकुर्वंति ॥ १८५ ॥

अर्थ—वृक कहिए स्याल बहुरि व्याघ्र कहिए बघेरा घूक कहिए घूघू काक कहिए कागला हि कहिए सर्प वृश्चिक कहिए बीछू भल्लूक कहिए रीछ गृध्र कहिए गिद्ध पंखी शुनक कहिए कूकरा यादि अपने शरीर विषैं विक्रिया करें हैं। भावार्थ। नारकी परस्पर दुःख देनेकों अपने शरीरकों स्याल यादि दुःखदायक तिर्यंचनिके आकाररूप विक्रिया करि परनमाइ परस्पर खाना चूंटना काटना इत्यादि तरूप प्रवर्तें हैं। बहुरि शूल कहिए त्रिशूल बरछी अग्नि कहिए जलावनेकों कारण अग्नि अर त कहिए सेल अर मुद्गर कहिए मोंगरा इत्यादि दुखदायक शस्त्रादि सामिग्री अपने शरीरविषैं क्रिया करें हैं। भावार्थ। नारकी परस्पर दुख देनेकों अपने शरीर ही विषैं त्रिशूल आदि शस्त्र वा ग्नि आदि दुःखदायक वस्तु विक्रिया करि उपजाय तिनि करि परस्पर घात करें हैं। ऐसें अशुभ ग्या करि नारकी परस्पर दुःख देनेकों प्रवर्तें हैं। ऐसा ही तिस नारक पर्यायका स्वभाव है। बहुरि ए सर्व पापी हैं काहेकों परस्पर वैर करि दुःखकों उदीरैं हैं ऐसा विचार तहां नाहीं उपजै है ॥ १८५ ॥

आगैं क्षेत्र संबंधी पदार्थनिकी रचनाको दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

वेदालगिरी भीमा जंतमयुग्गुहा य पडिमाओ ।
लोहणिहग्गिकणड्ढा परसुक्खुरिगासिपत्तवणं ॥ १८६ ॥

वेताढ्यगिरयः भीमा यंत्रशतोत्कटगुहाश्च प्रतिमाः ।
लोहनिभाग्निकणाढ्याः परशुक्षुरिकासिपत्रवनम् ॥ १८६ ॥

अर्थ—वैताढ्यकीसी आकृतिको धरैं ऐसा महाभयानक सो तहां गिरि कहिए पर्वत है। बहुरि सैकड़ां दुःखदायक यंत्रनिकरि उत्कट ऐसी गुहा हैं। बहुरि सिंहनी कु प्रतिमा कहिए आदिकका आकाररूप प्रतिबिंब सो लोहसमान हैं अर अग्निका कणनिकरि संयुक्त है। बहुरि जे असिपत्र वन हैं सो फरसी छुरी खड्ग इत्यादि शस्त्रसमान पत्रनिकरि संयुक्त है ॥ १८६ ॥

कूडा सामलिरुक्खा वयिदरणिणदीउ खारजलपुण्णा ।
पूहरुहिरा दुगंधा हदा य किमिकोडिकुलकलिदा ॥ १८७ ॥

कूटाः शाल्मलिवृक्षाः वैतरणिनद्यः क्षारजलपूर्णाः ।
पूयरुधिरा दुर्गंधाः ह्रदाश्च कृमिकोटिकुलकलिताः ॥ १८७ ॥

अर्थ—बहुरि तहां कूटा कहिए असत्य झूठे ऐसे शाल्मली वृक्ष हैं नाम वृक्ष अरु दुःखदायक हैं। बहुरि तहां वैतरिणी नाम नदी है सो खारा जल करि सम्पूर्ण भरी है। पूय कहिए विनावनां ऐसा रुधिर करि संयुक्त महा दुर्गंध ऐसे द्रह हैं ते कोटिक कृमिनिका कुल करि व्याप्त होइ रहे हैं। भावार्थ। विक्रियादि करि विना निपजाया क्षेत्रस्वभावकरि तिन विषै महा दुःखकों कारण पर्वतादि पाईए हैं ॥ १८७ ॥

आगैं तैसी नदीकों पाइ कहा हो है सो कहैं हैं;—

अग्गिभया धावंता मण्णंता सीयलंति पाणीयं ।
ते वइदरणिं पविसिय खारोदयदड्ढसव्वंगा ॥ १८८ ॥

अग्निभयाद्धावंतः मन्यमानाः शीतलमिति पानीयं ।
ते वैतरणीं प्रविश्य क्षारोदकदग्धसर्वांगाः ॥ १८८ ॥

अर्थ—अग्निके भयतैं दौड़ता ऐसैं जु ते नवीन नारकी ते इहां शीतल पानी है ऐसा मानता संता वैतरणी नामा नदी प्रति प्रवेश करि तहां खारा जल करि दग्ध भया है सर्व जिनका ऐसे हो हैं ॥ १८८ ॥

बहुरि ऐसे होत संतें ते नारकी कहा करैं हैं सो कहै है·—

उट्ठिय वेगेण पुणो असिपत्तवणं पयांति छायेत्ति ।
कुंतासिसत्तिजट्ठिहिं छिज्जंते वादपडिदेहिं ॥ १८९ ॥

उत्थाय वेगेन पुनः असिपत्रवनं प्रयांति छायेति ।
कुंतासिशक्तियष्टिभिश्छिद्यमाने वातपतिते· ॥ १८९ ॥

अर्थ—ते नवीन नारकी वेग करि शीघ्र ही तहांस्यों उठि करि इहां आया है ऐसा मानते संते असिपत्र नामा वनकों प्राप्त हो हैं। तहां पवन करि पडे ऐसे खेटक खड्ग वा शक्ती वा यष्टि कहिए लाठी इत्यादि समान जे पत्रादिक तिनकरि शरीर भेदिए है ॥ १८९ ॥

आगें तिन नारकीनिके बाह्य दुखका साधनकों कहै हैं;—

लोहोदयभरिदाओ कुंभीओ तत्तवदुकटाहा य।
संतत्तलोहफासा भू सूईसद्दाइण्णा ॥ १९० ॥

लोहोदकभरिताः कुंभ्यः तप्तवदुकटाहाश्च।
संतप्तलोहस्पर्शा भूः सूचीशब्दाकीर्णा ॥ १९० ॥

अर्थ—तातो लोह समान जल करि भरे ऐसे तहां कुंभी है जैसे हांडी विषैं अन्न पचाईए तैसें नारकीनिकों कुंभी विषैं पचावें हैं बहुरि बहुत तातो कटाह है। जैसे कटाह विषैं तप्त तैलादि करि अन्न आदि पचाईए तैसें नारकीनिकों कटाह विषैं पचाईए है इत्यादि अनेक बाह्य दुःखनिका कारण सामिग्री तहां पाईए है। बहुरि तहां भूमिका है सो तप्तायमान लोहके समान है स्पर्श जाका ऐसी है। बहुरि सूई समिनी दाहल करिए दोष तिनकरि आकीर्णा कहिए व्याप्त है ॥ १९० ॥

आगें क्षेत्रका स्पर्श करि हो है जो दुख सागों दृष्टान्त करि कहे हैं;—

विच्छियसहस्सवेयणसमधियदुक्खं धरित्तिफासादो।
कुक्कुलिधरीसरोगगछुधातिसमयवेयणा तिव्वा ॥ १९१ ॥

वृश्चिकसहस्रवेदनासमधिकदुःखं धरित्रीस्पर्शात्।
कुक्कुलिधरीसरोगक्षुधातृषाभयवेदना तीव्राः ॥ १९१ ॥

अर्थ—हजार बीछू काटै जैसी इहां वेदना होइ तातैं अनन्तगुणी भी बहुत अधिक वेदना तहां धरित्री जो भूमिका तिसका स्पर्शनेतें हो है। बहुरि तिन नारकीनिके कुक्षि करिए उदर अर शिर कहिए नेत्र अर ईषैं करिए मस्तक इत्यादि संबंधी अनेक रोग करि संयुक्त क्षुधा तृषा भयादिक तीव्र वेदना तहां पाईए है ॥ १९१ ॥

आगें ते नारकी क्षुधादि करि पीडित कहा भोजन करे है सो कहे है;—

सादिदुहिदाणिगंधं सणिमव्वं महियं विभुंजंति।
धम्मभवा वंसादिसु असंखगुणिदाणुहं तत्तो ॥ १९२ ॥

श्वादिदुःखितानिगंधं अनन्तैरन्तां मृत्तिकां विभुंजते।
धर्मभवा वंशादिषु असंख्यगुणितानुभं ततः ॥ १९२ ॥

अर्थ—श्वा जो कूकरा तातो आदि देकर विद्यमान जीवनिका जे अनिष्ट करिए दिए तीहस्यों भी अति अधिक दुर्गंध भोजनमि करि अन्तो करिए भूरि बहुत अर जिसे कोई ने कबहू अपेक्षा कीनी जो तिस क्षेत्र संबंधी माटी तातो धर्मानाम तिसे उपजे नारकी भक्षण करे है। बहुरि वंशादिकनि विषै तिनतें असंख्यात गुणी अशुभ दुरी ऐसी जो पृथिवी तातै भक्षण करे है ॥ १९२ ॥

आगैं क्षेत्र संबंधी पदार्थनिकी क्रूरताकों दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

वेदालगिरी भीमा जंतसयुक्कडगुहा य पडिमाओ ।
लोहणिहग्गिकणड्ढा परमूलुरिगासिपत्तवणं ॥ १८६ ॥

वेतालगिरयः भीमा यंत्रशतोत्कटगुहाश्च प्रतिमाः ।
लोहनिभाग्निकणाढ्याः परशुछुरिकासिपत्रवनम् ॥ १८६ ॥

अर्थ—वेतालकीसी आकृतिकों धरैं ऐसा महाभयानक तौ तहां गिरि कहिए पर्वत हैं। बहुरि सैकड़ां दुःखदायक यंत्रनिकरि उत्कट ऐसी गुफा हैं। बहुरि तिष्टती जु प्रतिमा कहिए स्त्री आदिकका आकाररूप प्रतिबिंब सो लोहसमान हैं अर अग्निका कणनिकरि संयुक्त है। बहुरि तहां असिपत्र वन हैं सो फरसी छुरी खड्ग इत्यादि शस्त्रसमान पत्रनिकरि संयुक्त है ॥ १८६ ॥

कूडा सामलिरुक्खा वयिदरणिणदीउ खारजलपुण्णा ।
पूहरुहिरा दुगंधा हदा य किमिकोडिकुलकलिदा ॥ १८७ ॥

कूटाः शाल्मलिवृक्षाः वैतरणिनद्यः क्षारजलपूर्णाः ।
पूयरुधिरा दुर्गंधाः ह्रदाश्च कृमिकोटिकुलकलिताः ॥ १८७ ॥

अर्थ—बहुरि तहां कूटा कहिए असत्य झूठे ऐसे शाल्मली वृक्ष हैं नाम वृक्ष का महा दुःखदायक हैं। बहुरि तहां वैतरिणी नाम नदी है सो खारा जल करि सम्पूर्ण भरी है। बहुरि पूय कहिए विनायना ऐसा रुधिर करि संयुक्त महा दुर्गंध ऐसे द्रह हैं ते कोटिक कृमिनिका कुल करि व्याप्त होइ रहे हैं। भावार्थ। विक्रियादि करि विना निपजाया क्षेत्रस्वभावकरि तिन तिष्टते विषै महा दुःखको कारण पर्वतादि पाईए हैं ॥ १८७ ॥

आगैं तैसी नदीकों पाइ कहा हो है सो कहैं हैं;—

अग्गिमया धावंता मण्णंता सीयलंति पाणीयं ।
ते वइदरणिं पविसिय खारोदयदड्ढसव्वंगा ॥ १८८ ॥

अग्निमयाद्धावंतः मन्यमानाः शीतलमिति पानीयं ।
ते वैतरणीं प्रविश्य क्षारोदकदग्धसर्वांगाः ॥ १८८ ॥

अर्थ—अग्निके मयतैं दौड़ता ऐसें जु ते नवीन नारकी ते इहां शीतल जानता संता वैतरणी नामा नदी प्रति प्रवेश करि तहां खारा जल करि दग्ध भए हैं सर्व अंग जिनका ऐसे होइ है ॥ १८८ ॥

बहुरि ऐसे होत संते ते नारकी कहा करै है सो कहैं हैं:—

उट्ठिय वेगेण पुणो अभिपयरणं पयांति छायेत्ति ।
कूडामलिसंणिवहिं छिण्णंते वादपरिदेहिं ॥ १८९ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ १८९ ॥

आगें तिन नारकीनके शरीरका विलय होनेका विधान कहैं हैं;—

अणवट्टसगाउस्से पुण्णे वाताहदब्भपडलं वा।
णेरइयाणं काया सव्वे सिग्घं विलीयंते ॥ १९६ ॥

अनपवर्त्यस्वकायुष्के पूर्णे वाताहताभ्रपटलमिव।
नैरयिकाणां कायाः सर्वे शीघ्रं विलीयंते ॥ १९६ ॥

अर्थ—भुज्यमान आयुका अपवर्तन जो घटना सोइ करि जो कदली घात मरण होइ सो अपवर्त्यायु कहिए। भुज्यमान आयुका अपवर्तन विना भए जो च्युत मरण होइ सो अनपवर्त्यायु कहिए सो नारकीनके शरीर अनपवर्त्य जो अपना आयु ताकौं पूर्ण होत संतैं जैसैं पवन करि हने मेघपटल विलय जाय तैसे सर्व ही शीघ्र विलय हो है। जैसैं इहां मनुष्य (प्र) निकें शरीर मरण भए पीछैं पड़े रहैं हैं तैसैं नारकीनके शरीर पड़े नाहीं रहै हैं ॥१९६॥

आगें तिन नारकीन करि भोगवनेमें आवें हैं जे दुःख तिनके भेद कहैं हैं;—

खेत्तजणिदं असादं सारीरं माणसं च असुरकयं।
भुंजंति जहाउसरं भवट्ठिदीचरिमसमयोत्ति ॥ १९७ ॥

क्षेत्रजनितं असातं शारीरं मानसं च असुरकृतम्।
भुंजंते यथायुसरं भवस्थितेश्चरमसमयांतम् ॥ १९७ ॥

अर्थ—क्षेत्र जनित १ शारीर १ मानस १ असुरकृत १ ए च्यारि प्रकार असाता यथा अवसर लिए अपनी पर्यायका अंतसमय पर्यंत भोगवें हैं तहां नरक क्षेत्र करि उत्पन्न जो आतापादि दुःख सो क्षेत्र जनित कहिये। नरक शरीर करि उत्पन्न जो रोगादिक दुःख सो शारीर कहिए। आकुल परिणामनि करि उत्पन्न जो आर्त ध्यानादि रूप दुःख सो मानस कहिए। तीसरी पृथ्वी पर्यंत संक्लेश परिणामनि करि संयुक्त जे असुरकुमार जातिके भवनवासी देव तिन करि कीया हूवा जो परस्पर लड़ावना घात करना इत्यादि दुःख सो असुरकृत कहिए। ऐसैं दुःखके च्यारिभेद जानने ॥ १९७ ॥

आगें पटल पटल प्रति तिन नारकीनका जघन्य उत्कृष्ट आयुकौं तीन गाथानिकरि कहै हैं;—

पढमिंदे दसणउदीवाससहस्साउगं जहण्णिदरं।
तो णउदिलक्ख जेट्ठं असंखपुव्वाण कोडी य ॥ १९८ ॥

प्रथमेंद्रके दशनवतिवर्षसहस्रायुष्कं जघन्येतरत्।
ततः नवतिलक्षं ज्येष्ठं असंख्यपूर्वाणां कोट्यश्च ॥ १९८ ॥

अर्थ—प्रथम पृथ्वीका प्रथम पटल विषै जघन्य आयु दश हजार वर्ष है। इतर कहिए उत्कृष्ट आयु सो नव्वै हजार वर्ष प्रमाण है। बहुरि इहां ने पीछे जो कहिए है आयु सो सर्व उत्कृष्ट आयु जानना। तहां दूसरा पटल विषै नव्वै लाख वर्ष आयु है। तीसरा पटल विषै असंख्यात कोडि पूर्व वर्ष प्रमाण आयु है। सत्तरिलाख छप्पन कोटिका पूर्व कहिए है ॥ १९८ ॥

सायरदसमं तुरिये सगसगचरमिंदयम्हि इगि तिण्णि ।
सत्त दस सत्तरसं उवही बावीस तेत्तीसं ॥ १९९ ॥
सागरदशमं तुरीये स्वकस्वकचरमेंद्रके एकं त्रीणि ।
सप्त दश सप्तदश उदधयो द्वाविंशतिः त्रयस्त्रिंशत् ॥ १९९ ॥

अर्थ— चौथा पटल विषैं एक सागरका दशवां भाग प्रमाण आयु है । इहां तैं आगैं प्रथमादि सप्तमी पर्यंत पृथ्वीनिका अंतका पटल विषैं आयु कहिए है सो प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं क्रमतैं एक तीन सात दश सतरह बावीस तेतीस सागर प्रमाण आयु जानना । १।३।७।१०।१७। २२।३३ ॥ १९९ ॥

आदी अंतविसेसे रूऊणद्धाहिदम्हि हाणिचयं ।
उवरिम जेट्ठं समयेणहियं हेट्ठिमजहण्णं तु ॥ २०० ॥
आदौ अंतविशेषे रूपोनार्द्धाहिते हानिचयं ।
उपरिमं ज्येष्ठं समयेनाधिकं अधस्तनजघन्यं तु ॥ २०० ॥

अर्थ—आदि विषैं जो प्रमाण होइ ताकौं अंतके प्रमाणमें स्यौं घटाएं जो प्रमाण होइ ताकौं रूपोनार्द्धा कहिए एक घाटि पटलका प्रमाणरूप गच्छका भाग दीएं हानिचयौ कहिए नीचले पटलतैं पटल पटल प्रति घटनेका प्रमाण हो है । सोई कहिए है—प्रथम पृथ्वी विषैं चौथा पटल विषैं आयु एक सागरका दशवां भाग सो तौ आदि कहिए, अंत पटल विषैं एक सागर सो अंत कहिए अंतमेंस्यौं आदि समछेद विधान करि घटाएं नव सागरका दशमां भाग रह्या तहां तीन पटलका तौ आयुका जुदा प्रमाण कह्या तातैं तिनकौं छोडि अवशेष पटल रहे सो इहां गच्छ जाननां। यद्यपि चौथा पटलका भी आयु जुदा जुदा कह्या था तथापि इहां चौथा पटलका आयुकौं आदि विषैं स्थाप्या तातैं भेलि लीया सो गच्छमें एक घाटि कीएं नव सो नव पटलनि विषैं नव सागरका दशवां भाग बधै तौ एक पटल विषैं कितना बधै ऐसैं त्रैराशिक कीएं नवका दशवां भागकौं नवका भाग दीएं एक सागरका दशवां भाग प्रमाण चय आया सो इतना चय चौथा पटलका आयु विषैं मिलाएं पांचवां पटलका आयु दोय सागरका दशवां भाग हो है तामें चय मिलाएं छठा पटलका आयु तीन सागरका दशवां भाग हो है ऐसैं ही एक एक चय मिलाएं सप्तमादि पटलनिविषैं— च्यारि पांच छह सात आठ नव दश सागरनिका दशवां भाग प्रमाण आयु हो है । बहुरि द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं जो उपरली पृथ्वीका अंत विषैं जो आयु कह्या सो तौ इहां आदि स्थापिए ता आदि तौ क्रमतैं एक तीन सात दश सत्रह बावीस सागर प्रमाण है । बहुरि जो विवक्षित पृथ्वीका अंत पटल विषैं आयु सो अंत स्थापिए तातैं क्रमतैं अंत तीन सात दश सत्रह बावीस तेतीस सागर प्रमाण है । तहां अंतमेंस्यौं आदि घटाए दोय च्यारि तीन सात पांच ग्यारह सागर रहे । बहुरि इहां पटलनिका प्रमाण ग्यारह नव सात पांच तीन एक है । तिन विषैं इहां पूर्व पृथ्वीका अंत पटलका आयुकौं आदि स्थापन कीया तातैं एक एक और मिलाए बारह दश आठ छह च्यारि दोय प्रमाण गच्छ भया तामें एक घटाए क्रमतैं ग्यारह नव सात पांच तीन एक रहे सो ग्यारह नव

पंच तीन एक पटलनि विषै दोय च्यारि तीन सात पांच च्यारि सागर प्रमाण आयु धरै सौ
पटल विषै किंचित् आयु बधै ऐसे ईशानेंद्र कोई द्वितीयादि पृथ्वीनिविषै क्रमतैं दोय साग-
का च्यारि भाग अर च्यारि सागरका नवमां अर तीन सागरका सातवां भाग अर सात सागरका
दसवां भाग अर पांच सागरका तीसरा भाग अर च्यारि सागर प्रमाण पद आया। सो एक पदकौं
पूर्व स्थिति विषै जोडें तिन तिन पटलनि विषै उत्कृष्टायुका प्रमाण आवै है। तहां द्वितीय पृथ्वी
के दोय सागर पूर्वस्थिति विषै दोय सागरका च्यारवां भाग प्रमाण पद जोडें प्रथम पटल विषै
आयु होइ तामें तीन प्रमाण पद जोडें तृतीय पटल विषै आयु होइ ऐसें पद करि बधता बधता
इक इक पटल प्रति आयु जानना। याही प्रकार तृतीयादि पृथ्वीनि विषै क्रमतैं तीन सात दश सत्रह
तीन सागरनि विषै अपना अपना पद जोडें प्रथम पटल विषै आयु होइ। बहुरि अपना अपना
प्रथमादि पटलनिका आयु विषै क्रमतैं अपना अपना पदकौं बधाएं अपना अपना द्वितीयादि पट-
लनि विषै आयु होइ। बहुरि उपरि उपरिका पटल विषै जो उत्कृष्ट आयु कह्या सो एक समय
अधिक होइ सो नीचला नीचला पटल विषै जघन्य आयु हो है। ऐसा तहां प्रथम पटल विषै आयु
पूर्व कोडि वर्ष सागर एक समय अधिक भएं द्वितीय पटल विषै जघन्य आयु हो है। ऐसें ही
अंतपटल पर्यंत जानना ॥ २०० ॥

आगैं तिन नारकीनिके पटल पटल प्रति शरीरकी उचाईका प्रमाण कहै हैं;—

पढमे सत्त ति छक्क उदयं धणुरयणिभंगुलं सेसो।
दुगुणकमं पढमिंदे रयणितियं जाण हाणिचयं ॥ २०१ ॥

प्रथमे सप्त त्रि षट् उदयः धनुरल्पंगुलानि शेषे।
द्विगुणक्रमं प्रथमेंद्रके रत्नित्रयं जानीहि हानिचयम् ॥ २०१ ॥

अर्थ—प्रथम पृथ्वीका अंत पटल विषै शरीरका उत्सेध सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल
प्रमाण है। बहुरि द्वितीयादि पृथ्वीका अंत-अंतपटल विषै शरीरका उत्सेध दूणा दूणा क्रमतैं पांचसै
धनुष पर्यंत जानना। बहुरि प्रथम पृथ्वीका प्रथम इंद्रक विषै रत्नीत्रयं कहिए तीन हाथ उत्सेध है।
सो धरि करि हे मुग्ध तू हानि चय जानि। हानि चयका साधन कैसें सो कहिए है। प्रथम पृथ्वी
विषैं प्रथम पटल विषै तीन हाथ उत्सेध सो तो आदि जानना। अर अंतपटल विषै सात धनुष
तीन हाथ छह अंगुल उत्सेध सो अंत जानना तहां अंतमेंस्यों आदि तीन हाथ घटाएं सात धनुष
छह अंगुल रहे। बहुरि इहां पटल प्रमाण रूप गच्छ तेरह तामें एक घटाएं बारह ताका भाग दीजिए
तहां सात धनुषका अठाईस हाथ हूवा ताकौं बाराका भाग दीएं दोय पाया सो दोय तौ हाथ बहुरि
अवशेष च्यारि हाथ रहे तिनके अंगुल कीएं छिनवे अंगुल भए अर छह अंगुल पूर्वे थे मिलकर
एक सौ दोय अंगुल भए तिनकौं बाराका भाग दीएं आठ अंगुल भए अर अवशेष छह अंगुलका
गच्छ भागकौं छह करि अपवर्तन कीएं एक अंगुलका दूसरा भाग भया ऐसें प्रथम पृथ्वी
विषैं हानि चय दोय हाथ साढा आठ अंगुल प्रमाण आया सो उपरि पटलका उत्सेध विषैं
अपनी अपनी देहादिक जानिका क्रम करि मिलाएं वा हस्तादिक कीएं नीचले पटल

विषैं उत्सेध होइ तहां प्रथम पटलका उत्सेध होइ तहां प्रथम पटलका उत्सेध विषैं चय मिलाएं प्यारि हाथका एक धनुष कीएं द्वितीय पटल विषैं एक धनुष एक हाथ साढा आठ अंगुल प्रमाण उत्सेध हो है। बहुरि यामें सोई चय मिलाएं तृतीय पटल विषैं एक धनुष तीन हाथ तेरह अंगुल उत्सेध हो है। ऐसैंही सर्व पटलनि विषैं जानना। बहुरि द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं पूर्व पृथ्वीका अंत पटल विषैं जो उत्सेध सो तौ आदि अर विवक्षित पृथ्वीका अंत पटल विषैं उत्सेध सो अंत स्थापि अर आदिमेंस्यों अंत घटाईए। बहुरि इहां पूर्व पृथ्वीका अंतपटलकों आदि कथा तातैं विवक्षित पृथ्वी विषैं जितना पटलका प्रमाण तातैं एक अधिक गच्छ करि तामें एक घटाएं विवक्षित पृथ्वी विषैं जितना पटलनिका प्रमाण ताका साकौं भाग दीएं हानिचयका प्रमाण आवै तैसैं द्वितीयादि पृथ्वी विषैं आदि तौ सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल अर अंत पंद्रह धनुष दोय हाथ बारह अंगुल तहां आदिमेंस्यों अंत घटाएं सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल रहे तिनकौं पटल प्रमाण ग्यारह ताका भाग दीएं धनुषादिकके हस्तादिक कीएं दोय हाथ बीस अंगुल अर दोय अंगुलका ग्यारह्यां भाग प्रमाण हानि चय आया। ऐसैं ही तृतीयादि पृथ्वीनिविषैं भी हानि चय जानना। बहुरि उपरि पृथ्वीका अंतपटलका उत्सेध विषैं अपना अपना चय मिलाएं अपने अपने प्रथम पटल विषैं उत्सेध होइ। बहुरि अपना अपना प्रथमादि पटलनिविषैं क्रमतैं अपना अपना चय मिलाएं अपनी अपनी द्वितीयादि पटलनि विषैं उत्सेध होइ। जैसैं प्रथम पृथ्वीका अंतपटलका उत्सेध सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल तामें दोय हाथ बीस अंगुल दोय अंगुलका ग्यारह्यां भाग मिलाएं द्वितीय पृथ्वीका प्रथम पटल विषैं आठ धनुष दोय हाथ दोय अंगुल अर दोय अंगुलका ग्यारह्यां भाग प्रमाण उत्सेध भया। यामेंस्यों चय मिलाएं द्वितीय पटल विषैं उत्सेध होइ ऐसैं अंतपटल पर्यंत जानना। बहुरि जैसैं द्वितीय पृथ्वी विषैं विधान कह्या तैसैं ही तृतीयादि पृथ्वीनिविषैं उत्सेध जानना ॥ २०१ ॥

आगैं नारकीनके अवधिज्ञानका विषयभूत क्षेत्रका प्रमाण कहै हैं;—

रयणप्पहपुढवीए चउरो कोसा य ओहिरेणं तु ।
तेण परं पुढवी कोसद्धविवड्ढियं होदि ॥ २०२ ॥

रत्नप्रभापृथिव्यामवधयः क्रोशाश्चत्वारि क्षेत्रे तु ।
ततः परं प्रतिपृथिवि क्रोशार्धविवर्धितं भवति ॥ २०२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभा पृथिवीके नारकीनि कौं अवधिका क्षेत्र है अवधिज्ञान करि जेते क्षेत्र जानै। तहां जे पृथ्वी पृथ्वी प्रति आदि आदि कोस कहि है सो द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं अपना अपना आदि कोस अर एक कोस अवधिक्षेत्र जानना ॥ २०२ ॥

आगैं आगले तिसरा दोय गाथा करि तिस कहै हैं,—

तिरयाणं तिरयाणं आवलियाए असंखभागाणं ।
अवरवरे उवरुवरि संखेज्जगुणं तु विच्चालं ॥ २०३ ॥

णिरयतिरयेसु सण्णिस्सो कम्मभूमिसण्णीसु ।
सव्वेसु उवज्जो सम्मुच्छिमएसु विगिविगले ॥ २०३ ॥

अर्थ—सर्व निकस्या हुवा जीव मनुष्य विना संज्ञीविषै कर्मभूमि संज्ञी पर्याप्त गर्भज विषै ही उपजै । भोगभूमि असंज्ञी लब्ध्यपर्याप्तक सम्मूर्छनविषै न उपजै । बहुरि सकल पृथ्वीका निकस्या जीव तैसा कर्मभूमिका संज्ञी पर्याप्तक गर्भज तिर्यंच ही विषै उपजै मनुष्य भी न होइ ॥२०३॥

आगै मनुष्य विषै इत्यादि नियम उपजनेका कह्या तहां बहुत सर्वत्र ही उपजै इसी आशंका होय तो कहै है;—

णिरयचरो णरितिरयं चक्कधरो तुरियपहुदिणिस्सरिदो ।
तिरयचरमंगसंजद दिस्सणिरयं णरितिरयेण ॥ २०४ ॥
निरयचरो नरितिरयं चक्रधरस्तु तुरीयप्रभृतिनिःसृतः ।
तीर्थचरमांगसंयता: मिश्रत्रयं नरितिरयेन ॥ २०४ ॥

अर्थ—निरयचर: कहिए नरकतैं निकस्या जीव सो नारायण बलभद्र चक्रवर्ती न होइ । बहुरि चौथी आदि पृथ्वी निकस्या तीर्थंकर न होइ । पांचवी आदि पृथ्वीतैं निकस्या चरम शरीरी न होइ । छठी आदि पृथ्वी निकस्या संयम संयमी न होइ सातवी पृथ्वीतैं निकस्या मिश्रत्रय कहिए मिश्र वा असंयत वा देशसंयत न होइ नियम करि । इहां असंयतपना निषेध्या तातैं सासादनका भी अभाव जानना ॥ २०४ ॥

आगै नरकतैं आया जीवनिका पृथ्वी प्रति नियम कहै है;—

अमणसरिसपविहंगमचउप्पयोरिसिथीण मच्छमणुवाणं ।
पढमादिसु उप्पत्ती अट्ठवारादो दु दोण्णिवारोत्ति ॥ २०५ ॥
अमनस्कसरीसृपविहंगमचतुष्पदोरसिस्त्रीणां मत्स्यमनुष्याणाम् ।
प्रथमादिषु उत्पत्तिः अष्टवारतस्तु द्विवार इति ॥ २०५ ॥

अर्थ—अमनस्क कहिए असंज्ञी पंचेंद्री अर सरीसृप कहिए इकलास गोधेरे आदि जीव अर विहंगम कहिए भेरंड आदि पंखी अर चतुष्पद कहिए सर्प अर सिंह कहिए नाहर अर स्त्री कहिए मनुषणी अर मत्स्य मनुष्य कहिए मोछला वा मनुष्य इनकै प्रथमादि पृथ्वीनिविषै अनुक्रमतैं निरंतर उपजनी आठ वारतैं लगाय दोय वार पर्यंत जाननी । तहां असनस्क प्रथम नरकि जाय तहांस्यौं निकसि संज्ञी होइ मरिकरि बहुरि इहां ही असंज्ञी होइ मरिकरि प्रथम नरक जाय तब एक वार होय । ऐसे असंज्ञी उपजै आठ वार प्रथम नरकि जाय । नरकका निकस्या असंज्ञी न होइ तातैं बीचि एक संज्ञी पर्यायका एक अंतर जानना । बहुरि सरीसृपादिकविषै एक अंतर न ग्रहण करना । सरीसृप दूसरे नरकि जाय तहांस्यौं निकसि सरीसृप होइ फेरि दूसरे नरकि जाय ऐसैं निरंतर सातवार जाइ । ऐसे ही निरंतर विहंगम तीसरे नरकि छह वार । पक्षी चौथे नरकि पांच वार । सिंह पांचवें नरकि च्यारि वार स्त्री छठे नरकि तीन वार निरंतर उपजै । बहुरि मत्स्य मनुष्य एक अंतर करि सातवें नरकि दोय वार उपजै तहां मत्स्य सातवें नरकि जाय तहांस्यौं निकसि

गर्भज तिर्यंच होइ मरि करि फेरि मत्स्य होइ सातवें नरकि जाय। इहां नरकका निकस्या सन्मूर्छन होइ। मत्स्य सन्मूर्छन हैं तातैं एक अंतर कह्या। बहुरि ऐसैं ही मनुष्य विषैं एक अंतर जान जातैं सातवां नरकका निकस्या मनुष्य न होइ तातैं बीचिमें एक अंतर कह्या। ऐसैं दोय बार जना जानना। इहां जीवनिके उपजनेका भी नियम जानना। असंज्ञी प्रथम पृथ्वीविषैं ही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं न उपजै। सरीसृप दूसरी पृथ्वी पर्यंत ही उपजै तृतीयादि पृथ्वी नि उपजै ऐसैं ही विहंगादिकका नियम जाननां। बहुरि उत्कृष्ट जेतीवार उपजै सो नियम जान असंज्ञी आठ वार ही निरंतर नरक जाय नवमी वार न जाय इत्यादि नियम जाननां ॥ २०५ ॥

इहां असंज्ञी आदिकनिकें एक वार अंतर होते भी निरंतर ही कहिए है;—

चउवीसमुहुत्तं पुण सत्ताहं पक्खमेक्कमासं च।
दुगचदुछम्मासं च य जम्मणमरणंतरं णिरये ॥ २०६ ॥

चतुर्विंशतिर्मुहूर्ताः पुनः सप्ताहानि पक्षः एकमासश्च।
द्विकचतुःषण्मासाश्च च जननमरणान्तरं निरये ॥ २०६ ॥

अर्थ—प्रथमादि पृथ्वीनिविषैं क्रमतैं चौबीस मुहूर्त अर सात दिन अर एक पक्ष अर मास अर दोय मास अर च्यारि मास अर छह मास जन्म अर मरण विषैं अंतर जाननां। भावार्थ प्रथम पृथ्वीविषैं कोई जीव न उपजै तौ उत्कृष्टपनैं चौबीस मुहूर्त पर्यंत न उपजै न मरै चौबीस पीछैं कोई उपजै ही उपजै वा कोई मरै ही मरै ऐसैं ही द्वितीयादि पृथ्वीविषैं जाननां ॥ २०६

आगैं तिन नारकीनिके दुःखका आधिक्य कहै हैं;—

अच्छिणिमीलणमेत्तं णत्थि सुहं दुक्खमेव अणुबद्धं।
णिरए णेरइयाणं अहोणिसं पच्चमाणाणं ॥ २०७ ॥

अक्षिनिमीलनमात्रं नास्ति सुखं दुःखमेव अनुबद्धम्।
निरये नैरयिकाणां अहर्निशं पच्यमानानाम् ॥ २०७ ॥

अर्थ—नेत्रका टिमकारनां मात्र भी सुख नाहीं है दुःख ही निरंतर संबंधरूप पर्यो नरक विषैं नारकी जीवनिकैं। कैसे हैं नारकी। अहर्निशं कहिए निरंतर दुःखअग्निकरि पच्यमान भावार्थ—मिथ्यात्व हिंसादि रौद्रध्यान बहुत आरंभ परिग्रह इत्यादि पापनिकरि जीव नरकि तहां ऐसे दुःख पावै हैं। तातैं मिथ्यात्वादि पापनिका त्याग ही करनां योग्य है ॥ २०७ ॥

॥ इति नरकके स्वरूपका वर्णन सम्पूर्ण भया ॥

इति श्रीनेमिचन्द्राचार्यविरचिते त्रिलोकसारे लोकसामान्याधिकारः ॥ १ ॥

भवनाधिकार ॥ २ ॥

अथ लोकका सामान्य वर्णन करि 'भवणव्वेंतर' इत्यादि पूर्वोक्त गाथासूत्र करि पंच अधिकार सूचन कीए तिन विषैं तैसें ही अनुक्रमकरि भवनाधिकारकों आरंभ करता संता तिन भवनिका आधारभूत जो रत्नप्रभा पृथ्वी बहुरि तीह रत्नप्रभा पृथ्वीकी सहचारिणी जे शर्करा प्रभा आदि पृथ्वी बहुरि तिन पृथ्वीनिविषैं प्राप्त जे नरकनिके पटल बहुरि तिन पटलनि प्राप्त जे नारकी तिनका आयु आदिक इन सबनिकों प्रसंग पाइ व्याख्यान करि विवक्षित प्रथम भवनाधिकार ताकों कहनेकी है इच्छा जाकें ऐसा आचार्य सो तीह भवनाधिकारकी आदि विषैं भवनलोक संबंधी जे चैत्यालय तिनकों वंदना करता संता ऐसा मंगल सूत्र कहै है;—

भवणेसु सत्तकोडी बावत्तरिलक्ख होंति जिणगेहा।
भवणामरिंदमहिया भवणसमा ताणिं वंदामि ॥ २०८ ॥

भवनेषु सप्तकोट्यः द्वासप्ततिलक्षाणि भवंति जिनगेहानि।
भवनामरेंद्रमहितानि भवनसमानि तानि वंदे ॥ २०८ ॥

अर्थ—भवननिविषैं सात कोडि बहत्तरि लाख जिन मंदिर हैं भवनवासी देव आ तिनके इंद्रनिकरि पूजनीक हैं। बहुरि भवनवासी देवनिके जे ते भवन हैं तिनहींके समान संख्याकों धरै हैं। जातैं एक एक भवनविषैं एक एक चैत्यालय है। तिन चैत्यालयनिकों मैं वंदौं हौं ॥ २०८ ॥

आगैं भवनिवासी देवनिका कुलभेद आदि तीन गाथाकरि कहैं हैं;—

असुरा णागसुवण्णा दीवोदहिविज्जुथणिददिसअग्गी।
वादकुमारा पढमे चमरो वइरोयणो इंदो ॥ २०९ ॥

असुरो नागसुपर्णो द्वीपोदधिविद्युत्स्तनितदिगग्नयः।
वातकुमारः प्रथमे चमरो वैरोचन इंद्रः ॥ २०९ ॥

अर्थ—असुरकुमार १ नागकुमार १ सुपर्णकुमार १ द्वीपकुमार १ उदधिकुमार १ विद्युत्कुमार १ स्तनितकुमार १ दिक्कुमार १ अग्निकुमार १ वातकुमार १ ऐसें भवनवासी देवनिके दश कुल हैं। तिनि विषैं पहले असुरकुमार कुलविषैं चमर अर वैरोचन ए दोय इंद्र हैं ॥ २०९ ॥

भूदाणंदो धरणाणंदो वेणू य वेणुधारी य।
पुण्णवसिट्ठ जलप्पह जलकंतो घोसमहघोसो ॥ २१० ॥

भूतानंदो धरणानंदः वेणुश्च वेणुधारी च।
पूर्णवशिष्टौ जलप्रभः जलकांतः घोषमहाघोषौ ॥ २१० ॥

अर्थ—नागकुमार कुलविषैं भूतानंद धरणानंद ए दोय इंद्र हैं । सुपर्णकुमार कुल विषै वेणु अर वेणु अर वेणुधारी दोय इंद्र हैं। द्वीपकुमार कुल विषैं पूर्ण वशिष्ट ए दोय इंद्र हैं। उदधिकुमार कुल विषैं जलप्रभ जलकांत ए दोय इंद्र हैं । विद्युत्कुमार कुल विषैं घोष महाघोष ए दोय इंद्र हैं ॥ २१० ॥

हरिसेणो हरिकंतो अमिदगदी अमिदवाहणग्गिसिही ।
अग्गीवाहणणामा वेलंबपभंजणा सेसे ॥ २११ ॥ जुम्मं ।

हरिषेणः हरिकांतः अमितगतिः अमितवाहनः अग्निशिखी ।
अग्निवाहननामा वेलंबप्रभंजनौ शेषे ॥ २११ ॥ युग्मं ।

अर्थ—स्तनितकुमार कुल विषैं हरिषेण हरिकांत ए दोय इंद्र हैं । दिक्कुमार कुल विषैं अमितगति अमितवाहन ए दोय इंद्र हैं । अग्निकुमार कुल विषैं अग्निशिखी अग्निवाहन नाम ए दोय इंद्र हैं । वातकुमार कुलविषैं वेलंब प्रभंजन ए दोय इंद्र हैं । ऐसैं शेषनागादि कुल विषैं इंद्र जानने ॥ २११ ॥

आगैं तिनकैं परस्पर ईर्षाका स्थान कहैं हैं;—

चमरो सोहम्मेण य भूदाणंदो य वेणुणा तेसिं ।
विदिया विदियेहिं समं ईसंति सहावदो णियमा ॥ २१२ ॥

चमरः सौधर्मेण च भूतानन्दश्च वेणुना तेषां ।
द्वितीया द्वितीयैः समं ईर्ष्यंति स्वभावतो नियमात् ॥ २१२ ॥

अर्थ—चमर इंद्र तौ सौधर्म इंद्र सहित अर भूतानंद इंद्र वेणु इंद्र सहित अर तिनके द्वितीया जे दूसरे वैरोचन और धरणानंद ते द्वितीयैः समं कहिए दूसरे ईशान इंद्र अर वेणुधारी इंद्र तिन सहित ईर्ष्यन्ति कहिए ईर्षा करैं हैं । स्वभाव ही तैं कारण विना ही नियम करि इनकै ऐसैं स्पर्द्धा हो है ॥ २१२ ॥

आगैं तिन असुरादिकनिके चिन्ह कहैं हैं;—

चूडामणिफणिगरुडं गजमयरं वड्ढमाणगं वज्जं ।
हरिकलससस्सं चिंधं मउले चेत्तमहुमाइ धया ॥ २१३ ॥

चूडामणिफणिगरुडं गजमकरं वर्धमानकं वज्रं ।
हरिकलशाश्वं चिह्नं मुकुटे चैत्यद्रुमा अथ ध्वजाः ॥ २१३ ॥

अर्थ—असुर कुमारादिकनिकैं अनुक्रमतैं चूडामणि रत्न अर सर्प अर गरुड अर हाथी अर मगरा अर सांकल अर वज्र अर सिंह कलश अर घोडा मुकुट विषैं चिन्ह जानना । मुकुट विषैं जो आकार है सो तिनका चिन्ह है । अथवा जुदी जुदी जातिके चैत्यवृक्ष बहुरि ध्वजा तिन असुरादिकनिका चिन्ह है ॥ २१३ ॥

आगैं तिनके चैत्यवृक्षनिके भेदनिकों कहैं हैं;—

अस्सत्थसत्तसामलिजंबूवेतसकदंबकपियंगू।
सिरिसं पलासरायदुमा य असुरादिचेयतरू ॥ २१४ ॥
अश्वत्थसप्तच्छदशाल्मलिजंबूवेतसकदंबकप्रियंगवः।
शिरीषः पलाशराजद्रुमौ च असुरादिचैत्यतरवः ॥ २१४ ॥

अर्थ—अश्वत्थ वृक्ष अर सप्तपर्ण वृक्ष अर शाल्मली वृक्ष अर जंबू वृक्ष अर वेतस वृक्ष अर कदंब वृक्ष अर प्रयंगु वृक्ष अर सरिसों वृक्ष अर पलाश वृक्ष अर राजद्रुम कहिए किरमाला वृक्ष अनुक्रमतैं असुरकुमारादिकनिके चैत्यवृक्ष हैं ॥ २१४ ॥

आगैं चैत्यवृक्षनिके सार्थिकपनांकों दृढ करैं हैं;—

चेत्ततरूणं मूले पत्तेयं पडिदिसम्हि पंचेव।
पलियंकठिया पडिमा सुरचिया ताणि वंदामि ॥ २१५ ॥
चैत्यतरूणां मूले प्रत्येकं प्रतिदिशं पंचैव।
पर्यंकस्थिताः प्रतिमाः सुरार्चिताः ताः वंदे ॥ २१५ ॥

अर्थ—चैत्यवृक्षनिके मूल विषैं प्रत्येक प्रतिदिशा विषैं पांच पांच प्रतिमा पर्यंक आसन करि स्थित देवनिकरि पूजित हैं। तिन प्रतिमानिकों वंदों हों। भावार्थ। एक एक चैत्यवृक्ष नीचैं एक एक दिशाविषैं पांच पांच जिनबिंब पंक्ति करि विराजमान हैं। तातैं वृक्षनिकों चैत्यवृक्ष कहिए हैं ॥२१५॥

आगैं तिन प्रतिमानिके आगैं निपजे जु मानस्तंभ तिनका स्वरूप कहैं हैं:;—

पडिदिसयं णियसीसे सगसगपडिमाजुदा विराजंति।
तुंगा माणत्थंभा रयणमया पडिदिसं पंच ॥ २१६ ॥
प्रतिदिशं निजशीर्षे सप्तसप्तप्रतिमायुता विराजंते।
तुंगा मानस्तंभा रत्नमया प्रतिदिशं पंच ॥ २१६ ॥

अर्थ—दिशा दिशा प्रति अपने उपरिम भागविषैं सात सात प्रतिमा संयुक्त उत्तुंग रत्नमई मानस्तंभ दिशादिशा प्रति पांच पांच विराजैं हैं ॥ भावार्थ। एक एक प्रतिमाके आगैं एक एक मानस्तंभ हैं मान दूरि करनेकों समर्थ ऊंचा थांभा है। सो चैत्यवृक्षकी एक एक दिशा प्रति पांच पांच मानस्तंभ भए। बहुरि तिन मानस्तंभनिके उपरि एक एक दिशा प्रति सात सात जिनबिंब विराजैं हैं ॥ २१६ ॥

आगैं भवनवासी इंद्रनिके भवननिकी संख्या जणावता सूत्र कहैं हैं;—

चोत्तीसं चउदालं अडतीसं छत्तुवि ताल पण्णासं।
चउचउविहीण ताणि य इंदाणं भवणलक्खाणि ॥ २१७ ॥
चतुस्त्रिंशच्चतुश्चत्वारिंशदष्टात्रिंशत् षट्सु अपि चत्वारिंशत् पंचाशत्।
चतुश्चतुर्विहीनानि तानि च इंद्राणां भवनलक्षाणि ॥ २१७ ॥

अर्थ—चौंतीस अर चवालीस अर अठतीस अर छहनि विषैं चालीस अर पैंचास ए उत्तर इंद्रनि प्रति च्यारि च्यारि घाटि ऐसैं इंद्रनिके भवननिके लक्ष जानने। भावार्थ। एक एक कुल

विषैं दोय दोय इंद्र कहे थे तहां दोऊनि विषैं पहलैं जाका नाम कह्या सो दक्षिणेंद्र है अर पीछैं जाका नाम कह्या सो उत्तरेंद्र है । दक्षिण दिशाके भवन विषैं जाका वास पाईए सो दक्षिणेंद्र जाननां । अर उत्तर दिशाके भवन विषैं जाका वास पाईए सो उत्तरेंद्र जाननां । तहां असुर कुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकैं तौ चौतीस लाख भवन हैं । उत्तरेंद्रकैं तीस लाख हैं मिलि करि चौंसठि लाख भए । बहुरि नागकुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकैं तौ चवालीस लाख हैं उत्तरेंद्रके चालीस लाख हैं मिलकर चौरासी लाख भवन भए । बहुरि सुपर्णकुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकैं अटतीस लाख हैं अर उत्तरेंद्रकैं चौतीस लाख हैं मिलिकरि बहत्तरि लाख भवन भए । द्वीप कुमारादि छह कुलनि विषैं एक एक कुल विषैं दक्षिणेंद्रके चालीस लाख हैं उत्तरेंद्रकैं छत्तीस लाख हैं मिलिकरि छिहत्तरि लाख भवन भए । बहुरि वातकुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकैं पंचास लाख हैं उत्तरेंद्रकैं छियालीस लाख हैं मिलिकरि छिनवै लाख भवन भए ऐसैं दशौं कुलके सर्व भवन सात कोडि बहत्तरि लाख जाननें ॥ २१७ ॥

आगैं तिन भवननिका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

ससुगंधपुप्फसोहियरयणधरा-रयणभित्ति णिच्चपहा ।
सव्विंदियसुहदाइहिं सिरिखंडादिहिं चिदा भवणा ॥ २१८ ॥

ससुगंधपुष्पशोभितरत्नधरा रत्नभित्तयः नित्यप्रभाः ।
सर्वेंद्रियसुखदायिभिः श्रीखंडादिभिश्चिता भवनाः ॥ २१८ ॥

अर्थ—सुगंध फूलनिकरि संयुक्त सोभायमान रत्नमयी जिनकी भूमि हैं । बहुरि रत्नमई ही जिनकी भीति हैं नित्य प्रकाश संयुक्त हैं सब इंद्रियनिकों सुखदायक जे चंदनादि वस्तु तिनकरि सिंचित हैं ऐसे भवनवासी देवनिके भवन हैं ॥ २१८ ॥

आगैं तिन भवननिविषैं जे देव हैं तिनका ऐश्वर्य कहैं हैं;—

अट्ठगुणिड्ढिविसिट्ठा णाणामणिभूसणेहिं दित्तंगा ।
भुंजंति भोगमिट्ठं सयपुव्वतवेण तत्थ सुरा ॥ २१९ ॥

अष्टगुणर्द्धिविशिष्टाः नानामणिभूषणैः दीप्तांगाः ।
भुंजंति भोगमिष्टं स्वकपूर्वतपसा तत्र सुराः ॥ २१९ ॥

अर्थ—तहां जे देव हैं ते अणिमा महिमा आदि आठ गुण ऋद्धि करि विशिष्ट हैं बहुरि नाना प्रकार मणिका आभूषणनि करि प्रकासमान है अंग जिनका ऐसे हैं । ते अपनां पूर्व कीया तपका फल करि इष्टभोगकों भोगवैं हैं ॥ २१९ ॥

आगैं ते भवन भूमिगृहकी उपमा धरैं हैं जैसैं इहा पृथ्वीविषैं मंदिर बनाईए ताका नाम प्रवृत्ति विषैं तहखाना कहिए है । तैसैं खरभाग पंकभागरूप रत्नप्रभा पृथ्वीविषैं भवन जानने । इहा प्रश्न । जो नरक बिल भी ऐसैं ही पृथ्वी विषैं कहे थे तहां बिल संज्ञा भई इहा भवन संज्ञा भई सो कारण कहा । ताका समाधान । जैसे इहा पृथ्वी विषैं तिर्यंचादिक पापी जीवनिके स्थान तिनकों बिल कहिए हैं । अर पुन्यवान मनुष्यनिके रहनेके स्थान तिनका भूमिगृह कहिए है । तैसैं नारकी

पाछी जानिये, सर्व ही व्यंतरनिके तिष्ठने योग्य पुरुषवान देवनिके रहनेके स्थानकनिकों भवन कहे। बहुरि प्रथम। जो भवन विस्तारिका वर्णन किये हुते भूमिगृहका दृष्टांत कहेकों दीया तिसनिकी ऊंचाई दीखावने दीया था। ताका समाधान। जो भूमिगृहका दृष्टांत करि पटहनिका वा इंद्रकादि विन्यास कीजे पाइयतिए है ताही भूमिगृहका दृष्टांत दिया था।

ऐसे भूमिगृहकी उपमा धरे हु भवन तिनका व्यासादिक कहे हैं;—

जोयणसंखासंखाकोडी तिण्हित्थडं तु चउरस्सा।
तिगयं चरमं मज्झं पडि सयतुंगकूडं च ॥ २२० ॥

योजनासंख्यातसंख्यकोट्यः तिस्रस्तारस्तु चतुरस्राः।
त्रितयं बाहल्यं मध्यं प्रति शततुंगकूटश्च ॥ २२० ॥

अर्थ—जघन्य तौ संख्यात कोडि योजन अरु उत्कृष्ट असंख्यात कोडि योजन प्रमाण तिन भवननिका विस्तार है। चौडाई वा लंबाईका इतना प्रमाण है। बहुरि ते भवन चौकोर हैं। बहुरि तिनका तीनसै योजन बाहल्य है। भूमितैं दोनि पर्वत इतने ऊंचे हैं। बहुरि एक एक भवन प्रति मध्यविषै सौ योजन ऊंचा एक पर्वत है। ताके ऊपरि चैत्यालय है ॥ २२० ॥

आगै तिन भवननिका स्थानकनिकों दोय गाथानि करि कहे हैं;—

हेट्ठा अप्पमहिय्यमज्झिमभवणामराण भवणाणि।
भूमीदोपो इगिदुगपादालसहस्सइगिलक्खे ॥ २२१ ॥

व्यंतराणां अल्पमहर्द्धिकमध्यमभवनामराणां भवनानि।
भूमितोऽधः एकद्विकद्वाचत्वारिंशत्सहस्रएकलक्षाणि ॥ २२१ ॥

अर्थ—चित्रा भूमितैं दोनाय नीचे नीचे एक हजार योजन जाइ करि तौ व्यंतरनिके आवास हैं। बहुरि दोय हजार योजन जाय अल्प ऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं। बहुरि बियालीस हजार योजन जाइ महाऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं। बहुरि एक लक्ष योजन जाइ मध्यम ऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं ॥ २२१ ॥

रयणप्पहपंकड्ढे भागे असुराण होंति आवासा।
भोम्मेसु रक्खसाणं अवसेसाणं खरे भागे ॥ २२२ ॥

रत्नप्रभापंकार्द्धे भागे असुराणां भवंति आवासाः।
भौमेषु राक्षसानां अवशेषाणां खरे भागे ॥ २२२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभाका पंकभाग विषै असुरकुमारनिके भवन हैं। बहुरि व्यंतरनि विषै राक्षसनिके तहां ही आवास है। बहुरि अवशेष नागकुमारादि भवनवासीनिके भवन वा राक्षस बिना सात जातिके व्यंतरनिके आवास खरभागविषै पाईए हैं ॥ २२२ ॥

आगै देवनिके इंद्रादिक भेद कहे हैं;—

इंदपडिंददिगिंदा तेत्तीससुरा समाणतणुरक्खा।
परिसत्तयआणीया पइण्णगभियोगकिब्भिसिया ॥ २२३ ॥

इंद्रप्रतींद्रदिगींद्राः त्रयस्त्रिंशत्सुराः सामानिकतनुरक्षकौ ।
परिषत्त्रयानीकौ प्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाः ॥ २२३ ॥

अर्थ—इंद्र १ प्रतींद्र १ दिगींद्र कहिए लोकपाल १ त्रायस्त्रिंशदेव १ सामानिक १ तनुरक्षक १ तीन प्रकार पारिषत् १ अनीक १ प्रकीर्णक १ आभियोग्य १ किल्विषिक १ ऐसैं भेद जाननें ॥ २२३ ॥

आगैं इन इंद्रादि पदवीनिका दृष्टांत कहैं हैं;—

रायजुवतंतराए पुत्तकलत्तंगरक्खवरमज्झे ।
अवरे तंडे सेणापुरपरिजणगायणेहि समा ॥ २२४ ॥

राजयुवतंत्रराजैः पुत्रकलत्रांगरक्षवरमध्येन ।
अवरेण तंडेण सेनापुरपरिजनगायकैः समाः ॥ २२४ ॥

अर्थ—जैसैं इहां राजा तैसैं इंद्र हैं । बहुरि जैसैं युवराजा तैसैं प्रतींद्र हैं । बहुरि जैसैं मंत्रादि राजा कहिए सेनापति तैसैं लोकपाल हैं । बहुरि जैसैं राजाका पुत्र तैसैं तेतीस देव ही हैं ते त्रायस्त्रिंशत्क हैं । बहुरि जैसैं राजाकैं कलत्र तैसैं इंद्रकीसी समानताकों धरैं सामानिक हैं । बहुरि जैसैं राजाके अंगरक्षक तैसैं तनुरक्षक हैं । बहुरि जैसैं राजाके सभाविषैं तिष्ठने योग्य होहिं तैसैं पारिषत् हैं । ते तीन प्रकार—तहां जैसैं उत्कृष्ट मांहिली सभा विषैं तिष्ठने योग्य तैसैं अंतः पारिषद जानने । बहुरि जैसैं मध्य बीचिकी सभा विषैं तिष्ठने योग्य तैसैं मध्य पारिषद जाननें बहुरि जैसैं जघन्य बाह्य सभाविषैं तिष्ठने योग्य तैसैं बाह्य पारिषद जाननें । ऐसैं तंडसेन कहिए तीन प्रकार सभा करि समान जाननें । बहुरि जैसैं राजाकैं हस्ती आदि सेना ऐसैं अनीक हैं अनीक जातिके देव ही हस्ती आदि आकाररूप अपने नियोगतैं हो हैं । बहुरि जैसैं पुरजन व्यापारी तैसैं प्रकीर्णक हैं । बहुरि जैसैं परिजन दास आदि तैसैं आभियोग्य हैं । बहुरि जैसैं गायक गावनें आदि क्रियातैं आजीविकाके करन हारे तैसैं किल्विषक हैं । ऐसैं देवनिके भेद जाननें ॥ २२४ ॥

आगैं च्यारि प्रकार देवनि विषैं इंद्रादिक भेदनिके संभवनेका विधान कहैं हैं;—

वेंतरजोयिसियाणं तेत्तीससुरा ण लोयपाला य ।
भवणे कप्पे सव्वे इवंति अहमिंदया तत्तो ॥ २२५ ॥

व्यंतरज्योतिष्काणां त्रयस्त्रिंशत्सुरा न लोकपालाः च ।
भवने कल्पे सर्वे भवंति अहमिंद्रकाः ततः ॥ २२५ ॥

अर्थ—व्यंतर अर ज्योतिषी इनकैं तौ त्रायस्त्रिंशत् देव बहुरि लोकपाल ए दोय भेद नाहीं हैं । बहुरि भवनवासी अर स्वर्गवासीनि विषैं सर्व पूर्वोक्त भेद हैं । बहुरि तातैं परैं स्वर्गनिके उपरि अहमिंद्र हैं ते सर्व ही समान हैं । हीनाधिकपना तहां नाहीं है ॥ २२५ ॥

आगैं भवनवासीनिविषैं इंद्रादिक पारिषत् तीनप्रकार पर्यन्त देवनिकी संख्या तीन गाथानिकरि कहै हैं,—

इंदसमा हु पडिंदा सोमो यम वरुण तह कुवेरा य।
पुव्वादिलोयवाला तेत्तीससुरा हु तेत्तीसा॥ २२६॥
इंद्रसमाः खलु प्रतींद्राः सोमो यमो वरुणस्तथा कुवेरश्च।
पूर्वादिलोकपालाः त्रयस्त्रिंशत्सुराः हि त्रायस्त्रिंशत्॥ २२६॥

अर्थ—इंद्रके समान प्रतींद्र हैं। एक इंद्र एक प्रतींद्र जानना। बहुरि पूर्वादि दिशानिके च्यारि लोकपाल हैं। सोम १ यम १ वरुण १ कुबेर १ तिनके नाम हैं। बहुरि त्रायस्त्रिंशत् देव तेतीस हैं॥ २२६॥

चमरतिये सामाणियतणुरक्खाणं पमाणमणुकमसो।
अडसोलकदिसहस्सा चउसोलसहस्सहीणकमा॥ २२७॥
चमरत्रिके सामानिकतनुरक्षाणां प्रमाणमनुक्रमशः।
अष्टषोडशकृतिसहस्राणि चतुःषोडशसहस्रहीनक्रमाणि॥ २२७॥

अर्थ—चमर आदि तीन इंद्रनिविषैं सामानिक अर तनुरक्षक अनुक्रमतैं आठ अर सोलहका वर्ग प्रमाण हजार बहुरि च्यारि हजार अर सोलह हजार घटता क्रमतैं जानने। भावार्थ-चमरेंद्रके सामानिक देव तौ चौसठि हजार हैं। अर तनुरक्षक दोय लाख छप्पन हजार हैं। बहुरि वैरोचन इंद्रकें सामानिक साठि हजार हैं। अर तनुरक्षक दोय लाख चालीस हजार हैं। बहुरि भूतानंद इंद्रकें सामानिक छप्पन हजार हैं। तनुरक्षक दोय लाख चौईस हजार हैं॥ २२७॥

पण्णसहस्स बिलवरा सेसे तहाण परिसमादिल्लं।
अडछव्वीसं छचउसहस्स दुसहस्सवड्ढिकमा॥ २२८॥
पंचाशत्सहस्राणि द्विलेशे शेषे तत्स्थाने परिषदादिमा।
अष्टषड्विंश षट्चतुःसहस्राणि द्विसहस्रवृद्धिक्रमाः॥ २२८॥

अर्थ—शेष जे अवशेष नागकुमारादिकके सप्तह इंद्र तिनविषैं सामानिक पैंचास हजार हैं। तनुरक्षक दोय लाख हैं। बहुरि तिनही स्थानकनिविषैं परिषत् कहिए है। आदिकी अंतः परिषत् चमरेंद्रकें अठाईस हजार, वैरोचनकें छब्बीस हजार, भूतानंदके छह हजार, अवशेष इंद्रनिकें च्यारि हजार हैं। बहुरि अंतः परिषत्का प्रमाणतैं मध्य परिषत् दोय दोय हजार बधते जानने। बहुरि मध्य परिषत्तैं बाह्य परिषत् दोय दोय हजार बधते जानने॥ २२८॥

आगैं तीनो परिषत्का विशेष नाम कहैं हैं;—

पढमा परिसा समिदा बिदिया चंदोत्ति णामदो होदि।
तदिया जदुअभिधाणा एवं सव्वेसु देवेसु॥ २२९॥
प्रथमा परिषत् समित् द्वितीया चंद्रा इति नामतो भवति।
तृतीया जत्वभिधाना एवं सर्वेषु देवेषु॥ २२९॥

अर्थ—प्रथम परिषत् समित् ऐसे नाम धरै है। दूसरी चंद्रा ऐसे नामतैं युक्त है। तीसरी जतु ऐसे नाम युक्त है। ऐसें ही सर्व देवनिविषैं सभानिके नाम जानने॥ २२९॥

अब आनीकके भेद अर तिनकी संख्या कहैं हैं;—

सत्तेव य आणीया पत्तेयं सत्तसत्तकक्खजुदा।
पढमं ससमाणसमं तद्दुगुणं चरिमकक्खोत्ति ॥ २३० ॥

सप्तैव च आनीकाः प्रत्येकं सप्तसप्तकक्षयुताः।
प्रथमं स्वसामानिकसमं तद्द्विगुणं चरमकक्षं इति ॥ २३० ॥

अर्थ—सात ही आनीकके भेद हैं तहां एक एक भेद विषैं सात सात कक्ष कहिए पैंड हैं। तहां प्रथम आनीकका कक्षविषैं प्रमाण अपनैं अपनैं सामानिक देवनिके समान है। तातैं दूणां दूणां प्रमाण अंतका कक्षविषैं पर्यंत जाननां। तहां धर्मेंद्रकैं भैंसानिकी प्रथम फौजविषैं चौसठी हजार भैंसे हैं। तातैं दूणें दूसरी फौजविषैं भैंसे हैं। ऐसैं सातई फौज पर्यंत दूणें दूणें जाननें। बहुरि ऐसैं ही इतनें इतनें ही घोटकादिक जाननें। याही प्रकार औरनिकौं यथा संभव प्रमाण जानि लेना ॥ २३० ॥

आगैं गुणकाररूप उत्तरका अनुक्रम करि भया जो सातौं आनीकका प्रमाण ताके ल्यावनेंकौं जहां स्थान स्थान प्रति गुणकार होइ ताके जोड देनेंका कारणसूत्र कहैं हैं;—

पदमेत्ते गुणयारे अण्णोण्णं गुणिय रूवपरिहीणे।
रूऊणगुणेण हिए मुहेण गुणियम्मि गुणगणियं ॥ २३१ ॥

पदमात्रान् गुणकारान् अन्योन्यं गुणयित्वा रूपपरिहीणे।
रूपोनगुणेन हृते मुखेन गुणिते गुणगणितम् ॥ २३१ ॥

अर्थ—स्थानकनिका प्रमाणरूप जो गच्छ सो पद कहिए अर स्थान स्थान प्रति जितनेंका गुणकार सो गुणकार कहिए सो पदका प्रमाणके समान गुणकार मांडि तिनकौं परस्पर गुणिए बहुरि जो प्रमाण होइ तामैं एक घटाईए बहुरि ताकौं एक घाटि गुणकारका भाग दीजिए। बहुरि लब्ध प्रमाणकौं मुख जो आदि विषैं प्रमाण तीहिं करि गुणिए। ऐसैं करतैं गुण संकलन हो है। सो इहां सात कक्ष हैं तातैं पदका प्रमाण सात है। अर इहां दूणां दूणां क्रम कह्या तातैं गुणकार दोय है। सो सात जायगां दूवा मांडि 2।2।2।2।2।2।2। परस्पर गुणें एकसौ अट्ठाईस होइ तामैं एक घटाएं एकसौ सतांईस होइ। बहुरि एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीएं एकसौ सतांईस इनकौं प्रथम कक्षाका प्रमाण रूप मुख चौसठि हजार करि गुणें इक्यासी लाख अट्ठाईस हजार एक जातिकी सेना भई ताकौं सात करि गुणें सातौं जातिके समस्त आनीक देवनिका प्रमाण पांच कोडि अडसठि लाख तिरेसठि हजार चमरेंद्रकैं जाननां। ऐसें ही बैरोचन आदिकैं भी यथासंभव प्रमाण जानि लेना। बहुरि इहां पदमेत्ते गुणयारे इत्यादि करण सूत्र कैसें कह्या ताका विशेषरूप बासठका वर्तन संयुक्त टीकातैं जाननां ॥ २३१ ॥

अब आनीकके भेदका स्वरूप दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

असुरस्स महिसतुरगरथेभपदाती कमेण गंधव्वा।
णिच्चाणीय महत्तर महत्तरी दक्ख एक्का य ॥ २३२ ॥

असुरस्य महिषतुरगरथेभपदातयः क्रमेण गंधर्वः।
नृत्यानीकं महत्तरा महत्तरी षट् एका च ॥ २३२ ॥

अर्थ—असुरकुमारकें भैंसा १ घोडा १ रथ १ हाथी १ पयादा १ गंधर्व १ नृत्यकी १ ; सात प्रकार सेना हैं। तहां पहली छह सेना विषैं महत्तर हैं एक नृत्यकी सेना विषैं महत्तरी है भावार्थ ॥ भैंसा आदिक छह जातिकी सेना विषैं तौ प्रधान देव हैं। अर नृत्यकी सेना विषैं धान देवांगना हैं ॥ २३२ ॥

णावा गरुडिभमयरं करभं खग्गी मिगारिसिविगस्सं।
पढमाणीयं सेसे सेसाणीया हु पुव्वं व ॥ २३३ ॥

नौर्गरुडेभमकरं करभः खड्गी मृगारिशिबिकाश्वम्।
प्रथमानीकं शेषे शेषानीकास्तु पूर्व इव ॥ २३३ ॥

अर्थ—असुरनिकें प्रथम आनीक भैंसा कह्या था अवशेष नागकुमारादिकनिकें क्रमतैं नाव १ ा सर्प १ गरुड १ हाथी १ मांछला १ ऊट १ सूर १ सिंह १ पालिकी १ घोडा १ प्रथम ानीक हैं। ऐसैं प्रथम आनीकविषैं तौ भेद हैं अन्य अवशेष आनीक पूर्वोक्त असुरनिकें समान हैं ॥ २३३ ॥

आगैं भवनवासी देव असंख्याते हैं तातैं प्रकीर्णादिक देव गाथानि विषैं विना कहें भी असंख्यात जानिए यातैं तिनका प्रमाणकों न कहि करि अब असुरकुमारादिनकिकें देवांगनानिकी संख्या ोष गाथानिकरि कहैं हैं;—

असुरतिए देवीओ छप्पण्णसहस्स तत्थ वल्लभिया।
सोलसहस्सं छक्कसहस्सेणूणक्कमो होई ॥ २३४ ॥

असुरत्रिके देव्यः षट्पंचाशत्सहस्राणि तत्र वल्लभिकाः।
षोडशसहस्राणि षट्सहस्रेणोनक्रमो भवति ॥ २३४ ॥

अर्थ—असुरादिक तीन विषैं असुरकुमारका इंद्रकें देवांगना छप्पन हजार हैं तिनविषैं सोलह हजार वल्लभिका प्यारी देवांगना हैं पांच महादेवी हैं सो आगैं कहेंगे। अर पांच घाटि चालीस हजार परिवार देवी हैं। बहुरि औरनि विषैं छह छह हजार घाटि हैं सो नाग कुमारका इंद्रकें पचास हजार देवी हैं। सुपर्णकुमारका इंद्रकें बत्तालीस हजार हैं ॥ २३४ ॥

बत्तीस बे सहस्सा सेसे पण पण सजेट्ठदेवीओ।
तिसु अट्ठ छस्सहस्सं विगुव्वणामूलतणुसहियं ॥ २३५ ॥

द्वात्रिंशत् द्वे सहस्राणि शेषे पंच पंच स्वज्येष्ठदेव्यः।
त्रिषु अष्ट षट्सहस्रं विकुर्वणामूलतनुसहिताः ॥ २३५ ॥

अर्थ—शेष द्वीप कुमारादिकविषैं इंद्रकें बत्तीस हजार देवांगना हैं तिनविषैं दोय हजार वल्लभिका हैं। बहुरि कही जु ए देवांगना तिनविषैं पांच पांच ज्येष्ठ देवी कहिए पटराणीवत् महादेवी हैं। बहुरि तिन असुरादि तीनविषै अर अवशेष द्वीपादि विषैं ज्येष्ठ देवीके आठ हजार छह

हजार मूल शरीर सहित विक्रिया है। असुरादि तीन विषैं एक एक ज्येष्ठदेवी विक्रिया करै तो ए हजार देवांगना रूप होइ तामें एक आप मूल अर अन्य विक्रियारूप देवी होइ ऐसैं ही अवशेषनि विषैं एक एक ज्येष्ठदेवी विक्रिया करै तौ मूल शरीर सहित छह हजार देवांगनारूप होइ ॥२३५॥

आगैं चमर और वैरोचन इंद्रकैं पट्टदेवीनिके नाम कहैं हैं;—

किण्ह सुमेय सुकड्ढा रयणि य जेट्ठित्थि पउम महपउमा।
पउमसिरी कणयसिरी कणयादिममाल चमरदुगे ॥ २३६ ॥

कृष्णा सुमेधा सुकाञ्चा रत्नी च ज्येष्ठास्त्रियः पद्मा महापद्मा।
पद्मश्रीः कनकश्रीः कनकादिमाला चमरद्विके ॥ २३६ ॥

अर्थ—कृष्णा १ सुमेधा १ सुका १ सुकाञ्चा १ रत्नी ए पंच चमरेंद्रके ज्येष्ठ स्त्री हैं। पद्मा १ महापद्मा १ पद्मश्री १ कनकश्री १ कनकमाला १ ए पंच वैरोचन इंद्रकैं ज्येष्ठ स्त्री हैं। ऐसैं ए चमर द्विकविषैं ज्येष्ठ स्त्री हैं ॥ २३६ ॥

आगैं इन इंद्रनि लोकपाल आयस्त्रिंशत्सामान्यक इनकैं इंद्रके समान ही देवांगना परिवार स्त्री इनकैं मुख्य प्रमाण न करि औरनिकैं देवांगनाका प्रमाण तीन गाथानि करि कहैं है;—

अट्ठाइज्जं तिसयं पण्णासूणं कमं तु चमरदुगे।
पारिसदेवी णागे तिसयं तु सगट्ठितालसयं ॥ २३७ ॥

अर्धतृतीयं त्रिशतं पंचाशदूनः क्रमस्तु चमरद्विके।
पारिषदेव्यः नागे त्रिशतं तु सप्तषष्टिचत्वारिंशच्छतं ॥ २३७ ॥

अर्थ—अढाईसै तीनसै पचास घाटि क्रमतैं चमरद्विकविषैं पारिषदनिकैं देवी जाननी बाह्यार्थ ॥ चमर इंद्रके अभ्यंतर पारिषदनिकैं अढाईसै मध्य पारिषदनिकैं दोयसै बाह्यपारिषदनिकैं तीनसै देवांगना है। बहुरि वैरोचनइंद्रके अभ्यंतर पारिषदनिकैं तीनसै मध्य पारिषदनिकैं अढाईसै बाह्य पारिषदनिकैं दोयसै देवांगना है बहुरि नागकुमारेंद्रके अभ्यंतर पारिषदनिकैं दोयसै मध्य पारिषदनिकैं एकसौ सैंतालीस बाह्य पारिषदनिकैं एकसौ बासठि देवांगना है ॥ २३७ ॥

णवरं सेसे सोदस चउदस दसगंगुणं तु बीगुणा।
सयमयदेवी पंचामरणगणंगरक्खाणं ॥ २३८ ॥

नवरं शेषे षोडश चतुर्दश दशकांगुणास्तु द्विगुणाः।
स्वकस्वकेन्द्र पृथक्पृथगासां प्रत्येकमानं ॥ २३८ ॥

अर्थ—नव का नव [illegible] सोलह चौदह दश गुणा दोय गुणा [illegible] ऐसैं ऐसैं [illegible] है। भावार्थ—[illegible] मुख्य [illegible] अभ्यंतर पारिषदनिकैं एक सौ [illegible] मध्य पारिषदनिकैं एक सौ [illegible] है। बहुरि [illegible] अभ्यंतर पारिषदनिकैं एक सौ [illegible] मध्य पारिषदनिकैं एक सौ [illegible] है। बहुरि [illegible] अभ्यंतर पारिषदनिकैं [illegible] मध्य पारिषदनिकैं [illegible] है ॥ २३८ ॥

सेणादेवाणं पुण देवीयो तस्स अद्धपरिमाणं।
सव्वणिगिट्ठसुराणं बत्तीसा होंति देवीओ ॥ २३९ ॥

सेनादेवानां पुनः देव्यः तस्य अर्धपरिमाणं।
सर्वनिकृष्टसुराणां द्वात्रिंशद्भवंति देव्यः ॥ २३९ ॥

अर्थ—सेना देवनिकैं देवी तिन सेना महत्तरकैं अर्द्ध प्रमाण है। भावार्थ—आनीक देवनिके पचास देवांगना हैं, बहुरि सर्व निकृष्ट देवनिके बत्तीस देवांगना हैं कोई ही देवकैं बत्तीसतैं घाटि देवांगना न होय ॥ २३९ ॥

आगैं भवनवासीनिके वा आगे कहिए जे व्यंतर तिनके जघन्य उत्कृष्ट आयु कहैं हैं;—

असुरादिचदुसु सेसे भोम्मे सायर तिपल्लमाउस्सं।
दसहीणकमं जेट्ठं दसवाससहस्समवरं तु ॥ २४० ॥

असुरादिचतुर्षु शेषे भौमे सागरं त्रिपल्यं आयुष्यम्।
दशहीनक्रमः ज्येष्ठं दशवर्षसहस्रं अवरं तु ॥ २४०

अर्थ—असुरादि च्यारिनिविषैं, शेष भवनवासीनिविषैं, भौम जो व्यंतर तीह विषै क्रमतैं सागर तीन पल्य आधी घाटि क्रम लिएं उत्कृष्ट आयु है। भावार्थ—असुरकुमारविषै एक सागर नागकुमार विषैं तीन पल्य सुपर्णकुमारविषैं अढाई पल्य द्वीपकुमारविषैं दोय पल्य अवशेष दश जातिके भवनवासीनिविषैं ड्योढ पल्य व्यंतर देवनिविषैं एक पल्य उत्कृष्ट आयु है। बहुरि सबनि ही विषैं जघन्य आयु दशहजार वर्ष प्रमाण है ॥ २४० ॥

आगैं जिनके जो आयु कह्या ताकौं विशेष सहित कहैं हैं;—

असुरचउक्के सेसे उदही पल्लद्धियं दसूणकमं।
उत्तरइंदाणहियं सरिसं इंदादिपंचण्हं ॥ २४१ ॥

असुरचतुष्के शेषे उदधिः पल्यार्धिकं दशोनक्रमः।
उत्तरेंद्राणामधिकं सदृशं इंद्रादिपंचानाम् ॥ २४१ ॥

अर्थ—असुरादि च्यारि विषै अर अवशेष भवन वासीनि विषै एक सागर तीन पल्य आध पल्य घाटि आयु कह्या सोई उत्तर दिशाके इंद्रनिका किछू अधिक आयु जानना। भावार्थ असुरकुमारविषैं चमरेंद्रका एक सागर आयु है, वैरोचनका किछू अधिक एक सागर आयु है। नागकुमारविषैं भूतानंदका तीन पल्यका आयुष है। धरणानंदका किछू अधिक तीन पल्य आयु है। ऐसेही सुपर्णकुमारादिविषैं जानना। बहुरि इन्द्र प्रतींद्र लोकपाल आदित्रिंशत सामानीक इन पंचनिका आयु समान है ॥ २४१ ॥

आगैं तिसही समानताकौं विशेषकरि कहैं हैं;—

आउपरिवारिड्ढीविरियादि पदिंदयादि चऊ।
सगसगइंदेहि समा दसरक्खतणादिसंजुत्ता ॥ २४२ ॥

आयुःपरिवारर्धिविक्रियाभिः प्रतीन्द्रादयः चत्वारः ।
स्वकस्वकेंद्रैः समा दशघ्नछत्रादिसंयुक्ताः ॥ २४२ ॥

अर्थः—आयु परिवार ऋद्धि विक्रिया इनकरि प्रतीन्द्र लोकपाल त्रायस्त्रिंशत सामानिक ए च्यारि अपने अपने इन्द्र करि समान हैं इतना विशेष दश घाटि हैं तातैं छत्रादिक करि संयुक्त हैं ॥ २४२ ॥

आगैं असुरादि इन्द्रनिकी देवांगनानिका आयु कहैं हैं;—

अड्ढाइज्जतिपल्लं चमरदुगे णागगरुडसेसाणं ।
देवीणमट्ठमं पुण पुव्वावस्साण कोडितयं ॥ २४३ ॥

अर्धतृतीयत्रिपल्यं चमरद्विके नागगरुडशेषाणां ।
देवीनामष्टमं पुनः पूर्वकोटीनां कोटित्रयम् ॥ २४३ ॥

अर्थ—चमर द्विकविषैं चमरेन्द्रकी देवांगनाका आयु अढ़ाई पल्य है । वैरोचनकी तीन पल्य है बहुरि नागेन्द्रकी देवीनिका आयु पल्यका आठवां भाग है । बहुरि गरुडेन्द्रकी देवांगनानिका आयु तीन कोडि पूर्व प्रमाण है । अवशेष इन्द्रनिकी देवांगनानिका आयु तीन कोडि वर्ष प्रमाण है ॥ २४३ ॥

आगैं अंगरक्षक तीन जातिके परिषद तिनका आयु च्यारि गाथानिकरि कहैं है;—

चमरंगरक्खसोमाणमहत्तराणाउगं हवे पल्लं ।
साणीकवाहणाणं दक्खं तु वइरोयणे अहियं ॥ २४४ ॥

चमरांगरक्षसोमानामहत्तराणामायुर्भवेत् पल्यं ।
सानीकवाहनानां दक्षं तु वैरोचने अधिकम् ॥ २४४ ॥

अर्थ—चमर इन्द्रके अंगरक्षक अर सोमामहत्तर इनका आयु एक पल्य है बहुरि अनीक सहित वाहन महिष गजादि रूप होने योग्य देव तिनका आयु आध पल्य है ॥ बहुरि चमर इन्द्रके ते वैरोचन इन्द्रके अंगरक्षकादिकनिकै किछू अधिक आयु है ॥ २४४ ॥

फणिगरुडसोमयाणं सट्ठाणे पुव्वकोडी य ।
वरुणाण कोडि अद्धं अद्धं च सदद्धयं कमसो ॥ २४५ ॥

फणिगरुडसोमानां स्वस्थाने पूर्वकोटिः च ।
वरुणानां कोटिः अर्धं अर्धं च सदर्धकं क्रमशः ॥ २४५ ॥

अर्थ—नाग इन्द्र द्वीपनिविषैं तिन पूर्वोक्त स्थानकनिविषैं क्रमतैं कोडि पूर्व वर्ष बहुरि कोडि वर्ष अर्ध वर्ष बहुरि अर्ध वर्षका आधा वर्ष प्रमाण आयु है । भावार्थ नागकुमारनिविषैं अंगरक्षक सोमामहत्तरनिका आयु कोडि पूर्व वर्ष है अनीक सहित वाहननिका कोडि वर्ष है । बहुरि सुपर्णकुमारनिविषैं अंगरक्षक सोमामहत्तरनिका आयु कोडि वर्ष है । अनीक सहित वाहननिका अर्ध वर्ष है । बहुरि द्वीपकुमार अग्निकुमारनिविषैं अंगरक्षक सोमामहत्तरनिका आयु अर्ध वर्ष है अर अनीक सहित वाहननिका अर्धका अर्ध वर्ष है ॥२४५॥

चउदसहस्सं वस्साणं उक्कस्सं तिदसहस्सं ।
पल्लं अद्धद्धाणं सोलस दसयं तिपल्लाणं ॥ २४६ ॥
चतुर्दशसहस्राणि वर्षाणामुत्कृष्टं त्रिदशसहस्राणि ।
पल्यं अर्धार्धानां षोडश दशकं त्रिपल्यानाम् ॥ २४६ ॥

अर्थ—भवन त्रिक में जो परिवर्तिका कहा तहां तीन पद का अर्थ जघन्य परिवर्तिका होय पांच पद का अर्थ मध्यम परिवर्तिका होय सात पद का अर्थ उत्कृष्ट परिवर्तिका होय है। बहुरि भवनेन्द्र में तीन पद का अर्थ जघन्य परिवर्तिका अठाईस पद का अर्थ मध्यम परिवर्तिका होय पैंतीस पद का अर्थ उत्कृष्ट परिवर्तिका होय है। बहुरि असुरकुमारनि में तीन पद का अर्थ जघन्य परिवर्तिका पचवन पद का अर्थ मध्यम परिवर्तिका होय एक सौ दश पद का अर्थ उत्कृष्ट परिवर्तिका होय है। ऐसा आगम प्रमाण जानना ॥ २४६ ॥

णवरे तेसे वदणो तिदुगदेवे तु होदि पुव्वाणं ।
वस्साणं कोडीओ पल्लासंखेज्जभागाणं ॥ २४७ ॥
नवरे तेषां वदनः त्रिक. दे एवं तु भवति पूर्वाणाम् ।
वर्षाणां कोट्यः पल्यासंख्येयभागानाम् ॥ २४७ ॥

अर्थ—नवरि यह असुरादिकनि कहीं तीन दोय एक पूर्व कोटि वर्ष कोटि प्रमाण आयु कहा सो परिवर्तिका जानना। भावार्थ। नवरि असुरादिकनि असंख्यात परिवर्तिका तीन पूर्व कोटि वर्ष परिवर्तिका दोय कोटि वर्ष परिवर्तिका एक कोटि वर्ष प्रमाण आयु है। बहुरि नवरि नागादिकनि असंख्यात परिवर्तिका तीन कोटि वर्ष मध्य परिवर्तिका दोयकोटि वर्ष जघन्य परिवर्तिका एक कोटि वर्ष प्रमाण आयु है ॥ २४७ ॥

आगे असुरादिकनिके उच्छ्वास अर आहारका काल कहै है,—

असुरे तिण्णि पयासा पक्खे सहस्सवस्स तु ।
सत्तुच्छ्वासिणाणं तेसं वासस्स दत्तूणहे ॥ २४८ ॥
असुरे त्रिषु दशमासाः पक्षे सहस्रवर्षे तु ।
सप्तोच्छ्वासिनां अर्धत्रयोदशा हायनस्य ॥ २४८ ॥

अर्थ—असुरनिके अर तीन तीन निके उच्छ्वास अर आहार पक्ष वर्ष हजार अर सौ मुहूर्त अर दिननिका साढा बारा बारा साढा सातवां भाग गए एक बार हो है। भावार्थ। असुरकुमारनिके एक पक्ष गए एकबार उच्छ्वास हो है। हजार वर्ष गए एक बार आहार हो है। बहुरि नागकुमार आदि तीन जातिनिके साढा बारा मुहूर्त गए उच्छ्वास हो है साढा बारा दिन गए आहार हो है। बहुरि विद्युत्कुमार आदि तीन जातिनिके साढा सात मुहूरत गए उच्छ्वास होवे साढा सात दिन गए आहार हो है ॥ २४८ ॥

आगे भवनत्रिक देवनिका उत्सेध कहैं हैं;—

पणवीसं असुराणं सेसकुमाराण दसधणू चेव ।
वितरजोइसियाणं दशसत्त सरीरउदओ दु ॥ २४९ ॥

पंचविंशतिः असुराणां शेषकुमाराणां दशधनुषां चैव ।
व्यंतरज्योतिष्कयोः दशसप्त शरीरोदयः तु ॥ २४९ ॥

अर्थ—असुर कुमारनिका पचीस धनुष अवशेष नव जातिके भवनवासी कुमारनिका द
धनुष व्यंतर देवनिका दश धनुष ज्योतिषी देवनिका सात धनुष शरीरकी उचाईका प्रमाण है ॥२४९

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचित त्रिलोकसारमें भवनलोकका अधिकार समाप्त भया ॥

अमरचंद हीरालाल सेठिया
जैन ग्रन्थालय.
बीकानेर, (राजपुताना.)

व्यंतर लोकाधिकार ॥ ३ ॥

अब व्यंतरलोक निरूपण करनेकौं है मन जाका ऐसा आचार्य सो प्रथम ही व्यंतरलोक विषै तिष्ठते जु चैत्यालयनिकौं प्रमाण पूर्वक नमस्कारकौं विस्तारै है;—

तिण्णिसयजोयणाणं कदिहिदपदरस्स संखभागमिदे।
भौमाणं जिणगेहे गणणातीदे णमंसामि ॥ २५० ॥

त्रिशतयोजनानां कृतिहृतप्रतरस्य संख्यभागमितान्।
भौमानां जिनगेहान् गणनातीतान् नमस्यामि ॥ २५० ॥

अर्थ—तीनसै योजनके वर्गका भाग जगत्प्रतरकौं दीएं जो प्रमाण होइ ताके संख्यात वेमात्रि प्रमाण जे व्यंतर देव संबंधी जिनमंदिर तिनहिं नमस्कार करौं हौं। कैसे हैं जिनमंदिर, गणनातीतान् कहिए असंख्यात हैं लौकिक गणित करि गिणे न जावैं हैं। सो तीनसै योजनका वर्ग किएं निवै हजार योजन भए। बहुरि एक योजनके सात लाख अडसठि हजार अंगुलतैं निवै हजार योजनके केते अंगुल होइ। ऐसे त्रैराशिक करि तिनके अंगुल करिए सो वर्ग राशिका गुणकार अर भागहार वर्गरूप ही होइ इस न्याय करि सात लाख अडसठि हजारका वर्ग करि निवै हजारकौं गुणिए ९०००।७६८०००।७६८००० बहुरि अंगुलनिका अंकनिकौं तीन करि भेदिए तब सातसै अडसठिकी जायगा दोयसै छप्पन अर आगैं तीनका अंक भया। बहुरि गुण्य अर गुणकारविषै दश बिंदी थी तिनकौं जुदी स्थापी तब ऐसा भया ९।२५६।३।२५६।३। बहुरि दोय जायगा दोय सै छप्पन थे तिनकौं परस्पर गुणे पणट्ठी ६५५३६ भई अर दोइ जायगा तीन तीन थे तिनकौं परस्पर गुणें नव भए तिनकौं गुण संबंधी नवका अंककरि गुणें इक्यासी भए ऐसे करते ऐसा भया ६५=८१ बहुरि याकै आगे जुदी राशि थी दश बिन्दी ताकी सहनानी ऐसी १०° कीए ऐसा भया ६५=८१−१; इतने अंगुल भए। बहुरि एक अंगुलका एक सूच्यंगुल होइ तौ इतने अंगुलनिका केते होइ सो इहां वर्ग राशि है तातैं सूच्यंगुलका वर्ग जो प्रतरांगुल ताकी सहनानी ऐसी ४ ताकरि गुणिए तब ऐसा होइ ४।६५=८११; बहुरि याका भाग जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी= ताकौं दीजिए तब व्यंतरनिका प्रमाण पणट्ठीको इक्यासी करि गुणि ताकै आगैं दस बिंदी धरिए इतने प्रतरांगुलका जगत्प्रतर दिए ऐसा होय है ४=।६५=८१।१; सोई कह्या है "तिण्णि सयजोयणाणं वेमदछप्पणअंगुलाणं च कदिहिदपदरं वेंतरजोइसियाणं च परिमाणं।" तीनसै योजन अर दोयसै छप्पन अंगुलका वर्गका भाग जगत्प्रतरकौं दिए क्रमतैं व्यंतर अर ज्योतिषीनिका प्रमाण हो है ऐसा सिद्धांत वचन है। बहुरि संख्याते व्यंतर देवनिके एक एक जिनमंदिर पाइए तौ पूर्वोक्त प्रमाण व्यंतर देवनिकैं केते जिन मंदिर पाईए। ऐसे करि पूर्वोक्त व्यंतर प्रमाणकौं संख्यातकी सहनानी ऐसी ; ताका भाग दिएं व्यंतरनिकैं जिन मंदिरका प्रमाण ऐसा होय है ४=।६५=८१।१;° ॥ २५० ॥

आगैं व्यंतरनिका कुल भेद कहैं हैं;—

किंणरकिंपुरिसा य महोरगगंधव्वजक्खणामा य ।
रक्खसभूयपिसाया अट्ठविहा वेंतरा देवा ॥ २५१ ॥

किंनरकिंपुरुषौ च महोरगगंधर्वयक्षनामानः च ।
राक्षसभूतपिशाचाः अष्टविधा व्यंतरा देवाः॥ २५१ ॥

अर्थ—किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच, ऐसे नामके धारक आठ प्रकार व्यंतर देव हैं ॥ २५१ ॥

आगैं तिनके शरीरका वर्णकों निरूपैं हैं,—

तेंसि कमसो वण्णो पियंगुफलधवलकालयसियामं ।
हेमं तिसुवि सियामं किण्हं बहुलेवभूसा य ।· २५२ ॥

तेषां क्रमशः वर्णाः प्रियंगुफलधवलकालश्यामाः ।
हेमः त्रिष्वपि श्यामः कृष्णः बहुलेपभूषा च ॥ २५२ ॥

अर्थ—तिनका अनुक्रमतैं शरीरका वर्ण कहिए है । किंनरनिका प्रियंगुफल समान वर्ण है। किंपुरुषनिका धवल वर्ण है । महोरगनिका काला स्याम वर्ण है । गंधर्वनिका सुवर्ण समान वर्ण है यक्ष राक्षस भूत इन तीनोंका स्याम वर्ण है पिशाचनिका कृष्ण वर्ण है बहुरि ते देव बहुत अगर इत्यादि लेप आभूषणनिकरि संयुक्त हैं ॥ २५२ ॥

आगैं तिनकैं चैत्य वृक्षनिका भेद कहैं हैं;—

तेसिं असोयचंपयणागा तुंबुरुवडो य कंटतरू ।
तुलसी कदंबणामा चेत्ततरू होंति कमेण ॥ २५३ ॥

तेषां अशोकचंपकनागाः तुंबुरुवटाश्च कंटतरुः ।
तुलसी कदंबनामा चैत्यतरवो भवंति खलु क्रमेण ॥ २५३ ॥

अर्थ—तिन किंनरादिक व्यंतरनिकैं अशोक १ चंपा १ नागकेसरि १ तुंबरी १ वट १ कंटतरु १ तुलसी १ कदंब । ऐसे नाम धारक चैत्य वृक्ष अनुक्रमतैं पाईए है ॥ २५३ ॥

आगैं तिनि चैत्य वृक्षके मूल विषैं तिष्ठै है । जिन प्रतिमा इत्यादि कथन कहैं हैं;—

तम्मूले पलियंकजिणपडिमा पडिदिसम्हि चत्तारि ।
चउतोरणजुत्ता ते भवणेसु च जंबुमाणदा ॥ २५४ ॥

तन्मूले पल्यंकजिनप्रतिमाः प्रतिदिशं चतस्रः ।
चतुस्तोरणयुक्तास्ताः भवनेषु च जंबूमानार्घाः ॥ २५४ ॥

अर्थ—तिन चैत्य वृक्षनिके मूलविषै पल्यंक आसनकी धारै ऐसी जिन प्रतिमा एक एक दिशा प्रति च्यारि च्यारि पाईए है बहुरि ते प्रतिमा च्यारि तोरण द्वारनिकरि संयुक्त है बहुरि भवनविषै ते चैत्य वृक्ष हैं ते आगैं जंबूद्वीपका वर्णन विषै जंबू वृक्षके परिकरका प्रमाण करेंगे तातैं अर्द्ध प्रमाण जानना ॥ २५४ ॥

आगें तिन प्रतिमानिकै आगे तिगना मानस्तंभनिका विशेष सहित निरूपण करै है;—

पडिपडिमं एक्केका माणत्थंभा तिपीढसालजुदा।
मोत्तियदामं सोहइ घंटाजालादिरं दिव्वं ॥ २५५ ॥

प्रतिप्रतिमां एकैको मानस्तंभाः त्रिपीठशालयुताः।
मौक्तिकदाम शोभते घंटाजालादिकं दिव्यम् ॥ २५५ ॥

अर्थ—प्रतिमा प्रतिमा प्रति एक एक आगें मानस्तंभ है ते मानस्तंभ तीन पीठ तीन शालनिकार संयुक्त है। भावार्थ—तीन पीठकै ऊपरि मानस्तंभ है तिस मानस्तंभके तीन कोट पाइए है बहुरि तिस मानस्तंभविषै मोतीनिकी माला वा दिव्य घंटा आदि इत्यादिक शोभै है ॥ २५५ ॥

आगें आठ प्रकार व्यंतरनिकै एक एक कुल प्रति भेद कहै है;—

किंणरपढम दसदसया सेसा बारसगगणचोद्दसया।
दो दो इंदा दो दो वल्लभिया पुह सहस्सदेवीजुदा ॥ २५६ ॥

किंनरप्रथमाः दशदशका शेषाः द्वादशसप्तचतुर्दशका।
द्वौ द्वौ इंद्रौ द्वे द्वे वल्लभिके पृथक् सहस्रदेवीयुते ॥ २५६ ॥

अर्थ—किंनरादिक व्यारि कुल तौ दश दश प्रकार है अर पिशाचादिक अनुक्रमतैं बारह प्रकार सात प्रकार सात प्रकार चौदह प्रकार है। जैसे मनुष्यविषै क्षत्रिय वैश्यादिक कुल भेद पाईए है अर एक क्षत्रिय कुल विषै इक्ष्वाकु सोम वंशादि भेद पाईए तैसे व्यंतरनिविषै आठ कुल भेद है। एक एक कुल विषै दश आदि अवांतर भेद जानने। बहुरि इन विषै एक एक कुल विषै दोय दोय इंद्र है। तिन इंद्रनिकै एक एक के दोय दोय वल्लभिका देवांगना हैं ते पृथक् पृथक् एक एक देवांगना हजार हजार परिवार देवांगना करि संयुक्त है ॥ २५६ ॥

आगें तिनके नाम सोलह गाथानि करि कहै है;—

किंपुरिसकिंणरा वि य हिदयंगमगा य रूवपाली य।
किंणरकिंणरउत्तिदिय मणोरमा किंणरुत्तमगा ॥ २५७ ॥

किंपुरुषकिंनरावपि च हृदयंगमश्च रूपपाली च।
किंनरकिंनरः अनिंदित मनोरमः किंनरोत्तम ॥ २५७ ॥

अर्थ—किंपुरुष १ किंनर १ हृदयंगम १ रूपपाली १ किंनरकिंनर १ अनिंदित १ मनोरम १ किंनरोत्तम १ ॥ २५७ ॥

रतिप्पियजेट्ठा इंदा किंपुरिसाकिंणराहवंसा ए।
केतुमती रतिसेणा रदिप्पिया होंति वल्लभिया ॥ २५८ ॥

[illegible]

अर्थ—[illegible]

पुरुसा पुरुसुत्तमसप्पुरुसमहापुरुसपुरुसपहणामा ।
अतिपुरुसा मरुओ मरुदेवमरुप्पहजसोवंता ॥ २५९ ॥

पुरुषः पुरुषोत्तमसत्पुरुषमहापुरुषपुरुषप्रभनामानः ।
अतिपुरुषः मरुन्मरुद्देवमरुत्प्रभयशस्वंतः ॥ २५९ ॥

अर्थ—पुरुष १ पुरुषोत्तम १ सत्पुरुष १ महापुरुष १ पुरुषप्रिय १ अतिपुरुष १ मरुत १ मरुदेव १ मरुत्प्रभ १ यशस्वान १ ऐसें दश प्रकार किंपुरुष हैं ॥ २५९ ॥

सप्पुरुसमहापुरुसा किंपुरिसिंदा कमेण वल्लभिया ।
रोहिणिया णवमी हिरि पुप्फवदी य इयरस्स ॥ २६० ॥

सत्पुरुषमहापुरुषौ किंपुरुषेंद्रौ क्रमेण वल्लभिकाः ।
रोहिणी नवमी ह्री पुष्पवती च इतरस्य ॥ २६० ॥

अर्थ—तिनविषै सत्पुरुष अर महापुरुष दोय किंपुरुष व्यंतरके इन्द्र हैं तिनकी ग सत्पुरुषकी सो रोहिनी अर नवमी वल्लभिका देवी है अर दूसरा महापुरुषकी ह्री अर पुष्पवती मिश्र देवी है ॥ २६० ॥

भुजगा भुजंगमाली महकायतिकाय खंधसाली य ।
मणहर असणिमणक्खा महसरगंभीरपियदरिसा ॥ २६१ ॥

भुजंगः भुजंगशाली महाकायो अतिकायः स्कंधशाली च ।
मनोहरः अशनिमनाक्ष्यः महेश्वर्यगंभीरप्रियदर्शिनः ॥ २६१ ॥

अर्थ—भुजग १ भुजंगशाली १ महाकाय १ अतिकाय १ स्कंधशाली १ मनोहर १ अशनि १ मनोरक्ष्य १ महेश्वर्य १ गंभीर १ प्रियदर्शी १ ऐसे दस प्रकार महोरग हैं ॥ २६१ ॥

महकायो अतिकायो महोरगेंदा हु भोग भोगवदी ।
इदरस्स पुप्फगंधी अणिंदिता होंति वल्लभिया ॥ २६२ ॥

महाकायो अतिकायः महोरगेंद्रौ हि भोग भोगवती ।
इतरस्य पुष्पगंधी अनिंदिता भवंति वल्लभिके ॥ २६२ ॥

अर्थ—तिनविषै महाकाय १ अर अतिकाय ए दोय महोरग व्यंतरनिके इंद्र हैं दूसरे इन्द्रकी सो भोगा १ भोगवती १ अर तिसरे इन्द्रकी पुष्पगंधी १ अनिंदिता ए वल्लभिका हैं ॥ २६२ ॥

गीदा हू हू णारयतुंबुरुकदंबरायवसा य ।
महसर गीदरदीदि य गीदजसा दसविधा देवगा ॥ २६३ ॥

गीतः हूहूः नारदतुंबुरुकदंबरायवसश्च ।
महस्वरः गीतरतिः अतिगीतः गीतयशाः दशविधाः देवगाः ॥ २६३ ॥

अर्थ—गीत १ हूहू १ नारद १ तुंबुरु १ कदंब १ रायवस १ महास्वर १ गीतरति १ अतिगीत १ गीतयश १ ऐसे दस प्रकार देव हैं ॥ २६३ ॥

गीतरती गीतजसो गंधव्विंदा हवंति वल्लभिया।
सरसति सरसेणावि य णंदिणि पियदरिसिणादेवी ॥ २६४ ॥
गीतरतिः गीतयशा गंधर्वेन्द्रौ भवतः वल्लभिकाः।
सरस्वति स्वरसेनापि च नंदिनी प्रियदर्शनादेवी ॥ २६४ ॥

अर्थ—तिन विषैं गीतरति अर गीतयशा ए दोय गंधर्वनिके इन्द्र हैं तिनकी वल्लभिका देवी सरस्वती १ स्वरसेना १ अर नंदिनी १ प्रियदर्शना १ हैं ॥ २६४ ॥

अह माणिपुण्णसेलमणोभद्दा भद्दगा सुभद्दा य।
तह सव्वभद्द माणुस धणपाल सुरूवजक्खा य ॥ २६५ ॥
अथ माणिपूर्णशैलमनोभद्राः भद्रकः सुभद्रः च।
तथा सर्वभद्रः मानुषः धनपालः सुरूपयक्षश्च ॥ २६५ ॥

अर्थ—अथ अर्थ माणिभद्र १ पूर्णभद्र १ शैलभद्र १मनोभद्र १भद्रक १ सुभद्र १ सर्वभद्र १ मानुष १ धनपाल १ सुरूपयक्ष १ ॥ २६५ ॥

जक्खुत्तमा मणोहरणामा तह माणिपुण्णभद्दिंदा।
कुंद बहुपुत्तदेवी तारा पुण उत्तमा देवी ॥ २६६ ॥
यक्षोत्तमो मनोहरनामा तत्र माणिपूर्णभद्रेंद्रौ।
कुंदा बहुपुत्रदेवी तारा पुनरुत्तमा देवी ॥ २६६ ॥

अर्थ—यक्षोत्तम १मनोहर १ ऐसे बारह प्रकार यक्ष हैं तिन विषैं माणिभद्र पूर्णभद्र ए दोय इंद्र हैं तिन इंद्रनिकी कुंदा १ बहुपुत्रा १ देवी हैं अर तारा उत्तमा देवी है ॥ २६६ ॥

भीम महाभीम विग्घविणायक तह उदक रक्खसा य तहा।
रक्खसरक्खस तह बम्हरक्खसा होंति सत्तमया ॥ २६७ ॥
भीमो महाभीमः विघ्नविनायकः तथा उदकः राक्षसश्च तथा।
राक्षसराक्षसः तथा ब्रह्मराक्षसः भवंति सप्तमकः ॥ २६७ ॥

अर्थ—भीम १महा भीम १ विघ्नविनायक १उदक१ राक्षस१ राक्षसराक्षस१ ब्रह्मराक्षस सातवा ऐसे सात् प्रकार राक्षस हैं ॥ २६७ ॥

भीमो य महाभीमो रक्खसइंदा हवंति वल्लभिया।
पउमा वसुमित्तावि य रयणड्ढा कणयपह देवी ॥ २६८ ॥
भीमश्च महाभीमो राक्षसेंद्रौ भवतः वल्लभिकाः।
पद्मा वसुमित्रापि च रत्नाढ्या कनकप्रभा देवी ॥ २६८ ॥

अर्थ—तिनविषैं भीम अर महाभीम ए राक्षनिके इन्द्र हैं, तिनकी वल्लभिका देवी पद्मा वसुमित्रा १ बहुरि रत्नाढ्या १ कनकप्रभा १ है ॥ २६८ ॥

भूदाणं तु सुरूपा पडिरूवा भूदउत्तमा तत्तो।
पडिभूद महाभूदा पडिछण्णागासभूद इदि ॥ २६९ ॥

भूतानां तु सुरूपः प्रतिरूपः भूतोत्तमः ततः ।
प्रतिभूतः महाभूतः प्रतिछन्नः आकाशभूत इति ॥ २६९ ॥

अर्थ—बहुरि भूतनिकें सुरूप १ प्रतिरूप १भूतोत्तम १ प्रतिभूत१ प्रतिछिन्न १ आकाशभूत १ ऐसें सात प्रकार है ॥ २६९ ॥

इंदा य सुपडिरूवा वल्लभिया तह य होंदि रुववदी ।
बहुरूवा य सुसीमा सुमुहा य हवंति देवीयो ॥ २७० ॥
इंद्रौ च सुप्रतिरूपौ वल्लभिकाः तथा च भवंति रूपवती ।
बहुरूपा च सुसीमा सुमुखा च भवंति देव्यः ॥ २७० ॥

अर्थ—तिन विषैं इन्द्र स्वरूप अर प्रतिरूप हैं तिनकी वल्लभिका १ रूपवती १ बहुरूपा सुसीमा १ सुमुखा १ ए देवी हैं ॥ २७० ॥

कुम्भंड रक्ख जक्खा संमोहो तारका अचोक्खा य ।
काल महकाल चोक्खा सतालया देह महदेहा ॥ २७१ ॥
कूष्मांडो रक्षो यक्षः संमोहः तारकः अशुचिश्च ।
कालः महाकालः शुचिः सतालकः देहः महादेहः ॥ २७१ ॥

अर्थ—कूष्मांड १ रक्षा १यक्ष संमोह १तारक १अशुचि १काल१ महाकाल १ शुचि १ सतालक १ देह १ महादेह१ ॥ २७१ ॥

तुण्हिय पवयणणामा इंदा तेसिं तु कालमहकाला ।
कमलकमलप्पहुप्पलसुदरिसणा होंति वल्लभिया ॥ २७२ ॥
तूष्णीकः प्रवचननामा इंद्रौ तेषां तु कालमहाकालौ ।
कमलाकमलप्रभोत्पलासुदर्शना भवंति वल्लभिकाः ॥ २७२ ॥

अर्थ—तूष्णीक १ प्रवचन १ ऐसें नाम लिऐं चौदह प्रकार पिशाच हैं। तिन विषैं तिन पिशाचानिकैं काल अर महाकाल इन्द्र हैं। तिनकी कमला १कमलप्रभा बहुरि उत्पला १ सुदर्शना१ ए वल्लभिका हैं ॥ २७२ ॥

आगैं बहुरि इंद्रनिहीके नाम जुदे दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

किंपुरुस किंणरा सप्पुरुस महापुरुसणामया कमसो ।
महकायो अतिकायो गीतरती गीतयसणामा ॥ २७३ ॥
किंपुरुषः किन्नरः सत्पुरुषः महापुरुषनामा क्रमशः ।
महाकायः अतिकायः गीतरती गीतयशोनामा ॥ २७३ ॥

अर्थ—क्रमतैं किंपुरुष किन्नर बहुरि सत्पुरुष महापुरुष बहुरि महाकाय अतिकाय बहुरि गीतरति गीतयश ॥ २७३ ॥

तो माणिपुण्णभद्दा भीममहाभीमया सुरूवा य ।
पडिरूवो काल महाकालो भोम्मेसु जुगलिंदा ॥ २७४ ॥

ततो माणिपूर्णभद्रौ भीममहाभीमै सुरूपथ।
प्रतिरूपः काउः महाकालः भौमेषु युगलेंद्राः ॥ २७४ ॥

अर्थ—तहां पीछे माणिभद्र पूर्णभद्र बहुरि भीम महाभीम बहुरि सुरूप प्रतिरूप बहुरि काउ महाकाल ए सर्व व्यंतरनिविषैं एक एक कुलके दोय दोय इन्द्र जाननां ॥ २७४ ॥

आगैं किंपुरुष इन्द्रनिकै गणिका महत्तरीकों च्यारि गाथानि करि कहैं हैं;—

गणिकामहत्तरीयो इंदं पडि पल्लदलठिदी दो दो।
मधुरा मधुरालावा सुस्सर मउभासिणी कमसो ॥ २७५ ॥
गणिकामहत्तर्यः इंद्रं प्रति पल्यदलस्थितयः द्वे द्वे।
मधुरा मधुरालापा सुस्वरा मृदुभाषिणी क्रमशः ॥ २७५ ॥

अर्थ—एक एक इन्द्र प्रति दोय दोय गणिका महत्तरी हैं। जैसे इहां वेश्या हो हैं तैसे तहां जो देवांगना होंहि तिनकों गणिका कहिए तिन विषैं जो प्रधान सो गणिकामहत्तरी जाननी बहुरि ते आध पल्य प्रमाण आयुकों धरै हैं तिनकों नाम अनुक्रमतैं कहिए हैं। तहां एक एक किंपुरुषादि इन्द्र संबंधी दोय दोय गणिका महत्तरीनिका नाम जाननां मधुरा मधुरालाप बहुरि सुस्वरा मृदुभाषिणी ॥ २७५ ॥

पुरिसपिया पुंकंता सोम्म पुंदरिसिणी य भोगवखा।
भोगवदी य भुजंगा भुजंगपिया तो सुघोस विमलेत्ति ॥ २७६ ॥
पुरुषप्रिया पुंकांता सौम्या पुंदर्शिनी च भोगाख्या।
भोगवती च भुजंगा भुजंगप्रिया ततः सुघोषा विमला इति ॥ २७६ ॥

अर्थ—बहुरि पुरुषप्रिया पुंकांता बहुरि सौम्य पुंदर्शिनी बहुरि भोगा भोगवती बहुरि भुजंगा भुजंगप्रिया बहुरि सुघोषा विमला ॥ २७६ ॥

सुस्सर अणिंदियक्खा भद्द सुभद्दा य मालिणी होंति।
पउमादिमालिणीवि य तो सव्वरि सव्वसेणेत्ति ॥ २७७ ॥
सुस्वरा अनिंदिताख्या भद्रा सुभद्रा च मालिनी भवंति।
पद्मादिमालिनी अपि च ततः शर्वरी सर्वसेना इति ॥ २७७ ॥

अर्थ—बहुरि सुस्वरा अनिंदिता बहुरि भद्रा सुभद्रा बहुरि मालिनी पद्ममालिनी बहुरि शर्वरी सर्वसेना ॥ २७७ ॥

रुद्दक्ख रुद्ददरिसिण भूदादिकंद भूद भूदादी।
दत्त महाभुज अंबा कराल सुलसा सुदरिसणया ॥ २७८ ॥
रुद्राख्या रुद्रदर्शना भूतादिकांता भूता भूतादि।
दत्ता महाभुजा अंबा कराला सुरसा सुदर्शनका ॥ २७८ ॥

अर्थ—बहुरि रुद्रा रुद्रदर्शना बहुरि भूतकांता भूता बहुरि भूतदत्ता महाभुजा बहुरि अंबा कराल बहुरि सुरसा दर्शना। ऐसें सोलह इन्द्र संबंधी बत्तीस गणिका महत्तरिनिके नाम क्रमतैं जाननें ॥२७८॥

आगैं किंपुरुषादि इन्द्रनिकैं सामानिक आदि देवनकी संख्या कहैं हैं;—

इंदसमा हु पडिंदा समाणुतणुरक्खपरिसपरिमाणं ।
चउसोलसहस्सं पुण अट्ठसयं विसदवड्ढिकमो ॥ २७९ ।

इन्द्रसमाः खलु प्रतींद्राः सामानिकतनुरक्षपारिषदप्रमाणं ।
चतुःषोडशसहस्रं पुनरष्टशतं द्विशतवृद्धिकमः ॥ २७९ ॥

अर्थ—इन्द्रनिके समान प्रतीन्द्र हैं एक एक इन्द्र संबंधी एक एक प्रतीन्द्र है बहुरि सामानिक तनुरक्षक पारिषदनिका प्रमाण च्यारि हजार सोलह हजार आठसै दोयसै बधता क्रम लीए है। भावार्थ-एक एक इन्द्रकै सामानिक देव च्यारि हजार हैं। तनुरक्षक सोलह हजार हैं। अभ्यंतर परिषद आठसै हैं। मध्य परिषद हजार हैं। बाह्य बारहसै हैं ॥ २७९ ॥

आगैं तिनकैं सात आनीक कहैं हैं;—

कुंजरतुरयपदादीरहगंधव्वा य णट्टवसहेत्ति ।
सत्तेवय आणीया पत्तेयं सत्त सत्त कक्खजुदा ॥ २८० ॥

कुंजरतुरगपदातिरथगंधर्वाश्च नृत्यवृषभाविति ।
सप्तैव अनीकाः प्रत्येकं सप्त सप्त कक्षयुताः ॥ २८० ॥

अर्थ—हाथी १ घोड़ा १ पयादा १ रथ १ गंधर्व १ नृत्यकी १ वृषभ १ ऐसे सात प्रकार आनीक एक एक के हैं। बहुरि एक एक आनीक सात सात कक्ष जो फौज तिन करि संयुक्त है ॥ २८० ॥

आगैं तिस सेनाके महत्तर कहैं हैं;—

सेणामहत्तरा मुज्जोहा सुग्गीवविमलमरुदेवा ।
सिरिदामा दामसिरी सत्तमदेवो विसालक्खो ॥ २८१ ॥

सेनामहत्तराः मुख्येष्टः सुग्रीवविमलमरुदेवाः ।
श्रीदामा दामश्रीः सप्तमदेवो विशालाख्यः ॥ २८१ ॥

अर्थ—हाथी आदिक जे सेना ताके महत्तर कहिए प्रधान अनुक्रमतैं मुख्येष्ट १ सुग्रीव १ विमल १ मरुदेव १ श्रीदामा १ दामश्री १ सातवां विशाल नाम देव जानना ॥ २८१ ॥

आगैं तिस आनीककी संख्या कहैं हैं;—

अट्ठावीससहस्सं पढमं दुगुणं कमेण चरिमोत्ति ।
सव्विंदाणं सरिमा पण्णपादी असंखमिदा ॥ २८२ ॥

अष्टाविंशसहस्राणि प्रथमं द्विगुणं क्रमेण चरमांतम् ।
सर्वेंद्राणां सदृशाः प्रकीर्णकादयः असंख्यमिताः ॥ २८२ ॥

अर्थ—अट्ठाईस हजार प्रथम कक्ष है। बहुरि दूणा दूणा करि अंत पर्यंत जानना। भावार्थ। हाथी प्रथम फौज विषै अट्ठाईस हजार दूसरा विषै छप्पन हजार ऐसे सातवीं फौज पर्यंत दूणे दूणे जानने। ऐसेही घोड़ादिक जानने। सो प्रकार सर्वही इन्द्रनिके समान आनीक

पाए है। बहुरि चतुर्दिशाविषै सर्व मिलि, इकीसौ आभियोग्य विक्रियाकरि एक समान प्रमाण है ॥ २८२ ॥

आगे व्यंतरनिका नगर जहां पाइए तिन द्वीपनिके नाम कहै है;—

अंजणवरकणयारुगसुवण्णपणमिल्लगवज्जरयणदेसु ।
दिसुदिसिके दारंतरे दीवे भोमिंदणयराणि ॥ २८३ ॥

अंजनवरकनकारुणसुवर्णमनःशिलकवज्ररजतेषु ।
दिक्षुदिक्षि द्वारांतरे द्वीपे भौमेंद्रनगराणि ॥ २८३ ॥

अर्थ—अंजनक १ वरकनकारुण १ सुवर्ण १ मनःशिलक १ वज्र १ रजत १ दिक्षुदिक १ द्वारांतर १ इन आठ द्वीपनिविषै क्रमतैं किन्नरादिकनिके इंद्रनिके नगर है ॥ भावार्थ ॥ किन्नर सुवर्ण इंद्रनिका अंजनक द्वीपविषै नगर है। तहां किंपुरुष इंद्रके तौ दक्षिण दिशाविषै अर किंपुरुषेंद्र उत्तर दिशाविषै नगर जानने ऐसे ही वज्रजातुकादि द्वीपनिविषै कि पुरुषादिकनिविषै इंद्रनिके पहले इंद्रका दक्षिणादिविषै दूसरेका उत्तरादिविषै नगर जानने ॥ २८३ ॥

आगे तिन नगरनिके नाम अर आयाम कहै है;—

भोमिंदके मज्झे पढमो तावसमज्ज चरिमंका ।
पुव्वादिसु जंबुसमा पणपणणयराणि समभागे ॥ २८४ ॥

भौमेंद्रांके मध्ये प्रथमोनावर्तमध्याः चरमांकाः ।
पूर्वादिषु जंबूसमानि पंचपंचनगराणि समभागे ॥ २८४ ॥

अर्थ—व्यंतर इंद्रका जो अंक कहिए नाम सो तो मध्यका नगर विषै जानना अर ताहीकी पूर्वादि दिशानिविषै इंद्रका नामतैं आगे क्रमतैं प्रथमांत आवर्त्त मध्य ऐसे अंतविषै नाम संयुक्त नगरनिके नाम जानने ॥ भावार्थ ॥ किन्नर नामा इंद्र ताके पांच नगर हैं तहां मध्य विषै जो नगर है ताका नाम किन्नरपुर है बहुरि ताकी पूर्व दिशाविषै किन्नरप्रभ नगर है। दक्षिणविषै किन्नरकांत नगर है पश्चिम दिशाविषै किन्नरावर्त नगर है। उत्तरविषै किन्नरमध्य नगर है। ऐसें ही और इंद्रनिके नगरनिके नाम जानने। एक एक इंद्रके पांच पांच नगर हैं ते जंबूद्वीप समान हैं। भावार्थ। एक योजन विस्तारको धरें हैं। बहुरि ते नगर समभूमि विषै पाइए हैं पृथ्वीतैं नीचे वा पर्वतादिके ऊपर नहीं हैं ॥ २८४ ॥

आगे तिन नगरनिका कोट द्वार तिनकी उदयादिक कहै है;—

तप्पायारुदयतियं पणहत्तरिपण्णवीसपंचदलं ।
दारुदओ वित्थारो पंचघणद्धं तदद्धं च ॥ २८५ ॥

तत्प्राकारोदयत्रयं पंचसप्ततिपंचविंशतिपंचदलम् ।
द्वारोदयो विस्तारः पंचघनार्धं तदर्धं च ॥ २८५ ॥

अर्थ—तिन नगरनिका जो प्राकार कहिए कोट ताका उदयादि तीन पिचहत्तरि पचीस पांचका आधा है ॥ भावार्थ ॥ कोट साढा सैंतीस योजन ऊंचा है साढा बारा योजन चौड़ा है

अढ़ाई योजन मोटा है बहुरि तिस कोटके द्वार कहिए दरवाजे तिनकी उदय अर विस्तार पंच धन सवासो ताका आधा अर ताहूका आधा प्रमाण है ॥ भावार्थ ॥ द्वार साढा बासठि योजन ऊंचा है इकतीस योजन चौड़ा है ॥ २८५ ॥

आगैं ताके ऊपरि जो प्रासाद है ताका स्वरूप कहैं हैं;—

तस्सुवरिं पासादो पणहत्तरितुंगओ सुधम्मसहा ।
पणकादिदल तद्दल णव दीहरवासुदय कोस ओगाढा ॥ २८६ ॥

तस्योपरि प्रासादः पंचसप्ततितुंगः सुधर्मसभा ।
पंचहृतिदलं तद्दलं नव दीर्घव्यासोदयाः क्रोशः अवगाढः ॥ २८६ ॥

अर्थ—तिस द्वारके ऊपरि पिचहत्तरि योजन ऊंचा प्रासाद है सोई प्रासादके अग्रभे सुधर्मा नामा सभा कहिए सो पंचमी क्रति पचीस ताका आधा बहुरि ताहूका आधा बहुरि प्रमाण दीर्घ व्यास उदय संयुक्त है ॥ भावार्थ ॥ सुधर्म्मा सभा साढा बारा योजन लंबी है। सवा छ योजन चौड़ी है। नव योजन ऊंची हैं। बहुरि तिसका अवगाढ़ कहिए अधिष्ठान भूमि सो एक कोश है ॥ २८६ ॥

आगैं तिस प्रासादके जे द्वार तिनके उदयादि कहैं हैं;—

तिस्से दारुदओ दुग इगि वासो दक्खिणुत्तरिंदाणं ।
सव्वेसिं णगराणं पायारादीणि सरिसाणि ॥ २८७ ॥

तस्याः द्वारोदयः द्विकमेकं व्यासः दक्षिणोत्तरेंद्राणाम् ।
सर्वेषां नगराणां प्राकारादीनि सदृशानि ॥ २८७ ॥

अर्थ—तिस सुधर्म्मा समाका द्वारका उदय जो ऊंचाई सो दोय योजन है । बहुरि व्या जो चौड़ाई सो एक योजन है । बहुरि दक्षिण इंद्र वा उत्तर इंद्रनिकै सबनिहीकै सर्व नगरनिके प्राकारादिक समान हैं ॥ २८७ ॥

आगैं तिन नगरनिके बाह्य वन कहैं हैं;—

पुरदो गंतूण बहिं चउदिसं जोयणाणि बिसहस्सं ।
इगिलक्खायद तद्दलवासजुदा रम्मवणखंडा ॥ २८८ ॥

पुरादग्त्वा बहिः चतुर्दिशं योजनानि द्विसहस्रं ।
एकलक्षायता तद्दव्यासयुताः रम्यवनखंडाः ॥ २८८ ॥

अर्थ—नगरनैं बाहैं दोय दोय हजार योजन परैं जाइ च्यारि दिशानिविषै एक लाख योजन लंब तातैं पचास हजार योजन चौड़े रमणीक वनखंड कहिए बाग हैं ॥ २८८ ॥

आगैं तिन द्वीपनिविषै पाईए ऐसे गणिकानिके नगर तिनके विस्तार संख्यादिक निरूपैं हैं;—

तत्थेव य गणिकाणं चुलसीदिसहस्सविउलणयराणि ।
संखाण सोम्माण अणेयदीवे समुद्दे य ॥ २८९ ॥

तत्रैव च गणिकानां चतुरशीतिसहस्रविपुलनगराणि।
शेषाणां भौमानां अनेकद्वीपे समुद्रे च ॥ २८९ ॥

अर्थ—तिसही अपनें अपनें इंद्र संबंधी द्वीपविषैं गणिकामहत्तरीनिके नगर हैं। ते अपनी अपनी इंद्रपुरीके दोऊ पार्श्वनिविषैं जाननें। बहुरि ते चौरासी हजार योजन लंबे चौड़े हैं। बहुरि अवशेष जे व्यंतर हैं तिनके नगर अनेक द्वीप वा अनेक समुद्रनि विषैं पाईए हैं॥ २८९॥

आगैं कुलभेद अपेक्षा निलयभेद कहैं हैं;—

भूदाण रक्खसाणं चउद्दस सोलस सहस्स भवणाणि।
सेसाण वाणवेंतरदेवाणं उवरि णिलयाणि ॥ २९० ॥
भूतानां राक्षसानां चतुर्दश षोडश सहस्रे भवनानि।
शेषाणां वानव्यंतरदेवानां उपरि निलयानि ॥ २९० ॥

अर्थ—भूतनिका अर राक्षसनिका चौदह सोलह हजार भवन हैं॥ **भावार्थ** ॥ रत्नप्रभा पृथ्वीके खरभागविषैं भूतनिके चौदह हजार भवन है। बहुरि पंक भागविषैं राक्षसनिके सोलह हजार भवन हैं। बहुरि अवशेष वान व्यंतरदेव हैं तिनके पृथ्वीके ऊपरि निलय कहिए स्थान पाईए हैं॥ २९०॥

आगैं नीचोपपादादि वान व्यंतरनिके विशेष दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

हत्थपमाणे णिच्चुववादा दिगुवासि अंतरणिवासी।
कुभंडा उप्पण्णाणुप्पण्ण पमाणया गंधा ॥ २९१ ॥
हस्तप्रमाणे नीचोपपादाः दिग्वासिनः अंतरनिवासिनः।
कूष्मांडाः उत्पन्ना अनुत्पन्नाः प्रमाणका गंधाः ॥ २९१ ॥

अर्थ—हातप्रमाणविषै नीचोपपाद हैं बहुरि दिग्वासी १ अंतरनिवासी १ कूष्मांड १ उत्पन्न १ अनुत्पन्न १ प्रमाणक १ गंध १॥ २९१ ॥

महगंध भुजग पीदिग आगासुववण्णगा य उवरुवरिं।
तिसु दसहत्थसहस्सं वीससहस्संतरं सेसे ॥ २९२ ॥
महागंधा भुजगाः प्रीतिका आकाशोत्पन्नाश्च उपर्युपरि।
त्रिषु दशहस्तसहस्राणि विंशतिसहस्रांतरं शेषे ॥ २९२ ॥

अर्थ—महागंध १ भुजंग १ प्रीतिक १ आकाशोत्पन्न १ ए सर्व ऊपरि ऊपरि तीनविषैं दश दश हजारके आंतिरै अर अवशेष बीस बीस हजारके आंतिरै जाननें। **भावार्थ**—पृथ्वीतै एक हस्त ऊपरि क्षेत्रविषै नीचोपपाद व्यंतर हैं। तिनकै ऊपरि दश हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषैं दिग्वासी हैं। तिनकै ऊपरि दश हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषैं अंतर निवासी हैं। तिनके ऊपर दस हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषै कूष्मांड है। तिनकै ऊपरि बीस हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविषै उत्पन्न व्यंतर हैं। आगैं ऐसे ही ऊपरि ऊपरि बीस बीस हजार हाथका अंतराल जानना॥ २९२॥

आगैं तिन नीचोपपादादिकनिकी आयु क्रमतैं कहैं हैं;—

दसवरिससहस्सादो सीदी चुलसीदिकं सहस्सं तु ।
पल्लट्ठमं तु पादं पल्लद्धं आउगं कमसो ॥ २९३ ॥
दशवर्षसहस्रात् अशीतिः चतुरशीतिकं सहस्रं तु ।
पल्याष्टमं तु पादं पल्यार्धमायुष्यं क्रमशः ॥ २९३ ॥

अर्थ—दश हजार वर्षतैं लगाय दश दश हजार बधता अस्सी हजार वर्ष पर्यंत बहुरि चौरासी हजार वर्ष बहुरि पल्यका आठवां भाग चौथा भाग पल्यका आधा प्रमाण आयु तिनका क्रमतैं जाननां । **भावार्थ**—नीचोपपादनिका दश हजार दिग्वासीनिका बीस हजार अंतरनिवासीनिका तीस हजार कूष्मांडनिका चालीस हजार उत्पन्ननिका पचास हजार अनुत्पन्ननिका साठि हजार प्रमाणकनिका सत्तरि हजार गंधनिका अस्सी हजार वर्ष प्रमाण आयु है । महा गंधनिका चौरासी हजार वर्ष प्रमाण आयु है जुगलनिका पल्यका आठवां भाग प्रीतिकनिका चौथाई पल्य आकाशोत्पन्ननिका आधापल्य प्रमाण आयु है ॥ २९३ ॥

आगैं व्यंतरनिका निलय भेद कहैं हैं;—

वेंतरणिलयतियाणि य भवणपुरावासभवणणामाणि ।
दीवसमुद्दे दहगिरितरुम्हि चित्तावणिम्हि कमे ॥ २९४ ॥
व्यंतरनिलयत्रयाणि च भवनपुरावासभवननामानि ।
द्वीपसमुद्रे ह्रदगिरितरौ चित्रावन्यां क्रमेण ॥ २९४ ॥

अर्थ—भवनपुर अर आवास अर भवन ए वितरनिके भवननिके तीनही नाम हैं तहां क्रमकरि द्वीप समुद्रनिविषैं भवनपुर पाईए है । बहुरि द्रह पर्वत वृक्ष इन विषैं आवास पाईए हैं बहुरि चित्रापृथिवीविषैं नीचें भवन पाईए हैं ॥ २९४ ॥

आगैं तीन प्रकार निलयनका वर्णन कहैं हैं;—

उड्ढगया आवासा अधोगया वितराण भवणाणि ।
भवणपुराणि य मज्झिमभागगया इदि तियं णिलयं ॥ २९५ ॥
ऊर्ध्वगताः आवासा अधोगता व्यंतराणां भवनानि ।
भवनपुराणि च मध्यमभागगतानीति त्रयं निलयम् ॥ २९५ ॥

अर्थ—जे पृथ्वीतैं ऊंचे स्थानक विषैं पाईए ते आवास जाननें । बहुरि जे पृथ्वीतैं नीचे पाईए ते व्यंतरनिके भवन जानने । बहुरि जे मध्य लोककी समभूमि विषैं पाईए ते भवनपुर कहिए ऐसे तीन प्रकार निलय है ॥ २९५ ॥

आगैं सर्व व्यंतरनिका सदा संभव रहनेका क्षेत्र कहैं हैं;—

चित्तक्खिदिदु जावय केसट्ठय णिरयभोयविरयारं ।
मोत्तूणं इवंति भवणे भवणपुरावासगे जोग्गे ॥ २९६ ॥

चित्रावज्रात: यावत् मेरूदयं तिर्यग्लोकविस्तारं।
भौमा भवंति भवने भवनपुरावासके योग्यं ॥ २९६ ॥

अर्थ—चित्रा अर वज्रा पृथ्वीका मध्य संधितैं लगाय यावत् मेरु गिरिकी उचाई है तहां पर्यंत ऊंचा अर तिर्यक् लोकका जेता विस्तार तहां पर्यंत विस्तारकों धरें जो क्षेत्र तिहविषैं भौम कहिए व्यंतर देव ते अपनें अपनें योग्य भवनविषैं वा भवन पुरविषैं वा आवासविषैं वास करें हैं ॥ २९६ ॥

भवणं भवणपुराणि य भवणपुरावासयाणि केसिंपि।
भवणामरेसु असुरे विहाय केसिं तियं णिलयं ॥ २९७ ॥
भवनं भवनपुरे च भवनपुरावासकानि केषांचित्।
भवनामरेषु असुरान् विहाय केषां त्रयं निलयम् ॥ २९७ ॥

अर्थ—केई व्यंतरनिके तो भवन ही हैं केईनिके भवन अर पुर, हैं केईनिकें भवन अर भवनपुर अर आवास हैं। ऐसे व्यंतरनिके स्थान जाननें। बहुरि भवनवासी देवनिविषैं असुर कुमार बिना अन्य कुलवाले केईक भवन वासीनिके भवन वा भवनपुर वा आवास तीन निलय पाईए है इस कथनतैं पृथ्वीतै नीचे खर भाग पंक भाग विषैं अर पृथ्वी तैं ऊपरि पर्वतादि विषैं अर समभूमि पृथ्वीविषैं व्यंतरनिके अर भवन वासीनिके स्थान पाइए हैं ऐसा जानना ॥ २९७ ॥

आगैं तीन प्रकार निलयनिका व्यासादिक तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

जेट्ठावरभवणाणं वारसहस्सं तु सुद्धपणुवीसं।
बहलं तिसय तिपादं बहलतिभागुदयकूडं च ॥ २९८ ॥
ज्येष्ठावरभवनयोः द्वादशसहस्रं तु शुद्धपंचविंशतिः।
बाहल्यं त्रिशतं त्रिपादं बाहल्यत्रिभागोदयकूटं च ॥ २९८ ॥

अर्थ—ज्येष्ठ अर जघन्य भवननिका विस्तार अठारह हजार अर शुद्ध पचीस योजन हैं। बाहुल्य तीनसै अर त्रिपाद योजन है। बाहुल्यका तीसरा भाग प्रमाण ऊंचा कूट है। भावार्थ। उत्कृष्ट भवन है सो तो बारह हजार योजन चौड़ा तीन सै योजन पृथ्वीतैं छाति पर्वत ऊंचा है। बहुरि तिन भवननिविषै जेता ऊंचाईका प्रमाण कह्या ताके तीसरा भाग प्रमाण ऊंचा कूट पाइए हैं। इस कूट ऊपरि जिन मंदिर हैं ॥ २९८ ॥

जेट्ठभवणाण परिदो वेदी जोयणदलुच्छिया होदि।
अवराणं भवणाणं दंडाणं पण्णुवीसुदया ॥ २९९ ॥
ज्येष्ठभवनाना परितः वेदी योजनदलोच्छ्रिता भवति।
अवराणां भवनानां दंडानां पंचविंशत्युदया ॥ २९९ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट भवननिके चौगिरद आध योजन ऊंची वेदी है। जघन्य भवननिके पचीस धनुष ऊंची वेदी है। जैसे बागके चौगिरद भीति हो है तैसे जो होइ ताका नाम वेदी जानना ॥२९९॥

वट्टादीण पुराणं जोयणलक्खं कमेण एक्कं च ।
आवासाणं विसयाहियबारसहस्स य तिपादं ॥ ३०० ॥
वृत्तादीनां पुराणां योजनलक्षं क्रमेण एकं च ।
आवासानां द्विशताधिकद्वादशसहस्राणि च त्रिपादम् ॥ ३००

अर्थ—गोल आदि आकार रूप जे पुर तिनका क्रम करि उत्कृष्ट विस्तार लक्ष योजन है॥ जघन्य विस्तार एक योजन है। बहुरि गोल आदि आकार रूप जे आवास तिनका उत्कृष्ट विस्तार दोयसै अधिक बारह योजन है। जघन्य विस्तार पौण योजन है ॥ ३०० ॥

आगैं तीनप्रकार निलयनिका विशेषस्वरूप अर व्यंतरनिके आहार उश्वास ताकौं कहैं हैं;—

भवणावासादीणं गोउरपायारणच्चणादिघरा ।
भोम्माहारुस्सासा साहियपणदिण मुहुत्ता य ॥ ३०१ ॥
भवनावासादीनां गोपुरप्राकारनर्तनादिगृहाणि ।
भौमाहारोच्छ्वासः साधिकपंचदिनानि मुहूर्ताश्च ॥ ३०१ ॥

अर्थ—भवन आवासादिकनिकैं दरवाजे कोट नृत्य आदिक गृह पाईए है। बहुरि भौमतैं व्यंतर तिनकैं आहार किछू अधिक पांच दिन भए अर उश्वास किछू अधिक पांच मुहूर्त भए जानना ॥ इति व्यंतरलोक अधिकार समाप्त भया ॥ ३०१ ॥

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचित त्रिलोकसारमें व्यन्तरलोकका अधिकार समाप्त भया ।३।

अथ ज्योतिर्लोकाधिकार ॥ ४ ॥

अथ व्यंतरलोकके अधिकारको निरूपण करि ताकै अनंतर उद्देशको प्राप्त ज्यो ज्योतिष्कलोकका अधिकार निरूपण करनेका है अभिप्राय जाके ऐसा आचार्य सो ताकी आदिविषै प्रथम ज्योतिष्कनिके विंदनिकी संख्या दिखावनेकेलिए ज्योतिष्क लोकके चैत्यालयनिकौं नमस्कार रूप मंगल करै है;—

वेसदछप्पण्णंगुलकदिहिदपदरस्स संखभागमिदे ।
जोइसजिणिंदगेहे गणणातीदे णमंसामि ॥ ३०२ ॥
द्विशतषट्पंचाशदंगुलकृतिहृतप्रतरस्य संख्यातभागमितान् ।
ज्योतिष्कजिनेंद्रगेहान् गणनातीतान्नमस्यामि ॥ ३०२ ॥

अर्थ—दोसै छप्पन अंगुलका वर्गका भाग जगत्प्रतरकौं दिएं जो प्रमाण होइ ताके संख्यातवें भाग प्रमाण असंख्याते जिनेन्द्र मंदिर तिनकौं नमस्कार करौं हौं । भावार्थ—दोसैं छप्पनका वर्ग पणट्ठी ६५५३६ सूच्यंगुलका वर्ग प्रतरांगुल सो पणट्ठी प्रमाण प्रतरांगुलका भाग जगत्प्रतरकौं दिएं जो प्रमाण होय तितनें ज्योतिषी हैं । बहुरि संख्यात ज्योतिषी एक विंबविषै पाइए एक एक विंबविषैं एक एक चैत्यालय पाइए तातैं ज्योतिषीनिके प्रमाणकौं संख्यातका भाग दिएं विंबनिका वा चैत्यालयनिका प्रमाण आवै है तिन चैत्यालयनिकौं नमस्कार करौं हौं ॥ ३०२ ॥

आगैं तिन विंबनिविषैं तिष्टते ज्योतिष्कनिका भेद कहैं हैं;—

चंदा पुण आइच्चा गह णक्खत्ता पइण्णतारा य ।
पंचविहा जोइगणा लोयंतघणोदहिं पुट्ठा ॥ ३०३ ॥
चंद्राः पुनः आदित्या ग्रहा नक्षत्राणि प्रकीर्णकताराश्च ।
पंचविधा ज्योतिर्गणा लोकांतघनोदधिं स्पृष्टवंतः ॥ ३०३ ॥

अर्थ—चंद्रमा १ सूर्य १ ग्रह १ नक्षत्र १ प्रकीर्णक तारा १ ऐसैं पांच प्रकार ज्योतिष्क समूह हैं । ते लोकके अंत घनोदधि वातवलयकौं स्पर्शते हैं । भावार्थ—पूर्व पश्चिम अपेक्षा घनोदधि वातवलय पर्यंत ज्योतिष्कविंब पाईए हैं ॥ ३०३ ॥

आगैं द्वीप समुद्रनिके निरूपण विना ज्योतिष्क निरूपण संभवै नाहीं तातैं ज्योतिष्क विंबनिके आधारभूत जे द्वीप समुद्र तिनकौं च्यारि गाथानिकरि कहै हैं;—

जंबूधादगिपुक्खरवारुणिखीरघदखोदवरदीओ ।
णंदीसररुणअरुणब्भासा वर कुंडलो संखो ॥ ३०४ ॥
जंबूधातकिपुष्करवारुणिक्षीरघृतक्षौद्रवरद्वीपाः ।
नंदीश्वरारुणारुणाभासा वराः कुंडलः शंखः ॥ ३०४ ॥

अर्थ—जंबूद्वीप १ धातुकीखंडद्वीप १ पुष्करवर १ वारुणिवर १ क्षीरवर १ घृतवर १ क्षौद्रवर १ नंदीसुर द्वीपवर १ अरुणवर १ अरुणाभासवर १ कुंडलवर १ शंखवर ॥ ३०४ ॥

तो रुजगभुजगकुसगयकोंचवरादी मणसिला तत्तो ।
हरिदालदीवसिंदुरसियामगंजणयहिंगुलिया ॥ ३०५ ॥

ततो रुचकभुजगकुशगक्रौंचवरादयः मनःशिला ततः ।
हरितालद्वीपसिंदूरश्यामकांजनकहिंगुलिकाः ॥ ३०५ ॥

अर्थ—तहां पीछे रुचकवर १ भुजगवर १ कुशगवर १ क्रौंचवर १ ए अभ्यंतरके सोलह द्वीप हैं तातैं परैं बीचमें असंख्यात द्वीप समुद्र हैं तिनकों छोड़ी अंतके सोलह द्वीपनिके नाम कहे हैं। तहां पीछे मनः शिलाद्वीप १ हरिताल द्वीप १ सिंदूरवर १ श्यामवर १ अंजनवर १ हिंगुलिकवर १ ॥ ३०५ ॥

रूप्पसुवण्णयवज्जयवेलुरियणागभूदजक्खवरा ।
तो देवाहिंदवरा सयंभुरमणो हवे चरिमो ॥ ३०६ ॥

रूप्यसुवर्णकवज्रवैदूर्यकनागभूतयक्षवराः ।
ततो देवाहीद्रवरौ स्वयंभूरमणो भवेत् चरमः ॥ ३०६ ॥

अर्थ—अब रूपवर १ सुवर्णवर १ वज्रवर १ वैदूर्यवर १ नागवर १ भूतवर १ यक्षवर १ देववर १ अहीन्द्रवर १ स्वयंभूरमण १ अंत विषै जानना ॥ ३०६ ॥

लवणंबुहि कालोदयजलही तत्तो सदीवणामुवही ।
सव्वे अड्ढाइज्जुद्धारुवहीमेत्तया होंति ॥ ३०७ ॥

लवणांबुधिः कालोदकजलधिः ततः स्वदीपनामोदधयः ।
सर्वे अर्धतृतीयोद्धारोदधिमात्रा भवंति ॥ ३०७ ॥

अर्थ—समुद्रनिके नाम कहे हैं जंबूद्वीपके परिक्षेपी लवणसमुद्र। बहुरि धातुकी खंडके कालोदक समुद्र बहुरि अन्य द्वीपनिके अपने अपने द्वीपका जो नाम तिसही नामके धारक समुद्र जानने। बहुरि ते सर्व द्वीप समुद्र कितने हैं अढाई उद्धार सागर प्रमाण हैं। भावार्थ—दश कोड़ा कोड़ि दूसरी उद्धार पल्यका एक उद्धार सागर होइ। ऐसे अढाई सागरके जेते रोम तितने द्वीप समुद्र हैं ॥ ३०७ ॥

अब तिन द्वीप समुद्रनिका विस्तार वा आकार निरूपै हैं;—

जंबू जोयणलक्खं वट्टो तद्दुगुणदुगुणसेसेहिं ।
लवणादिहिं परिगिदो सयंभुरमणुवहियंतेहिं ॥ ३०८ ॥

जंबू योजनलक्षः वृत्तः तद्द्विगुणद्विगुणशेषैः ।
लवणादिभिः परिक्षिप्तः स्वयंभूरमणोदध्यंतैः ॥ ३०८ ॥

अर्थ—जंबूद्वीप एक योजन है बहुरि वृत्त कहिए गोल है। बहुरि ताके दूणा दूणा प्रमाण संयुक्त जे लवण समुद्रादिक स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत द्वीप समुद्र तिनकरि परिक्षिप्त कहिए वेष्टित

है। भावार्थ—सर्व द्वीप समुद्रनिके बीचि जंबूद्वीप है सो गोल है। ताकी मध्य विषै चौड़ाईका प्रमाण लक्ष योजन है ताकों वेढें लवण समुद्र है सो तातें दूणा दोय लाख योजन व्यास संयुक्त है। ताकों वेढे धातुकीखंड द्वीप है। सो तातें दूणा च्यारि लाख योजन व्यास संयुक्त है। याही प्रकार द्वीपकों समुद्र वेढ्या समुद्रकों द्वीप वेढ्या दूणा दूणा विस्तार लिएं स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत द्वीप समुद्र गोल आकार जानने ॥ ३०८ ॥

आगें तहां इष्टित द्वीपका वा समुद्रका सूची व्यास अर वलय व्यास ल्यावनेकौं करणसूत्र कहै है:-

रूऊणाहियपदमिददुगसंवग्गे पुणोवि लक्खहदे।
गयणतिलक्खविहीणे वासो वलयस्स सूइस्स ॥ ३०९ ॥

रूपोनाधिकपदमितद्विकसंवर्गे पुनरपि लक्षहते।
गगनत्रिलक्षविहीने व्यासो वलयस्य सूचेः ॥ ३०९ ॥

अर्थ—द्वीप समुद्रनिका इष्ट गच्छका जो प्रमाण ताकों एक जायगा एक घाटि अर एक जायगा एक धरि करि तितने हुए इनिकों परस्पर गुणे जो प्रमाण होइ ताकों लाख करि गुणि एक जायगा शून्य एक जायगा तीन लाख घटाइये तब वलयका अर सूचीका व्यास होइ। भावार्थ—इष्ट द्वीप वा समुद्रतें पहला जो समुद्र वा द्वीप तिहका अंत तट अर ताके सन्मुख इष्ट द्वीप व समुद्रका अंत तट इन दोऊनिकै बीचि जो क्षेत्रका प्रमाण सो वलय व्यास जानना, बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रका सन्मुख दोऊ अंत तटनिके बीच जो क्षेत्र सो सूची व्यास जानना। जैसे कालोदक समुद्रतें पहला धातुकीखंड द्वीप है सो धातुकीखंडका अंत तट अर कालोदकका अंत तटके बीचि जो क्षेत्रका प्रमाण सो सो वलय व्यास है। बहुरि कालोदकका सन्मुख दोय अंत तट तिनिकै बीचि जंबूद्वीप अर दोऊ दिशा संबंधी लवणोद धातुकीखंड कालोदका व्यास जोडें जो क्षेत्र होइ सो कालोदका सूची व्यास है। ऐसेही सर्वत्र जानना। अब इनके ल्यावनेका विधान कहिए है। इष्ट द्वीप व समुद्र जेथवां होइ तीह प्रमाण इहां गच्छ जानना। तामें एक घटाएं जो प्रमाण होइ ताका विरलन कहिए एक एक करि वखेरिए। बहुरि एक एक प्रति दोय दोय दीजिये बहुरि तिनकों परस्पर गुणिएं ऐसे करतें जो प्रमाण होइ ताकों लक्ष करि गुणिए तामें बिंदी घटाइये ऐसे करतें इष्ट द्वीप वा समुद्रका वलय व्यास आवै है। ताका उदाहरण—जैसे जंबूद्वीपतें लगाय कालोदक समुद्र चौथा है सो गच्छ प्रमाण च्यारि भया तामें एक घटाएं तीन सो तीनका विरलन करिए १।१।१। बहुरि एक एक प्रति दोय दोय दीजिए।२।२।२। बहुरि इनकों परस्पर गुणि सब आठ होइ। इनकों लक्ष करि गुणे आठलाख होइ तामें बिन्दी घटाए भी तितने ही रहैं सो कालोदकका वलय व्यास आठलाख योजन है बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्र जेथवां होइ तिस प्रमाण गच्छतें एक अधिक प्रमाणका विरलन करि एक एक प्रति दोय दोइ परस्पर गुणि जो प्रमाण होइ ताकों लक्ष करि गुणि तामें तीन लाख घटाए इष्ट द्वीप वा समुद्रका सूची व्यास हो है। ताका उदाहरण—जैसे कालोदक समुद्र चौथा है। सो गच्छका प्रमाण च्यारि तामें एक मिलाएं पांच सो पांचका विरलन करि १।१।१।१।१। एक एक प्रति दोय २।२।२।२।२। सब परस्पर गुणें बत्तीस होइ इनकों लक्ष करि गुणें बत्तीस लाख

होइ इनमें तीन लाख घटाए गुणतीस लक्ष योजन प्रमाण कालोदक समुद्रका सूचीव्यास है अब यह करण सूत्र कैसें कह्या सो वासना कहिए हैं । तहां वलय व्यासकी वासना ऐसी जंबूद्वीपका व्यास लक्षयोजन तातैं दूणा दूणा लवण समुद्रादिकका व्यास है तातैं एक गच्छ प्रमाण दुवा परस्पर गुणि लब्ध प्रमाणकों जंबूद्वीपका व्यास करि गुणें इष्ट स्थानविषै व्यास हो है इहां किछू हीन अधिक करना नाहीं तातैं गगन हीन कहिए त्रिंदी घटावना क बहुरि सूचीव्यासकी वासना ऐसी है । इष्ट द्वीप वा समुद्रका जो वलय व्यास ताकों दोऊ त दिशा संबंधी व्यास मिलावनेतैं दूणा स्थापिए बहुरि तातैं पहले जे द्वीप वा समुद्र तिनका दिशा संबंधी व्यास मिलाइ दूणा दूणा वलय व्यास स्थापिए । बहुरि जंबूद्वीपके दोय दिशा स

कालोदि	१
धातुकी	८
लवणद्वि	४
तीन स्थान	०
जंबूद्वीप	१
	२९

व्यास नाहीं तातैं वलय व्यासका प्रमाणही स्थापना । बहुरि दूसरे स्थानि स्थापन करना जैसे कालोदकका सूची व्यास स्यावनेका ऐसें स्थापन कर ऐसे स्थापन किएं द्वितीय स्थानविषैं शून्यकी जायगा दोय लाख लि गच्छतैं एक अधिक स्थानभए ऐसे चारि एक अधिक गच्छका परस्पर गु कह्या । बहुरि पदमेत्ते गुणयारे इत्यादि सूत्र करि जोड दिए तहां दोय ल तौ दूसरा स्थानका अर रूवपरिहीणे इस वचन करि एक लाख ए इन दोऊ ऋण घटावनेकौं त लाखका घटावना कह्या ऐसे करते इष्ट स्थानविषैं सूचीव्यास हो है ॥ ३०९ ॥

तैसे ही अभ्यन्तर मध्यम बाह्य सूचीव्यास स्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

लवणादीणं वासं दुगतिगचदुसंगुणं तिलक्खूणं ।
आदिममज्झिमबाहिरसूइत्ति भणंति आइरिया ॥ ३१० ॥

लवणादीनां व्यासं द्विकत्रिकचतुःसंगुणं त्रिलक्षोनम् ।
आदिममध्यमबाह्यसूची इति भणंति आचार्याः ॥ ३१० ॥

अर्थ—लवणादिक समुद्र वा द्वीपनिका वलय व्यासकों दोय तीन च्यारि गुणा करि तातैं तीन लाख घटाए अभ्यन्तर मध्य बाह्य सूची व्यास होइ ऐसे अर्थ कहे हैं । **भावार्थ**—इष्ट द्वीप वा समुद्रके सन्मुख आदिके दोऊ तटनिके बीचि जो क्षेत्र प्रमाण सो अभ्यन्तर सूची व्यास जानना । बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रके सन्मुख दोऊ दिशा संबंधी मध्य प्रदेशनिके बीचि जो क्षेत्र प्रमाण सो मध्य सूची व्यास जानना । बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रके सन्मुख औरे दोऊ तटनिके बीचि जो क्षेत्रप्रमाण सो बाह्यसूची व्यास जानना । तहां लवण समुद्रादिक विषैं इष्ट द्वीप वा समुद्रका वलय व्यासकों दूणा करि तातैं तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यास हो है । भावार्थ है—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दोऊ दिशाका मिलाया हुवा वलय व्यास सो तातैं अभ्यन्तरकी जे पहले भए द्वीप वा समुद्र तिनका दोऊ दिशा संबंधी वलय व्यास जोडें जो प्रमाण होइ तातैं तीन लाख अधिक हो है बहुरि इस अभ्यन्तरकी पहले द्वीप समुद्रनिका दोऊ दिशा संबंधी

बाह्य व्यास तिसतैं दोऊ दिशिनि द्वीप समुद्रका अभ्यन्तर सूचीव्यास हो है। बहुरि दोऊ दिशाका संबंधी दिशिनि द्वीप समुद्रका बाह्य व्यासको दूणा करि तामैं तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यासका प्रमाण आवै। बहुरि दिशिनि द्वीप समुद्रका बाह्य व्यासकों तिगुणा करि तामैं तीन लाख योजन घटाएं बाह्य सूची व्यास हो है। सोई कहिए है। दिशिनि द्वीप वा समुद्रका बाह्य व्यासको दूणा किए तामैं तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यास हो है। सिह अभ्यन्तर सूची व्यासका प्रमाणविषै दिशिनि द्वीप वा समुद्रका दोय दिशानिका बाह्य व्यासका आधा आधा प्रमाण मिलि संपूर्ण बाह्य व्यास दूणा ताकौं मिलाएं तिगुणा बाह्य व्यास तीन लाख घाटि प्रमाण बाह्य सूची व्यास हो है। बहुरि दिशिनि द्वीप वा समुद्रका बाह्य व्यासकों चौगुणा करि तामैं तीन लाख योजन घटाएं बाह्य सूची व्यास हो है सोई कहिए है। दिशिनि द्वीप वा समुद्रका दूणा बाह्य व्यासमैं तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यास हो है तिहविषै दिशिनि द्वीप वा समुद्रका दोऊ दिशा संबंधी बाह्य व्यास मिलैं दूणा बाह्य व्यास मिलाएं चौगुणा बाह्य व्यास तीन लाख घाटि योजन प्रमाण बाह्य सूची व्यास हो है। ऐसा आचार्यका अभिप्राय है॥२१०॥

आगैं बाह्य जो सूचीव्यास तातैं अपेक्षा करि निज निज क्षेत्रका बादर सूक्ष्म परिधि बहुरि बादर सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनेकौं करण सूत्र कहै हैं;—

तिगुणियवासं परिही दहगुणवित्थारवग्गमूलं च।
परिहिहदवासतुरियं बादर सुहुमं च खेत्तफलं॥ २११॥

तिगुणितव्यासः परिधिः दशगुणविस्तारवर्गमूलं च।
परिधिहतव्यासतुरीयं बादरं सूक्ष्मं च क्षेत्रफलम्॥ २११॥

अर्थ—तिगुणा व्यासप्रमाण बादर परिधि है बहुरि दश गुणा व्यासका जो वर्ग ताका मूल प्रमाण सूक्ष्म परिधि हो है। बहुरि परिधिकौं व्यासकी चौथाई करि गुणें बादर वा सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है। **भावार्थ**—परिधिका गिरदका जो प्रमाण सो परिधि कहिए बहुरि समकोटका जो प्रमाण सो क्षेत्रफल कहिए। जैसे योजन रूप क्षेत्रफल होइ तो एक एक योजनके खंड जेते होंहि तितना क्षेत्र फल जानना। ऐसेही अंगुलादि रूप जानना। तहां जो स्थूलपने करि कहिए सो बादर जानना बहुरि सादृश्य करि सूक्ष्मपने करि कहिए सो सूक्ष्म जानना तहां व्यासका जो प्रमाण ताकौं तिगुणा करि बादर परिधि हो है। सो जंबूद्वीपका लक्ष योजन प्रमाण व्यासकौं तिगुणा किए तीन लाख योजन प्रमाण परिधि हो है बहुरि व्यासका जो प्रमाण ताका वर्ग करिए बहुरि ताकौं दश गुणा करिए जो प्रमाण होइ ताका वर्गमूल करिए तब सूक्ष्म परिधि हो है सो जंबूद्वीपका लक्ष योजन व्यास ताका वर्ग हजार कोडि योजन हो है। ताकौं दश गुणा किए दश हजार कोडि होइ है। १०००००००००० बहुरि अंत विषमने वृत्ति कोडि इत्यादि विधान करि याका वर्गमूल करिए तब तीन लाख सोलह कोड सै सत्ताईस सौ योजन होइ—३१६२२७ बहुरि अवशेष रह्यारि लाख चौरासी हजार चार सै इकहत्तरि योजन रहे तिनकौं चौगुणा करि कोश करिए तब उगणीस लाख सैंतीस हजार

आठसै चौरासी १९३७८८४ कोश हुए तिनकौं दूणा मूल अंक रूप परिधिका प्रमाण इस लाख बत्तीस हजार च्यारिसै चौवन ६३२४५४ ताका भाग दिएं तीन कोश होइ बहुरि अवशेष चालीस हजार पांचसै बाईस कोश रहे—४०५२२ तिनकौं दोय हजार गुणा करि इनके भाग करिए तब आठ कोडि दश लाख चवालीस हजार धनुष होइ तिनकौं पूर्व भाग हारका भाग दिए एक सौ अठाईस धनुष भए बहुरि अब शेष धनुष तिरासी हजार आठसै अठासी तिनकै चौगुणा करि हाथ करिए तब तीन लाख गुणासिठ हजार पांचसै बारह हस्त होइ सो इन दिवै पूर्व भागहार संभवै नाही तातैं इनकौं चौवीस गुणा करि अंगुल करिए तब छियासी लाख गुणासिठ हजार दोयसै अडतालीस ८६२९२४८ अंगुल होइ इनकौं पूर्व भागहारका भाग दिएं तेरह अंगुल होइ। बहुरि अवशेष अंगुल च्यारि लाख सात हजार तीनसै छियालीस सो तो भाज्य अर पूर्वोक्त इस लाख बत्तीस हजार च्यारि हजार चारसै चौवन दोयनिकौं तीन लाख सोलह हजार दोइ सै सठाईस करि अपवर्तन किएं भाज्य किछू अधिक एक अर भाग हार दोइ होइ ऐसे किछू अधिक अंगुल भया। या प्रकार जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तीन कोश एक सौ अठाईस धनुष किछू अधिक साढा तेरह अंगुल प्रमाण आया। बहुरि स्थूल परिधिका प्रमाण करि व्यासका चौथा भागकौं गुणें बादर क्षेत्रफल हो है। सो जंबूद्वीपका स्थूल परिधि तीन लाख योजन तीह करि व्यास एक लाखकी चौथाई पचीस हजार योजन गुणें साततै पचास कोडि योजन प्रमाण जंबूद्वीपका बादर क्षेत्रफल हो है। बहुरि सूक्ष्म परिधिका प्रमाण करि व्यासका चौथा भाग गुणें सूक्ष्म क्षेत्र फल हो है। सो जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि दिवै तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तिनकौं व्यासकी चौथाई पचीस हजार करि गुणें साततै निवै कोडि छप्पन लाख पिचहत्तरि हजार ७९०५६७५००० भए बहुरि तीन कोशकौं व्यासकी चौथाई कर गुणें पिचहत्तरि हजार कोश हुआ इनकौं च्यारिका भाग दिएं अठारह हजार सात सै पचास योजन भए तिनकौं पूर्वोक्त योजननिमें मिलाइए ७९०५६९३७५० बहुरि एक सौ अठाईस धनुष तिनकौं व्यासकी चौथाई करि गुणें बत्तीस लाख धनुष हुवा इनकौं आठ हजारका भाग देइ योजन किए च्यारिसै योजन होइ सोभी तिन योजननविषै मिलाइये ७९०५६९४१५० बहुरि तेरह अंगुल अर किछू अधिक आध अंगुल इनकौं समछेद करि मिलाए सत्ताईसका आधा हुवा ½ बहुरि दोय करि तिर्यग अपवर्तन करि पचीस हजारका आधा साढा बारह हजार करि सत्ताईसकौं गुणें तीन लाख सैंतीस हजार पांचसै अंगुल भए इनकौं एक कोशके अंगुल एक लाख बाणवे हजार तिनका भाग दिए साधिक एक कोश होइ। या प्रकार जंबूद्वीपका सूक्ष्म क्षेत्रफल साततै निवै कोडि छप्पन लाख चौराणवै हजार एक सौ पचास योजन अर साधिक एक कोश प्रमाण आया। ऐसे ही सर्व द्वीप समुद्रनिका स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनां ॥३११॥

आगैं जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधिका सिद्ध भए अंक कहैं हैं;—

जोयण सगदुदु छक्किगि तिदयं तिकोसमडदुगि दंडा।
अहियदलंगुलतेरस जंबूए सुहुमपरिणाहो ॥ ३१२ ॥

योजनानां सप्तद्वि षट्कं त्रयं त्रिकोशा अष्टद्व्येकं दंडाः।
अधिकदलागुलत्रयोदश जंबौ सूक्ष्मपरिणाहः ॥ ३१२ ॥

अर्थ—योजननिके सात दोय दोय छह एक तीन ए अंक है ३१६२२७ बहुरि तीन कोश बहुरि आठ दोय एक इन अंक १२८ रूप धनुष बहुरि साधिक आधा तेरह अंगुल इतना सर्व जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधिका प्रमाण है ॥ ३१२ ॥

आगैं तिसही जंबूद्वीपके सूक्ष्म क्षेत्रफलके सिद्ध भए अंक कहैं हैं;—

पण्णासमेकदालं णव छप्पणासगुण्ण णवसत्तरी।
साहियकोसं च हवे जंबूदीवस्स सुहमफलं ॥ ३१३ ॥

पंचाशदेकचत्वारिंशन्नवषट् पंचाशच्छून्यं नवसप्ततिः।
साधिकक्रोशश्च भवेज्जंबूद्वीपस्य सूक्ष्मफलम् ॥ ३१३ ॥

अर्थ—पचास इकतालीस नव छप्पन शून्य गुण्यासी ए तो योजननिके अंक हैं ७९० ५६९४१५० बहुरि साधिक एक कोश इतना जंबूद्वीपका सूक्ष्म क्षेत्रफल है ॥ ३१३ ॥

आगैं जंबूद्वीपका परिधिकी अपेक्षा करि विवक्षित द्वीप या समुद्रका परिधि स्थापनेकौं करण सूत्र पहु है;—

जंबूउभयं परिही इच्छियदीउवहिसूइ संगुणिय।
जंबूवासविभत्ते इच्छियदीउवहिपरिही दु ॥ ३१४ ॥

जंबूभयं परिधी इच्छितद्वीपोदधिसूच्या संगुण्य।
जंबूव्यासविभक्ते ईप्सितद्वीपोदधिपरिधी तु ॥ ३१४ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपका स्थूल सूक्ष्म दोउ परिधिकौं विवक्षित द्वीप वा समुद्रका सूची व्यास करि गुणि जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं विवक्षित द्वीप वा समुद्रका स्थूल वा सूक्ष्म परिधि हो है। ताका उदाहरण। जंबूद्वीपका स्थूल परिधि तीन लाख ३ योजन ताकौं लवण समुद्रका सूची व्यास पांच लाख योजन करि गुणें १५ लक्ष जंबूद्वीपका व्यास लाख योजन ताका भाग दीएं लवण समुद्रका स्थूल परिधि पंद्रह योजन प्रमाण हो है। बहुरि जंबूद्वीपका स्थूल परिधिकौं धातुकी खंडका सूची व्यास तेरह लाख योजन करि गुणें जंबूद्वीपका व्यासका भाग दिए धातुकी खंडका स्थूल परिधि गुणतालीस लाख योजन हो है। बहुरि जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तीन कोश एकसै अठाईस धनुष किछू अधिक साढा तेरह अंगुल तिनकौं लवण समुद्रका सूची व्यास करि गुणें जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं लवण समुद्रका सूक्ष्म परिधि पंद्रह लाख इक्यासी हजार एक सौ गुणतालीस योजनादि प्रमाण हो है। ऐसे ही जंबूद्वीपके स्थूल परिधिका धातुकी खंडका सूची व्यास करि गुणें जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं धातुकी खंडका सूक्ष्म परिधि हो है। ऐसेही अन्य द्वीप वा समुद्रनिका स्थूल सूक्ष्म परिधि स्थापना ३१४

अब स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफलकौं स्थापनेकौं करण सूत्र कहैं हैं;—

अंताइसूइजोगं रुंदद्ध गुणित्त दुप्पडिं किच्चा ।
तिगुणं दसकरणिगुणं वादरसुहुमं फलं वलये ॥ ३१५ ॥
अंतादिसूचियोगं रुंद्रार्धेन गुणयित्वा द्विःप्रतिं कृत्वा ।
त्रिगुणं दशकरणिगुणं वादरसूक्ष्मं फलं वलये ॥ ३१५ ॥

अर्थ—अंत सूची तौ बाह्य सूची व्यास अर आदि सूची अभ्यंतर सूची व्यास इन दोऊनिके प्रमाणका जु योग कहिए जोड़ ताकों रुंद्र कहिए वलय व्यास ताका अर्ध प्रमाण करि गुणिए जो प्रमाण होइ ताहि द्विः प्रति कृत्वा कहिए दोय जायगा स्थापि करि तिस प्रमाणकों एक जायगा तौ तिगुणा करिए तब बादर क्षेत्रफल होइ एक जायगा दश करि गुणा करिए जो प्रमाण था ताका वर्ग करि ताकों दश गुणा करि ताका वर्गमूल ग्रहण करिए । जिस राशिका वर्गमूल ग्रहण करना होइ ताकों करणि कहिए । ऐसे किए सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है या प्रकार वलय वृत्त जो गोलका परिक्षेपी गोल क्षेत्र तिह विषैं बादर अर सूक्ष्म क्षेत्रफल हैं ताका उदाहरण लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पंच लाख योजन अभ्यन्तर सूची व्यास एक लाख योजन इन दोऊनिकों जोड़ें छह लाख भए इनकों रुंद्र जो वलय व्यास इनकों दोय लाख योजन ताका आधा एक लाख तिह करि गुणिए तब छह हजार कोड़ि भए सो इनकों दोय जायगा स्थापि एक जायगा तिगुणा करिए तब लवण समुद्रका बादर क्षेत्रफल अठारह हजार कोड़ि योजन प्रमाण हो है । बहुरि एक जायगा तिह छह हजार कोड़िका वर्ग करि दश गुणा करिए तब छत्तीस कोड़ा कोड़ि भए इनका वर्गमूल ग्रहण किए अठारह हजार नवसै तहेतरि कोड़ि बासठि लाख गुणसठि हजार छैसै दश १८९७३६६५९६१० योजन प्रमाण समुद्रका सूक्ष्म क्षेत्र फल हैं ऐसे ही अन्य द्वीप वा समुद्रनिका बादर सूक्ष्म क्षेत्रफल स्थापना ॥ ३१५ ॥

आगैं जंबूद्वीप प्रमाण करि लवण समुद्रादिकनिके खंड स्थापनेंकों करण सूत्र कहै हैं;—

बाहिरसूईवग्गं अब्भंतरसूइवग्गपरिहीणं ।
जंबूवासविभत्ते तत्तियमेत्ताणि खंडाणि ॥ ३१६ ॥
बाह्यसूचीवर्गः अभ्यन्तरसूचिवर्गपरिहीनः ।
जंबूव्यासविभक्तः तावन्मात्राणि खंडानि ॥ ३१६ ॥

अर्थ—बाह्य सूची व्यासका जो वर्ग तामैं अभ्यन्तर सूची व्यासका वर्ग घटाए जो प्रमाण होइ ताकों जंबूद्वीपके व्यासका भाग दीजिए सो वर्ग राशिके गुणकार भाग हार वर्ग रूप ही होइ। इस न्याय करि इहां भी वर्ग राशि है तातैं जंबूद्वीपके व्यासका जो वर्ग ताका भाग दीजिए सो करतां जो प्रमाण आवै तावन्मात्र जंबूद्वीप समान खंड जानने। ताका उदाहरण—लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन ताका वर्ग पचीस हजार कोड़ि तातैं अर अभ्यन्तर सूची एक लाख योजन ताका वर्ग एक हजार कोड़ि घटाएं चौबीस हजार कोड़ि रहे ताकों जंबूद्वीपका व्यास एक लाख योजन ताका वर्ग एक हजार कोड़ि ताका भाग दिएं चौबीस भए सोई लवण समुद्रके जंबूद्वीपके समान खंड करिए तो चौबीस खंड हो हैं। ऐसे ही अन्य द्वीप वा समुद्रनि विषै जानने ॥३१६॥

आगें अन्य प्रकार करि जंबूद्वीप समान गोल स्थापनेको करण सूत्र रूप दोय गाथा कहे हैं;—

कदजणमला बारससलागगुणिदे दु वलयखंडाणि ।
बाहिरसूइसलागा कदी सदंतासिला खंडा ॥ ३१७ ॥
स्वैक्यशून्य द्वादशशलाकगुणितास्तु वलयखंडानि ।
बाह्यसूचीशलाका कृतेः सदंतासिलानि खंडानि ॥ ३१७ ॥

अर्थ—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका वलय व्यास जितने लक्ष प्रमाण कह्या सोई इहां शलाकाका प्रमाण जानना सो एक घाटि शलाकाका प्रमाणकौं बारह करि गुणिए। बहुरि ताकौ शलाका प्रमाण करि गुणिए तब जंबूद्वीप समान गोलखंड हो है। ताका उदाहरण। लवण समुद्रका वलय व्यास दोय लाख योजन है सो शलाकाका प्रमाण दोय जानना। बहुरि एक घाटि शलाकाका प्रमाण एक ताकौं बारह गुणा किएं बारह ताकौं शलाका प्रमाण दोय करि गुणें चौवीस भए सोई लवण समुद्र विषैं जंबूद्वीप समान खंड कल्पें चौवीस हो हैं। ऐसेंही अन्यत्र जानना। बहुरि बाह्य सूची व्यास जितने लक्ष प्रमाण होइ तीह प्रमाण सूची शलाका कहिए ताका वर्ग किएं जो प्रमाण होइ तितना जंबूद्वीपनैं लगाइ तिस विवक्षित द्वीप वा समुद्र पर्यंत क्षेत्र विषैं सर्व जंबूद्वीप समान खंडनिका प्रमाण जानना। ताका उदाहरण—लवणसमुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन है सो लवण समुद्रकी सूची शलाका पांच जानणी ताका वर्ग पचीस सोई जंबूद्वीपतैं लवण समुद्र पर्यंत सर्व क्षेत्र विषैं जंबूद्वीप समान पचीस खंड हो हैं। एक जंबूद्वीपका चौईस लवण समुद्रके ऐसें पचीस खंड जानने ॥ ३१७ ॥

याही प्रकार अन्यत्र भी जानने;—

बाहिरसूई वलयव्वासूणा चउगुणिदइट्ठवासहदा ।
इगिलक्खवग्गभजिदा जंबूसमवलयखंडाणि ॥ ३१८ ॥
बाह्यसूची वलयव्यासोना चतुर्गुणितेष्टव्यासहता ।
एकलक्षवर्गभक्ता जंबूसमवलयखंडानि ॥ ३१८ ॥

अर्थ—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका बाह्य सूची व्यासका प्रमाणमैंसौं वलय व्यासका प्रमाण घटाइए। बहुरि ताकौं चौगुणा इष्ट वलय व्यास करि गुणिएं। बहुरि एक लाखका वर्गका भाग दीजिए जो प्रमाण होइ तितनें जंबूद्वीप समान गोल खंड जानने। ताका उदाहरण। लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन तामें वलय व्यास दोय लाख योजन घटाएं तीन लाख योजन ताकौं चौगुणा वलय व्यास आठलाख करि गुणें चौईस हजार कोडि इनकौं एक लाखका वर्ग एक हजार कोडि ताका भाग दिएं चौईस भए। सोई लवण समुद्र विषैं जंबूद्वीप समान खंड कल्पें चौईस हो हैं। ऐसें अन्यत्र जानने ॥ ३१८ ॥

आगें समुद्रनिका रसविशेष कहैं हैं;—

लवणं वारुणिनियमिदि कालदुगंतिमसयंभुरमणमिदि ।
पत्तेयजलमुवादा अवसेसा होंति इक्खुरसा ॥ ३१९ ॥

लवणं वारुणिवरयमिति क्षीरद्विकमनिमिषसयंभूरमणमिति ।
प्रत्येकजलस्वादा अवशेषा भवंति इक्षुरसाः ॥ ३१९ ॥

अर्थ—लवण समुद्र वारुणी आदि तीन समुद्र ऐसे च्यारि समुद्र बहुरि कालोदक पुष्करवर अंतका स्वयंभूरमण समुद्र ए तीन क्रमतैं प्रत्येक अपनें अपनें नामके अनुसारि स्वाद धरै है। बहुरि जल स्वाद धरै है। अवशेष इक्षुरस स्वादको धरै हैं। **भावार्थ**—लवण समुद्रविषैं जो जल है ताका स्वाद लवण समान है। वारुणीवरविषैं स्वाद मदिरावत् है। क्षीरवरविषैं स्वाद दुग्धवत् है। घृतवरविषैं स्वाद घृतवत् है ऐसे च्यारि तो अपनें नामके अनुसारि रसको धरै है। बहुरि कालोदक पुष्करवर स्वयंभूरमण इन तीनों विषै जल है ताका स्वाद जल समान ही है। बहुरि असंख्यात समुद्र तिनविषैं जो जल है ताका स्वाद सांठिका रस समान है॥ ३१९॥

आगैं तिन समुद्रनिविषैं जलचर जीवनिका संभवने न संभवनेकों हेतुपूर्वक कहैं हैं;—

जलयरजीवा लवणे कालेयंतिमसयंभुरमणे य ।
कम्ममहीपडिबद्धे ण हि सेसे जलयरा जीवा ॥ ३२० ॥

जलचरजीवा लवणे कालेऽतिमस्वयंभुरमणे च ।
कर्ममहीप्रतिबद्धे न हि शेषे जलचरा जीवाः ॥ ३२० ॥

अर्थ—जलचर जीव लवण समुद्रविषैं बहुरि कालोदकविषैं बहुरि अंतका स्वयंभू रमण-विषैं पाईए हैं। जातैं ए तीन समुद्र कर्मभूमि संबंधी हैं। बहुरि अवशेष सर्व समुद्र भोगभूमि संबंधी हैं भोगभूमिविषैं जलचर जीवोंका अभाव है। तातैं इन तीन विना अन्य समुद्रनिविषैं जलचर जीव नाहीं हैं॥ ३२०॥

आगै स्थान निर्देश करि तीन समुद्रनिविषैं मत्स्यनिका शरीरकी अवगाहना कहैं हैं;—

लवणदुगंतसमुद्दे णदीमुहुवहिम्हि दीह णव दुगुणं ।
दुगुणं पणसय दुगुणं मच्छे वासुदयमद्धकमं ॥ ३२१ ॥

लवणद्विकांत्यसमुद्रे नदीमुखोदधौ दैर्घ्यं नव द्विगुणं ।
द्विगुणं पंचशतं द्विगुणं मत्स्ये व्यासोदयौ अर्धक्रमौ ॥ ३२१ ॥

अर्थ—लवणादि दोय समुद्रनिविषैं बहुरि अंतका समुद्रविषैं जहां नदी प्रवेशका मुखविषैं बहुरि समुद्रका मध्यविषै क्रमतैं नव ताका दूणा तिनका दूणा पांचसै ताका दूणा मत्स्यनिका शरीर लंबा है। तातैं अर्द्ध प्रमाण व्यास है व्याससै आधा शरीर ऊंचा है। **भावार्थ**—मत्स्यनिके शरीरनिकी लंबाई लवण समुद्रविषैं जहां नदीनिका प्रवेश हो है तहा तीरविषैं तौ नव योजन है। बहुरि समुद्रका मध्य भागविषैं अठारह योजन है। बहुरि कालोदक समुद्रविषै नदी प्रवेशरूप तीरविषैं तौ अठारह योजन अर मध्य भागविषै छत्तीस योजन है बहुरि स्वयंभू रमणविषै पांचसै योजन मध्यविषैं हजार योजन है। बहुरि सर्वत्र जो लंबाईका प्रमाण कह्या तातैं आधा चौड़ाईका प्रमाण है। बहुरि चौड़ाईके प्रमाणतैं आधा उंचाईका प्रमाण है॥ ३२१॥

अब मनुष्य क्षेत्र इतर क्षेत्रके विभागका अर कर्मभूमि भोगभूमिकी मर्यादाको प्राप्त होते जे दोय पर्वत तिनका स्वरूप निरूपण करता संता तिनहीके विभागको दृढ करनेकों तीन गाथा कहैं हैं;—

पुक्खरसयंभुरमणाणद्धे उत्तरसयंपहा सेला।
कुंडलरुचगद्धं वा सव्वे पुव्वं परिक्खित्ता ॥ ३२२ ॥
पुष्करस्वयंभूरमणयोरर्धे उत्तरस्वयंप्रभौ शैलौ।
कुंडलरुचकार्धं वा सर्वे पूर्वं परिक्षिप्ताः ॥ ३२२ ॥

अर्थ—पुष्करार्धविषे स्वयंभूरमणार्द्धविषे मानुषोत्तर स्वयंप्रभ पर्वत हैं। भावार्थ—पुष्कर नाम द्वीपका वलय व्यासका अर्द्ध भागविषे बीचि मानुषोत्तर नाम पर्वत है। बहुरि स्वयंभूरमण द्वीपका वलय व्यासका अर्द्धभागविषे बीचि स्वयंप्रभ नामा पर्वत है। कैसे हैं? कुंडल रुचकार्ध सिव कहिए जैसे कुंडल वर द्वीपविषें बीचि कुंडल गिरि है। बहुरि रुचक वर द्वीपके बीचि रुचक गिर है तैसे ही जाननें। बहुरि ए सर्व पर्वत पूर्व अपनें अपनें अभ्यन्तरवर्ती जे द्वीप वा समुद्रनिकों परिक्षेप करि बेढि करि जैसे नगरकों बेढि कोट हो है तैसे तिष्ठे हैं ॥ ३२२ ॥

मणुसुत्तरोत्ति मणुसा मणुसुत्तरलंघणसत्तिपरिहीणा।
परदो सयंपहोत्ति य जहण्णभोगावणीतिरिया ॥ ३२३ ॥
मानुषोत्तरांतं मनुष्याः मानुषोत्तरलंघनशक्तिपरिहीनाः।
परतः स्वयंप्रभांतं च जघन्यभोगावनितिर्यंचः ॥ ३२३ ॥

अर्थ—मानुषोत्तर पर्वत पर्यंत अढाई द्वीपविषे हो मनुष्य हैं ते मनुष्य मानुषोत्तर पर्वतकों उलंघन शक्तिकरि हीन हैं। मानुषोत्तर पर्वतकों उलंघि किसी मनुष्यकी जानेकी सामर्थ नाहीं। बहुरि इस मानुषोत्तर पर्वतके परें स्वयंप्रभ नामा पर्वत पर्यंत जघन्य भोगभूमियां तिर्यंच हैं ॥ ३२३ ॥

कम्मावणिपडिबद्धो बाहिरभागो सयंपहगिरिस्स।
वरओगाहणजुत्ता तसजीवा होंति तत्थेव ॥ ३२४ ॥
कर्मावनिप्रतिबद्धो बाह्यभागः स्वयंप्रभगिरेः।
वरावगाहनयुक्ताः त्रसजीवा भवंति तत्रैव ॥ ३२४ ॥

अर्थ—स्वयंप्रभ नामा पर्वतते परे जो बाह्य भाग सो कर्म भूमि संबंधी है। भावार्थ—स्वयंप्रभ पर्वतके परे कर्मभूमि पाइए है बहुरि उत्कृष्ट शरीरकी अवगाहना संयुक्त त्रस जीव तहां ही बाह्यविषे पाइए हैं ॥ ३२४ ॥

आगें इस गाथाका अपर अर्द्धविषे कह्या जो उत्कृष्ट अवगाहन ताकों एक इन्द्रियका अवगाहनपूर्वक कहैं हैं;—

अधियसहस्सं बारस तिचउत्थेयं सहस्सयं पउमे।
संखे गोम्हिय भमरे मच्छे परदेहदीहो दु ॥ ३२५ ॥

अधिकसहस्सं द्वादश त्रिचतुर्यमेकं सहस्रकं पद्मे ।
संखे प्रेम्मे भ्रमरे मत्स्ये वरदेहदीर्घं ॥ ३२५ ॥

अर्थ—साधिक हजार बारह तीन चतुर्थ भाग एक एक हजार योजन प्रमाण सहस्रपत्र भ्रमर मच्छविषै उत्कृष्ट शरीरका दीर्घपना हो है । भावार्थ—एकेन्द्रीविषै कमलका साधिक हजार योजन बेंद्रीविषै शंखका बारह योजन तेन्द्रीविषै प्रेम्म जो सहस्रपद्म नामा जीव ताका पौण योजन चौन्द्रीविषै भ्रमरका एक योजन पंचेन्द्रीविषै मनुष्यका एक हजार योजन शरीरकी उंचाईका उत्कृष्ट प्रमाण जानना ॥ ३२५ ॥

आगें तिनहीके व्यास अर उदय कहैं हैं;—

वासेगिं कमले संख मुहुदओ चउपंचचरणमिह गोम्ही ।
वासुदओ दिग्घट्ठमतद्दलमलिए तिपाददलं ॥ ३२६ ॥
व्यास एकं कमले शंखे मुखोदयौ चतुःपंचचरणं इह प्रेम्मे ।
व्यासोदयौ दीर्घाष्टमतद्दलमलौ त्रिपाददलम् ॥ ३२६ ॥

अर्थ—कमल नालविषै व्यास एक योजन है सो समान गोल आकार है तातैं तामें बाहुल्य भी तितना ही जानना । बहुरि शंखविषै मुख व्यास व्यारि योजन अर उदय जो उंचाई सो पांच चरण कहिए पांचका चौथा भाग ताका सवा योजन प्रमाण जानना । बहुरि इहां प्रेम्मविषै व्यास जो दैर्घ्य ताके आठवें भाग सो तीन योजनका बत्तीसवां भाग प्रमाण अर उदय दीर्घ ताके सोलवें भाग सो तीन योजनका चौसठियां भाग प्रमाण जानना । बहुरि भ्रमरविषै व्यास त्रिचरण कहिए तीन चौथा भाग ताकी पौण योजन प्रमाण अर उदय जो उंचाई सो दल कहिए आध योजन प्रमाण जानना । तहां वासो तिगुणी परिही इत्यादि करणसूत्र करि कमलका क्षेत्रफल स्याईए है । तहां एक योजन व्यास ताकों तिगुणा किएं तीन योजन परिधि हो है । याकों व्यासकी चौथाई पाव योजन करि गुणें पौण योजन होइ । याकों हजार योजन उंचाईकरि गुणें साढा सातसै योजन प्रमाण कमलका क्षेत्रफल हो है ॥ ३२६ ॥

आगें शंखका क्षेत्रफल स्यावनेंकों करणसूत्र कहैं हैं;—

आयामकदी मुहदलहीणा मुहवासभद्धवग्गजुदा ।
तिगुणा वेदेण हदा संखावत्तस्स खेत्तफलं ॥ ३२७ ॥
आयामकृतिः मुखदलहीना मुखव्यासअर्धवर्गयुता ।
त्रिगुणा वेदेन हता संखावर्तस्य क्षेत्रफलम् ॥ ३२७ ॥

अर्थ—उंचाईका प्रमाणका वर्ग करिए तामें मुख व्यासका अर्द्ध प्रमाण घटाइए जो प्रमाण रहै तामें मुख व्यासका अर्द्ध प्रमाणका वर्ग मिलाइए जो प्रमाण होइ ताको दूणा करिए जो प्रमाण होइ ताकों वेद करि गुणिए ऐसे किएं शंखावर्त क्षेत्रका क्षेत्रफल हो है । सो इहां उंचाई बारह योजन ताका वर्ग एक सौ चवालीस योजन तामें मुख व्यास व्यारि योजनका आधा दोय योजन घटाएं एक

सौ तियालीस योजन तामें मुख व्यासकी आधा दोय योजन ताका वर्ग च्यारि मिलाएं एकसौ छियालीस योजन याकों दूणा किएं दोयसै बाणवें योजन इनको वेधका प्रमाण पांच चौथा भाग तिनकरि गुणें च्यारि करि अपवर्त्तन किएं तेहत्तरिको पांच गुणा करिए तीनसै पैसठि योजन प्रमाण संख्यका क्षेत्रफल हो है। इहां एह सूत्र कैसे भया? सो वासनारूप मुरज क्षेत्रफल आदि करि विधान है सो संस्कृत टीकातैं जाननां। बहुरी तेइन्द्री चौइन्द्री पंचेन्द्रीनिका घनरूप क्षेत्रफल भुजकोटि व इत्यादि करण-सूत्र करि हो है सो लंबाई चौड़ाईको परस्पर गुणें जो जो प्रमाण होइ तितना तितना क्षेत्रफल जाननां। तहां तेइन्द्री जूंका सत्ताईस योजन इक्यासीसै बाणवेका भाग दीजिए इतना क्षेत्रफल है। चौइन्द्री भ्रमरका तीन योजनका आठवां भाग प्रमाण क्षेत्रफल है पंचेन्द्री मत्स्यका १२५००० ००० साढा बारा कोडि योजन प्रमाण क्षेत्रफल हो है। अब इहां एकेन्द्रियादि जीवनिका घनरूप क्षेत्रफलनिका अल्प बहु प्रदेश जाननेंकों कहिए हैं। तहां अति अल्प तेइन्द्रीका घनफल है। तहां एक योजनके सात लाख अडसिठ हजार अंगुल होइं तौ सत्ताईस योजनका इक्यासीसै बाणवै भागविषैं एक भागके केते अंगुल होहिं। तहां घनरूप राशिके गुणकार घनरूप ही होइ सो सात लाख अडसिठ हजारका घनकरि गुणिए तब अंगुल होइं ७६८०००।७६८००।७६८००० बहुरि सूच्यंगुल तौ प्रमाणांगुल है अर इहां शरीरका प्रमाण व्यवहार अंगुलतैं है। सो पांचसै व्यवहार अंगुलका एक सूच्यंगुल होइ। अर घनरूप राशिका भागहार भी घन रूप होइ तातैं पांचसैका घनका भाग दीजिए ५००।५००।५०० बहुरि इहां तीनों जायगा की छह बिन्दी ऊपर अंगुलनिके प्रमाणकी छह बिंदीका अपवर्तन किए ऐसा भया ७६८ ८ ८ बहुरि दोय जायगा सात सै अडसिठ थे तिनकी जायगा तीन करि संभेदन किएं दोयसै छप्पन अर तीन भए २५६ ३ १२८ ७६८००० बहुरि दोय दोयसै छप्पनकों परस्पर गुणें पणही ६५५३६ भए तिनकों सत्ताईसके नीचें इक्यासी बाणवेका भागहार था तिनकरि अपवर्त्तन किएं आठ भए। बहुरि तीन जायगा पांचका परस्पर गुणें एकसौ पचीसका भागहार भया तिनकरि सात लाख अडसठि हजारका गुणकारका अपवर्त्तन किएं इकसठिसै चवालीस भए। अर दोय जायगा तीनका गुणकार था तिनकों परस्पर गुणें नव भए तब ऐसे भया २७।८।६।४४।९ ऐसे सत्ताईस आठ इकसठिसै चवालीस नव इनकों परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ ताकों एक बार संख्यात स्थापि तिहकरि घनांगुलकों गुणें तेन्द्रीका खात फल हो है। ताकी सहनानी ऐसी ६ ३ इहां घनांगुलकी सहनानी ऐसी ६ संख्यातकी ऐसी ३ जाननी। बहुरि ऐसेही चौइन्द्रीका खात फल करनां। तहां इकासिटसै चवालीस गुणाकारकों तहां घनफलविषैं आठका भागहार है तातैं आठका अपवर्तन किएं सातसै अडसठिका गुणकार होइ ऐसे पैसठि हजार पांचसै छत्तीस अर सातसै अडसठि अर नव तीन इनका परस्पर गुणनेतैं जो प्रमाण होइ तितना घनांगुलका भया। सो ते-इन्द्रीके गुणकारतैं संख्यात अधिक भया ऐसे चौइन्द्रीकों घनांगुलका दोय बार संख्यातका गुणकार जाननां। ताकी सहनानी ऐसी ६ ३३ ऐसेही बेन्द्रीके तीन बार ६ ३३३ चौइन्द्रीके चार बार ६ ३३ ३३ पंचेन्द्रीके पाच बार ३३३३३ संख्यातका गुणाकारपना गुणकों जाननां ॥ ३२७ ॥

ऐसे उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रसंग करि एकेंद्रियादिक जीव पृथ्वी आदि विशेषरूप हैं तिनका उत्कृष्ट वा जघन्य आयुका कहनेके अर्थि तीन गाथा कहैं हैं;—

सुद्धखरभूजलाणं बारस बावीस सत्त य सहस्सा ।
तेउतिए दिवसतियं सहस्सतियं दस य जेट्ठाओ ॥ ३२८ ॥

शुद्धखरभूजलानां द्वादश द्वाविंशतिः सप्त च सहस्राणि ।
तेजस्त्रये दिवसत्रयं सहस्रत्रयं दश च ज्येष्ठम् ॥ ३२८ ॥

अर्थ—शुद्ध खर पृथ्वी जल इनका बारह बाईस सात हजार वर्ष अर तेज आदित्रिकोंका तीन दिन तीन हजार दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आयु है । भावार्थ—मृत्तिका आदि शुद्ध पृथ्वीकायिकका बारह हजार वर्ष, पाषाण आदि खर पृथ्वी कायिकका बाईस हजार वर्ष जल कायिकका सात हजार वर्ष, तेज कायिकका तीन दिन, वात कायिकका तीन हजार वर्ष, वनस्पति कायिकका दश हजार वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयु है ॥ ३२८ ॥

वासदिणमास वाससमुगुणवण्णं छक्क तियलजेट्ठाओ ।
मरुआण पुव्वकोडी णव पुव्वंगा सरिसपाणं ॥ ३२९ ॥

वर्षदिनमासाः द्वादशैकोनपंचाशत् षट्काः त्रिकलघ्वेषु ।
मरुतां पूर्वकोटिः नव पूर्वांगानि सरीसृपाणाम् ॥ ३२९ ॥

अर्थ—वर्ष दिन मास बारह गुणपचास छह त्रिकलघ्वनिका ज्येष्ठ आयु है । भावार्थ—तेइंद्रीका बारह वर्ष, तेइंद्रीका गुणपचास दिन, चौइंद्रीका छह महिना प्रमाण, उत्कृष्ट आयु है । बहुरि [illegible] प्रमाण उत्कृष्ट आयु है सो एक पूर्वांग चौरासी लाख वर्ष प्रमाण जानना ॥३२९

बारसहि बादालं सहस्समाणाहि परिसउरगाणं ।
अंतोमुहुत्तमवरं कम्मभवीणरतिरिक्खाऊ ॥ ३३० ॥

द्वादशभिः द्वाचत्वारिंशत् सहस्रमानानि परसुरगाणाम् ।
अन्तर्मुहूर्तमवरं कर्मभवीनरतिरश्चामायुः ॥ ३३० ॥

अर्थ—बहुरि बियालीस हजार प्रमाण पंची उत्तमनिका आयु है । —भावार्थ—[illegible] हजार वर्ष, उत्तम [illegible] बियालीस हजार वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयु है । बहुरि शुद्ध पृथ्वी आदि देवनि वर्ष [illegible] कर्मभूमि मनुष्य वा तिर्यंचनिका जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ॥ ३३० ॥

[illegible] विकल्प करि अब जिनिका यह विशेष जानना है,—

जिणवरा इगिविगला संमुच्छणगब्भजा होंति णरा दु ।
अंतरसुरा संखा तिरिया तव्वजतिरिया ॥ ३३१ ॥

[illegible] मनुष्याः [illegible] ।
अन्तरसुराः संख्याः तिरश्चः तद्वजतिरश्चः ॥ ३३१ ॥

अर्थ—नारकी एकेन्द्री विकलत्रय सम्मूर्छनपंचेन्द्री ए नपुंसक वे
मिथ्या मनुष्य तिर्यंच अर देव ए नपुंसक बिना शेष वेदी ही हैं। बहुरि
तिर्यंच तीनों वेदके धारक हो हैं। आगैं प्रसंगका प्रमाणरूप अर्थका
ज्योतिर्लोकका अधिकारका प्रतिपादन करैं हैं ॥ ३३१ ॥

तहां तारादिकनिका स्थिति स्थान तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

णउदुत्तरसचसए दस सीदी चदुदुगे तियचउ
तारिणसंसिरिक्खबुहा सुक्कगुरुंगारमंदगदी ॥

नवयुत्तरसप्तशतानि दश अशीतिः चतुर्द्वयके त्रिकचतु
तारेनशशिऋक्षबुधाः शुक्रगुरुंगारमंदगतयः ॥ ३३२

अर्थ—निर्वे अधिक सातसै विषै उपरि दश असी च्यारि दोय
विषै जाइ करतैं तारा इन शशि ऋक्ष बुध शुक्र गुरु अंगार मंदगति
चित्रा पृथ्वीतैं लगाइ सातसै निर्वे योजन ऊपरि सौ तारे हैं। बहुरि तिन
कहिए सूर्य है। बहुरि तिनतै असी योजन ऊपरि शशि कहिए चंद्रमा
योजन ऊपरि ऋक्ष कहिए नक्षत्र हैं। बहुरि तिनतैं च्यारि योजन ऊ
तीन योजन ऊपरि शुक्र है। बहुरि तिनतैं तीन योजन ऊपरि गुरु
तिनतै तीन योजन ऊपरि अंगार कहिए मंगल है। बहुरि तिनतैं तीन यो
शनीश्वर है। ऐसे ज्योतिषी तिष्ठे हैं ॥ ३३२ ॥

अवसेसाण गहाणं णयरीओ उवरि चित्तभू
गंतूण दुइरणीणं विथाले होंति णिवाओ ॥

अवशेषाणां ग्रहाणां नगर्य उपरि चित्राभूमितः ।
गत्वा बुधशन्योः विचारे भवंति निवासाः ॥ ३३३ ।

अर्थ—अट्ठासी ग्रहनिविषै अवशेष तिनकी नगरी उपरि उप
अर शनीश्वर इन दोऊनके बीचि अंतराल क्षेत्रविषै वासती है ॥ ३३३

अत्थइ णगी अवसये विसादो तारगादि सा
जोइसपडलबहुं दसगादियं जोयणाण गयं

अर्थ

आगैं प्रकीर्णक तारानिका प्रकार अंतराल निरूपण है;—

तारंतरं जहण्णं तेरिच्छे कोससत्तभागो दु ।
पण्णासं मज्झिमयं सहस्समुक्कस्सयं होदि ॥ ३३५ ॥

तारांतरं जघन्यं तिर्यक् क्रोशसप्तभागस्तु ।
पंचाशत् मध्यमकं सहस्रमुत्कृष्टकं भवति ॥ ३३५ ॥

अर्थ—तारातैं ताराके बीचि तिर्यगरूप बरोबरिविषै अंतराल जघन्य एक कोशका सातवां भाग, मध्यम पचास योजन, उत्कृष्ट एक हजार योजन प्रमाण हो है ॥ ३३५ ॥

अब ज्योतिषीनिके विमानस्वरूप निरूपै हैं;—

उत्ताणट्ठियगोलगदलसारिसा सव्वजोइसविमाणा ।
उवरिं सुरणगराणि य जिणभवणजुदाणि रम्माणि ॥ ३३६ ॥

उत्तानस्थितगोलकसदृशाः सर्वज्योतिष्कविमानाः ।
उपरि सुरनगराणि च जिनभवनयुतानि रम्याणि ॥ ३३६ ॥

अर्थ—गोलक जो गोला ताका दल कहिए तिस गोलाकौं बीचिमैंसौं विदारि दोय खंड करिए तिसविषै जो एक खंड सो उत्तान स्थित कहिए तिस आधा गोलाकौं ऊंचा स्थापित किया होय चौड़ा ऊपरि अर ताकी अणी नीचे ऐसे घस्या होइ ताका जैसा आकार तिह समान सर्व ज्योतिषीनिके विमान हैं । बहुरि तिन विमाननिके ऊपरि ज्योतिषी देवनिके नगर हैं । ते नगर जिन मंदिरनिकरि संयुक्त हैं । बहुरि रमणीक हैं ॥ ३३६ ॥

आगैं तिन विमाननिका व्यास अर बाहुल्य दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

जोयणमेकट्ठिकए छप्पण्णउदाल चंदरविवासं ।
सुक्कगुरिदरतियाणं कोसं किंचूणकोस कोसद्धं ॥ ३३७ ॥

योजनं एकषष्टिकृते षट्पंचाशदष्टचत्वारिंशत् चंद्ररविव्यासौ ।
शुक्रगुर्वितरत्रयाणां क्रोशः किंचिदूनक्रोशः क्रोशार्धम् ॥ ३३७ ॥

अर्थ—एक योजनका इकसिठ भाग करिए तहां छप्पन भाग प्रमाण तौ चन्द्रमाके विमानका व्यास है । बहुरि अठतालीस भाग प्रमाण सूर्यके विमानका व्यास है । बहुरि शुक्रका एक कोश, बृहस्पतिका किंचित ऊन एक कोश, इतर तीन बुध मंगल शनैश्चर इनका आध कोश प्रमाण विमान व्यास जानना ॥ ३३७ ॥

कोसस्स तुरियमवरं तुरियादियकमेण जाव कोसोत्ति ।
ताराणं रिक्खाणं कोसं बहले तु वासद्धं ॥ ३३८ ॥

क्रोशस्य तुरीयमवरं तुर्यादिकक्रमेण यावत् क्रोश इति ।
तारानां ऋक्षाणां क्रोशं बाहल्ये तु व्यासार्धम् ॥ ३३८ ॥

अर्थ— तारानिका विमाननिका जघन्य व्यास कोशका चौथा भाग प्रमाण है । बहुरि चौथाईं अधिक एक कोश पर्यंत जानना । तहां आध कोश पाछै कोश प्रमाण मध्यम व्यास

चंदो निजषोडशं कृष्णः शुक्लस्य पंचदशदिनांतम् ।
अपस्तनं नित्यं राहुगमनविशेषेण वा भवति ॥ ३४२ ॥

अर्थ—चन्द्रमण्डल है सो अपना सोलहवां भाग प्रमाण कृष्ण अर शुक्ल पंद्रह दिन पर्यं है। भावार्थ—चन्द्रविमानका जो सोलह भागविषैं एक एक भाग एक एक दिनविषैं कृष्णपक्षविषैं श्यामरूप होइ अर शुक्लपक्षविषैं श्वेतरूप होइ स्वयमेव पंद्रह दिन पर्यंत परिनमैं है। तहां चन्द्र विमानका क्षेत्र योजनका छप्पन इकसठिवां भाग प्रमाण $\frac{५६}{६१}$ है तो एक कलाका केता होइ। ताकों सोलहका भाग दिएं आठ करि अपवर्त्तन किएं एक योजनका एकसौ बाईस भाग तामें सात भाग प्रमाण एक कलाका प्रमाण आया $\frac{७}{१२२}$ बहुरि एक कलाका इतना $\frac{७}{१२२}$ प्रमाण तो सोलह कलानिका केता होइ ऐसे दोयका अपवर्त्तन करि गुणें छप्पन इकसठिवां भाग प्रमाण आवै। बहुरि अन्य कोई आचार्यनिके अभिप्रायकरि चंद्रविमानकै नीचे राहुविमान गमन करै तिस राहुका सदा काल ऐसा ही गमन विशेष है जो एक एक कला चंद्रमाकी क्रमतै आगारै ढपाइ है तिहकरि वृद्धि हानि है ॥ ३४२ ॥

आगैं चन्द्रादिकनिके विमानके वाहक कहिये चलावनेवाले देव तिनका आकार विशेष अ तिनकी संख्या कहैं हैं;—

सिंहगयवसहजडिलस्सायारसुरा वहंति पुव्वादिं ।
इंदुरवीणं सोलससहस्समट्ठट्ठमिदरतिये ॥ ३४३ ॥
सिंहगजवृषभजटिलाकाराः सुरा वहंति पूर्वादिम् ।
इंदुरवीणां षोडशसहस्राणि तदर्धार्धकममितरत्रये ॥ ३४३ ॥

अर्थ—सिंह हाथी वृषभ जटिलरूप आकारकों धारि देव हैं ते विमाननिकों पूर्वादि दिशा प्रति वहंति कहिए लेइ चालैं हैं। ते देव चन्द्रमा अर सूर्य इनके तौ प्रत्येक सोलह हजार हैं। एं इनतैं तीनके आधे आधे हैं। तहां ग्रहनिके आठ हजार नक्षत्रनिके च्यारि हजार तारानिके दो हजार विमान वाहक देव जाननें ॥ ३४३ ॥

आगैं आकाशविषैं गमन करते जे केई नक्षत्र तिनके दिशाभेद कहैं हैं;—

उत्तरदक्खिणउड्ढाधोमज्झे अभिजिमूलसादी य ।
भरणी कित्तिय रिक्खा चरंति अवराणमेयं तु ॥ ३४४ ॥
उत्तरदक्षिणोर्ध्वाधोमध्ये अभिजिन्मूलस्वातिभ ।
भरणी कृत्तिका ऋक्षाणि चरंति अवराणामेवं तु ॥ ३४४ ॥

अर्थ—उत्तर १ दक्षिण १ ऊर्ध्व १ अधः १ मध्य १ इनविषैं क्रमतैं अभिजित् १ मू १ स्वाति १ भरणी १ कृत्तिका १ ए पंच नक्षत्र गमन करै हैं। अवराणं कहिए इतरनिके ए अर जे अभिजित आदि पंच नक्षत्र तिनकी ऐसी अवस्थिति है ॥ ३४४ ॥

आगैं तेज तिनिविषैं तिनके दूरि कैसे गमन करै हैं;—

इगिवीसेयारसयं विहाय मेरुं चरंति जोइगणा ।
चंदतियं वज्जिणा सेसा हु चरंति एक्कट्ठे ॥ ३४५ ॥

एकविंशैकादशशतानि विहाय मेरुं चरंति ज्योतिर्गणाः।
चन्द्रत्रयं वर्जयित्वा शेषा हि चरंति एकपथे ॥ ३४५ ॥

अर्थ—इकईस अधिक ग्यारहसै योजन मेरुकों छोडि ज्योतिषीसमूह गमन करैं हैं। भावार्थ—मेरु गिरितैं ग्यारहसै इकईस योजन ऊपरै ज्योतिषी मेरुकी प्रदक्षिणारूप गमन करैं हैं मेरुतैं ग्यारहसै इकईस योजन पर्यंत कोऊ ज्योतिषी न पाईए है। बहुरि चन्द्रमा सूर्य ग्रह इन तीन विना अव शेष सर्व्व ज्योतिषी एक पथविषै गमन करैं हैं। भावार्थ—चन्द्रमा सूर्य ग्रह तो कदाचित् कोई कदाचित् कोई परिधिरूप मार्गविषै भ्रमण करैं हैं। बहुरि नक्षत्र अर तारे ए अपनां अपनां एक ही परिधिरूप मार्गविषै गमन करैं हैं। अन्य अन्य मार्गविषै नाहीं भ्रमण करैं हैं ॥ ३४५ ॥

अब जंबूद्वीपतैं लगाय पुष्करार्द्ध पर्यंत चन्द्रमा सूर्यनिका प्रमाण निरूपै है;—

दो दोवग्गं बारस बादाल बहत्तरिंदुरणसंखा।
पुक्खरदलोत्ति परदो अवट्ठिया सव्वजोइगणा ॥ ३४६ ॥
द्वौ द्विवर्गौ द्वादश द्वाचत्वारिंशत् द्वासप्ततिरिंदुसंख्या।
पुष्करदलांतं परतः अवस्थिताः सर्वज्योतिर्गणाः ॥ ३४६ ॥

अर्थ—दोय दोय वर्ग बारह बियालीस बहत्तरि चन्द्रमा सूर्यनिकी संख्या पुष्करार्द्ध पर्यंत है। भावार्थ—जंबूद्वीपविषै दोय लवण समुद्रविषै च्यारि धातुकी खंडविषै बारह कालोदकविषै बियालीस पुष्करार्द्धविषै बहत्तरि चन्द्रमा हैं। अर इतनें इतनें ही सूर्य है। बहुरि पुष्करार्द्धतैं परैं जे ज्योतिषी देवनिका गण है ते अवस्थित है। कदाचित अपनें अपनें स्थानतैं गमन नाही करैं हैं जहां ही स्थिररूप तिष्ठै है ॥ ३४६॥

आगैं तहां तिष्ठैं हैं जु ध्रुव तारे तिनकों निरूपैं हैं;—

छक्कदि णवतीससयं दसयसहस्सं खवार इगिदालं।
गयणतिदुगतेवण्णं थिरतारा पुक्खरद्धोत्ति ॥ ३४७ ॥
षट्कृतिः नवत्रिंशतं दशकसहस्रं खद्वादश एकचत्वारिंशत्।
गगनत्रिद्विकत्रिपंचाशत् स्थिरताराः पुष्करार्द्धांतम् ॥ ३४७ ॥

अर्थ—छहकी वृत्ति ३६ अर गुणतालीस अधिक सौ १३९ अर दश अधिक हजार १०१० अर बिंदी बारह इकतालीस ४११२० अर बिंदी तीन दोय तरेपन ५३२३० इतने पुष्करार्ध पर्यंत थिर तारे हैं। भावार्थ—जंबूद्वीपविषै छप्पन्न लवण समुद्रविषै एक सौ गुणतालीस धातुकी खंडविषै एक हजार दश कालोदकविषै इकतालीस हजार एकसौ बीस पुष्करार्द्धविषै तरेपन हजार दोयसै तीस ध्रुव तारे हैं। ते कबहूं अपने स्थानतैं गमन नाही करे हैं। जहांके तहां स्थिररूप रहैं हैं ॥ ३४७ ॥

आगैं ज्योतिषी समूहनिके गमनका क्रम विचारैं है;—

सगसगजोइगणद्धं एक्के भागम्हि दीवउवरीणं।
एक्के भागे अद्धं चरंति पंतिक्कमेणेव ॥ ३४८ ॥

स्वकस्वकीयज्योतिर्गणार्धं एकस्मिन् भागे द्वीपोदधीनाम् ।
एकस्मिन् भागे अर्धं चरंति पंक्तिक्रमेणैव ॥ ३४८ ॥

अर्थ—अपनां अपनां ज्योतिषी गणका अर्द्ध तो द्वीप समुद्रनिका एक भागविषै अर अर्द्ध एक भागविषै पंक्तिका अनुक्रम करि विचरै है। **भावार्थ**—जिह द्वीप वा समुद्रविषैं जेते ज्योतिषी हैं तिनविषै आधे ज्योतिषी तो तिह द्वीप वा समुद्रका एक भागविषै गमन करैं हैं आधे एक भाग विषैं गमन करैं हैं। ऐसे पंक्ति प्रति गमन जाननां ॥ ३४८ ॥

आगैं मानुषोत्तर पर्व्वततैं परे चंद्रमा सूर्यनिके अवस्थानका अनुक्रम कहै है;—

मणुसुत्तरसेलादो वेदियमूलादु दीवउवहीणं ।
पण्णाससहस्सेहि य लक्खे लक्खे तदो वलयं ॥ ३४९ ॥
मानुषोत्तरशैलात् वेदिकामूलात् द्वीपोदधीनाम् ।
पंचाशत्सहस्रैश्च लक्षे लक्षे ततो वलयं ॥ ३४९ ॥

अर्थ—मानुषोत्तर पर्व्वततैं परे अर द्वीप समुद्रनिकी वेदीनिके परै सौ पचास हजार योजन जाइ प्रथम वलय है। बहुरि तिस प्रथम वलयतैं परैं लाख लाख योजन परैं जाइ द्वितीयादिक वलय है। **भावार्थ**—मानुषोत्तर पर्व्वततैं पचास हजार योजन व्यास परैं जो परिधि सो बाह्य पुष्करार्द्ध द्वीपका प्रथम वलय है। तिह परैं एक लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो दूसरा वलय है ऐसैं लाख लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो वलय जाननां। बहुरि पुष्कर द्वीपकी अंत वेदिकाके परैं पचास हजार योजन व्यास जाइ जो परिधि सो पुष्कर समुद्रका प्रथम वलय है। तातैं परैं लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो द्वितीय वलय है। ऐसे लाख लाख योजन व्यास परैं जाइ जो परिधि सो वलय जाननां। ऐसै ही अन्य द्वीप समुद्रनिविषैं वलय जाननां ॥ ३४९ ॥

आगैं तिन वलयनविषै तिष्ठते जे चन्द्रमा सूर्य तिनकी संख्या कहैं हैं;—

दीवद्धपढमवलये चउदालसयं तु वलयवलयेसु ।
चउचउवड्ढी आदी आदीदो दुगुणदुगुणकमा ॥ ३५० ॥
द्वीपार्धप्रथमवलये चतुश्चत्वारिंशच्छतं तु वलयवलयेषु ।
चतुश्चतुर्वृद्धयः आदिः आदितः द्विगुणद्विगुणक्रमः ॥ ३५० ॥

अर्थ—मानुषोत्तर पर्व्वततैं बाह्यस्थित जो पुष्करार्ध ताका प्रथम वलयविषै एक सौ चवालीस है। **भावार्थ**—जो मानुषोत्तर पर्व्वत परे पचास हजार योजन परे जाइ जो परिधिविषैं एक सौ चवालीस चन्द्रमा एक सौ चवालीस सूर्य है। ऐसै ही द्वितियादि वलय वलयविषै च्यारि च्यारि वधती चन्द्रमा सूर्य जाननें। १४८। १५२।१५६।१६०।१६४।१६८।१७२। बहुरि उत्तरोत्तर द्वीप वा समुद्रका आदिविषैं पूर्व्व पूर्व्व द्वीप वा समुद्रका आदितै दूणे दूणे क्रमतैं जाननें। जैसे पुष्करार्द्धका आदिविषै एकसौ चवालीस, तातैं दूणें पुष्कर समुद्रका आदि विषैं हैं, तातैं द्वितीयादि वलयविषैं च्यारि च्यारि वधती हैं। ऐसे ही सर्व्वत्र जानने ॥ ३५० ॥

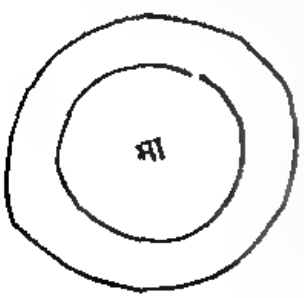

आगैं भिन्न भिन्न परिधिविषै स्थित चन्द्रमानै चंद्रमाका अंतराल सूर्यनै सूर्यका अंतराल परिधि विषै कहै है;—

सगसगपरिधिं परिधिगरविंदुभजिदे दु अंतरं होदि ।
पुण्णम्हि मज्झमूरहिया दु चंदा य अभिजम्हि ॥ ३५१ ॥
स्वकस्वकपरिधिं परिधिगरवींदुभक्ते तु अंतरं भवति ।
पुष्ये सर्वसूर्याः स्थिता हि चंद्राश्च अभिजिति ॥ ३५१ ॥

अर्थ—अपनां अपनां सूक्ष्म परिधिकौ परिधिविषै प्राप्त जे चन्द्र वा सूर्य तिनके प्रमाणका भाग दिएं अंतराल हो है । तहां प्रथम जंबूद्वीपनै लगाय दोऊ तरफका अभ्यन्तर द्वीप समुद्रनिका वा चन्द्रनिका व्यास मिलाएं सात पुष्करार्धका प्रथम वलयका सूची व्यास छियालीस लाख योजन हो है । मानुषोत्तर पर्वतका सूची व्यास पैंतालीस लाख योजन तामैं दोऊ तरफका वलयका व्यास पचास हजार योजन मिलाएं छियानवै लाख योजन हो है । याका 'विक्खंभवग्गदहगुण' इत्यादि करणसूत्रकरि सूक्ष्म परिधिविषै एक कोडि पैंतालीस लाख छियालीस हजार च्यारि योजन प्रमाण होइ ताकौ परिधिविषै प्राप्त सूर्य वा चन्द्रमाका प्रमाण एक सौ बयालीस ताका भाग दिएं एक लाख एक हजार सतसै योजन अर गुणतीस योजनका एक सौ बयालीसवां भाग प्रमाण १०१०
१७ $\frac{}{}$ सूर्यनै सूर्यका चन्द्रनै चन्द्रका अंतराल परिधिविषै बिंबसहित जाननां बहुरि बिंब जो चंद्र वा सूर्यका मंडल तीह बिना अंतराल स्याइये है जो बिंबसहित अंतरालविषै योजन थे तिनमैं सौं एक घटाइए १०१०१६। बहुरि तिस एक योजनकौं गुणतीसका एकसौ बयालीसवां भाग सहित समछेद विधान करि जोडिए तब ये $\frac{}{}$ एकसौ तहेत्तरिका एकसौ बयालीसवां भाग होइ तामैं चन्द्रका बिंब छप्पनका इकसठिवां भाग सो समछेद विधान करि घटाइए $\frac{}{}$ तब चौईसै निन्यानवैंको सित्यासीसै चौरासीका भाग दीजिए इतना भया ऐसे करि चन्द्रमातैं चन्द्रमाका बिंब रहित अंतराल एक लाख एक हजार सोलह योजन अर चौईसै निन्यासी योजनका सित्यासीसै चौरासी भागविषै एक भाग प्रमाण आया । बहुरि तीह एकसौ तहेत्तरिका एकसौ बयालीसवां भागविषै अठतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण सूर्यबिंबकौं समछेद विधान करि घटाए छत्तीसै इकतालीसका सित्यासीसै चौरासीवां भाग आया $\frac{}{}$ सो इतने करि अधिक एक लाख एक हजार सोलह योजन प्रमाण सूर्यनै सूर्यका अंतराल जाननां । ऐसे ही अन्य वलयनिविषै अंतराल स्यावना । बहुरि सर्व वलयसंबंधी सूर्य तौ पुष्य नक्षत्रविषै स्थित है । अर चन्द्रमा अभिजित नक्षत्रविषै स्थित है । भावार्थ—सूर्यका विमान अर पुष्य नक्षत्रका विमान नीचे ऊपरि तिहै हैं । अर चन्द्रमाका विमान अर अभिजित नक्षत्रका विमान नीचे ऊपरि है ॥ ३५१ ॥

आगैं असंख्यात द्वीप समुद्रनिविषै प्राप्त जे चन्द्रादिक तिनकी संख्या ल्यावनेकौं गछका प्रमाण ल्यावना तथा ताका कारणभूत असंख्यात द्वीप समुद्रनिकी संख्याकौं आठ गाथानिकरि कहै है;—

रज्जूदलिदे मन्दिरमज्झादो चरिमसायरंतोत्ति ।
पडदि तदद्धे तस्स दु अब्भंतरवेदिया परदो ॥ ३५२ ॥
रज्जूदलिते मंदरमध्यतः चरमसागरांत इति ।
पतति तदर्धे तस्य तु अभ्यंतरवेदिका परतः ३५२ ॥

अर्थ—राजूकों आधा किएं मेरुका मध्यतैं लगाय अंतका सागर पर्यंत प्राप्त हो है । भावार्थ-मध्यलोक एक राजू है तिस एक राजूकों आधा करिए तब मेरुगिरिका मध्यतैं लगाय अंतका स्वयंभूरमण समुद्रपर्यंत एक पार्श्वविषै क्षेत्र हो हैं । बहुरि तिसकों आधा किएं तिसकी अभ्यन्तर वेदिकाके परै ॥ ३५२ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

दसगुणपण्णत्तरिसयजोयणमुवगम्म दिस्सदे जम्हा ।
इगिलक्खहिओ एक्को पुव्वगसव्वुवहिदीवेहिं ॥ ३५३ ॥
दशगुणपंचसप्ततिशतयोजनमुपगम्य दृश्यते यस्मात् ।
एकलक्षाधिकः एकः पूर्वगसर्वोदधिद्वीपेभ्यः ॥ ३५३ ॥

अर्थ—दश गुणां पिचहत्तरिसै योजन जाइ राजू दीसै है । भावार्थ—स्वयंभूरमण समुद्रकी अभ्यन्तर वेदीतैं पिचहत्तरि हजार योजन परै जाइ तिस आध राजूका अर्द्धभाग हो है । काहेतैं जातैं सर्व्व पूर्व द्वीप वा समुद्रनिके व्यासकों जोड़े जो प्रमाण होइ तातैं उत्तर द्वीप वा समुद्रका व्यास एक लाख योजन अधिक हो है । सो इसही कथनकों स्पष्ट करैं हैं—स्वयंभूरमण समुद्रका बत्तीस लाख योजन प्रमाण व्यास कल्पि करि जंबूद्वीपका आध लाख सहित सर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यासके अंकनिकों जोड़िए ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल । १६ ल । ३२ ल । तब कल्पना करि आध राजूका प्रमाण साढ़ा बासठि लाख योजन भर, बहुरि याकों आधा किएं इकतीस लाख पचीस हजार योजन प्रमाण दूसरी बार आधा किया राजूका प्रमाण होइ तिहविषै पूर्व्वद्वीप समुद्रनिका वलय व्यास ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल । १६ ल । जो जोड़े तीन लाख पचास हजार योजन प्रमाण भया । सो घटाए तिस स्वयंभूरमण समुद्रका अभ्यन्तर वेदिकातैं परै पिचहत्तरि हजार योजन समुद्रमें गए आध राजूका अर्ध हो है । बहुरि तीह द्वितीय बार आधा किया राजू प्रमाण ३१२५०० कौं आधा किएं पंद्रह लाख बासठि हजार पांच सै योजन तीसरी बार आधा किया राजूका प्रमाण हो है । तीहविषै पूर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यास ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल मिलाए साढ़ा चौदह लाख योजन भए । सो घटाएं तिस स्वयंभूरमण द्वीपका अभ्यन्तर वेदितैं एक लाख बारह हजार पांचसै योजन परै द्वीपविषै जाइ तृतीयवार आधा किया हुवा राजू क्षेत्रका प्रमाण हो है ऐसैंही पूर्व पूर्वकों आधा करि तीहविषै पूर्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यास घटाएं जो जो प्रमाण रहै तितना तितना तिस तिस द्वीप वा समुद्रकी अभ्यन्तर वेदि काके परै अर्द्ध चतुर्थवार आदि आधा किया राजू क्षेत्रका प्रमाण जानना ॥ ३५३ ॥

पुणरवि तिण्णि पमाणे पण्णिदरीवब्भंतरंतवेदियापरदो ।
सगदलजुदपण्णरिमरज्जुमोसरिय णिवददि सा ॥ ३५४ ॥

पुनरपि छिन्नायां पश्चिमद्वीपाभ्यंतरवेदिकापरतः।
स्वदलयुतपंचसप्ततिसहस्रमपसृत्य निपतति सा ॥ ३५४ ॥

अर्थ—बहुरि भी दूसरी बार छिन्न कहिए आधा किया राजू ताकौं आधा किएं ताके पीछे जो द्वीप ताकी अभ्यन्तर वेदिकातैं परै अपना आधा साठा सैंतीस हजार करि संयुक्त पिचहत्तरि योजन परै जाइ सो राजू पड़ै है। संदृष्टि—द्वितीय बार छिन्न राजूका प्रमाण इकतीस लाख पचीस हजार योजन ताका आधा किएं पंद्रह लाख बासठि हजार पांचसै योजन होत संते स्वयंभू रमणनै पाछला स्वयंभू रमण द्वीप ताकी अभ्यन्तर वेदिकातै परै निस द्वीपविषै अपना आधा करि अधिक पिचहत्तरि हजारके भएं एक लाख बारह हजार पांचसै सो इतनें योजन जाइ सो राजू पड़ै है ॥३५४॥

अर्द्ध चतुर्थ अष्टमादि राजूके अंश किएं जहां जहां मध्य क्षेत्र होइ तहां तहां राजूका पदना कहिए है;—

दलिदे पुण तदणंतरसायरमब्भंतरत्थवेदीदो।
पडदि सदलचरणण्णिदपण्णचरिदमसयं गंता ॥ ३५५ ॥
दलिते पुनः तदनंतरसागरमभ्यंतरस्थवेदीतः।
पतति स्वदलचरणान्वितपंचसप्ततिदशशतं गत्वा ॥ ३५५ ॥

अर्थ—बहुरि ताकौं आधा किएं ताके अनंतरि अहीन्द्रवरनामा समुद्रकी अभ्यन्तर वेदिकातैं परै अपना आधा अर चौथाई करि संयुक्त पिचहत्तरि दश सैकड़ा प्रमाण योजन जाइ सो राजू पड़ै है। संदृष्टि—तीसरी बार आधा किया सोलह लाख पंद्रह हजार पांचसै १५६२५०० ताकौं आधा किएं सात लाख इकयासी हजार दोयसै पचास योजन होत संते निस स्वयंभूरमण द्वीपके अनंतरि अहीन्द्रवरनामा समुद्र ताका अभ्यन्तर तटतै परै निस समुद्रविषै पिचहत्तरि दश सैकड़ाका पिचहत्तरि हजार भए तापर आधा साढ़ासै तीस हजार अर चौथाई पौणा इकतीस हजार इनकौं मिलाए एक लाख इकतीस हजार दोयसै पचास १३१२५० भए। सो इतने योजन जाइ सो राजू पड़ै है ॥ ३५५ ॥

इदि अब्भन्तरतडदो सगदलतुरियट्ठमादिसंजुत्तं।
पण्णत्तरि सहस्सं गंतूण पडेदि सा तावं ॥ ३५६ ॥
इति अभ्यन्तरतटतः स्वकदलतुर्यांशमादिसंयुक्तम्।
पंचसप्ततिसहस्रं गत्वा पतति सा तावत् ॥ ३५६ ॥

अर्थ—ऐसैं अभ्यन्तर तटतै अपना अर्द्ध चौथा भाग आठवां भाग आदि संयुक्त पिचहत्तरि हजार योजन जाइ जाइ सो राजू तावत् पड़ै है। तहां चौदह राजू प्रमाण किएं अहीन्द्रवर नाम द्वीपका अभ्यन्तर तटतै अपना आधा ३७५००० चौथाई १८७५० आठवां ९३७५ करि संयुक्त पिचहत्तरि ७५००० हजार योजन ४०६२५ जाइ एक पड़ै है बहुरि दोयकै आधा किएं साते तिरेसठि समुद्रकी अभ्यन्तर वेदीतैं अपना आधा चौथाई आठवां योजन आदि करि संयुक्त पिचहत्तरि हजार योजन परै जाइ राजू पड़ै है, बहुरि इकीसवां आधा किएं तिरेसठि समुद्र

पिछला द्वीपकी अभ्यन्तर वेदीतैं अपना अर्द्ध चौथाई आठवां सोलवां बत्तीसवां भाग संयुक्त तिहत्तरि हजार योजन परै जाइ राजू पड़ै है ऐसेही पूर्वै जेता अधिक होइ तातैं आधा आधा अधिकका अनुक्रम करि पिछला समुद्र वा द्वीपकी अभ्यन्तर वेदीतैं परै जाइ सो राजू पड़ै है। तहां आधाका अनुक्रम करि जहां एक योजनका अधिकपणा उपजै तहां पर्यंत तिहत्तरि हजारके अर्द्धछेद संदृष्टि हो है। बहुरि तहां पीछे उपजी जो एक योजन ताके अंगुल करिए तब सात लाख अडसठि हजार होंहि तिनका आधा आधा क्रम करि एक अंगुल उपजै तहां पर्यंत उगणीस अर्द्धछेद हो है। तिन सर्व छेदनिकौं मिलाय ताका नाम संख्यात किया। बहुरि उपजी या एक अंगुल ताके प्रदेश करि आधा आधा अनुक्रम लिएं अधिक करतैं सूच्यंगुलके अर्द्धछेदनिका जो प्रमाण तितनी बार भए एक प्रदेशका अधिकपणा आनि रहै सो संख्यात अर सूच्यंगुलका अर्द्धछेद तितना असंख्यातसमुद्र इत्यादि गाथा कहै हैं ॥३५६॥

मंगेत्तारूवसंजुदमूणमंगुलछिदिप्पमा जाव।
गच्छंति दीवजलही पडदि तदो साद्धलक्खेण ॥ ३५७ ॥

संखेज्जरूवसंजुदसूच्यंगुलछेदप्पमा यावत्।
गच्छंति द्वीपजलधयः पतति ततः सार्धलक्षेण ॥ ३५७ ॥

अर्थ—संख्यातरूप करि संयुक्त ऐसे सूच्यंगुलके अर्द्धछेदनिका जो प्रमाण यावत् होइ तावत् ते द्वीप समुद्र पूर्वोक्त अनुक्रम करि अभ्यन्तर वेदीतैं परै जाइ राजूका पतनरूप छेदकौं प्राप्त हो है। तहां पीछे सर्व द्वीप समुद्रनिविषै डेढ़ लाख १५०००० योजन परै अभ्यन्तर वेदी परै जाइ राजू पड़ै है। कैसे सो कहिए है। अंगुलके सूच्यंगुलविषै आदिविषैं असंख्यातका भाग दीएं असंख्यात करि असंख्यात घन तिहत्तरि हजार ताकौं गुणकार दोय करि गुणे होइ। तहां आधा तिसके अर्द्धछेदका प्रमाण एक प्रदेश घटाइए अर एक आदि गुणकारका प्रमाण एक अधिक करि एक प्रदेश घटि डेढ़ लाख योजन प्रमाण भए। सो संख्यात आदि सूच्यंगुलके अर्द्धछेदनका जैन असंख्यात भए। अभ्यन्तर वेदीतैं इतने परै जाइ राजू पड़ै है। बहुरि आगे के अर्द्धछेदनि वेदी—

[illegible]

[illegible]

ढ्योढ़ लाख ढ्योढ़ लाख योजनका क्रम करि लवण समुद्र पर्यंत असंख्यात द्वीप समुद्रनिकों जाइ करि ॥ ३५७॥

कहा सो कहैं हैं;—

लवणे दु पडिदेकं जंबूए देज्जमादिमा पंच।
दीउदही मेरुसला पयदुवजोगी ण छच्चेदे ॥ ३५८ ॥

लवणे द्विः पतितः एकं जंबौ देहि आदिमाः पंच।
द्वीपोदधयः मेरुशलाः प्रकृतोपयोगिनः न षट् चैते ॥ ३५८ ॥

अर्थ—लवण समुद्रविषैं दोय अर्द्ध छेद परै है। कैसैं? राजूकों आधा आधा करतैं जहां दोय लाखका अर्द्ध छेद करिए तब सतरह १७ बार भए एक योजन उबरै बहुरि एक योजन उबरै। बहुरि एक योजनके अंगुल सात लाख अडसठि हजार तिनके अर्द्धछेद करिए तब उगणीस बार भए एक अंगुल उबरै। बहुरि राजूका अर्धछेद किए प्रथम अर्द्धछेद मेरुकै मध्य पड्या सो ऐसे सतरह उगणीस एक अर्द्धछेद मिलि संख्यात अर्द्धछेद भए। बहुरि एक अंगुल उबर्या था सो यह सूच्यंगुल है। सो सूच्यंगुलके अर्द्धछेद इतने छेछे। इहां पल्यके अर्द्धछेदनिका वर्ग प्रमाण सूच्यंगुलके अर्धछेद जानने। इनकों मिलाए संख्यात अधिक सूच्यंगुलके अर्द्धछेद प्रमाण एक लाख योजनके अर्द्धछेद भए तिनकी सहनानी ऐसी छ इहां संख्यात अधिककी सहनानी ऊपरि ऐसे छेछ १ जाननी। इतने अर्द्धछेदनिविषैं अपनयन त्रैराशिक विधि करि घटाए जो प्रमाण आवै तितनी द्वीप समुद्रनिकी संख्या जाननी। अपनयन त्रैराशिक विधि कैसे सो कहैं है। राजूका अर्द्धछेद इतने कहे छ छेछे १ तहां पल्यके अर्द्धछेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण तौ गुण्य जानना छे बहुरि पल्यके अर्द्धछेदनिका वर्ग तिगुणा सो गुणकार जानना। छे छे २ तहां जो इतने छेछे २ गुणकारकों देखि करि गुणकार प्रमाण राशि घटावनेकों गुण्यविषैं एक घटाइए तौ इतना १ घटावनेके अर्थि गुण्यमैं कितना घटाइये ऐसैं त्रैराशिक करिए तहां प्रमाण राशि ऐसा छेछे २ फलराशि १ इच्छा राशि ऐसा १ फल करि इच्छाकों गुणि प्रमाणका भाग दीजिए तहां भाज्य राशि अर भागहार राशि दोऊनिविषैं पल्य अर्द्धछेदनिका वर्ग ऐसा छेछे तिनकों समान देखि भागहारविषैं उबर्या तीनका अंक ताका भाज्यविषैं असंख्यात उबरे तीह करि साधिक एकको भाग दीजिए। इतना गुण्यविषैं घटाया। ऐसैं करि अपना साधिक एकका तीसरा भाग करि हीन पल्यका अर्द्ध छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण गुण्यको पल्यका अर्द्धछेदनिका वर्ग अर तीन करि गुणे जो प्रमाण होइ इतने सर्व द्वीप समुद्र हैं तिनकी सहनानी ऐसे छे छे छे २ इहां साधिक तृतीय भाग घटावनेकी

सहनानी ऐसी ।) जाननी इनविषैं आधे द्वीप आधे समुद्र जानने ७) ऐसे द्वीप समुद्रनिकी

संख्या कहि अब जाका अधिकार है ताकौं कथनविषैं जोड़ै है। जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण तासौं लाख योजन रहै। तहां लवण समुद्रका अभ्यन्तर तटतैं ड्योढ़ लाख योजन परैं लवण समुद्र-विषैं जाइ अर्द्ध पड़ै है। ऐसैं दो बहुरि ताका आधा लाख योजन भएं लवण समुद्रका अभ्यंतर तटतैं पचास हजार योजन परैं जाइ अर्द्धच्छेद पडै है ऐसैं दोइ अर्द्धछेद जाननें। बहुरि तहां एक जंबूद्वीपकें देहु। **भावार्थ**— दोय अर्द्ध छेदनिविषैं एक अर्द्धछेद तो लवण समुद्रका गिनना। अर एक अर्द्ध विषैं पचास हजार योजन जंबूद्वीपके मिलाएं लाख योजन होइ सो इस अर्द्धछेदकौं जंबूद्वीपहीका गिननां ऐसे ए अर्द्धछेद कहे। बहुरि इन अर्द्धछेदनिविषैं आदिके जंबूद्वीपादि पांच द्वीप समुद्र संबंधी पांच अर्द्धछेद अर मेरुशलाका कहिए राजूकौं आधा करतें प्रथम अर्द्धछेद कह्या सो ऐसै ए छह अर्द्धछेद इहां अधिकाररूप ज्योतिषी विंबनिका प्रमाण ल्यावनेविषैं उपयोगी कार्यकारी नाहीं जातैं तीन द्वीप दोय समुद्रनिके विंबनिका प्रमाण जुदा ग्रहण करैंगे तातैं पांच अर्द्धछेद तो ए कार्यकारी नाहीं अर मेरुशलाका रूप प्रथम अर्द्धछेदनिविषैं कोई द्वीप समुद्र आधा नाहीं तातैं सो कार्यकारी नाहीं ऐसे छह अर्द्धछेद आगैं घटावेंगे ॥ ३५८ ॥

कहां सो कहैं हैं;—

तियहीणसेदिछेदणमेत्तो रज्जुच्छिदी हवे गच्छो।
जंबूदीवच्छिदिणा छरूपजुत्तेण परिहीणो ॥ ३५९ ॥

त्रिकहीनश्रेणिछेदनमात्रः रज्जुछेदः भवेत् गच्छः।
जंबूद्वीपछेदेन षड्रूपयुक्तेन परिहीनः ॥ ३५९ ॥

अर्थ—तीन घाटि जगश्रेणीका अर्द्धप्रमाण एक राजूके अर्द्धछेद हैं। तिनमें जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण ताके अर्द्धछेद छह अर्द्धछेदनि करि संयुक्त घटाएं ज्योतिषी विंबनिकी संख्या ल्यावनेविषैं गच्छका प्रमाण हो है। तहां जगश्रेणी अर्द्धछेद इतने हैं छे छे छे ३ इहां पल्यके

अर्द्धछेदनिकी सहनानी ऐसी छे अर नीचे असंख्यातकी सहनानी ऐसी ७ ताका भागहार जाननां। बहुरि आगैं पल्यके अर्द्धछेदनिका वर्गका गुणाकी सहनानी ऐसी छे छे छे २ ताका गुणकार जानना। बहुरि इनमें तीन अर्द्धछेद घटाएं राजूके अर्द्धछेद होहिं जातैं जगश्रेणीके सातवें

भाग राजू है। सो सातके तीन अर्द्धछेद होहिं ताकी सहनानी ऐसी छे छे छे ३ इहां ऊपरि घटा-

वनेकी सहनानी ऐसी ऽ जाननी बहुरि इन अर्द्धछेदनिका प्रमाणविषैं जंबूद्वीपके अभ्यन्तर पचास हजार योजन अर बाह्य पचास हजार योजन मिलि एक लाख योजन प्रमाण जंबूद्वीप संबंधी अर्द्ध-छेद कह्या था सो इन लाख योजननिके अर्द्धछेद घटाइए। तहां एक लाखके अर्द्धछेद तिनमें छह

कोड़ि सात सात ए ७ ७ कर भई एक योजन दशी। बहुरि एक योजनके अंगुल सात सात अडसठि हजार तिनके अर्धच्छेद कोड़ि सात बावीस लाख भई एक अंगुल उपरे। बहुरि सातूका अर्धच्छेद तीन तिनका वर्ग करना सो ऐसे सप्त उनचास एक अर्धच्छेद लिहि संख्यात अर्धच्छेद भए। बहुरि एक अंगुल उपरां या सो वह सूच्यंगुल है। सो सूच्यंगुलके अर्धच्छेद इतने ही हैं। इहां पल्यके अर्धच्छेदनिका वर्गप्रमाण सूच्यंगुलके अर्धच्छेद जानने। इनकी विरलाए संख्यात अधिक सूच्यंगुलके अर्धच्छेद प्रमाण एक लाख योजनके अर्धच्छेद भए। तिनकी सहनानी ऐसी छे ही। इहां संख्यात अधिकको सहनानी उपरि ऐसी जाननी। इतने अर्धच्छेद सातूके अर्धच्छेदनिकी विरलाए अन्योन्य गुणाकार विधि करि घटाए जो प्रमाण आवै तितनी द्वीप समुद्रनिकी संख्या जाननी। अन्योन्य गुणाकार विधि कैसे? सो कहै है—सातूके अर्धच्छेद इतने कहे ३ सो छे ३ तहां पल्यके अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण सो गुणकार जानना छे छे ३। इहां जो इतने छे छे ३ गुणकारकी देवि करि गुणकार प्रमाण राशि घटावनेकी गुण्यविषै एक घटाइए तो इतना घटावनेके अर्थि गुण्यमेंसी कितना घटाइए ऐसे त्रैराशिक करिए। तहां प्रमाण राशि ऐसा छे छे ३ फलराशि एक १ इच्छा राशि ऐसा छे छे। फल राशि इच्छाकी गुणि प्रमाणका भाग दीजिए, तहां भाज्यराशि अर भागहार राशि दोऊनिविषै पल्यका अर्धच्छेदनिका वर्ग ऐसा छे छे। तिनकी समान देवि भागहार विषै पल्यका तीनका अंक ताका भाज्यविषै संख्यात उपरे तीहकरि साधिक एकका भाग दीजिए, इतना गुण्यविषै घटना। ऐसे करि साधिक एकका तीसरा भाग करि हीन पल्यका अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण गुण्यकी पल्यका अर्धच्छेदनिका वर्ग अर तीनिकरि गुणें जो प्रमाण होइ तामैं तीन घटाइए। इतने सर्वद्वीप समुद्र हैं। तिनकी सहनानी ऐसी छे छे ३। ॐ। इहां साधिक तृतीय भाग घटावनेकी सहनानी ऐसी है जाननी। इन विषै आधे द्वीप आधे समुद्र जाननें। ऐसें द्वीप समुद्रनिकी संख्या कहि अब जाका अधिकार है ताकी कथन विषै जोड़ें हैं। जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण ताके अर्धच्छेद तिनमें छह अर्द्धछेद और मिलाइए, इनकों जोड़ि जो प्रमाण होइ तितने अर्द्धछेद सातूके अर्द्धछेदनिमेंसी घटाए जो प्रमाण होइ तितनां सर्व द्वीप समुद्र संबंधी चंद्र सूर्यादिकनिके प्रमाण ल्यावनेकी गच्छका प्रमाण जानना भावार्थ—यह पूर्व द्वीपसमुद्रनिकी संख्या कही तामैं छह घटाए इहां गच्छका प्रमाण होइ है ॥ ३५९ ॥

आगै तिन ज्योतिषी विंबनिकी संख्या ल्यावनेविषै जो गच्छ कहा ताकी आदि कहै हैं;—

पुक्खरसिंधुभयद्धणं चउघणगुणसयछहत्तरी पभओ।
चउगुणपचओ रिणमवि अडकदिमुहमुवरि दुगुणकमं॥ ३६०॥

पुष्करसिंधुभयार्धनं चतुर्घनगुणशतषट्सप्ततिः प्रभवः।
चतुर्गुणप्रचयः ऋणमपि अष्टकृतिमुखमुपरि द्विगुणक्रमं॥ ३६०॥

अर्थ—स्थानिकनिका जो प्रमाण सो गच्छ कहिए वा पद कहिए। बहुरि गच्छविषै जो पहला स्थानविषै प्रमाण सो आदि कहिए वा प्रभव कहिए वा मुख कहिए। बहुरि स्थान स्थान

प्रति जितनां जितनां वर्ग सो प्रचय कहिए। बहुरि सर्व स्थानकां संबंधी वृद्धिका प्रमाण जि
आदि ताकौं जोड़ें जो प्रमाण होइ सो आदि धन कहिए। बहुरि सर्व स्थानकां संबंधी
जोड़ें जो प्रमाण होइ सो उत्तर धन कहिए। सो इहां पुष्कर नामा समुद्रका आदि धन अ
धन मिलाएं च्यारिका घन चौंसठि तीह करि गुण्या हूवा एक सौ छिहंत्तरि प्रमाण उभय
है सो इहां प्रभव जाननां। बहुरि एक एक द्वीप वा समुद्र प्रति चौगुणा चौगुणा बधती धन
प्रचय जाननां। बहुरि क्षणविषै आठकी कृति चौंसठि तीह प्रमाण तो मुख जाननां।
क्रमतैं द्विगुण द्विगुण बधता है सो प्रचय जाननां। ऐसें धनराशि क्षणराशिकौं जानि धनरा
क्षणराशिकौं घटाएं स्थान स्थानविषै प्रमाण जाननां। तहां पुष्कर समुद्रका आदि धन उत्त
कैसें स्यावनां सो कहिए है—आदितैं आदि दूणा दूणा क्रमतैं कहे थे तातैं पुष्करार्द्ध द्वीपका
बल्यविषै एक सौ चवालीस थे तिनतैं दूणे पुष्कर समुद्रका आदि बल्यविषै हैं। १४४।
इहां मुख जाननां। बहुरि पदहतमुखमादिधनं इस सूत्रकरि गच्छकरि गुण्या हुवा मु
प्रमाण सो आदि धन है। सो इहां बत्तीस बल्य हैं। तातैं गच्छका प्रमाण बत्तीस लिह
मुखकौं गुणें जो मुखविषै दोयका गुणकार था ताकौं बत्तीस करि गुणि अर एकसो चवाटी
आगैं चौंसठिका गुणकार स्थापिए। १४४।६४ इतनां तौ आदि धन जाननां बहुरि "व्येकपद
प्रचयगुणो गच्छ" उत्तरधनं इस सूत्रकरि एक घाटि गच्छका आधा करि चयकौं गुणि तीह
गच्छकौं गुणें उत्तर धन हो है। सो इहां एक घाटि गच्छ इकतीस ३१ ताका आधा ½ करि च
प्रमाण एक एक बल्यविषै च्यारि च्यारि बधती है, तातैं च्यारिकरि गुणिए ३१/२। बहुरि इनकौं
बत्तीसकरि गुणिए, ३१/२ । ४।३२।बहुरि भागहारका दूवा करि गुणकारका चौका अपवर्त्तन किएं दोय
तीहकरि बत्तीसका गुणकार गुणें चौंसठि होइ। ऐसें इकतीसकौं चौंसठि गुणां करिए ३१।
इतनां उत्तरधन हुवा। बहुरि इस उत्तर धनविषै चौंसठि क्षण मिलावनां सो उत्तर धनविषै चौंसठि
गुणकार जानि गुण्यविषै एक मिलाया तब बत्तीसकौं चौंसठि गुणां करिए। इतनां उत्तरधन भया ३२।६
इहां क्षणका मिलावनां बहुरि याहीका घटावनांसो सुगम गणित आवनेके अर्थि करिए है। बहु
आदि धन अर उत्तर धनविषै गुण्य बत्तीस इनकौं मिलाइ एक सौ छिहंत्तरि गुण्य किया अर चौंस
गुणकार किया। ऐसें चौंसठि गुणां एक सौ छिहंत्तरि १७६।६२ प्रमाण पुष्कर समुद्रका उभय
सौ त्रयोदशनिका प्रमाण ल्यावनेके अर्थि जो गच्छ कह्या था ताका प्रभव कहिए आदि जानन
बहुरि तातैं चौगुणां वारुणीवर द्वीपविषै धन जाननां। कैसें सो कहिए है। पूर्व्व आदितैं दूणां
आदि बल्यविषै है सो मुख १४४।२।२ जाननां। बहुरि पदहतमुखमादिधनं इस सूत्र क
करौं इहां बल्य चौंसठि है तातैं गच्छका प्रमाण चौंसठि तीहकरि गुणिए १४४।२।२।६
बहुरि दोय दुवालिनकी पंक्ति गुणें च्यारि होइ १४४।६।४ ऐसें आदि धन भया। बहुरि "व्ये
पदार्द्धप्रचयगुणो गच्छ उत्तरधन" इस सूत्र करि एक घाटि गच्छ प्रमाण बासठि ६३ का
आधा ½ कौं बल्य बल्य प्रति बधती प्रचार ४ का करि गुणिए ½ । ४ बहुरि पाछै
गच्छ बासठि करि गुणिए ।६३।४ बहुरि दोय आदिका अपवर्तन करि दूवा

भया। बहुरि छह अर्द्धछेद इहां उपयोगी न कहि घटाए थे तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकौं परस्पर गुणें चौसठिका वर्ग होइ। बहुरि जगच्छ्रेणीका अर्द्धछेदमैंस्यौं तीन घटाएं राजूके अर्द्धछेद होहिं ऐसा कहि घटाए थे। तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकौं मांडि परस्पर गुणें सातका वर्ग भया। ऐसैं ए सर्व अर्द्धछेद घटाए थे तिन प्रमाण दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें जो जो प्रमाण भया ताका भागहार जाननां। जातैं "विरलिज्जमाणरासिं जेत्तियमेत्ताणि हीणरूवाणि। तेसिं अण्णोण्ण हदी हारो उप्पण्णरासिस्स" ऐसा करणसूत्र पूर्वे कहि आए हैं। ऐसैं गच्छमात्र गुणकारका परस्पर गुणनां भया। बहुरि यामें एक घटाइए ताकी सहनानी ऐसी बहुरि ताकौं एक घाटि गुणकार तीन ताका भाग दीजिए। बहुरि मुखका प्रमाण चौसठि गुणां एकसौ छिहत्तरि तीहकरि गुणिए तब घन राशिका जोड़ दिएं जगत्प्रतरकौं चौसठि गुणां एकसौ छिहत्तरि करि गुणिए अर ताकौं प्रतरांगुलकौं सात लाख अडसठि हजारका वर्ग अर लाखका वर्ग अर चौंसठिका वर्ग अर सातका वर्ग अर तीन करि गुणि ताका भाग दीजिए तामें एक घटाइए इतना संकलित धन=१७६।६४। हो है। इहां जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी=प्रतरांगुलकी ऐसी १

४।७६८०००।७६८०००। १ ल। १ ल। ६४। ६४। ७। ७। ३।

जाननी। बहुरि ऋण राशिका संकलित धन स्याइए तहां गुणाकारका प्रमाण दोय है तातैं पूर्वोक्त गच्छका जितनां प्रमाण तितनां दूवा मांडि परस्पर गुणिए। तहां उपरितन राशि प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी होइ। बहुरि नीचे ऋणरूप राशी तिहविषै सतरह आदि प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें एक लक्ष अर सात लाख अडसठि हजार अर चौसठि अर सात होइ इनका भाग दीजिए। बहुरि इनमैं एक घटाइए, बहुरि मुख चौसठि करि गुणिए, बहुरि एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीजिए ऐसैं करतैं ऋण राशिका संकलित धन चौंसठि गुणां जगच्छ्रेणीकौं सूच्यंगुलकौं सात लाख अडसठि हजार अर एक लाख अर सात अर चौसठि अर एक करि गुणि ताका भाग दीजिए। तामैं एक घटाइए इतनां भया ६४ २।७६८०००।१ल।६४।७१ इहां जगच्छ्रेणीकौं सहनानी ऐसी— सूच्यंगुलकी ऐसी २ जाननी। अब तिस धन राशिविषै जो एकसौ छिहत्तरिकर गुणकार था अर नीचै चौसठिका भागहार था तिन दोऊनिकौं सोलाकरि अपवर्त्तन किएं एकसौ छिहत्तरिकी जायगा ग्यारह हुवा, चौंसठिकी जायगा च्यारि हुवा। बहुरि गुणकारके चौसठिकौं भागहारके चौसठि करि अपवर्त्तन किएं दोऊ जायगा अभाव भया। बहुरि दोय जायगा सात लाख अडसठि हजार अर दोय जायगा लाख तिनकी सोलह बिन्दी स्थापिए। बहुरि अंगुलनिका दोय जायगा सातके अडसठिका अंक रह्या तिनकौं तीनकरि संभेदन करि तिनकी जायगा दोयसै छप्पन लिखिए, आगै तीनका अंक लिखिए। बहुरि दोय जायगा दोयसै छप्पन भए तिनकौं परस्पर गुणें पचासी होइ। बहुरि दोय जायगा तीनका अंक भए अर एक जायगा तीनका अंक आगै था इनकौं परस्पर गुणें सत्ताईस होइ। बहुरि सत्ताईसकौं सातका वर्ग गुणकाम करि गुणें तेरहसै पैंसठि होइ इनकौं जो चौंसठिकी जायगा च्यारि भए थे तिन करि गुणें बावनसै बाणवे होइ। ऐसे करि जगत्प्रतरकौं ग्यारहका गुणकार अर तरांगुलकौं पचासी अर पांच हजार दोय सै बाणवे

आगैं सोलह बिन्दी तिनकरि गुणें जो प्रमाण होइ ताका भागहार दिएं धन राशिका गुणकार
=११
लित धन हो है ४।६५=५२९२०००००००००००००००। बहुरि जंबूद्वीपतैं लगाय पु
रार्द्धपर्यन्त दोदोबगा इत्यादि चंद्रादिकका प्रमाण कह्या २।४।१२।४२।७२। तिनकौं मिलाएं एक
बत्तीस भए। बहुरि मानुषोत्तर पर्वत परैं पुष्करार्द्ध द्वीपविषै चंद्रमानिका प्रमाण स्थापनकों
है। "पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं। पभवजुदं पदगुणिदं पद गणिदं तं वि
णाहि" इस करण सूत्र करि इहां वलय आठ है। तातैं गच्छका प्रमाण आठ तामैं एक घ
७ ताका आधा करि ४ उत्तर जो वलय वलय प्रति बधतीका प्रमाण प्यारि तिहकरि गुणिए
४ अपवर्त्तन करिए तब चौदह भए १४ इनविषै प्रभव जो प्रथम वलयविषै प्रमाणरूप मुख ए
सौ चवालीस जोडिए १५८। बहुरि इनकौं गच्छ आठकरि गुणिए तब बारहसौ चौसठि भए
विषै एकसौ बत्तीस जंबूद्वीप आदिकके मिलाएं तेरहसै छिनवै होइ सो इनको जो पूर्व
संकलित धन भया था तिनमैं घटाइए है। जातैं ऋणस्वरूपं राशेर्धनं इस वचनकरि ऋ
स्यौं घटावनां अर राशिमैं मिलावनां इन दोऊनिका एक अर्थ है। तहां ऋण संकलित धन सहि
तेरहसै छिनवैका समछेद करिए तब ऐसा होइ—१३९६। सू २।७६८०००। १ ७
६४।७।१। सू २।७६८०००।१७।६४।७।१ सो यह गुणकार भागहारादिकका अपवर्त्तनादि
किएं भाज्य राशिकौं परस्पर गुणें संख्यात सूच्यंगुल प्रमाण भया। सो इनकौं पूर्वोक्त ऋण संकलि
धनका भाज्य विषै घटाईए तब ऐसा भया।२।७६८०००।१७।७।६४।१ इहां संख्यात सूच्यंगुल
सहनानी ऐसी २! जाननी। अर आगै घटावनैंकी सहनानी ऐसी—जाननी। ऐसै ऋण संकलि
धनविषै एक जगश्रेणी है। ताका सहित ऋण सहित जो धनसंकलित धन पूर्वै कह्या तीहि
समान छेद करिए तब ऐसा—सू २। ६४। ७६८०००। १७। ७। ६४। ३। ४
७६८०००। ७६८०००।१७।१७७। ७।६४।६४।३। भया। इहांविषै सूच्यंगुल बिना अ
सर्व गुणकारनिकौं सदृशरूप गनि इस प्रमाणकौं संख्यात सूच्यंगुल गुणित जगश्रेणी प्रम
ऋणराशि भया। ताकी सहनानी ऐसी—२ इनकौं पूर्वोक्त धन संकलित ऐसा=४।६५=५२९२।१
इहां सोलह बिंदीनिकी सहनानी ऐसी १६ जाननी। सो इहां जगत्प्रतरविषै श्रेणीकौं श्रेणीका गुणकार
है तातैं दोय बार श्रेणी है। तहां एक जगश्रेणीकौं ऋण राशिकी जगश्रेणीके समान देखि तहां
दूसरी गुणकाररूप जगश्रेणीविषै घटाएं किंचित न्यूनपणा आवै ऐसे करि गुण संकलित धन कहि
गुणकार विषै जोडका प्रमाण ताकौं स्थापि किंचित न्यून किएं संख्यात सूच्यंगुल गुणि
जगश्रेणीकौं हीन अर प्रतर विशेष-न्यून स्थापि गुणा तातैं प्रतरांगुल एतहीं प्रमाणकौं बाहनैं अर्थ
आगै सोलह बिंदीका गुणकार करि ताका भा- दीजिए इतना प्रमाण भया ७ २ ११

इहां जग प्र ११ ... जाननी ऐसी ... जाननी अ ... ऐसी २ ... भागहारको ... स्थापि ... चन्द्रमाका प्रमाण ... गुणे ... प्रमाण होइ ...

करि गुणें ग्रहनिका प्रमाण होइ। एक जायगा अठाईसकरि गुणें नक्षत्रनिका प्रमाण होइ एक जायगा छ्यासठि हजार नवसै पिचहत्तरि कोड़ाकोड़ि करि गुणें तारानिका प्रमाण होइ इन सबनिकों जोड़ें।

=०-२ १।११।१=०२ १।११।१=०२ १।११।८८

४।६५=५२९२।१६।४।६५=५२९२।१६४।६५=५२९२।१६

=०२ १।११।२८=०२ १। ११।६६९७५।१४

४।६५=५२९२।१६ ४।६५=५२९२।१६

जगत्प्रतरकों सांते तीन छह सात दोय पांच अंक अर दश बिंदी अर आगें बारहसै अट्ठानवे इनका गुणकार अर प्रतरांगुल पणट्ठी आगें बावनसै बाणवे सोल्ह बिंदी इनका भागहार भया। सो इतनें सर्व्व ज्योतिषी बिंब हैं।=७३६७२५०००००००००१२९८

४।६५=५२९२०००००००००००००० बहुरि

स्थान सदृश अपवर्त्तन कहिए हीन अधिक अंकनिकों न गणिकरि दाहकी बिषै दाहकी सैंकड़ा बिषै सैंकड़ा इत्यादि यथास्थान अपवर्त्तन करना तिसन्याय करि सात तीनसै आदि दै करि गुणकारके बीस अंक अर पांच दोयसै आदि दैकरि भागहारके बीस अंकनिका अपवर्त्तन करि दोय जायगा अभाव करना। ऐसा मनविषै विचारि 'बेसदछप्पण्णंगुल' इत्यादि सूत्रकरि दोयसै छप्पन अंगुलका वर्ग जो पणट्ठी गुणित प्रतरांगुल ताका भाग जगत्प्रतरकों दीजिए इतनें ४।६५+ ज्योतिषी बिंब है। ऐसा आचार्यनें कह्या। सोई असंख्यात द्वीप समुद्र संबंधी सर्व ज्योतिषी बिंबनिका प्रमाण जानना ॥ ३६१ ॥

आगें एक चंद्रमाका परिवाररूप ग्रहनक्षत्र तारे तिनिका प्रमाण कहैं हैं;—

अडसीदट्ठावीसा गहरिक्खा तार कोडकोडीणं।
छावट्ठिसहस्साणि य णवसयपण्णत्तरिगि चंदे ॥ ३६२ ॥

अष्टाशीत्यष्टाविंशतिः ग्रहऋक्षयोस्ताराः कोटिकोटीनाम्।
षट्षष्टिसहस्राणि च नवशतपंचसप्ततिरेकस्मिन् चंद्रे ॥ ३६२ ॥

अर्थ—अठ्यासी अर अठाईस ग्रह अर नक्षत्र हैं। **भावार्थ**—ग्रह अठ्यासी हैं नक्षत्र अठाईस हैं। बहुरि तारे छ्यासठि हजार नवसै पिचहत्तरि कोड़ाकोड़ी हैं। ६६९७५०००००००००००० इतना एक चंद्रमाका परिवार है ॥ ३६२ ॥

आगें अठ्यासी ग्रहनिका नाम आठ गाथानिकरि कहैं हैं;—

कालविकालो लोहिदणामो कणयकस कणयसंठाणा।
अंतरदो तो कचयव दुंदुभि रत्तणिह रूवणिब्भासो ॥ ३६३ ॥

कालविकालो लोहितनामा कनकाख्यः कनकसंस्थानः।
अंतरदस्ततः कचयव· दुंदुभिः रत्ननिभ रूपनिर्भासः ॥ ३६३ ॥

अर्थ—कालविकाल १ लोहित १ कनक १ कनक संस्थान १ अंतरद १ कचयव १ रूपनिर्भास १ ॥ ३६३ ॥

णीलो णीलब्भासो असस्सट्ठाण कोस कसादी।
वण्णा वंसो संखादिमपरिमाणो य संखवण्णोवि ॥ ३६४ ॥
नीलो नीलाभासोऽश्वोऽश्वस्थानः कोशः कंसादिः।
वर्णः कंसः शंखादिपरिमाणः च शंखवर्णोपि ॥ ३६४ ॥

अर्थ—नील १ नीलाभास १ अश्व १ अश्वस्थान १ कोश १ कंसवर्ण १ कंस १ शंखपरिमाण १ शंखवर्ण ॥ ३६४ ॥

तो उदय पंचवण्णा तिलो य तिलपुच्छ छाररासीओ।
तो धूम धूमकेदिगिसंठाणक्खो कलेवरो वियडो ॥ ३६५ ॥
तत उदयः पंचवर्णस्तिलश्च तिलपुष्पः क्षारराशिः।
ततो धूमो धूमकेतुः एकसंस्थानः अक्षः कलेवरो विकटः ॥ ३६५ ॥

अर्थ—उदय १ पंचवर्ण १ तिल १ तिलपुष्प १ क्षारराशि १ धूम १ धूमकेतु १ एक संस्थान १ अक्ष १ कलेवर १ विकट १ ॥ ३६५ ॥

इय भिण्णसंधि गंठी माण चउप्पाय विज्जुजिब्भणभा।
तो सरिस णिलय कालय कालादीकेउ अणयक्खा ॥ ३६६ ॥
इत्यभिन्नसंधिः ग्रंथिः मानश्चतुःपादो विद्युज्जिह्वो नभः।
ततः सदृशो निलयः कालश्च कालादिकेतुरनयाख्यः ॥ ३६६ ॥

अर्थ—अभिन्नसंधि १ ग्रंथि १ मान १ चतुःपाद १ विद्युज्जिह्व १ नभ १ सदृश १ निलय १ काल १ काल केतु १ अनय ॥ ३६६ ॥

सिंहाउ विउल काला महकालो रुदणाम महरुद्दा।
संताण संभवक्खा सव्वट्ठि दिसाय संति वत्थूणो ॥ ३६७ ॥
सिंहायुर्विपुलः कालो महाकालो रुद्रनामा महारुद्रः।
संतानः संभवाख्यः सर्वार्थी दिशः शांतिर्वस्तूनः ॥ ३६७ ॥

अर्थ—सिंहायु १ विपुल १ काल १ महाकाल १ रुद्र १ महारुद्र १ संतान १ संभव १ सर्वार्थी १ दिशा १ शांति १ वस्तून १ ॥ ३६७ ॥

णिच्चल पलंब णिम्मंत जोदिमंता सयंपहो होदि।
भासुर विरजा तत्तो णिद्दुक्खो वीदसोगो य ॥ ३६८ ॥
निश्चलः प्रलंबो निर्मंत्रो ज्योतिष्मान् स्वयंप्रभो भवति।
भासुरो विरजास्ततो निर्दुःखो वीतशोकश्च ॥ ३६८ ॥

अर्थ—निश्चल १ प्रलंब १ निर्मंत्र १ ज्योतिष्मान १ स्वयंप्रभ १ भासुर १ विरज १ निर्दुःख १ वीतशोक १ ॥ ३६८ ॥

सीमंकर खेमभयंकर विजयादिचउ विमलतत्था य।
विजयण्हु वियसो करिकट्ठिगिजट्ठिभिंगिजाल जलकेदू ॥ ३६९ ॥

तिष्ठते सूर्य सूर्यनिके बीचि अंतराल अर वेदी सूर्यनिविषैं अंतराल स्यावनां। भावार्थ—लवण समु
विषैं च्यारि आदि सूर्य हैं तिनविषैं एक एक परिधिविषैं दोय दोय सूर्य जाननैं तहां लवण स
विषैं अभ्यंतर वेदीतैं गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन अर सैंतीस इकसठिवां भाग परैं
परिधि है तहां सूर्यका विमान है। सो अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है। बहुरि तातैं परैं निन्या
हजार नवसै निन्याणवै योजन अर तेरह इकसठिवां भाग परैं जाइ परिधि है तहां सूर्य विमान है
अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है। बहुरि तातैं परैं गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन
सैंतीस इकसठिवां भाग परैं जाइ लवण समुद्रकी बाह्यवेदी है। ऐसैं इनकौं मिलाएं दोय लाख यो
प्रमाण लवण समुद्रका व्यास हो है। याही प्रकार धातुकी खंडविषैं च्यारि लाख योजन व्यास
तामैं छह जायगा एक एक परिधिविषैं दोय दोय सूर्य हैं। तिनि छहौं परिधिनिके बीचि
सूर्यविषैं पांच अंतराल हैं। तिनका प्रमाण स्यावनां। बहुरि तिस प्रमाणतैं आधा आधा अभ्य
वेदी सूर्यविषैं अर बाह्यवेदी सूर्यविषै अंतराल है सो स्यावनां। याही प्रकार कालोदक स
पुष्करार्द्ध द्वीपविषैं भी अंतरालका प्रमाण स्यावनां ॥ ३७३ ॥

अब चार क्षेत्र कहैं हैं;—

दो दो चंदरविं पडि एकेकं होदि चारखेत्तं तु।
पंचसयं दससहियं रविबिंबहियं च चारमही ॥ ३७४ ॥

द्वौ द्वौ चंद्ररवी प्रति एकैकं भवति चारक्षेत्रं तु।
पंचशतं दशसहितं रविबिंबाधिकं च चारमही ॥ ३७४ ॥

अर्थ—दोय दोय चंद्रमा वा सूर्यप्रति एक चार क्षेत्र सो कितना है? पांचसै दश योजन अर
बिंबका प्रमाणकरि अधिक है। **भावार्थ**—चंद्रमा वा सूर्यका गमन करनैंका जु क्षेत्रगली सो
क्षेत्र कहिए ताका व्यास पांचसै दश योजन अर योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण
५१०$\frac{४८}{६१}$ तिस चार क्षेत्रविषैं गलीनिका प्रमाण आगैं कहेंगे तहां जिस गलीविषै एक चंद्रमा
सूर्य गमन करै तिस ही गलीविषैं दूसरा गमन करै है। तातैं दोय दोय चंद्रमा व सूर्य प्रति एक
चार क्षेत्र है ॥ ३७४ ॥

आगैं तिन चंद्रमा सूर्यनिका जो चार क्षेत्र ताका विभागका नियम कहैं हैं;—

जंबुरविंदू दीवे चरंति सीदिं सदं च अवसेसं।
लवणे चरंति सेसा सगसगखेत्ते व य चरंति ॥ ३७५ ॥

जंबूरवीदव द्वीपे चरंति अशीतिं शतं च अवशेषम्।
लवणे चरंति शेषाः स्वकस्वकक्षेत्रे एव च चरंति ॥ ३७५ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपसंबंधी सूर्य वा चंद्रमा तौ एकसौ असी योजन तौ द्वीपविषैं विचरैं है
अवशेष लवण समुद्रविषैं विचरैं है। बहु अवशेष सूर्य चंद्रमा अपना अपना क्षेत्रही विषैं विचरैं है
भावार्थ—चार क्षेत्रका जो व्यास कह्या तामैं जंबूद्वीपसंबंधी चंद्रमा सूर्यनिका एकसौ असी १८०
योजन तौ जंबूद्वीपविषैं अर नौसै तीस योजन अर अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग लवण

समुद्रविषैं चार क्षेत्रका व्यास जाननां । अवशेष पुष्करार्द्ध पर्यंत द्वीप वा समुद्रसंबंधी चंद्र सूर्य चार क्षेत्र अपनां अपनां द्वीप वा समुद्रही विषैं जाननां ॥ ३७५ ॥

आगैं सूर्य चंद्रनिके वीथी जो गली तिनका प्रमाण कहैं हैं;—

पडिदिवसमेक्कवीथिं चंदादिच्चा चरंति हु कमेण ।
चंदस्स य पण्णरसा इणस्स चउरसीदिसयं वीथी ॥ ३७६ ॥

प्रतिदिवसं एकवीथिं चंद्रादित्याः चरंति हि क्रमेण ।
चंद्रस्य च पंचदश इनस्य चतुरशीतिशतं वीथ्यः ॥ ३७६ ॥

अर्थ—दोय दोय मिलि करि एक एक दिन प्रति एक एक वीथी प्रति चंद्रमा वा विचरैं हैं क्रम करि। तहां चंद्रमाकी पंद्रह वीथी हैं बहुरि इन कहिये सूर्य तापी एकसौ चौरासी गली हैं । भावार्थ—जो चार क्षेत्र कह्या तीहविषैं चंद्रमाकी तो पंद्रह गली हैं, सूर्यकी एक चौरासी गली हैं। तहां एक एक दिन प्रति एक एक गलीविषैं दोय चंद्रमा वा दोय सूर्य गमन करैं हैं ॥ ३७६ ॥

आगैं वीथीनिका अंतराल करि दिवस प्रति गतिविशेषकौं कहैं हैं;—

पथव्यासपिंडहीणा चारक्खेत्ते णिरेकपथभजिदे ।
वीथीणं विच्चालं सगबिंबजुदो दु दिवसगदी ॥ ३७७ ॥

पथव्यासपिंडहीना चारक्षेत्रे निरेकपथभक्ते ।
वीथीनां विचालं स्वकबिंबयुतं तु दिवसगतिः ॥ ३७७ ॥

अर्थ—पथ व्यास पिंड कहिए विवका व्यासकरि गुण्या हुवा वीथीनिका प्रमाण । करि हीन जो चारक्षेत्र तामैं एक घाटि वीथीनिका प्रमाणका भाग दिएं वीथीनिका अंतराल प्रमाण हो है । बहुरि स्वकीय विवप्रमाण तामैं जोडें दिवस गतिका प्रमाण है । तहां सूर्यविव व्यास योजनका अठ्यालीस इकसठिवां भाग ४८/६१ तीह करि वीथीनिका प्रमाण एकसौ चौरासी गुणिएं तब अठ्यासीसै बत्तीसका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ ८८३२/६१ याकौं समुद्र विषैं चारक्षेत्रका प्रमाणविषैं घटाइए तहां पांचसै दश योजनसौं समुद्र किएं इकतीस हजार पांचसै दशका इकसठिवां भाग होय ३१५१०/६१ यामैं सूर्यविव प्रमाण अधिक या ४८/६१ सो जोडें इकतीस हजार एकसौ अठावनका इकसठिवां भाग भया ३१५५८/६१ यामिदै पथव्यासपिंड अठ्यासी बत्तीसका इकसठिवां भाग ८८३२/६१ घटाइए तब बाईस हजार तीनसै एकतीसका इकसठिवां भाग होय २२३१/६१ यातौं एक घाटि वीथीनिक प्रमाण एकसौ तिरासी याका भाग दीएं लब्ध [illegible] भागहार इकसठि [illegible] करि गुण्या [illegible] सर्व्वासयो व्यास [illegible] योजन पाए, सो [illegible] जो सूर्यविवका प्रम [illegible] इकसठिवां भाग प्र [illegible] है आचार्य [illegible]

तीनका पांचवां भाग प्रमाण होइ ९४८६ ऐसैं किएं जो जो प्रमाण आवै सो सो ताप तनय विषयभूत क्षेत्र जाननां। भावार्थ—मेरुगिरिका परिधि इकतीस हजार छसै बाईस योजन है ३१६२२ तीहविषै श्रावण मासविषै जहां अठारह मुहूर्तका दिन बारह मुहूर्तकी रात्रि हो है तहां चौराणवैसै छियासी योजन अर योजनका तीन पांचवां भागविषै तौ एक सूर्यके निमित्ततैं तावड़ा पाईए है। अर ताके सन्मुख इतना ही दूसरे सूर्यके निमित्ततैं तावड़ा है। इन तिनके बीचि अन्तरालविषै तरेसठिसै तेईस योजन अर दोयका पंचम भागविषै अन्धकार है, अर ताके सन्मुख दूसरा अन्तरालविषै इतनाही अन्धकार है इन सबनिको जोईं९४८३।२।।६३२३।२।। ९४८६।।६३२४ ॥ इकतीस हजार छसै बाईस योजन प्रमाण परिधि हो है। ऐसेंही अन्य परिधिनिविषै जाननां। बहुरि विवक्षित परिधिकौं साठिका भाग देइ एक मुहूर्त करि गुणें जो प्रमाण आवै तितना मास प्रति ताप तनका घटतां बधतां क्षेत्रका प्रमाणरूप हानिचय जाननां सो विवक्षित मेरुगिरिका परिधिकौं साठिका भाग देइ एक मुहूर्त करि गुणें पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण हानिचय होइ। एक मासविषै एक मुहूर्त रात्रिदिन कैसें घटै बधै सो कहिए है। एक दिनविषै दोय इकसठिया भाग प्रमाण हानि चय होय तौ साढा तीस दिनौंमें कितना हानिचय होइ ऐसें करतैं अपवर्तन किएं एक मुहूर्त एक मासविषै आवै है। बहुरि साठि मुहूर्तविषैं सर्व परिधिप्रमाणविषैं गमन करै तो एक मुहूर्तविषै कितना क्षेत्रविषै गमन करै ऐसैं परिधिका साठिया भाग प्रमाण एक मुहूर्तविषै गमनक्षेत्रका प्रमाण आवै है। भावार्थ—मेरुगिरिका परिधिविषै श्रावण मासतैं भादव मासविषै पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण तापक्षेत्र घटता है तब क्षेत्र बधता पाइए है। तहां एक सूर्यसंबंधी तापक्षेत्र निवासीमें गुणसठि योजन अर सत्तरह तीसवां भाग अर इतना ही दूसरा सूर्यसंबंधी। बहुरि एक अन्तरालविषैं तमक्षेत्र अट्ठाणवैमें इक्यावन योजन अर ग्यारह सत्तरहां भाग अर इतनाही दूसरा अन्तरालविषैं ऐसैं सर्व मिलि मेरुगिरिका परिधि प्रमाण हो है। ऐसेंही पूस मास पर्यंत दक्षिणायनविषै तो माघ मास पर्यंत पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण आतापक्षेत्र सो घटता घटता अर तमक्षेत्र बधता जाननां। बहुरि माघमें फाल्गुनादिक अषाढ पर्यंत उत्तरायणविषै माघ माघ पर्यंत निरन्तरी तापक्षेत्र बधता बधता अर तमक्षेत्र घटता घटता जाननां। ऐसेंही सर्व परिधिनिविषै ताप तम क्षेत्रका प्रमाण विवक्षित मासविषै स्थापनां। बहुरि इहां पांच परिधिविषै ताप तमनिकी अपेक्षा वर्णन किया है इस ही प्रकार विवक्षित क्षेत्रका परिधिविषै विवक्षित दिन अपेक्षा ताप तम क्षेत्रका प्रमाण स्थापना। बहुरि इहां जंबूद्वीप संबंधी सूर्यनिका लवण समुद्रके व्यासका छठा भाग पर्यंत प्रकाश है तातैं तहां पर्यंत क्षेत्र कह्या है। बहुरि जिस क्षेत्रविषै ताप है तहां दिन जानना जहां तम है तहां रात्रि जाननी ॥ ३८२ ॥

आगैं ऐसे स्थान नु ताप तमका क्षेत्र साधा प्रवर्तनकौं कहै है;—

परिहिम्हि जम्हि विट्ठदि सूरो तप्पेत्त मासमागदगे।
विवरीदो पमाणदि पत्तावागे य मंगदं ॥ ३८३ ॥

परिधौ यस्मिन् तिष्ठति सूर्यः तस्यैव तापमानदलम्।
क्षेत्रपुरतः प्रसर्पति पश्चाद्भागे च शेषार्धम् ॥ ३८३ ॥

अर्थ—जिस परिधिविषै सूर्य तिष्ठै है तिस परिधिहीका तापका जो प्रमाण ताका आधा तौ सूर्यके विम्बतैं आगे फैले है, अवशेष आधा पीछे फैले है। भावार्थ—परिधिनिविषै जो तापका प्रमाण कह्या तीहविषै जहां सूर्यका विम्ब पाईए तिह क्षेत्रके आगैं तिस प्रमाणतैं आधा ताप फैले है, अर आधा पीछे फैले है। इहां प्रश्न। जो मेरुगिरिकी परिधितैं आदि दै करि जिन परिधिनिविषै सूर्यका गमन नाहीं तहां ताप कैसे फैले है? ताका समाधान-सूर्यविम्बतैं सूधा सन्मुख जो तिस विवक्षित परिधिविषै क्षेत्र तातैं आगैं पीछैं आधा आधा ताप फैले है। बहुरि ऐसा जानना जैसे चिराक आगैं पाछैं प्रकाश हो है। बहुरि जैसैं जैसैं चिराक आगानैं चालै तैसैं तैसैं आगानैं तौ प्रकाश होत जाय पीछैतैं अन्धकार होता आवै तैसैंही सूर्यबिम्ब जैसैं जैसैं आगै चलै तैसैं तैसैं आगैं ताप फैलत जाय पीछै पीछै तम होता आवै है ॥ ३८३ ॥

अब ताप तमकी हानि वृद्धिकौं कहैं हैं;—

पणपरिधीयो भजिदे दसगुणसूरंतरेण जल्लद्धं।
सा होदि हाणिवड्ढी दिवसे दिवसे च तावतमे ॥ ३८४ ॥

पञ्चपरिधिषु भक्तेषु दशगुणसूर्यान्तरेण यल्लब्धं।
सा भवति हानिवृद्धिर्दिवसे दिवसे च तापतमसोः ॥ ३८४ ॥

अर्थ—पांचौं परिधिनिविषै दश गुणां सूर्यके अन्तरालनिका भाग दिएं जो लब्धराशि होइ सो दिन दिन विषै ताप तमकी हानि वृद्धिका प्रमाण जाननां। तहां पंच परिधिनिविषै विवक्षित मेरु गिरि परिधि तहां साठि मुहूर्तनिविषै इकतीस हजार छहसै बाईस योजन प्रमाण क्षेत्रविषै गमन करै तौ दोय मुहूर्तका इकसठिवां भाग मात्र दिनका वृद्धि हानिका जो प्रमाण तामैं कितनां गमन करै ऐसैं तिस परिधिप्रमाणकौं साठिका भाग दिएं दोयका इकसठि भागकरि गुणें दोय करि अपवर्तन किएं सत्रह योजन अर पांचसौ बाराका अठारहसै तीसवां भाग प्रमाण आवै सोई सूर्यके गमन मार्गनिका अन्तराल एकसौ तियासी ताकौं दस गुणां किएं अठारहसै तीस ताका भाग विवक्षित मेरुगिरिके परिधि प्रमाणकौं दिएं प्रमाण आवै तातैं ऐसा विचारि आचार्यनैं ऐसा कह्या कि विवक्षित परिधिकौं दश गुणां सूर्यांतरालका भाग दिएं ताप तमका वृद्धि हानिका प्रमाण आवै है। ऐसैं सतरह योजन अर पांचसै बारहका अठारहसै तीसवां भाग प्रमाण दिन दिन प्रति उत्तरायणविषै ताप बधै है तम घटै है, दक्षिणायनविषै तम बधै है ताप घटै है। याही प्रकार अन्य परिधिनिविषै दिन दिन प्रति ताप तमका घटनां बधनां ल्यावनां ॥ ३८४ ॥

आगैं पांचौं परिधिनिके सिद्ध भए अंकनिकौं दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

बावीस सोल तिण्णिय उणणउदी पण्णमेक्कतीसं च।
दुखसचट्ठिगितीसं चोद्दस तेसीदि इगितीसं ॥ ३८५ ॥

इकत्तीसं सोडस तीणि एक्कोणणउदिपंचसदेक्कतीसं।
तिसमयतदेक्कदीसं चउदस भवणीदिरेकतीसं ॥ ३८५ ॥

अर्थ—इकतीस सोला तीन ३१६२२ इस अंक क्रमकरि इकतीस हजार छसै बावीस योजन प्रमाण मेरुतलिकातैं परिधि है। बहुरि तिरासी पचास इकतीस ३१५०८९ इस अंक क्रम करि तीन लाख पंद्रह हजार तिरासी योजन प्रमाण अभ्यन्तर भीतीका परिधि है। बहुरि दोय तीन अट्ठाईस इकतीस ३१६७०२ इस अंक क्रमकरि तीन लाख सोलह हजार सातसै दोय योजन प्रमाण बाह्य भीतीका परिधि है। बहुरि चौदह तिरासी इकतीस ३१८३१४ इस अंक क्रमकरि तीन लाख अट्ठारह हजार तीनसै चौदह योजन प्रमाण बाह्य भीतीका परिधि है ॥ ३८४ ॥

छादालसुण्णगसत्तयचारण्णे होंति मेरुपहुदीणं।
पेयणहं परिधीओ कमेण अंकक्कमेणेव ॥ ३८६ ॥
छट्टत्तालीसंसुण्णसत्तकोडिंपंचसट्ठि भवंति मेरुपभूतीनाम्।
पेयणानां परिधयः क्रमेण अंकक्रमेणैव ॥ ३८६ ॥

अर्थ—तिरालीस सून्य सात चालीस ५२७०४६ इस अंक क्रमकरि पांच लाख सत्ताईस हजार छसै छियालीस योजन प्रमाण मेरु पर्वतका परिधि है। ऐसें मेरु आदि दै पंचनिका परिधि है सो क्रमकरि अंकनिका अनुक्रमकरि जानना ॥ ३८६ ॥

आगैं विस्तार प्रमाण समान नहीं ऐसी जु अभ्यन्तरादि परिधि तिनको समान करने की है ताका कथन करै है और करै है;—

णीयंता णिग्गयदी परिरयणा रविगयी दु पंचगदी।
तिसयाणि परिरयाणि दु साहंति समाणकालेण ॥ ३८७ ॥
निर्गच्छन्ती प्रविशन्ती परिरयणिनी तु मेरुगती।
त्रिशतानि परिरयान् द्वौ साधयतः समानकालेन ॥ ३८७ ॥

अर्थ—सूर्य का चलता हुआ बिंब जब अपनी परिधिको प्राप्त होवै तब तो [illegible] है। बहुरि चलता हुआ जो अपनी आदिकी परिधिनिको प्राप्त होवै तब [illegible] है। ऐसे दोय समान कालकरि तिस प्रमाणको लिए [illegible] परिधि प्रति गमन करै है ॥ ३८७ ॥

आगैं [illegible] विस्तार समान करने का कहै है,—

[illegible]
[illegible]

अर्थ—[illegible]

अर्थ—[illegible]

धिविषै घोटकवत् तातैं शीघ्र गमन करै हैं। बहुरि बाह्य परिधिविषैं सिंहवत् अति शीघ्र गमन करैं हैं। बहुरि अब सूर्य चन्द्रमानिके परिधि परिधि प्रति एक मुहूर्तविषैं गमनका प्रमाण स्थापना। कैसैं सो कहिए है। तहां सूर्यका परिधिविषै भ्रमणकी समाप्तताका काल साठि मुहूर्त है। बहुरि अभ्यन्तर परिधिका प्रमाण तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन है सो सूर्यके साठ मुहूर्तनिका गमन क्षेत्र तीनलाख पंद्रह हजार निवासी योजन होइ तौ एक मुहूर्तका कितना होइ। ऐसैं परिधि प्रमाणकौं साठिका भाग दिएं पांच हजार दोयसौ इकावन योजन अर गुणनीसका साठिवां भाग मात्र सूर्यका अभ्यन्तर परिधिविषै एक मुहूर्तकरि गमन क्षेत्रका प्रमाण हो है। ऐसैं ही अन्य विवक्षित परिधिके प्रमाणकौं साठिका भाग दिएं सूर्यका विवक्षित परिधिविषैं एक मुहूर्त करि गमन क्षेत्रका प्रमाण साधना। बहुरि ऐसैं ही चंद्रमाका भी त्रैराशिक विधान करि स्थापना। तहां चंद्रमाका परिधिविषै भ्रमणकी समाप्तताका काल बासठि मुहूर्त अर तेईसका दोयसै इकईसवां भाग प्रमाण है ६२।२३१ याका विधान आगैं अट्ठही सत्तरण इत्यादि सूत्रकरि कहैंगे॥ याकौं

२३१

समच्छेद करि मिलाएं तेरह हजार सातसै पचीसका दोयसै इकईसवां भाग मात्र भया सो इतने कालविषैं अभ्यंतर परिधिका प्रमाण तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण गमन क्षेत्र होइ तौ एक मुहूर्तविषै कितना होइ। प्रमाण १३७२५ फल ३१५०८९ इहां मु १ ऐसैं करि

२३१

लब्ध राशि पांच हजार तहेत्तरि योजन अर सात हजार सातसै चवाळीसका तेरह हजार सातसै पचीसवां भाग मात्र ५०७३।७७४४ चंद्रमाका अभ्यंतर परिधिविषै एक मुहूर्तका गमन

१३७२५

क्षेत्रका प्रमाण आया। ऐसैं ही अन्यविवक्षित परिधिके प्रमाणकौं बासठि अर तेईसका दोयसै इकईसवां भागका भाग दिएं विवक्षित परिधिविषै एक मुहूर्तका गमन क्षेत्रका प्रमाण आवै है॥ ३८८॥

आगैं अभ्यंतर वीथीविषै स्थित जु सूर्य ताका चक्षुः स्पर्श ध्यान जो दृष्टिविषै आवनेका मार्ग ताकौं तीन गाथानिकरि बतावै है;—

सट्ठिहिदपढमपरिहिं णवगुणिदे चक्खुफासअद्धाणं।
तेणूणं णिसहाचलचाबद्धं जं पमाणमिणं॥ ३८९॥

षष्टिहृतप्रथमपरिधौ नवगुणिते चक्षुःस्पर्शाध्वा।
तेनोनं निषधाचलचापार्धं यत् प्रमाणमिदम्॥ ३८९॥

अर्थ—प्रथम परिधिका प्रमाणकौं साठिका भाग देइ नवकरि गुणिए इतना चक्षुःस्पर्श अध्वान है। तहां साठि मुहूर्तनिका प्रथम परिधि तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण गमन क्षेत्र होइ तौ नव मुहूर्तनिका कितना गमन क्षेत्र होइ ऐसैं प्रथम परिधिकौं साठिका भाग दै नवका गुणाकार भया। इनकौं तीनकरि अपवर्तन कीएं बीसका आठसै तीनका गुणकार हो है। तहां

प्रथम परिधिकौं ३१५०८९ बीसका भाग देइ ३१५०८९ तीन करि गुणिए ९४५२६७ ल
२० २०
ब्धराशि सैंतालीस हजार दोयसै तेरेसठि योजन अर सातका बीसवां भाग मात्र चक्षुःस्पर्शाध्वा
हो है । भावार्थ—अयोध्या नाम नगरका वासी महंत पुरुषनिकरि उत्कृष्टपनें सैंतालीस हजा
दोयसै तेरेसठि योजन अर सातका बीसवां भाग मात्र क्षेत्रका अंतराल होतें सूर्य देखिए है इतना
ही चक्षु इन्द्रीका उत्कृष्ट विषय है याहीका नाम चक्षुःस्पर्शाध्वान है । बहुरि इहां अठारह मुहू
का जु दिन ताका आधा भएं मध्यान्हविषै सूर्य अयोध्याकी बरोबरि आवै अर इहां उदय होत
सूर्यका ग्रहण है तातैं नवका गुणकार किया है । अर परिधिविषैं भ्रमण काल साठि मुहूर्त है तातैं
साठिका भाग हार कीया है । बहुरि निषध नामा कुलाचल ताका चापका प्रमाण एक लाख बेंसी
हजार सातसै अडसठि योजन अर अठारह उगणीसवां भाग ताका आधा इकसठि हजार आठसै
चौरासी योजन अर नवका उगणीसवां भाग तामैं पूर्वोक्त चक्षुःस्पर्शाध्वानका प्रमाण ४७२६१ को
घटाइए अवशेष जो प्रमाण रहै ॥ ३८९ ॥

सो अगली गाथा विषै कहैं हैं;—

इगिवीसछदालयसं साहियमागम्म णिसहउवरिमिणो ।
दिस्सदि अउज्झमज्झे तेणूणो णिसहपासभुजो ॥ ३९० ॥

एकविंशतिषट्चत्वारिंशच्छतं साधिकं आगत्य निषधोपरि इनः ।
दृश्यते अयोध्यामध्ये तेनोनः निषधपार्श्वभुजः ॥ ३९० ॥

अर्थ—इकवीस एकसौ छियालीस अंक क्रमकरि चौदह हजार छसै इकईस तौ योजन
अर साधिक कहिए किछु अधिक सो अधिक कितना ? चक्षुःस्पर्शाध्वानका अवशेष सातका विसवां
भागकौं निषध चापका अवशेष नवका उगणीसवां भागविषै समछेद विधान करि [illegible] भाग
सैंतालीसका तीनसै असीवां भाग ४७ मात्र अधिक जानना । सो निषध कुलाचलके ऊपरि [illegible]
१८०
१७६२१ । ४७ उरैं आइ करि सूर्य है सो अयोध्याके मध्य महंत पुरुषनिकरि देखिए है । भावार्थ
१८०
प्रथम वीथीविषै भ्रमण करता सूर्य सो निषध कुलाचलका उत्तर तटतैं चौदह हजार छसै इक्
ईस योजन अर सैंतालीसका तीनसै असीवां भाग उरैं आवै तब भरत क्षेत्रविषै उदय हो है ।
अयोध्याके वासी महंत पुरुषनिकरि देखिए है । बहुरि निषधकी पार्श्वभुजा बीस हजार एकसै
छिनवै योजन प्रमाण तामैं निषध उरैं आइ सूर्य देखनेंका जो प्रमाण कह्या १४६२१।४७ ताहि
१८०
घटाएं ॥ ३९० ॥

आगैं कहिए है सो है;—

णिसहुवरिं गंतव्वं पणसगचण्णास पंचदेसूणा ।
तेत्तियमेत्तं गत्ता णिसहे अत्थं च जादि रवी ॥ ३९१ ॥

निषधोपरि गंतव्यं पंचसप्तपंचाशत् पंचदेशोना।
तावन्मात्रं गत्वा निषधे अस्तं च याति रविः ॥ ३९१ ॥

अर्थ—निषधके ऊपरि जानां पांच सतावन पांच इन अंक क्रम करि पांच हजार पांचसै पेचहत्तरि योजन देशोन कहिए किछु घाटि इतनां निषध पर्वत ऊपरि जाइ सूर्य अस्तपनेकौं प्राप्त हो है। भावार्थ—पीरोधेविषै भ्रमण करता सूर्य जब निषध पर्वतका दक्षिण तटतैं परैं किछू घाटि पचावनसै पिचहत्तरि योजन जाइ तब अस्त हो है। अजोध्यादिक भरत क्षेत्रके वासीनिकरि न देखिए है ॥ ३९१ ॥

अब जाका प्रयोजन तिस चापके स्यावनेंकौं तिसके बाण स्यावनेंका विधान कहैं हैं, चापादिकका वर्णन तो आगैं होइगा इहां प्रयोजनभूत वर्णन करिए हैं;—

जंबूचारधरूणो हरिवस्ससरो य णिसहबाणो य।
इह बाणावट्टं पुण अब्भंतरवीहिवित्थारो ॥ ३९२ ॥
जंबूचारधरोनः हरिवर्षशरः च निषधबाणश्च।
इह बाणवृत्तं पुनः अभ्यंतरवीथीविस्तारः ॥ ३९२ ॥

अर्थ—धनुषाकार क्षेत्रविषै जैसें धनुषका पीठ हो है तैसें जो होइ ताका नाम धनुष है वा ताका नाम चाप भी है। बहुरि जैसें धनुषकै चिला हो है तैसें जो होइ ताका नाम जीवा है। बहुरि जैसें तिस धनुषका मध्यतैं जीवाका मध्यपर्यंत तीरका क्षेत्र हो है तैसें जो होइ ताका नाम बाण है। सो इहां जंबूद्वीपकी वेदी अर हरि क्षेत्र वा निषध पर्वतके बीचि जो क्षेत्र सो धनुषाकार क्षेत्र हो है। तहां हरि क्षेत्र वा निषध पर्वततै लगाय वेदी पर्यंत अंतराल क्षेत्र सो बाण कहिए वेदी ताका प्रमाण ल्याइए है तहां भरत क्षेत्रकी एकसलाका हिमवन् पर्वतकी दोय इत्यादि विदेह पर्यंत दूणी दूणी पीछैं आधी २ शलाका जोडैं सर्व जंबूद्वीपविषै एकसौ निवै शलाका कहिए विसवा हो है। तहां भरत क्षेत्रतैं लगाय हरि वर्ष पर्यंत जोड इकतीस शलाका हो हैं। कैसें? "अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तरभजियं।" इस सूत्रकरि अंतविषैं हरिवर्षकी शलाका सोलह ताकौं भरतादिकतैं दोयका गुणकार है। तातैं गुणकार दोय करि गुणैं बत्तीस तामैं आदि भरतक्षेत्रकी शलाका एक सो घटाएं इकतीस, याकौं एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीएं भी इकतीस, ऐसें हरिवर्ष शलाका इकतीस हैं। बहुरि याही प्रकार निषध शलाका तेरसटि हो हैं। बहुरि एकसौ निवै शलाकानिका एक लाख योजन क्षेत्र होइ सौ इकतीस वा तेरसटि शलाकानिका केता होइ ऐसें किएं हरिवर्षका बाण तौ तीन लाख दश हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है। बहुरि निषधका बाण छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है। वेदीके अर हरिवर्ष वा निषधके बीचि इतनां अंतराल है। बहुरि इहां चक्षुः अव्यान क्षेत्र कहना। तहां अभ्यंतर वीथी अर हरिक्षेत्र वा निषध पर्वतके बीचि जो धनुषाकार क्षेत्र तहां वीथीकी परिधि सो तो धनुष है। बहुरि वीथी अर हरिक्षेत्र वा निषधके बीचि अंतराल क्षेत्र सो बाण है। हरिक्षेत्र वा निषधका पूर्व पश्चिमकी तरफ़ लंबाईका प्रमाण सो जीवा है। तहां पूर्वैं जो हरिवर्ष वा निषध पर्वतका बाणका प्रमाण कह्या तामैं जंबूद्वीपसंबंधी चार क्षेत्र एकसौ

असी योजन ताकौं उगणीसका भागहार करि समच्छेद किएं चौतीससै बीसका उगणीसवां भाग भया। सो इतनां घटाएं चक्षुः स्पर्शीवान क्षेत्र स्यावनेंविषै तीन लाख छह हजार पांचसै असीका उगणीसवां भाग प्रमाण तौ हरिक्षेत्रका बाण हो है। बहुरि छह लाख छबीस हजार पांचस असीक उगणीसवां भाग प्रमाण निषधका बाण हो है $\frac{६०५२६०}{१९}$ $\frac{६२५२६०}{१९}$ अब इनका वृत्तविष्कंभ जो ऐसा क्षेत्र गोल होइ तब चौडाईका प्रमाण सो कहिए हैं— तहां जंबूद्वीपका वृत्तविष्कंभ एक लाख योजन तामें दोपसंबंधी चार क्षेत्र एकसो असी ताकौं दोऊ पार्श्वनिका ग्रहण अर्थि दूणाकरि ३६० घटाएं अभ्यंतर वीथीका सूची व्यास निन्याणवै हजार छसै चालीस योजन हो है ९९६४०। याकौं समच्छेद करनेंके अर्थि उगणीसका भाग दीएं अठारह लाख तेरणवै हजार एक सौ साठिका उगणीसवां भाग होइ $\frac{१८९३१६०}{१९}$ बहुरि इहां प्रथमहरि क्षेत्रविषै कहिए हैं। इसुहीणं विक्खंभं चउगुणिदिसुणा हेदु जीवकदी। बाणकदिं छह गुणिदे तत्थ जुदे धणुकदी होदि १ ऐसा करण सूत्र आगें कहेंगे ताकरि बाणका प्रमाण $\frac{६०५२६०}{१९}$ कौं विष्कंभका प्रमाण $\frac{१८९३१६०}{१९}$ में घटाइए $\frac{१५८६५८०}{१९}$ बहुरि बाणका जो प्रमाण $\frac{६२५२६०}{१९}$ ताकौं चौगुणा किएं $\frac{१२२६३२०}{१९}$ जो प्रमाण होइ तीहकरि गुणिए $\frac{१९४५६५४७८५६००}{१९}$ तब जीवाकी कृति होई। याका वर्गमूल किएं जीवाका प्रमाण $\frac{१३९६}{१९}$ बहुरि बाणका जु प्रमाण $\frac{३०६५८०}{१९}$ ताका वर्ग करिए $\frac{९३९९१२९६९६४००}{१९}$ बहुरि याकौं $\frac{१६१}{१९}$ गुणा करिए $\frac{५६३९४७७७८४००}{१९}$ बहुरि याकौं जीवाकी कृति कही तिसविषै जोडिए $\frac{६०२५६२०००}{१९}$ ऐसैं किएं धनुषकी कृति होइ, याका वर्गमूल ग्रहण किएं $\frac{२४१५८०}{१९}$ आनां भाग इसका भाग दिएं तियाली हजार तीनसै सतहत्तरि योजन अर सय उगणीसवां भाग प्रमाण हरि क्षेत्रका बाण हो है $\frac{८३३७७}{१९}$। बहुरि निषध पर्वतका कहिए है। इसुहीणं विक्खंभं इत्यादि सूत्र करि निषधका बाणकौं ६२६५८० पूर्वोक्त इस विष्कंभ $\frac{१८९३१६०}{१९}$ में स्यौं घटाइये अवशेष रहे $\frac{११८५४०}{१९}$ ताकौं चौगुणा बाणका प्रमाण $\frac{२३७०१६०}{१९}$ करि गुणिए $\frac{२२४९९३६०००}{१९}$ तब निषधका जीवाकी कृति हो है। याका बहुभाग निषधकी जीवा है। बहुरि निषधका बाणकी जो कृति $\frac{१४०३५०१६०००}{१९}$ ताहि छह गुणा करिए $\frac{८४२१०९६०००}{१९}$ याकौं जीवाकी कृति जो कही तिसविषै जोडिए $\frac{६०२५६२०००}{१९}$ तब धनुःकृति होइ। याका बहुभाग ग्रहण करि $\frac{२४१५८०}{१९}$ आनां भागहारका भाग दिएं एक लाख सोलह हजार सातसै योजन अर अठारह उगणीसवां भाग प्रमाण १२३७१८/१९ निषध कुलाचलका धनुःपृष्ठ हो है। इस धनुषका अर्धप्रमाणकी कृति अट्ठेणवं है ताकौं इस पाठकौं आगा दिया। बहुरि अरहंतनैं बहुभागसंबन्ध प्रमाण ऐसा ही सूत्र दीनो ताकौं लिख आया प्रमाणनैमौं ग्रहण अवतार नैं इहां लिखे लिख आयो इस हेतो तौ आइ सूत्र भाग हरिविषै उक्त है ऐसा जानना ॥ ३९२ ॥

ऐसे इहां जु हरि क्षेत्र लिख पीछे याका लिखा कहा बाणा सो कहै है,—

हरिगिरिधणुसेसद्धं पासभुजो सत्तसगतितेसीदी।
हरिवस्से णिसहधणू अट्ठछस्सगतीस वारं च॥ २९३॥

हरिगिरिधनुःशेषार्धं पार्श्वभुजः सप्तसप्तत्रिंश्यशीतिः।
हरिवर्षे निषधधनुः अष्टषट्सप्तत्रिंशद् द्वादश च॥ २९३॥

अर्थ—निषधपर्वतका चापविषै हरि क्षेत्रका चाप घटाइ ताका आधा करिए इतना निष पर्वतकी पार्श्व भुजा है। दक्षिण तटतैं उत्तर तट पर्यंत चापका जो प्रमाण ताका नाम इहां पा भुजा जानना। तहां निषध पर्वतका धनुः १२३७६८।१८ विषै हरि क्षेत्रका धनुः ८३३७७। घटाइए तब अवशेष चालीस हजार तीनसै इक्याणवे योजन अर नव उगणीसवां भाग प्रमा होइ ४०३९१। ९ याका आधा करना तहां योजन प्रमाणमैंस्यौं एक घटाइ आधा करिए त बीस हजार एकसौ पिच्याणवे योजन होइ। बहुरि जो एक घटाया था ताका आधा १ अर न उगणीसवां भागका आधा ९ इनकौं समच्छेद करि जोड़ै २८ दोयका अपवर्तन किएं चौद उगणीसवां भाग भए। सो याकौं किछू घाटि एक योजन मानि जोड़ैं किछू घाटि बीस हजार एक सौ छिनवे योजन प्रमाण निषध पर्वतकी पार्श्वभुजा हो है। सो इहां पार्श्व भुजाविषैं उत्तर तटतैं चौदह हजार दोसै इकईस योजन उरैं यावत सूर्य है तावत भरत क्षेत्रवाले वासीनिकौं दीसै पीछै न दीसै तातैं पार्श्व भुजाविषै इतनां घटाइ अवशेष किछू घाटि पचावनसै पिचहत्तरि योजन दक्षिण तटतैं निषधकै ऊपरि चाप विषै परैं जाइ सूर्य अस्त हो है ऐसा भावार्थ जानना। अब हरिक्षेत्रके निषध पर्वतके धनुषके सिद्ध भए अंक कहैं हैं। तहां सात सात तीन तियासी इन अंकनके क्रम करि ८३३७७ तियासी हजार तीनसै सतहत्तरि योजन सौ हरिवर्षका धनुः है। बहुरि आठ छह सैं-तीस बारा इन अंकनिके क्रम करि १२३७६८ एक लाख तेईस हजार सातसै अड़सठि योजन का निषधका धनुष है॥ २९३॥

आगें कहे जु दोऊनिके धनुषका प्रमाण तहां अब शेष अधिकका प्रमाण सो पार्श्व भुजाके अंक तिनकौं कहैं हैं;—

माहवचंदुद्धरिया णवयकला णयपदप्पमाणगुणा।
पासभुजो चोद्दसकदि वीससहस्सं च देसूणा॥ २९४॥

माधवचंद्रोद्धृता नवककला नयपदप्रमाणगुणाः।
पार्श्वभुजः चतुर्दशकृतिः विंशसहस्रं च देशोनानि॥ २९४॥

अर्थः—इहां पदार्थ नामकी संज्ञा करि अंक कहे हैं। सो माधव चंद्र कहिए उगणीस जातैं माधव जो नारायण सो नव है। अर द्रश्यमान चंद्र एक है। इन दोऊ अंकनिकरि उगणीस

भए तिनकरि उद्धृत नव कला । भावार्थ-एक योजनकों उगणीसका भाग दीजिए । तहां नव प्रमाण तौ हरिक्षेत्रका चापका प्रमाण पूर्वे कह्या तामें अवशेष अधिक जाननां । बहुरि इहां स्थान कहिए नय नव हैं तातैं नवकी जायगा नव ताकौं प्रमाण कहिए प्रमाणका भेद दोय है दोय करि गुणिए तब एक योजनका उगणीस भागविषै अठारह भाग प्रमाण होइ । सो इतनां नि पर्वतका चापका प्रमाण पूर्वे योजनरूप कह्या तामें इतनां अवशेष अधिक जाननां । बहुरि नि पर्वतकी पार्श्व भुजा चौदहकी कृति एकसौ छिनवे तिहकरि अधिक बीस हजार योजन२०१ प्रमाण है ॥ ३९४ ॥

आगैं अयन विषै विभागकौं न करि सामान्यपनैं चार क्षेत्रविषै उदय प्रमाणका प्रतिपादन आर्ष यहु सूत्र कहैं हैं;—

दिणगदिमाणं उदयो ते णिसहे णीलगे य तेसट्ठी ।
हरिरम्मगेसु दो दो सूरे णवदससयं लवणे ॥ ३९५ ॥

दिनगतिमानं उदयः ते निषधे नीलके च त्रिषष्टिः ।
हरिरम्यकयोः द्वौ द्वौ सूर्ये नवदशशतं लवणे ॥ ३९५ ॥

अर्थ—एक दिन विषै चार क्षेत्रका व्यासविषै सूर्यका गमनका प्रमाण एकसौ सत्तरिका इकस ठिवां भाग प्रमाण कह्या था सो इतना दिन गति क्षेत्रविषै जो एक उदय होइ तौ चार क्षेत्रका पांचसै दस योजन विषै केते उदय होइ । ऐसैं किएं लब्ध प्रमाण एकसै तियासी उदय आए । बहुरि पर्वतविषै चार क्षेत्र विषैं अवशेष सूर्य बिंब करि रोक्या हुवा अठ्ताळीस इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र तिहविषै एक उदय है ऐसैं मिलि एकसौ चौरासी उदय हैं । जातैं एक एक थीयी प्रति एक एक उदय संभवै हैं । तहां निषध नीलविषै प्रत्येक तेरसठि अर हरि रम्यक क्षेत्रविषै दोय दोय अर लवण समुद्र विषै एकसौ उगणीस उदय हैं ।

भावार्थ—समस्त चार क्षेत्रविषै सूर्यका उदय एकसौ चौरासी हो है । तहां भरत अपेक्षा तेरसठि तौ निषध पर्वतविषै दोय हरि क्षेत्रविषै एकसौ उगणीस लवण समुद्रविषै उदय स्थान हैं । अभ्यंतर थीथीतैं लगाय तेरसठिवीं थीथी पर्वतविषै तिष्ठता सूर्य तौ निषध पर्वतकै ऊपरि उदय हो है भरत क्षेत्रके वासीनिकरि देखिए है । बहुरि चौसठि पैंसठिवीं थीथी विषै तिष्ठता सूर्य हरि क्षेत्र ऊपरि उदय हो है । बहुरि छयासठिवींतैं लगाय अंतपर्यंत थीथीनिविषै तिष्ठता सूर्य लवण समुद्रके ऊपरि उदय हो है । ऐसैंही ऐरावत अपेक्षा तेरसठि नीलपर्वतविषै दोय रम्यक क्षेत्रविषै एकसौ उगणीस लवण समुद्रविषै उदय स्थान जाननें ॥ ३९५ ॥

आगैं दक्षिणायनविषै चार क्षेत्रका द्वीप वेदिका समुद्रका विभाग करि उदय प्रमाणका प्ररूपणकै अर्थी त्रैराशिककी उत्पत्ति कहैं हैं;—

दीउवहिचारखित्ते वेदीए दिणगदीहिदे उदया ।
दीवे चउ चंदस्स य लवणसमुद्दह्मि दस उदया ॥ ३९६ ॥

द्वीपोदधिचारक्षेत्रे वेद्यां दिनगतिहिते उदयाः।
द्वीपे चतुः षंढस्य च लवणसमुद्रे दश उदयाः॥ ३९६॥

अर्थः—द्वीप समुद्र संबंधी चार क्षेत्र अर वेदी इनकौं दिन गति प्रमाणका भाग दिएं उदयनिका प्रमाण हो है। भावार्थ—चार क्षेत्रका व्यासविषै वीथीनिविषै सूर्यका जहां जहां जितनें उदय पाइये हैं सो कहिए हैं। तहां जंबूद्वीप संबंधी चार क्षेत्र एकसौ असी योजनमैंस्यौं जंबूद्वीपकी वेदीका व्यास च्यारि योजन है सो दूरि किएं द्वीप चार क्षेत्र एकसौ तिहत्तरि योजन है। बहुरि च्यारि योजन वेदी ऊपरि चार क्षेत्र हैं। बहुरि तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण लवण समुद्र ऊपरि चार क्षेत्र है इनकौं दिन गतिका प्रमाण एकसौ सत्तरिका एकसठिवां भाग प्रमाण ताका भाग दिएं जितना जितना प्रमाण आवै तितना उदय जाननें। सो कहिए हैं। दिन गतिका प्रमाण एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग $\frac{२५}{६१}$ सो इतना क्षेत्र विषै एक उदय होय तौ वेदिका रहित द्वीप चार क्षेत्र विषै केते उदय होंहि ऐसैं त्रैराशिक किएं तरेसठि उदय पाए। तिन विषै अभ्यंतर वीथीका उदय पूर्वला उत्तरायणविषै गिनिए हैं तातै बासठि उदय भए अर अवशेष छबीस एक सौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदयके अंश रहे। इहां द्वीप संबंधी अंतका सूर्य सूर्य विषै अंतराल पर्यंत आए। बहुरि अवशेष छबीस एकसौ सतरिवां भाग उदय अंश रहे ये तिनका योजन अंशरूप क्षेत्र करिए हैं। एक उदयका एकसौ सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र होइ तौ छबीस एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंशनिका केता क्षेत्र होइ। ऐसैं त्रैराशिक करि फल राशि इच्छा राशिकौं गुणें छबीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया। ए द्वीप संबंधी योजन अंश अगले विंद करि रोक्या हुवा क्षेत्रविषै देना। बहुरि एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भागविषै एक उदय होय तौ च्यारि योजन प्रमाण वेदिका क्षेत्रविषै केता उदय होइ ऐसैं त्रैराशिक करि भागहारका भागहार इकसठि करि च्यारिकौं गुणें दोयसै चवालीस भए। इनकौं एकसौ सत्तरि भागहारका भाग दिएं एक उदय पाया अवशेष चहोत्तरिका एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंश रहे। इनकौं पूर्वोक्त न्याय करि क्षेत्ररूप किएं चहोत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया इस विषै बाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र ग्रहि पूर्वोक्त द्वीपका अंत अवशेष क्षेत्र छबीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण तिहि विषै मिलाएं। अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण सूर्य बिंब करि रोक्या हुआ क्षेत्र संपूर्ण हो है। ऐसैं अभ्यंतर वीथी स्थिति सूर्य बिंबतैं चौसठिवीं वीथीस्थित सूर्यबिंबका व्यास छबीस इकसठिवां भाग तौ द्वीप चार क्षेत्रके अर बाईस इकसठिवां भाग वेदिका चार क्षेत्रकौ मिलिकरि सिद्ध हो है। इहां चौसठिवीं वीथी द्वीप अर वेदिकाकी संधिविषै है ऐसा तात्पर्य जानना। ताके आगैं दोय योजनका अंतराल है, ताके आगैं सूर्यकरि रोक्या हुवा अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र है। तातैं पौंवन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र रह्या सो आगिला दोय योजनका अंतरालविषै देना। ऐसैं द्वीप वेदिकाका संधिविषै प्राप्त जो सूर्य बिंबका व्यास ताकौं प्राप्त भया बाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र निहिस्यौं च्यारि वेदिकाका च्यारि योजन प्रमाण क्षेत्र समान

भया। बहुरि लवण समुद्रविषै एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भागविषै एक उदय होइ तौ बिंब रहित समुद्र चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन तिहविषै केते उदय होइ ऐसैं त्रैराशिक करि पाए उदय एकसौ अठारह। बहुरि अवशेष उदय अंश सत्तरि एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किए सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया। इनिकौं वेदिकासंबंधी अंतरालविषै प्राप्त बावन योजनका इकसठिवां भाग मिलाएं भागहार इकसठिका भाग दिएं दोय योजन प्रमाण अंतराल संपूर्ण हो है। बहुरि यातैं परैं रविबिंब सहित अंतर प्रमाणरूप जिन गतिशलाका अंतका अंतरालपर्यंत एकसौ अठारह हैं ते सुगम हैं। तहां उदय भी एकसौ अठारह है। तातैं परैं बाह्य वीथीविषै तिष्ठता सूर्यबिंबका व्यासविषै एक उदय है। ऐसैं सर्व मिलि लवण समुद्रविषै एकसौ उगणीस उदय हैं। ऐसैं दक्षिणायनविषै एकसौ तियासी उदय जाननें। इहां ऐसा भावार्थ जाननां वीथीविषै तिष्ठता हुआ सूर्यका बिंब प्रमाण जो क्षेत्र ताका नाम पथ व्यास है सो अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण है। अर वीथी वीथीनिकै बीचि जितनां चार क्षेत्र विषै अंतराल ताका नाम अंतर है सो दोय योजन प्रमाण है। तहां एक सौ छियंतरि योजन प्रमाण द्वीप संबंधी चार क्षेत्रविषै प्रथम अभ्यंतर पथ व्यास है ताकै आगैं प्रथम अंतराल है। ताकै आगैं दूसरा पथव्यास है। ताकै आगैं दूसरा अंतराल हैं। ऐसैं ही क्रमतैं अंतविषैं तेरसठिवां पथ व्यास अर ताके आगैं तेरसठिवां अंतराल हो है। अर ताकै आगैं छब्बीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रह्या। बहुरि च्यारि योजन प्रमाण वेदिका संबंधी चार क्षेत्र है तामैं बाईस योजनका इकसठिवां भाग काढि तिस द्वीप संबंधी अवशेष क्षेत्रोंविषै जोडैं चौंसठिवां पथ व्यास हो है। चौंसठिवीं वीथी द्वीप अर वेदिकाकी संधिविषै है। बहुरि तिस पथ व्यासकै आगैं चौंसठिवां अंतराल है ताके आगैं पैंसठिवां पथव्यास है ताकै आगैं बावन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र वेदिका चार क्षेत्रविषै अवशेष रह्या। बहुरि पथ व्यास रहित समुद्र चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन प्रमाण है। तामैं सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग काढि वेदिका अवशेष क्षेत्रविषैं जोडैं पैंसठिवां अंतराल हो है। बहुरि ताके आगैं पथ व्यास है ताकै आगैं अंतर है। ऐसैं क्रमतैं अंतविषै एकसौ तियासीवां पथ व्यास आगैं एकसौ तियासीवां अन्तराल हो है। बहुरि ताकै आगैं पथ व्यास प्रमाण अवशेष समुद्रचार क्षेत्रविषै एकसौ चौरासीवां पथ व्यास है। बहुरि इहां जहां पथ व्यास है तहां वीथी जाननी। एक एक वीथीविषैं प्राप्त होइ सूर्यका दृष्टिविषै आवनां ताका नाम उदय जाननां। ऐसैं एकसौ चौरासी वीथीनिविषै एकसौ चौरासी उदय भए। तहां उत्तरायणस्यौं आवता सूर्य अभ्यन्तर वीथीविषै आवै सो वह उत्तरायणविषै गिनि लिया अर स्यात् ही दूसरी बार तहां उदय होइ नाही तातैं दक्षिणायणविषै नाही गिना ऐसैं करि एकसौ तियासी उदय जाननें। आगैं उत्तरायणविषै कहिए है—लवण समुद्रविषै रविबिंब सहित चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है ताका समच्छेद करि जोडे बीस हजार एकसौ अट्ठहत्तरिका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ $\frac{२०१७८}{६१}$ बहुरि एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग क्षेत्रकी एक दिनगतिशलाका होइ तौ बीस हजार एकसौ अट्ठहत्तरिका इकसठिवां भागकी केती होइ ऐसैं त्रैराशिक किए एकसौ

है । आगैं एकसौ बांसठवां अंतराल है ताके आगैं बाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भी क्षेत्र रहै है । बहुरि द्वीप चार क्षेत्रनिविषै छत्तीस योजनका इकसठिवां भाग प्रहि तातैं तिरेसठ सौ इकईसवां पदम्यास हो है । ताके आगैं एक सौ इकईसवां अंतर है ऐसैं क्रमतैं अंतरनिविषै एक सौ तिरासीवां अंतरके आगैं एकसौ चौरासीवां पदम्यास है तहां एकसौ चौरासी पदम्यास प्रमाण उदयनिविषै बाल चौथीका उदय पूर्व दक्षिणायन विषै गिनिए है । अर उदय तहां अस्त न हो है तातैं समुद्रका आदि उदय पश्चात् उत्तरायणविषै सूर्यके उदय एकसौ तिरासी ऐसे जानने। उदयावलिका स्वरूप पूर्वोक्त कह्याही था । बहुरि चंद्रमाका भी अपना भेद लिएं बिना द्वीप का क्षेत्र १८० विषै पांच उदय अर समुद्र चार क्षेत्र ३३० । ६ विषै दश उदय है । ऐसे ही पंद्रह उदय हो है । आगैं दक्षिणायनविषै कहै है । पदमासादिहीमें इत्यादि पूर्वोक्त सूची चंद्रमाका जिसविषै क्षेत्र पंद्रह हजार पांचसै इक्यावन योजनका ब्यालीसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण सो इतना 'सूची' क्षेत्रविषै जो एक उदय होय तो एकसौ अस्सी योजन प्रमाण द्वीप वा क्षेत्र विषै जितने उदय होहिं ऐसे त्रैराशिक किएं ब्यालीस उदय पाए । बहुरि अवशेष चौदह हजार छसै उनचासका पंद्रह हजार पांचसै इक्यावनवां भाग प्रमाण उदय अंश रहे । बहुरि एक उदयका क्षेत्र हजार योजनका ब्यालीसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र होइ सो चौदह हजार छसै उनचासका पंद्रह हजार पांचसै इक्यावनवां भाग प्रमाण उदय अंशनिका केता क्षेत्र होइ ऐसें त्रैराशिक करि लब्धराशिके भाग करि इच्छाराशिके भागका अपवर्तन किएं चौदह हजार छसै उनचास योजनका ब्यालीसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रह्या । बहुरि चंद्रमाका एक उदयका प्रमाण छप्पन योजनका इकसठिवां भाग साठ भाग करि समच्छेद किए पैंसठ योजनका ब्यालीसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण भया सो इतना सिव अवशेष क्षेत्रविषै कहीं एक उदयनिविषै देनां । तहां उदय एक, ऐसे अनुक्रम सिवै पांचमे उदय है जिसतैं आगैं एकका उदय उलंघन नांही है तातैं ताका न ग्रहण करनैं दोषविषै आवै है । ऐसे आगैं क्षेत्रविषै अवशेष चौदह हजार छसै उनचासका ब्यालीसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र रह्या । सो यहु अवशेषका भया सिवै तेतीस योजन अर एकसौ सोलहका ब्यालीसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र है । सो ताकौं आगैं अंतरविषै देनां । आगैं समुद्रविषै चारक्षेत्र [illegible] अनुवर्तनका इकसठिवां भाग प्रमाण है । ताको समच्छेदविषै किएं [illegible] इकसठिवां भागप्रमाण भया । सो पंद्रह हजार पांचसै इक्यावनके [illegible] इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्रविषै एक उदय होइ सो चौदह हजार छसै उनचासका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्रविषै केते उदय होहिं । ऐसे त्रैराशिक किएं इक्यासीका भाग [illegible]

आगैं द्वीप चार क्षेत्रविषैं पूर्वोक्त प्रकार उदय च्यारि अर अवशेष चौदह हजार छसै छप्पनका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भागप्रमाण उदय अंश रहे इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किएं चौदह हजार छसै छप्पनका च्यारिसै सत्ताईस योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण होइ यामें प्रतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागका समछेद किएं चौदह हजार दोयसैं चौसठिका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग होइ सो ग्रहि करि दशवां अंतरालविषैं देना। ऐसैं पैतीसै योजन अर दोयसै चौदहका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण दशवां अंतराल संपूर्ण हो है। बहुरि अवशेष तीनसै बाणवै योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण रह्या। ताकौ सात करि अपवर्तन किए छप्पनका इकसठिवां भागप्रमाण होइ सो बहु अभ्यन्तर पथ व्यासविषैं देना। इसविषैं एक उदय ऐसे द्वीपविषैं चंद्रमाका उत्तरायणविषैं पांच उदय हैं इहां ऐसा भावार्थ जाननां। चंद्रमाका पथव्यास अंतरादिकका स्वरूप प्रमाणतौ पूर्वोक्त जानना तहां लवण समुद्रका चार क्षेत्रविषैं प्रथम बाह्य पथ व्यास है। ताके अभ्यंतरवर्ती आगैं आगैं प्रथम अंतर है। ताके आगे द्वितीय पथ व्यास है। ताके आगैं द्वितीय अंतर है। ऐसे क्रमतैं नवमां अंतरके आगैं दशवां पथ व्यास है। ताके आगैं दोय योजन अर इकताळीसका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रह्या। बहुरि आगैं द्वीप चार क्षेत्रविषैं तेतीस योजन अर एकसा तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र ग्रहि अर समुद्रका अवशेष क्षेत्र ग्रहि दशवां अंतरालकौं दीएं समुद्र अर द्वीपकी संधिविषैं दशवां अंतराल संपूर्ण हो है। ताके आगैं ग्यारह्वां पथ व्यास है ताके आगैं ग्यारह्वां अंतराल है। ऐसैं क्रमतैं अंतविषैं चौदहवां अंतरके आगैं पंद्रहवां अभ्यंतर पथ व्यास है। ऐसे इन पंद्रह पथ व्यासनिविषैं पंद्रह उदय हैं। तिनिविषैं समुद्रसंबंधी प्रथम व्यासविषैं जो उदय है सो दक्षिणायन संबंधीही है। जातैं लवण मुखीचार तहां उदय न हो है तातैं चंद्रमाका उत्तरायणविषैं नव समुद्रविषैं पांच द्वीप विषैं ऐसे चौदह उदय जानने बहुरि इहां सूर्य व चन्द्रमाका उत्तरायणविषैं उदयका विभाग मूल सूत्र कर्त्तानै कह्या। तथापि दक्षिणायणका उदय मार्ग करि टीकाकार विचार करि कह्या है ॥३९६॥

अब दाहिण उत्तर उर्द्ध अधविषैं सूर्यके आतापका क्षेत्र विभाग कहैं हैं;—

मन्दरगिरिमज्झादो लवणुवहिपरंतभागो दु।
इहा अट्ठसत्तया उवरिं सयजोयणा ताओ ॥ ३९७ ॥

मंदरगिरिमध्यात् यावत् लवणोदधिपरंतभागस्तु।
अत्रस्थाने अष्टादशशतानि उपरि शतयोजनानि तापः ॥ ३९७ ॥

अर्थ—मेरुगिरिके मध्यौ लवण यावत् लवण समुद्रका छठा भागपर्यंत सूर्यका आताप पैंसै है। तथा उद्योतका अभ्यन्तर वीथीविषैं स्थित सूर्यकी अपेक्षा कहिए है। अठारहसै योजन ऐसे पचास हजार योजन लंबे द्वीप चार ऐसे एकसौ अस्सी योजन घटाएं शुद्धक्षेत्र हजार आगैं ऐसे योजन प्रमाण तौ ऐसे विषैं मध्यौ लवण अभ्यंतर वीथी पर्यंत उत्तर दिशा विषैं आताप पैंसै है। बहुरि लवण समुद्रका व्यास दोय लाख योजन तामैं छठा भाग तेतीस हजार तीनसै

तेतीस योजन अर एकका तीसरा भाग प्रमाण यामैं द्वीप चार क्षेत्र एकसौ अ
तेतीस हजार पांचसै तेरह योजन अर एकका तीसरा भाग प्रमाण अभ्यंतर वीथी
समुद्रका छठा भाग पर्यंत दक्षिण दिशाविषै आताप फैलै है । बहुरि ऐसेही अन्य
जाननां । बहुरि सूर्य बिंबतैं नीचे अटारहसै योजन पर्यंत अधः दिशा विषै आताप फै
—सूर्यबिंबतैं नीचै आठसै योजन तौ समभूमि है अर तातैं नीचैं हजार योजन पर्यंत
तहां पर्यंत सूर्यका आताप फैलै है । बहुरि सूर्य बिंबतैं ऊपरि सौ योजन पर्यंत ऊर्द्ध दिश
फैलै है । भावार्थ— सूर्यबिंबतैं ऊपरि सौ १०० योजनपर्यंत ज्योतिर्लोक है तहा
आताप फैलने है । ऐसे परिधिनि विषै तो आताप फैलनेका प्रमाण पूर्वै कह्या था इहां दो
ऊर्द्ध अध. दिशा विषै आताप फैलनेका प्रमाण कह्या ॥ १९७ ॥

आगैं चंद्रमा सूर्य ग्रह इनकै नक्षत्र मुक्तिके प्रतिपादन करनैं की चाहता आचार्य
एक एक नक्षत्र संबंधी मर्यादारूप गगन खंडनिकों कहै है;—

अभिजिस्स गगणखंडा छस्सयतीसं च अवरमज्झवरे ।
छप्पण्णरसे छक्के इगिदुतिगुणपणयुतसहस्सा ॥ १९८ ॥

अभिजितः गगनखंडानि षट्शतत्रिंशत् च अवरमध्यवराणि ।
षट्पंचदशे षट्के एकद्वित्रिगुणपंचयुतसहस्राणि ॥ १९८ ॥

अर्थ—अभिजित नक्षत्रके गगनखंड छसै तीस है । बहुरि जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्र
तैं छह पंद्रह छह प्रमाणकों धरै तिनके एक दोय तीन गुणां पांच संयुक्त एक हजार प्रमाण
खंड है । भावार्थ—परिधिरूप जो गगन कहिए आकाश ताके एक लाख नव हजार आ
खंड करिए तामैं एक चंद्रमा संबंधी अभिजित नक्षत्रके छसै तीस गगन खंड है । ऐसै तीस
प्रमाण परिधि रूप आकाश क्षेत्र विषै अभिजित नक्षत्रकी सीमा मर्यादा है । बहुरि ऐसे ही
जघन्य नक्षत्र तिन एक एकके एक हजार पांच गगन खंड है । बहुरि छह उत्कृष्ट नक्षत्र तिन एक एकके तीन हजार पंद्रह गगन खंड
दोय हजार दश गगन खंड है । बहुरि इतने इतनेही दूसरा चंद्रमा संबंधी है । इहां नक्षत्रनिके जघन्य मध्य उत्कृष्टपना गगन
खंडनिका थोडा बहुत अति बहुतकी अपेक्षा कह्या है स्वरूपादिक अपेक्षा नाही कह्या है ॥ १९८॥

आगैं तिन जघन्य मध्यम उत्कृष्ट नक्षत्रनिकों दोय गाथानि करि कहै है;—

सदभिस भरणी अद्दा सादी अस्सिलेस्स जेट्ठमवर वरा ।
गोदिणि विसाह पुणव्वसु तिउत्तरा मज्झिमा सेसा ॥ १९९ ॥

[illegible]

ठिवां भाग आया। या प्रकार एक बार संपूर्ण एक परिधिविषै भ्रमण करनेका काल प्रमाण कह्या ॥ ४०१ ॥

आगै सो एक मुहूर्त्त करि अपनां अपनां गगन खंडनिविषै गमन करनेका प्रमाण कहा सो कहै हैं;—

अडसट्ठी सत्तरसयमिंदू वावट्ठि पंचअहियकमं।
गच्छंति सूररिक्खा णभखंडाणिगिमुहुत्तेण ॥ ४०२ ॥

अष्टषष्टिः सप्तदशशतं इंदुः द्वाषष्टिः पंचाधिकक्रमाणि।
गच्छंति सूर्यकक्षाणि नभःखंडानि एकमुहूर्तेन ॥ ४०२ ॥

अर्थ—अडसठि अधिक सतरहसै १७६८ गगन खंडनिकौं चंद्रमा एक मुहूर्त्त करि गमन करै है। बहुरि तिनतैं बासठि अधिक साका अठारहसै तीस गगन खंडनिकौं सूर्य अर इनौ पांच अधिक साका अठारहसै पैंतीस गगन खंडनिकौं नक्षत्र एक मुहूर्त्त करि गमन करै है ॥ ४०२ ।

आगै चंद्रमादि तारापर्यंत ज्योतिषीनिकै गमन विशेषका स्वरूप कहै हैं;—

चंदो मंदो गमणे सूरो सिग्घो तदो गहा तत्तो।
तत्तो रिक्खा सिग्घा सिग्घयरा तारया तत्तो ॥ ४०३ ॥

चंद्रो मंदो गमने सूरः शीघ्रः ततो ग्रहाः ततः।
ततः ऋक्षाणि शीघ्राणि शीघ्रतराः तारकाः ततः ॥ ४०३ ॥

अर्थ—सर्वतैं गमनविषै चंद्रमा मंद है मंद गमन करै है। तातैं सूर्य शीघ्र गमन करै है। तातैं ग्रह शीघ्र गमन करै हैं, तातैं नक्षत्र शीघ्र गमन करै हैं, तातैं अतिशीघ्र तारे गमन करै है ॥ ४०३ ॥

आगै अब चंद्रमा सूर्यकै नक्षत्र भुक्तिकौं कहै है;—

इंदुरवीदो रिक्खा सत्तही पंच गगणखंडहिया।
अहियहिदरिक्खखंडा रिक्खे इंदुरविअत्थमणमुहुत्ता ॥ ४०४ ॥

इंदुरवितः ऋक्षाणि सप्तषष्टिः पंच गगनखंडाधिकानि।
अधिकहितऋक्षखंडानि ऋक्षे इंदुरविअस्तमनमुहूर्ताः ॥ ४०४ ॥

अर्थ—चंद्रमा सूर्यकै गगन खंडनितैं अगले सड़सठि अर पांच गगन खंड अधिक नक्षत्रनिकै एक मुहूर्त्त करि गमन अपेक्षा गगन खंड है। सो इस अधिकका भाग अपनें अपनें नक्षत्र खंडनिकौं दिएं नक्षत्र अर चंद्र वा सूर्यका आसन्न मुहूर्तनिका प्रमाण आवै है। सो कहिए है। एक ही बार चंद्रमा अर नक्षत्र साथि गमनका प्रारंभ किया तहां एक मुहूर्तविषै चंद्रमा तौ सतरहसै अड़सठि गगन खंडनि प्रति गमन किया अर नक्षत्र अठारहसै पैंतीस गगन खंडनि प्रति गमन किया। तहां चंद्रमा नक्षत्रतैं सतसठि गगन खंड पीछै रह्या। तहां अभिजित नक्षत्र अर चंद्रमा दोऊ साथि गमनका प्रारंभ करि एक मुहूर्तविषै अभिजितकौं चंद्रमा सतसठि गगन खंड पीछै रह्या। बहुरि दूसरा मुहूर्तविषै और सतसठि गगन खंड पीछै रह्या। ऐसे पीछै रहता रहता जिसने काल करि

एकपथलंघनं प्रति यदि दिवसैकषष्टिभागं तपलब्धं ।
किं त्र्यशीतिशतस्येति गुणिते ते भवंति अधिकादिनानि ॥ ४०८ ॥

अर्थ—वीथी रूप जो एक सूर्यका मार्ग ताका उल्लंघन प्रति जो एक दिनका इकसठि भाग पावै तौ एक सौ तियासी मार्गनिका उल्लंघन प्रति केते दिवस पावै ऐसैं त्रैराशिक करि इकसठि करि अपवर्त्तन करि गुणें अधिक दिन तीन हो हैं। बहुरि एक अयन विषै सो तियासी दिन कैसे हैं सो कहिए हैं। एक मुहूर्त्त विषै गमन योग्य सूर्यके अठारहसै तीस खंड अर नक्षत्रके अठारहसै पैंतीस खंड तातैं सूर्यके नक्षत्रतैं पांच खंड छोडनैंविषै एक मुहूर्त्त हो तौ अभिजित नक्षत्रके छसैंतीस खंड छोडनैंविषै केते मुहूर्त्त होइ ऐसैं मुहूर्त्त करि $\frac{१८३०}{५}$ ताकौं तीस भाग देइ दिन करनें $\frac{३६६}{६१}$ बहुरि भाज्य भाजककौं तीस करि अपवर्त्तन किएं इकईस दिनका पांच भाग प्रमाण अभिजितका मुक्तिकाल आया। ऐसैंही जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्र श्रवण आदि पुनर्वसु पर्यंत तिनके त्रैराशिक विधिकरि मुहूर्त्त वा दिन करि क्रमतैं पंद्रह तीस पैंद्रह करि अपवर्त्तन करि जो पावै सो सो तिस तिस नक्षत्र विषै स्थापन करनां ॥ ४०८ ॥

आगैं पुष्यविषै विशेष है ताके प्रतिपादनके अर्थ कहैं हैं ;—

सतिपंचमचउदिवसे पुस्से गमियुत्तरायणसमत्ती ।
सेसे दक्खिणअादी सावणपडिवदि रविस्स पढमपहे ॥ ४०९ ॥
सत्रिपंचमचतुर्दिवसान् पुष्ये गत्वा उत्तरायणसमाप्तिः ।
शेषान् दक्षिणादिः श्रावणप्रतिपदि रवेः प्रथमपथे ॥ ४०९ ॥

अर्थ—तीन दिनका पांचवां भाग सहित च्यारि दिन पुष्य नक्षत्रका मुक्तिकालविषै भए इहांतैं उत्तरायणकी समाप्तता हो है। ऐसैं करि पूर्वोक्त प्रकार पुष्य नक्षत्र मुक्तिका कालकौं साठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण च्याइ तामैं तीनका पांचवां भाग सहित च्यारि दिनका सम्बन्ध किएं तेईस दिनका पांचवां भाग भया सो ग्रहि करि उत्तरायणकी समाप्तता विषै देना अर छयालीस दिनका पांचवां भाग रह्या तामैं कोइ पूरण करयै है अर्थि तितना ही तेईस दिनका पांचवां भाग ग्रहिकरि दक्षिणायनका प्रथम कोट विषै दीएं यहु ही श्रावण मासविषै प्रतिपदा दिन सूर्यका प्रथम मार्गविषै दक्षिणायनका आदि हो है। अवशेष इकईस दिनका पांचवां भाग दक्षिण कोट विषै देना। बहुरि ऐसैंही पूर्वोक्त प्रकार आश्लेषा आदि उत्तराषाढा पर्यंत नक्षत्रनिकी सूर्य मुक्तिका काल ल्याइ निजनिज नक्षत्र विषै स्थापन करना।

भावार्थ—सूर्यका उत्तरायण विषै प्रथम अभिजित नक्षत्रकी मुक्ति हो है ताका काल पूर्वोक्त प्रकार विषै इकईस दिनका पांचवां भाग प्रमाण है। पीछे क्रमतैं श्रवण १ धनिष्ठा २ शतभिषा ३ पूर्वाभाद्रपदा ४ उत्तराभाद्रपदा ५ रेवती ६ अश्विनी ७ भरणी ८ कृत्तिका ९ रोहिणी १० मृगशिर ११ आर्द्रा १२ पुनर्वसु १३ इनकी मुक्ति हो है। तहां श्रवणविषै ३ धनिष्ठा १ भरणी १ आर्द्रा १ ए तीन नक्षत्र हैं तिनका तौ एक एकका मुक्ति काल साढ़ेसात दिनका दूसरा भाग प्रमाण है। बहुरि शतभिषा १ कृत्तिका १ पूर्वाभाद्रपदा १ रेवती अश्विनी कृत्तिका मृगशिर ए ७ सात नक्षत्र हैं

का एक एकका भुक्ति काल सतसठि दिनका पांचवा भाग प्रमाण है। बहुरि उत्तराभाद्रपद रेवती पुनर्वसु ए तीन उत्कृष्ट नक्षत्र हैं। सो इनका एक एकका भुक्तिका दोयसै एक दिनका चवां भाग प्रमाण है। बहुरि पीछे पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काल सतसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण तामें तेईस दिनका पांचवां भाग मात्र काल पर्यंत पुष्य नक्षत्रकी भुक्ति इस अयनविषैं हो। ऐसैं सर्व कालकों समच्छेद करि जोडें सूर्यके उत्तरायण विषैं एकसौ तियासी दिन हो है। बहुरि क्षिणायनका प्रारंभ श्रावण कृष्णकी पडिवाके दिन हो है। तहां प्रथम पुष्य क्षत्र भोगिए है। तहां पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काल सतसठि दिनका पांचवा गविषैं तेईस दिनका पांचवां भाग सौ उत्तरायण विषैं भए थे अवशेष बीयालीस दिनका चवां भाग इस अयनकी आदि विषैं भोगिए है। तहां उत्तरायण समान कोटे पूर्व कहीं प्रथम ाट विषैं सौ तेईसका पांचवां भाग देना। दूसरा कोट विषैं अभिजितकी आदला इकईसका चवां भाग देना। ऐसैं प्रथम पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकाल भएं पीछे आगैं अश्लेषा १ मघा १ पूर्वा ाल्गुनी १ उत्तरा फाल्गुनी १ हस्त १ चित्रा १ स्वाति १ विशाखा १ अनुराधा १ जेष्ठा १ ल १ पूर्वाषाढ १ उत्तराषाढ ■■ नक्षत्रनिकों भोगवै है। तहां अश्लेषा १ स्वाति जेष्ठा ए तीन धन्य नक्षत्र हैं। सो इनका सौ एक एकका भुक्तिकाल सतसठि दिनका दसवां भाग प्रमाण है। बहुरि मघा पूर्वा फाल्गुनी हस्त चित्रा अनुराधा मूल पूर्वाषाढ ए सात मध्य नक्षत्र हैं। सो इन क एकका भुक्तिकाल सतसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण है। बहुरि उत्तरा फाल्गुनी विशाखा तराषाढ ए तीन उत्कृष्ट नक्षत्र हैं। सो इन एक एकका भुक्तिकाल दोयसै एक दिनका दसवां ाग प्रमाण है। ऐसैं इन सर्व भुक्तिकालनिकों जोडें सूर्यके दक्षिणायनविषैं एक सौ तियासी न हो है। बहुरि अब चंद्रमाका कहिए है। पूर्वोक्त प्रकार चंद्रमाका भुक्तिकाल इकईस दिनका सतसठिवां भाग प्रमाण स्याई तिस चंद्रमाके अधन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकालविषैं अवग ादि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिकी पूर्वोक्त प्रकार भुक्ति स्याई तिसविषैं सर्वत्र सतसठिको भाजकपना ाध्यका अपवर्तन करि बहुरि भाजक तीन अर भाज्यका अधन्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिका पैंडा करि अपवर्तन ी अर मध्यमनिकै तीसकै अपवर्तन करि जो जो पावै सो सो तिस तिस नक्षत्रविषै भागहार करना। बहुरि पुष्यविषै सूर्यके भुक्ति सतसठि दिनका पांचवां भाग मात्र विषै चंद्रमाके भुक्ति एक दिन माण होइ सो पुष्यविषै सूर्यके तेईस दिनका पांचवा भागविषै चंद्रमाके केती होइ ऐसे त्रैराशिक रि आई जो तेईसका सतसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति सो उत्तरायणकी आदला दिये हैं ोही दक्षिणायनविषै विधान करना। **भावार्थ**—चंद्रमाके उत्तरायणविषै पहले अश्लेषाविषै भुक्ति ो है। ताका काल इकईस दिनका सतसठिवां भाग मात्र है। पीछे क्रमतैं भुक्तिकाल इकईस क्षत्र क्रमतैं भोगिए है। तहां तीन अधन्य नक्षत्रनिविषै एक एकका भुक्तिकाल इकईस ा भाग मात्र मध्य नक्षत्रनिविषै एक एकका भुक्तिकाल एक दिन है। तीन उत्कृष्ट क्षत्रनिविषै एक एकका भुक्तिकाल दोय दिन है। बहुरि सर्व पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकाल एक दिन विषै तेईस दिनका सतसठिवां भाग काढ प्रमाण पुष्य नक्षत्र भ

हैं। ऐसे सर्व काल जोड़ें चंद्रमाका उत्तरायण विषैं तेरह दिन अर चवालीसक सडसठिवां भाग मात्र काल हो हैं। बहुरि दक्षिणायन विषैं पहलैं पुष्य नक्षत्र भोगिएं हैं तहां पुष्य नक्षत्रका मुक्ति काल एक दिन विषैं तेईस दिनका सतसठिवां भाग मात्र काल उत्तरायण विषैं गया अब शेष चवाली-सका सडसठिवां भाग प्रमाण काल इहां भोगिए हैं। बहुरि अश्लेषा आदि उत्तराषाढ पर्यंत नक्षत्र क्रमतैं भोगिए हैं। तहां तीन जघन्य नक्षत्र सात मध्य नक्षत्र तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका मुक्तिकाल क्रमतैं एक एकका आध दिन एक दिन ड्योढ दिन जाननां। सर्व्व काल मिलाएं चंद्रमाका दक्षिणायनविषै तेरह दिन अर चवालीसका सड़सठिवां भाग प्रमाण काल हो है। अब राहुका कहिए हैं राहुके अभि-जित आदि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिकी मुक्ति स्याइ तिस तिस नक्षत्रविषैं स्थापना करनां। बहुरि पुष्य विषै सूर्यके सतसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण मुक्ति होतैं राहुके आठसै च्यारिसैका इकसठिवां भाग प्रमाण मुक्ति होइ तौ सूर्यके तेईस दिनका पांचवां भाग प्रमाण मुक्ति होतैं राहुकै केती मुक्ति होइ ऐसैं स्याइ अपवर्त्तन करैं दोयसै छिहंतरि दिनका इकसठिवां भाग प्रमाण मुक्ति उत्तरायणकी समाप्तिविषै पुष्यकी स्थापन करनी। बहुरि पूर्ववत् दक्षिणायनविषै विधान करनां। **भावार्थ**—राहुकै उत्तरायणविषै प्रथम अभिजितकी मुक्ति हो है ताका काल दोयसै बावन दिनका इकसठिवां भाग मात्र है पीछैं श्रवणादि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिकी मुक्ति क्रमतै हो है। तिनविषै तीन जघन्य सात मध्य तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका मुक्तिकाल क्रमतैं च्यारिसै दोयका इक-सठिवां भाग आठसै च्यारिका इकसठिवां भाग बारहसै छैका इकसठिवां भाग प्रमाण हो है। पीछे पुष्यकी मुक्ति हो है ताका काल आठसै च्यारि दिनका इकसठिवां भागविषै दोयसै छिहंतरि दिनका इकसठिवां भाग मात्र पुष्यकी मुक्तिका काल हो है। ऐसैं सर्वकाल मिलि राहुकै उत्तराय-णविषै एक सौ असी दिन हो है। बहुरि राहुकै दक्षिणायनविषै प्रथम पुष्यका मुक्तिकालविषै अवशेष पांचसै अठाईस दिनका इकसठिवां भाग प्रमाण कालपर्यंत तौ पुष्यकी मुक्ति हो है। पीछे आश्लेषादि उत्तराषाढ पर्यंत नक्षत्रनिकी मुक्ति क्रमतैं हो है। तहां तीन जघन्य सात मध्य तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका मुक्तिकाल क्रमतैं च्यारिसै दोयका इकसठिवां भाग आठसै च्यारिका इक-सठिवां भाग बारहसै छैका इकसठिवां भाग मात्र है। ऐसे सर्व्वकाल मिलि राहुके दक्षिणायन विषै एकसौ असीदिन हो हैं। या प्रकार नक्षत्र मुक्तिकौं समछेद करि जोड़ें चंद्रमाके अयनके दिन तेरह अर चवालीसका सतसठिवां भाग हो है। बहुरि दोऊ अयन मिलाएं वर्षके दिन सत्ता-इस अर इकईसका इकसठिवां भाग हो है। बहुरि सूर्यके अयनदिन एक सौ तियासी वर्ष दिन तीनसै छयासठि हो हैं। बहुरि राहुके अयनदिन एक सौ असी वर्ष दिन तीनसै साठि हो हैं॥४०९॥

आगैं अधिक मासका प्रतिपादनके आर्या सूत्र कहैं हैं;—

इगिमासे दिणवड्ढी वस्से बारह दुवस्सगे सद्धे।
अहिओ मासो पंचयवासप्पजुगे दुमासहिया॥ ४१०॥
एकस्मिन् मासे दिनवृद्धिः वर्षे द्वादश द्विवर्षके सार्द्धे।
अधिको मासः पञ्चवर्षात्मकयुगे द्विमासौ अधिकौ॥ ४१०॥

अर्थ—एक मासविषै एक दिनकी वृद्धि होइ एक वर्षविषै बारह दिनकी वृद्धि होइ अढाई वर्षविषै एक मास अधिक होइ। पंच वर्षका समुदाय सोई है स्वरूप जाका ऐसा युग तीहविषै दोय मास अधिक हो है। तहां एक वर्षविषै बारह दिन बधै तौ अढाई वर्षविषै कितने दिन बधै ऐसें किएं लब्धराशि तीस दिन होइ। ऐसेंही युगविषै भी त्रैराशिक करना। भावार्थ—एक वर्षके बारह मास एक मासके तीस दिन तहां इकसठिवें दिन एक तिथि घटै तातैं वर्षके तीनसै चौवन दिन होइ। अर सूर्यके वर्षके तीनसै छासठि दिन है। सो बारह दिन एक वर्षविषै बधती भए सो अढाई वर्ष व्यतीत भएं एक अधिक मास होइ तब तेरह मासका वर्ष होइ। बहुरि ऐसेही अढाई वर्ष और भएं एक मास अधिक होइ। या प्रकार पांच वर्ष प्रमाण जो युग तिहविषै दोय अधिक मास होइ॥ ४१०॥

अब पूर्व गाथाका जु अर्थ ताहीकों आठ गाथानि करि वर्णन करै है;—

आसाढपुण्णमीए जुगणिप्पत्ती दु सावणे किण्हे।
अभिजिम्हि चंदजोगे पाडिवदिवसम्हि पारंभो॥ ४११॥

आषाढपूर्णिमायां युगनिष्पत्तिः तु श्रावणे कृष्णे।
अभिजिति चंद्रयोगे प्रतिपद्दिवसे प्रारंभः॥ ४११॥

अर्थ—आषाढ मासविषै पूर्णोके दिन अपरान्ह समय उत्तरायणकी समाप्तता होतें पंच वर्ष स्वरूप युगकी निष्पत्ति कहिए संपूर्णता सो हो है। बहुरि श्रावण मास कृष्णपक्षविषै अभिजित नक्षत्र अर चन्द्रमाका योग होतें पडिवाके दिन दक्षिणायनका प्रारंभ हो है। भावार्थ—आषाढ सुदि पूर्णो अपरान्हविषै तो पूर्व युगकी समाप्तता भई। बहुरि श्रावण वदि एकम दिन जहां चन्द्रमाकै अभिजित नक्षत्रका मुहूर्तकाल होइ तहां सूर्यका दक्षिणायनका आरंभ हो है। सोई नवीन पंच वर्ष स्वरूप जो युग ताका प्रारंभ जानना॥ ४११॥

आगैं किस वीथीविषै किस अयनका प्रारंभ हो है सो कहै है;—

पढमंतिमवीहीदो दक्खिणउत्तरदिणयणपारंभो।
आउट्टी एगादी दुगुणगदा दक्खिणाउट्टी॥ ४१२॥

प्रथमांतिमवीथीतः दक्षिणोत्तरदिनयनप्रारंभः।
आवृत्तिः एकादि द्विगुणगता दक्षिणावृत्तिः॥ ४१२॥

अर्थ—प्रथम अंतिम वीथीतें दक्षिण उत्तर दिशाका अयनका प्रारंभ हो है। भावार्थ—एकसौ चौरासी वीथीनिविषै प्रथम अभ्यंतर वीथीविषै तिष्ठता सूर्यके दक्षिण अयनका प्रारंभ हो है। अनंतरा वीथीविषै तिष्ठता सूर्यके उत्तर अयनका प्रारंभ हो है। बहुरि सोई दक्षिणायन अर उत्तरायणकी प्रथम आवृत्ति है। पूर्व अयनकों समाप्त करि नवीन अयनका प्रारंभ करना सो आवृत्ति जानना। [illegible] आदि दै करि दुगुणता करिए दोय इत्यादि प्रमाण लिए दक्षिण आवृत्ति हो है॥ ४१२॥

[illegible] है—

[illegible]

इनके पंद्रह शुक्लके दश दिन हो है। बहुरि दक्षिणायनविषै बीचि जे भाद्रपदादि उत्तरायनविषै बीचि फाल्गुन आदि मास तिनविषै आदिविषै एक एक घटता अर अंतवि बधता दिन स्थापन करिए ऐसें एक एक मासविषै इकतीस तिथि स्थापन किए तीह त या तीह तीह अयनविषै अधिक दिन आवै है। भावार्थ—प्रथम श्रावणविषै यदि प पंद्रह तिथि कृष्णपक्षकी अर पंद्रह शुक्लपक्षकी अर एक भाद्रपदका कृष्णकी तिथि ए होइ। बहुरि भाद्रपदविषै पहले आदिविषै पंद्रह तिथि कहीं थी तामें एक घटाएं चौदह कहीं अर पंद्रह शुक्लपक्षकी अर अंतविषै एक कृष्णपक्षकी कहीं थी तामें एक बधिकरि कृष्णपक्षकी सोलह इकतीस तिथि हो है। बहुरि अश्विनविषै आदिमें एक कृष्णपक्षकी पंद्रह शुक्लपक्षकी अंतविषै एक करिए तीन कार्तिकके कृष्णपक्षकी तिथि तिथि हो है। ऐसैं कार्तिकविषै बारह कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी ग्यारि कृष्णकी अगहन कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी पांच कृष्णकी पौषविषै दश कृष्णकी पंद्रह शु कृष्णकी तिथि मिलें इकतीस तिथि होइ। बहुरि उत्तरायणविषै माघ बदी सातैं तें पंद्रह शुक्लकी माघ कृष्णकी इत्यादि रचना किए बहुरि दक्षिणायनविषै द्वितीय भा करण बदी चतुर्दशी तहां तीन कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी तेरह कृष्णकी तिथि हो भाद्रपदादिविषै रचना करनी। ऐसें रचना किए मासविषै अयनविषै अधिक दिन भा अब कहीं पंचवर्ष युगविषै दोय अधिकमास हो है ॥ ४१८ ॥

अब दो गाथाकरि उत्तरायणका प्रारंभविषै नक्षत्र स्थापनेका विधान कहैं है;—

कत्तियादितिगुणं इगिवीसदिमदं तु सहिद इगिवीसं।
विदियादि अयणसेसा अभिणिपहुदीणि णिक्खाणि ॥ ४१९
कत्तियादितिगुणं पुव्वाहीणिसं तु सहिदं एक्कीसा।
विदियादी अयणादि अभिणीपहुदीनि ऊणाणि ॥ ४१९ ॥

अर्थ—[illegible] आदिमें होइ तामें एक घटाएं जो प्रमाण [illegible]

साधन किएं उत्तराषाढ आवै परंतु सूक्ष्मपनैं साधन किएं अभिजित नक्षत्र जाननां। आगैं भी अश्विनी आदिकतैं वा कार्तिकआदिकतैं नक्षत्र गणनाविषै अभिजित नक्षत्रका ग्रहण करना नाहीं। या प्रकार दक्षिणायनका प्रारंभविषै प्रथम श्रावणमासविषै नक्षत्र स्यावनैंका विधान कह्या। अब दूसरा उदाहरण कहिए हैं। विवक्षित दूसरी आवृत्ति तामैं एक घटाएं एक रह्या तीह करि एकसौ इक्यासीकौं गुणें एकसौ इक्यासीही हुवा इनमें इकईस मिटाएं दोयसै दोय भए इनकौं इक्कीसका भाग दिएं अवशेष तेरह रहे सो अश्विनी नक्षत्रतैं तेरह्यां नक्षत्र हस्त सो उत्तरायणका प्रारंभविषै प्रथम माघमासविषै हस्तनक्षत्र पाईए है। ऐसेही तीसरी पांचवीं सातवीं नवमी आवृत्तिविषै दक्षिणायनका प्रारंभ श्रावणमासविषै हो है। तहां अर चौथी छठी आठवीं दशवीं आवृत्तिविषै उत्तरायणका प्रारंभ माघमासविषै हो है। तहां नक्षत्र साधन करना॥ ४१९॥

आगैं दक्षिणायण उत्तरायणकै पर्व वा तिथि स्यावनैंविषै सूत्र कहैं हैं;—

वेगाउट्ठिगुणं तेसीदिसदं सहिद तिगुणगुणरूवे।
पण्णरभजिदे पव्वा सेसा तिहिमाणमयणस्स॥ ४२०॥

व्येकावृत्तिगुणं त्र्यशीतिशतं सहितं त्रिगुणगुणरूपेण।
पंचदशभक्ते पर्वाणि शेषं तिथिमानं अयनस्य॥ ४२०॥

अर्थ—व्येका वृत्ति करिए जेतवीं विवक्षित आवृत्ति होइ तामैं एक घटाएं जो प्रमाण रहै तीह करि एकसौ तियासीकौं गुणिए, बहुरि जितनैं गुणकारक एकसौ तियासीकौं गुकरि ताकौं त्रिगुणा करि तामैं जोडिए। बहुरि एक और जोडिए जो प्रमाण होइ ताकौं पंद्रहका भाग दीजिए तो लब्धप्रमाण आवै तितनैं तो पर्व जाननैं, अवशेष रहे सो तिथि प्रमाण जाननां। दक्षिणायन वा उत्तरायणका ऐसेही जाननां। उदाहरण विवक्षित आवृत्ति प्रथम तामैं एक घटाएं बिंदी रही तीह करि एकसौ तियासीकौं गुणें बिंदी करि गुणें बिंदी ही होइ इस न्याय करि बिंदी ही आई। बहुरि इहां गुणकार बिंदी ताकौं तिगुणा किए भी बिंदीविषै बिंदी जोडें बिंदी ही भई। बहुरि तामैं एक जोडें एक भया याकौं पंद्रहका भाग लागै नाहीं तातैं पर्वका तो अभाव जाननां। अर अवशेष एक रह्या सो तिथिका प्रमाण जाननां ऐसैं प्रथम आवृत्ति दक्षिणायनका प्रारंभविषै प्रथम श्रावणमासविषै पर्वका तो अभाव आया पक्षकी पूर्णता भई पूर्णमा वा अमावस्या जो होइ ताका नाम पर्व है। सो युगका आरंभ भएं पीछै जेते पर्व व्यतीत होइ सोई इहां पर्वनिकी संख्या जाननी। सो प्रथम आवृत्तिविषै कोऊ भी पर्व व्यतीत भया तातैं पर्वका अभाव जाननां। अर तिथिका प्रमाण एक जाननां। बहुरि दूसरा उदाहरण-विवक्षित आवृत्ति दूसरी तामैं एक घटाएं एक रह्या तीह करि एकसौ तियासीकौं गुणें एकसौ तियासी भए। बहुरि गुणकारका प्रमाण एक ताकौं तिगुणा किए तीनसौ मिलाए एक सौ छियासी भये। बहुरि तामैं एक और जोडें एकसौ सित्यासी भए। इनकौं पंद्रहका भाग दिए बारह पाए सो बारह सौ पर्वका प्रमाण भया। युगका प्रारंभतैं बारह पर्व व्यतीत भएं पीछै दूसरी आवृत्ति हो है। अर अवशेष सात रहे सो सात तिथि जाननीं। ऐसैं दूसरा आवृत्ति उत्तरायणका प्रारंभ होतैं प्रथम माघ मासविषै हो[illegible] आरंभतैं

बारह तौ पर्व व्यतीत भए जाननें अर सातैं तिथि जाननी । याही प्रकार अन्य आवृत्तिनिविषै भी पर्व वा तिथिका प्रमाण स्यावनां ॥ ४२० ॥

आगैं दिन वा रात्रिका प्रमाण जिहिं कालविषै समान होइ ताका नाम विषुप हैं तिह विषुप-विषै पर्व वा तिथि वा नक्षत्रनिकौं छह गाथानि करि युगके दश अयनिविषै कहै हैं;—

छम्मासद्धगयाणं जोइसयाणं समाणदिणरत्ती ।
तं इसुपं पढमं छसु पव्वसु तीदेसु तदियरोहिणिए ॥ ४२१ ॥
षण्मासार्धगतानां ज्योतिष्काणां समानदिनरात्री ।
तत् विषुवं प्रथमं षट्सु पर्वसु अतीतेषु तृतीयारोहिण्याम् ॥ ४२१ ॥

अर्थ—छह मासका अर्द्ध ज्योतिषीनिके गएं समान रात्रि हो है सोई विषुप है । भावार्थ-एक अयन छह मासका हो है तहां आधा अयन भएं दिन अर रात्रिका प्रमाण समान हो है । सो जिस कालविषै दिन रात्रि समान होइ ताका नाम विषुप है । सो पंच वर्ष प्रमाण युग-विषै दश विषुप हो हैं । पांच तौ दक्षिणायनका अर्द्धकालविषै अर पांच उत्तरायणका अर्द्धकालविषै हो है । तहां पहला विषुप दक्षिणायनका अर्द्धकालविषै दूसरा उत्तरायणका अर्द्धकालविषै ऐसैं क्रमतैं विषुप जाननें । तहां प्रथम विषुप युगके आरंभतैं छह पर्व व्यतीत भएं तृतीय तिथिविषै रोहिणी नक्षत्रकी युक्ति चन्द्रमाके होत होत सो हो सांतैं हो है ॥ ४२१ ॥

विगुणणवपव्वअतीदे णवमीए विदियगे धणिट्ठाए ।
इगितीसगदे तदियं सादीए पण्णरसमम्हि ॥ ४२२ ॥
द्विगुणनवपर्वातीतेषु नवम्यां द्वितीयके धनिष्ठायाम् ।
एकत्रिंशद्गते तृतीये स्वातौ पंचदश्याम् ॥ ४२२ ॥

अर्थ—दुगुण नव जो युगके आरंभ पीछैं अठारह पर्व व्यतीत भएं नवमी तिथिविषै धनिष्ठा नक्षत्रका योग चंद्रमाके होतैं दूसरा विषुप हो है । बहुरि इकतीस पर्व व्यतीत भएं तीसरा विषुप स्वाति नक्षत्र होत संते पंचदशी तिथिविषै हो है । सो कृष्णपक्ष पहलैं अर्धतैं अमावस्या-दिन हो है ॥ ४२२ ॥

तेदालगदे तुरियं छट्ठिदुगब्भुगयं तु पंचमयं ।
पणवण्णब्भंतरदे बारसिए उत्तरायणे ॥ ४२३ ॥
त्रिचत्वारिंशद्गतेषु तुरीयं षष्टिद्विकाभ्युद्गते तु पंचमम् ।
पंचपंचाशदभ्यंतरेषु द्वादश्यां उत्तरायणे ॥ ४२३ ॥

अर्थ—तिरालीस पर्व व्यतीत भएं चौथा विषुप षष्टीविषै पुनर्वसु नक्षत्रका प्राप्त भएं हो है । बहुरि पांचवां विषुप पचवन पर्व व्यतीत भएं द्वादशी तिथिविषै उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र होत संतो हो है ॥ ४२३ ॥

अट्ठसट्ठिगदे तदिए दिणे छट्ठे अमीदिसव्वगदे ।
अहदिसयाए मघम्मिह तेणउदिगदे दु अट्ठमयं ॥ ४२४ ॥

अट्ठसट्ठिगतेसु तृतीयायां मैत्रे पक्षे अशीतिपर्वगतेषु।
नवमीमघायां सप्तमं इह त्रिनवतिगतेषु ॥ अष्टमम् ॥ ४२४ ॥

अर्थ—अड़सठि पर्व गएं तृतीय तिथिविषैं मैत्र जो अनुराधा नक्षत्र ताकौं होत संतैं छठा विषुप हो है। बहुरि असी पर्व गएं नवमी तिथिविषै मघा नक्षत्र होतै सातवां विषुप हो है। बहुरि इहां तेरणवै पर्व गएं आठवां विषुप हो है ॥ ४२४ ॥

अस्सिणि पुण्णे पव्वे णवमं पुण पंचजुदसए पव्वे।
तीदे छट्ठितिहीए णक्खत्ते उत्तरासाढे ॥ ४२५ ॥
अश्विनी पूर्णे पर्वणि नवमं पुनः पंचयुतशतेषु पर्वसु।
अतीतेषु षष्टीतिथौ नक्षत्रे उत्तराषाढे ॥ ४२५ ॥

अर्थ—सो आठवां विषुप अश्विनी नक्षत्र होतैं पूर्ण पर्व जो अमावस्या तीहविषै हो है। बहुरि नवमां विषुप एकसौ पांच पर्व व्यतीत भएं षष्टी तिथिविषैं उत्तराषाढ नक्षत्र होतैं हो है ॥४२५॥

चरिमं दसम विसुवं सत्तरसुत्तरसएसु पव्वेसु।
तीदेसु बारसीए जाइदि उत्तरफग्गुणिए ॥ ४२६ ॥
चरमं दशमं विषुवं सप्तदशोत्तरशतेषु पर्वसु।
अतीतेषु द्वादश्यां जायते उत्तराफाल्गुन्याम् ॥ ४२६ ॥

अर्थ—अंतका दशवां विषुप एकसौ सतरह पर्व व्यतीत भएं द्वादशी तिथिविषै उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र होतैं हो है ॥ ४२६ ॥

आगैं विषुपविषै पर्व वा तिथि ल्यावनेकौं सूत्र कहैं हैं;—

विगुणे सगिट्ठरूवे रूऊणे छग्गुणे हवे पव्वं।
तप्पव्वदलं तु तिथी पवट्टमाणस्स इट्ठस्स ॥ ४२७ ॥
द्विगुणे स्वकेष्टविषुपे रूपोने षड्गुणे भवेत् पर्व।
तत्पर्वदलं तु तिथिः प्रवर्तमानस्य विषुपस्य ॥ ४२७ ॥

अर्थ—अपनां इष्ट विषुप जेथवां होइ तीह प्रमाणकौं दूणा करिए तामैं एक घटाइए बहुरि अवशेषकौं छह गुणा किएं पर्वनिका प्रमाण आवै है। बहुरि तिस पर्व प्रमाणका आधा सो प्रवर्त्तमान विवक्षित विषुपका तिथि प्रमाण हो है। तीह पर्वका आधा प्रमाण पंद्रहतैं अधिक होइ सो पंद्रहका भाग दिएं जो लब्ध प्रमाण होइ सो तो पर्व संख्याविषै जोड़िए अर अवशेष रहै सो तिथिका प्रमाण हो है। इहां उदाहरण-इष्ट विषुप पहला ताकौं दूणा किएं दोय तामैं एक घटाएं अवशेष एक ताकौं छह गुणा किएं छहसो प्रथम विषुप विषै युग आरंभतैं व्यतीत पर्वनिका प्रमाण छह है। बहुरि तीह पर्व प्रमाणका आधा तीन सो प्रथम विषुपविषै तिथि तृतीया है। दूसरा उदाहरण—इष्ट विषुप दशवां ताकौं दूणा किएं बीसतामैं एक घटाएं उगणीस ताकौं छह गुणा किएं एकसौ चौदहसो पर्व प्रमाण ताका आधा सत्तावन ताकौं पंद्रहका भाग दिएं तीन

है। तातै नवमा नक्षत्र ही ग्रहण किया। इहां गणनाविषै अभिजितका ग्रहण करना। ऐसेंही अन्य विपुपनिविषै नक्षत्र साधन करना। बहुरि आवृत्ति वा विपुपविषै पर्व प्रमाणकौं पंद्रह गुणा करि तामें तिथि प्रमाण मिलाएं समस्त दिननिका प्रमाण हो है। उदाहरण-दूसरी आवृत्तिविषै पर्व-प्रमाण बारह तिनकौं पंद्रह गुणां किएं एकसौ असी भए, तहां तिथि प्रमाण सात मिलाएं एकसौ सित्यासी भए सोई युगके आरंभतैं एकसौ सित्यासी दिन व्यतीत भएं दूसरी आवृत्ति हो है। इहां एकसौ सित्यासी दिन व्यतीत भए ही दूसरी आवृत्ति हो है तथापि घटती तिथिकी विवक्षा न करि पक्षके पंद्रही दिन गिणि ऐसा कथन किया है। ऐसेंही अन्य आवृत्ति वा विपुपनिविषै साधन करना ॥४२९॥

आगैं विपुपविषै नक्षत्रका स्थापना अन्य प्रकार करि दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

आवट्टिरिक्खमस्सिणिपहुदीदो गणिय तत्थ अट्ठजुदे।
इगुपेसु होंति रिक्खा इह गणणा कित्तियादीदो ॥ ४३० ॥

आवृत्तिऋक्षं अश्विनीप्रभृतितः गणयित्वा तत्र अष्टयुते।
विपुपेषु भवंति ऋक्षाणि इह गणना कृत्तिकादितः ॥ ४३० ॥

अर्थ—आवृत्तिका नक्षत्रकौं अश्विनी नक्षत्रतैं लगाय गिणिए जेथवां होइ तिहविषै आठ मिलाएं जो प्रमाण होइ तेथवां नक्षत्र विपुपविषै जाननां इहां गणना कृत्तिका आदितैं करनी। उदाहरण-विवक्षित तीसरी आवृत्तिका नक्षत्र मृगशीर्षा सो अश्विनी मृगशीर्ष नक्षत्र पांचवो है। बहुरि पांचविषै आठ मिलाएं तेरह होइ सो कृत्तिका नक्षत्रतैं तेरव्हां नक्षत्र स्वाति है। सोई गणना किएं तीसरा विपुपविषै स्वाति नक्षत्र जाननां ॥ ४३० ॥

आगैं आवृत्ति नक्षत्रका प्रमाणविषै आठ मिलाए नक्षत्र प्रमाणतैं राशि अधिक होइ तौ कहा करिए सो कहैं हैं;—

अहियंकादट्ठवीसं छेडेज्जो विदियपंचमट्ठाणे।
एक्कं णिक्खिव छट्ठे दसमे विय एक्कमवणिज्जो ॥ ४३१ ॥

अधिकांकादष्टविंशं त्याज्याः द्वितीयपंचमस्थाने।
एकं निक्षिप षष्ठे दशमेपि च एकमपनेयम् ॥ ४३१ ॥

अर्थ—आवृत्ति नक्षत्रकौं अश्विनीतैं गिनैं जेथवां होइ तामें आठ मिलाएं जो अठाईसतैं अधिक राशि होइ तौ तीहमेंस्यौं अठाईस घटाइए। अर दूसरा पांचवां आवृत्ति स्थानविषै आठ मिलाएं जो राशि होइ तामें एक और मिलाइए। अर छटा दशवां आवृत्ति स्थानमेंस्यौं एक घटाइए इनका उदाहरण चौथी आवृत्तिविषै शतभिषक नक्षत्र है सो अश्विनीतैं पचासवां है। तामें आठ मिलाए तेत्तीस होइ तिनमेंसों अठाईस घटाए पांच रहे सो कृत्तिकातैं पांचवां नक्षत्र पुनर्वसु है। सोई चौथा विपुपविषै जाननां ऐसे अन्यत्र भी जाननां। बहुरि दूसरी आवृत्तिविषै हस्त नक्षत्र है सो अश्विनीतैं तेरव्हा है तामें आठ मिलाएं इकईस होइ एक और मिलाएं बाईस होइ सो कृत्तिकातैं बाईसवां नक्षत्र धनिष्ठा है सोई दूसरा विपुपविषै जाननां। ऐसें पांचवां स्थानविषै जानि लेना। बहुरि छट्ठी आवृत्तिविषै पुष्य नक्षत्र है सो अश्विनीतैं आठवां है। तामें आठ मिलाए सोलह

आगैं नक्षत्रनिकी स्थिति विशेषका विधान कहैं हैं;—

कित्तियपडंतिसमये अहम मघरिक्खमेदि मज्झण्हं।
अणुराहारिक्खुदओ एवं सेसे वि भासिज्जो ॥ ४३६ ॥

कृत्तिकापतनसमये अष्टमं मघाऋक्षं एति मध्याह्नम्।
अनुराधाऋक्षोदयः एवं शेषेषु अपि भाषणीयम् ॥ ४३६ ॥

अर्थ—कृतिका नक्षत्रका पतन समय कहिए अस्त होनेका काल तीहविषैं इस कृतिकातैं आठवां मघा नक्षत्र सो मध्यान्ह कहिए बीचि प्राप्त हो है। बहुरि तीह मघातैं आठवां अनुराधा नक्षत्र सो उदय हो है। ऐसेही रोहिणी आदि नक्षत्रनिविषैं जो नक्षत्र अस्त होइ तीह समय तीह नक्षत्रतैं आठवां नक्षत्र मध्यान्हकों प्राप्त होइ। अर तीहतैं आठवां नक्षत्र उदयकों प्राप्त होइ ऐसा कहना ॥ ४३६ ॥

आगैं चन्द्रमाके पंद्रह मार्ग हैं तिनविषैं इस इस मार्गविषैं ए नक्षत्र तिष्ठै हैं। ऐसा तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

अभिजिणव सादि पुव्वुत्तरा य चंदस्स पढममग्गम्मि।
तदिए मघापुणव्वसु सत्तमिए रोहिणी चित्ता ॥ ४३७ ॥

अभिजिन्नव स्वातिः पूर्वोत्तरा च चन्द्रस्य प्रथममार्गे।
तृतीये मघापुनर्वसू सप्तमे रोहिणी चित्राः ॥ ४३७ ॥

अर्थ—अभिजित आदि नव सो अभिजित १ श्रवण १ धनिष्ठा १ शतभिषा १ पूर्वा भाद्रपदा १ उत्तरा भाद्रपदा १ रेवती १ अश्विनी १ भरणी १ अर ए नव स्वाति १ पूर्वाफाल्गुनी १ उत्तराफाल्गुनी १ ए बारहौं चन्द्रमाके प्रथम मार्गविषैं विचरै हैं। जो चन्द्रमाका प्रथम अभ्यन्तर वीथी रूप परिधि तीहकै उपरि जो परिधि तिहविषैं भ्रमण करै है। ऐसेही तीसरा मार्गविषैं मघा १ पुनर्वसु ए दोय नक्षत्र विचरै हैं। सातवां मार्गविषैं रोहिणी चित्रा ए दोय नक्षत्र विचरै हैं ॥ ४३७ ॥

छट्ठट्ठमदसमेयारसमे कित्तिय विसाह अणुराहा।
जेट्ठा क्रमेण सेसा पण्णारसमम्मि अट्ठेव ॥ ४३८ ॥

षष्ठाष्टमदशमैकादशे कृतिका विशाखा अनुराधा।
ज्येष्ठा क्रमेण शेषाणि पंचदशे अष्टैव ॥ ४३८ ॥

अर्थ—छटा मार्गविषैं कृतिका आठवांविषैं विशाखा दशवांविषैं अनुराधा ग्यारवांविषैं ज्येष्ठा क्रम करि विचरै हैं। अवशेष आठ नक्षत्र पंद्रह्यां अंतका मार्गके ऊपरि विचरै हैं ॥ ४३८ ॥

ते शेष आठ नक्षत्र कौन सो कहै हैं;—

हत्थो मूलतियं पिय मियसिरदुग पुस्सठोप्पि अट्ठेव।
अट्ठपहे णक्खत्ता णिट्ठंति हु चारमाईदा ॥ ४३९ ॥

सेणागयपुव्वावरगत्ते णावा हयस्स सिरससरिसा।
चुल्लीपासाणणिभा कित्तियआदीणि रिक्खाणि ॥ ४४४ ॥
सेनागजपूर्वापरगात्रे नावा हयस्य शिरसासदृशाः।
चुल्लीपाषाणनिभाःकृत्तिकादीनि ऋक्षाणि ॥ ४४४ ॥

अर्थ—सेना १ हस्तीका आगिला शरीर १ हस्तीका पाछिला शरीर १ नाव १ घोड़ेका मस्तक १ चूल्हाका पाषाण १ समान आकारकौं धरैं हैं तारे जिनके ऐसे कृतिकादि नक्षत्र जानने ॥ ४४४ ॥

आगैं कृतिकादि नक्षत्रनिके परिवार रूप तारानिकौं कहैं हैं;—

एकारसयसहस्सं सगसगतारापमाणसंगुणिदं।
परिवारतारसंखा कित्तियपणवखत्तपहुदीणं ॥ ४४५ ॥
एकादशशतसहस्रं स्वकस्वकताराप्रमाणसंगुणितम्।
परिवारतारासंख्या कृत्तिकानक्षत्रप्रभृतीनाम् ॥ ४४५ ॥

अर्थ—ग्यारह अधिक एकसौ सहित एक हजारकौं अपने अपने तारानिका प्रमाण करि गुणें जो प्रमाण होइ सो कृतिका नक्षत्र आदि नक्षत्रनिके परिवाररूप तारेनिकी संख्या जाननी। उदाहरण—कृतिका नक्षत्रके मूल तारे छह हैं इनिकौं ग्यारहसै ग्यारह करि गुणे छह हजार छह सै छासठि तारे कृत्तिका नक्षत्रके परिवारके हैं। ऐसैं ही रोहिणी आदिके भी जाननें नक्षत्रनिके जे अधिदेवता तिनिके अनुसारी इनिविषै बसै हैं ॥ ४४५ ॥

आगैं पंच प्रकार ज्योतिषी देवनिका आयु प्रमाण कहैं हैं;—

इंदिणसुक्कगुरिंदरे लक्ख सहस्सा सयं च सहपल्लं।
पल्लं दलं तु तारे वरावरं पादपादद्धं ॥ ४४६ ॥
इन्दिनशुक्रगुरिंतरेषु लक्षं सहस्रं शतं च सहपल्यं।
पल्यं दलं तु तारासु वरमवरं पादपादार्धम् ॥ ४४६ ॥

अर्थ—चंद्रमा सूर्य शुक्र बृहस्पति इतर इनविषै क्रमतैं लाख हजार सौ वर्ष सहित पल्य अर्द्ध पल्य प्रमाण आयु है। भावार्थ—चंद्रमाका आयु लाख वर्ष सहित पल्य प्रमाण है। सूर्यका आयु हजार वर्ष सहित पल्य प्रमाण है। शुक्रका आयु सौ वर्ष सहित पल्य प्रमाण है। बृहस्पतिका आयु पल्य प्रमाण है। इहर बुध मंगल शनैश्चरादिकका आयु आध पल्य प्रमाण है। बहुरि तारे कहिए तारा अर नक्षत्र इनका आयु उत्कृष्ट तौ पाद कहिए पल्यका चौथा भाग प्रमाण है। अर जघन्य पादार्ध कहिए पल्यका आठवां भाग प्रमाण है ॥ ४४६ ॥

आगैं चन्द्रमा सूर्यनिकी देवांगलानिकौं दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

चंदाभा य सुसीमा पहंकरा अचिमालिणी चंदे।
सूरे दुदि सूरपहा पहंकरा अचिमालिणी देवी ॥ ४४७ ॥
चन्द्राभा च सुसीमा प्रभंकरा अर्चिमालिनी चंद्रे।
सूर्ये पुनि सूर्यप्रभा प्रभंकरा अर्चिमालिनी देव्यः ॥ ४४७ ॥

अर्थ—लघिमा १ गुरिमा १ प्राप्ति १ प्राकाम्य १ अणिमाऋद्धी १ ए प्यारि ऋ
गना है। बहुरि पूर्वोक्त पुनि १ गुरिमा १ प्राप्ति १ प्राकाम्य १ अणिमाऋद्धी ए प्यारि पट्ट

जेट्ठा ताओ पुट्ठ पुट्ठ परिवारचदुग्गहग्गदेवीणं।
परिवारदेविसरिसं पत्तेयमिमा विउव्वंति ॥ ४४८ ॥
ज्येष्ठाः ताः पृथक् पृथक् परिवारचतुःसहस्रदेवीनाम्।
परिवारदेवीसदृशं प्रत्येकमिमाः विकुर्वन्ति ॥ ४४८ ॥

अर्थ—ते उक्त कहिए पट्ट देवी प्रथक् प्रथक् प्यारि हजार परिवार देवी
भावार्थ—प्यारि प्यारि हजार परिवार देवांगनानिकी एक एक पट्ट देवांगना है। बहुरि
बार देवी समान संख्याकों प्रत्येक विक्रिया करै है। भावार्थ—एक एक पट्ट देवांगना
करै तौ प्यारि हजार हो है ॥ ४४८ ॥

आगें ज्योतिष्क देवांगनानिका आयु प्रमाण कहै है;—

जोइसदेवीणाऊ सगसगदेवाणपद्धयं होदि।
सव्वणिगिट्ठसुराणं वत्तीसा होंति देवीओ ॥ ४४९ ॥
ज्योतिष्कदेवीनामायुः स्वकस्वकदेवानामर्धं भवति।
सर्वनिकृष्टसुराणां द्वात्रिंशत् भवंति देव्यः ॥ ४४९ ॥

अर्थ—ज्योतिष्क देवांगनानिका आयु अपनें अपनें भर्त्तार देवनिका आयुतें अर्द्ध
प्रमाण जानना। बहुरि इहां सर्वतें निकृष्ट हीन पुण्यवान देव तिनकै बत्तीस देवांगना हो है।
मध्यविषै यथायोग्य देवांगनानिकी संख्या जाननी ॥ ४४९ ॥

आगें भवनत्रिकविषैं जे जीव उपजै है तिनकौं कहै है;—

उम्मग्गचारि सणिदाणणलादिमुदा अकामणिज्जरिणो।
कुदवा सबलचरित्ता भवणतियं जंति ते जीवा ॥ ४५० ॥
उन्मार्गचारिणः सनिदानाः अनलादिमृता अकामनिर्जरिणः।
कुतपसः शबलचारित्रा भवनत्रये यांति ते जीवाः ॥ ४५० ॥

अर्थ—उन्मार्गचारी कहिए जिनमतनैं विपरीत धर्मके आचरनेवाले, बहुरि सनिदा
कहिए निदान जिननैं किया होइ, बहुरि अनलादिमृता. कहिए अग्नि जल संपापात आदिकतैं मू
बहुरि अकामनिर्जरिणः कहिए विना अभिलाष बंधादिकके निमित्ततैं परीषह सहनादि करि जिनः
निर्जरा भई बहुरि कुतपसः कहिए पंचाग्नि आदि खोटे तपके करनेवाले बहुरि शबलचारित्रा. कहिए
सदोष चारित्रके धरनहारे जे जीव हैं ते भवनत्रय जो भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी तिनविषैं जाय
उपजै हैं ॥ ४५० ॥ ऐसैं ज्योतिर्लोकका अधिकार समाप्त भया।

इतिश्री नेमिचंद्राचार्य विरचित त्रिलोकसारमें चौथा ज्योतिर्लोकका अधिकार
समाप्त भया ॥ ४ ॥

॥ अथ वैमानिकलोकाधिकार ॥ ५ ॥

अथ अनुक्रम करि प्राप्त भया वैमानिक लोकका वर्णन करनेका है अभिप्राय जाकैं ऐसे आचार्य सो प्रथम विमाननिकी संख्याका प्रतिपादनके अर्थि तिन विमाननिविषै तिष्ठते जे अकृत्रिम जिन मंदिर तिनकौं प्रमाणपूर्वक नमस्कारकौं करै है;—

चुलसीदिलक्खसत्ताणउदिसहस्से तहेव तेवीसे ।
सव्वे विमाणसयणगजिणिंदगेहे णमंसामि ॥ ४५१ ॥
चतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रान् तथैव त्रयोविंशान् ।
सर्वान् विमानसमानजिनेंद्रगेहान् नमस्यामि ॥ ४५१ ॥

अर्थ—चौरासी लाख सित्याणवै हजार तेवीस सर्व विमान संख्याके समान जिनेश्वरके मंदिर हैं जातैं एक एक विमानविषै एक एक जिन मंदिर पाईए हैं तिनकौं नमस्कार करौं हौं ४५१

आगैं इन विमाननिका कल्प अर कल्पातीत भेद करि तहां प्रथमही कल्प जे स्वर्ग तिनके नाम दोय गाथानि करि कहै है;—

सोहम्मीसाणसणक्कुमारमाहिंदगा हु कप्पा हु ।
बम्हब्भुत्तरगो लांतवकापिट्ठगो छट्ठो ॥ ४५२ ॥
सौधर्मैशानसनत्कुमारमाहेंद्रकाः हि कल्पा हि ।
ब्रह्मब्रह्मोत्तरकौ लांतवकापिष्टकौ षष्ठः ॥ ४५२ ॥

अर्थ—सौधर्म १ ईशान १ सनत्कुमार १ माहेन्द्र १ ए च्यारि कल्प कहिए स्वर्ग हैं बहुरि ब्रह्म १ ब्रह्मोत्तर ए दोय कल्प मिलि करि इनका इंद्र एक ही है तातैं अपेक्षा एक ही कल्प है । बहुरि लांतव १ कापिष्ट ए दोय भी एक इंद्रकी अपेक्षा छट्ठा एक कल्प है ॥ ४५२ ॥

सुक्कमहासुक्कगदो सदरसहस्सारगो हु तत्तो दु ।
आणदपाणदआरणअच्चुदगा होंति कप्पा हु ॥ ४५३ ॥
शुक्रमहाशुक्रगतः शतारसहस्रारगो हि ततस्तु ।
आनतप्राणतारणाच्युतगा भवंति कल्पा हि ॥ ४५३ ॥

अर्थ—शुक्र १ महाशुक्र १ ए दोय भी एक इन्द्र अपेक्षा एक कल्प है, बहुरि शतार १ सहस्रार १ ए दोय भी एक इंद्र अपेक्षा एक कल्प है । बहुरि तहां पीछैं आनत १ प्राणत १ आरण १ अच्युत ए च्यारि कल्प हैं ॥ ४५३ ॥

मज्झिमचउजुगलाणं पुव्वावरजुम्मगेसु सेसेसु ।
सव्वत्थ होंति इंदा इदि बारस होंति कप्पा हु ॥ ४५४ ॥

मध्यमचतुर्युगलानां पूर्वापरयुग्मयोः शेषेषु ।
सर्वत्र भवंति इंद्रा द्वादश भवंति कल्पा हि ॥ ४५४ ॥

अर्थ—सोलह स्वर्गनिके आठ युगल तिनविषै मध्यका च्यारि युगलनिविषै पूर्व दोय युगल तौ ब्रह्म ब्रह्मोत्तर अर लांतव कापिष्ट अर अपर दोय युगल शुक्र सतार महाशुक्र अर सहस्रार ए च्यारि युगलनिके एक एक इंद्र है। बहुरि अवशेष आठ कल्प तिनिविषै सर्वत्र एक एक इंद्र है। ऐसे इंद्र अपेक्षा करि कल्प बारह है ॥ ४५४ ॥

आगै स्वर्गनिके ऊपरि जे कल्पातीत विमान तिनके नाम कहै हैं;—

हेट्ठिममज्झिमउवरिमतित्तिय गेवेज्ज णवअणुदिसगा ।
पंचाणुत्तरगा विय कप्पादीदा हु अहमिंदा ॥ ४५५ ॥

अधस्तनमध्यमोपरिमत्रिकाणि ग्रैवेयाणि नव अनुदिशानि ।
पंचानुत्तरकाणि अपि च कल्पातीता हि अहमिंद्राः ॥ ४५५ ॥

अर्थ—अधस्तन अर मध्यम अर उपरिम तीन तीन ग्रैवेयक है तिनके नाम ग्रैवेयक जानने। बहुरि नव अनुदिश विमान है। बहुरि पंच अनुत्तर विमान है। ऐसे ए कल्पातीत विमान है। तिनिविषै अहमिंद्र देव तिष्ठै है ॥ ४५५ ॥

आगै नव अनुदिश विमान अर पंच अनुत्तर विमान तिनके नाम दोय गाथानि करि कहै है;—

अर्चीए अर्चिमालिणि वइरे वइरोचणा अणुदिसगा ।
सोमो य सोमरूवे अंके फलिके य भाइच्चे ॥ ४५६ ॥

अर्चिः अर्चिमालिनी वैरं वैरोचनः अनुदिशकानि ।
सोमश्च सोमरूपं अंकः स्फटिकः च आदित्ये ॥ ४५६ ॥

अर्थ—अर्ची १ अर्चिमालिनी १ वैर १ वैरोचन १ ए च्यारि श्रेणी बद्ध विमान पूर्वादि दिशा विषै तुल्य है। बहुरि सोम १ सोमरूप १ अंक १ स्फटिक ए च्यारि प्रकीर्णक विमान दिशा विदिशा विषै तुल्य है। मध्यविषै आदित्यनामा इंद्रक विमान है। ऐसे ए नव अनुदिश विमानके नाम है ॥ ४५६ ॥

विजयो हु वैजयंतो जयंत अपराजिदो य सव्वट्ठो ।
सव्वट्ठसिद्धणामा मज्झे य अणुत्तरा पंच ॥ ४५७ ॥

विजयः तु वैजयंतः जयंत अपराजितः च सर्वार्थः ।
सर्वार्थसिद्धनामा मध्ये च अनुत्तराः पंच ॥ ४५७ ॥

अर्थ—विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित १ च ए च्यारि पूर्वादि दिशाविषै श्रेणीबद्ध तुल्य है। बहुरि सर्वार्थसिद्धनामा इंद्रक विमान है। ऐसे ए पंच अनुत्तर विमान है ॥ ४५७ ॥

अब वे ही कल्प कल्पातीत जिसमें जिसके निमित्त होते हैं —

वेमाणियदेवीओ दिवड्ढं दिवड्ढपल्लपरमाऊ ।
चत्तारि सहस्सूणा सोधम्मे होंति कप्पे ॥ २०६ ॥

वैमानिकदेव्यो द्वयर्धं द्वयर्धपल्यपरमायुः ।
चतस्रः सहस्रोना सौधर्मे भवन्ति कल्पे ॥ २०६ ॥

अर्थ—[illegible] ॥ २०६ ॥

अब सौधर्मादिक जिसमें जितनी देवांगनाएँ उत्पन्न होती हैं —

चत्तालसहस्साणं चारस चारस होंति सव्वत्थ ।
सोहम्मादिचउक्के सव्वत्थ पुणो दुगे अट्ठ ॥ २०७ ॥

चत्वारिंशत्सहस्राणां द्वादश द्वादश भवन्ति सर्वत्र ।
सौधर्मादिचतुष्के सर्वत्र पुनर्द्विके अष्ट ॥ २०७ ॥

अर्थ - [illegible]

सव्वो सोहम्मादो णिय णिय कप्पाण अवरठिदिपरदो ।
वरठिदिपरियंतो आणदकप्पोत्ति णिरवेक्खो ॥ २०८ ॥

सर्वः सौधर्मात् निज निज कल्पानां अवरस्थितिपरतः ।
वरस्थितिपर्यन्तः आनतकल्पोत्ति निरपेक्षः ॥ २०८ ॥

अर्थ [illegible]

सात अर तीन ऊर्द्ध ग्रैवेयकनिविषै इक्याणवै अर अनुदिशविषै नव अर अनुत्तरविषै पांच जानने ॥ ४६१ ॥

अब प्रथमादि स्वर्गनिविषै प्रतरनिकी संख्याका प्रतिपादनके अर्थि इंद्रकनिका प्रमाण लिखै हैं। जातैं एक एक प्रतरविषै एक एक इंद्रक विमान है;—

इगितीससत्त चत्तारि दोण्णि एक्केक छक्क चदुकप्पे ।
तित्तिय एक्केक्किंदयणामा उडुआदितेवट्ठी ॥ ४६२ ॥

एकत्रिंशत्सप्त चत्वारि द्वे एकमेकं षट्कं चतुःकल्पे ।
त्रीणि त्रीणि एकमेकं इंद्रकनामानि ऋत्वादित्रिषष्टिः ॥ ४६२ ॥

अर्थ—सौधर्म युग्मविषै इकतीस इंद्रक हैं सनत्कुमार युग्मविषै सात इंद्रक है ब्रह्म युग्मविषै च्यारि इंद्रक हैं लांतव युग्मविषै दोय इन्द्रक हैं शुक्र युग्मविषै एक इंद्रक है शतार युग्मविषै एक इंद्रक है। आनंतादि च्यारि कल्पनिविषै छह इंद्रक हैं। अधस्तन आदि तीन प्रकार ग्रैवेयकनिविषै तीन तीन इंद्रक है नव अनुदिशविषै एक इंद्रक है। पंच अनुत्तरविषै एक इंद्रक है ऐसे ए तरेसठि इंद्रक है सो इनके ऋतुविमान आदि तेरेसठि नाम है ॥ ४६२ ॥

आगै इन इंद्रकनिका ऊर्द्ध अपेक्षा अंतराल अर तिनका नामका अवतार कहै है;—

एक्केकइंदयस्स य विच्चालमसंखजोयणपमाणं ।
एदाणं णामाणं वोच्छामो आणुपुव्वीओ ॥ ४६३ ॥

एकैकेंद्रकस्य च विचारं असंख्यातयोजनप्रमाणं ।
एतेषां नामानि वक्ष्यामः आनुपूर्व्या ॥ ४६३ ॥

अर्थ—एक एक इंद्रकके बीचि अंतराल असंख्यात योजन प्रमाण है। अब इंद्रकनिके नाम अनुक्रम करि नंबरनै ख्याय क्रम करि कहैं हैं ॥ ४६३ ॥

कहे इंद्रक तिनके नाम छह गाथानि करि कहैं हैं;—

उडुविमलचंदवग्गू वीरकणं णंदणं च णलिणं च ।
कंचण रोहिद चंचं मरुद्द रिद्धिस्स वेरुलियं ॥ ४६४ ॥

ऋतुविमलचंद्रवल्गुवीरकनंदनं च नलिनं च ।
कांचनं रोहितं चंचत् मरुत् ऋद्धीश वैडूर्यं ॥ ४६४ ॥

अर्थ—ऋतु १ विमल १ चंद्र १ वल्गु १ वीर १ अरुण १ नंदन १ नलिन १ कांचन १ रोहित १ चंचत् १ मरुत् १ ऋद्धीश १ वैडूर्य ॥ ४६४ ॥

रुचग रुचिरंक फलिह तपणीयं मेघमस्य हारिद्रं ।
पद्मं लोहिद वज्जं नंदावर्तं प्रभंकरयं ॥ ४६५ ॥

[illegible]

अर्थ—रुचक १ रुचिर १ अंक १ स्फटिक १ तपनीय १ मेघ १ अभ्र १ हरित १ पद्म लोहित १ वज्र १ नंद्यावर्त्त १ प्रभंकर ॥ ४६५ ॥

पिट्ठक गज मित्त पहा अंजण वणमाल णाग गरुडं च ।
लंगल वलभद्दं च चक्कं चरिमं च अट्ठतीसो ॥ ४६६ ॥

पृष्ठकं गजं मित्रं प्रभं अंजनं वनमालं नागं गरुडं च ।
लांगलं बलभद्रं च चक्रं चरमं च अष्टात्रिंशत् ॥ ४६६ ॥

अर्थ—पृष्ठक १ गज १ मित्र १ प्रभ १ अंजन १ वनमाल १ नाग १ गरुड १ लांगल बलभद्र १ अंतका इंद्रक चक्र १ ऐसैं सौधर्मादि च्यारि स्वर्गविषै मिलार हुए अडतीस इंद्रकनिके नाम हैं ॥ ४६६ ॥

रिट्ठसुरसमिदि पहं बम्हुत्तर बम्हहिदयलांतवयं ।
सुक्कं खलु सुक्कदुगे सदरविमाणं तु सदरदुगे ॥ ४६७ ॥

अरिष्टसुरसमिति ब्रह्म ब्रह्मोत्तरं ब्रह्महृदयलांतवकं ।
शुक्रं खलु शुक्रद्विके शतारविमानं तु शतारयुगे ॥ ४६७ ॥

अर्थ—अरिष्ट १ सुरस १ ब्रह्म १ ब्रह्मोत्तर १ ए च्यारि ब्रह्म युगलविषै इंद्रकनिके नाम । बहुरि ब्रह्महृदय १ लांतव १ ये दोय लांतव युगलविषै इंद्रकनिके नाम हैं । बहुरी शुक्र युगलविषै शुक्र नामा एक इंद्रक है । बहुरि शतार द्विकविषै शतार विमान नाम इंद्रक है ॥ ४६७ ॥

आणद पाणदपुप्फय सादय तह आरणच्चुदवसाणे ।
तो गेवेज्ज सुदंसण अमोह तह सुप्पबुद्धं च ॥ ४६८ ॥

आनतप्राणतपुष्पकं शातकं तथा आरणाच्युतावसाने ।
ततः ग्रैवेयके सुदर्शनं अमोघं तथा सुप्रबुद्धं च ॥ ४६८ ॥

अर्थ—आनत १ प्राणत १ पुष्पक १ शातक १ आरण १ अच्युत १ ए चार इंद्रक नाग आनतादि अच्युत पर्यंत च्यारि कल्पनिविषै हैं । बहुरि तहां पीछे नव ग्रैवेयक विषै सुदर्शन १ अमोघ १ सुप्रबुद्ध १ हैं । ॥ ४६८ ॥

जसहर सुभद्दणामा सुविसालं सुमणसं च सोमणसं ।
पीदिंकरमादिच्चं चरिमे सव्वट्ठसिद्धी दु ॥ ४६९ ॥

यशोधरं सुभद्रनाम सुविशालं सुमनसं च सौमनसं ।
प्रीतिकरं आदित्यं चरमे सर्वार्थसिद्धिं तु ॥ ४६९ ॥

अर्थ—यशोधर १ सुभद्र नाम १ सुविशाल १ सुमनस १ सौमनस १ प्रीतिकर ए नव इंद्रकनिके नाम हैं । बहुरि नव अनुदिशविषै आदित्यनामा इंद्रक है । बहुरि अनुदिशतैं ऊपरि पंचानुत्तरविषै सर्वार्थसिद्धिनामा इंद्रक है ॥ ४६९ ॥

आगै मेरुतलादि तिरेसठि इत्यादि दोय गाथासूत्र अर्थविषै सर्वत्र सिद्धांत सिद्धि है तातैं तिनका अनुवाद होतो उत्तर करै है,—

णाभिगिरिचूलिगुवरिं वालग्गंतरठियो हु उडुइंदो ।
सिद्धीदो धो वारह जोयणमाणम्हि सव्वट्ठं ॥ ४७० ॥
नाभिगिरिचूलिकोपरि बालाग्रांतरे स्थितः हि ऋतुंद्रकः ।
सिद्धितः अधः द्वादशयोजनमाने सर्वार्थः ॥ ४७० ॥

अर्थ—नाभिगिरि जो बीचि तिष्ठता सुदर्शन मेरुगिरि ताकी चूलिकाके ऊपरि बाल अग्रभाग प्रमाण अंतराल छोडि पहला ऋतु नामा इंद्रक विमान तिष्ठै है। बहुरि सिद्धक्षेत्रतैं बारह योजन प्रमाणविषै अंतका सर्वार्थसिद्धि नामा इंद्रक विमान तिष्ठै है ॥ ४७० ॥

आगै कल्प अर कल्पातीतनिके विभियादिकनिकी मर्यादाकौं कहै हैं;—

सगसगचरिमिंदयधयदंडं कप्पावणीणमंतं खु ।
कप्पादीदाणिस्स य अंतं लोयंतयं होदि ॥ ४७१ ॥
स्वकस्वकचरमेंद्रकध्वजदंडः कल्पावनीनां अंतः खलु ।
कल्पातीतावनेश्च अंतः लोकांतकः भवति ॥ ४७१ ॥

अर्थ—अपना अपना अंतका इंद्रकका जु ध्वजादंड सो कल्पसंबंधी पृथ्वीका अंत जानना जैसे सौधर्म युगलविषै इकतीसवां अंतका इंद्रकका ध्वजादंड जहां है तहां सौधर्म युगलका अंत है। ऐसें ही अन्यत्र जानना। बहुरि कल्पातीत संबंधी पृथ्वीका अंत सो लोकका अंत। लोकका जहां अंत है तहां कल्पातीत पृथ्वीका अंत है ॥ ४७१ ॥

आगै इंद्रकनिका विस्तार कहै हैं;—

माणुसखेत्तपमाणं उडु सव्वट्ठं तु जंबुदीवसमं ।
उभयविसेसे कमसो इंदयभवणे तु हाणिचयं ॥ ४७२ ॥
मानुषक्षेत्रप्रमाणं ऋतु सर्वार्थं तु जंबुद्वीपसमं ।
उभयविशेषे क्रमशः इंद्रकभवने तु हानिचयम् ॥ ४७२ ॥

अर्थ—मनुष्य क्षेत्र प्रमाण पैंतालीस लाख योजन व्यासकौं धरै ऋतुनामा इंद्रक है। बहुरि सर्वार्थसिद्धि विमान जंबूद्वीप समान एक लाख योजन व्यासकौं धरै है। बहुरि दोऊविषै विशेष करि जहां पैंतालीस लाखमैं सौ एक लाख घटाइ चवालीस लाख अवशेष रहे तिनकौं इकतीस इंद्रकका भाग दीजिये तहां इंद्रक प्रमाण लोकविषैमैं एक घटाइ बारह लाख का तिष्ठै ऐसे इंद्रक प्रति सवासै योजन का तैंतीसवां भाग प्रमाण आया। सो हानि इंद्रक प्रति कही सो जानना। तहां ऋतु-पैंतालीस लाख योजन व्यासकौं धरै ऋतु इंद्रक है तातैं सवासै योजन का तैंतीसवां भाग प्रमाण हानि धरै सर्वार्थ-सिद्धि इंद्रक एक लाख योजन का तातैं इकतीसवां भाग प्रमाण बधै सो इतना इंद्रक व्यास प्रमाण है। ऐसें इकतीस पटल तैंतीसवां इंद्रकका व्यास प्रमाण है। ऐसे इंद्रक व्यास प्रमाण कह्या। अब इंद्रक व्यास तैं हीन होते होते इंद्रक व्यासविषैं इंद्रक विमान [illegible] इंद्रक भवन कहै है। ४७२ ॥

इहांतें आगें श्रेणीबद्धनिका अवस्थानका स्वरूप निरूपै हैं;—

बासट्ठी सेढिगया पढमिंदे चउदिसासु पत्तेयं।
पडिदिसमेक्केक्कूणं अणुदिसाणुत्तरेक्कोत्ति ॥ ४७२ ॥

द्वाषष्टिः श्रेणिगतानि प्रथमेन्द्रे चतुर्दिशासु प्रत्येकं।
प्रतिदिशमेकैकोनं अनुदिशानुत्तरे एकमिति ॥ ४७२ ॥

अर्थ—पहला इंद्रक विषै च्यारि दिशानिविषै प्रत्येक श्रेणीबद्ध विमान बासठि हैं। ताके चारौं दिशानिविषै दोयसै अठतालीस भए। यातें ऊपरि द्वितीयादि पटलनिविषै एक एक दिशा प्रति एक एक श्रेणीबद्ध घटाएं ऊपरि ऊपरि विवक्षित श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है सो पटल पटल प्रति च्यारि च्यारि घटते श्रेणीबद्ध जाननें। यावत् अनुदिश वा अनुत्तरविषै दिशा प्रति एक एक श्रेणीबद्ध अवशेष रहै तावत् ऐसें जानना। इहां दक्षिण इंद्र उत्तर इंद्रका भेद करि श्रेणीबद्धनिका संकोलित धन स्यावनेंका विधान कहिए है। सौधर्म इंद्रके प्रथम पटलविषै एक दिशासंबंधी श्रेणीबद्ध बासठि हैं अर दक्षिण इंद्रके उत्तर दिशा विना तीन दिशासंबंधी श्रेणीबद्ध पाईए हैं तातैं तीन करि गुणें प्रथम पटलविषै एकसौ छियासी श्रेणीबद्ध भया सो यहु सो आदि भया, अर पटल पटल प्रति तीन तीन श्रेणीबद्ध घटै हैं तातै क्षय रूप चय तीन। बहुरि पटल इकतीस हैं तातैं गच्छ इकतीस। अब इहां हीन संकलनकौं आश्रयकरि धन स्याईए हैं। पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं पभवजुदं पदगुणिदं पदगणिदं तं वियाणाहि। १। इस सूत्रकरि पद जो गच्छ सो इकतीस यामें एक घटाएं तीस याकौं दोयका भाग दिएं पंद्रह इनकौं उत्तर जो चय तीन तीहकरि गुणें पैंतालीस इनकौं प्रभव जो आदि एकसौ छियासी तामें इहां ऋण रूप चय है तातैं पैंतालीस घटाएं एकसौ इकतालीस रहे। इनकौं पद जो गच्छ इकतीस तीहकरि गुणें च्यारि हजार तीनसै इकहत्तरि सौधर्मके श्रेणीबद्ध विमान भए। बहुरि इन विषै इकतीस पटल संबंधी इकतीस इंद्रक मिलाएं च्यारि हजार च्यारिसै दोय विमान हो हैं। बहुरि ऐसें ही ईशान विषै उत्तर इन्द्रनिकै एक उत्तर दिशा संबंधी श्रेणीबद्ध पाईए है। अर ईसान उत्तर इन्द्र है तातैं आदि बासठि उत्तर एक गच्छ इकतीस करि संकलित धन स्याएं ईशानके चौदहसै सत्तावन श्रेणीबद्ध हो है। इहां ईशानविषै इन्द्रक ना मिलावनें, जाते उत्तर इंद्रनिकै उत्तर इन्द्र विमानका अभाव है। बहुरि सौधर्मके एकदिशा संबंधी श्रेणीबद्ध बासठि तिनमें अपना गच्छ इकतीस घटाएं अवशेष इकतीस रहे सोई सनत्कुमार माहेन्द्रविषै प्रथम पटलविषै एकदिशा संबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण है। ऐसे ही पूर्व पूर्व युगलके प्रथम पटलके एक दिशासंबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण विषै अपनां अपना पटल प्रमाण गच्छ घटाएं उपरि उपरि युगलके प्रथम पटलके एक दिशा संबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है। सो सौधर्म ईशानविषै बासठि ६२ सनत्कुमार माहेन्द्रविषै इकतीस ब्रह्म ब्रह्मोत्तरविषै चौईस लांतव कापिष्टविषै बीस शुक्र महाशुक्रविषै अठारह शतार सहस्रारविषै सत्तरह आनतादि च्यारि कल्पविषै सोलह अधोग्रैवेयकविषै दश मध्य ग्रैवेयकविषै सात उपरिम ग्रैवेयकविषै च्यारि नवानुदिशविषै एक श्रेणीबद्ध विमान एक दिशासंबंधी जाननां। इस श्रेणीबद्धनिके प्रमाणकौं दक्षिण इंद्र अपेक्षा करि तीन करि गुणें उत्तर इंद्र अपेक्षा करि एक करि

णाभिगिरिचूलिगुवरिं बालग्गंतरहियो हु उडुइंदो ।
सिद्धादो घो बारह जोयणमाणम्मि सव्वट्ठं ॥ ४७० ॥
नाभिगिरिचूलिकोपरि बालाग्रांतरे स्थितः हि ऋतुंद्रकः ।
सिद्धितः अधः द्वादशयोजनमाने सर्वार्थः ॥ ४७० ॥

अर्थ—नाभिगिरि जो बीचि तिष्ठता सुदर्शन मेरुगिरि ताकी चूलिकाके ऊपरि बाल अग्रभाग प्रमाण अंतराल छोडि पहला ऋतु नामा इंद्रक विमान तिष्ठै है। बहुरि सिद्धलोकतै घो बारह योजन प्रमानविषै अंतका सर्वार्थसिद्धि नामा इंद्रक विमान तिष्ठै है ॥ ४७० ॥

आगै कल्प अर कल्पातीतनिकै सिद्धियादिकनिकी मर्यादा कहै हैं;—

सगसगचरिमिंदयचयदंडं कप्पाणणीणमंतं तु ।
कप्पादीदाणिस्स य अंतं लोयंतयं होदि ॥ ४७१ ॥
स्वकस्वकचरमेंद्रकस्थदंडः कल्पानीनां अंतः तु ।
कल्पातीतानेस्य अंतः लोकांतकः भवति ॥ ४७१ ॥

अर्थ—अपनी अपनी अंतका इंद्रकका जु स्थादंड सो कल्पसंबंधी पृथिवीका अंत जानना। जैसे सौधर्म ईशानविषै इकतीसवां अंतका इंद्रकका स्थादंड जहां है तहां सौधर्म युगलका अंत है। ऐसे ही अन्यत्र जानना। बहुरि कल्पातीत संबंधी पृथिवीका अंत सो लोकका अंत है। जैसे जहां अंत है तहां कल्पातीत पृथिवीका अंत है ॥ ४७१ ॥

आगै इंद्रकनिका विशेष कहै हैं;—

माणुसखेत्तपमाणं खलु सव्वट्ठं तु मेरुचूलसमं ।
उवरिट्ठिमगेवेज्जइंदयसमिदं तु हाणिचयं ॥ ४७२ ॥
मानुषक्षेत्रप्रमाणं खलु सर्वार्थं तु मेरुचूलसमं ।
उपरिस्थग्रैवेयकेंद्रकसमं तु हानिचयं ॥ ४७२ ॥

अर्थ—[illegible]

इहांतें आगें श्रेणीबद्धनिका अवस्थानका स्वरूप निरूपै हैं;—

बासट्ठी सेढिगया पढमिंदे चउदिसासु पत्तेयं।
पडिदिसमेक्केक्कूणं अणुदिसाणुत्तरेक्कोत्ति ॥ ४७३ ॥

द्वाषष्टिः श्रेणिगतानि प्रथमेन्द्रे चतुर्दिशासु प्रत्येकं।
प्रतिदिशमेकैकोनं अनुदिशानुत्तरे एकमिति ॥ ४७३ ॥

अर्थ—पहला इंद्रक विषै च्यारि दिशानिविषै प्रत्येक श्रेणीबद्ध विमान बासठि है। ताके चारौं दिशानिविषै दोयसै अटतालीस भए। यातैं ऊपरि द्वितीयादि पटलनिविषै एक एक दिशा प्रति एक एक श्रेणीबद्ध घटाएं ऊपरि ऊपरि विवक्षित श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है सो पटल पटल प्रति च्यारि च्यारि घटते श्रेणीबद्ध जाननें। यावत् अनुदिश वा अनुत्तरविषै दिशा प्रति एक एक श्रेणीबद्ध अवशेष रहै तावत् ऐसें जाननां। इहां दक्षिण इंद्र उत्तर इंद्रका भेद करि श्रेणीबद्धनिका संकलित धन ल्यावनेंका विधान कहिए है। सौधर्म इंद्रके प्रथम पटलविषै एक दिशासंबंधी श्रेणीबद्ध बासठि हैं अर दक्षिण इंद्रके उत्तर दिशा विना तीन दिशासंबंधी श्रेणीबद्ध पाईए हैं तातैं तीन करि गुणें प्रथम पटलविषै एकसौ छियासी श्रेणीबद्ध भया सो यहु तौ आदि भया, अर पटल पटल प्रति तीन तीन श्रेणीबद्ध घटै हैं तातै ऋण रूप चय तीन। बहुरि पटल इकतीस हैं तातैं गछ इकतीस। अब इहां हीन संकलनकों आश्रयकरि धन ल्याईए है। पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं पभवजुदं पदगुणिदं पदगणिदं तं वियाणाहि। १। इस सूत्रकरि पद जो गछ सो इकतीस यामें एक घटाएं तीस यातों दोयका भाग दिएं पंद्रह इनकौं उत्तर जो चय तीन तीहकरि गुणें पैंतालीस इनकौं प्रभव जो आदि एकसौ छियासी तामें इहां ऋण रूप चय है तातैं पैंतालीस घटाएं एकसौ इकतालीस रहे। इनकौं पद जो गछ इकतीस तीहकरि गुणें च्यारि हजार तीनसै इकहत्तरि सौधर्मके श्रेणीबद्ध विमान भए। बहुरि इन विषै इकतीस पटल संबंधी इकतीस इंद्रक मिलाएं च्यारि हजार च्यारिसै दोय विमान हो हैं। बहुरि ऐसें ही ईशान विषै उत्तर इन्द्रनिकै एक उत्तर दिशा संबंधी श्रेणीबद्ध पाईए है। अर ईसान उत्तर इन्द्र है तातैं आदि बासठि उत्तर एक गछ इकतीस करि संकलित धन ल्याएं ईशानके चौदहसै सत्तावन श्रेणीबद्ध हो है। इहां ईशानविषै इन्द्रक न मिलावनें, जातैं उत्तर इंद्रनिकैं उत्तर इन्द्र विमानका अभाव है। बहुरि सौधर्मके एकदिशा संबंधी श्रेणीबद्ध बासठि तिनमें अपना गछ इकतीस घटाएं अवशेष इकतीस रहे सोई सनत्कुमार माहेन्द्रविषै प्रथम पटलविषै एकदिशा संबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण है। ऐसें ही पूर्व पूर्व युगलके प्रथम पटलके एक दिशासंबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण विषै अपनां अपनां पटल प्रमाण गछ घटाएं उपरि उपरि युगलके प्रथम पटलके एक दिशा संबंधी श्रेणीबद्धनिका प्रमाण हो है। सो सौधर्म ईशानविषै बासठि ६२ सनत्कुमार माहेन्द्रविषै इकतीस ब्रह्म ब्रह्मोत्तरविषै चौईस लांतव कापिष्टविषै बीस शुक्र महाशुक्रविषै अठारह शतार सहस्रारविषै सत्तरह आनतादि च्यारि कल्पविषै सोलह अधोग्रैवेयकविषै दश मध्य ग्रैवेयकविषै सात उपरिम ग्रैवेयकविषै च्यारि नवानुदिशविषै एक श्रेणीबद्ध विमान एक दिशासंबंधी जाननां। इस श्रेणीबद्धनिके प्रमाणकों दक्षिण इंद्र अपेक्षा करि तीन करि गुणें उत्तर इंद्र अपेक्षा करि एक करि

गुणें अर जहां दक्षिण उत्तर इंद्रकी विवक्षा नांहीं तहां चारि करि गु आदिका प्रमाण हो है। सो सनत्कुमारकै तेरणवै माहेन्द्रकै इकतीस ब्रह्मब्रह्मोत्तरविषै तिर लांतव कापिष्ठविषै अर्सी शुक्र महाशुक्रविषै बहत्तरि सतार सहस्रारविषै अडसठि आनतादिवि चौंसठि अधो ग्रैवेयकविषै चालीस मध्य ग्रैवेयकत्रिषै अठाईस उपरिम ग्रैवेयकविषै सोल्ह न अनुदिशविषै च्यारि ऐसें आदिका प्रमाण है। बहुरि उत्तर जो ऋणरूप चय सो सनत्कुमारवि तीन माहेन्द्रविषै एक उपरि सर्वत्र च्यारि प्रमाण हैं। बहुरि गच्छ अपना अपना पटल प्रमाण सनत्कुम रादिविषैं क्रमतैं सात सात च्यारि दोय एक एक छह तीन तीन तीन एक एक है। ऐसें आदि म गच्छ जानैं तीह तीहका संकलित धन दक्षिण इंद्र या उत्तर इंद्रनिकै ल्यावना। सो सनत्कुमारादि विषै क्रमतैं श्रेणीबद्धनिका प्रमाण ५८८।१९६।३६०।१५६।७२।६८।३२।१०८।७२।३१ ४ जानने ॥ ४७३ ॥

आगैं तहां प्रथम इन्द्रक संबंधी श्रेणीबद्धनिका अवस्थानका वर्णनकौं कहैं हैं;—

उडुसेढीबद्धदलं सयंभुरमणुदहिपणिधिभागम्हि।
आइल्लतिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे य सेसा हु ॥ ४७४ ॥

ऋतुश्रेणीबद्धदलं स्वयंभुरमणोदधिप्रणिधिभागे।
आदिमत्रिषु द्वीपेषु त्रिषु समुद्रेषु च शेषं हि ॥ ४७४ ॥

अर्थ—ऋतु इंद्रक संबंधी श्रेणीबद्धनिका एक दिशा संबंधी प्रमाण बासठि तातैं आगैं इकतीस श्रेणीबद्ध तौ स्वयंभूरमण नामा समुद्रका प्रणिधि भाग कहिए निकटवर्ती उपरिमभाग तिष्ठि विषै तिष्ठे हैं। अवशेष अर्वाचीन तीन द्वीप अर तीन समुद्रनिविषै तिष्ठे हैं। भावार्थ—प्रथम पटलविषै एक दिशासंबंधी बासठि श्रेणीबद्ध हैं। तिनविषै इकतीस सौ स्वयंभूरमण समुद्र उपरि है पंद्रह स्वयंभूरमण द्वीप उपरि हैं। आठ सौबत्तीस लाख समुद्र उपरि है च्यारि सौबत्तीस लाख द्वीप उपरि हैं दोय तिरेसौ लाख समुद्र उपरि है एक सौ छत्तीस लाख द्वीप उपरि है। एक सौ बत्तीस लाख अनेक द्वीप समुद्रनिके उपरि है ॥ ४७४ ॥

आगैं प्रकीर्णकनिका स्वरूप वा प्रमाण कहैं हैं;—

सेढीणं विच्चाले पुप्फपइण्णय इव ठियविमाणा।
होंति पइण्णयणामा सेढिंदयहीणसंगिमया ॥ ४७५ ॥

श्रेणीनां विचाले पुष्पप्रकीर्णानि इव स्थितविमानानि।
भवंति प्रकीर्णकनामानि श्रेणीन्द्रकहीनसंगिमानि ॥ ४७५ ॥

अर्थ—श्रेणीबद्ध विमाननिका विस्तार कहिए अवगाह तिष्ठिविषै प्रकीर्णकनामे [illegible]

करना है ताके पूर्वोक्त श्रेणीबद्धनिका वा इंद्रनिका प्रमाण घटाएं जो जो राशि अवशेष रहै तितना प्रमाण सौधर्मादिकविषै प्रकीर्णक विमान जानने ॥ ४७५ ॥

आगे दक्षिणोत्तर उत्तर इंद्रनिके इंद्रक श्रेणीबद्ध प्रकीर्णकनिका विभागको दिखावै हैं;—

उत्तरमेरुदिबद्धा वायव्वीसाणकोणगपइण्णा ।
उत्तरइंदणिबद्धा सेसा दक्खिणदिसिंदपडिबद्धा ॥ ४७६ ॥

उत्तरश्रेणीबद्धा वायव्येशानकोणगप्रकीर्णानि ।
उत्तरेन्द्रनिबद्धानि शेषाणि दक्षिणदिगिंद्रप्रतिबद्धानि ॥ ४७६ ॥

अर्थ—उत्तरदिशासंबंधी श्रेणीबद्ध विमान बहुरि वायवी अर ईशान कोणकी प्राप्त भए प्रकीर्णक विमान ए तौ उत्तरदिशाका इंद्रसंबंधी हैं। बहुरि अवशेष सर्व विमान दक्षिणदिशाका इंद्रसंबंधी है। अब इहां ऊर्ध्व लोककी रचनाविषै स्वर्गादिकका अवस्थान वा इन्द्रकादिक विमाननिका स्वरूप मंद बुद्धिनिके समझनेके अर्थि कहिए हैं। मेरुतलतैं लगाय सात राजू ऊंचा ऊर्ध्वलोक है। तीहविषै छह राजूकी ऊंचाईविषै सोलह स्वर्ग हैं। तहां मेरुतलतैं लगाय ड्योढ राजूकी ऊंचाईविषै तौ सौधर्म ईशान युगल है ताके इकतीस पटल हैं। पटल कहा कहिए? तिर्यक्प्रदेश करोधरि क्षेत्रविषै जहां विमान पाईए ताका नाम पटल है। तहां मेरुकी चूलिकातैं बालाग्रका अंतराल छोडि प्रथम पटल है। ताके ऊपरि बीचिमें असंख्यात योजन प्रमाण अंतरालविषै अवकाश है। बहुरि तहां ऊपरि द्वितीय पटल है। ऐसें ही बीथि बीचिमें असंख्यात असंख्यात योजनका अवकाशरूप अंतराल छोडि ऊपरि ऊपरि पटल जाननें। इकतीसवां अंतका पटल ड्योढ राजू क्षेत्रका अंतविषै पाईए है। बहुरि पटल पटल प्रति बीचिमें जो एक एक विमान पाईए तिनका नाम इंद्रक विमान है। सो मेरु ऊपरि तौ ऋतु इंद्रक है। ताकी सूधिविषै ऊपरि ऊपरि पटल पटल प्रति एक एक इंद्रक जाननां। बहुरि पटल पटल प्रति तिस इंद्रक विमानकी पूर्वादिक च्यारि दिशानिविषै जे पंक्तिबंध विमान पाईए तिनका नाम श्रेणीबद्ध विमान है। बहुरि पटल पटल प्रति तिन तिन श्रेणीबद्धनिके बीचि विदिशानिविषै जे बखेरे हुए फूलकी ज्यों जहां तहां तिष्ठते विमान हैं तिनका नाम प्रकीर्णक विमान है ते ऐसें जाननें। तहां पटल पटलसंबंधी उत्तरदिशाका श्रेणीबद्ध विमान वायवी ईशान विदिशाका प्रकीर्णक इनविषै तौ उत्तर इंद्र ईशान ताकी आज्ञा प्रवर्त्ते है। बहुरि अवशेष सर्व इंद्रक विमान अर तीन दिशाका श्रेणीबद्ध विमान अर नैर्ऋति आग्नेय विदिशाका प्रकीर्णक इनविषै दक्षिण इंद्र जो सौधर्म ताकी आज्ञा प्रवर्त्ते है। तहां जिन विमाननिविषै सौधर्म इंद्रकी आज्ञा प्रवर्त्ते है तिनके समूहका नाम सौधर्म स्वर्ग है। बहुरि जिन विमाननिविषै ईशान इंद्रकी आज्ञा प्रवर्त्ते है तिनका समूहका नाम ईशान स्वर्ग है। जैसें इहां एक नगरविषै अपनें अपनें स्वामीके नामकी अपेक्षा वसतीनिका नाम हो है तैसें जाननां। बहुरि ताके ऊपरि ड्योढ राजूकी ऊंचाईविषै सनत्कुमार माहेन्द्र युगल है। तहां सात पटल हैं सो सौधर्म युगलके अंत पटलतैं असंख्यात योजन अंतराल छोडि प्रथम पटल है। ताके ऊपरि ऊपरि तैसे ही अंतराल लिए द्वितीयादि पटल हैं। तिनविषै इंद्रकादिक विमान पूर्वोक्त प्रकार जाननें, तहां उत्तर श्रेणीबद्ध वायवी

कप्पेसु रासिपंचमभागं संखेज्जवित्थडा होंति।
तत्तो तिण्णट्ठारस सत्तरसेक्केकयं कमसो ॥ ४७८ ॥

कल्पेषु राशिपंचमभागं संख्येयविस्तारा भवंति।
ततः त्रीण्यष्टादश सप्तदशैकमेकं क्रमशः ॥ ४७८ ॥

अर्थ—कल्पनिविषैं अपनां अपनां बत्तीस लाख अठाईस लाख इत्यादि विमाननिका प्रम रूप राशि ताका पांचवां भाग प्रमाण विमान संख्यात योजन विस्तारकौं धरैं हैं। जैसे सौ स्वर्गविषैं बत्तीस लाख विमान ताकां पांचवां भाग छह लाख चालीस हजार विमान संख योजन विस्तार धरै है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। तातैं परैं अधो ग्रैवेयकविषैं तीन मध्य ग्रैवेयक अठारह उपरिम ग्रैवेयकविषैं सतरह नवानुदिशविषैं एक पंचानुत्तरविषैं एक विमान संख योजन विस्तार धरै है ॥ ४७८ ॥

सगसगसंखेज्जूणा सगसगरासी असंखवासगया।
अहवा पंचमभागं चउगुणिदे होंति कप्पेसु ॥ ४७९ ॥

स्वकस्वकसंख्येयोनाः स्वकस्वकराशयः असंख्यव्यासगताः।
अथवा पंचमभागं चतुर्गुणिते भवंति कल्पेषु ॥ ४७९ ॥

अर्थ—स्वकीयस्वकीयसंख्यात योजन व्यास धरैं विमाननिकी संख्याकरि हीन जो अ अपनां बत्तीस लाख विमाननिका प्रमाणरूप राशि सो असंख्यात योजन विस्तार धरै है जैसैं सौ मैविषैं बत्तीस लाख राशिमैंसौं संख्यात व्यास विमानकी संख्या छह लाख चालीस ह घटाएं अवशेष पचीस लाख साठि हजार विमान असंख्यात योजन प्रमाण विस्तार धरै है। ही अन्यत्र जाननां। अथवा राशिका पांचवां भागकौं चौगुणा किएं कल्पनिविषैं असंख योजन विस्तार धरैं विमाननिकी संख्या हो है। जैसे सौधर्मविषैं राशि बत्तीस लाखका पां भाग छह लाख चालीस हजार ताका चौगुणा पचीस लाख साठि हजार विमान असंख्यात यो विस्तार धरै है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां ॥ ४७९ ॥

आगैं तिन विमाननिका बाहुल्य कहैं हैं;—

छज्जुगल सेसकप्पे तिचितु सेसे विमाणतलबहलं।
इगिवीसेयारसयं णवणउदिरिणक्कमा होंति ॥ ४८० ॥

पट्युगलेषु शेषकल्पेषु त्रिचतुः शेषे विमानतलबहलं।
एकविंशत्येकादशशतं नवनवतिक्रमेण भवंति ॥ ४८० ॥

अर्थ—सौधर्म युगलादिक छह युगलनिके छह स्थान अर अवशेष आनतादि कल्पनिका स्थान अर तीन तीन अधो ग्रैवेयकादिकनिका एक एक स्थान तिनकै ग्रैवेयकनिके तीन स्थान अर अनु अनुदिश अनुत्तरका एक स्थान ऐसैं इन ग्यारह स्थानकनिविषैं विमानतल बाहुल्य कहिए विमाननि भूमिकी मोटाई सो आदिविषैं इकईस अधिक ग्यारहसै योजन प्रमाण अर उपरि सर्वत्र अ निन्यानवै निन्यानवै योजन घाटि प्रमाण है। ११२१।१०२२।९२३।८२४।७२५।६२६।५२

[illegible] एक एक धारा एक [illegible] ॥ ५१९ ॥

[illegible] तीन करी कहे हैं;—

चित्तेति तत्थ सोलसचउरुत्तरवित्थार कोसदीहजुदा ।
तिण्णिसयादरजंबिदा करंडया रयणमिस्सविदा ॥ ५२० ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ५२० ॥

अर्थ—तिस आर्यखंडविषै कोसका सौला भाग प्रमाण चौडे एक कोस सौ [illegible] ऐसे पचासकरि भले रत्नकरि मिश्रित करी सो करंडक है। भावार्थ-तिन आर्यखंडनि [illegible] हैं तिनिविषै पुरे करंडक हैं। जिनि पात्र आदि ऐसे जे करे तिनिसे [illegible] है। तिन करंडकनिविषै तीर्थंकर देवनिके पहलेकी सीख ऐसे आचार की [illegible] करि करी आचार तीर्थंकरकी पहुचावै है ॥ ५२० ॥

तूरियपुरादिपुरदलसोवणणामेहि तहि अयोरि ण करणा ।
आयरणदुगे भरहेरावदणामेहि तेसु तेसु ॥ ५२१ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ५२१ ॥

अर्थ [illegible] आर्यखंडविषै एक अर [illegible] ऐसे दोय [illegible] हैं। आचरण [illegible] ऐसे [illegible] ॥ ५२१ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ ५२२ ॥
[illegible]
[illegible]

अर्थ [illegible]

कोटि जो धारा कोणका अंतराल सो मानस्तंभकी परिधिके बारहवें भाग प्रमाण है। सो कोश प्रमाण जानना इहां मानस्तंभनिविषै करंडक ऐसैं जानने ॥ ५२२ ॥

आगैं इन्द्रकी उत्पत्तिके गृहका स्वरूप कहैं हैं;—

पासे उववादिगहं हरिस्स अडवास दीहरुदयजुदं।
दुगरयणसयण भज्झं वरजिणगेहं च बहुकूडं ॥ ५२३ ॥

पार्श्वे उपपादगृहं हरेः अष्टव्यासदैर्घ्योदययुतम्।
द्विकरत्नशयने मध्ये वरजिनगेहं च बहुकूटम् ॥ ५२३ ॥

अर्थ—तिह मानस्तंभके पासि आठ योजन चौड़ा इतना ही लंबा ऊंचा उपपाद गृह बहुरि तीह उपपाद गृहविषै दोय रत्नमई शय्या पाईए हैं। इहां इन्द्रका जन्मस्थान है। रे इस उपपाद गृहके पासि बहुत शिखरनिकरि संयुक्त उत्कृष्ट जिन मंदिर है ॥ ५२३ ॥

अब कल्पवासिनी स्त्रीनिके उत्पत्तिस्थान गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

दक्खिणउत्तरदेवी सोहम्मीसाण एव जायंते।
तहिं सुद्धदेविसहिया छच्चउलक्खयं विमाणाणि ॥ ५२४ ॥

दक्षिणोत्तरदेव्यः सौधर्मेशान एव जायंते।
तत्र शुद्धदेवीसहितानि षट्चतुर्लक्षं विमानानि ॥ ५२४ ॥

अर्थ—दक्षिण उत्तर देवांगना सौधर्म ईशानविषै ही उपजै हैं। तहां शुद्धदेवीसहित छह अर चारि लाख विमान हैं। भावार्थ—कल्पवासिनी देवांगना सर्व सौधर्मईशान स्वर्गनिविषै उपजै। ऊपरि नाही उपजैं हैं तहां दक्षिण दिशाके कल्पसंबंधी देवांगना तो सौधर्मविषै उपजै हैं। बहुरि उत्तर दिशाके कल्पसंबंधी देवांगना ईशानविषै उपजै हैं। तहां जिन विमाननिविषै केवल देव पाईए केवल देवांगना ही जहां उपजै ऐसे सौधर्मविषै छह लाख विमान है, अर ईशानविषै च्यारि लाख विमान हैं ॥ ५२४ ॥

तद्देवीओ पच्छा उवरिमदेवा णयंति सगठाणं।
सेसविमाणा छच्चदुसीलक्खया देवदेविसम्मिस्सा ॥ ५२५ ॥

तद्देवीः पश्चादुपरिमदेवाः नयंति स्वकस्थानं।
शेषविमानाः षट्चतुर्विलक्षाः देवदेविसंमिश्राः ॥ ५२५ ॥

अर्थ—ते देवी तहां सौधर्म वा ईशानविषै उपजे पीछे जिनि देवनिकी निश्रा तैं परिवै स्वर्गवासी देव अपने अपने ठिकाने लेइ जाइ है। बहुरि अवशेष सौधर्मविषै छह लाख विमान अर ईशानविषै चौरासी लाख विमान ते देवदेवी संमिश्र है। तहां देव भी उपजै है देवांगना भी उपजै है ॥ ५२५ ॥

अब कल्पवासिनिके प्रवीचारको दिखावै है;—

दुगु दुगु तिचउक्केसु य कप्पे पत्तो य कप्प सग्गे य।
विसेवि य परिचारा अप्पपरिचारा दु अहमिंदा ॥ ५२६ ॥

द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च काये स्पर्शे च रूपे शब्दे च।
चित्तेपि च प्रवीचारा अप्रवीचारा हि अहमिंद्राः ॥ ५२६ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्कनिविषै काय, स्पर्श, रूप, शब्द, मनविषै प्रवीचार है। बहुरि अहमिंद्र अप्रवीचार हैं। **भावार्थ**—प्रवीचार नाम कामसेवनका है सो सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै तौ कायकरि प्रवीचार है। जैसें मनुष्य काम सेवन करै है तैसें देव देवांगना तहां कामसेवन करैं हैं। बहुरि ऊपरि दोय स्वर्गनिविषै स्पर्शकरि प्रवीचार है। देव देवांगनाकै परस्पर अंग स्पर्श करि तृप्ति हो है। बहुरि ऊपरि च्यारि स्वर्गनिविषै रूपकरि प्रवीचार है। देव देवांगनाकै परस्पर रूप देखने ही करि तृप्ति हो है। बहुरि ऊपरि च्यारि स्वर्गनिविषै शब्दकरि प्रवीचार है। देवदेवांगनाकै परस्पर शब्द सुननेंकरि ही तृप्ति हो है। बहुरि ऊपरि च्यारि स्वर्गनिविषै मनकरि प्रवीचार है। देव देवांगनाकै परस्पर मनका परिणमनहीतैं तृप्ति हो है। बहुरि ऊपरि ग्रैवेयकादि विषै अहमिंद्र हैं ते अप्रवीचार हैं-काम सेवन रहित हैं ॥ ५२६ ॥

अब इस कथनकै अनंतरि वैमानिक देवनिकै विक्रियाशक्ति अर अवधिज्ञानका विषय गाथा दोयकरि कहै हैं;—

दुसु दुसु तिचउक्केसु य णवचोद्दसगे विगुव्वणा सत्ती।
पढमक्खिदीदो सत्तमखिदिपेरंतो त्ति अवही य ॥ ५२७ ॥
द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च नवचतुर्दशसु विकुर्वणा शक्तिः।
प्रथमक्षितितः सप्तमक्षितिपर्यंतं इति अवधिश्च ॥ ५२७ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्क अर नव चौदहनिविषै वैक्रियक शक्ति प्रथम पृथ्वीतैं सातवीं पृथ्वी पर्यंत है अर ऐसैंही अवधि ज्ञानका विषय है। **भावार्थ**—अधो दिशाविषै विक्रिया करि जहां पर्यंत गमनादि करनेंकी शक्ति है बहुरि अवधिज्ञान करि जहांपर्यंत पदार्थ जाननेंकी शक्ति है सो दोऊ क्षेत्र कल्पवासीनिकै समान है। तातैं दोऊनिका एकट्ठा वर्णन कीजिए है। सो विक्रियाशक्ति अर अवधिज्ञान सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै तौ प्रथमनरकपृथ्वी पर्यंत है। दोय स्वर्गनिविषै दूसरी नरकपृथ्वी पर्यंत है। च्यारि स्वर्गनिविषै तीसरी पर्यंत, च्यारि स्वर्गनिविषै चौथी पर्यंत, च्यारि स्वर्गनिविषै पांचवीपर्यंत, नव ग्रैवेयकनिविषै छठी पर्यंत अनुदिश अनुत्तर चौदह विमाननिविषै सातवीं नरकपृथ्वी पर्यंत जानना। बहुरि ऊपरि दिशाविषै अवधिज्ञान कैसें है सो कहिए है। सौधर्मादिकदेव अपनें अपनें स्वर्गके विमानकी जो ध्वजादंड तीह पर्यंत अवधिकरि देखै है ऊपरि न देखै है। बहुरि नव अनुदिशवासी देव ते अपना अपना विमानका शिखरतैं नीचे यावत् नीचला वातवलय है तहां पर्यंत किछू घाटि चौदह राजू लंबी एक राजू चौड़ी ऐसी सर्व लोक नाड़ीकों अवधि करि देखै है ॥ ५२७ ॥

सव्वं च लोयणालिं पस्संति अणुत्तरेसु जे देवा।
सगसगचेत्ते य सगक्खे रुवगदमणंतभागो य ॥ ५२८ ॥
सर्वां च लोकनालिं पश्यंति अनुत्तरेषु ये देवाः।
स्वकक्षेत्रे च स्वकं रूपगतमनंतभागं च ॥ ५२८ ॥

अर्थ—पंच अनुत्तर विमाननिविषै जे देव हैं ते सर्व लोकनाली कहिए त्रसनाली ताकौं अवधि करि देखैं हैं। बहुरि अवधिकै जाननेका विधान कहिए हैं। अपने क्षेत्रविषै एक प्रदेश घटावनां तब अपने कर्म्मीविषै एक बार ध्रुवहारका भाग देनां यावत सर्व प्रदेश समाप्त होइ तावत ऐसे करनां। इस कथनकरि अवधिज्ञानका विषय भूत द्रव्यका भेद कह्या। इस अर्थकौं विषद करै है। वैमानिक देवनिकै अपनां अपनां जेता जेता अवधि ज्ञानका विषय भूत क्षेत्र कह्या ताके जेते जेते प्रदेश होंहि ते एकत्र स्थापन करनें। बहुरि अपनें अपने सत्तारूप कार्म्माण स्कंधके परमाणूनिविषै जे परमाणू कर्म्मरूप न परणए स्वभावही करि जे तिस कार्माण स्कंधविषै एक स्कंधरूप होइ परणए ऐसे एक एक कर्म्म परमाणूकी साथि अनंत अनंत परमाणू हैं। तिनका नाम विस्रसोपचय कहिए। तिनकरि रहित अवधिज्ञानावरणरूप जे परमाणु परणए हुए सत्तविषै जेते तिष्टै हैं तिनकौं एकत्र स्थापन करनें। तहां तिस अवधिज्ञानावरण द्रव्यकौं एक बार सिद्ध राशिके अनंतवें भाग प्रमाण ध्रुवहार है ताका भाग देनां। तब तिस क्षेत्रके प्रदेश प्रमाणमैंसौं एक प्रदेश घटावनां बहुरि भाग दीएं जो लब्धराशि भया ताकौं दूसरीवार ध्रुवहारका भाग देनां तब दूसरा प्रदेश तिस क्षेत्र प्रदेश प्रमाणमैंसौं घटावनां। ऐसैं जितनें तिस अवधिज्ञानके विषय-भूत क्षेत्रके जेते प्रदेश होंहि तितनी बार तिस अवधिज्ञानावरणके परमाणूनिके प्रमाणकौं भाग देतैं देतैं अंत विषै जेते परमाणूनिका प्रमाणरूप लब्धराशि होइ तितनें परमाणूनिका स्कंधकौं सो वैमानिक देव जानैं हैं। ताका उदाहरण-सौधर्म्म युगलविषै अवधि क्षेत्र ऐसा ३ इहां

१४१।२

घनलोककी सहनानी ऐसी ताकौं तीनसै तियालीसका भाग दिएं घनरूप एक राजू आया ताकौं ड्योढ़ गुणा करनेकौं आगै सहनानी ३ बहुरि अवधि ज्ञानावरण द्रव्य ऐसा स १२ इहां उत्कृष्ट समय

७।४

प्रबद्धकी सहनानी ऐसी स ७ ताकौं किंचिदून ड्योढ़ गुण हानि करि गुणनेकी सहनानी ऐसी १२-सामें सातकम्मनिका भाग करनेकौं सातका भाग अर एक ज्ञानावरणविषै सर्व घातियाका द्रव्य स्तोक जानि न गिणिकरि देशघातियाविषै एक अवधिज्ञानावरणका ग्रहणकै अर्थि प्यारिका भाग जाननां। तहां अवधिक्षेत्रविषै एक प्रदेश घटाएं ऐसा ३ इहां उपरि एक घटावनांकी

१४१।२

सहनानी ऐसी १ बहुरि अवधि द्रव्यकौं एकबार ध्रुवहारका भाग दिएं ऐसा स ७१२-इहां

७।४।१

ध्रुवहारकी सहनानी नवका अंक है। ऐसैं एक एक बार ध्रुवहारका भाग अवधि द्रव्यकौं देइ देइ एक एक प्रदेश अवधि क्षेत्रमैंसौं घटावतैं जहां सर्व अवधि क्षेत्रके प्रदेश समाप्त होइ तहां जो अंतविषै अवधि द्रव्यकौं भाग देतैं देतैं जेते परमाणू लब्धराशि होइ तितनें परमाणूनिके स्कंधकौं सौधर्म युगल वासी देव जानैं हैं यानें सूक्ष्म स्कंधकौं न जानैं, स्थूल स्कंध जाननेंका किछू विरोध नाहीं। ऐसैं ही अन्य वैमानिक देवनिकैं अवधिका विषयभूत द्रव्यका प्रमाण जाननां ॥ ५२८ ॥

आगैं वैमानिक देवनिके जनम मरणविषैं अंतराल कहैं हैं,—

दुसुदसु णिचउक्केसु य सेसे जणणंतरं तु चवणे य।
सत्तदिण पक्ख मासं दुगचदुछम्मासगं होदि ॥ ५२९ ॥
द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च शेषे जननांतरं तु च्यवने च।
सप्तदिनानि पक्षं मासं द्विकचतुःषण्मासकं भवति ॥ ५२९ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्क शेष इनविषै जननांतर अर च्यवनै कहिए मरणविषै अनुक्रम सो सात दिन पक्ष मास दोय च्यारि छह मास प्रमाण है। भावार्थ—जेते काल किसीके जन्म लहां न होइ तासौ जननांतर कहिए। बहुरि जेते काल किसीका तहां मरण न होइ तासौ च्यवनांतर कहिए। सो ए दोऊ उत्कृष्टपनैं सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै सात दिन, तिन स्वर्गनिविषै एक पक्ष, च्यारि स्वर्गनिविषै एक मास, च्यारि स्वर्गनिविषै दोय मास, च्यारि स्वर्गनिविषै च्यारि मास, अवशेष वैमानिकविषै छहमास प्रमाण जानना ॥ ५२९ ॥

आगै इंद्रादिकनिका उत्कृष्ट अंतर कहै है;—

वरविरहं छम्मासं इंदमहादेविलोयपालाणं।
पढ तेत्तीसगुराणं तणुरक्खसमाणपरिसाणं ॥ ५३० ॥
वरविरहं षण्मासं इंद्रमहादेवीलोकपालानाम्।
पृतना त्रायस्त्रिंशानां तनुरक्षसमानपारिषदानाम् ॥ ५३० ॥

अर्थ—वर विरह कहिए उत्कृष्टपनैं मरण अर पीछै तीसकी जायगा अन्य जीव न उपजै ऐसा उत्कृष्ट विरहकालका प्रमाण सो इन्द्र अर इंद्रकी महादेवी अर लोकपाल इनका उत्कृष्ट विरहकाल छह मास जानि। बहुरि त्रायस्त्रिंशत देव अर अनीकपति अर सामानिक अर पारिषद इनका उत्कृष्ट विरहकाल छह मास जानि ॥ ५३० ॥

आगै देवांगनानिका, भवनत्रिकविषै प्रतिपादन करै है;—

ईसाणंतिमकप्पूदयाणमिह कमेण होंति देवीओ।
दिक्खिणभागिम्मि आभिजोग्गा सगकप्पजइच्छिदिसहिया ॥ ५३१ ॥
ईशानांतिमकल्पोदयानामिह क्रमेण भवंति देव्यः।
दक्षिणभागे आभियोग्या स्वकल्पयतीच्छितदिक्सहिताः ॥ ५३१ ॥

अर्थ—इस मनुष्य क्षेत्रविषै जे ईशानपर्यंत कल्प उपजनेवाले तिनकी देवी अनुक्रम करि जे दक्षिण भागविषै उपजै ते अपने योग्य कल्प पर अपनी इच्छित दिशा सहित उपजै है। भावार्थ—जे ईशान कल्पविषै उपजै है तिनकी देवी अपने योग्य ईशान कल्प अर अपनी इच्छित दिशा सहित उपजै है। बहुरि जे दक्षिण भागविषै उपजै है तिनकी देवी अपने योग्य सौधर्म कल्प अर अपनी इच्छित दिशा सहित उपजै है। बहुरि जे उत्तर भागविषै उपजै है तिनकी देवी अपने योग्य ईशान कल्प अर अपनी इच्छित दिशा सहित उपजै है। बहुरि जे उत्तर भागविषै उपजै है तिनकी देवी अपने योग्य सौधर्म कल्प अर अपनी इच्छित दिशा सहित उपजै है।

है। तहां भी अभियोग्य देव ही हो हैं। तातें उपरि नाहीं उपजें हैं। ए सर्व अपनें अपनें स्वर्ग-संबंधी जघन्य आयुकरि सहित उपजें हैं॥ ५३१॥

आगें प्रथम युगलादिविषे स्थिति विशेष कहैं हैं;—

सोहम्म वरं पल्लं वरमुवहिवि सत्त दस य चोद्दसयं।
बावीसोत्ति दुवड्ढी एक्केक्कं जाव तेत्तीसं॥ ५३२॥
सौधर्मे वरं पल्यं अवरं उदधिद्विकं सप्त दश च चतुर्दशकं।
द्वाविंशतिरिति द्विवृद्धिः एकैकं यावत्त्रयस्त्रिंशत्॥ ५३२॥

अर्थ—सौधर्म युगल युगल विषे जघन्य आयु एक पल्य है। उत्कृष्ट आयु प्रत्येक दोय प्रमाण है यातें उपरि उत्कृष्ट आयु ही कहैं हैं सनत्कुमारविषे प्रत्येक सात सागर सागर प्रमाण आयु है। ब्रह्मयुगलविषे प्रत्येक दश सागर प्रमाण आयु है। लांतव युगलविषे प्रत्येक चौदह सागर प्रमाण आयु है। यातें उपरि बाईस पर्यंत दोय दोयकी वृद्धि है। सो शुक्रयुगलविषे सोलह, सतार युगलविषे अठारह, आनत युगल-विषे बीस, आरण युगलविषे बाईस सागर प्रमाण आयु है। बहुरि यातें उपरि तेतीस पर्यंत एक एककी वृद्धि है सो प्रथमादि नव ग्रैवेयकनिविषें क्रमतें तेईस चौबीस पचीस छब्बीस सत्ताईस अट्ठाईस गुणतीस तीस इकतीस सागर प्रमाण आयु है, नव अनुदिशविषे बत्तीस सागर आयु है। पंच अनुत्तरविषे तेतीस सागर आयु है॥ ५३२॥

आगें घातायुष्कं सम्यक्दृष्टीके पटल पटल प्रति उत्कृष्ट आयु कहैं हैं;—

सम्मे घादेऊणं सायरदलमहियमा सहस्सारा।
जलहिदलमुडुवराऊ पडलं पडि जाण हाणिचयं॥ ५३३॥
समीचि घातायुषि सागरदलमधिकमा सहस्रारात्।
जलधिदलं ऋतुवरायुः पटलं प्रति जानीहि हानिचयम्॥ ५३३॥

अर्थ—सम्यग्दृष्टी होइ अर घातायुष्क होइ तौ तिस जीवके अपनें अपनें स्वर्गके पूर्वोक्तउत्कृष्ट आयुतें अंतरमुहूर्त घाटि आधा सागर प्रमाण अधिक आयु हो है। जैसें सौधर्म युग्मविषे घातायुष्क सम्यग्दृष्टीका उत्कृष्ट आयु अंतरमुहूर्त घाटि अढ़ाई सागर प्रमाण होइ। ऐसें सतार सहस्रार युगल पर्यंत जानना। सीह सहस्रारतें उपरि घातायुष्ककी उत्पत्ति नाहीं है, भावार्थ—जिस जीवनें पूर्व भवविषे पहलें आयुका बंध अधिक किया था पीछें परणामनिके वशतें ताकौं घटाइ थोड़ा अणि राख्या तिस जीवको घातायुष्क कहिए। तातें आयुका घात दोय प्रकार है—एक अपवर्तन घात एक कदली घात। तहां बध्यमान आयुका घटावना सो अपवर्तन घात है। बहुरि उदीयमान आयुका घटावना सो कदली घात है। सो इहां कदली घात तौ संभवै नाहीं तातें अपवर्तन घातहीका ग्रहण किया है। सो ऐसा घातायुष्क होय अर सम्यग्दृष्टी होय तौ तिस जीवकें पूर्वोक्तउत्कृष्ट आयुतें आध सागर अधिक आयु सहस्रार पर्यंत होइ। बहुरि सौधर्मयुगलका प्रथम पटल ऋतुनामा इंद्रक सीहविषे उत्कृष्ट आयु आध सागर प्रमाण है। सो आदि जानना। और अन्य युगलनिविषे पूर्वयु-

गच्छका उत्कृष्ट आयु सो आदि जानना। बहुरि अपना अपना उत्कृष्ट आयु सो अंत जानना। दूजे सौधर्म युगलविषै तौ अपना अपना पटलका प्रमाण सो गच्छ जानना, अन्य युगलनिविषै पूर्वयुगल उत्कृष्ट आयु ताकौं आदि ग्रहण किया तातैं अपने अपने पटल प्रमाणतैं एक अधिक इतना गच्छ जानना। ऐसैं जानैं आदी अंते सुद्धे रूवूणगच्छे हिदम्मि हाणिचयं, इस सूत्र करि पदका हानिचय जानहु। सो कैसैं? आद्यायुष्क अपेक्षा सौधर्म युगलादि आठ युगलनिविषै क्रमतैं अर्धसागर साढा सात दश साढा चौदह साढासोलह साढा अठारह बीस सागर प्रमाण आदि है। बहुरि अर्धसागर साढा सात साढा दश साढा चौदह साढा सोलह साढा अठारह बीस अर्धसागर इतना प्रमाण अंत है। सो अंतमेंसौ आदि घटाइ शुद्ध किएं दोय पांच तीन च्यारि दोय तीन दोय सागर होय रहे। इनकौं एक घाटि गच्छका भाग देना सो सौधर्म युगलविषै तौ इतना प्रमाणमेंसौं एक घटाइ तीस भए अन्य युगलनिविषै पूर्वयुगलका अंत पटलका उत्कृष्ट आयु इतना किया। तातैं इतना प्रमाण साग च्यारि दोय एक एक तीन तीनका भाग दिएं एक एक होय है। पटल पटल प्रति इतना इतना आयु उपरिकी अपेक्षा घटती भई ऐसा अपेक्षा जानै है। ऐसी संज्ञा हानिचय है। सो सौधर्म युगलविषै दोयका तीसवां भाग, सनत्कुमार युगलविषै इतना चौदवां भाग, ब्रह्मयुगलविषै तीनका चौथा भाग, लांतव युगलविषै दोय, शुक्र युगलविषै दोय, शतार युगलविषै दोय, आनत युगलविषै आध, आरण युगलविषै दोयका तीसवां भाग हानिचय जानि जिस जिस पटल प्रति आयु प्रमाण ल्यावना। सो सौधर्म युगलका दूजा पटलविषै आध सागर आयु है। यातैं हानिचय दोयका तीसवां भाग समान जोडि करि तिसरा पटलका तीसवां भाग प्रमाण तिसरा पटलविषै आयु हो है। यातैं हानिचय मिलाएं चौथा पटलका तीसवां भाग प्रमाण चौथा पटलविषै आयु हो है। ऐसेही क्रमतैं इकतीसवां पटलविषै साढा सात सागर आयु हो है। यातैं सनत्कुमार युगलका हानिचय दयका चौदवां भाग मिलाएं दूजा पटलविषै पैंतालीस सागरका चौदवां भाग प्रमाण आयु हो है। ऐसे क्रमतैं बत्तीसवां साढा सात भाग प्रमाण आयु हो है। यातैं ब्रह्मयुगलका हानिचय तिसरा भाग मिलाएं दूजा पटलविषै आयु हो है। तृतीय क्रमतैं अठतालीसवां साढा दश भाग प्रमाण आयु हो है। ऐसैं उपरि उपरि अंतपटलपर्यंत आयुका आनि करना। बहुरि अनुक्रमतैं ही अंतिम अंत भाग अधिकका करना। ऐसा सौधर्म युगलविषै आदि अंत [illegible] एक भाग एक घाटि गच्छका भाग दिएं एक होय [illegible] ऐसैं उपरि उपरि [illegible] ऐसैं [illegible] ऐसैं [illegible] ऐसैं

आगै लौकांतिक देवनिके अवस्थानका ठिकाना कहैं हैं;—

णिवसंति बह्मलोयस्संते लोयंतिया सुरा अट्ठ।
ईसाणादिसु अट्ठसु वट्टेसु पइण्णएसु कमा ॥ ५३४ ॥
निवसंति ब्रह्मलोकस्यांते लौकांतिकाः सुरा अष्ट।
ईशानादिषु अष्टसु वृत्तेषु प्रकीर्णकेषु क्रमात् ॥ ५३४ ॥

अर्थ—ब्रह्मलोकका अंतविषै आठ कुलभेद संयुक्त लौकांतिक देव बसे हैं। भाव ब्रह्मपुरुषका मंदिरविषै जो अंतस्थान तहां लौकांतिक देवनिके विमान हैं। बहुरि तहां ते लौ देव ईशानादि आठ दिशानिविषै गोल जे प्रकीर्णक विमान तिनविषै यथाक्रम बसैं हैं ॥ ५३

आगैं तिन अट कुलनिकी संज्ञा अर संख्या दोय गाथाकरि कहैं हैं;—

सारस्सद आइच्चा सच्चसया सगजुदा य वण्हरुणा।
सगसगसहस्समुवरिं दुसु दुसु दोदुगसहस्सवड्ढिकमा ॥५३५॥
सारस्वता आदित्याः सप्तशतानि सप्तयुतानि च वह्निपरुणाः।
सप्तसप्तसहस्रमुपरि द्वयोर्द्वयोः द्विद्विसहस्रवृद्धिक्रमः ॥ ५३५ ॥

अर्थ—सारस्वत अर आदित्य तौ प्रत्येक सात युक्त सातसौ प्रमाण हैं। बहुरि वह्नि अ प्रत्येक सात अधिक सात हजार प्रमाण हैं। तातैं उपरि दोय स्थान विषै दोय दोय हजार वृद्धिका अनुक्रम जानना ॥ ५३५ ॥

तो गद्दतोयतुसिदा अव्वाबाहा अरिट्ठसण्णा य।
सेढीबद्धे रिट्ठा विमाणणामं च तत्थेव ॥ ५३६ ॥
ततो गर्दतोयतुषिता अव्याबाधा अरिष्टसंज्ञाश्च।
श्रेणीबद्धे अरिष्टा विमाननामे च तत्रैव ॥ ५३६ ॥

अर्थ—तहां पीछै गर्दतोय १ तुषित १ अव्याबाध १ अरिष्ट १ ऐसी संज्ञाधारक ॥ भावार्थ—लौकांतिक देव आठ कुल भेद संयुक्त हैं। सारस्वत १ आदित्य १ वह्नि १ १ गर्दतोय १ तुषित १ अव्याबाध १ अरिष्ट १ इन देवनिका अनुक्रमतैं प्रमाण सातसै सातसै सात, सात हजार सात, सात हजार सात, नव हजार नव, नव हजार नव, ग्यारह हजार ग्यारह हजार ग्यारह ११०११ जानना। इन विषै अरिष्ट हैं ते श्रेणी बद्ध विमान विषै तिष्टै हैं। विशेष जानना। अवशेष गोल प्रकीर्णक विमाननिविषैही तिष्टै है। बहुरि जे कुलके नाम तेई विमाननिके नाम हैं ॥ ५३६ ॥

आगैं सारस्वत आदिकनिकै दोय दोयका अंतराल विषै तिष्टते जे कुल तिनके नाम तिन देवनिकी संख्या गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

सारस्सदआइच्चप्पहुदीणं अंतरालए दो दो।
जाणग्गिसूरचंदयसघाभा सेयखेमकरा ॥ ५३७ ॥
सारस्वतादित्यप्रभृतीनां अंतराले द्वे द्वे।

जानीहि अग्निसूर्यचंद्रकसत्याभाः श्रेयःक्षेमकराः ॥ ५३७ ॥

अर्थ—सारस्वत आदित्य आदिकनिके आठ अंतरालनिविषै दोय दोय कुल जानहु । तिन ८ कौन सो कहे हैं । अग्न्याभ १ सूर्याभ १ चंद्राभ १ सत्याभ १ श्रेयस्कर १ क्षेमंकर १ ॥ ५३७

वसहिदकामघरणिम्माणरजा भिगंतअप्पमव्वादी ।
रक्खिदमरुवसुअस्सविसा दमरुणसम पुव्वचयमुवरिं ॥ ५३८ ॥

वृषमेष्टकामघरनिर्माणरजोदिगंतात्ममर्वादिः ।
रक्षितमरुद्वस्वश्वविश्वाः प्रथमअरुणसमाः पूर्वचयमुपरि ५३८

अर्थ—वृष मेष १ कामघर १ निर्माण रजा १ दिगंतरक्षित १ आत्मरक्षित १ रक्षित १ मरुत १ वसु १ अश्व १ ऐसे ए अपने अपने कुल नामकरि संयुक्त देव प्रथम अरुण समान संख्या धरैं हैं सात हजार सात हैं । बहुरि इस प्रमाणके उपरि पूर्वोक्त अधिक दोय हजार प्रमाण चय मिलैं सूर्याभादि कनिकी संख्या हो है । भावार्थ—अरुण अर आदिमके विमानिके बीचि अग्न्याभ अर सूर्याभके विमान हैं । बहुरि आदित्य अर बह्नि विमाननिके बीचि चंद्राभ सत्याभके विमान हैं । बह्नि अर अरुणके विमाननिके बीचि श्रेयस्कर क्षेमंकरके विमान हैं । ऐसैं ही अन्य अंतरालनिविषै दोय दोय कुलनिके विमान जाननें । सो आठ अंतरालनि विषै सोलह कुल भए । तहां अग्न्याभ देव सात हजार सात सूर्याभनव हजार नव हैं । चंद्राभ ग्यारह हजार ग्यारह हैं । सत्याभ तेरह हजार तेरह हैं । इस क्रमतैं आगैं विश्व पर्यंत दोय हजार दोय बधती प्रमाण क्रमतैं जाननां ॥ ५३८ ॥

आगैं कहे जु लौकांतिक देव तिनका विशेष स्वरूप गाथादोयकरि कहैं हैं;—

ते हीणाहियरहिया विसयविरत्ता य देवरिसिणामा ।
अणुपिक्खदत्तचित्ता सेससुराणच्चणिज्जा हु ॥ ५३९ ॥

ते हीनाधिकरहिता विषयविरक्ताश्च देवर्षिनामानः ।
अनुप्रेक्षादत्तचित्ताः शेषसुराणामर्चनीया हि ॥ ५३९ ॥

अर्थ—ते लौकांतिक देव परस्पर हीन अधिकता करि रहित हैं । सर्व समान हैं । बहुरि विषयनिविषै विरक्त हैं । बहुरि देवतानिविषै ऋषि समान हैं । तातैं देव ऋषि है नाम जिनके ऐसे हैं । बहुरि अनित्य आदि अनुप्रेक्षानिका चिंतवनविषै दिया है चित्त जिननैं ऐसे हैं । बहुरि अन्य इंद्रादिक देवनिकरि पूजनीक हैं ॥ ५३९ ॥

चोद्दसपुव्वधरा पडिबोहपरा तित्थयरविणिक्कमणे ।
एदेसिमट्ठजलहिट्ठिदी अरिट्ठस्स णव चेव ॥ ५४० ॥

चतुर्दशपूर्वधराः प्रतिबोधपराः तीर्थकरविनिःक्रमणे ।
एतेषामष्टजलधिः स्थितिः अरिष्टस्य नव चैव ॥ ५४० ॥

अधो तीन ग्रैवेयकविषै अढ़ाई हाथ मध्य तीन ग्रैवेयकविषै दोय हाथ उपरिम तीन ग्रैवेयकविषै डेढ़ हाथ शेष अनुदिश अनुत्तरविषैं एक हाथ है ॥ ५४३ ॥

आगैं तिनके उश्वास अर आहारका काल निरूपै हैं;—

पक्खं वाससहस्सं सगसगसायरसलाहि संगुणियं ।
उस्सासाहाराणं कमेण माणं विमाणेसु ॥ ५४४ ॥
पक्षो वर्षसहस्रं स्वकस्वकसागरशलाभिः संगुणितं ।
उच्छ्वासाहाराणां क्रमेण मानं विमानेषु ॥ ५४४ ॥

अर्थ—पक्ष कहिए पंद्रह दिन अर हजार वर्ष सोहम्मवरं पल्ल वरमुवहि वि सत्त इत्यादि पूर्वोक्त गाथाविषै जितनां जितनां सागर प्रमाण आयु कह्या तितनां प्रमाण सागर शलाकानिकरि गुण्या हुवा क्रम करि विमाननिविषै उश्वासका प्रमाण हो है । तहां उदाहरण—सौधर्मद्विकविषै आयु दोय सागर है। तहां दोय पक्षके अंतराल लिएं उश्वास अर दोय हजार वर्षके अंतराल लिएं आहार है । ऐसैं ही अन्यत्र भी जाननां ॥ ५४४ ॥

आगैं गुणस्थानकौं आश्रय करि देवगतिविषै जे उपजे हैं तिनका स्वरूप गाथा तीन करि कहैं हैं;—

णरतिरिय देसअयदा उक्कस्सेणच्चुदोत्ति णिग्गंथा ।
ण य अयद देसमिच्छा गेवेज्जंतोत्ति गच्छंति ॥ ५४५ ॥
नरतिर्यंचः देशायता उत्कृष्टेनाच्युतांतं निर्ग्रंथाः ।
न च अयता देशमिथ्या ग्रैवेयांतं इति गच्छंति ॥ ५४५ ॥

अर्थ—असंयत वा देश संयत मनुष्य अर तिर्यंच उत्कृष्टपनैं अच्युत कल्पपर्यंत जाय हैं । तातैं उपरि नांही । बहुरि द्रव्य करि निर्ग्रंथ अर भाव करि असंयत वा देश संयत वा मिथ्यात्वी मनुष्य ते उपरिमग्रैवेयकपर्यंत जाय हैं । तातैं ऊपरि नांही ॥ ५४५ ॥

सव्वट्ठोत्ति सुदिट्ठी महव्वई भोगभूमिजा सम्मा ।
सोहम्मदुगं मिच्छा भवणतियं तावसा य वरं ॥ ५४६ ॥
सर्वार्थांतं सुदृष्टिः महाव्रती भोगभूमिजा सम्यक्त्वः ।
सौधर्मद्विकं मिथ्या भवनत्रयं तापसाः च वरं ॥ ५४६ ॥

अर्थ—सम्यग्दृष्टी द्रव्य वा भाव करि महाव्रती मनुष्य सो सर्वार्थसिद्धिपर्यंत जाय है । बहुरि भोगभूमिया सम्यग्दृष्टी [illegible] है । तातैं ऊपरि नांही । अर भोगभूमिया मिथ्यादृष्टी भवनत्रयवासी व्यन्तर [illegible] ऊपरि नांही । बहुरि पंचाग्नि आदि कष्ट साधक जे तापसी ते उत्कृष्ट [illegible] । तातैं ऊपरि नांही ॥ ५४६ ॥

वरया य

चरकाश्च परिव्राजा ब्रह्मोऽच्युतपर्यंतं आजीवाः।
अनुदिशानुत्तरतः च्युता न केशवपदं न यांति ॥ ५४७ ॥

अर्थ—नाना भेद है लक्षण जिनका ऐसे चरक से अर एक दंडी त्रिदंडी आदि लक्षण धरें ऐ परिव्राजक संन्यासी ते उत्कृष्टपने ब्रह्मकल्पपर्यंत जाय हैं। तातैं उपरि नांही। बहुरि कांजी आदि कके भोजन करनहारे ऐसे आजीव ते उत्कृष्टपने अच्युत कल्पपर्यंत जाय हैं। तातैं उपरि नांही अब देवगतितैं चय करि जे उपजे तिनका स्वरूप कहैं हैं। अनुदिश अर अनुत्तर विमानतैं च का केशव पद कहिए नारायण प्रतिनारायण पदको प्राप्त न हो है ॥ ५४७ ॥

आगैं जे जीव देवगतितैं चय करि निर्वाण ही जाय तिनके नाम कहैं हैं;—

सोहम्मो वरदेवी सलोगवाला य दक्खिणमरिंदा।
लोयंतिय सव्वट्ठा तदो चुदा णिव्वुदिं जंति ॥ ५४८ ॥
सौधर्मो वरदेवी सलोकपालश्च दक्षिणामरेंद्राः।
लौकांतिकाः सर्वार्थाः ततश्च्युता निर्वृतिं यांति ॥ ५४८ ॥

अर्थ— सौधर्म नामा इन्द्र बहुरि ताही की शची नामा पट्ट देवी अर ताहीके सोम आदि चारि लोकपाल बहुरि सनत्कुमारादिक दक्षिण इन्द्र बहुरि सर्व लौकांतिक देव बहुरि सर्व सर्वार्थसिद्धिविषै उपजे देव ए सर्व तहांस्यों चय करि मनुष होय नियमकरि निर्वाणकौं प्राप्त हो हैं ॥ ५४८ ॥

आगैं तेरसठि शलाका पुरुषनिकी पदवीकौं जे न प्राप्त होहिं तिनके नाम कहैं हैं;—

णरतिरियगदीहिंतो भवणतियादो य णिग्गया जीवा।
ण लहंते ते पदवीं तेवट्ठिसलागपुरिसाणं ॥ ५४९ ॥
नरतिर्यग्गतिभ्यो भवनत्रयाच्च निर्गता जीवाः।
न लभंते ते पदवीं त्रिषष्टिशलाकापुरुषाणाम् ॥ ५४९ ॥

अर्थ—मनुष्यगति अर तिर्यंच गतितैं अर भवनत्रिकतैं निकसिकरि आए जे जीव ते तरेसठि शलाका पुरुषनिकी पदवीकौं न पावैं हैं। चौबीस तीर्थंकर बारह चक्रवर्ती नव नारायण नव बलभद्र इनकौं तेरसठिशलाका पुरुष कहिए हैं ॥ ५४९ ॥

आगैं देवनिकी उत्पत्तिका स्वरूप कहैं है;—

सुहसयणग्गे देवा जायंते दिणयरोव्व पुव्वणगे।
अंतोमुहुत्त पुण्णा सुगंधिसुहफाससुचिदेहा ॥ ५५० ॥
सुखशयनाग्रे देवा जायंते दिनकर इव पूर्वनगे।
अंतर्मुहूर्ते पूर्णा सुगंधिसुखस्पर्शशुचिदेहाः ॥ ५५० ॥

अर्थ—जैसैं पूर्वाचल विषै सूर्य उदय होय तैसैं अंतर मुहूर्त विषै उपपादशिलाकी पूर्ण सुगंध सुखरूप स्पर्श पवित्र है शरीर जिनका ऐसे ते देव सुखरूप शय्याके ऊपरि जन्म धरै है ॥ ५५० ॥

आगैं तहां उपज भए देव तिनकै उपजनेके अनंतरि कार्य विशेष हो है सो गाथा दोय करि कहै हैं;—

आणंदतूरजयघुदिरवेण जम्मं विबुज्झ सं पत्तं ।
दट्ठूण सपरिवारं गयजम्मं ओहिणा णिच्चा ॥ ५५१ ॥

आनंदतूर्यजयध्वनिरवेण जन्म विबुध्य स्वं प्राप्तं ।
दृष्ट्वा सपरिवारं गतजन्म अवधिना ज्ञात्वा ॥ ५५१ ॥

अर्थ—जनम होतैं भया जे आनंदरूप बाजित्रनिका शब्द अर जयकारादिध्वनि रूप शब्द तिन करि यहु देवरूप जनम है ऐसा जानि बहुरि प्राप्त भया जो विभव अर अपना परिवार ताहि देखि बहुरि अवधि ज्ञान करि पूर्व गत पर्यायोंको जानि ॥ ५५१ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

धम्मं पसंसिदूण ण्हादूण दहे भिसेयलंकारं ।
लद्धा जिणाभिसेयं पूजं कुव्वंति सद्दिट्ठी ॥ ५५२ ॥

धर्मं प्रशंस्य स्नात्वा ह्रदे अभिषेकालंकारं ।
लब्ध्वा जिनाभिषेकं पूजां कुर्वंति सद्दृष्टयः ॥ ५५२ ॥

अर्थ—धर्मनैं प्रशंसि करि जल भरे सद्द्रहरूपि स्नान करि पद्मरूप अभिषेक अर अलंकारकौं पाइ सम्यग्दृष्टि जीव स्वयमेव जिनदेवका अभिषेक अर पूजा ताहि करै हैं ॥ ५५२ ।

सुरबोहियावि मिच्छा पच्छा जिणपूजणं पकुव्वंति ।
सुहसायरमज्झगया देवा ण विदंति गयकालं ॥ ५५३ ॥

सुरबोधिता अपि मिथ्या पश्चाज्जिनपूजनं प्रकुर्वंति ।
सुखसागरमध्यगता देवा न विदंति गतकालं ॥ ५५३ ॥

अर्थ—मिथ्यादृष्टी देव अन्य देवनिकरि संबोधे हुए भी पीछै जिन पूजनकौं करैं हैं । ते सर्व ही सुखसागरके मध्य प्राप्त हुवा थका गए-कालकौं न जानैं हैं ॥ ५५३ ॥

आगैं तिन देवनिके समीचीन कार्य कहैं हैं;—

महपूजासु जिणाणं कल्लाणेसु य पयंति कप्पसुरा ।
अहमिंदा तत्थ ठिया णमंति मणिमउलिघडिदकरा ॥ ५५४ ॥

महापूजासु जिनानां कल्याणेषु च प्रयांति कल्पसुराः ।
अहमिंद्राः तत्र स्थिता नमंति मणिमौलिघटितकराः ॥ ५५४ ॥

अर्थ—जिन तीर्थंकर देव तिनकी महा पूजा अर तिनका पंच महाकल्याण तिनविषैं कल्पवासी देव जावैं हैं । बहुरि अहमिंद्र देव तहां अपनैं स्थान ही विषै मणिमई मुकुटनितैं लगाए हैं हाथ जिनूनैं ऐसे होत संते नमस्कार करैं हैं ॥ ५५४ ॥

आगैं देवादिककी संपदा किनकै हो है सो कहैं हैं;—

विविहतवरयणभूसा णाणसुची सीलवत्थसोम्मंगा।
जे तेसिमेव वस्सा सुरलच्छी सिद्धिलच्छी य ॥ ५५५ ॥

विविधतपोरत्नभूषाः ज्ञानशुचयः शीलवस्त्रसौम्यांगाः।
ये तेषामेव वश्या सुरलक्ष्मीः सिद्धिलक्ष्मीश्च ॥ ५५५ ॥

अर्थ—जे जीव विविध तपश्चरण करि आभूषित हैं बहुरि ज्ञान करि पवित्र हैं। बहुरि शील रूप वस्त्र संयुक्त सौम्य है अंग जिनका ऐसे हैं। तिन ही जीवनिकैं देव लक्ष्मी अर मुक्ति लक्ष्मी वश्य हो है ॥ ५५५ ॥

अब अष्टम भूमिका स्वरूप कहैं हैं;—

तिहुवणमुवरूढा ईसिपभारा धरट्ठमी रुंदा।
दिग्घा इगिसगरज्जू अट्ठजोयणपमिदबाहल्ला ॥ ५५६ ॥

त्रिभुवनमूर्धारूढा ईषत् प्राग्भारा धराष्टमी रुंदा।
दीर्घा एकसप्तरज्जू अष्टयोजनप्रमितबाहल्या ॥ ५५६ ॥

अर्थ—तीन भुवनका मस्तक करि आरूढ अर ईषत्प्राग्भार है नाम जाका ऐसी आठवीं पृथ्वी है। ताकी चौड़ाई एक राजू लंबाई सात राजू मोटाई आठ योजन प्रमाण है। भाव यह—लोकका अंतपर्यंत है अर आठ योजन मोटी है ॥ ५५६ ॥

आगैं तीह आठवीं पृथ्वीविषै तिष्ठता सिद्धक्षेत्रका स्वरूपकों गाथा दोय करि कहैं हैं;—

तम्मज्झे रूप्पमयं छत्तायारं मणुस्सपरिवासं।
सिद्धक्खेत्तं मज्झट्ठवेहं कमहीणं वेहुलियं ॥ ५५७ ॥

तन्मध्ये रूप्यमयं छत्राकारं मनुष्यमहीव्यासं।
सिद्धक्षेत्रं मध्येष्टवेधं क्रमहीनं वैदूर्यम् ॥ ५५७ ॥

अर्थ—तीह आठवीं पृथ्वीकै मध्य रूपमई श्वेत छत्रके आकारि मनुष्य क्षेत्र समान गोल पैंतालीस लाख योजन प्रमाण व्यासकौं धरैं सिद्ध क्षेत्र है। ताकी मोटाई मध्यविषै आठ योजन प्रमाण है। अन्यत्र सर्वत्र अंत पर्यंत क्रमतैं घटती घटती मोटाई है। भाव यह—जैसैं पृथ्वीविषै शिला हो है तैसैं आठवीं पृथ्वीविषै बीचिमैं सिद्धक्षेत्र रूप सुपेद शिला है। सो बीचिमैं आठ योजन मोटी है क्रमतैं घटती घटती अंतविषै थोड़ी मोटी है। सो उपरि तल तो समानरूप है नीचेनैं घाटि बाधि है ऐसा जानना ॥ ५५७ ॥

उत्ताणट्ठियमंते पत्तं व तणु तदुवरि तणुवादे।
अट्ठगुणड्ढा सिद्धा चिट्ठंति अणंतसुहतित्ता ॥ ५५८ ॥

उत्तानस्थितमंते पात्रमिव तनु तदुपरि तनुवाते।
अष्टगुणाढ्याः सिद्धाः तिष्ठंति अनंतसुखतृप्ताः ॥ ५५८ ॥

अर्थ—अंतविषै तनुरूप है थोड़ा मोटा है। जैसैं ऊंचा औंधाकिया पात्र कहिए कटोरा तीह समान है। बहुरि तीह सिद्धक्षेत्रकै उपरिवर्ती जो तनुवात तिहविषै सम्यक्त्वादि अष्ट गुणनि करि संपूर्ण अनंत सुख करि तृप्त ऐसे सिद्ध भगवान तिष्ठै हैं ॥ ५५८ ॥

आगैं अनंत सुख करि तृप्तपणांविषै दृष्टांत दोय गाथानि करि कहै हैं;—

एयं सत्थं सव्वं सत्थं वा सम्ममेत्थ जाणंता ।
तित्तिं तुस्संति णरा किण्ण समत्थत्थतत्तण्हू ॥ ५५९ ॥

एकं शास्त्रं सर्वं शास्त्रं वा सम्यगत्र जानंतः ।
तृप्तिं तुष्यंति नराः किं न समस्तार्थतत्त्वज्ञाः ५५९ ॥

अर्थ—एक शास्त्र वा सर्व शास्त्रकौं सम्यक प्रकार इस लोकविषै जानते थके मनुष्य तौ संतोष पावै हैं। तौ समस्त पदार्थनिका तत्त्वस्वरूपके ज्ञायक सिद्ध ते कैसैं संतोष न पावैं ! अवश्य पावैं ही पावैं । भावार्थ—सुख है सो सम्यज्ञानजनित है । इहां संसारविषै भी सम्यज्ञान होतैं ही सुख हो है । तौ सिद्ध अनंत ज्ञानवान हैं तिनकैं सुख होय ही होइ ॥ ५५९ ॥

चक्किकुरुफणिसुरिंदेसहमिंदे जं सुहं तिकालभवं ।
तत्तो अणंतगुणिदं सिद्धाणं खणसुहं होदि ॥ ५६० ॥

चक्रिकुरुफणिसुरेंद्रेषु अहमिंद्रे यत् सुखं त्रिकालभवं ।
ततो अनंतगुणितं सिद्धानां क्षणसुखं भवति ॥ ५६० ॥

अर्थ—चक्रवर्तीका सुखतैं भोगभूमिजाके सुख अनंत गुणा है । तातैं धरणेन्द्रके सुख अनंत गुणा है । तातैं देवेन्द्रके सुख अनंतगुणा है । तातैं अहमिंद्रनिकैं सुख अनंत गुणा है । ऐसैं इनिकैं जो अनंत अनंत गुणा सुख है । तीह अतीत अनागत वर्त्तमानकालसंबंधी सर्व सुखकौं एकठा करि तातैं सिद्धनिकैं क्षणमात्र करि उपज्या सुख अनंत गुणा है । सो यहु भी उपदेश मात्र कथन है। बहुरि औरनिकै सुख साकुल है सिद्धनिकै सुख निराकुल है । तातैं सो सुख वचन अगोचर ही जानना । इति वैमानिकदेवनिका अधिकार समाप्त भया ॥ ५६० ॥

इति श्रीनेमिचंद्राचार्यविरचित त्रिलोकसारमें पांचमां वैमानिकदेवनिके लोकका अधिकार समाप्त भया: ॥ ५ ॥

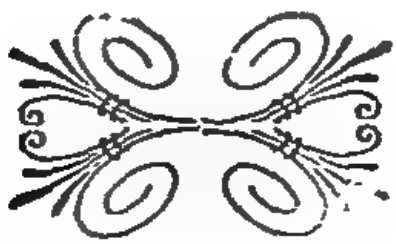

॥ अथ नरतिर्यग्लोकाधिकार ॥ ६ ॥

अब पाँचवें पाया है अवसर जाने ऐसा मनुष्य लोक तिर्यक लोकका निरूपण करनेका अभिप्राय संयुक्त आचार्य सो प्रथम ही दोऊ लोकविषै तिष्ठते जिन मंदिर तिनकी स्तुतिपूर्वक संख्या कहै है;—

णमह णरलोयमिणयर चत्तारि सयाणि दोविहीणाणि।
चावण्णं चउ चउरो णंदीसुर कुंडले रुचगे ॥ ५६१ ॥
नमत नरलोकजिनगृहाणि चत्वारि शतानि द्विहीनानि।
द्वापंचाशत् चत्वारि चत्वारि नंदीश्वरे कुंडले रुचके ॥ ५६१ ॥

अर्थ—मनुष्य लोकविषै दोय घाटि च्यारि सै जिनमंदिर हैं। बहुरि नंदीश्वरद्वीप कुंडलगिरि रुचकद्वीपविषै समस्ते तिर्यक् लोकसंबंधी बावन च्यारि च्यारि जिनमंदिर हैं। तिन सर्व नित्यमंदिरनिकों तुम नमस्कार करहु ॥ ५६१ ॥

आगें मनुष्य लोकविषै जिनमंदिर कहां कहां हैं सो कहैं हैं;—

मंदरकुलचवक्खारिसुमणुसुत्तररुप्पजंबुसामलिसु।
सीदी तीसं तु सयं चउ चउ सचरिसयं दुपणं ॥ ५६२ ॥
मंदरकुलवक्षोरुमानुषोत्तरजंबूशाल्मलिषु।
अशीतिः त्रिंशत् तु शतं चत्वारि चत्वारि सप्ततिशतं द्विपंच ॥ ५६२ ॥

अर्थ—मेरु पांच कुलाचल तीस गजदंत सहित वक्षारगिरि एकसौ इष्वाकार च्यारि मानुषोत्तर एक विजयार्द्धपर्वत एकसौ सत्तरि जंबूवृक्ष पांच शाल्मली वृक्ष पांच इनविषै अनुक्रमतैं असी तीस एकसौ च्यारि च्यारि एकसौ सत्तरि पांच पांच जिनमंदिर हैं ॥ ५६२ ॥

आगें अब कहिए हैं अर्थ ते सर्व मेरुका कथनके आश्रय है तातैं प्रथम ही तिन मेरुगिरिनिकौं प्रतिपादन करैं हैं;—

जंबूदीवे एक्को इसुकयपुव्ववरचावदीवदुगे।
दो दो मंदरसेला बहुमज्झगविजयबहुमज्झे ॥ ५६३ ॥
जंबूद्वीपे एकः इषुकृतपूर्वापरचापद्वीपद्विके।
द्वौ द्वौ मंदरशैलौ बहुमध्यगविजयबहुमध्ये ॥ ५६३ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपविषै एक मेरुगिरि है, बहुरि धातुकी खंड अर पुष्करार्द्ध इन दोऊ द्वीपनिविषै दक्षिण उत्तर दिशानै दोय दोय इष्वाकार पर्वत हैं। तिनि करि दोय भाग होइ पूर्व पश्चिमविषै दोय दोय धनुषाकार क्षेत्रविषै दोय दोय मेरुगिरि हैं। तहां भी ते मेरु कहां तिष्ठैं हैं। भरतादि क्षेत्रनिके अतिशय करि मध्य तिष्ठतो विदेहक्षेत्र तीहका अत्यंत मध्य प्रदेशविषै तिष्ठै हैं ॥ ५६३ ॥

आगैं तिन मेरुनिका दोऊ पार्श्वनिविषै तिष्ठते क्षेत्रनिके नाम कहैं हैं;—

दक्खिणदिसादु भरहो हेमवदो हरिविदेहरम्मो य ।
हइरण्णवदेरावदवस्सा कुलपव्वयंतरिया ॥ ५६४ ॥
दक्षिणदिशातः भरतो हैमवतः हरिविदेहरम्यश्च ।
हैरण्यवदैरावतवर्षाः कुलपर्वतांतरिताः ॥ ५६४ ॥

अर्थ—तिन मेरुनिकी दक्षिण दिशातैं लगाय क्रमतैं भरत १ हैमवत १ हरि १ वि रम्यक १ हैरण्यवत १ ऐरावत १ ऐसैं ए वर्ष क्षेत्र हैं। ते ए वीचि वीचि हिमवत आदि छ तिनकरि अंतरालकौं धरै हैं। भरत हैमवतकै वीचि हिमवत कुलाचल है, हैमवत हरिके बीचि म है। ऐसैं ही सात क्षेत्रनिकै वीचि छह कुलाचल जाननैं। जंबूद्वीपवानुकीखंड पुष्करार्धविषै कुलाचल ऐसैं जाननैं ॥ ५६४ ॥

आगैं तिन कुलाचलनिका नामादिक गाथा दोय करि कहैं हैं;—

हिमवं महादिहिमवं णिसहो णीलो य रुम्मि सिहरी य ।
मूलोवरि समवासा मणिपासा जलणिहिं पुट्ठा ॥ ५६५ ॥
हिमवान् महादिहिमवान् निषधः नीलश्च रुक्मी शिखरी च ।
मूलोपरि समव्यासा मणिपार्श्वा जलनिधिं स्पृष्टाः ॥ ५६५ ॥

अर्थ—हिमवत १ महाहिमवत १ निषध १ नील १ रूक्मी १ शिखरी १ ए छह पर्वत हैं। ते ए सर्व मूलतैं उपरि पर्यंत सर्वत्र समान व्यासकौं धरैं हैं। मीति समान नीचे तैं ऊपरि समान चौड़े हैं। बहुरि मणि पार्श्वाः कहिए जिनका अंत प्रदेशमणिमय हैं। बहुरि ते छ स्पर्शै हैं। जिनका दोऊ पार्श्व समुद्रकौं स्पर्श करि रहे हैं। तहां जंबूद्वीपविषै कुलाचलनिके पार्श्व लवण समुद्र हीकौं स्पर्शै हैं। धातुकी खंडविषै लवणोद कालोद समुद्रकौं स्पर्शै पुष्करार्द्धविषै कालोद समुद्र मानुषोत्तर पर्वतकौं स्पर्शै हैं इतना जाननां ॥ ५६५ ॥

हेमज्जुणतवणीया कमसो वेलुरियरजदहेममया ।
इगिदुगचदुचदुगइगिसयतुंगा होंति हु कमेण ॥ ५६६ ॥
हेमार्जुनतपनीयाः क्रमशः वैडूर्यरजतहेममयाः ।
एकद्विकचतुश्चतुर्द्विकैकशततुंगा भवंति हि क्रमेण ॥ ५६६ ॥

अर्थ—हिमवत् आदि कुलाचल हेम कहिए सुवर्ण समान वर्ण धरै है महाहिमवत् कहिए अर्जुनमान श्वेतवर्ण धरै है निषध तपनीय कहिए तापा सोना समान दूकड़ाकी सि मरता वर्ण धरै है। नील वैडूर्य कहिए पन्ना समान मोरका कंठ सरिस वर्ण धरै है। रुक्मी रजत कहिए रूपा समान श्वेतवर्ण धरै है। शिखरी हेम कहिए सोना समान वर्ण धरै है। ये पर्वतनिके क्रमतैं वर्ण है। बहुरि ए हिमवत् आदि पर्वतनिका क्रमतैं एकसौ दोयसौ दोयसै एकसौ योजन उचाईका प्रमान है ॥ ५६६ ॥

अब हिमवत् आदि कुलाचलनिके ऊपरि स्थिति है तिन तिनके नाम कहैं हैं;—

पउमाय महापउमा तिगिंछ केसरि महादिपुण्डरिया।
पुंडरिया य दहाओ उवरिं अणुपव्वदायामा ॥ ५६७ ॥
पद्मो महापद्मः तिगिंछः केसरिः महादिपुंडरीकः।
पुंडरीकश्च हृदा उपरि अनुपर्वतायामाः ॥ ५६७ ॥

अर्थ—तिन हिमवत् आदि पर्वतनिके उपरि क्रमतैं पद्म १ महापद्म १ तिगि १ केसरी १ महापुंडरीक १ पुंडरीक १ ए द्रह हैं ते पर्वत अनुसारि हीन अधिक लम्बाईका प्र हैं ॥५६७॥

आगैं तिन द्रहनिका व्यासादिकनिकौं प्रतिपादन करत संता तिन द्रहनिविषै तिनका स्वरूपकौं निरूपै हैं;—

वासायामोगाढं पणदसदसमहदपव्वदुदयं दु।
कमलस्सुदओ वासो दोविय गाहस्स दसभागो ॥ ५६८
व्यासायामावगाधाः पंचदशदशमहत्पर्वतोदयाः तु।
कमलस्योदयः व्यासः द्वावपि गाधस्य दशभागौ ॥ ५६८ ॥

अर्थ—तिन द्रहनिका व्यास अर आयाम अर अगाध क्रमतैं अपनैं अपनैं पर्वतकी गुणां दशगुणां दशवैं भाग प्रमाण जाननैं। भावार्थ—हिमवत आदि पर्वतनिका उचाईक सौ दोयसै च्यारिसै च्यारिसै दोयसै एकसौ योजन प्रमाण है। तीहस्यौं पांच द्रहनिकी चौड़ाईका प्रमाण जाननां। सो क्रमतैं पांचसै हजार दोय हजार दोय पांचसै योजन प्रमाण चौड़े हैं। बहुरि दश गुणां लंबाईका प्रमाण जाननां। सो क्रमतैं दोय हजार च्यारि हजार च्यारि हजार दोय हजार एक हजार योजन प्रमाण लंबे हैं। बहुरि उंडाईका प्रमाण जाननां। सो क्रमतैं दश बीस चालीस चालीस बीस दश योजन हैं। बहुरि तिन द्रहनिविषै कमल हैं। तिनका उचाईका प्रमाण अर चौड़ाईका प्र अपनैं अपनैं द्रहका अगाध प्रमाणके दशवैं भाग प्रमाण है। सो पद्मादि द्रहनिविषै क्रम च्यारि च्यारि दोय एक योजन प्रमाण कमल ऊंचे अर इतनेंही चौड़े जाननैं ॥ ५६८

आगैं तिन कमलनिका विशेषस्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

णियगंधवासियदिसं वेलुरियविणिम्मिउच्चणालजुदं।
एक्कारसहस्सदलं णवविय सिपमत्थि दहमज्झे ॥ ५६९ ॥
निजगंधवासितदिशं वैडूर्यविनिर्मितोच्चनालयुतम्।
एकादशसहस्रदलं नवविकसितमस्ति हृदमध्ये ॥ ५६९ ॥

अर्थ—निज सुगंध करि वासित करी है दिशा जानैं ऐसा बहुरि वैडूर्यमणि मित जो ऊंची नाली तीह करि संयुक्त बहुरि ग्यारह अधिक एक हजार पत्र जाकै पाईए विकसायमान सारिखा ऐसा कमल तिन द्रहनिके मध्य है। सो कमल पृथ्वी सारख स्पर्शरूप नांही है ॥ ५६९ ॥

आगे इस ही अनुसारि गुन घरै प्रक्षेप गाथा है;—

दहमज्झे अरविंदयणालं वादालकोसमुव्विद्धं ।
इगिकोसं बाहल्लं तस्स मुणालं तु रजदमयं ॥ ५७० ॥

ह्रदमध्ये अरविंदकनालं द्वाचत्वारिंशत्कोशोत्सेधम् ।
एककोशं बाहल्यं तस्य मृनालं त्रिः रजतमयम् ॥ ५७० ॥

अर्थ—सरोवरके मध्य कमलकी नाली बियालीस कोश ऊंची है एक कोश मोटी है। तिस नालका मृनाल तीन कोशका मोटा रूपामई श्वेतवर्ण है ॥ ५७० ॥

कमलद्दलजन्मविणिग्गयतुरियुदयं वास कण्णियं तत्थ ।
सिरिरयणगिहं दिव्वति कोसं तस्सद्धमुभयपजोगदलं ॥ ५७१ ॥

कमलदलजन्मविनिर्गततुर्योदयः व्यासः कर्णिकायाः तत्र ।
श्रीरत्नगृहं दिव्यमिति क्रोशः तस्यार्धमुभयपार्श्वदलं ॥ ५७१ ॥

अर्थ—कमलका उत्सेधका अर्द्ध प्रमाण सोही नालीका जड़ विनिर्गमति है। भावार्थ—तिस कोश नाली ऊंची है ताके साढ़ा दश योजन मद। तहां दश योजन तो नाली जलतैं बाहर है अर आधा योजन नाली जलतैं उपरि है सोई कमलकी उचाई एक योजन कही थी। ताका आधा प्रमाण आधा योजन है। बहुरि तिस कमलकी जो कर्णिका ताकी उचाई व चौड़ाई कमल व्यास प्रमाण है सो कमल एक योजन उदय व्यास धरै ताकी चौड़ाई एक कोश प्रमाण कही कर्णिका इदमित्थं प्रमाण जानना। बहुरि तिस कर्णिका उपरि श्रीदेवीका रत्नमई मंदिर है। तिस मंदिरका ऊंचा तिहि कोश ताका आधा उभय पार्श्वका आधा प्रमाण है। भावार्थ—श्रीदेवीका मंदिर एक कोश चौड़ा है पौन कोश ऊंचा है। ऐसी यथा इहांतिं ऐसे ही कमल जानने प्रमाण यथा संभव जानना ॥ ५७१ ॥

आगे तिस ह्रदादिकी जे कमल निर्माण के देवी कही हैं तिनके नाम वा तिनका निवास ह्रद तिनका परिवार कहै है;—

सिरि हिरि धिदि कित्तीवि य बुद्धी लच्छी य पढमपरिवारा ।
सट्ठी चउसट्ठी सत्तदुगं पउमपरिवारा ॥ ५७२ ॥

श्रीः ह्रीः धृतिः कीर्तिः अपि च बुद्धिः लक्ष्मीः च प्रथमपरिवाराः ।
षष्टिः चतुःषष्टिः सप्तद्विकं पद्मपरिवाराः ॥ ५७२ ॥

अर्थ—तहां ह्रद कमल देवीनिके क्रमतैं श्री १ ह्री २ धृति ३ कीर्ति ४ बुद्धि ५ लक्ष्मी ६ ए छह देवी हैं तिनके देवी देवनका परिवार है। ते पद्म प्रमाण आयुकी धरै हैं। बहुरि तहां श्रीदेवी ह्रद तिसके पद्म कमलके परिवारका तिस ही कमलके परिवार देवी ही जानने ॥ ५७२ ॥

आगे तिन देवीनिके कमल निवासी देवीनिके देवी कही हैं तिनके नाम कहै हैं;—

अब्भंतरतुरियूणं बाहिरतुरियम्मि अग्गमहिसीओ ।
सत्तसहस्सं सत्तसहस्सं पउमं च परिवारो ॥ ५७३ ॥

आदित्यचंद्रजंबुप्रभृतयः त्रिपारिषदाः अग्नियमनैर्ऋत्यां।

द्वात्रिंशत् चत्वारिंशत् अष्टचत्वारिंशत्सहस्राणि कमलानि अमरसमानि ॥ ५७३ ।

अर्थ—आदित्य १ चन्द्र १ जंबु इनकी आदि दे करि जे तीन प्रकार परिषद देव हैं ते मूल कमलतैं अग्नि यमनें ऋति दिशानिविषै तिष्ठे हैं। ते अभ्यन्तर परिषद देव बत्तीस हजार हैं। मध्य पारिषद देव चालीस हजार हैं। बाह्य पारिषद देव अटतालीस हजार हैं। बहुरि तिनके रहनेंके कमल तिन देवनिके समान जानने। एक एक कमल उपरि एक एक पारिषद देवका मंदिर है ५७३

आणीयगेहकमला पच्छिमदिसि सग गयस्सरहवसहा।
गंधव्वणट्टपत्ती पत्तेयं दुगुण सत्तकक्खजुदा ॥ ५७४ ॥

आनीकगेहकमलानि पश्चिमदिशि सप्त गजाश्वरथवृषभाः।
गंधर्वनृत्यपत्तयः प्रत्येकं द्विगुणसप्तकक्षयुताः ॥ ५७४ ॥

अर्थ—आनीक जातिके देवनिके मंदिर सहित सात कमल मूल कमलतैं पश्चिम दिशाविषै है ते आनीक हाथी १ घोडा १ रथ बैल १ गंधर्व १ नृत्यकी १ पयादा १ ऐसैं सात प्रकार हैं। तहां एक एक आनीकविषै सात सात कक्ष हैं। तहां प्रथम कक्षविषै अपनां सामानिकनिके समान प्यारि हजार है। बहुरि द्वितीयादि कक्षविषै दूणा दूणा प्रमाण जानना ॥ ५७४ ॥

उत्तरदिसि कोणदुगे सामाणियकमल चदुसहस्समदो।
अब्भंतरे दिसं पडि पुह तेत्तियमंगरक्खपासादा ॥ ५७५ ॥

उत्तरदिशि कोणद्विके सामानिककमलानि चतुःसहस्रमतः।
अभ्यंतरे दिशं प्रति पृथक् तावन्मात्रांगरक्षप्रासादाः ॥ ५७५ ॥

अर्थ—उत्तर दिशाका भागविषै तिष्ठते दोऊ कोण तिनविषै सामानिक देवनिके कमल प्यारि हजार हैं। बहुरि इन कमलानिकै अभ्यन्तर मूल कमलकी तरफ एक एक दिशा प्रति तिनके प्यारि प्यारि हजार अंगरक्षकनिके कमलनि उपरि मंदिर हैं ॥ ५७५ ॥

अब्भंतरदिसि विदिसे पडिहारमहत्तरट्ठसयकमलं।
मणिदलजलसमणालं परिवारं पउममाणद्धं ॥ ५७६ ॥

अभ्यन्तरदिशि विदिशि प्रतिहारमहत्तराणामष्टशतकमलानि।
मणिदलजलसमनालं परिवारं पद्ममानार्धम् ॥ ५७६ ॥

अर्थ—तिन अंगरक्षक कमलनितैं अभ्यन्तर मूल कमलके समीप दिशा वि विदिशानिविषै प्रतीहार महत्तरनिके एक सो आठ कमल हैं। भावार्थ—एक एक दिशाविषै चौदह चौदह अर एक एक विदिशाविषै तेरह तेरह मुख्य प्रतीहारनिके कमल हैं। इहां ए कमल ऐसैं जाननें। बहुरि ए सर्व परिवार कमल मणि मई रत्ननि करि संयुक्त हैं। अर जलकी उंडाई समान ऊंची है नाली जिनकी ऐसे हैं। जलतैं उपरि ऊंचे नाहीं हैं। बहुरि परिवार कमलनिका व्यासादिकरूप जो विशेष स्वरूप सो मुख्य कमलतैं अर्द्ध प्रमाण सर्व है ॥ ५७६ ॥

सिरिगिहदलमिदरगिहं सोहम्मिंदस्स सिरिहिरिधिदीओ।
कित्ती बुद्धी लच्छी ईसाणदिवस्स देवीओ ॥ ५७७ ॥
श्रीगृहदलमितरगृहं सौधर्मेन्द्रस्य श्रीह्रीधृतयः।
कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः ईशानाधिपस्य देव्यः ॥ ५७७ ॥

अर्थ—श्रीदेवीका मंदिरका जो व्यासादिक प्रमाण ताका आधा परिवारके गृहनिका व्यास दिक प्रमाण है ऐसें ही अन्यत्र जानना। बहुरि श्री १ ह्री १ धृति १ ए तीन तौ सौधर्म इंद्र देवी हैं। कीर्ति १ बुद्धि १ लक्ष्मी १ ए तीन ईशान अधिपकी देवी हैं ॥ ५७७ ॥

आगैं तिन द्रहनिविषै उत्पन्न भई जे महानदी तिनके नाम गाथा दोय करि कहै हैं;—

सरजा गंगासिंधू रोहि तहा रोहिदास णाम णदी।
हरि हरिकंता सीदा सीदोदा णारि णरकंता ॥ ५७८ ॥
सरोजाः गंगासिंधू रोहित्तथा रोहितास्या नाम नदी।
हरित् हरिकांता सीता सीतोदा नारी नरकांता ॥ ५७८ ॥

अर्थ—सरोवरनितैं उत्पन्न भई ऐसी नदी गंगा १ सिंधु १ रोहित १ रोहितास्या १ हरी १ हरिकांता १ सीता १ सीतोदा १ नारी १ नरकांता ॥ ५७८ ॥

सरिदा सुवण्णरूप्पयकूला रत्ता तहेव रत्तोदा।
पुव्वावरेण कमसो णाभिगिरिपदक्खणेण गया ॥ ५७९ ॥
सरितः सुवर्णरूप्यकूला रक्ता तथैव रक्तोदा।
पूर्वापरेण क्रमशो नाभिगिरिप्रदक्षिणेन गताः ॥ ५७९ ॥

अर्थ—सुवर्णकूला १ रूपकूला १ रक्ता १ रक्तोदा १ ए सरितः कहिए चौदह नदी हैं ते क्रमतैं पूर्वै कही गंगा रोहित सीता नारी सुवर्णकूला रक्ता ए तौ पूर्वदिशा मुख करि अर अवशेष पीछै कही सात नदी ते पश्चिम मुख करि क्षेत्रनिके बीचि तिष्ठते जे पर्वत तिनकी प्रदक्षिणा करि समुद्रकौं प्राप्त भई हैं ॥ ५७९ ॥

आगै तिन नदीके दोऊ तटनिका स्वरूप कहै हैं;—

पुण्णागणागपूगीकेदइतमालकेलितंबूली।
छत्तीलवंगमट्टीपहुदी सयलणदिदुतडेसु ॥ ५८० ॥
पुन्नागनागपूगीकेदकितमालकदलीनाबूली।
छत्रीलवंगमट्टीप्रभृतयः सकलनदीद्वितटेषु ॥ ५८० ॥

अर्थ—पुन्नाग नागकेसर सुपारी अशोक तमाल केतकी तांबूली लता इलायची लवंग माधवी आदि वृक्ष सकल नदीनिके दोऊ तटनिविषै पाइए हैं ॥ ५८० ॥

आगै किस २ द्रहविषै ए नदी उत्पन्न भई हैं सो कहै हैं,—

गंगादु रोहिदस्सा पउमे रत्तद् सुवण्णपउमदहे।
सेसे दो दो जोयणदहमेरुणं णाभिगिरिं ॥ ५८१ ॥

गंगादे रोहितास्या पद्मे रक्तादे सुवर्णा अंतहदे।
शेषेषु हे हे योजनदृष्टमंतरित्वा नाभिगिरिम् ॥ ५८१ ॥

अर्थ—गंगा सिंधु रोहितास्या ए तीन नदी तो पद्मद्रहविषै उपजी हैं। बहुरि रक्ता रक्तोदा सुवर्णकूला ए तीन नदी अंतका पुंडरीक द्रहविषै उत्पन्न भई हैं। अवशेष द्रहनिविषै दोय दोय नदी उत्पन्न भई हैं। तहां गंगा सिंधु रक्ता रक्तोदा इन च्यारि नदीबिना अवशेष नदी क्षेत्रनिके वीचि तिष्ठता जो नाभिगिरि ताकौं आध योजन छोडि समुद्रकौं गई हैं। इहां विदेहविषै मेरुगिरिका नाम इहां नाभिगिर जानना। हैमवत हरि रम्यक हैरण्यवतविषै नाभिगिरि है ही सो द्रहनि सौ नदी निकसि नाभिगिरिके सन्मुख सूधी आइ आध योजन दूरैतें मुडि तीह नाभिगिरिकौं अर्द्ध प्रदक्षिणा करि समुद्रकौं प्राप्त हो हैं। बहुरि भरत ऐरावतविषै नाभिगिरि नांही तातैं गंगासिंधु रक्तारक्तोदा इनका वर्णन किया है ॥५८१॥

आगैं तिनविषै गंगानदीकी उत्पत्ति अर ताके गमनका विधान गाथा तीन करि कहैं हैं;—

वज्जमुहदो जणित्ता गंगा पंचसयमेत्थ पुव्वहुं।
गत्ता गंगाकूटं अविपत्ता जोयणद्धेण ॥ ५८२ ॥
वज्रमुखतः जनित्वा गंगा पंचशतमत्र पूर्वमुखं।
गत्वा गंगाकूटं अप्राप्य योजनार्धेन ॥ ५८२ ॥

अर्थ—पद्मनामा द्रहका पूर्वदिशाविषै जो वज्रद्वार तोरणतैं गंगानदी उपजि-निकसि करि इस हिमवत् पर्वतके ऊपरि पूर्व दिशा सनमुख पांचसै योजन जाइ हिमवत् पर्वत ऊपरि गंगा नामा जो कूट है ताकौं आध योजन अप्राप्त होइ गंगा कूटतैं आध योजन दूरै तिष्ठै मुडि पश्चिम ॥ ५८२ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

दक्खिणमुहं चलित्ता जोयणतेवीससहियपंचसयं।
साहियकोसद्धजुदं गत्ता जा विविहमणिरम्मा ॥ ५८३ ॥
दक्षिणमुखं चलित्वा योजनत्रयोविंशतिसहितपंचशतम्।
साधिककोशार्धयुतं गत्वा या विविधमणिरम्या ॥ ५८३ ॥

अर्थ—तहांतैं दक्षिण दिशाकै सनमुख तिस हिमवत पर्वत ही ऊपरि चालि करि तेईस अधिक पांचसै योजन अर साधिक आध कोस जाइ पर्वतके तटि गई। याकी वासना कहिए है। भरतका प्रमाण पांचसै छब्बीस योजन अर छह उगणीसवां भाग ताकौं दूणा किरे हिमवत् पर्वतका व्यास एक हजार बावन योजन अर बारह उगणीसवां भाग तामैं नदीका व्यास एक योजन एक कोस घटाएं एक हजार तिरासीस योजन रहे ताके सौ आधा किरे पांचसै तेईस योजन अर अवशेष बारहका उगणीसवां भागकौं चौगुणा करि कोस किरे अडतालीस कोसका उगणीसवां भाग भया ताके दोय कोस अर दशका उगणीसवां भाग भया तामैं एक कोस तो नदीका व्यासविषै दिया अवशेष एक कोस अर दशका उगणीसवां भाग रह्या ताका आधा आध कोस अर पांच उगणीसवां भाग भया। यातैं पांचसै तेईस योजन अर साधिक आध कोस रह्या। भावार्थ—जहां गंगानदी मुडी है तहां हिमवतका व्यासविषै नदीका व्यास घटाइ अवशेष

आधा सो उत्तरनै रह्या अर आधा दक्षिणनै रह्या सो गंगा दक्षिणदिशाकौं जाय पर्वतकौं प्राप्त भई। तहां पर्वतका तटविषै जिह्विका नामा प्रणाली नानाप्रकार मणि मई है ॥ ५८३ ॥

कोसदुगदीहवहल्ला वसहायारा य जिब्भिया तत्तो।
छज्जोयणं सकोसं तिस्से गंतूण पडिदा सा ॥ ५८४ ॥
क्रोशद्वयदीर्घबाहल्या वृषभाकारा च जिह्विका तत्र।
षड्योजनं सक्रोशं तस्यां गत्वा पतिता सा ॥ ५८४ ॥

अर्थ—सो जिह्विका नामा प्रणाली दोय कोश लंबी है। अर दोय ही कोश [illegible] ऊंची है। बहुरि वृषभाकारा कहिए गऊमुखके आकार है। कोश सहित छह योजन चौड़ी है। तिह प्रणालीविषै जाइ सो गंगानदी तिस हिमवत पर्वतनैं पड़ी है ॥ ५८४ ॥

आगैं प्रणालीका वृषभाकारकौं सार्थीक करै हैं;—

केसरिमुहसुदिजिब्भादिट्ठी भूसीसपहुदिगोसरिसा।
तेणिह पणालिया सा वसहायारेत्ति णिद्दिट्ठा ॥ ५८५ ॥
केशरिमुखश्रुतिजिह्वादृष्टयः भूशीर्षप्रभृतयः गोसदृशाः।
तेनेह प्रणालिका सा वृषभाकारा इति निर्दिष्टा ॥ ५८५ ॥

अर्थ—प्रणालिकाके मुख कान जीभ नेत्रनिका आकार तौ सिंहके समान है। अर सीस मस्तक आदिका आकार गऊ समान है। तीह कारण करि इहां सो प्रणालिका मुख्यपनै वृषभाकार ऐसी कही है ॥ ५८५ ॥

आगैं पड़ी जो नदी ताके पड़नेंका स्वरूप गाथा पांच करि कहैं हैं;—

भरहे पणकदिमचलं मुचा कहलोवमा दहव्वासा।
गिरिमूले दहगाहं कुंडं वित्थारसहिजुदं ॥ ५८६ ॥
भरते पंचकृतिमचलं मुक्त्वा काहलोपमा दशव्यासा।
गिरिमूले दशगाधं कुंडं विस्तारषष्टियुतम् ॥ ५८६ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रविषै पंचकृति कहिए पचीस योजन हिमवत् पर्वतकौं छोड़ि उरैं काहलाके आकारि होइ दश योजनकी चौड़ाई लिएं गंगानदी पड़ै है। कहा पड़ै है सो कहैं हैं। हिमवत पर्वतका मूलविषै दश योजन ऊंडा साठि योजन चौड़ा गोल कुंड है ॥ ५८६ ॥

मज्झे दीओ जलदो जोयणदलमुग्गओ दुगुणवासो।
तम्मज्झे वज्जमओ गिरी दसुस्सेहओ तस्स ॥ ५८७ ॥
मध्ये द्वीपः जलतः योजनदलमुद्गतः द्विगुणव्यासः।
तन्मध्ये वज्रमयः गिरिः दशोत्सेधः तस्य ॥ ५८७ ॥

अर्थ—तीह कुंडके मध्य जलतैं उपरि आध योजन ऊंचा अर द्विगुन कहिए आठ योजन चौड़ा ऐसा गोल द्वीप कहिए टापू है। तीह द्वीपके मध्य वज्रमई दश योजन ऊंचा पर्वत है तिस पर्वतका ॥ ५८७ ॥

कहा सो कहै है;—

भूमज्झग्गे वासो चदु दुगि सिरिगेहमुवरि तव्वासो।
चाणे तिदुगेकं सहस्समुदओ दु दुसहस्सं ॥ ५८८ ॥
भूमध्ये व्यासः चतुः द्विकं एकं श्रीगेहमुपरि तद्व्यासः।
चापानां त्रिद्विकैकं सहस्रमुदयस्तु द्विसहस्रम् ॥ ५८८ ॥

अर्थ—भूमध्य अन्तरिषै व्यास च्यारि दोय एक योजनका व्यास है। भावार्थ—सो पर्वत नीचैं च्यारि योजन मध्यविषै दोय योजन उपरि एक योजन चौडा है। बहुरि तिह पर्वतके उपरि श्री देवांका मंदिर है। तिस श्रीमंदिरका चापनिका तीन दोय एक सहस्र है उदय दोय सहस्र है। भावार्थ—श्रीमंदिर नीचैं तीन हजार मध्यविषै दोय हजार उपरि एक हजार धनुष प्रमाण चौडा है। अर दोय हजार धनुष ऊंचा है ॥ ५८८ ॥

पणसयदलं तदंतो तदारं ताल वास दुगुणुदयं।
सव्वत्थ धणू णेयं दोण्णि कवाला य वज्जमया ॥ ५८९ ॥
पंचशतदलं तदंतरं तद्द्वारं चत्वारिंशत् व्यासं द्विगुणोदयं।
सर्वत्र धनुः ज्ञेयं द्वौ कपाटौ च वज्रमयौ ॥ ५८९ ॥

अर्थ—तिस श्रीमंदिरका अभ्यंतरविषै व्यास पांचसै अर ताका आधा प्रमाण है। भावार्थ—अभ्यंतर श्रीदेवीका मंदिर साढा सातसै धनुष प्रमाण चौडा है। बहुरि तिसका द्वार चालीस व्यास दूणा उदय संयुक्त है। भावार्थ—श्रीमंदिरका द्वार चालीस धनुष चौडा असी धनुष ऊंचा है। ऐसैं सर्वत्र श्रीमंदिरका प्रमाण धनुष प्रमित जानना। तिह द्वारकै दोय वज्रमई कपाट है ५८९ ॥

सिरिगिहसीसठियंबुजकण्णियसिंहासणं जडामउडं।
जिणमभिसेचुमणा वा ओदिण्णा मत्थए गंगा ॥ ५९० ॥
श्रीगृहशीर्षस्थितांबुजकर्णिकासिंहासनं जटामुकुटं।
जिनमभिषेकुमना वा अवतीर्णा मस्तके गंगा ॥ ५९० ॥

अर्थ—श्रीमंदिरका मस्तक उपरि तिष्ठता कमलकी कर्णिकाविषै तिष्ठता सिंहासन जटा मुकुट जिनबिंब ताहि अभिषेक करनेका मानौं याका मन है ऐसैं जिनबिंबके मस्तक उपरि गंग अवतरै है। भावार्थ—श्रीमंदिरकै उपरि कमल है ताकी कर्णिका उपरि सिंहासन है। तहां जिनबिंब विराजे है। ताके उपरि सो गंगा नदी तिस पर्वतसौं पडै है ॥ ५९० ॥

आगैं कुंडसौं निकसि चाली जो गंगा ताका स्वरूपकौं वा तीहका स्थान स्वरूपकौं गाथा छह करि कहैं है;—

कुंडादो दक्खिणदो गच्चा खंडप्पवादणामगुहं।
अट्ठजोयणवित्थिण्णा विणिग्गया कुदपाहिट्ठादो ॥ ५९१ ॥
कुंडान् दक्षिणतः गत्वा खंडप्रपातनामगुहाम्।
अष्टयोजनविस्तीर्णा विनिर्गता कुतपाधस्तात् ॥ ५९१ ॥

अर्थ—कुंडसों निकसि दक्षिण दिशा सनमुख सूधी जाइ विजयार्द्ध नामा पर्व प्रपात नामा गुफा ताकी कुतप कहिए देहली ताके नीचें होय तिस गुफाविषै प्रवेश क योजन चौडी होत संती गंगा तिस ही गुफाका उत्तर द्वारकी कुतप कहिए देहली तीं होइ करि ही सो गंगा तिस गुफातैं बारैं निकसै है ॥ ५९१ ॥

दारगुहुच्छयवासा अट्ठ वारस पव्वदं व दीहत्तं ।
वज्जछवासकवाडदु वेयड्ढगुहा दुगुभयंते ॥ ५९२ ॥
द्वारगुहोच्छ्रयव्यासौ अष्ट द्वादश पर्वत इव दीर्घत्वं ।
वज्रषड्व्यासकपाटद्वयं विजयार्धगुहा द्विकोभयांते ॥ ५९२ ॥

अर्थ—गुफाका द्वार अर गुफा ताकी उचाई तौ प्रत्येक आठ योजन है अर चौडा योजन है । बहुरि विजयार्ध पर्वतकी चौडाईका जो प्रमाण तितना ही गुफाका लंबाईका पचास जोजन है । बहुरि विजयार्द्धकी गुफाके दोऊ अंत द्वारनिविषै प्रत्येक छह छह यो दोय वज्र मई कपाट हैं ॥ ५९२ ॥

उम्मग्गणिमग्गणदी गुहमज्झगकुंडजा दु पुव्ववरे ।
जोयणदुगदीहाओ पुसंति उभयंतदो गंगं ॥ ५९३ ॥
उन्मग्ननिमग्ननद्यौ गुहामध्यगकुंडजे तु पूर्वापरस्याम् ।
योजनद्वयदैर्घ्ये स्पृशतः उभयांततः गंगाम् ॥ ५९३ ॥

अर्थ—उन्मग्न निमग्ननदी पूर्व पश्चिमविषै गुफा मध्यके कुंडतैं उपजि दोऊ तटतैं दो चौडी होत संती गंगाकी पर्शी है । भावार्थ—गुफाकी पूर्व पश्चिमविषै भीतिके निकटि हैं । तिनतैं उनमग्न अर निमग्न नामा नदी उपजे हैं । सो तहांसौं चालि सूधी गंगाके दोऊ आइ गंगाविषै प्रवेश करै हैं । ते नदी दोय योजन चौडी हैं ॥ ५९३ ॥

णियजलपवाहपडिदं दव्वं गुरुगंपि णेदि उवरि तडं ।
जम्हा तम्हा भण्णदि उम्मग्गा वाहिणी एसा ॥ ५९४ ॥
निजजलप्रवाहपतितं द्रव्यं गुरुकमपि नयति उपरि तटम् ।
यस्मात् तस्मात् भण्यते उन्मग्ना वाहिनी एषा ॥ ५९४ ॥

अर्थ—अपना जलका प्रवाहविषै पड्या हुवा भारी भी द्रव्यकों जातैं उपरि तटहीकै करै डूबनैं दे नांही तातैं यहु उन्मग्ननामा नदी कहिए है ॥ ५९४ ॥

णियजलभरउवरि गदं दव्वं लहुगंपि णेदि हिट्ठम्मि ।
जेण्णं तेण्णं भण्णदि एसा सरिया णिमग्गेति ॥ ५९५ ॥
निजजलभरोपरि गतं द्रव्यं लघुकमपि नयति अधस्तात् ।
येन तेन भण्यते एषा सरित् निमग्ना इति ॥ ५९५ ॥

अर्थ—अपना जलका प्रवाहके उपरि प्राप्त भया हलका भी द्रव्यकों नीचे प्राप्त करै डूबनैं है । जिह कारण करि यातैं यहु नदी निमग्ना ऐसी कहिए है ॥ ५९५ ॥

तत्तो दक्खिणभरहद्धसद्धं गंतूण पुव्वदिसवदणा।
मागदारंतरदो लवणसमुद्दं पविट्ठा सा ॥ ५९६ ॥
ततो दक्षिणभरतस्यार्धं गत्वा पूर्वदिशावदना।
मागधद्वारांतरतः लवणसमुद्रं प्रविष्टा सा ॥ ५९६ ॥

अर्थ—तीह गुफातैं निकसि करि दक्षिण भरतका अर्द्ध पर्यंत तौ सूधी दक्षिण सन्मुख ही गई सो एकसौ उगणीस योजन अर तीन अठतीसवां भाग प्रमाण गई। कैसें ? भरतका प्रमाणमें ५२६।६+१९ सो विजयार्द्धका व्यास५०घटाइ अवशेष ४७६।६÷१९ आधा किएं २३८।+१९ दक्षिण भरतका प्रमाण हो है। ताका आधा किएं ११९।३+१९ अर्ध दक्षिण भरतका प्रमाण हो है। बहुरि तीह अर्द्ध दक्षिण भरत ताईं आय मुडि करि पूर्व दिशातैं सनमुख होइ द्वीपके कोटका मागध नामा द्वार ताकै माहीं आय सो गंगा लवण समुद्रकों प्रवेश करै है ॥ ५९६ ॥

अब सिंधुनदीके स्वरूपकों निरूपै है;—

गंगसमा सिंधुणदी अवरमुहा सिंधुकूडविणिवित्ता।
तिमिसगुहादवरंबुधिमिता पभासवरवदारादो ॥ ५९७ ॥
गंगासमा सिंधुनदी अपरमुखा सिंधुकूटनिर्गता।
तिमिस्रगुहादपरांबुधिमिता प्रभासवरद्वारतः ॥ ५९७ ॥

अर्थ—गंगाविषै जो वर्णन कह्या तीह समान ही सिंधु नदी है। सो सर्व वर्णन सिंधुविषै जानना। इतना विशेष, जो यह सिंधु नदी पद्मद्रहके पश्चिम द्वारतैं निकसि पश्चिम सनमुख सिंधु कूटनै दूरैं मुडि करि पर्व्वत पर्यंत आइ कुंडविषै पडि तहांसों निकसि विजयार्ध पर्वतकी तिमिस्र नामा गुफाविषै प्रवेश करि तहांसों निकसि जंबूद्वीपके कोटका प्रभास नाम द्वारतैं पश्चिम समुद्रकों प्राप्त भई। और सर्व वर्णन गंगावत् जानना ॥ ५९७ ॥

आगैं अवशेष नदीनिका स्वरूप कहै है;—

सेसा रूप्पंता दहवित्थारूणचलद्धदलमुवरिं।
गंतूण दक्खिणुत्तरमणुपुट्ठा पुव्वपरजलहिं ॥ ५९८ ॥
शेषा रूप्यांता ह्रदविस्तारोनाचलार्द्धदलमुपरि।
गत्वा दक्षिणोत्तरमनुपृष्टाः पूर्वापरजलधिम् ॥ ५९८ ॥

अर्थ—अवशेष रोहित आदि रूप्यकूलापर्यंत नदी अपनां अपनां द्रहका विस्तार करि ऊन जो पर्वतका विस्तार ताका आधा प्रमाण ताईं पर्वतके ऊपरि दक्षिण उत्तर सनमुख जाइ पीछें क्षेत्रविषै आधक्षेत्र ताईं सूधी जाइ नाभिगिरिके दूरैं मुडिकरि पूर्व पश्चिम संमुख होइ पूर्व पश्चिम समुद्रको प्रवेश करै है। तहां भरतक्षेत्रका जो प्रमाण ५२६।६÷१९ ताकों दोय आठ बत्तीस बत्तीस आठ दोय जो हिमवत् आदिकी शलाका तिन करि क्रमतें गुणें हिमवत् १०५२।१२÷१९ महाहिमवत् ४२१०।१०—१९ निषद्ध १६८४२।१२÷१९ नील १६८४२।१२÷१९ रुक्मी ४२१०।१०÷१९ शिखरी १०५२।१२—१९ का विस्तार हो है यामें अपनें अपनें द्रहके विस्तारका प्रमाण

५००।१०००।२०००।२०००।१०००।५०० घटाएं जो अवशेष रहै ५५२।११-।
३२१०।१०÷१९। १४८४।२÷१९। १४८४।२÷१९। ३२१०।१०÷१९। ५५२।
÷१९ ताका आधा किएं जो प्रमाण होय २७६।६÷१९।१६०५।५÷१९।७४२।१÷
७४२।१÷१९।१६०५।५÷१९।२७६।६÷१९ तितनी दूर तो नदी पर्वत उपरि आवे है।
अपनां अपनां क्षेत्रविषै होइ समुद्रकों प्रवेश करै है। भावार्थ—रोहित नदी
निकसि सूधी महा हिमवत्के तटपर्यंत सोलहसै पांच योजन उगणीसवां भाग तांई
क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि तहांतैं निकसि सूधी नाभिगिरिके उरैं तांई आइ मुडि पूर्व सन्मुख होइ
विषै प्रवेश करै है। बहुरि रोहितास्या नदी पद्मद्रहके उत्तर द्वारतैं निकसि सूधी
पर्वत दोयसै छिहंतरि योजन छह उगणीसवां भाग तांई आइ हैमवत क्षेत्रविषै कुंडविषै
निकसि सूधी नाभिगिरिके उरैं तांई जाइ मुडि करि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है।
हरित नदी तिगिंछ द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकसि सूधी निषधके तटपर्यंत चहोत्तरिसै
योजन एक उगणीसवां भाग तांई आइ हरि क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिके
तांई जाइ मुडि करि पूर्व सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि हरिकांता नदी
द्रहके उत्तर द्वारतैं निकसि सूधी महा हिमवतके तट पर्यंत सोलहसै पांच योजन पांच उगणीस
भाग तांई आइ हरिक्षेत्रविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिके उरै तांई जाइ मुडि करी पश्चि
सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि सीता नदी केसरि द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकसि
सूधी नीट पर्वतके तटपर्यंत चहोत्तरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग पर्यंत आइ विदे
क्षेत्रविषै कुंडविषैं पडि सूधी मेरुगिरिका उरां तांई आइ मुडि पूर्व सन्मुख होइ इस समुद्रविषै
प्रवेश करै है। बहुरि सीतोदा नदी तिगिंछ द्रहके उत्तर द्वारतै निकसि सूधी निषधका तटपर्यंत
चहोत्तरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग तांई आइ विदेह क्षेत्रविषै कुंडविषै पडी पूर्व
मेरुगिरिका उरां तांई जाइ मुडि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि नरकांता नदी
महापुंडरीक द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकसि सूधी रुक्मी पर्वतका तट पर्यंत सोलहसै पांच योजन
पांच उगणीसवां भाग पर्यंत आइ रुक्मक क्षेत्रविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई
आइ मुडि पूर्व सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि नारकांता नदी केसरी द्रहके दक्षिण
द्वारतैं निकसि सूधी नीट पर्वतका तट पर्यंत चहोत्तरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग
तांई आइ रुक्मक क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई मुडि पूर्व
सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि सुवर्ण कूला नदी पुंडरीक द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकसि
सूधी रुक्मी पर्वतका तट पर्यंत दोयसै छिहंतरि योजन छह उगणीसवां भाग पर्यंत आइ हैरण्यवत
क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई आइ मुडि करि पूर्व सन्मुख
होइ इस समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि रूप्य कूला नदी महापुंडरीक द्रहके उत्तर
द्वारतैं निकसि सूधी रुक्मी पर्वतका तट पर्यंत सोलहसै पांच योजन पांच उगणीसवां भाग तांई आइ
हैरण्यवत क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि निकसि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई आइ मुडि करी पश्चिम

समुद्र होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। इहां पर्वत उपरि नदी आवनें आदिविषै योजननिका प्रमाण द्वीप अपेक्षा कह्या है अन्यत्र धातुकीखंड पुष्करार्धविषै प्रमाण भी ऐसें ही यथासंभव जाननां ॥ ५९८ ॥

आगें रक्ता रक्तोदा आदि नदीनिका प्रणालिका आदिकका प्रमाण कहैं हैं;—

गंगादुगं व रत्तारत्तोदा जिब्भियादिया सव्वे।
सेसाणं पि य णेया तेवि विदेहोत्ति दुगुणकमा ॥ ५९९ ॥

गंगादिकं व रक्तारक्तोदा जिह्विकादिका सर्वे।
शेषाणामपि च ज्ञेयाः तेपि विदेहांतं द्विगुणक्रमाः ॥ ५९९ ॥

अर्थ—गंगादिक जो गंगासिंधु तिनका जैसें वर्णन किया तैसे ही रक्ता रक्तोदाका वर्णन जाननां। विशेष इतना पद्मद्रहकी जायगा पुंडरीक द्रह कहनां हिमवत पर्वतकी जायगा शिखरी कहनां। बहुरि अवशेष जिह्विका आदि प्रमाण विशेष समान जाननें। बहुरि सर्व अवशेष नदीनिके भी प्रणालिका कुंड आदि विशेषनिका व्यासादिकका प्रमाण सो भरत ऐरावत संबंधी नदीनितैं अनुक्रमतैं विदेह संबंधी नदीपर्यंत दूणा दूणा जाननां ॥ ५९९ ॥

आगैं तिन नदीनिके तीरनिका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

गंगदु रत्तदु वासा सपादछण्णिग्गमे विदेहोत्ति।
दुगुणा दसगुणमंते गाहो वित्थार पण्णंसो ॥ ६०० ॥

गंगाद्वयोः रक्तद्वयोः व्यासाः सपादषट् निर्गमे विदेहांतम्।
द्विगुणा दशगुणा अंते गाधः विस्तारः पंचाशदंशः ॥ ६०० ॥

अर्थ—आगैं तिन नदीनिका विस्तार कहैं हैं। गंगादिक कहिए गंगासिंधु अर रक्तादिक कहिए रक्तारक्तोदा इनका व्यास जो चौड़ाईका प्रमाण सो निर्गमे कहिए द्रहतैं निकसितैं सवा छह योजन है। अर अन्य नदीनिका विदेह संबंधी नदीनि पर्यंत दोय दोय नदीनिका दूणा दूणा क्रमतैं है। बहुरि सर्व नदीनिका अंते कहिए समुद्रविषै प्रवेश करनेविषै द्रहतैं निकसनेतैं दशगुणा व्यास है। जैसें गंगाका सवा बासठियोजन बहुरि सर्व नदीका गाध कहिए उंडाईका प्रमाण सो अपने अपने व्यासके प्रमाणतैं पचासवैं भाग प्रमाण है जैसें गंगाका आधयोजन। ऐसें ही अन्यनदीनिका जाननां ॥ ६०० ॥

णदिणिग्गमे पवेसे कुंडे अण्णत्थ चावि तोरणयं।
बिंबजुदं उवरिं तु दिक्कण्णावाससंजुत्तं ॥ ६०१ ॥

नदीनिर्गमे प्रवेशे कुंडे अन्यत्र चापि तोरणकम्।
बिंबयुतं उपरि तु दिक्कन्यावाससंयुक्तम् ॥ ६०१ ॥

अर्थ—नदीनिका निर्गमे कहिए निकसनेका द्रहका द्वार अर प्रवेश कहिए समुद्रविषै प्रवेश करनेका द्वीपके कोटका बहुरि कुंडे कहिए कुंडतैं निकसनेका द्वार बहुरि अन्यत्रापि कहिए और भी जायगां इनविषै उपरि जिन बिंब करि संयुक्त अर दिक्कुमारीनिके मंदिरनि करि संयुक्त तोरण है ॥ ६०१ ॥

आगैं पूर्व कहे जे वर्ष अर वर्षधर पर्वत तिनके विस्तारका प्रमाण [illegible] कहैं हैं;—

तत्तोरणवित्थारो सगसगगणदिवासमरिसगो उदओ।
वासादु दिवड्ढगुणो सव्वत्थ दलं हवे गाढो ॥ ६०२ ॥

तत्तोरणविस्तारः स्वकस्वकनदीव्यासमद्रयाकः उदयः।
व्यासात् द्वयर्धगुण्यः सर्वत्र दले भवेत् गाढः ॥ ६०२ ॥

अर्थ—तिन तोरणद्वारनिका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण सो तौ अपनां अपनां [illegible] व्यास समान है। बहुरि व्यासतैं ड्योढ़ गुणां उदय कहिए उचाईका प्रमाण है। जैसे सिंधु नदीका निर्गम द्वारका तोरण सवा छह योजन चौड़ा अर नव योजन तीन आठवां भाग [illegible] ऊंचा है। ऐसें ही अन्यत्र जाननां। बहुरि सर्वत्र तोरणनिका गाढ कहिए [illegible] योजन प्रमाण है। इन गंगा आदि नदीनिका ऐसें गमनादि जाननां॥ ६०२ ॥

ऐसें कला त्रैराशिक करि स्याया हुवा भरत क्षेत्रविषै व्यासकों कहैं हैं;—

विजयकुलद्दी दुगुणा उभयंताद्दो विदेहवस्सोत्ति।
गुणपिंडदीवसगगुणगारो हु पमाणफलइच्छा ॥ ६०३ ॥

विजयकुलाद्रयः द्विगुणा उभयांततः विदेहवर्षान्तं।
गुणपिंडद्वीपस्वकगुणकारो हि प्रमाणफलेच्छाः ॥ ६०३ ॥

अर्थ—विजय कहिए क्षेत्र अर कुलाचल पर्वत ते दोऊ दक्षिण उत्तर दिशातैं क्रमतैं तिस क्षेत्र पर्यंत दूणे दूणे हैं। तहां गुणकारका पिंड अर द्वीप अर स्वकीय गुणकार इनकौं क्रम फल इच्छा कीजिए इसतैं त्रैराशिक करि तिस तिस क्षेत्र वा पर्वतनिका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण है स्यावनां। भावार्थ—सर्व गुणकारनिका जोड़ दिएं एकसौ निवै होइ सो तौ सर्वत्र प्रमाण राशि करिए। बहुरि जंबूद्वीपका व्यास लाख योजन सो सर्वत्र फलराशि करिए। बहुरि दोऊ ओर विदेह पर्यंत दूणा दूणा गुणकार सो भरतका एक हिमवत्का दोय हैमवतका च्यारि महा हिमवत् आठ हरिका सोलह निषधका बत्तीस विदेहका चौसठि नीलका बत्तीस रम्यकका सोलह रुक्मि आठ हैरण्यवतका च्यारि शिखरीका दोय ऐरावतका एक गुणकार है। सो इच्छाराशि करि ए फल राशिकौं इच्छा करि गुणि प्रमाण राशिका भाग दिएं अपनां अपनां क्षेत्र वा कुलाचल चौड़ाईका प्रमाण आवै है ॥ ६०३ ॥

आगैं तैसे ही त्रैराशिक करि सिद्ध भया विदेहके विष्कंभका अंक ताहि प्रतिपादन करता इहांतैं उपरि कहिएगे जे विदेह क्षेत्रादिक तिनके प्रमाण स्यावनेंका विधान कहैं हैं;—

भरहस्स य विक्खंभो जंबूदीवस्स णउदिसदभागो।
पंचसया छव्वीसा छच्च कला ऊणवीसस्स ॥ ६०४ ॥

भरतस्य च विष्कंभो जंबूद्वीपस्य नवतिशतभागः।
पंचशतानि षड्विंशानि षट् च कला एकोनविंशतेः ॥ ६०४ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रका विष्कंभ जो व्यास सो जंबूद्वीपके व्यासके एकसौ निवेंवां भाग प्रमाण। सो कैसा है? पांचसै छब्बीस योजन अर एक योजनका उगणीस भागविषै छह कला प्रमाण भरतका विष्कंभ है॥ ६०४॥

चुलसीदि छतेचोंसा चत्तारि कला विदेहविक्खंभो
णदिहीणदलं विजयावक्खारविभंगवणदीहा॥ ६०५॥

चतुरशीतिः षट्त्रयस्त्रिंशत् चतस्रः कला विदेहविष्कंभः।
नदीहीनदलं विजयवक्षारविभंगवनदीर्घं॥ ६०५॥

अर्थ—चौरासी छह तेतीस इन अंकनि करि तेतीस हजार छहसै चौरासी योजन ३३६८४ अर एक योजनकी उगणीस कलाविषै च्यारि कला इतना विदेह क्षेत्रका विष्कंभ करिए चौड़ाईका प्रमाण है। तिहके बीचि सीता वा सीतोदा नदीका प्रवाह है। ताने विदेह विष्कंभमेंसौं नदीका विष्कंभ घटाएं अवशेषका आधाका जो प्रमाण सोई बत्तीस विदेह क्षेत्र सोलह वक्षार गिरि बारह विभंगा नदी देवारण्यादि वन इनका लंबाईका प्रमाण है। सो विदेह विष्कंभ ३३६८४।४+१९ मैसौं पांच सै योजन नदी व्यास घटाएं अवशेष ३३१८४।४+१९ को आधा किएं सोलह हजार पांचसै बाणवै योजन दोय कला तहां दीर्घताका प्रमाण होइ॥ ६०५॥

अब विदेह क्षेत्रके मध्य स्थिति ऐसा जु मेरुगिरि ताका स्वरूपकूं कहै हैं;—

मेरू विदेहमज्झे णवणउदिदहेक्कजोयणसहस्सा।
उदयं भूमुहवासं उवरुवरिगवणचउक्कजुदो॥ ६०६॥

मेरुः विदेहमध्ये नवनवतिदशैकयोजनसहस्राणि।
उदयः भूमुखव्यासः उपर्युपरिगवनचतुष्कयुतः॥ ६०६॥

अर्थ—विदेहका मध्य प्रदेशविषै मेरुगिरि है ताका निर्याणवै दश एक हजार योजन उदय भूमुख व्यास है। भावार्थ—मेरु निर्याणवै हजार योजनतौ ऊंचा है। मूलविषै दश हजार योजन चौड़ा है। ऊपरि एक हजार योजन चौड़ा है। बहुरि सो मेरु ऊपरि ऊपरि कटनीविषै क्रम ऐसे जो च्यारि वन तिन करि संयुक्त है॥ ६०६॥

अब वन चतुष्टयके नाम अर तिनका अंतराल्कौं प्रतिपादन करै है;—

भू भद्दसाल साणुग णंदणसोमणसपांडुगं च वणं।
इगिपणपणवाबत्तीरिदपंचसयाणि गतूणं॥ ६०७॥

भुवि भद्रशालं सानुगं नंदनसौमनसपांडुकं च वनम्।
एक पंचपंचद्वासप्ततिपंचशतानि गत्वा॥ ६०७॥

अर्थ—भद्रसाल नामा वन तौ भूमुख करिए मेरुके मूलि पृथ्वी ऊपरि है। बहुरि नंदन सौमनस पांडुक ए वन मेरुकी कटनीविषै क्रम है। बीचि बीचि मेरुका विष्कंभ घटै करि जो शिरविषै कटनी है तहां पाईए है। सो एक एक वन बहत्तरि बहत्तरि हजार योजन अंतर

जाइ तिष्ठै है। भावार्थ—मेरुगिरिकै चौगिरद भद्रसाल नामा वन तौ पृथ्वी उपरि तहांतैं एक गुणित पांचसै ताका पांचसै योजन उपरि जाइ नंदनवन है। बहुरि तहांतैं एकसौ पचासि तीह करि गुणित पांचसै ताका बासठि हजार पांचसै योजन उपरि जा वन है। बहुरि तहांतैं बहत्तरि गुणित पांचसै ताका छत्तीस हजार योजन उपरि अ वन है॥ ६०७॥

आगैं तिन वननिविषैं तिष्ठते वृक्षनिकौं कहैं है,—

मंदारचूदचंपयचंदणवणसारमोचचोचेहिं।
तंबूलिपूगजादीपहुदीसुरतरुहि कयसोहं॥ ६०८॥

मंदारचूतचंपकचंदनवनसारमोचचोचैः।
तांबूलीपूगजातिप्रभृतिसुरतरुभिः कृतशोभानि॥ ६०८॥

अर्थ—मंदार अर आंब चंपा चंदन वनसार नाडियर तांबूली सुपारी जाय इत्यादि देव वृक्षनि करि कीनी है शोभा जिनिनैं ऐसे ते वन हैं॥ ६०८॥

अब और मेरुनिका वननिकै अंतराल निरूपणकरनैंके मिस करि उचाईका प्रमाण क

पणसय पणसयसहियं पणवण्णसहस्सयं सहस्साणं।
अट्ठावीसिदराणं सहस्सगाढं तु मेरूणं॥ ६०९॥

पंचशतं पंचशतसहितं पंचपंचाशत्सहस्रकं सहस्राणां।
अष्टाविंशतिरितरेषां सहस्रगाधस्तु मेरूणाम्॥ ६०९॥

अर्थ—इषु जे धातुकी खंड पुष्करार्द्ध संबंधी च्यारि मेरु तिनकै पृथ्वी उपरि भ वन है। तहांतैं पांचसै योजन उपरि जाइ नंदन है। तहां पांचसै सहित पचावन हजा ५५५०० उपरि जाइ सौमनस वन है। बहुरि तहांतैं अट्ठाईस हजार योजन उपरि जा वन है। ऐसैं वननिका अंतराल इनका जोड़ दिएं चौरासी हजार योजन मात्र मेरु तिन तिनकी उचाईका प्रमाण जानना। बहुरि पांचवीं मेरुनिकै गाध कहिए पृथ्वीविषै जो ए योजन प्रमाण जानना॥ ६०९॥

आगैं तिन वननिका विस्तारकौं निरूपै है,—

बावीसं च सहस्सा पणसयछत्तीसपणसयं वासं।
पणवण्णं बत्तिसा सयवणगाणं वणाणि मेरुगाणि॥ ६१०॥

द्वाविंशतिः च सहस्राः पंचशतषट्त्रिंशत्पंचशतं व्यासं।
पंचपंचाशत् द्वात्रिंशत् शतवनकानां वनानि मेरुगानि॥ ६१०॥

अर्थ—[illegible] ॥ ६१०॥

आगे तिस वन चतुष्टयविषैं तिष्ठते जे चैत्यालय तिनकी संख्या कहैं हैं;—

एक्केक्कवणे पडिदिसमेक्केक्कजिणालया सुसोहंति।
पडिमेरुमुवरि तेसिं वण्णणमणुवण्णइस्सामि ॥ ६११ ॥

एकैकवने प्रतिदिशमेकैकजिनालयाः सुशोभंते।
प्रतिमेरुमुपरि तेषां वर्णनमनुवर्णयिष्यामि ॥ ६११ ॥

अर्थ—मेरु मेरु प्रति एक एक वनविषै एक एक दिशा प्रति एक एक चैत्यालय है। ते मेरु प्रति सोलह चैत्यालय सोभै हैं। तिन चैत्यालयनिका वर्णन उपरि पीछैं नंदीश्वर द्वीपका तिनका अवसरविषै वर्णन करैंगा ॥ ६११ ॥

आगैं सुदर्शन मेरुके दक्षिण उत्तर भद्रसाल वनका प्रमाण कहैं हैं;—

पढमवणइसीदंसो दक्खिणउत्तरगभद्दसालवणं।
विसदं पण्णासहियं खुल्लयमंदरणगेवि तहा ॥ ६१२ ॥

प्रथमवनाष्टाशीत्यंशः दक्षिणोत्तरगभद्रशालवनम्।
द्विशतं पंचाशदधिकं क्षुल्लकमंदरनगेपि तथा ॥ ६१२ ॥

अर्थ—सुदर्शन मेरुके पूर्व पश्चिम भद्रसाल वनका प्रमाण बाईस हजार योजन कह्या ताका अठ्यासीवां भाग प्रमाण दक्षिण उत्तर भद्रसाल वनका प्रमाण है। सो पचास सहित दोयसै योजन है। भावार्थ—सुदर्शन मेरुके चारयौं गजदंतनिके बीचि च्यारौं दिशानिविषै भद्रसाल वन है सो पूर्व पश्चिमविषै तो बाईस हजार योजन चौड़ा है। दक्षिण उत्तरविषै अढाईसै योजन चौड़ा है। बहुरि क्षुल्लक मेरु नग कहिए छोटे च्यारि मेरुगिरि तिनविषै भी तथा कहिए तैसैं ही जानैं कहिए हैं। पूर्व पश्चिम भद्रसालका विष्कंभ ताके अठ्यासीवें भाग प्रमाण ही दक्षिण उत्तर भद्रसालका विष्कंभ है ॥ ६१२ ॥

वेदी वणुभयपासे इगिदलचरणुदयवित्थरोगाढो।
हेमी सपंटघंटाजालसुतोरणग बहुदारा ॥ ६१३ ॥

वेदी वनोभयपार्श्वे एकदलचरणोदयविस्तारावगाढाः।
हैमी सपंटघंटाजालसुतोरणका बहुद्वारा ॥ ६१३ ॥

अर्थ—भद्रसालादि वननिके बाह्य अभ्यन्तर दोऊ पार्श्वनिविषै वेदी हैं। जैसें बागके आंगुरा बिना भीति हो है तैसैं जो होइ ताका नाम वेदी है। सो वेदी एक योजन ऊंची आध योजन चौड़ी पाव योजन जाकी नींव ऐसी है। बहुरि सुवर्णमई है। बहुरि महा मोटा अर छोटी घंटानिकर सोभित है ऐसे भले तोरणनि करि संयुक्त जे बहुत द्वार जाके पाईए हैं ऐसी वेदी है। आगैं मेरुका चित्रा पृथ्वीके तलविषै व्यास स्यावनैंविषै बहुरि नंदन सौमनस वनका व्यासादिक वा तिनके निकटि मेरुका व्यास उच्चादि स्यावनैंविषै हानिचय स्यावनेंकी गाथा सोय करि कहैं हैं। तहां प्रथम ऐसा त्रैराशिक जानना। मेरुका ऊपरि मुख व्यास हजार योजन है तिसकी मूलविषै भूमि व्यास दश हजार योजन तामैं घटाएं नव हजार रहे। सो निन्यानवै

हजार योजनकी उचाईविषै नव हजार योजन प्रमाण हानि चय होइ तौ एक [illegible] केता हानि चय होइ ऐसैं करि नव करि अपवर्तन किएं एक योजनका ग्यारह्वां प्रमाण आया। एक योजनकी उचाई भएं व्यासविषै इतनां घटै ॥ ६१३ ॥

बहुरि याकौं धरि और त्रैराशिकका विधान कहिए है;—

इगिजोयण एगारहभागो जदि वड्ढे पहायदि वा।
तलणंदणसोमणसे किमिदि चयं हाणिमाणिज्जो ॥ ६१४ ॥
एक योजनस्य एकादशभागः यदि वर्धते प्रहीयते वा।
तलनंदनसौमनसे किमिति चयं हानिरानेतव्यम् ॥ ६१४ ॥

अर्थ—एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका ग्यारह्वां भाग जो नीचैकी घटै वा उपरि अपेक्षा नीचै बधै तौ मेरुका तलकी उचाई हजार योजन पांचसै योजन समरुन्द्रतैं ऊपरि सौमनसकी उचाई साढा इकावन हजार योजन तीहविषै बधै वा घटै ऐसैं त्रैराशिक करि हानिचय स्यावनां। उपरि अपेक्षा घटनैका नाम हानि है अपेक्षा बधनैका नाम चय तातैं हानिचय ऐसा नाम कह्या सो तीनों जायगा प्रमाण एक योजन फलराशि एकका ग्यारह्वां भाग इच्छा राशी पांचसै हजार साढा इकावन हजार [illegible] व्यासनिविषै वृद्धि निषै योजन अर दश ग्यारह्वां भाग हो है। नंदनविषै हानि पैंतालीस पांच ग्यारह्वां भाग हो है। सौमनसविषै हानि च्यारि हजार छसै इक्यासी योजन नव भाग हो है ॥ ६१४ ॥

सगसगहाणिविहीणे भूवासे चयजुदे मुहव्वासे।
गिरिवणबाहिरब्भंतरतलवित्थारप्पमा होदि ॥ ६१५ ॥
स्वकस्वकहानिविहीने भूव्यासे चययुते मुखव्यासे।
गिरिवनबाह्याभ्यन्तरतलविस्तारप्रमा भवति ॥ ६१५ ॥

अर्थ—मेरु गिरिके तीह तीह कटनीका भू व्यास कहिए नीचला चौडाईका प्रमाण है विषै अपनी अपनी हानिका प्रमाणकौं घटाएं। बहुरि तीह तीह कटनीका मुख व्यास उपरिका चौडाईका प्रमाण तिह तीहविषैं अपना अपना चयका प्रमाण मिलाएं मेरुगिरिका [illegible] विस्तार हो है। वा वनका बाह्य अभ्यन्तर विस्तारका प्रमाण हो है। सोई कहिए है। दूसरे स्थान जो मेरुतलविषै हानिचय निषै योजन अर दश ग्यारह्वां भाग याकौं मेरुका पृथ्वीविषै व्यास दश हजार योजन तामैं मिलाएं दश हजार निषै योजन अर दश ग्यारह्वां भाग प्रमाण चित्रा पृथ्वी अंत जहां है तहां नीचे मूलविषै मेरुका तल व्यास है। यामैं निसही निषै योजनका दश ग्यारह्वां भाग प्रमाण हानि घटाएं दश हजार योजन प्रमाण इस सम पृथ्वीके निकटि मेरुका भू व्यास है। बहुरि एक योजनका ग्यारह्वां भाग घटनेविषै एक योजन उचाई होइ तो निषै योजन दश ग्यारह्वां भाग घटनेविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि समच्छेद करि अंश हानिकौं मिलाइ९९०÷११।११÷११ ग्यारहका अपवर्तन किएं मेरु तलतैं व्याप इस पृथ्वी पर्यंत मेरुकी उचाई एक हजार योजन प्रमा

[illegible] ११ भाग प्रमाण वन सहित [illegible] ११ भाग प्रमाण सौमनस वन सहित मेरु व्यासरूप सौमनसगिरिके बाह्य व्यास हो है। बहुरि सौमनसका हानिचय ४६८।१९+११ को आठ आठी मिलाइ ५१५००-११ एकका ग्यारहवां भाग घटनेविषै एक योजन उदय होय तौ साढा इकावन हजारका ग्यारहवां भाग घटनेविषै केता उदय होइ। ऐसे त्रैराशिक करि ग्यारहका अपवर्तन दिए सदृश वनैं, समधरणी ऊपरि सौमनस वन पर्यंत उचाईका प्रमाण साढा इकावन हजार योजन है ॥ बहुरि सौमनसका बाह्य ४२७२।८-११ विषै सौमनसका व्यास पांचसै योजन घटावो ८ ३ अंशनका ग्रहण आधे दुगा करि १००० घटाएं तीन हजार दोयसै बहत्तरि योजन-आठ ग्यारहवां भाग प्रमाण सौमनस वनके अभ्यंतर मेरुका व्यास हो है। इहां भी पूर्वोक्त

प्रकार व्याप्या हुवा समान चौड़ाईका प्रमाण धरैं सौमनसतैं लगाय ग्यारह हजार योजन मेरुकी उचाईका प्रमाण जाननां। ताकै उपरि बहुरि क्रमतैं घटता है। बहुरि एक योजनका ग्यारव्हां भाग घटै तौ समरुद्रतैं उपरि पचीस हजार योजनकी उचाईविषै कितनां घटै ऐसैं त्रैराशिक किएं दोय हजार दोयसै बहत्तरि योजन आठ ग्यारव्हां भाग प्रमाण पांडुक वनविषै हानिचय हो है। इनकौं सौ-२२७२।८÷११ मनसकै अभ्यन्तर मेरु व्यास ३२७२।८÷११ विषै घटाएं वनसहित मेरु व्यासरूप पांडुकवनका बाह्य व्यास एक हजार योजन प्रमाण हो है। बहुरि पांडुकवनका हानिचयका अंश ८÷११ अंशी २२७२ कौं मिलाइ २५००८÷११ पूर्वोक्त प्रकार एकका ग्यारव्हां भाग इत्यादि विधान करि त्रैराशिक किएं सौमनसके समरुद्रतैं ऊपरि पांडुकवन पर्यंत व्यास लिएं क्रमतैं घटता मेरुका उचाईका प्रमाण पचीस हजार योजन प्रमाण हो है ॥ ६१६ ॥

आगैं क्षुल्लक च्यारि मेरुनिका हानिचय ल्यावनेकौं सूत्र कहैं हैं;—

भूमादो दसभागो हायदि खुल्लेसु णंदणादुवरिं।
सयवग्गं समरुंदो सोमणसुवरिंपि एमेव ॥ ६१७ ॥

भूमितः दशमभागः हीयते क्षुल्लकेषु नंदनादुपरि।
शतवर्गः समरुंद्रःसौमनसोपरि अपि एवमेव ॥ ६१७ ॥

अर्थ—भूमितः कहिए नीचैतैं एक योजनका दशवां भाग प्रमाण विष्कंभ घटनैविषै एक योजन उचाई होइ तौ दोऊ पार्श्वनिका वन व्यास एक हजार योजन विष्कंभ घटनैविषै केती उचाई चाहिए। ऐसैं त्रैराशिक कीएं सौका वर्ग जो दश हजार तीहरूप उचाईका प्रमाण पाया। सो क्षुल्लक छोटे च्यारि मेरुनिविषै नंदन वनतैं उपरि समान चौड़ाईका प्रमाण लिएं दश हजार योजन उचाई है। ऐसैं ही सौमनस वनके उपरि भी समान विष्कंभ लिएं उचाई दश हजार योजन प्रमाण ही है। इन क्षुल्लक च्यारि मेरुनिविषै उपरि व्यास हजार योजन सो तौ मुख अर समभूमिविषै व्यास नव हजार च्यारिसै योजन सो भूमि तहा भूमिमैंसौं मुख घटाएं चौरासीसौ होइ। बहुरि क्षुल्लक मेरुनिकी चौरासी हजार योजन उचाईविषै चौरासीसै योजन विष्कंभ घटै तौ एक योजनकी उचाईविषै कितनां घटै। ऐसैं त्रैराशिक करि चौरासी करि अपवर्तन किएं एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग प्रमाण हानिचय हो है। याकौं धरि एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग घटै तौ एक हजार योजनकी उचाईविषै कितना घटै ऐसैं त्रैराशिक किएं सौ पाए सो क्षुल्लक मेरुनिका आगैं कहिए है। जो चौरासीसै योजन भू व्यास तामैं मिलाएं नव हजार पांचसै योजन प्रमाण चित्रा पृथ्वी तलविषै मेरुनिका नीचैं ही नीचैं विष्कंभ है। बहुरि यामैं सोई सौ योजन घटाएं चौरासीसै योजन समभूमिविषै व्यास हो है। बहुरि एक योजनका दशवां भाग घटनैविषै एक योजनकी उचाई होइ तौ सौ योजन घटनैविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि मेरुतलैं समभूमि पर्यंत उचाई हजार योजन प्रमाण आवै है। बहुरि एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग घटै तौ पांचसै योजनकी उचाईविषै कितनां घटै ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्तन किएं पचास योजन आए सो

ब्यासमैंसौ घटाएं नंदनवनके बाह्य मेरु व्यास तेरणंवसै पचास योजन हो है । बहुरि एकका भाग घटनेविषै एक योजन उचाई होइ तौ पचास घटनेविषै केती होइ ऐसें त्रैराशिक करि पचास योजन पाए सो भद्रसालनैं नंदनवन इतना ऊंचा है । बहुरि नंदनवनका दोऊ पार्श्वसंबंधी हजार योजन व्यास नंदनवनके बाह्य मेरु व्यासमैंसौं घटाएं तियासीससै पचास योजन प्रमाण [illegible] अभ्यन्तर मेरु व्यास है सो इहां भी एककी उचाईविषै एकका दशवां भाग घटै तौ [illegible] हजारकी उचाईविषै केता घटै । ऐसें त्रैराशिक किएं हजार योजन पाए सो ए हजार योजन एकै साथि घटे तातैं नंदनवनतैं लगाइ दश हजार योजन पर्यंत समान उंचाई साढा तियालीससै योजन प्रमाण व्यास है । बहुरि एकका उदयविषै एकका दशवां भाग घटै तौ साढा पैंतालीस हजार योजन उचाईविषै केता घटै ऐसें त्रैराशिक करि अपवर्तन किएं साढा पैंतालीस योजन आए सो इतने तिस सम विष्कंभ व्यास ८३५० मैंसौं घटाएं अडतीससै योजन सौमनस वनकै बाह्य व्यास हो है । बहुरि एकका दशवां भाग घटनेविषै एक योजन उंचाई होइ तौ साढा पैंतालीससै योजन घटनेविषै केती होइ । ऐसें त्रैराशिक किएं साढा पैंतालीस हजार पाए सो इतनां नंदनसंबंधी समभूतलतैं उपरि सौमनस ऊंचा है । बहुरि एककी उंचाईविषै एक दशवां भाग घटै तौ दश हजार योजनकी उचाईविषै केता घटै ऐसें त्रैराशिक कीएं हजार योजन होइ सोई सौमनसवनका दोऊ पार्श्वसंबंधी हजार योजन व्यास एकै साथि सौमनसकै बाह्य व्यास ३८०० मैंसौं घटै अठाईससै योजन प्रमाण सौमनसकै अभ्यन्तर मेरु व्यास हो है । सो इतने ही प्रमाण समान व्यास लिए उंचाईका प्रमाण दश हजार योजन पूर्वं स्यांये ही थे । बहुरि एककी उचाईविषै एकका दशवां भाग घटै तौ अठारह हजार योजन उंचाईविषै केता घटै ऐसें त्रैराशिक करि अपवर्तन किएं अठारहसै पाए सो सौमनसका अभ्यन्तर व्यासमैंसौं घटाएं हजार योजन प्रमाण मेरुका उपरि व्यास हो है । बहुरि एकका दशवां भाग घटनेविषै एककी उचाई होइ तौ अठारहसै घटनेविषै केती होइ । ऐसें त्रैराशिक करि अठारह हजार पाए सो इतनां सौमनस संबंधी समभूतलतैं उपरि पांडुकवन है । बहुरि सर्व मेरुनिका पांडुकवनके मध्य चूलिका है । ताकी उंचाई वा नींवै ऊपरि व्यास सो आगैं कहेंगे ॥ ६१७ ॥

आगैं मेरुनिका वर्ण विशेषकों निरूपै है;—

णाणारयणविचित्तो इगिसट्ठिसहस्समेसु पढमादो ।
तत्तो उवरिं मेरू सुवण्णवण्णाण्णिदो होदि ॥ ६१८ ॥

नानारत्नविचित्र एकषष्टिसहस्रकेषु प्रथमत ।
तत उपरि मेरु सुवर्णवर्णान्वित भवति ॥ ६१८ ॥

अर्थ—मेरु प्रथम नींवतैं लगाइ इकसठि हजार योजन उंचाई पर्यंत तौ नानाप्रकार अनेक वर्ण रत्ननि करि विचित्र है । बहुरि तातैं उपरि मेरु केवल सुवर्ण सरिसा वर्ण करि संयुक्त है ॥ ६१८ ॥

आगैं नंदनादि वननिविषैं तिष्ठते जो भवन तिनके नामादिक गाथा तेरहकरि कहै है ;

माणीचारणगंधव्वचित्तणामाणि वट्टभवणाणि ।
णंदणचउदिसमुदओ पण्णासं तीस वित्थारो ॥ ६१९ ॥
मानीचारणगंधर्वचित्रनामानि वृत्तभवनानि ।
नंदनचतुर्दिक्षु उदयः पंचाशत् त्रिंशत् विस्तारः ॥ ६१९ ॥

अर्थ—मानी १ चारण १ गंधर्व १ चित्र १ ए हैं नाम जिनके ऐसे गोल मंदिर नंदन वनकी पूर्वादि चारि दिशानिविषै हैं। तिनकी उंचाई पचास योजन चौड़ाई तीस योजन प्रमाण है ॥

सोमणसदुगे वज्जं वज्जादिप्पह सुवण्ण तप्पहयं ।
लोहिदअंजणहारिद्दपांडुरा दलिददलमाणा ॥ ६२० ॥
सौमनसद्विके वज्रं वज्रादिप्रभं सुवर्णं तत्प्रभं ।
लोहितांजनहारिद्रपांडुरा दलितदलमानाः ॥ ६२० ॥

अर्थ—सौमनस पांडुक इन दोऊ वननिविषै भी पूर्वादि दिशानिविषै चारि चारि गोल भवन हैं। ते कौन? वज्र १ वज्रप्रभ १ सुवर्ण १ सुवर्णप्रभ १ ए सौमनसविषै मंदिरनिके नाम हैं। लोहित १ अंजन १ हरिद्र १ पांडुर १ ए पांडुकविषै मंदिरनिके नाम हैं। तहां नंदनविषै मंदिर निका जो उदय चौड़ाईका प्रमाण कह्या तातैं सौमनसविषै आधा अर तीहतैं भी पांडुकविषै आधा प्रमाण जानना ॥ ६२० ॥

आगैं तिन भवनिके स्वामी अर तिनकी स्त्री तिनकौं कहैं हैं,—

सक्कवणवदी सोमो यमवरुणकुबेरलोयपालपरा ।
पुव्वादी तेसिं पुह गिरिकण्णा साद्धकोटिसमं ॥ ६२१ ॥
शक्रवनपतय सोमः यमवरुणकुबेराः लोकपालपराः ।
पूर्वादिषु तेषां पृथक् गिरिकन्यकाः सार्धकोटिसमम् ॥ ६२१ ॥

अर्थ—तिन भवनिके अधिपति स्वामी सोम १ यम १ वरुण १ कुबेर १ नाम धारै लोकपाल पूर्वादि दिशानिविषै तिष्ठै हैं। ये मंदिर लोकपालनिकेऐ तिन एक एक लोकपालके साढ़ा तीन कोटि तिष्ठै कन्या कहिये अप्सरी देवांगना जानना ॥ ६२१ ॥

आगैं तिनका वस्तु आदि कहैं हैं,—

सोमदु वरुणदुगाउ सदरुदु पउमणं च देवुणं ।
ते रुक्खिदरुंदवणसिरदेवच्छीकिया कमसो ॥ ६२२ ॥
सौमद्वये वरुणद्विकयुतं शतरुद्वं पद्मनं च देवोनम् ।
ते रुक्षितरुंदवनश्रीदेवीकृता क्रमशः ॥ ६२२ ॥

अर्थ—तिन एक एक लोकपालका वस्तु अढ़ाईसै देव घाटि प्रमाण है। बहुरि वरुण दोय मिलैं पांचसै वस्तु तिनि तीन प्रमाण है। बहुरि ते आधाधिक करते सातसै पचास वस्तु तिनि तीन प्रमाण है ॥ ६२२ ॥

आगैं तिनके वनखंडनिकी संज्ञा कहै हैं,—

ते च सयंप्रभारिष्टचटप्रभवल्गुप्रभा विमानेशाः ।
कल्पेषु लोकपाला प्रभवः बहुशतविमानानाम् ॥ ६२३ ॥

अर्थ—तो सौधर्मिक लोकपाल स्वर्गविषै स्वयंप्रभ १ अरिष्ट १ जटप्रभ १ वल्गुप्रभ १ विमाननिके क्रमतैं ईस-स्वामी हैं । भावार्थ—लोकपालनिका स्वर्गविषै वसनेके विमान हैं । अर इहां मेर उपरि भी तिनके भवन पाइए हैं । बहुरि ते लोकपाल बहुत सैकड़ा विमाननिके प्रभु हैं । इह लाख छपासठि हजार सहस्र छपासठि विमाननिके स्वर्गविषै अधिपति हैं ॥ ६२३ ॥

आगै नंदनवनविषै तिष्ठता व्यंतरदेवकौं परिवारसहित कहैं हैं;—

बलभद्दणामकूडे णंदणगे मेरुपव्वदीसाणे ।
उदयमहियसयदलगो तण्णामो वेंतरो वसई ॥ ६२४ ॥
बलभद्रनामकूटे नंदनगे मेरुपर्वतेशान्याम् ।
उदयमहीकशतदलकः तन्नामा व्यंतरो वसति ॥ ६२४ ॥

अर्थ—मेरु पर्वतकी ईशान विदिशाविषै नंदनविषै पाइए ऐसा सौ योजन नीचै चौड़ा ताका आधा पचास योजन उपरि चौड़ा जो बलभद्र नामा कूट है । ताह उपरि बलभद्र नामा व्यन्तर देव बसै है ॥ ६२४ ॥

आगैं नंदनवनविषै तिष्ठते जो भवन तिनके दोऊ पार्श्वनिविषै तिष्ठते जे कूटादिक तिनकौं गाथा तीन करि कहैं हैं;—

णंदण मंदर णिसहा हिमवं रजदो य रुजयसायरया ।
वज्जो कूडा कमसो णंदणवसईण पासदुगे ॥ ६२५ ॥
नंदनो मंदरः निषधः हिमवान् रजतश्च रुचकसागरकौ ।
वज्रः कूटाः क्रमशः नंदनवसतीनां पार्श्वद्विके ॥ ६२५ ॥

अर्थ—नंदन १ मंदर १ अर निषध १ हिमवन अर रजत १ रुचक १ अर सागर १ वज्र ए आठ कूट क्रमतैं नंदनवनविषै तिष्ठते जु वसती कहिए पूर्वोक्त च्यारि भवन तिनके दोऊ पार्श्व-१ विषै पाईए है ॥ ६२५ ॥

हेममया तुंगधरा पंचसयं तद्दलं मुहस्स पमा ।
सिहिरिगहे दिक्कण्णा वसंति तासिं च णामेहिं ॥ ६२६ ॥
हेममयाः तुंगधरा पंचशतं तद्दलं मुखस्य प्रमा ।
शिखरगृहे दिक्कन्याः वसंति तासां च नामानीमानि ॥ ६२६ ॥

अर्थ—ते कूट सुवर्ण मई हैं । बहुरि तिनकी उचाई पांचसै योजन है । नीवै भू व्यास पांचसै योजन है । ताका आधा अढ़ाईसै योजन उपरि मुख व्यास है । तिन कूटनिके शिखर मंदरनिविषै दिक्कुमारी बसै हैं ॥ ६२६ ॥

तिनके ए नाम आगें कहिए हैं;—

मेघंकर मेघवदी सुमेह मेघादिमालिणी तत्तो ।
तोयंधरा विचित्ता पुप्फादिममालिणिंदिदया ॥ ६२७ ॥

मेघंकरा मेघवती १ सुमेघा मेघादिमालिनी ततः ।
तोयंधरा विचित्रा पुष्पादिममाला अनिंदिता ॥ ६२७ ॥

अर्थ—मेघंकरा १ मेघवती १ सुमेघा १ मेघमालिनी १ तोयंधरा १ विचित्रा १ पुष्पमाला १ अनंदिता ए नाम हैं ॥ ६२७ ॥

आगें नंदनविषे जे वावड़ी हैं तिनका स्वरूप गाथा तीन करि कहैं हैं;—

अग्गिदिसादो चउ चउ उप्पलगुम्मा य णलिणि उप्पलिया ।
वावीओ उप्पलुज्जल भिंगा छट्ठी दु भिंगणिभा ॥ ६२८ ॥

अग्निदिशः चतस्रः चतस्रः उत्पलगुल्मा च नलिनी उत्पलिका ।
वाप्यः उत्पलोज्ज्वला भृंगा षष्ठी तु भृंगनिभा ॥ ६२८ ॥

अर्थ—अग्निदिशातैं लगाय च्यारौं विदेशानिविषै च्यारि च्यारि वावड़ी हैं । तिनके नाम क्रमतैं कहिए हैं । उत्पल गुल्मा १ नलिनी १ उत्पला १ उत्पलोद्भकला १ बहुरि भृंगा १ छठी भृंगनिभा १ ॥ ६२८ ॥

कज्जल कज्जलपह सिरिभूदा सिरिकंद सिरिजुदा महिदा ।
सिरिणिलय णलिणि णलिणादिमगुम्मिय कुमुद कुमुदपहा ॥ ६२९ ॥

कज्जला कज्जलप्रभा श्रीभूता श्रीकांता श्रीयुता महिता ।
श्रीनिलया नलिनी नलिनादिमगुल्मी कुमुदा कुमुदप्रभा ॥ ६२९ ॥

अर्थ—कज्जला १ कज्जल प्रभा १ बहुरि श्रीभूता १ श्रीकांता १ श्रीमहिता १ श्रीनिलया १ बहुरि नलिनी १ नलिनगुल्मा १ कुमुदा १ कुमुदप्रभा १ ए वावड़ीके नाम हैं ॥ ६२९ ॥

मणितोरणरयणुब्भवसोवाणा हंसमोरजंतजुदा ।
पण्णदलदीहवासा दसगाहा सोलवावीओ ॥ ६३० ॥

मणितोरणरत्नोद्भवसोपानाः हंसमयूरयंत्रयुताः ।
पंचाशद्दलदीर्घव्यासाः दशगाधाः षोडशवाप्यः ॥ ६३० ॥

अर्थ—ते सोलह वावड़ी मणिमई तोरण द्वार अर रत्नमई सिवाणनिकरि संयुक्त हैं । बहुरि हंस मोर आदिनिके यंत्र करि संयुक्त हैं । बहुरि ते पचास योजन लंबी ताकी आधी पचीस योजन चौड़ी दश योजन ऊंडी वावड़ी हैं ॥ ६३० ॥

आगें तिनके मध्य प्रासाद हैं तिनका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

दक्खिणउत्तरवावीमज्झे सोहम्मजुगलपासादा ।
पणपणदलचरणुच्छयवासा दलगाढचउरस्सा ॥ ६३१ ॥

दक्षिणोत्तरवापीमध्ये सौधर्मयुगप्रासादाः।
पंचघनदलचरणोच्छ्रयव्यासाः दलार्द्धचतुरस्राः ६३१॥

अर्थ—मेरुकी अपेक्षा दक्षिण उत्तर वापडीनिके मध्य सौधर्म और ईशान इंद्रके प्रासाद मंदिर है। तहां अग्नि नैऋति दिशानिविषै आठ वापडी है तिनिविषै सौधर्मके मंदिर हैं। अर वायु ऐसानवि दिशानिविषै आठ वापडी हैं तिनिविषै ईसानके मंदिर हैं। ते प्रासाद पांचसै घनका आधा साढा बासठि योजन तौ ऊंचे हैं। अर ताहींका चौथा भाग सवा इकतीस योजन चौडे हैं। अर आध योजन जिनकी नींव है। ऐसे चौकोर मंदिर हैं॥६३१॥

सोधिदठाणासिदपरिवारोरिंदो ठिदो सपासादे।
सव्वमिणं कहियव्वं सोमणसवणोवि सविसेसं॥ ६३२॥
स्वोचितस्थानसितपरिवारोरेंद्रः स्थितः स्वप्रसादे।
सर्वमिदं कथितव्यं सौमनसवनेपि सविशेषं॥ ६३२॥

अर्थ—स्वर्गविषै सुधर्मा नाम सभाविषै जैसें तिष्ठै हैं। तैसें अपना अपना योग्य आस्थानविषै तिष्ठता अपना परिवारसहित अपनी प्रासादविषै इहां इंद्र आवै है तब तिष्ठै है। बहुरि जो मेरुनिके पार्श्वनिविषै कूटादिक व अग्न्यादि दिशानिविषै बापडी वा तिनके मध्य प्रासाद जैसें नंदनवनविषै कहे तैसें ही सर्व विशेष सहित सौमनस वनविषै भी जानने॥ ६३२॥

अब याके अनंतरि मेरुका शिखर ऊपरि तिहनी जे शिला तिनका नाम स्थान वर्णे है;—

पांडुकपांडुकंबलरक्ता तह रत्तकंबलक्खा सिला।
ईसाणादो कंचणरुप्पयतवणीयरुहिरणिहा॥ ६३३॥
पांडुकपांडुकंबलरक्ता तथा रक्तकंबलाख्याः शिलाः।
ईशानात् कांचनरूप्यतपनीयरुधिरनिभाः॥ ६३३॥

अर्थ—ईशानतैं लगाय च्यारयो विदिशानिविषै क्रमतैं कांचन कहिए सोनां सरिस रूपो कहिए तायो सोनों सरिस तपनीय कहिए लोही सरिस वर्ण धरै ऐसी पांडुक १ पांडुकंबला १ रक्ता १ रक्तकंबला १ हैं नाम जिनके ऐसी च्यारि शिला मेरुके मस्तकि पांडुक वन है तहां पाइए हैं॥ ६३३॥

आगें ते शिला कौन संबंधी हैं कैसे जिनकी स्थिति है सो कहे है;—

भरहरवरविदेहेरावदपुव्वविदेहजिणणिवद्धाओ।
पुव्वपरदक्खिणुत्तरदीहा अद्धिरद्धिरभूमिट्ठा॥॥ ६३४॥
भरतादरविदेहैरावतपूर्वविदेहजिननिबद्धाः।
पूर्वापरदक्षिणोत्तरदीर्घा अर्धिरार्धिरभूमिस्थाः॥ ६३४॥

अर्थ—ते पांडुकादि शिला क्रमतैं भरतक्षेत्र पश्चिम विदेह ऐरावत क्षेत्र पूर्व विदेहनिविषै जे तीर्थंकर उपजै हैं तिन सबंधी हैं। तहां तिनका जन्माभिषेक हो है। बहुरि ते शिला क्रमतैं पूर्व

पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानि प्रतिबद्धी है। बहुरि अर्धचंद्र सिला भूमि सुभा संयुक्त है। विशेषणका अर्थ मेरे समझनेमें न आया सो नीकी लिख्या है ॥ ६३४ ॥

आगें इहांके तिन सिलापट्टनिका आकार पहला भेदा लिखी संख्या कहै है;—

अद्धिंदुणिहा सव्वे सयपण्णासट्ठदीहवासुदया।
आसणणिवं तदुवरि जिणसोहम्मदुगपडिबद्धं ॥ ६३५ ॥
अर्धेंदुनिभाः सर्वाः शतपंचाशदष्टदीर्घव्यासोदयाः।
आसनत्रयं तदुपरि जिनसौधर्मद्वयप्रतिबद्धं ॥ ६३५ ॥

अर्थ—ते सर्व सिला अर्द्ध चन्द्रमाके आकार हैं। बहुरि सौ योजन लंबी है। पचास योजन चौड़ी हैं। आठ योजन मोटी हैं। तिन सिलानिके उपरि तीर्थंकर सौधर्म इन्द्र संबंधी तीन सिंहासन हैं ॥ ६३५ ॥

आगें तिन उपरि तीन सिंहासननिके स्वामी इत्यादिक विशेष कहै हैं;—

मज्झे सिंहासणयं जिणस्स दक्खिणगयं तु सोहम्मे।
उत्तरसाणिंदे भद्दासणमिह तयं वट्टं ॥ ६३६ ॥
मध्ये सिंहासनं जिनस्य दक्षिणगतं तु सौधर्मे।
उत्तरेशानेंद्रे भद्रासनमिह त्रयं वृत्तम् ॥ ६३६ ॥

अर्थ—तिन तीन सिंहासननिविषै मध्य पीठि तौ जिनेन्द्र देवका सिंहासन है। ताकी दक्षिण दिशाकौं प्रति सौधर्म इंद्रका भद्रासन है। उत्तर दिशाकौं प्रति ईशान इंद्रका भद्रासन है। इहां ए तीन आसन हैं ते गोल हैं ॥ ६३६ ॥

आगें तिन आसननिका उदयादिक अर मेरुकी चूलिकाका स्वरूप कहै हैं;—

उदयं भूमुहवासं धणु पणपणसय तदद्धपुव्वमुहा।
वेलुरिय चूलियस्स य जोयण चत्तं तु बार चउ ॥ ६३७ ॥
उदयं भूमुखव्यासं धनुः पंचपंचशतं तदर्धपूर्वमुखानि।
वैडूर्यचूलिकायाश्च योजनं चत्वारिंशत् तु द्वादश चत्वारि ॥ ६३७ ॥

अर्थ—तिन आसननिकी उचाई पांचसै धनुष अर नीचैं चौड़ाई पांचसै धनुष उपरि चौड़ाई अढाईसै धनुष प्रमाण है। बहुरि ते आसन पूर्वदिशाकौं सनमुख हैं। बहुरि पांडुकवनके मध्य मेरुकी वैडूर्य रत्नमई चूलिका है ताकी उचाई चालीस योजन नीचैं चौड़ाई बारा योजन उपरि चौड़ाई च्यारि योजन प्रमाण है ॥ ६३७ ॥

आगें कहे जु ए सर्व तिनका किछू विशेष कहैं हैं;—

पव्वदवावीकूडा सव्वाओ पंडुगादिय सिलाओ
वणवेदितोरणेहिं णाणामणिणिम्मिएहिं जुदा ॥ ६३८ ॥
पर्वतवापीकूटाः सर्वे पांडुकादिकाः शिलाः।
वनवेदीतोरणैः नानामणिनिर्मितैः युताः ॥ ६३८ ॥

अर्थ—पर्वत पावडी कूट पांडुक आदि शिला ए सर्व ही नाना प्रकार मणि कर निर्मापित तु वन अर वेदी अर तोरण तिन करि संयुक्त जाननें। पर्वतादिकके चौगिरद वन हैं तिनकै वेदी। तीह वेदीपै तोरणसहित द्वार पाईए हैं ॥ ६३८ ॥

आगै जंबूवृक्षका स्थलादिक परिवारसहित ग्यारह गाथानिकरि कहै हैं;—

णीलमयीवे सीदापुव्वतटे मंदरायचलीसाणे।
उत्तरकुरुम्हि जंबूथली सपंचसयतलवासा ॥ ६३९ ॥

नीलसमीपे सीतापूर्वतटे मंदरार्चलैशान्यां।
उत्तरकुरौ जंबूस्थली सपंचशततलव्यासा ॥ ६३९ ॥

अर्थ—नील नामा कुलाचल पर्वतके समीपि दक्षिण सन्मुख जाती सीतानदीका पूर्व दिशासंबंधी मेरु पर्वतने ईशान नामा विदिशा तहां उत्तरकुर नामा भोगभूमिका क्षेत्रविषै जंबूनामा वृक्षकी थली है। जैसें वृक्षके चांहटा हवां हो है तैसें तहां स्थली जाननी सो वह स्थली पांचसै योजन प्रमाण है। तत्व्यास कहिए नीचें चौड़ाई जाकी ऐसी है ॥ ६३९ ॥

अंते दलवाहल्ला मज्झे अट्ठुदय वट्ट हेममया
मज्झे थलिस्स पीढीमुदयतियं अट्ठचारचऊ ॥ ६४० ॥

अंते दलबाहल्या मध्ये अष्टोदया वृत्ता हेममया।
मध्ये स्थल्याः पीठमुदयत्रयं अष्टद्वादशचतुः ॥ ६४० ॥

अर्थ—बहुरि सो स्थली अंतविषै देहडै तो आध योजन प्रमाण मोटी है। बहुरि मध्यविषै वि आठ योजन ऊंची है गोल आकार लिए है अर सुवर्णमई है। बहुरि तीह स्थलीके मध्य बीचि आठ योजन ऊंचा बारह योजन नीचे चौड़ा च्यारि योजन उपरि चौड़ा ऐसा पीठ है पीठ नाम पीढका है ॥ ६४० ॥

तत्थलिउवरिमभागे बाहिं बाहिं पवेदिऊण ठिया।
कंचणवलयसमाणा बारंबुजवेदिया णेया ॥ ६४१ ॥

तत्स्थल्युपरिमभागे बहिर्बहिः प्रवेष्ट्य स्थिताः।
कांचनवलयसमानाः द्वादशांबुजवेदिकाः ज्ञेयाः ॥ ६४१ ॥

अर्थ—तीह स्थलीका उपरला भागविषै बाह्य वेदि करि सुवर्णका वलय समान आध योजन ऊंची ताके आठवें भाग चौड़ी नाना रत्ननिकरि व्याप्त ऐसी बारह अंबुज वेदिका जाननी। भावार्थ—स्थलीके उपरि प्रथम वेदीकों वेष्टि दूसरी वेदी है। दूसरीकों वेष्टि तीसरी है। ऐसें बारह वेदी जाननी। ते सर्व वेदी सुवर्णमई रत्नजडित हैं आध योजन ऊंची हैं। एक योजनके सोलहां भाग प्रमाण चौड़ी हैं ॥ ६४१ ॥

चउगोउरवं वेदीबाहिरदो पडमावेदियगे गुण्णं
तद्दिए सुरुत्तमाणं अट्ठदिसे अट्ठसयरुक्खा ॥ ६४२ ॥

सेनामहत्तराणा द्वादसे पश्चिमायां सर्तव ।
मुख्ययुताः परिवाराः पनेम्यः पेचाभ्यधिकाः ॥ ६४६ ॥

अर्थ—बाह्य अंतरालदिसै पश्चिम दिशाविषै सात प्रकार सेनाका जु महत्तर प्रधान तिनके सात जंबूवृक्ष है । ऐसै एक मुख्य वृक्ष संयुक्त सर्व परिवारके वृक्ष पद्म नामा द्रहविषै जो श्री-देवीके कमलनिका प्रमाण कह्या था तातैं पाच अधिक जाननें । इहां चौथा अंतरालविषै च्यारि देवांगनानिके वृक्ष अर एक मुख्य वृक्ष ऐसैं पाच अधिक जाननें । १०८।४।१६०००।४०००।३२०००। ४००००।४८०००।७।१ ए सर्व जंबूवृक्ष एक लाख चालीस हजार एकसौ बीस भए ॥ ६४६ ॥

दलगाढवासमरगय जोयणदुगतुंग सुत्थिरखखंधो
पीढिय उवरिं जंबू वज्जदलदवासदीह चउसाहा ॥ ६४७ ॥

दलगाढव्यासमरकत योजनद्विकतुंग सुस्थिरस्कंध. ।
पीठादुपरि जंबू वज्रदलाढ्यासदीर्घ चतु शाख ॥ ६४७ ॥

अर्थ—आध योजन है गाध कहिए पृथ्वीविषै जड़ जाकी बहुरि मरकत मणिमई बहुरि पीठतैं उपरि दोय योजन ऊंचा बहुरि भले प्रकार स्थिर है पेड़ जाका ऐसा मुख्य जंबूवृक्ष है । बहुरि स्कंध जो पेड़ ताकै उपरि वज्रमई आध योजन चौड़ी आठ योजन लंबी च्यारि शाखा कहिए डाहली हैं ॥ ६४७ ॥

णाणारयणुवसाहा पवालकुसुमणा मिदिंगसरिसफला ।
पुढविमया दसतुंगा मज्झम्मे छद्दुव्वासा ॥ ६४८ ॥

नानारत्नोपशाखा. प्रवालकुसुमनाः मृदंगसदृशफलः ।
पृथ्वीमय: दशतुंग मध्येमे षड्द्वयर्व्यास. ॥ ६४८ ॥

अर्थ—बहुरि सो जंबूवृक्ष नाना प्रकार रत्नमई उपशाखा कहिए छोटी डाहली से है जाके पाइए ऐसा है । बहुरि प्रवाल कहिए मूंगा लोह समान वर्णन धरै है सुमन कहिए पुष्प जाके ऐसा है । बहुरि मृदंग समान है फल जाके ऐसा है । बहुरि पृथ्वीकायमई है वनस्पतीरूप नाहीं है । जामुणिके वृक्षकाया आकार है । तातैं जंबूवृक्ष नाम है । बहुरि दश योजन ऊंचा है मध्यविषै छह योजन चौड़ा है । ऊपरि च्यारि योजन चौड़ा है । इस जंबूवृक्षकी वेदीका अर स्थानैं पीठ वृक्ष। ऐसैं अवस्थान जानना ॥ ६४८ ॥

उत्तरकुलगिरिसाहे जिणगेहो मेरुसारतिदयरिद ।
आदरअणादराणं जक्खकुलुत्थाणमावासा ॥ ६४९ ॥

उत्तरकुरुदिशाभागे जिनगेह मेरुसाल्लत्रयेः ।
आदरानादरयो यक्षकुलोत्थानमावासा ॥ ६४९ ॥

अर्थ—[illegible] उपरि सो श्री जिनमंदिर है । बहुरि [illegible] उपरि [illegible] आदर अर अनादर नाम [illegible] देव तिनका आवास है । ६४९ ॥

आगैं परिवार वृक्षनिका प्रमाण अर तिनका स्वामित्वकौं कहैं हैं;—

जंबूतरुदलमाणा जंबूरुक्खस्स कहिदपरिवारा।
आदरअणादराणं परिवारावासभूदा ते ॥ ६५० ॥

जंबूतरुदलमाना जंबूवृक्षस्य कथितपरिवाराः।
आदरानादरयोः परिवारावासभूतास्ते ॥ ६५० ॥

अर्थ—मुख्य जंबूद्वीपका जो उचाई आदि प्रमाण कह्या तीहसौं परिवाररूप अन्य जंबूवृक्षनिका आधा प्रमाण है बहुरि ते आदर अनादरनिका परिवारके आवास रूप हैं। **भावार्थ**—परिवाररूप जंबूवृक्षनिकी शाखानिकैं उपरि आदर अनादर देवनिका जो परिवार तिनके मंदिर पाईए हैं ॥ ६५० ॥

आगैं शाल्मली वृक्षका स्वरूपकौं गाथा दोय करि कहैं हैं;—

सीतोदावरतीरे णिसहसमीवे सुरादिणेरादिए।
देवकुरुम्हि मणोहररुप्पथले सामली सपरिवारो ॥ ६५१ ॥

सीतोदापरतीरे निषधसमीपे सुरादिनैर्ऋत्यां।
देवकुरौ मनोहररूप्यस्थले शाल्मली सपरिवारः ॥ ६५१ ॥

अर्थ—उत्तर सनमुख जाती सीतोदा नदीका पश्चिम दिशा संबंधी तटविषै निषध कुलाचलके समीप मेरुपर्वततैं नैर्ऋत दिशाविषै देवकुरु भोगभूमिका जो क्षेत्र तहां मनोहर रूपामई शाल्मली वृक्षनिकी स्थली है। तहां अपनां परिवार वृक्षनिकरि संयुक्त शाल्मली वृक्ष हैं ॥ ६५१ ॥

जंबुसमवण्णणो सो दक्खिणसाहम्हि जिणगिहं सेसे।
दिससाहतिए गरुडवइवेणूवेणादिधारिगिहं ॥ ६५२ ॥

जंबूसमवर्णनः स दक्षिणशाखायां जिनगृहं शेषे।
दिक्शाखात्रये गरुडपतिवेणुवेण्वादिधारिगृहम् ॥ ६५२ ॥

अर्थ—यहु शाल्मली वृक्ष जंबूवृक्ष समान है वर्णन जाका ऐसा है सो वर्णन जंबूवृक्षका किया सोई सर्व याका जानना। विशेष इतना याकी दक्षिण शाखा उपरि जिनमंदिर है। अवशेष दिशा संबंधी तीन शाखानिकैं उपरि गरुड कुमारनिके स्वामी ऐसे वेणु अर वेणुधारीदेव तिनके मंदिर हैं। परिवार वृक्षनिकी शाखानिके उपरि इनहीके परिवाररूप देवादिकनिके मंदिर जानने ॥६५२॥

आगैं भोगभूमिकर्मभूमिका विभाग कहैं हैं;—

कुरुओ हरिरम्मगभू हेमवदेरण्णवदखिदी कमसो।
भोगधरा वरमज्झिमवराय कम्मावणी सेसा ॥ ६५३ ॥

कुरू हरिरम्यकभुवौ हैमवतैरण्यवतक्षितौ क्रमशः।
भोगधराः वरमध्यमावराः कर्मावनयः शेषाः ॥ ६५३ ॥

अर्थ—देवकुरु अर उत्तर कुरुक्षेत्रविषै दोय उत्तम भोगभूमि हैं। बहुरि हरि अर रम्यक क्षेत्रविषै दोय मध्यम भोगभूमि हैं। बहुरि हैमवत अर हैरण्यवत क्षेत्रविषै दोय जघन्य भोग भूमि हैं। अवशेष सर्व भरत ऐरावत विदेह क्षेत्रविषै कर्मभूमि है ॥ ६५३ ॥

आगे सीता सीतोदा नदी दोऊ कहे है;—

दीहत्तिसहाइ गया सहस्समुभए तटे वरणवेदं ।
दुगदुगमेत्ता पुव्वो विणो अवरो विचित्तक्खो ॥ ६५४ ॥
दीर्घत्रिंशत्यां गत्वा सहस्रमुभये तटे वरनवो. ।
द्विकद्विकमेतौ पूर्वो विना अपरो विचित्राख्यः ॥ ६५४ ॥

अर्थ—दीर्घ तिरेसठ कुलाचलनी मेरुथी तरफ आगे हजार योजन जाइ उत्तर सीता सीतोदा नदीविषै पूर्व पश्चिम दोऊ तटनिविषै दोय दोय द्रह है । तिनविषै सीताका पूर्वतटविषै प्रथम विजय नामा पर्वत है । पश्चिम तटविषै प्रथम विचित्र नामा पर्वत है ॥ ६५४ ॥

अदसो मेरुं वहा पंचसपंचसरहिया सदुदयपरा ।
वदणं सहस्सदसं गिरिणामसुरा वसंति गिरिकूडे ॥ ६५५ ॥
अमकं मेरुं इमा पंचशतांतरिताः सदुदयाः ।
वदनं सहस्रदशं गिरिनामसुरा वसंति गिरिकूटे ॥ ६५५ ॥

अर्थ—सीतोदाका पूर्व तटविषै यमक अर पश्चिम तटविषै मेघनामा पर्वत है । ऐसैं ए बीसौ पर्वतनिकी दीर्घता है । बहुरि विजयविचित्रके दीघै अर यमक मेघकै दीघै पांचसै योजनका अंतराल है तीहि अंतरालविषै सीता वा सीतोदा नदी जाननी । बहुरि तिन बीसौं पर्वतनिकी उंचाई हजार योजन नीचै चौडाई हजार योजन उपरि चौडाई पांचसै योजन प्रमाण है । बहुरि तिन पर्वत मूलनिकै उपरि अपना अपना जो पर्वतका नाम तिस ही नाम धारक देव बसै हैं ६५५

आगे मेरुकी पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानिविषै स्थित जे द्रह तिनका प्रमाण बहुरि एक एक द्रहके दोऊ तटनिविषै तिसते ऐसे कांचन पर्वत तिनकी संख्या साथै तिनका उत्सेध सहित गाथा चारि करि कहै है;—

गंतिय तटो पंचसयं पंचसरा पंचसयविदंतरिया ।
कुरुभद्दसालमज्झे अणुणदिदीहा हु पउमदहसरिसा ॥ ६५६ ॥
गत्वा तत पंचशतं पंच सरांसि पंचशतविदांतरिताः ।
कुरुभद्रशालमध्ये अनुनदिदीर्घाणि हि पद्मद्रहसदृशानि ॥ ६५६ ॥

अर्थ—यमक गिरि जहां पाईए तीहतैं पांचसै योजन आइ सीता अर सीतोदा नदीविषै देवकुरु उत्तरकुरु भोगभूमिके दोय क्षेत्र अर पूर्व पश्चिम भद्रशालके दोय क्षेत्र तिनविषै पांच पांच द्रह है । ते द्रह पांचसै पांचसै योजन प्रमाण परस्पर अंतराल धरै है । बहुरि ते द्रह नदीके अनुसारि पूर्वापर दीर्घ है । व्यास कमलादिक करि पद्मद्रह समान है । भावार्थ—यमक गिरि जहां नदीनिकै तटि पाईए ते तीन क्षेत्रविषै पांचसै योजन परै मेरुकी तरफ सीता वा सीतोदा नदीविषै एक एक द्रह है । तीन द्रहतैं पांचसै योजन परै जाय और एक द्रह है । ऐसे पांच पांच द्रह देवकुरु अर उत्तर क्षेत्रविषै जाननें । बहुरि तिनही सीता सीतोदा नदीविषै पांच पांच द्रह पूर्व पश्चिम भद्रसालविषै जाननें । ऐसैं ए बीस द्रह

सीता सीतोदा नदीकै बीचि बीचि जाननें। तहां जितनां नदीका चौड़ाईका प्रमाण तितना ही द्रहनिका चौड़ाईका प्रमाण जाननां। बहुरि पद्म द्रह समान हजार योजन तिन द्रहनिकी लंबाईका प्रमाण जाननां। सो इन द्रहनिकी चौड़ाई तौ नदीनिकी चौड़ाईविषै अर लंबाई नदीनिका प्रवाहविषै जाननी। बहुरि जैसें पद्मद्रहविषै कमलादिक कहे है तैसें इन द्रहनिविषै भी कमलादिक जाननें ॥ ६५६ ॥

णीलुत्तरकुरुचंदा एरावदमल्लवंत णिसहा य।
देवकुरुसूरसुलसाविज्जू सीदुदहणामा ॥ ६५७ ॥
नीलोत्तरकुरुचंद्रा ऐरावतमाल्यवंतौ निषधश्च।
देवकुरुसूरसुलसविद्युतः सीतादिकहदनामानि ॥ ६५७ ॥

अर्थ—नील १ उत्तर कुरु १ चन्द्र १ ऐरावत १ माल्यवत १ ए पंच बहुरि निषध १ देवकुरु १ सूर १ सुलस १ विद्युत १ ए पंच सीता अर सीतोदा नदीनिविषै जे द्रह हैं तिनके नाम जाननें ॥ ६५७ ॥

णइणिग्गमदारजुदा ते तप्परिवारवण्णणं चेसिं।
पउमव्व कमलगेहे णागकुमारीउ णिवसंति ॥ ६५८ ॥
नदीनिर्गमद्वारयुतानि तानि तत्परिवारवर्णनं चैषां।
पद्मामिव कमलगेहेषु नागकुमार्यो निवसंति ॥ ६५८ ॥

अर्थ—ते सर्व द्रह नदीके प्रवेश करनेका अर निकसनेका द्वारनि करि संयुक्त हैं। **भावार्थ**—नदीनिका प्रवाहके बीचि द्रह हैं अर तिन द्रहनिकै वेदिका है। सो वेदिका नदीके प्रवेश करनेके अर निकसनेके द्वारनि करि संयुक्त है। बहुरि इन द्रहनिका कमलादिकरूप सर्व परिवार वर्णन पद्म नामा द्रह समान जाननां। इतना विशेष, इन द्रहनिविषै जे कमल हैं तिनके ऊपरि जे मन्दिर हैं तिनविषै अपना अपना परिवार सहित नागकुमारी बसै हैं ॥ ६५८ ॥

दुतडे पण पण कंचणसेला सयसयतदद्धमुदयतियं।
ते दहसुहा णगक्खा सुरा वसंतीह सुणयण्णा ॥ ६५९ ॥
द्वितटे पंच पंच काञ्चनशैला शतशततदर्धमुदयत्रयम्।
ते ह्रदसुखा नगाख्याः सुरा वसंति इह सुकर्णाः ॥ ६५९ ॥

अर्थ—तिन द्रहनिके दोऊ तटनिविषै अनिक्रम पांच पांच कांचन पर्वत हैं। तिन पर्वतनिकी उचाई सौ योजन है। नीचे मूल व्यास सौ योजन है ऊपरि मुखव्यास तातैं आधा पचास योजन है। बहुरि ते सर्व पर्वत अपने अपने द्रहके सन्मुख हैं। इहां प्रश्न—पर्वतनिकै सन्मुखपनो कैसे होइ? ताका समाधान—इन पर्वतनिके ऊपरि जे देवनिके नगर हैं। तिनके द्वार द्रहनिके सन्मुख हैं। तातैं इन पर्वतनिको द्रह सन्मुख कहे। बहुरि तिन पर्वतनिके ऊपरि अपना अपना पर्वतका जो नाम तिस नामके धारक देव बसै हैं। ते देव सुकर्णा हैं। सुकर्णपना कहा सो युक्त है ॥ ६५९ ॥

अब अपने ऊपरि नदीनिका सम्बन्धकों कहै है, —

दहदो गंतूणग्गे सहस्सदुगणउदिदोण्णि वे च कला।
णदिदारजुदा वेदी दक्खिणउत्तरगभद्दसालस्स ॥ ६६० ॥
ह्रदतः गत्वाग्रे सहस्रद्विकनवतिद्वि द्वे च कले।
नदीद्वारयुता वेदी दक्षिणोत्तरगभद्रशालस्य ॥ ६६० ॥

अर्थ—द्रहतें आगें दोय हजार बाणवै योजन अर एक योजनका उगणीस भागनिविषै दोय कला प्रमाण जाइ नदीका प्रवेश करनेके जो द्वार तीह करि संयुक्त दक्षिण उत्तर भद्रसाल वेदी तिष्ठै हैं। कैसैं सो याकी वासना कहिए है। दक्षिण भद्रसाल अढाईसै योजन उत्तर भद्रसाल अढाईसै योजन मेरु व्यास दश हजार योजन इनकों जोड़ें दश हजार पांचसै योजन भए। सो इनकों विदेहका व्यास तेतीस हजार छसै चौरासी योजन व्यारि कला तीहमैंसों घटाइ २२१८४।४-१९ ताका आधा करिए तब ग्यारह हजार पांचसै बाणवै योजन दोय कला होइ। १ यामैं यमकगिरि कुलाचलका अंतराल हजार योजन अर यमक गिरिका व्यास हजार योजन यमक गिरि द्रहकै अंतराल पावसै योजन अर पाचौं द्रहनिकी लंबाई पांच हजार योजन अर बौ द्रहनिके बीचि व्यारि अंतराल तिनके दोय हजार योजन इस सबनिकों जोड़ें नव हजार चसै योजन होइ सो घटाएं दोय हजार बाणवै योजन दोय कला प्रमाण अंतका द्रह अर भद्रालकी वेदीके बीचि अंतराल जानना ॥ ६६० ॥

आगें दिग्गज पर्वतनिका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

कुरुभद्दसालमज्झे महाणदीणं च दोसु पासेसु।
दो दो दिसागइंदा सयतत्तियतरलुदयतिया ॥ ६६१ ॥
कुरुभद्रशालमध्ये महानद्योश्च द्वयोः पार्श्वयोः।
द्वौ द्वौ दिग्गजेंद्रौ शतताप्ततरलमुदयत्रयाणि ॥ ६६१ ॥

अर्थ—देवकुरु उत्तर कुरु भोगभूमिनिविषै बहुरि पूर्व पश्चिम भद्रसालनिविषै महानदी सीता सीतोदा तिनके दोऊ तटनिविषै दोय दोय दिग्गजेन्द्र पर्वत हैं। ते एसर्व आठ भए सो तिन आ दिग्गज पर्वतनिकी उंचाई सौ योजन अर नीचैं चौड़ाई सौ योजन ऊपरि चौड़ाई पचास यो ॥ ६६१ ॥

तण्णामा पुव्वादी पउमुत्तरणीलसोत्थियंजणया।
कुमुदपलासवतंसयरोचणमिह दिग्गजिंदसुरा ॥ ६६२ ॥
तन्नामानि पूर्वादि- पद्मोत्तरनीलस्वस्तिकांजनकाः।
कुमुदपलाशावतंसरोचनमिह दिग्गजेंद्रसुरा ॥ ६६२ ॥

अर्थ—पूर्वादि दिशानिविषै तिनके नाम कहिए है। पूर्व भद्रसालविषै पद्मोत्तर १ नी देवकुरुविषै स्वस्तिक १ अंजन १ पश्चिम भद्रसालविषै कुमुद १ पलाश १ उत्तर कुरुविषै १ रोचन १ तिन दिग्गजनिके नाम हैं। तिन पर्वतनिके ऊपरि दिग्गजेन्द्र देव तिष्ठै हैं ॥

आगें गजदंत पर्वतनिका नामादिक गाथा दोय करि कहै हैं,—

मल्लव महसोमणसो विज्जुप्पह गंधमादणिमदंता ।
ईसाणादो वेलुरियरुप्पतवर्णायहेममया ॥ ६६३ ॥
माल्यवान् महासौमनसः विद्युत्प्रभः गंधमादन इमदंताः ।
ईशानतः वैडूर्यरूप्यतपनीयहेममयाः ॥ ६६३ ॥

अर्थ—माल्यवान १ महासौमनस १ विद्युप्रभ १ गंधमादन १ ऐसैं नामधारक गजदंत पर्वत हैं । ते क्रमतैं वैडूर्य मणि अर रूपो अर तायो सोनों अर सोनों तीह समान वर्ण धरैं हैं। बहुरि ते क्रमतैं मेरुकी ईशानतैं लगाय च्यारयौं विदिशानिविषै तिष्ठैं हैं ॥ ६६३ ॥

णीलणिसहे सुरादिं पुट्ठा मल्लवगुहादु सीदा सा ।
विज्जुप्पहगिरिगुहदो सीदोदा णिस्सरित्तु गया ॥ ६६४ ॥
नीलनिषधौ सुरादिं स्पृष्टाः माल्यवद्गुहायाः सीता सा ।
विद्युत्प्रभगिरिगुहातः सीतोदा निसृत्य गता ॥ ६६४ ॥

अर्थ—ते गजदंत पर्वत नील वा निषद्ध कुलाचल अर मेरुगिरिकौं स्पर्शी हैं । भावार्थ—मेरुकी च्यारयौं विदिशानिविषै मेरुपर्वतसौं लगाय नील वा निषध कुलाचलपर्यंत ऐसे गजदंत पर्वत हैं । बहुरि तहां सीता नामा नदी मुडि करि माल्यवत नामा गजदंत पर्वतके नदी निकसनेंकी गुफा है तामैं होइ मेरुकी अर्द्ध प्रदक्षिणा देइ पूर्व भद्रसालादिविषै गमन करै है । बहुरि सीतोदा नदी मुडि करि विद्युत्प्रभ नामा गजदंतके नदी निकसनेंकी गुफा है । तामैं होइ मेरुकी अर्द्ध प्रदक्षिणा देइ पश्चिम भद्रसालादिविषै गमन करै है ॥ ६६४ ॥

अब विदेह देसनिका विभागकौं कहैं हैं;—

उभयंतगवणवेदियमज्झगवेभंगणदितियाणं च ।
मज्झगवक्खारचऊ पुव्वपरविदेहविजयद्धा ॥ ६६५ ॥
उभयांतगवनवेदिकामध्यगविभंगनदीत्रयाणां च ।
मध्यगवक्षारचतुर्भिः पूर्वापरविदेहविजयार्धाः ॥ ६६५ ॥

अर्थ—दोऊ अंतविषै तौ वन वेदिका अर मध्यविषै प्राप्त तीन विभंगा नदी अर मध्यविषै प्राप्त च्यारि वक्षारगिरि पर्वत तिन करि पूर्व पश्चिम विदेहके देश सीता सीतोदा नदीनिके दोऊ तटनिविषै आधे आधे हैं । भावार्थ—मेरुकी पूर्व दिशाविषै पूर्व विदेह है । पश्चिम दिशाविषै पश्चिम विदेह है । बहुरि पूर्व विदेहविषै बीचि सीता नदी है । अर पश्चिम विदेहके बीचि सीतोदा नदी है । सो इन दोऊ नदीनिके दक्षिण उत्तर तट करि च्यारि विभाग हो है । बहुरि एक एक विभागविषै आठ आठ विदेह देश हैं । तहां पूर्व वा पश्चिम भद्रसालकी वेदी ताके आगै वक्षार ताके आगै विभंगा ताके आगै वक्षार ताके आगै विभंगा ताके आगै वक्षार ताके आगै देवारण्य वा भूतारण्यकी वेदी ऐसैं ए नव भए । सो इन नवनिके बीचि बीचि आठ विदेह देश हैं । ऐसैं सर्वत्र विदेह देश जानने ॥ ६६५ ॥

आगै वक्षार पर्वत अर विभंगा नदीनिका नामादिक गाथा दोइ करि कहै है;—

णण्णामा सीदुत्तरतीरादो पदमदो पदक्खिणदो।
चेत्तादिदुदपउमादिमदा णलिण एगसेलगणो ॥ ६६६ ॥
स्यामानि सीतोत्तरतीरात् प्रथमतः प्रदक्षिणतः।
चित्रादिकूटपद्मादिमतयो नलिनः एकशैलकाः ॥ ६६६ ॥

अर्थ—सीता नदीका उत्तर तट सार्वी प्रथम करि प्रदक्षिणातैं नील पर्वत का विभंगा नदीनिके नाम देसै हैं। तहां सीता नदीका उत्तर तटविषै भद्रसालकी वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतै चित्रकूट १ पद्मकूट १ नलिन १ एकशैल १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं ॥ ६६६ ॥

गाहवदपंकवदिणादे तिहूदवेसवणअंजणप्पादि।
अंजणगो तत्तजला मत्तजलुम्मत्तजल सिंधू ॥ ६६७ ॥
ग्राहवत्पंकवतीनदः त्रिकूटवैश्रवणाञ्जनात्मादिः।
अंजनका. तप्तजला मत्तजला उन्मत्तजला सिंधुः ॥ ६६७ ॥

अर्थ—ग्राहवती १ द्रहवती १ पंकवती १ नाम धारक तीन विभंगा हैं। बहुरि सीताका दक्षिण तटविषै देवारण्य वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतैं त्रिकूट १ वैश्रवण १ अंजनात्मा १ अंजन १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं। बहुरि तप्तजला १ मत्तजला १ उन्मत्तजला १ नाम तीन विभंगा नदी हैं ॥ ६६७ ॥

सद्दावं विजदावं आसीविस सुहवहा य वक्खारा।
खारोदा सीदोदा सोदोवाहिणि णदी मज्झे ॥ ६६८ ॥
श्रद्धावान् विजटावान् आशीविषः सुखावहश्च वक्षाराः।
क्षारोदा सीतोदा स्रोतोवाहिनी नदयः मध्ये ॥ ६६८ ॥

अर्थ—पश्चिम विदेह सीतोदा नदीका दक्षिण तटविषै भद्रसाल वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतैं श्रद्धावान १ विजटावान १ आशीविष १ सुखावह १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं। बहुरि क्षारोदा १ सीतोदा १ स्रोतोवाहिनी १ नाम धारक तीन विभंगा नदी वक्षारनिके बीचि बीचि हैं ॥ ६६८ ॥

सो चंदसूरणागादिमाला देवमाल वक्खारा।
गंभीरमालिणी फेणमालिणी उम्मिमालिणी सरिदा ॥ ६६९ ॥
ततः चंद्रसूर्यनागादिमालदेवमालाः वक्षाराः।
गंभीरमालिनी फेनमालिनी ऊर्मिमालिनी सरितः ॥ ६६९ ॥

अर्थ—तहां पीछैं पश्चिम विदेह सीतोदा नदीका उत्तर तटविषै देवारण्य वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतैं चंद्रमाल १ सूर्यमाल १ नागमाल १ देवमाल १ ए च्यारि वक्षार पर्वत हैं। बहुरि गंभीरमालिनी १ फेनमालिनी १ ऊर्मिमालिनी १ ए तीन विभंगा नदी हैं ॥ ६६९ ॥

हेममया वक्खारा वेभंगा रोहिमग्गिसवण्णणगा।
ताहिं पवेसतोरणगेहे णिवसंति दिक्कण्णा ॥ ६७० ॥

षट्पंचाशदंतरद्वीपाः षड्विंशसहस्रं रत्नाकराः ।
रत्नानां कुक्षिवासाः सप्तशतानि उपसमुद्रे ॥ ६७७ ॥

अर्थ--एक एक विदेह देशविषै एक एक उपसमुद्र है सो मुख्य नगरी अर महानदीके बीचि आर्यखंडविषै पाईए है । तीह उपसमुद्रकैविषै टापू है । तहां छप्पन तौ अंतरद्वीप हैं । बहुरि छबीस हजार रत्नाकर हैं तहां रत्न उपजै हैं । रत्ननिके वेचने लैनेंके स्थानभूत कुक्षिवास सातसै हैं ॥ ६७७ ॥

आगैं मागधादि तीन देवनिका स्थान कहैं हैं;—

सीतासीतोदाणदितीरसमीवे जलम्हि दीवतियं ।
पुव्वादी मागहवरतणुप्पभासामराण हवे ॥ ६७८ ॥

सीतासीतोदानदीतीरसमीपे जले द्वीपत्रयं ।
पूर्वादिना मागधवरतनुप्रभासामराणां भवेत् ॥ ६७८ ॥

अर्थ—सीता सीतोदा नदीकै तीर समीप जलविषै पूर्व पश्चिम करि मागध १ वरतनु १ प्रभास १ देवनिके तीन द्वीप हैं । भावार्थ—चक्रवर्ती करि साधने योग्य मागध वरतनु प्रभास देव तिनके स्थान जैसैं भरत एरावतके समुद्रविषै हैं । तैसे विदेह देशनिके सीता सीतोदा नदीविषै है । पूर्व विदेहके सीता नदीके तीर जलविषै है । पश्चिम विदेहके सीतोदा नदीके तीर समीप जलविषै है । तहां एक एक देशसंबंधी दोय दोय नदी जिन द्वारनि करि सीता सीतोदाविषै प्रवेश करैं हैं । तिन द्वारनिकै अर तिन द्वारनिके बीचि द्वार है ताकै समीप जलविषै तिन देवनिके द्वीप जाननें ॥६७८॥

आगैं विदेह क्षेत्रविषै प्राप्त वर्षादिकका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

वरिसंति कालमेहा सत्तविहा सत्त सत्त दिवसवही ।
वरिसाकाले धवला वारस दोणाभिहाणब्भा ॥ ६७९ ॥

वर्षंति कालमेघाः सप्तविधाः सप्त सप्त दिवसावधीन् ।
वर्षाकाले धवला द्वादश द्रोणाभिधाना अभ्राः ॥ ६७९ ॥

अर्थ—सात प्रकार काल मेघ हैं । ते सात सात दिन मर्याद लिएं वर्षाकालविषै वर्षैं हैं । बहुरि स्वेतवर्ण द्रोण नामा बारह अभ्र कहिए बादले ते तैसेंही सात सात दिन मर्याद लिएं वर्षैं हैं । ऐसैं वर्षाकालविषै एकसौ तेतीस दिन वर्षा हो है ॥ ६७९ ॥

देसा दुब्भिक्खीदीमारिकुदेववण्णलिंगिमदहीणा ।
भरिदा सदावि केवलिसलागपुरिसिट्ठिसाहूहिं ॥ ६८० ॥

देशा दुर्भिक्षेतिमारिकुदेववर्णलिंगिमतहीनाः ।
भृताः सदापि केवलिशलाकापुरुषर्षिसाधुभिः ॥ ६८० ॥

अर्थ—विदेह क्षेत्रविषै तिष्ठते देश ते अतिवृष्टि १ अनावृष्टि १ मूसा १ टीडी १ सुवा १ अपनी फौज १ अन्य वैरीकी फौज १ ऐसैं सात प्रकार ईति करि रहित हैं । बहुरि गाय मनुष्यादिक जातै अधिक मरैं ऐसी मरी तिन करि रहित हैं । बहुरि जिनदेवनैं अन्य कुदेव जिनलिं-

तीन अन्य कुलिंगी जिनमतने अन्य कुमत तिन करि रहित है। बहुरि ते देश सदा ही केवलज्ञानी बहुरि तीर्थंकरादि शलाका पुरुष बहुरि ऋद्धिधारी साधु तिन करि भरे हैं॥ ६८०॥

आगै तीर्थंकर सकल चक्री अर्द्धचक्रीनिकी पंचमेरु अपेक्षा करि जघन्य उत्कृष्ट संख्या करि प्रवर्तन कहै हैं;—

तित्थद्धसयलचक्की सट्ठिसयं पुह वरेण अवरेण।
वीसं वीसं सयले खेत्ते सत्तरिसयं वरदो॥ ६८१॥

तीर्थार्धसकलचक्रिणः षष्टिशतं पृथक् वरेण अवरेण।
विंशं विंशं सकले क्षेत्रे सप्ततिशतं परतः॥ ६८१॥

अर्थ—तीर्थंकर अर अर्द्धचक्री नारायण प्रतिनारायण अर सकल चक्री चक्रवर्ती ए प्रथक प्रथक एक एक विदेह देशविषै एक एक होइ सब उत्कृष्टपनैं करि एकसौ साठि होंइ। बहुरि जघन्यपनै करि सीता सीतोदाका दक्षिण उत्तर तटविषै एक एक होइ ऐसैं एक मेरु अपेक्षा च्यारि होहिं मिलि करि पंच मेरुके विदेह अपेक्षा करि बीस हो है। बहुरि ते उत्कृष्टपनैंयकी पांच भरत पांच ऐरावतसम्बन्धी मिलाएं तीर्थंकरादिक एकसौ सत्तरि हो हैं॥ ६८१॥

अब चक्रवर्तीकी संपदाका स्वरूप कहैं हैं;—

चुलसीदिलक्खभद्दिभ रहा हया दिगुणणवयकोडीओ।
णवणिहि चोद्दसरयणं चक्कित्थीओ सहस्सछण्णउदी॥ ६८२॥

चतुरशीतिलक्षमद्रेभाः रथा हया द्विगुणनवकोट्यः।
नवनिधयः चतुर्दशरत्नानि चक्रिस्त्रियः सहस्रं षण्णवतिः॥ ६८२॥

अर्थ—चौरासी लाख कल्याणरूप हाथी हैं। तितनेंही चौरासी लाख रथ हैं। घोडे दुगुणा नव कोडि ताके अठारह कोडि हैं। बहुरि छह ऋतु योग्य वस्तुका देनेवाला कालनिधि है भाजनशस्त्रका दायक महाकालनिधि है। अन्नका दायक पांडुनिधि है। आयुधका दायक माणवकनिधि है। वाणिज्यका दायक शंखनिधि है। मंदिरका दायक नैसर्पनिधि है। वस्त्रका दायक पद्मनिधि है। आभूषणका दायक पिंगलनिधि है। नानाप्रकार रत्नसमूहका दायक नाना रत्ननिधि है। ऐसैं नवनिधि हैं। गाडाके आकारनिधि है तामैं ऐसैं वस्तु निर्कस्या करै है। बहुरि चक्र १ असि १ छत्र १ दंड १ मणि १ चर्म १ काकिणी १ ए सात अचेतन अर बृहपति १ सेनापति १ हाथी १ घोडो १ सिलप १ स्त्री १ पुरोहित १ ए सात सचेतन ऐसैं चौदह रत्न हैं। बहुरि छिनवें हजार स्त्री हैं। ऐसैं चक्रवर्तीके संपदा हैं॥ ६८२॥

अब राजाधिराजादिकनिका लक्षण गाथा तीन करि कहैं हैं;—

अण्णे सगपदठिदिया सेणागणवणिजदंडवइ मंती।
महयर तलयर वण्णा चउरंगपुरोहिमच्चमहमच्चा॥ ६८३॥

अन्ये स्वकपदस्थितिका सेनागणवणिग्दंडपतिः मंत्री।
महत्तर तलवरः वर्णा चतुरंगपुरोहितामात्यमहामात्यः॥ ६८३॥

अर्थ—अन्य राजादिक हैं ते अपनी अपनी पदवीविषै स्थित हैं। तहां सेनापति कहिए सेनाका नायक बहुरि गणक पती कहिए ज्योतिषी आदिकका नायक बहुरि वणिक्पति कहिए व्यापारीनिका नायक बहुरि दंडपति कहिए समस्त सेनाका नायक बहुरि मंत्री कहिए पंचांग मंत्रविषै प्रवीण बहुरि महत्तर कहिए कुलविषै बड़ा बहुरि तलवर कहिए कोटवाल बहुरि वर्ण कहिए क्षत्रियादिक च्यारि प्रकार वर्ण बहुरि चतुरंग कहिए च्यारि प्रकार सेना बहुरि पुरोहित कहिए हितकार्यका अधिकारी बहुरि आमात्य कहिए देशका अधिकारी बहुरि महामात्य कहिए सर्व राज्य कार्यका अधिकारी ॥ ६८३ ॥

इदि अट्ठारसेढीणाहिओ राजो हवेज्जमउडधरो ।
पंचसयरायसामी अहिराजो तो महाराजो ॥ ६८४ ॥

इति अष्टादशश्रेणीनामधिपो राजा भवेत् मुकुटधरः ।
पंचशतराजस्वामी अधिराजः ततः महाराजः ॥ ६८४ ॥

अर्थ—ऐसें अठारह श्रेणीनिका जो स्वामी सो राजा कहिए सोई मुकुटधारी हो है। बहुरि ऐसें पांचसै राजानिका स्वामी सो अधिराजा हो है। बहुरि हजार राजानिका स्वामी महाराजा हो है ॥ ६८४ ॥

तह अद्धमंडलीओ मंडलिओ तो महादिमंडलिओ ।
तियचउपंचाणहिया पहुणो राजाण दुगुणदुगुणाणं ॥ ६८५ ॥

तथा अर्धमंडलिकः मंडलिकः ततो महादिमंडलिकः ।
त्रिकचतुःपंचानामधिकाः प्रभवः राज्ञां द्विगुणद्विगुणानाम् ॥ ६८५ ॥

अर्थ—ऐसें दोय हजार राजानिका स्वामी अर्धमंडलीक हो है। बहुरि चारि हजार राजानिका स्वामी मंडलीक हो है। बहुरि आठ हजार राजानिका स्वामी महामंडलीक हो है। बहुरि सोलह हजार राजानिका स्वामी [illegible] नामका अधिराज वा प्रतिनारायण हो है। बहुरि बत्तीस हजार राजानिका स्वामी [illegible] अधिराज चक्रवर्ती हो है। ऐसें अधिकाधिक सर्व राजानि तैं दूणे दूणे [illegible] ॥ ६८५ ॥

अब मंडलीका विशेष कहै है,—

मयरमुहसेलणाओ तिण्णिसया सोलसोत्ति कुंडा वा ।
चउसीदि चावसीदि चउणवदिहि विलग्गाणो सो ॥ ६८६ ॥

[illegible] ॥ ६८६ ॥

अर्थ—[illegible] ॥ ६८६ ॥

आगे विशेष दृष्टांत करि [illegible] कहै है,—

कच्छा सुकच्छा महाकच्छा चउत्थी कच्छकावदी।
आवत्ता लांगलावत्ता पोक्खला पोक्खलावदी ॥ ६८७ ॥
कच्छा सुकच्छा महाकच्छा चतुर्थी कच्छकावती।
आवर्ता लांगलावर्ता पुष्कला पुष्कलावती ॥ ६८७ ॥

अर्थ—कच्छा १ सुकच्छा १ महाकच्छा १ चौथी कच्छकावती १ आवर्ता १ लांगलावर्ता १ पुष्कला १ पुष्कलावती १ ए आठ देश सीता नदीका उत्तर तटविषै भद्रसाल वेदीसै आदि लगाय करि क्रमतैं जाननें ॥ ६८७ ॥

वच्छा सुवच्छा महावच्छा चउत्थी वच्छकावदी।
रम्मा सुरम्मगा चेव रमणेज्जा मंगलावदी ॥ ६८८ ॥
वत्सा सुवत्सा महावत्सा चतुर्थी वत्सकावती।
रम्या सुरम्यका चैव रमणीया मंगलावती ॥ ६८८ ॥

अर्थ—वत्सा १ सुवत्सा १ महावत्सा १ चौथी वत्सकावती १ रम्या १ सुरम्यका १ रमणीया १ मंगलावती १ ए आठ देश सीता नदीका दक्षिण तटविषै देवारण्यकी वेदीसै ही लगाय करि क्रमतैं जाननें ॥ ६८८ ॥

पम्मा सुपम्मा महापम्मा चउत्थी पम्मकावदी।
संखा य णलिणी चेव कुमुदा सरिदा तहा ॥ ६८९ ॥
पद्मा सुपद्मा महापद्मा चतुर्थी पद्मकावती।
शंखा च नलिनी चैव कुमुदा सरितप्रभा ॥ ६८९ ॥

अर्थ—पद्मा १ सुपद्मा १ महापद्मा १ चौथी पद्मकावती १ शंखा १ नलिनी १ कुमुदा १ सरित १ ए आठ देश सीतोदा नदीका दक्षिण तटविषै भद्रसाल वेदीसै आदि लगाय क्रमतैं जाननें ॥ ६८९ ॥

वप्पा सुवप्पा महावप्पा चउत्थी वप्पकावदी।
गंधा खलु सुगंधा य गंधिला गंधमालिणी ॥ ६९० ॥
वप्रा सुवप्रा महावप्रा चतुर्थी वप्रकावती।
गंधा खलु सुगंधा च गंधिला गंधमालिनी ॥ ६९० ॥

अर्थ—वप्रा १ सुवप्रा १ महावप्रा १ चौथी वप्रकावती १ गंधा १ सुगंधा १ गंधिला १ गंधमालिनी १ ए आठ देश सीतोदा नदीका उत्तर तटविषै देवारण्य वेदीसै लगाय क्रमतैं जाननें ॥ ६९० ॥

आगै इन देशनिविषै कहे जैसैं देवारण्य वेदी तिनका प्रमाण कहते उत्तर कहै है;—

विजयं पडि वेयड्ढो गंगासिंधुसरा दोण्णि दोण्णि कमा।
तेहिं कया छक्खंडा विदेह बत्तीस विजयाणं ॥ ६९१ ॥
विजयं प्रति विजयार्धः गंगासिंधुसरे द्वे द्वे क्रमात्।
ते कृतानि षट्खंडानि विदेह द्वात्रिंशद्विजयानां ॥ ६९१ ॥

अर्थ—देश देश प्रति एक एक विजयार्द्ध पर्वत है । कुलाचलतैं लगाय महानदी पर्यंत जो देशनिकी लंबाई तीहके मध्य प्रदेशविषै विजयार्द्ध पर्वत जाननां । सो विजय कहिए देश तें इस करि आधा किया तातैं याका विजयार्द्ध ऐसा सार्थीक नाम है । बहुरि तिनहीं देशनिविषै गंगा सिंधुसमान निकसतैं सवा छह योजन चौड़ी प्रवेश करतैं साढ़ा बासठि योजन चौड़ा इत्यादि गंगासिंधुका जो प्रमाण तीह सदृश दोय दोय नदी हैं । तिन नदी अर विजयार्द्धनि करि विदेह संबंधी बत्तीस देशनिविषै प्रत्येक छह छह खंड किए हैं ॥ ६९१ ॥

आगैं तहां तिष्ठते विजयार्द्धनिका वा नदीनिका व्यास गाथा दोय करि कहैं हैं;—

ते पुव्वावरदीहा जणवयमज्झे गुहादु पुव्वं वा ।
गंगादु णीलमूलगकुंडा रत्ततुग णिसहणिस्सरिदा ॥ ६९२ ॥

ते पूर्वापरदीर्घा जनपदमध्ये गुहाद्यं पूर्वं वा ।
गंगाद्यं नीलमूलगकुंडा रक्ताद्रिकं निषधनिःसृताः ॥ ६९२ ॥

अर्थ—ते विजयार्द्ध पूर्व पश्चिम लंबे हैं । बहुरि जनपद जो देश तीहके मध्यभागविषै हैं । बहुरि तहां विजयार्द्धविषै दोय गुफा हैं सो गुफा पूर्वै भरतका विजयार्द्धविषै कही तैसें ही हैं जाननी । बहुरि एक एक देशविषै दोय दोय नदी हैं । तहां सीता वा सीतोदाका दक्षिण तटविषै जे देश हैं तिनविषै जे दोय दोय नदी हैं तिनका नाम गंगा सिंधु है । बहुरि उत्तर तटविषै जे देश हैं तिनविषै जे दोय दोय नदी हैं तिनका नाम रक्ता रक्तोदा है । तहां गंगासिंधु दोय नदी नील पर्वतके निकटि मूलविषै स्थित जो कुंड तीहतैं उत्तर मुखकरि निकसि सूधी आइ विजयार्द्धकी गुफामें होइ सीता वा सीतोदाविषै तिसकी वेदीका तोरण द्वारविषै प्राप्त होइ प्रवेश करै है । बहुरि रक्ता रक्तोदा दोय नदी निषध पर्वतके निकटि मूलविषै स्थित जो कुंड तीहतैं दक्षिण मुखकरि निकसि सूधी आइ विजयार्धकी गुफामें होइ सीता वा सीतोदाविषै तिसकी वेदीका तोरण द्वारविषै प्राप्त होइ प्रवेश करै है ॥ ६९२ ॥

दसदसपणोत्ति पण्णं तीसं दसयं च रुप्पगिरिवासा ।
सयराधिजोग सेढी सिहरे सिद्धादिहूदं तु ॥ ६९३ ॥

दश दश पंचाग्रे पंचाशत् त्रिंशत् दशकं च रूप्यगिरिव्यासाः ।
शतकाधियोग्या श्रेणी शिखरे सिद्धादिकूटं तु ॥ ६९३ ॥

अर्थ—[illegible] विजयार्द्धके दश योजन ऊंची प्रथम श्रेणी है । पचास योजन प्रमाण [illegible] ऊंची सहस्र व्यास धरै है । बहुरि तीसौ ऊपरि दश योजन ऊंची दूसरी श्रेणी है । तीस योजन सहस्र व्यास धरै है । तीसौ ऊपरि पांच योजन ऊंचा उत्तरित शिखर है । दश योजन सहस्र व्यास धरै है । भावार्थ—विजयार्द्ध पर्वत तीसौ योजन दश योजनकी ऊंचाई पर्यंत पचास योजन चौड़ा है । बहुरि ऊपरि दक्षिण उत्तरविषै दश दश योजनकी चौड़ी कोटी छूटि बीचिविषै दश दश योजन चौड़ा पर्वत तीसौ योजन ऊंचा है । बहुरि ऊपरि दोऊ तरफविषै दश दश योजन कोटी छूटि बीचिविषै पांच योजन चौड़ा पर्वत दश योजन ऊंचा है । बहुरि तहां दक्षिण उत्तर [illegible]

ऐसे प्राग प्रथम श्रेणीविषै विद्याधर बसै हैं। बहुरि द्वितीय श्रेणी जो कटनी तिह विषै आभियोग्य व बसै है। बहुरि शिखरविषै सिद्धायतन आदि नवकूट हैं॥ ६९३॥

आगैं तहां ही द्वितीयादि श्रेणीविषै विशेष कहैं हैं;—

सोहम्मआभिजोग्गगमणिचित्तपुराणि बिदियसेढिम्हि।
वेयड्ढकुमारवई सिहरतले पुण्णभद्दक्खे॥ ६९४॥

सौधर्माभियोग्यगमणिचित्रपुराणि-द्वितीयश्रेण्याम्।
विजयार्धकुमारपतिः शिखरतले पूर्णभद्राख्ये॥ ६९४॥

अर्थ—तहां ही द्वितीय श्रेणीविषै सौधर्म संबंधी आभियोग्य देवनिके मणिमई नानाप्रकार नगर हैं। बहुरि तिस विजयार्द्धका शिखरविषै पूर्णभद्र नामा कूट तीह उपरि विजयार्द्ध कुमार पति व बसै हैं॥ ६९४॥

आगै तहां प्रथम दोऊ श्रेणिनिविषै तिष्ठते विद्याधरनिके नगर तिनकी संख्या वा तिनके नाम पंद्रह गाथानि करि कहैं है;—

पणवण्णं पणवण्णं विदेहवेयड्ढपढमभूमिम्हि।
णयराणि पण्णसट्ठी जंबूउभयंतवेयड्ढे॥ ६९५॥

पंचपंचाशत् पंचपंचाशत् विदेहविजयार्धप्रथमभूमौ।
नगराणि पंचाशत् षष्टिः जंबूभयांतविजयार्धे॥ ६९५॥

अर्थ—विदेह संबंधी विजयार्द्धनिकी दक्षिण उत्तररूप प्रथम दोऊ श्रेणी तीहविषै पचावन पचावन नगर विद्याधरनिके हैं। बहुरि जंबूद्वीपका दोऊ अंत जे भरत ऐरावत तिनि संबंधी विजयार्द्ध तहां प्रथम दोऊ श्रेणीविषै पचास साठि नगर हैं॥ ६९५॥

सेलायामे दक्खिणसेढीए पण्णमुत्तरे सट्ठी।
तण्णामा पुव्वादी किंणामिद किंणरंगीदं॥ ६९६॥

शैलायामे दक्षिणश्रेण्यां पंचाशदुत्तरस्यां षष्टिः।
तन्नामानि पूर्वादितः किंनामितं किंनरगीतं॥ ६९६॥

अर्थ—भरत ऐरावत संबंधी विजयार्द्ध तीहकी पूर्व पश्चिम लंबाईविषै दक्षिण श्रेणीविषै पचास नगर हैं। उत्तर श्रेणीविषै साठि नगर हैं तिन नगरनिके नाम पूर्व दिशातै लगाय अनुक्रमतै कहिए हैं। किंनामित १ किंनरगीत १॥ ६९६॥

णरगीदं बहुकेदू पुंडरियं सीहसेदगरुडधजं।
सिरिपहकर लोहग्गलमरिंजयं वज्जअग्गलद्दुपुरं॥ ६९७॥

नरगीतः बहुकेतुः पुंडरीकं सिंहध्वजनगरध्वजं।
श्रीप्रभकर लोहार्गलमरिंजयं वज्रार्गलाद्यपुरं॥ ६९७॥

अर्थ—नरगीत १ बहुकेतु १ पुंडरीक १ सिंहध्वज १ श्वेतध्वज १ गरुडध्वज १ श्रीप्रभ १ श्रीधर १ लोहार्गल १ अरिंजय १ वज्रार्गल १ वज्राढ्यपुर १॥ ६९७॥

होइ तिमोइ पुरं तत्थ गगणवल्लहपुरी य अवरजया ।
विजयजया रयणपुरं मेरुजयपुरं खेमपुरी ॥ ६९८ ॥
भवति तिमोलि पुरी तत्र गगनवल्लभपुरी च अपराजया ।
विजयजया रत्नपुरं मेरुजयपुरं क्षेमपुरी ॥ ६९८ ॥

अर्थ—भवति कहिए नगर हैं । तिमोलि १ तत्र १ गगनवल्लभपुरी १ अपराजया १ विजयजया १ रत्नपुर १ मेरुजयपुर १ क्षेमपुरी १ ॥ ६९८ ॥

अवराजिद कामादीपुप्फं गगणचरि तिणयचरि मुहं ।
तो सत्तयंतिणगरं जयंति विजया वइजयंती य ॥ ६९९ ॥
अपराजितं कामादिपुष्पं गगनचरी तिनयचरी मुखं ।
ततः सप्त तिनगरं जयंति विजया वैजयंती च ॥ ६९९ ॥

अर्थ—अपराजित १ कामपुष्प १ गगनचरी १ तिनयचरी १ मुख १ सप्तनगर १ जयंती १ विजया १ वैजयंती १ ॥ ६९९ ॥

खेमंकर चंदाहं सूराहं चित्तकूड महकूडं ।
हेमतिमेहविचित्तयकूडं वेसवणकूडमदो ॥ ७०० ॥
क्षेमकरं चंद्राभं सूर्याभं चित्रकूटं महाकूटं ।
हेमनिमेघविचित्रकूटं वैश्रवणकूटमतः ॥ ७०० ॥

अर्थ—क्षेमंकर १ चंद्राभ १ सूर्याभ १ चित्रकूट १ महाकूट १ हेमकूट १ निषकूट १ मेघकूट १ विचित्रकूट १ वैश्रवणकूट १ ॥ ७०० ॥

सूरपुर चंदपुर णिच्चोदिणि विमुहि णिच्चवाहिणिपो ।
सुमुही चरिमा पच्छिमभागादो अज्जुणी अरुणी ॥ ७०१ ॥
सूर्यपुरं चंद्रपुरं नित्योद्योतिनी विमुखी नित्यवाहिनी ।
सुमुखी चरमा पश्चिमभागात् अर्जुनी अरुणी ॥ ७०१ ॥

अर्थ—सूर्यपुर १ चन्द्रपुर १ नित्योद्योतिनी १ विमुखी १ नित्यवाहिनी १ सुमुखी १ अंतनगरी १ ऐसें दक्षिण श्रेणीविषै पचास नगरी हैं । अब उत्तर श्रेणीविषै पश्चिम भागतैं लगाय क्रम नगरीनिके नाम कहिए हैं । अर्जुनी १ अरुणी १ ॥ ७०१ ॥

कैलास वारुणीपुरि विज्जुप्पह किलिकिलं च चूडादी ।
मणि ससिपह वंसालं पुप्फादी चूलमिह दसमं ॥ ७०२ ॥
कैलाशो वारुणी पुरी विद्युत्प्रभं किलिकिलं च चूडादिः ।
मणिः शशिप्रभं वंशाल पुष्पादि· चूलमिह दशम ॥ ७०२ ॥

अर्थ—कैलाश १ वारुणीपुरी १ विद्युत्प्रभ १ किलिकिल १ चूडामणि १ शशिप्रभ १ वंशाल १ पुष्पचूलनामा दशवा नगर है ॥ ७०२ ॥

तत्तोवि हंसगब्भं पुंडाहगं तेरसं सिवंकरयं।
सिरिसोध चमर सिवमंदिर वसुमका वसुमदी य ॥ ७०३ ॥
ततोऽपि हंसगर्भं पुण्डाहकं त्रयोदशं शिवंकरं।
श्रीसौधं चमरं शिवमंदिरं वसुमत्का वसुमती च ॥ ७०३ ॥

अर्थ—तहां पीछे हंसगर्भ १ पुण्डाहक १ शिवंकर १ तेरवां है श्रीसौध १ चमर १ शिवमंदिर १ वसुमत्का १ वसुमती १ ॥ ७०३ ॥

सिद्धत्थं सणुंजय धयमाल सुरिंदकंत गयणादि।
णंदणमवि सीदादिमसोगो अलका तदो तिलगा ॥ ७०४ ॥
सिद्धार्थं सानुंजयं ध्वजमालं सुरेंद्रकांतं गगनादिः।
नंदनमपि सीतादिमशोकः अलका ततस्तिलका ॥ ७०४ ॥

अर्थ—सिद्धार्थ १ सानुंजय १ ध्वजमाल १ सुरेन्द्रकांत १ गगननंदन १ अशोका १ सीतशोका १ शीतशोका १ अलका १ तहां पीछे तिलका १ ॥ ७०४ ॥

अंबरतिलगं मंदर कुमुदं कुंदं च गयणवल्लभयं।
तो दिव्वतिलय भूमीतिलयं गंधव्वणयरमदो ॥ ७०५ ॥
अंबरतिलकं मंदरं कुमुदं कुंदं च गगनवल्लभं।
ततो दिव्यतिलकं भूमीतिलकं गंधर्वनगरमतः ॥ ७०५ ॥

अर्थ—अंबरतिलक १ मंदर १ कुमुद १ कुंद १ गगनवल्लभ १ तहां पीछे दिव्यतिलक १ भूमितिलक १ गंधर्वनगर १ इतने आवे ॥ ७०५ ॥

मुत्ताहारं णेमिसमग्गिमहज्जालसिरिणिकेदपुरं।
जयपद्द सिरिवासं मणिवज्जं भद्दस्सपुरं धणजययं ॥ ७०६ ॥
मुक्ताहारं नैमिषमग्निमहाज्वालं श्रीनिकेतपुरं।
जयावहं श्रीवासं मणिवज्रं भद्राश्वपुरं धनंजयं ॥ ७०६ ॥

अर्थ—मुक्ताहार १ नैमिष १ अग्निज्वाल १ महाज्वाल १ श्रीनिकेतपुर १ जयावह १ श्रीनिवास १ मणिवज्र १ भद्राश्वपुर १ धनंजय १ ॥ ७०६ ॥

गोखीरफेणमक्खोभं गिरिसिहरं च धरणि धारिणियं।
दुग्गं दुद्धरणयरं सुदंसणं तो महिंदविजयपुरं ॥ ७०७ ॥
गोक्षीरफेनमक्षोभं गिरिशिखरं च धरणि धारिणिकं।
दुर्गं दुर्धरनगरं सुदर्शनं ततो महेंद्रविजयपुरं ॥ ७०७ ॥

अर्थ—गोक्षीरफेन १ अक्षोभ १ गिरिशिखर १ धरणिपुर १ धारणीपुर १ दुर्ग १ दुर्द्धर-नगर १ सुदर्शन १ तहां पीछे महेन्द्रपुर १ विजयपुर ॥ ७०७ ॥

णगरी सुगंधिणी वज्जद्धनरं रयणपुव्वआयरयं।
रयणपुरं चरिमं ते रयणमया राजधाणीओ ॥ ७०८ ॥

नगरी सुगंधिनी वज्रार्धतरं रत्नपूर्वमाकरं ।
रत्नपुरं चरमं ता: रत्नमया राजधान्य: ॥ ७०८ ॥

अर्थ—सुगंधिनी नगरी १ वज्रार्द्धतर २ रत्नाकर १ रत्नपुर १ अंतका नगर है । ऐसे साठि नगरी उत्तर श्रेणीविषै हैं । ते ए सर्व नगरी रत्नमई हैं । बहुरि राजानिका जहां वास पाइए ऐसी राजधानी हैं ॥ ७०८ ॥

पायारगोउरट्ठलचरियासरवण विराजिया तत्थ ।
विज्जाहरा तिविज्जा वसंति छक्कम्मसंजुत्ता ॥ ७०९ ॥

प्राकारगोपुराट्टालचर्यासरोवनैः विराजिता तत्र ।
विद्याधरा त्रिविद्या वसंति षट्कर्मसंयुक्ताः ॥ ७०९ ॥

अर्थ—कोट दरवाजा मंदिर मार्ग सरोवर वन इनकरि ते नगरी विराजित हैं । तहां तिन नगरीनिविषै विद्याधर बसै हैं । ते विद्याधर साधित कुल जातिविद्यानि करि त्रिविध हैं । आपी आप साधिए सो साधित विद्या १ बहुरि पितृपक्ष कुलक्रमतैं चली आई सो कुलविद्या १ बहुरी मातृपक्ष जातिविषै चली आई सो जाति विद्या १ ऐसी तीन विद्यानि करि संयुक्त हैं । बहुरि इज्या वार्त्ता दत्ति स्वाध्याय संयम तप इन षट कर्मनि करि संयुक्त हैं । तहां पूज्यका पूजना सो इज्या, असि मषि आदि जीवनैंका उपायरूप व्यापार सो वार्त्ता १ दान दैना सो दत्ति १ पठन पाठन करना सो स्वाध्याय १ अविरति त्याग करना सो संयम १ तपश्चरण करना सो तप जानना ॥७०९॥

आगैं विजयार्द्ध कर किया षट खंडविषै म्लेच्छखंडविषैं तिष्ठता जो वृषभाचल ताका स्वरूपकौं निरूपै हैं;-

सत्तरिसयवसहगिरी मज्झगयमिलेच्छखंडबहुमज्झे ।
कणयमणिकंचणुदयति भरिया गयचक्किणामेहिं ॥ ७१० ॥

सप्ततिशतं वृषभगिरयः मध्यगतम्लेच्छखंडबहुमध्ये ।
कनकमणिकांचनोदयत्रिकं भृता गतचक्रिनामभिः ॥ ७१० ॥

अर्थ—कुलाचल विजयार्द्ध दोय नदीनिकै बीचि मध्यका जो म्लेच्छ खंड तीहका बहुत मध्य प्रदेशविषै वृषभाचल है सो एक एक देशविषै एक एक है । सो पांचौं मेरुसंबंधी विदेह देश अर भरत ऐरावतविषै एकसौ सत्तरि वृषभाचल हैं । ते सुवर्णवर्ण हैं मणिमई हैं । कांचन पर्वत समान उदयादि तीन तिनके हैं । सो उचाई सौ योजन, नींवै मूल्यास सौ योजन, उपरि मुख व्यास पचास योजन जानना । बहुरि अतीत कालविषै भए चक्रवर्ती तिनके नामनि करि भरया है । जो चक्रवर्ती होइ सो तिस पर्वतविषै अपना नाम अक्षर लिखै है ॥ ७१० ॥

आगैं तैसेही आर्यखंडके मध्य तिष्ठै है जो राजधानी नगरी तीहविषै व्यास आयाम कहै हैं;-

सगतीसयणयराणि य उवजलधिगभद्दारखंडमज्झम्मि ।
बारस णव य बारस वासायामेण होंति कमे ॥ ७११ ॥

सप्ततिशतनगराणि च उपजलधिगार्यखंडमध्ये।
चक्रिणां नव द्वादश व्यासायामाभ्यां भवंति क्रमेण ॥ ७११ ॥

अर्थ—उप समुद्र करिए खाड़ी समुद्र ताकी प्राप्त जो आर्यखंड तीहके मध्य व्यास जो चौड़ाई अर आयम जो लंबाई तिनकरि क्रमते नव बारह योजन प्रमाण पंच मेरुसंबंधी विदेह देश अर भरत ऐरावतनिविषै एकसौ सत्तरि चक्रवर्तीनिके व्यास योग्य मुख्य नगर हैं ॥ ७११ ॥

आगैं तिन नगरनिके नाम गाथा ३ श्लोक च्यारि करि कहैं हैं;—

खेमा खेमपुरी चेव रिट्ठापुरी तहा।
खग्गा य मंजुसा चेव ओसही पुंडरीकिणी ॥ ७१२ ॥
क्षेमा क्षेमपुरी चैव अरिष्टा अरिष्टपुरी तथा।
खड्गा च मञ्जूषा चैव औषधी पुंडरीकिणी ॥ ७१२ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त कच्छादि विदेह देशनिविषै मुख्य राजधानी नगरीनिके क्रमतैं नाम करिए है। क्षेमा १ क्षेमपुरी १ अरिष्टा १ अरिष्टपुरी १ खड्गा १ मंजूषा १ औषधी १ पुंडरीकिणी १ ॥ ७१२ ॥

सुसीमा कुंडला चेवापराजिद पहंकरा।
अंका पब्भावदी चेव सुभा रयणसंचया ॥ ७१३ ॥
सुसीमा कुंडला चैव अपराजिता प्रभंकरा।
अंका पद्मावती चैव शुभा रत्नसंचया ॥ ७१३ ॥

अर्थ—सुसीमा १ कुंडला १ अपराजिता १ प्रभंकरा १ अंका १ पद्मावती १ शुभा १ रत्नसंचया १ ॥ ७१३ ॥

अरजपुरी सीहपुरी महापुरी तह य होंदि विजयपुरी।
अरया विरया चेव असोगया वीदसोगा य ॥ ७१४ ॥
अरजपुरी सिंहपुरी महापुरी तथा च भवति विजयपुरी।
अरजा विरजा चैव अशोका वीतशोका च ॥ ७१४

अर्थ—अरजपुरी १ सिंहपुरी १ महापुरी १ तैसैं ही विजयपुरी १ अरजा १ विरजा १ अशोका १ वीतशोका १ ॥ ७१४ ॥

विजया य वइजयंती जयंत अपराजिदा य बोधव्वा।
चक्कपुरी खग्गपुरी होंदि अयोज्झा अवज्झा य ॥ ७१५ ॥
विजया च वैजयंती जयंता अपराजिता च बोद्धव्या।
चक्रपुरी खड्गपुरी भवति अयोध्या अवध्या च ॥ ७१५ ॥

अर्थ—विजया १ वैजयंती १ जयंता १ अपराजिता १ चक्रपुरी १ खड्गपुरी १ अयोध्या १ अवध्या १ ऐसे ए बत्तीस नाम जानने। बहुरि भरत ऐरावत विषै चक्रवर्तीके नगरनिका नाम कोई एक नियमरूप नाहीं तातैं इनि पूर्वोक्त नामनिविषै कोई एक नाम हो है। जातैं दूजा नाम न कह्या ॥ ७१५ ॥

आगैं तिन नगरनिका विशेष स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

रयणकवाडवरावर सहस्सदलदार हेमपायारा ।
बारसहस्सा वीही तत्थ चउप्पह सहस्सेकं ॥ ७१६ ॥

रत्नकपाटवरावराः सहस्रदलद्वारा हेमप्राकाराः ।
द्वादशसहस्राणि वीथ्यः तत्र चतुष्पथानि सहस्रैकम् ॥ ७१६ ॥

अर्थ—तिन नगरनिकै द्वारनिविषै रत्नमई किवाड हैं । उत्कृष्ट बड़े हजार द्वार हैं । छोटे ताके आधे पांचसै द्वार हैं सुवर्ण मई कोट है तीह नगरकै अभ्यंतर बारह हजार गली है । तहां एक हजार चतुष्पथ चौपटा मार्ग हैं ॥ ७१६ ॥

णयराण बहिं परिदो वणाणि तिसदं ससट्ठि पुरमज्झे ।
जिणभवणा णरवइजणगेहा सोहंति रयणमया ॥ ७१७ ॥

नगराणां बहिः परितः वनानि त्रिशतं सषष्टिः पुरमध्ये ।
जिनभवनानि नरपतिजनगेहानि शोभंते रत्नमयानि ॥ ७१७ ॥

अर्थ—नगरनिकै बाह्य चौगिरद साठि सहित तीनसै वन कहिए बाग हैं । बहुरि मध्य जिन मंदिर अर नरपति राजाका मंदिर अर अन्य जननिके मंदिर रत्नमई सोभै हैं । इहां क्षेत्रविषै मेरु आदिका अवस्थान ऐसैं जानना ॥ ७१७ ॥

अब नाभि गिरिनिका अवस्थान अर तिनका उत्सेध आदिक गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

थिरभोगावणिमज्झे णाभिगिरीओ हवंति वीसाणि ।
चट्टा सहस्सतुंगा मूलुवरिं तत्तिया रुंदा ॥ ७१८ ॥

स्थिरभोगावनिमध्ये नाभिगिरयः भवंति विंशतिः ।
वृत्ताः सहस्रतुंगा मूलोपरि तावंतः रुंदाः ॥ ७१८ ॥

अर्थ—स्थिर भोग भूमि हैमवत हरि रम्यक हैरण्यवत क्षेत्र तिनके मध्य प्रदेशनि एक नाभि गिरि गोल हैं । बहुरि हजार योजन ऊंचे हैं । बहुरि नीचे वा उपरि तितनेही योजन चौड़े हैं । भाव यह ऊभा दोलके आकारि हैं ते पंचमेरु संबंधी बीस नाभि गिरि हैं ॥

अद्दावं विजटावं पउमगंधवण्णाम सुक्किला सिहरे ।
सक्कुणचर सादीचारणपउमप्पहास वाणगुरा ॥ ७१९ ॥

अदावान् विजटावान् पद्मगंधवन्नामानि शुक्लाः शिखरे ।
शक्रद्विजानुचरः स्वातिचारणपद्मप्रभाः वानगुराः ॥ ७१९ ॥

अर्थ—हैमवतादि विषै अदावान् १ विजटावान् २ पद्मवान् ३ गंधवान् ४ ऐसे संज्ञा धारी नाभि गिरिनिके नाम हैं । बहुरि ते नाभिगिरि श्वेतवर्ण हैं । बहुरि गिरि ऊपरि सिद्धायतन कूटनि विषै क्रमतैं इन्द्रके अनुचर पाकर स्वाति १ चारण २ पद्म ३ प्रभास ४ देव वसै हैं ॥ ७१९ ॥

अब हिमवत् आदि कुलाचल अर विजयार्द्ध पर्वत तिनके उपरि तिष्टते जे कूट तिनकी संख्यादिक कहैं हैं;—

एकारसट्ठणवणव अट्ठेकारस हिमादिकूडाणि।
वेयड्ढाणं णव णव पुव्वगकूडम्हि जिणभवणं ॥ ७२० ॥

एकादशाष्ट नव नव अष्टैकादश हिमादिकूटानि।
विजयार्धानां नव नव पूर्वकूटे जिनभवनानि ॥ ७२० ॥

अर्थ—ग्यारह ११ आठ ८ नव ९ नव ९ आठ ८ ग्यारह ११ प्रमाण क्रमतैं हिमवत् आदि कुलाचलनि उपरि कूट हैं। बहुरि विजयार्ध पर्वतनिकैं उपरि नव नव कूट हैं। लांबैं बहुत चौडे उपरि थोडे चौडे गोल आकार पर्वतनिकैं उपरि ए कूट जाननें। तहां पूर्वदिशासंबंधी प्रथम सिद्धायतन नामा कूट तिन उपरि जिन मंदिर हैं ॥ ७२० ॥

आगैं कहे कूट तिनके नाम आदिक गाथा दश करि कहैं हैं;—

कमसो सिद्धायदणं हिमवं भरहं इला य गंगा य।
सिरिकूडरोहिदस्सा सिंधु सुरा हेमवदय वेसमणं ॥ ७२१ ॥

क्रमशः सिद्धायतनं हिमवान् भरतं इला च गंगा च।
श्रीकूटं रोहितास्या सिंधुः सुरा हैमवतकं वैश्रवणं ॥ ७२१ ॥

अर्थ—क्रमकरि तिनके नाम कहिए है। सिद्धायतन १ हिमवत १ भरत १ इला १ गंगा १ श्रीकूट १ रोहितास्या १ सिंधु १ सुराकूट १ हैमवतक १ वैश्रवण १ ऐसैं हिमवत् कुलाचल उपरि ग्यारह कूट हैं ॥ ७२१ ॥

पढमे जिणिंदगेहं देवीओ जुवदिणामकूडेसु।
सेसेसु कूडणामा वेंतरदेवाणि णिवसंति ॥ ७२२ ॥

प्रथमे जिनेंद्रगेहं देव्यो युवतीनामकूटेषु।
शेषेषु कूटनामानः व्यंतरदेवा अपि निवसंति ॥ ७२२ ॥

अर्थ—तहां प्रथम सिद्धायतन कूट उपरि जिनेंद्र मंदिर है। बहुरि जैसैं या क्रम सहित जे कूट हैं जैसे हिमवत उपरि इला गंगा श्री रोहितास्या सिंधु सुराकूट हैं तिन उपरि व्यंतर देवी क्रीडे हैं। बहुरि अवशेष कूटनिके उपरि अपनें अपनें कूटके नाम सहित व्यंतर देव बसे हैं ॥ ७२२ ॥

सव्वे सव्वे कूडा रयणमया सगणगस्स तुरिपुरदो।
तत्थिय भूविस्थारा तद्दुगयदणा दु सव्वत्थ ॥ ७२३ ॥

इला सर्वे कूटा रत्नमया स्वकनाम्ना तूर्यदिशा।
तावद्विस्तारा, तद्द्विकोदना हि सर्वत्र ॥ ७२३ ॥

अर्थ—ते सर्व कूट इला आदि कहिए सोई है। रत्नमई है। बहुरि जितने अपने अपने पर्वतकी दिशाई तारे, तितने भाग प्रमाण उंचे हैं। बहुरि नीचे भूमितल विषैं तितने ही उदयतैं किंचित्

जाननें। तिस भूमिविस्तारतें आधा उपरि मुख व्यास है। ऐसें इन दोय गाथानिकरि कह्या विशेष सो सर्वत्र महाहिमवदादिकनिके कूटनिविषै भी जाननां ॥ ७२३ ॥

तो सिद्ध महाहिमवं हेमवदं रोहिदा हिरीकूडं।
हरिकंता हरिवरिसं वेलुरियं पच्छिमं कूडं ॥ ७२४ ॥
ततः सिद्धं महाहिमवान् हैमवतं रोहिता ह्रीकूटं।
हरिकांता हरिवर्षं वैडूर्यं पश्चिमं कूटं ॥ ७२४ ॥

अर्थ—तहां पीछें सिद्धकूट १ महा हिमवत् १ हैमवत् १ रोहिता १ ह्रीकूट १ हरिकांता १ हरिवर्ष १ वैडूर्य अंतका कूट १ ऐसें महा हिमवन् उपरि आठ कूट हैं ॥ ७२४ ॥

सिद्धं णिसहं च हरिवरिसं पुव्वविदेह हरिधिदीकूडं।
सीतोदा णामदो अवरविदेहं च रुचगंतं ॥ ७२५ ॥
सिद्धं निषधं च हरिवर्षं पूर्वविदेहं हरिधृतिकूटं।
सीतोदा नाम अतः अपरविदेहं च रुचकांतम् ॥ ७२५ ॥

अर्थ—सिद्धकूट १ निषध १ हरिवर्ष १ पूर्वविदेह १ हरिकूट १ धृतिकूट १ सीतोदा नाम कूट १ पाछें पर अपर विदेह कूट अंतविषै रुचक कूट ऐसें निषद्र पर्वत उपरि नवकूट हैं॥७२५॥

सिद्धं णीलं पुव्वविदेहं सीदा य कित्ति णरकंता।
अवरविदेहं रम्मगमपदंसणमंतिमं णीले ॥ ७२६ ॥
सिद्धं नीलं पूर्वविदेहं सीता च कीर्तिः नरकांता।
अपरविदेहं रम्यकं अपदर्शनं अंतिमं नीले ॥ ७२६ ॥

अर्थ—सिद्ध १ नील १ पूर्व विदेह १ सीता १ कीर्ति १ नरकांता १ अपरविदेह १ रम्यक १ अंतका अपदर्शन १ ए नील पर्वत उपरि नवकूट है ॥ ७२६ ॥

सिद्धं रम्मी रम्मग णारी बुद्धी य रुप्पकूलक्खा।
हेरण्णं कूडमदो मणिकंचणमट्ठमं होदि ॥ ७२७ ॥
सिद्धं रम्यं रम्यक नारी बुद्धिश्च रूप्यकूलाख्या।
हैरण्यं कूटमतो मणिकांचनमष्टमं भवति ॥ ७२७ ॥

अर्थ—सिद्ध १ रम्य १ रम्यक १ नारी १ बुद्धि १ रूप्यकूला नाम १ हैरण्य कूट १ ऐसें मणिकांचन अष्टमा कूट हो है। ए रम्य उपरि आठ कूट हैं ॥ ७२७ ॥

सिद्धं सिहरि य हेरण्णं एरवदी तदो य रत्तवदी।
लक्खी सुवण्ण रत्तवदी गंधवदीय कूडमदो ॥ ७२८ ॥
सिद्धं शिखरी च हैरण्यं ऐरावती ततश्च रक्तावती।
लक्ष्मीः सुवर्णं रक्तवती गंधवती कूटमतः ॥ ७२८ ॥

अर्थ—सिद्धकूट १ शिखरी १ हैरण्य १ ऐरावती १ तहां पीछे रक्तावती १ लक्ष्मी १ सुवर्ण १ रक्तवती कूट १ ऐसें ही ॥ ७२८ ॥

एरावदमणिकंचणकूडं सिहरिम्हि सव्वसेलाणं।
मूले सिहरेवि हवे दहेवि वणखंडमेदस्स ॥ ७२९ ॥
ऐरावतमणिकांचनकूटे शिखरे सर्वशैलानाम्।
मूले शिखरेपि भवेत् ह्रदेपि वनखंडमेतस्य ॥ ७२९ ॥

अर्थ—ऐरावत १ मणि कांचन १ कूट १ ए शिखरी पर्वत उपरि ग्यारह कूट हैं। ऐसें ९ कूट कहे इन कूटनिका ऐसा आकार जानना। बहुरि सर्व ही पर्वतनिके मूलविषै नीचे अर शिखरविषै ऊपरि अर द्रहनिविषै चौगिरद वन खंड हैं ॥ ७२९ ॥

याका कहा सो कहै हैं;—

गिरिदीहो जोयणदलवासो वेदी दुकोसतुंगजुदा।
धणुपणसयवासा णगवणणदिदहपहुदिएसु समा ॥ ७३० ॥
गिरिदैर्घ्यं योजनदलव्यासं वेदी द्विक्रोशतुंगयुता।
धनुःपंचशतव्यासा नगवननदीह्रदप्रभृतिषु समा ॥ ७३० ॥

अर्थ—इस वनखंडका जितना अपनें अपनें पर्वतका लंबाईका प्रमाण है तितना लंबाईका प्रमाण है। बहुरि आध योजन चौड़ाईका प्रमाण है। बहुरि तिस वन खंडकी वेदी सो पांचसै धनुष चौड़ी दोय कोस ऊंची है। सो ए वेदी पर्वत वन नदी द्रह आदिविषै ऊंचाई चौड़ाईका प्रमाण करि समान है। जैसे बागकै चौगिरद पिनां कांगुरां भींति हो है ताका नाम वेदी जानना ॥७३०॥

अब पर्वतादिकनिविषै सर्वत्र वेदिकानिकी संख्या कहै हैं;—

तिसदेकारससेले णउदीकुंदे दहाण छव्वीसे।
तावदिया मणिवेदी णदीसु सगमाणदो दुगुणा ॥ ७३१ ॥
त्रिंशतिकादशशैलेषु नवतिकुंडेषु ह्रदानां षड्विंशतौ।
तावत्यः मणिवेद्यः नदीषु स्वकमानतः द्विगुणाः ॥ ७३१ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपविषै तीनसै ग्यारह पर्वत हैं तहां तितनी ही मणिमई वेदी हैं। बहुरि निवै कुंड हैं तहां तितनी ही मणिमई वेदी है। बहुरि छवीस द्रह हैं। तहां तितनी ही मणिमई वेदी हैं। बहुरि जे नदी हैं तहां दोऊ पारेनिविषै वेदी पाईए है। तातैं अपने नदीनिका प्रमाणतैं दूणी मणिमई वेदी हैं। याने इस कहे अर्थकों विशेष वर्णे हैं। जंबूद्वीपविषै एक सौ मेरु १ छह कुलाचल ६ च्यारि यमक पर्वत ४ दोयसै कांचनगिरि २०० आठ दिग्गज पर्वत हैं ८ सोलह वक्षार हैं १६ च्यारि गजदंत हैं ४ चौंतीस विजयार्द्ध हैं ३४ चौंतीस वृषभाचल हैं ३४ च्यारि नाभि गिरि हैं ४ इनकों मिलाएं तीनसै ग्यारह पर्वतनिकी संख्या हो है। बहुरि गंगादि महानदी जहां कुलाचलनैं पड़ै हैं ते कुंड चौदह १४ विभंगानदी जिननैं उपजै हैं ते कुंड बारह १२ गंगा सिंधु समान विदेह देशनिविषै दोय दोय नदी जिननैं उपजै हैं ते कुंड चौसठि ए मिलें निवै कुंड हो हैं। बहुरि कुलाचलनिकै उपरि द्रह छह ६ सीतानदीविषै द्रह दश १० सीतोदा नदीविषै द्रह दश १० ए सर्व मिलें छवीस द्रह हो हैं। बहुरि गंगा सिंधु रक्ता रक्तोदा इन एक एककै परिवार नदी चौदह हजार

अर्थ—सिद्ध कूट १ माल्यवत १ उत्तर कौरव १ कच्छ १ सागर १ रजत १ पूर्णभद्र १ सीता १ हरिसह कूट नवमां हो है। ए माल्यवत गजदंत उपरि नव कूट हैं ॥ ७३८ ॥

तो सिद्धं सोमणस कूडं देवकुरु मंगलं विमलं।
कंचण वसिहमंते सिद्धं विज्जुप्पहं तत्तो ॥ ७३९ ॥
ततः सिद्धं सौमनसं कूटं देवकुरु मंगलं विमलं।
कांचनं अवशिष्टमंते सिद्धं विद्युत्प्रभं ततः ॥ ७३९ ॥

अर्थ—तहां पीछे सिद्धकूट १ सौमनस कूट १ देव कुरु कूट १ मंगल १ विमल १ कांचन १ अंत विषै वशिष्ट कूट ऐसें ए सौमनस गजदंत उपरि सात कूट हैं। बहुरि तहां पीछे सिद्ध कूट १ विद्युत्प्रभ ॥ ७३९ ॥

देवकुरु पउम तवणं सोत्थियकूडं सदज्जलं तत्तो।
सीतोदा हरि चरिमं तो सिद्धं गंधमादणयं ॥ ७४० ॥
देवकुरुः पद्मं तपनं स्वस्तिककूटं शतज्वालं ततः।
सीतोदा हरि चरमं ततः सिद्धं गंधमादनकं ॥ ७४० ॥

अर्थ—देव कुरु १ पद्म १ तपन १ स्वस्तिककूट १ शतज्वाल १ तहां पीछे सीतोदा १ अंतका हरिकूट १ ऐसें ए विद्युत प्रभ गजदंत उपरि नव कूट हैं। बहुरि तहां पीछे सिद्धकूट १ गंधमादन ॥ ७४० ॥

उत्तरकुरु गंधादीमालिणि तो लोहिदक्ख फलिहंते।
आणंदं मालवदुग तिण्णि सुभोगा य भोगमालिणिया ॥ ७४१ ॥
उत्तरकुरु गंधादिमालिनी ततो लोहिताभं स्फटिकमंते।
आनंदः माल्यादिके त्रयो सुभोगा च भोगमालिनी ॥ ७४१ ॥

अर्थ—उत्तरकुरु १ गंधमादिनी १ तहां पीछे लोहितनामा कूट १ स्फटिक १ अंत विषै आनंदकूट १ ए नीलवान गजदंत उपरि सात कूट हैं। ए कूटनि विषै तीन देवी अर एक एक कूटनि विषै सुभोगा अर भोगमालिनी नामा अन्य देवी वसै हैं ॥ ७४१ ॥

विमलदुगं वज्जादीविचित्त सुचित्ता य वारिसेण कणा।
कणगदुगं भोगंकर भोगवदी कणयलोहिदे देवी ॥ ७४२ ॥
विमलद्विकं वज्रादिविचित्रा सुचित्रा च वारिषेणा कनका।
कनकद्विकं भोगंकरा भोगवती कनकलोहिते देवी ॥ ७४२ ॥

अर्थ—विमल अर कांचन दोऊ कूटनि विषै वज्रादिविचित्रा अर सुचित्रा नामा अन्य देवी वसै हैं। कनक अर कनकप्रभ दोऊ कूटनि विषै वारिषेणा अर कनका नामा अन्य देवी वसै हैं। बहुरि लोहित अर लोहितप्रभ दोऊ कूटनि विषै कनकलोहिता अर कनकचित्रा नामा अन्य देवी वसै हैं ॥ ७४२ ॥

सिट्ठ वरवारवरुद्द रुचगसिरिदलसमाहदूदुगं।
दूरुत्तर पण अट्ठ दूरुदया य वरणागदीवम्हि ॥ ७४३ ॥

सिद्धं वक्षारास्यं अवस्तनोपरिमदेशनामाकूटद्वयं।
द्विनव पंच षोडश दिक्कटा च वक्षारदीर्घत्वम् ॥ ७४३ ॥

अर्थ—यानें उपरि सोळह वक्षार गिरिनि उपरि च्यारि च्यारि कूट हैं। तहां एक सौ सिद्ध कूट है। बहुरि एक जो जो अपनें अपनें वक्षारका नाम सौंह नामका धारक कूट है। बहुरि दोय जो जो अपनें अपनें वक्षारकै पूर्व पश्चिम पार्श्ववर्ती दोय विदेह देवनिका जे नाम तिन नामनिके धारक कूट हैं। ऐसें च्यारि च्यारि कूट जाननें। जैसें चित्रकूट वक्षार उपरि सिद्धायतन १ चित्रकूट १ कूटा १ सुकूटा ए च्यारि कूट हैं। ऐसें ही अन्यत्र जाननें। बहुरि वक्षार पर्वतनिकी लंबाई दोय नव पांच सोळह लाखै सोळह हजार पांचसै बावीसे योजन अर एकका उगणीसवां भाग तिसै दोय कला इतने प्रमाण जाननी। यह कैसें? तेतीस हजार एकसै चौरासी योजन च्यारि कला विदेहका विष्कंभ है। तामैं सीता सीतोदानदीका विवक्षित व्याम पांचसै योजन ५०० घटाइ अवशेष ३३१८४।४÷१९ को आधा किये १६५९२।२÷१९ वक्षार गिरिनिकी लंबाईका प्रमाण आवै है ॥ ७४३ ॥

कुलगिरिसमीपकूटे दिक्कन्याओ वसंति सेसेसु।
पाणा कूटप्पमाहिद णगदीहो कूटभेयरयं ॥ ७४४ ॥
कुलगिरिसमीपकूटे दिक्कन्याः वसंति शेषेषु।
पानाः कूटप्रमाहित नगदैर्घ्यं कूटानां ॥ ७४४ ॥

अर्थ—कुलगिरि कहिए कुलाचल तिनके समीप जे वक्षारके दिए नदीके बक्षार एक एक दिशे उपरि जो कूट हैं तहां दिक्कुमारी बसै हैं। अवशेष दोय नदीतनिके सात सात कूट दोय नदीतनिके एक पांच कूट वक्षार गिरिनिके दोय दोय कूट तिन उपरि व्यंतर देव बसै हैं। सिद्धकूट उपरि जिन मंदिर है ही। बहुरि अपना अपना कूटके प्रमाणका भाग अपना अपना पर्वतकी लंबाईके दीए जो जो प्रमाण आवै तितना तितना कूट कूटनिमें बीचि अंतराल है। तहां दोय नदीतनिके नव नवकूट दोय नदीतनिके सात सात कूट वक्षार गिरिनिके च्यारि च्यारि कूट जानें। बहुरि गज दंतनिकी लंबाई तीस हजार दोयसै नव योजन एक कला है। वक्षार गिरिनिकी लंबाई सोळह हजार दोयसै बावीसे योजन दोय कला है। तहां नव कूटनिका अंतराल तीस हजार दोयसै नव योजन एक कला प्रमाण गजदंत क्षेत्र दोय सौ एक कूटका अंतरालका विष्कंभ क्षेत्र दोय सौ

गिरिका क्षेत्र दाइ सौ एक कूटके अंतराळका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक करि अंश अं
भाग देइ मिटाएं च्यारि हजार एकसौ अठतालीस योजन अर एकका अठतालीसवां भाग प्र
च्यारि कूटनिके बीचि अंतराळ हो है ॥ ७४४ ॥

आगैं वक्षारनिकी उचाई तहां तिष्टते अकृत्रिम चैत्यालयनिका स्थान तिहि निर्देश करै है;

वक्खारसयाणुदओ कुलगिरिपासम्हि चउसयाणुट्ठा ।
णइमेरुस्स य पासे पंचसया तत्थ जिणगेहा ॥ ७४५ ॥

वक्षारशतानामुदयः कुलगिरिपार्श्वे चतुःशतं वृद्धया ।
नदीमेरोश्च पार्श्वे पंचशतानि तत्र जिनगेहाः ॥ ७४५ ॥

अर्थ—पांचमेरुसंबंधी गजदंतसहित वक्षारगिरि एकसौ है । तिनकी उचाई कुलाचल
निकटि सौ च्यारिसै योजन प्रमाण है । बहुरि तातैं परैं अनुक्रमकरि बधते बधते विदेहविषै
वक्षारगिरि सोतो सीता वा सीतोदा नदीके निकटि अर गजदंत मेरु गिरिके निकटि पांचसौ
जुडे है । तहां पांचसै योजन उचाई जहां पाईए तहां सिद्धकूट जानना । सौ उचाई
धरि है ॥ ७४५ ॥

आगैं सब आदि कूटनिकी उंचाई स्थानकैं कहणसूत्र कहै है;—

गिरितुरिये पढमणिमाहदओ उभयरोसमरहरिदं ।
वेगसदेण चयो सो इट्ठगुणो मुहजुदो इट्ठे ॥ ७४६ ॥

गिरितुरीये प्रथमनिमकूटोदयः उभयशोषमरहतं ।
वेगशतेन चयः स इष्टगुणः मुखयुतः इष्टे ॥ ७४६ ॥

अर्थ—वक्षार गिरिनिकी उंचाईका चौथा भाग प्रमाण सौ तहां उपरि निपजता प्रथम अर अं
की उंचाईका प्रमाण जानना । बहुरि इनिविषै प्रथम कूटकी उंचाईका प्रमाण अंतकूटकी उंचा
प्रमाणविषै घटाइ जो अवशेष रहै तामैं प्रथम हानिचयका भाग है । सो एक घाटि अं
अंतर कूट प्रमाण गच्छका भाग दिएं हानिचयका प्रमाण आवै है । सो हानिचय
अंतका कूट ऐसा कूट ऐसे सौ प्रमाण गच्छकरि गुणया हुवा अर प्रथम कूटकी उचाईका प्र
अर ऐसे दूणा करि संयुक्त किया हुवा दिशाविषै इस कूटकी उचाईका प्रमाण आवै है ।
इहां दिशाविषै उचाई कहि अर्थात् आठविषै पांचसै योजन जिनका चौथा भाग प्रथम कू
उचाई सौ योजन अंतकूटकी उचाई पांचसै योजन इन दोऊनका अवशेष रहै पां
सौ योजन एक घाटि गच्छ सोलह सोलह योजन हानिचयका प्रमाण आवै है । अर
सौ योजन दूणा करि संयुक्त किया हुवा दिशाविषै इस कूटकी उचाईका प्रमाण आवै है ।
अब इहां आठ दिशा विषै जो प्रथम कूट सौ योजन उंचा कह्या तिनविषै
कूटकी उचाई पांचसै योजन कही तहां पूर्वोक्त विधान करि हानिचय सोलह सोलह यो
आवै है । सो इहां भी पूर्वोक्त विधान करि हानिचयका प्रमाण आवै है । सो
कूटकी उचाईका प्रमाण जानना । बहुरि इनिविषै प्रथम कूटकी उचाईका प्रमाण
कूटकी उचाई है ॥ ७४६ ॥

चयकौं गुणैं द्वितियादि कूटविषै जो जो प्रमाण होइ ३।१÷८६।१÷४।९।३÷८।१२।१÷२।१५ ५÷८।१८।३÷४।२१।७÷८।२५ ताकौं मुख जो आदि कूटकी उचाई सौ योजन तीह करि जोडैं द्वितीयादि कूटनिकी उचाईका प्रमाण आवै है १०३।१÷८।१०६।१÷४।११०९।३÷८।११२।१÷२। ११५।५÷८।११८।३–४।१२१।७–८।१२५। ऐसैंही सात कूट च्यारि कूटनिकी उचाईका प्रमाण ल्यावना ॥ ७४६ ॥

अब भरत आदि क्षेत्रनिका आश्रयकरि परिवार रूप नदीनिका प्रमाण गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

भरहइरावदसरिदा विदेहजुगले च चोद्दससहस्सा।
णइपरिवारा तत्तो दुगुणा हरिरम्मगखिदित्ति ॥ ७४७ ॥

भरतैरावतसरितः विदेहयुगले च चतुर्दशसहस्राणि।
नदीपरिवाराः ततः द्विगुणा हरिरम्यकक्षेत्रांतं ॥ ७४७ ॥

अर्थ—भरत ऐरावतविषै च्यारि नदी अर पूर्व पश्चिम विदेह युगलविषै गंगादि चौसठि नदी तिन एक एक नदीकी चौदह हजार परिवार नदी हैं। तातैं परैं भरततैं हरिक्षेत्रपर्यंत ऐरावततैं रम्यकपर्यंत दूणा दूणा अनुक्रम जाननां। **भावार्थ**—हैमवत हैरण्यवत संबंधी च्यारि नदीनिकै एक एककै अठाईस हजार परिवार नदी हैं। अर हरि रम्यक क्षेत्रसंबंधी च्यारि नदीनिकै एक एककै छप्पन हजार परिवार नदी हैं ॥ ७४७ ॥

वादालसहस्सं पुह कुरुदुणदी दुगदुपासजादणदी।
चोद्दसलक्खवहसदरी विदेहदुगसव्वणइसंखा ॥ ७४८ ॥

द्वाचत्वारिंशत्सहस्राणि पृथक् कुरुद्वयनद्यः द्विकद्विपार्श्वजातनद्यः।
चतुर्दशलक्षाष्टसप्ततिः विदेहद्विकसर्वनदीसंख्या ॥ ७४८ ॥

अर्थ—देवकुरु उत्तर कुरुविषै नदीनिका दोय पार्श्वनितैं उपजी प्रथक प्रथक बियाल्लीस हजार नदी हैं। **भावार्थ**—देव कुरुविषै सीतोदा नदीका पूर्व पार्श्वविषै बियाल्लीस हजार पश्चिम पार्श्वविषै बियाल्लीस हजार परिवार नदी हैं। ऐसैं देव कुरुविषै निपजी चौरासी हजार नदी है। बहुरि उत्तर कुरुविषै सीता नदीका पूर्व पार्श्वविषै बियाल्लीस हजार पश्चिम पार्श्वविषै बियाल्लीस हजार परिवार नदी हैं। ऐसैं उत्तर कुरुविषै निपजी चौरासी हजार नदी है। बहुरि विदेह क्षेत्रविषै प्राप्त सर्व नदीनिकी संख्या अठहत्तरि अधिक चौदह लाख है। सो कैसें? विदेहविषै प्राप्त गंगासिंधु समान चौसठि नदी तिनकी प्रत्येक परिवार नदी चौदह हजार हैं। बहुरि विभंगा नदी बारह तिनकी प्रत्येक परिवार नदी अठाईस हजार। देव कुरु उत्तर कुरुविषै सीता सीतोदाकी प्रत्येक परिवार नदी चौरासी हजार इन परिवार नदीनिका प्रमाणकौं मूल नदीनिका प्रमाणरूप अपनां अपनां गुणकार गुणें तहां मूलनदी अठहत्तरि मिलाएं सर्व मिली हुई विदेहविषै चौदह लाख अठहत्तरि नदी हो हैं ॥ ७४८ ॥

लक्खणियं बाणउदीसहस्स चारं च सव्वणइसंखा।
भरहेरावदपहुदी हरिरम्मगखेत्तओत्ति णादव्वा ॥ ७४९ ॥

की चौसठि शलाकानिका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक करि दश करि अपवर्त्तन किएं छह चालीस हजारका उगणीसवा भाग प्रमाण विदेह क्षेत्रका व्यास हो है। यामैं मेरु गिरिका भू दशहजार योजन समछेद करि घटाएं साढा च्यारि लाखका उगणीसवां भाग होइ याकौं किएं दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका व्यास हो है। कुरु अरु मेरुविषै इतनां अंतराल है सोई यहु कुरु क्षेत्रका बाण जाननां ॥ ७५९ ॥

अब याकौं धरि जीवाकी कृति अर चापकी कृति कौं स्यावै हैं;—

इसुहीणं विक्खंभं चउगुणिदिसुणा हदे दु जीवकदी।
बाणकदिं छहिं गुणिदे तत्थ जुदे धणुकदी होदि ॥ ७६० ॥

इषुहीनं विष्कंमं चतुर्गुणितेषुणा हते तु जीवाकृतिः।
बाणकृतिं षड्भिः गुणिते तत्र युते धनुःकृतिः भवति ॥ ७६० ॥

अर्थ—बाण करि हीन जो वृत्त विष्कंभ ताकौं चौगुणा बाण करि गुणैं जीवाकी हो है। बहुरि बाणकी कृतिकौं छह गुणी करि तिस जीवाकी कृति विषै मिलाएं धनुषकी हो है। जिस राशिका वर्गमूल ग्रहण करनां होइ ऐसा जो वर्गरूप राशि ताका नाम कृति सो जंबूद्वीप विषै देव कुरु वा उत्तर कुरुका आगैं कहिए हैं जो वृत्त विष्कंभका प्रमाण एक कोड़ि इकईस लाख पैंसठि हजार च्यारिसै निवै योजनका एकसौ इकहत्तरिवां भाग १२१६५४९०-१७१ सौ बाणका जो प्रमाण दोय लाख पचीस हजार योजनका उगणीसवां भाग २२५००÷१९ ताकौं भाजक नव गुणांकरि समछेद करि २०२५००० – १७१ घटाइ अवशेष एक कोड़ि एक लाख चालीस हजार च्यारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवा भाग रह्या १०१४०४९०÷१७१ ताकौं चौगुणा बाणका प्रमाण नव लाखका उगणीसवां भाग करि गुणिए तहां गुणकारकी पांच बिंदी गुण्य आगैं स्थापिए १०१४०४९०००००० ÷ १७१। बहुरि गुण्यका भागहार एकसौ इकहत्तरि चौगुणा बाणविषै नवका अंक था तीह सहित अपवर्त्तन किएं उगणीस भए। बहुरि चौगुणा बाण गुण्यविषै उगणीसका भागहार था तिसकरि याकौं गुणैं तीनसौ इकसठि भए। ऐसैं एक लाख हजार च्यारिमैं च्यारि कोड़ि निवै लाखका तीनसै इकसठियां भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रकी जीवाकी इषु याका वर्गमूल ग्रहण किएं दशहजार सात हजारका उगणीसवां भाग भया सो अपना भागहारका दिएं तेरहन हजार योजन प्रमाण देवकुरु वा उत्तर कुरुकी जीवा हो है। बहुरि दोय लाख पचीस हजार योजनका उगणीसवां भाग प्रमाण जो बाण २२५००० ÷ १८ ताकी कृति करिए ५०६२५००००० ÷ ३६१ बहुरि ताकौं छह गुणा करी याकौं ३०३७५०००००० – ३६१ पूर्वोक्त जो जीवाकी कृति १०१४०४९०००००० ÷ ३६१ तामैं जोडिए १३१७२९०००००० ÷ ३६१ तब धनुषकी कृति हो है। याका वर्गमूल ग्रहण करि ११४७५४ ÷ १९ भागहारका भाग दिएं साठि हजार च्यारिसै अठ्यासी योजन अर बारह उगणीसवां भाग ६०४८ १२ ÷ १९ प्रमाण देवकुरु वा उत्तर कुरुका चाप हो है। बहुरि दूणी करी जो बाणकी कृति ५०६२५००००० ÷ ३६१ ताका वर्गमूल ग्रहण करि २२५००० ÷ १९ भागहार

[illegible] [illegible] [illegible] [

जीवाहतेषुपादं जीवाइंषुयुतदलं च प्रत्येकं ।
दशकरणिबाणगुणिते सूक्ष्मेतरफलं च धनुःक्षेत्रे ॥ ७६२ ॥

अर्थ—जीवा करि गुण्या हुवा बाणका चौथा भागकौं जुदा स्थापिए । बहुरि बाणकौं जोड़ि ताका आधाकौं जुदा स्थापिए। तहां पहलैं स्थापन किया ताका विष्कंभ सूत्रतैं वर्ग करि दश गुणा करि मूल ग्रहण योग्य राशि रूप करिए ताका वर्ग मूल धनुषाकार क्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है । बहुरि पीछै स्थापन कीया ताकौं बाण करि क्षेत्र फल हो है । सो जंबू द्वीपके कुरु क्षेत्रनिविषै दोय लाख पचीस हजारका उगण प्रमाण बाण है ताका चौथा भाग ५६२५०÷१९ कौं जीवा तेरेपन हजार करि २९८१२५०००÷१९ बहुरि विष्कंभ वर्गदह गुण इत्यादि सूत्रतैं याका वर्ग करि करणि करिए है । ८८८७८५१५६२५०००००००००÷३६१ याका वर्ग मूल नवसै बियाळीस कोड़ि पिचहत्तरि लाख चाळीस हजार दोयसै चौहत्तरि योजनका उगण प्रमाण कुरु क्षेत्रका सूक्ष्म फल हो है । तार तम्य करि एक योजनके लंबे चौड़े खंड कर हैं । बहुरि जीवा तेरेपन हजार योजन ताकौं उगणीस करि समछेद करि १००७०००÷१ प्रमाण दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भागमैं जोड़ि १२३२०००÷१९ ताकौं ६१६०००÷१९ बहुरि याकौं बाण २२५०००÷१९ करि गुणें तेरह हजार अ कोड़िका तीनसै इकसठिवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका स्थूल क्षेत्र फल हो है । स्थूल पनै एक योजन लंबे चौड़े खंड करयें इतनें हो हैं ॥ ७६२ ॥

आगें अन्य प्रकार करि वृत्त विष्कंभ अर बाणके ल्यावनेंकौं करण सूत्र कहै हैं—

दुगुणिसु कदिजुद जीवावग्गं चउबाणभाजिए वट्टं ।
जीवा धणुकदिसेसो छब्भत्तो तप्पदं बाणं ॥ ७६३ ॥

द्विगुण्येषुं कृतियुतं जीवावर्गं चतुर्बाणभक्ते वृत्तं ।
जीवा धनुःकृतिशेषः षड्भक्तः तत्पदं बाणम् ॥ ७६३ ॥

अर्थ—दुगुण बाणका वर्ग करि जोड्या हुवा जीवाका वर्गकौं चौगुणा बाणका वृत्त विष्कंभ हो है । बहुरि जीवाकी कृति धापिकी कृतिमैंसों घटाइ अवशेषकौं छहका जो प्रमाण होइ ताका पद कहिए वर्गमूल सो बाण हो है । सो जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रनि लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण बाणकौं दूणा करि ४५००००÷१९ ताकौं २०२५००००००००÷३६१ यामैं जीवा तेरेपन हजार प्रमाण ताका वर्ग २८०९० सम छेद करि १०१४०४९००००० जोड़िए १२१६५४९०००००÷३६१ य चौगुणा बाणका प्रमाण ९००००÷१९ का पूर्वोक्त अपवर्तन विधान करि भाग दीएं ए इकईस लाख पैंसठि हजार च्यारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवा भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रका वृत्त हो है । बहुरि पूर्वोक्त जीवाका वर्गकौं ४ समछेद करि १०१४०४९००००० धनु १३१७७०९०००००÷३६१ मैंसों घटाइ ३०३७५००००००÷३६१ अवशेष

भाग दिएं जो प्रमाण ५०६२५०००००००÷३६१ होइ ताका वर्ग्ग मूल ग्रहण किएं दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका बाण हो है ॥ ७६३ ॥

आगें अन्य प्रकारका करि बाण स्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

जीवाविक्खंभाणं वग्गविसेसस्स होदि जम्मूलं ।
तं विक्खंभा सोहय सेसद्धमिसुं विजाणाहि ॥ ७६४ ॥

जीवाविष्कंभयोः वर्गविशेषस्य भवति यन्मूल ।
तत् विष्कंभात् शोधय शेषार्धमिषुं विजानीहि ॥ ७६४ ॥

अर्थ—जीवाका वर्ग्ग वृत्त विष्कंभका वर्ग्गमेंसौं घटाएं अवशेष जो रहै ताका जो वर्ग्गमूल ताकौं वृत्त विष्कंभका प्रमाणमेंसौं घटाएं अवशेष रहै ताका आधा बाणका प्रमाण जानहु । सो जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रविषै जीवा तरेपन हजार ताका वर्ग २८०९०००००० कौं वृत्त विष्कंभ एक कोडि इक ईस लाख पैंसठि हजार च्यारिसै निवैका एक सौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण ताका वर्ग्ग १४७९९९१४६०,४०१०० मैंसौं जीवाका वर्ग्गका समछेद करि ८२१३७९६९,०००००० −२९२४१ घटाएं अवशेष जो रहे ६५८६११९७ ९४०१००−२९२४१ ताका वर्ग्गमूल का जो प्रमाण ८११५४९०÷१७१ ताकौं पूर्वोक्त वृत्त विष्कंभका प्रमाण १२१६५४-९०÷१७१ मैंमौं घटाएं अवशेष जो रहै ४०५०००००६÷१७१ ताका आधा बीस लाख पचीस हजारका एकसौ इकहत्तरिवां भाग मात्र होइ सो इहां भाग हार एकसौ इकहत्तरिकौं नव गुणा उगणीस रहै सो स्यापि पूर्वोक्त अर्द्ध प्रमाणके भाज्यकौं २०२५००० नवका भाग दिएं दोय लाख पचीस हजार भाज्य होइ अर अवशेष उगणीस भागहार रहै सो इतनां कुरुक्षेत्रका बाण जानना ॥७६४॥

आगैं अन्य प्रकार करि वृत्त विष्कंभ अर बाणके स्यावनेकौं करण सूत्र कहैं हैं;—

दुगुणिसुहिदधणुवग्गो बाणोणो अद्धिदो हवे वासो ।
वासकदिसहिदधणुकदिदलस्स मूलेवि वासमिसुसेसं ॥ ७६५ ॥

द्विगुणेषुहितधनुर्वर्गो बाणोनः अर्धितो भवेत् व्यासः ।
व्यासकृतिसहितधनुष्कृतिदलस्य मूलेपि व्यासमिषुशेषं ॥ ७६५ ॥

अर्थ—दूणा बाणका भाग धनुषका वर्गकौं दिएं जो प्रमाण होइ तामैं बाणका प्रमाण घटाइ अवशेषकौं आधा किए वृत्त विष्कंभका प्रमाण हो है । बहुरि वृत्त व्यासका वर्ग करि जोड्या हुवा ऐसा जो धनुषके वर्गका आधा प्रमाणका वर्ग मूल तामैंसौं वृत्त विष्कंभका प्रमाण घटाए बाणका प्रमाण हो है । सो जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रविषै बाण दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग ताकौं दूणा करि ४५०००÷१९ याका भाग पूर्वोक्त धनुषका वर्गकौं १३१७७९९०००००÷३६१ पूर्वोक्त प्रकार अपवर्तन विधान करि दीएं एक लाख चौवन हजार एकसौ अठाईस अर अवशेष च्यारिसै साठका आठसै पचावनवा भाग होइ सो अवशेषके भाज्य भागकौं पंचकरि अपवर्तन किएं बाणवेका एकसौ इकहत्तरिवां भाग होइ सो इनकौं समछेद करि मिलाइ २६३५५९८०−१७१ यानैं समछेद विधानकरि बाणका प्रमाण २०२५०००−१७१ घटाएं अवशेष २४३२०९८०−१७१

कौं आवाकरि १२१६५४९०÷१७१ अपनां भाग हारका भाग दिएं ७११४३७-१: कुरुक्षेत्रका वृत्त विष्कंभ हो है। बहुरि समछेद करि अपनें अंशकरि जोड्या हुवा जो वृत्त विष्कंभ प्रमाण १२१६५४९०÷१७१ ताका वर्ग करि १४७९९९१४६९४०१००÷२९२८१ पूर्वोक्त धनुषकी कृति १३१७७९९०००००००÷३६१ ताका अर्द्धप्रमाण ६५८८९९५...००÷३६१ कौं भाज्य भाजककौं इक्यासी गुणां करि समछेद करि ५३३७०८५९५०...÷२९२४१ जोड़िए २०१३७०००६४४०१००÷२९२४१ याका वर्गमूलका जो प्रमाण १४१९०४९०÷१७१ तामैं वृत्त विष्कंभ १२१६५४९०÷१७१ कौं घटाइ अवशेष लाख पचास हजारकौं एकसौ इक्हत्तरिवां भाग होइ सो इहां भाग हार उगणीस नवका छेद नव करि तिस भाज्यकौं भाग दिएं दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग होइ सो धनुष प्रमाण है ॥ ७६५ ॥

आगैं अन्य प्रकार करि धनुषकी कृति अर जीवाकी कृति ल्यावनेकौं करण सूत्र कहै है—

इसुदलजुदविक्खंभो चउगुणिदिसुणा हदे दु धणुकरणी।
बाणकदिं छहिं गुणिदं तत्थूणे होदि जीवकदी ॥ ७६६ ॥

इषुदलयुतविष्कंभः चतुर्गुणितेषुणा हते तु धनुःकरणी।
बाणकृतिं षड्भिः गुणितं तत्रोने भवति जीवकृतिः ॥ ७६६ ॥

अर्थ—बाणका अर्द्ध प्रमाण करि जोड्या हुवा विष्कंभ ताकौं चौगुणा बाणका प्रमाण करि गुणें धनुषकी कृति हो है। बहुरि बाणकी कृतिकौं छह गुणी करि ताकौं तिस धनुषकी कृति सौं घटाएं जीवाकी कृति हो है। सो इस जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रविषै बाण दोय लाख पचीस हजार उगणीसवां भाग ताकौं आधा करि ११२५००÷१९ याकौं नव करि समछेद करि १०१२५००÷१७१ पूर्वोक्त वृत्त विष्कंभका प्रमाण १२१६५४९०÷१७१ तिसै जोडि करि १३१७९९९०÷१७१ चौगुणा बाण ९०००००÷१९ करि गुणिए तहां गुण्य राशिका अन्त हार एकसौ इक्हत्तरिकौं उगणीस नव गुणाकरि दोय लाख पचीस स्थापिए १९।९ बहुरि गुणकारके पांच विंदी गुण्य राशिके आगैं स्थापिए १३१७७९९०००००० बहुरि गुणकारका नाम करि गुण्यका भागहार दोय लाख पचीस स्थापन किया था तामैं नवका अंककरि अपवर्तन करि अर दोय गुण्यका भाग हार उगणीस अर गुणकारका भागहार परस्पर गुणें सौनौं इकसठि भागहार होइ ऐसैं करतैं धनुषकी कृतिका प्रमाण १३१७७९९०००००००÷३६१ हो है। बहुरि बाणकौं करि ५०६२५०००००००÷३६१ ताकौं छह गुणाकरि ३०३७५०००००००÷३६१ तिस धनुषकी कृति १३१७७९९०००००००÷३६१ मैंसौं घटाएं अवशेष १०१४०४९०००÷३६१ प्रमाण जीवाकी कृति हो है। ऐसैं इषुरहित विष्कंभ इत्यादि सर्व व्यवस्था करण सूत्र विषै जाननी। ऐसैं सिद्धान्त विषै अर त्रिलोकसार आदि ग्रन्थनिविषै भी कथन है। तहां तहां ऐसी ही व्यवस्था जाननी। सो कैसैं सो कहिए है। पूर्व परिधिकी सर्व ओर ते वर्तुलाकार करि बहुरि बाणके प्रमाण सीधी रीति आनणी। सो त्रिलोकसार गाथा

[illegible] की दक्षिण जीवा है । विजयार्धकी उत्तर दिशाका सटका प्रमाण विजयार्धकी जीवा है । [illegible] जीवा प्रमाण संपूर्ण भरतकी जीवा है । हिमवत्का उत्तर सटका प्रमाण हिमवत्की जीवा है । महाहिमवत्के, सर्वात् हैमवतका प्रमाण हैमवतकी जीवा है । महाहिमवतके उत्तर सटका प्रमाण महाहिमवत्पर्वतकी जीवा है । निषधके, सर्वात् हरिका प्रमाण हरिकी जीवा है । निषधके उत्तर सटका प्रमाण सो निषधकी जीवा है । विदेह क्षेत्रका सर्वात् विदेहका प्रमाण विदेहकी जीवा है । जैसे पूर्व पश्चिम लंबाईका प्रमाण सो जैसे धनुषकी चिल्ला हो है तैसें जीवा जानी । अर जैसे धनुष हो है तैसें जीवाका एक पार्श्वतें लगाय दूसरे पार्श्व पर्यंत जंबूद्वीपका जो सटा दीखिए सोई बाण जानना । वा बाणों धनुष वा धनुः पृष्ठ भी कहिए । बहोरि जैसें त्रिभुज धनुषके क्षेत्र हो है तैसें निज जीवाका मध्यों लगाय सनमुख जंबूद्वीपका अवधि जो प्रमाण सो बाण जानना । जैसेही उत्तर ऐरावत आदि क्षेत्र इषी आदि कुजा-पत्रिका वरण जानना । विशेष इतना जहां उत्तर ताटका कला है तहां दक्षिण तट जानना । क्षेत्र कुजापत्रिका जो नाम है सो तहां नाम जानना ॥ ७६६ ॥

आगे अब दक्षिण भरत अर विजयार्द्ध अर उत्तर भरत क्षेत्रके बाण स्थापनेकौं सूत्र कहैं हैं;—

रूप्पगिरिदीणभरद्धव्वासदलं दक्खिणद्धभरहस्स ।
णगगुद णगसरसुत्तरभरहजुदं भरहरिंदिवाणो ॥ ७६७ ॥

रूप्यगिरिहीनभरतव्यासदलं दक्षिणार्धभरतेषुः ।
नगयुते नगसरः उत्तरभरतयुतें भरतक्षेत्रबाणः ॥ ७६७ ॥

अर्थ—रूप्य गिरि जो विजयार्द्ध ताका व्यास योजन पचास सो भरतका व्यास पांचसै छब्बीस एक कलामैंसो घटाइ अवशेष ४७६६-१९ कौं आधा किए दोयसै अठतीस योजन तीन कला प्रमाण दक्षिण आधा भरतका बाण हो है । यामैं विजयार्द्ध पर्वतका व्यास पचास योजन जोड़े दोयसै अठयासी योजन तीन कला प्रमाण विजयार्द्धका बाण हो है । यामैं उत्तर भरतका व्यास दोयसै अठतीस योजन तीन कला जोड़े पांचसै छत्तीस योजन छह कला संपूर्ण भरतका बाण हो है । इन तीनों बाणनिके समच्छेद करि अपना अपना अंश मिलाएं दक्षिण भरतका च्यारि हजार पांचसै पचासका उगणीसवां भाग विजयार्द्ध पांच हजार च्यारिसै पिचहत्तरिका उगणीसवांभाग संपूर्ण भरतका दश हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण जानना ॥ ७६७ ॥

आगें हिमवत आदि पर्वतनिका अर हैमवत आदि क्षेत्रनिका बाण स्थापनेकौं करण सूत्र कहैं हैं;—

हिमणगपहुदीवासो दुगुणो भरहूणिदो य णिसहोत्ति ।
सरसवाणा णिसहसरो सविदेहदलो विदेहस्स ॥ ७६८ ॥

हिमनगप्रभृतिव्यास. द्विगुणः भरतोनितश्च निषधांतम् ।
स्वस्वबाणा निषधशर सविदेहदल विदेहस्य ॥ ७६८ ॥

अर्थ—हिमवत पर्वत आदिका व्यास दूणा करि भरतका व्यास घटाएं [illegible] स्वकीय स्वकीय बाण हो हैं। सो एकसौ निवै शलाकानिका एक लाख योजन क्षेत्र होइ तौ [illegible] आदिकी दोय च्यारि आठ सोलह बत्तीस शलाकानिका कीत क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक करि [illegible] किएं हिमवत आदिका व्यास हो है। सो हिमवतका बीस हजारका हैमवतका चालीस [illegible] हिमवतका असी हजारका हरिका एक लाख साठि हजारका निषधका तीन लाख बीस हजारका [illegible] सवां भाग प्रमाण व्यास है। सो याकों दूणा करि यामैं सर्वत्र भरतका बाण दश हजारका उगणीसवां भाग घटाएं हिमवत आदिका क्रमतैं तीस हजार एक लाख ४००००÷१९। ८००००÷१९। १६००००÷१९। ३२००००÷१९। ६४००००÷१९। पचास हजार तीन लाख दश हजार [illegible] लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण बाण जाननां। बहुरि निषधका बाण छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग तामैं विदेहके व्यास छह लाख चालीस हजारका उगणीसवां भाग ताका आधा तीन लाख बीस हजारका उगणीसवां भाग जोड़े अर्द्ध विदेहका बाण नव लाख पचास हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है। अब इन बाणनकों धरि तिन क्षेत्र वा पर्वतनिकी जीवा कृति अर धनुः कृतिकों हसुहीणं विक्कंभ इत्यादि करण सूत्र करि ल्याईए सो कहिए है। दक्षिण भरत विषै समच्छेदरूप बाण च्यारि हजार पांचसै पचीसका उगणीसवां भाग ताकौं वेदीका व्यास छह योजन सो इहां वृत्त विष्कंभ जाननां। ताकौं उगणीसकरि समच्छेद करि १९÷००००÷१९ यामैंसों घटाइए १८९५४७५-१९ अब शेषकौं चौगुणा बाण १८१००÷१९ करि गुणें ३४३०८०९७५००÷३१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि १८÷५२२४÷१९ अपनां भाग हारका भाग दीएं नव हजार सातसै अठतालीस योजन बारह उगणीसवां भाग प्रमाण दक्षिण भरत क्षेत्रकी शुद्ध जीवा हो है। बहुरि बाण ४५२५÷१९ का वर्ग करि २०४७५६२५÷३६१ याकौं छह गुणा करि १२२८५३७५०÷३६१ यामैं तीन जीवाकी कृति ३४३०८०९७५०० कौं जोड़ें ३४४३०९५१२५०÷३६१ धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि १८५५५५÷१९ अपनां भागहारका भाग दिएं नव हजार सात सै अठतालीस योजन एक उगणीसवां भाग प्रमाण दक्षिण भरतका धनुष हो है। बहुरि विजयार्द्ध विषै समच्छेद रूप बीस पांच हजार च्यारिसै पिचहत्तरिका उगणीसवां भाग प्रमाण ताहि समच्छेदरूप [illegible] विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भाग प्रमाणमैंसों घटाइ अवशेष १८०४५२५÷१९ की चौगुणा बाणका प्रमाण २१०००÷१९ करि गुणें ४१४९००९७५००÷३६१ विजयार्द्धकी जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २०३६०१÷१९ अपनां भागहारका भाग दीएं दश हजार सातसै बीस योजन अर ग्यारह उगणीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्ध पर्वतकी जीवा हो है। बहुरि बाण ५४७५÷१९ का वर्ग करि २९०७५६२५÷३६१ याकौं छह गुणा करि १७४४५३७५०÷३६१ तीन विषै पूर्वोक्त जीवाकी कृति ४१४९००९७५००÷३६१ जोड़ें ४१६६९५१२५०÷३६१ धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २०४१३२÷१९ अपनां भाग हार १९ का भाग दिएं दश हजार सात सै [illegible]

अर पंद्रह उगणीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्ध पर्वतका धनुष होई है। बहुरि उत्तर भरतका समछेद रूप बांण दश हजारका उगणीसवां भाग ताकौ समछेदरूप वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भाग प्रमाणमैंसौं घटाइ अवशेष १८९०००-१९ कौ चौगुणा बाण ४००००÷१९, करि गुणें ७५६०००००००-३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २७४०-५४÷१९ अपनां भाग हार १९ का भाग दिएं चौदह हजार च्यारिसै इकहत्तरि योजन पांच उगणीसवां प्रमाण उत्तर भरत क्षेत्रकी जीवा हो है। बहुरि बाण १००००-१९ का वर्ग करि १०००००००००÷३६१ ताकौं छह गुणा करि ६०००००००००-३६१ याविषै जीवाकी कृति ७५६०००००००००÷३६१ जोड़ें ७६२०००००००००-३६१ धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २७६०४३-१९ अपना भाग हार १९ का भाग दिएं पंद्रह हजार पांचसै अठाईस योजन अर ग्यारह उगणीसवां भाग प्रमाण उत्तर भरत क्षेत्रका धनुष हो है। बहुरि हिमवत पर्वतका बाण तीस हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीस लक्षका उगणीसवां भाग मैं सौं घटाइ अवशेष १८७०००-१९ कौं चौगुणा बाण १२००००÷१९ करि गुणें २२४४००००००००-३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि ४७३७०९-१०, अपना भाग हार १९ का भाग दिएं पंद्रह हजार नवसै बत्तीस योजन अर किछू घाटि एक उगणीसवां भाग प्रमाण हिमवतकी जीवा हो है। बहुरि बाण ३००००÷१९ का वर्ग करि ९०००००००००÷३६१ याकौं छह गुणा करि ५४०००००००००÷३६१ तीह विषै जीवाकी कृति २२४४००००००००÷३६१ जोड़ें धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करै ४७९३७४÷१९, अपनां भाग हार उगणीस १९ का भाग दिएं पचास हजार दोय सै तीस योजन अर च्यारि उगणीसवां भाग प्रमाण हिमवत पर्वतका धनुषहो है। बहुरि हैमवत क्षेत्रका बाण हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीसवां भागमैंसौं घटाइ अवशेष १८३०००-१९ कौं चौगुणा बाण ४००००÷१९, करि गुणें ५१२४००००००००-३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि ७१५८२२-१९ अपना भाग हार १९ का भाग दिएं सैंतीस हजार छसै बहत्तरि योजनां अर किंचिदून सोलह उगणीसवां भाग प्रमाण हैमवत क्षेत्रकी जीवा हो है। बहुरि ७०००-१९, वर्ग करि ४९०००००००-३६१ ताकौं छह गुणां करि २९४०००००००÷३६१ याविषै जीवाकी कृति ५१२४०००००००-३६१ जोड़ें ५४१८०००००००-३६१ धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि ७३६०७०-१९, अपनां भाग हार १९ का भाग दिएं अठतीस हजार सातसै चालीस योजन अर दश उगणीसवां भाग प्रमाण हैमवत क्षेत्रका धनुष हो है। बहुरि महा हिमवत पर्वतका बाण एक हजार पचास हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त [illegible] उगणीस लाखका उगणीसवां भागमैंसौं घटाइ अवशेष १७५०००-१९ कौं चौगुणा बाण ६००००-१९ करि गुणें [illegible]-३६१ जीवाकी कृति [illegible]। याका वर्ग मूल ग्रहण करि १०२४६ [illegible] भाग हार

ही दक्षिण भरतवत् उत्तर ऐरावतका विजयार्द्धवत् विजयार्द्धका संपूर्ण भरतवत् संपूर्ण ऐरावतका हिमवन शिखरी पर्वतका हैमवत हैरण्यवत्क्षेत्रका महाहिमवत् रुक्मी पर्वतका हरिवत् रम्यकक्षेत्रका निषधवत् नील पर्वतका अर्धविदेह वत् अर्द्ध विदेहका बाण जीवा धनु. पृष्टका कथन जानना ॥ ७६८ ॥

आगें दक्षिण भरतादि क्षेत्र या पर्व्वतनिका जीवा धनुषनिके पूर्वि स्थाए अंक नव गाथानि करि कहे हैं;—

दक्खिणभरहे जीवा अट्ठचउसगणवय होंति बारकला।
चापं छछक्कसगसयणवयसहस्सं च एक्ककला ॥ ७६९ ॥
दक्षिणभरते जीवा अष्टचतुःसप्तनव भवंति द्वादशकलाः।
चापं षट्षट्सप्तशतनवसहस्रं च एककला ॥ ७६९ ॥

अर्थ—दक्षिण भरत क्षेत्रविषै जीवा आठ च्यारि सात नव इन अंकनि करि नव हजार सातसै अठतालीस योजन अर बारह कला प्रमाण है। बहुरि तिसहीका चाप जो धनुष सो छहछहसात अधिक सातसै करि सहित नव हजार योजन अर एक कला प्रमाण है ॥ ७६९ ॥

वेयड्ढे जीवा णवदुगसगदहसहस्सेगारकला।
तेदालसगणभेक्कं पण्णरसकला य तच्चापं ॥ ७७० ॥
विजयार्धे[1] जीवा नवद्व्येकसप्तदशसहस्रैकादशकला।
त्रिचत्वारिंशत् सप्त नवैकं पंचदशकलाश्च तच्चापं ॥ ७७० ॥

अर्थ—विजयार्द्धका जीव विषै जीवा दोय सात इन अंकनि करि सातसै बीस सहित दश हजार योजन अर ग्यारह कला प्रमाण है। बहुरि ताका चाप तिरेपनसै सात दोय इन अंकनि करि दश हजार सातसै तियालीस योजन अर पंद्रह कला प्रमाण है ॥ ७७० ॥

भरहस्संते जीवा इगिसगचउचोद्दसं च पंचकला।
चापं अट्ठदुगपणचउरेक्कं एक्कारसकला य ॥ ७७१ ॥
भरतस्यांते जीवा एक सप्त चतुश्चतुर्दश च पंचकलाः।
चापं अष्टद्विकपंचचतुरेकं एकादशकलाः च ॥ ७७१ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रका अंत विषै एक सात च्यारि चौदह इन अंकनि करि चौदह हजार च्यारिसै इकहत्तरि योजन अर पांचकला प्रमाण है। बहुरि ताका चाप आठ दोय पांच च्यारि एक इन अंकनि करि चौदह हजार पांचसै अठाईस योजन अर ग्यारह कला प्रमाण है ॥ ७७१ ॥

हिमवण्णगंत जीवा दुगतिगणवचउदुगं कला पण्णा।
चापं णभतियदुगपणवीससहस्सं च चारिकला ॥ ७७२ ॥
हिमवन्नगांते जीवा द्वित्रिकनवचतुर्द्विक कला पंचाशत्।
चापं नभत्रिद्विपंचविंशतिसहस्रं च चतुष्कला ॥ ७७२ ॥

अर्थ—हिमवन पर्वतका अंतविषै जीवा दोय तीन नव च्यारि दोय इन अंकनि करि चौदह हजार नवसै बावन योजन अर दोयकला प्रमाण है, बहुरि चाप च्यार तीन

तीन दोय पांच इन अंकनि करि पांच हजार दोयसै तीस तीह करि अधिक बीस हजार अर च्यारि कला प्रमाण है ॥ ७७२ ॥

हेमवदंतिमजीवा चउसगछस्सगति उणसोलकला ।
धणुहं णभचउसगअडतिण्णि विसेसहियदसयकला ॥ ७७३ ॥

हेमवतांतिमजीवा चतुःसप्तषट्सप्तत्रयः ऊनषोडशकला ।
धनुः नभश्चतुःसप्ताष्टत्रीणि विशेषाधिकदशकला ॥ ७७३ ॥

अर्थ—हैमवत क्षेत्रका अंत विषै जीवा च्यारि सात छह सात तीन इन अंकनि करि तीस हजार छसै चहोत्तरि योजन अर किछू घाटि सोलह कला प्रमाण है । बहुरि ताका धनुष विंदी च्यारि सात आठ तीन इन अंकनि करि अठतीस हजार सातसै चालीस योजन अर किछू अधिक दश कला प्रमाण है ॥ ७७३ ॥

महहिमवचरिमजीवा इगतिणवतिदयपंच छक्ककला ।
तच्चावं तियणवदुगसगवण्णसहस्स दसयकला ॥ ७७४ ॥

महाहिमवच्चमरजीवा एकत्रिनवत्रितयपंच षट्कलाः ।
तच्चापं त्रिनवद्विसप्तपंचाशत्सहस्रं दशकलाः ॥ ७७४ ॥

अर्थ—महाहिमवत पर्वतका अंत विषै जीवा एक तीन नव तीन पंच इन अंकनि करि तेरेपन हजार नवसै इकतीस योजन अर छह कला प्रमाण है । बहुरि ताका चाप तीन नव दोय इन अंकनि करि दोयसै तेरणवै तिन करि सहित सत्तावन हजार योजन अर दश कला प्रमाण है ॥ ७७४ ॥

हरिजीवा इगिणभणवतियसत्तयमिह कलावि सत्तरसा ।
चावं सोलसणभचउसीदिसहस्सं च चारि कला ॥ ७७५ ॥

हरिजीवा एकनभोनवत्रिसप्तक इह कला अपि सप्तदश ।
चापं षोडशनभश्चतुरशीतिसहस्रं च चतस्रः कलाः ॥ ७७५ ॥

अर्थ—हरिक्षेत्र विषै जीवा एक विंदी नव तीन सात इन अंकनि करि तेहत्तरि हजार नवसै एक योजन अर सत्तरह कला प्रमाण है । बहुरि ताका चाप सोलह विन्दी इन अंकनि करि सोलह तिन करि अधिक चौरासी हजार योजन अर च्यारि कला प्रमाण है ॥ ७७५ ॥

णिसहावसाणजीवा छप्पणइगिचारिणवय दोण्णि कला ।
धणुपुट्ठं छादालतिचउवीसेकं च णवय कला ॥ ७७६ ॥

निषधावसानजीवा षट्पंचकचतुर्नवकं द्वे कले ।
धनुःपृष्ठं षट्चत्वारिंशत् त्रिचतुर्विंशत्येकं च नव कलाः ॥ ७७६ ॥

अर्थ—निषध पर्वतका अंतविषै जीवा छह पांच एक च्यारि नव इन अंकनि करि बेहत्तर हजार एकसौ छप्पन योजन अर दोय कला प्रमाण है । बहुरि धनुःपृष्ठ तिरेपन हजार चौबीस एक इन अंकनि करि एक लाख चौदह हजार तीनसै तियालीस योजन अर नव कला प्रमाण है ॥ ७७६ ॥

जीवदु विदेहमज्झे लक्खा परिहिदलमेवमवरद्धे।
माधवचंदुद्दरिया गुणधम्मपसिद्ध सव्वकला ॥ ७७७ ॥
जीवाद्यं विदेहमध्ये लक्षं परिधिदलं एवमपरार्धे।
माधवचंदोद्धृताः गुणधर्मप्रसिद्धाः सर्वकलाः ॥ ७७७ ॥

अर्थ—विदेहके मध्य जीवा अर धनुष ए दोऊ क्रमतैं जीवा सौ लक्ष योजन प्रमाण अर धनुष जंबूद्वीपकी परिधिका जो प्रमाण ३१६२२७ कोश ३ दंड १२८ अंगुल ११½ ताके अर्द्ध प्रमाण किंचित् घाटि एक लाख अठावन हजार एक सौ चौदह योजन प्रमाण है। ऐसैं ही ऐरावतादिक क्षेत्र वा पर्वतनिका कथन अर दूसरी तरफका आधा जंबूद्वीप विषै जाननां। बहुरि गुण कहिए जिला जीवा अर धर्म कहिए धनुष तिनविषै प्रसिद्ध कहिए पूर्वै कही ऐसी जु सर्वकला कहिए योजनका अंश से माधव कहिए नारायण नव अर चंद्र कहिए चंद्रमा एक इन अंकनि करि उगणीस सए तिनकरि हृते कहिए भागरूप जाननी। **भावार्थ**—पूर्वै जो जीवा अर धनुषका कथन विषै कला कही है सो एक कलाका प्रमाण एक योजनका उगणीसवां भाग जाननां। बहुरि गुण धर्म इत्यादि पदका दूसरा अर्थ कहिए है—गुण ज्ञानादिक धर्म अहिंसादिक विषै प्रसिद्ध ऐसी जु सर्व कला चाहुर्ये तातैं माधवचंद्र नाम त्रैविद्य देव ताकरि उद्धृत कहिए प्रकाशित हैं। **भावार्थ**—माधव चंद्र आचार्यने गुण धर्म संबंधी सर्वकला प्रगट करी है ऐसा दूसरा अर्थ भी जाननां ॥ ७७७ ॥

आगैं जीवानिकी चूलिका अर धनुषनकी पार्श्वभुजाकौं कहैं है;—

पुव्वपरजीवसेसे दलिदे इह चूलियात्ति णाम हवे।
धणुदुगसेसे दलिदे पासभुजा दक्खिणुत्तरदो ॥ ७७८ ॥
पूर्वापरजीवाशेषे दलिते इह चूलिका इति नाम भवेत्।
धनुर्द्विकशेषे दलिते पार्श्वभुजः दक्षिणोत्तरतः ॥ ७७८ ॥

अर्थ—दक्षिणविषै तौ भरतादिक विषै अर उत्तरविषै ऐरावतादिविषै जो पूर्वापर जीवा कहिए पहलै अर पीछै कही जे जीवा तिनविषै अधिक प्रमाणमैं सौं हीन प्रमाण घटाइ अवशेष रहै ताका आधा किएं जो प्रमाण होइ ताका चूलिका ऐसा नाम हो है। बहुरि पूर्व अपर धनुषनिविषै अधिकमैंसौं हीन घटाइ अवशेषकौं आधा किएं जो प्रमाण होइ ताका नाम पार्श्वभुजा है सो इसहीकौं कहैं हैं। पहलै कह्या दक्षिण भरत ताकी जीवा नव हजार सातसै अडतालीस योजन बारह कला अर ताकै पीछैं कह्या विजयार्द्ध ताकी जीवा दश हजार सातसै बीस योजन ग्यारह कला इन दोऊनिविषै अधिक प्रमाण विजयार्द्धकी जीवा तामैं हीन प्रमाण दक्षिण भरतकी जीवा घटाइए तब अवशेष नवसै बहत्तरि योजन रहे अर ग्यारह कलामैं बारह कला घटै नाहीं तातैं एक योजन घटाइ ताकी उगणीस कलामैंसौं बारह कला घटाइ अवशेष सात कला ग्यारह कलाविषै मिलाएं नवसै इकहत्तरि योजन अर अठारह कला होइ ताका आधा करना सो विषम राशिका आधा न होइ तातैं योजन प्रमाणमैंसौं एक घटाइ अवशेष नवसै सत्तरिका आधा किएं च्यारिसै पिच्यासी तौ योजन होइ अर घटाया एकका आधा ½ अर अठारह कलाका आधा ⁹/₁₉ तिनका समछेद करि ¹⁹/₃₈ ⁹/₃₈ मिलाएं

सैंतीस अठतीसवां भाग होइ सो विजयार्द्ध पर्वतकी चूलिका च्यारिसै पिच्यासी योजन अर ७- अठतीसवां भाग प्रमाण है। विजयार्द्धका उत्तर तटकी सूचितैं दक्षिण तट एक तरफ इतनां घटै। बहुरि दक्षिण भरतका चाप नव हजार सातसै छयासठि योजन एक कला अर विजयार्द्धका ५ दश हजार सातसै तियालीस योजन पंद्रह कला सो अधिकमैंसौं हीन घटाइ अवशेष नवसै -- हत्तरि योजन चौदह कला होइ ताका पूर्ववत आधा किएं च्यारिसै अड्यासी योजन अर तेरह अठतीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्धकी पार्श्वभुजा हो है। विजयार्द्धका उत्तर तटतैं व्यास घटते प्रमाणतैं विजयार्द्धका दक्षिण तटतैं व्यास चाप एक तरफ इतनां घाटि जाननां। ऐसैंही विजयार्द्धके जीवावा चाप संपूर्ण भरतकी जीवा चापविषै घटाइ अवशेषकौं आधा किएं संपूर्ण भरतकी चूलिका वा पार्श्वभुजा हो है। संपूर्ण भरतकी जीवा चाप हिमवत पर्वतकी जीवा चापविषै घटाइ अवशेषकौं आधा किएं हिमवत पर्वतकी चूलिका वा पार्श्वभुजा हो है। सो हिमवतकी चूलिका पांच हजार दोयसै तीस योजन पंद्रह अठतीसवां भाग अर पार्श्वभुजा पांच हजार तीनसै पचास योजन एक तीस अठतीसवां भाग प्रमाण है। महा हिमवतकी चूलिका आठ हजार एकसौ अठाईस योजन नव अठतीसवां भाग अर पार्श्वभुजा नव हजार दोयसै छिहत्तरि योजन उगणीस अठतीसवां भाग प्रमाण है। निषधकी चूलिका दश हजार एकसौ सत्ताईस योजन दोय उगणीसवां भाग अर पार्श्वभुजा बीस हजार एकसौ पैंसठि योजन पांच अठतीसवां भाग प्रमाण है। अर्धविदेहकी चूलिका तेरह हजार नवसै इकईस योजन अठारह उगणीसवां भाग अर पार्श्वभुजा सोलह हजार आठसै तियासी योजन उगणीस अठतीसवां भाग प्रमाण हो है। ऐसें ही अन्यत्र चूलिका वा पार्श्वभुजा प्रमाण स्यावनां ॥ ७७८ ॥

आगैं भरत ऐरावत क्षेत्रनिविषै कालके वर्तनेका अनुक्रमकौं प्रतिपादन करै है;—

भरहेरावदेसु य ओसप्पुस्सप्पिणित्ति कालदुगा।
उस्सेधाउबलाणं हाणीवड्ढी य होंतित्ति ॥ ७७९ ॥

भरतेषु ऐरावतेषु च अवसर्पिण्युत्सर्पिणीति कालद्वये।
उत्सेधायुर्बलानां हानिवृद्धी च भवत इति ॥ ७७९ ॥

अर्थ—पांचोंनि संबंधी पांच भरत क्षेत्र पांच ऐरावतक्षेत्रनिविषै अवसर्पिणी अर उत्सर्पिणी ए दोय काल वर्तै है। जिन कालनिविषै जिनके जीवनिके क्रमतैं शरीरकी उंचाई आयु बल इनि विषैं हानि वा वृद्धि हो है। अवसर्पिणीकालविषै हानि हो है, उत्सर्पिणीविषै वृद्धि हो है ऐसा जाननां ॥ ७७९ ॥

आगैं इन दोय कालनिके भेदनिका नाम कहै है;—

सुसमसुसमं च सुसमं सुसमादी अवरदुगमवरकमसो।
दुस्समदुस्सिदुस्समपमिदि पढमो विदियो दु विवरीदो ॥ ७८० ॥

सुषमसुषमः च सुषमः सुषमादिः अवरद्विकमवरक्रमशः।
दुःषमः अतिदुःषम इति प्रथमः द्वितीयस्तु विपरीतः ॥ ७८० ॥

अर्थ—सुषम सुषम १ अर सुषम १ अर सुषम दुःषम १ अर दुःषमसुषम १ अर दुःषम अर अतिदुःषम १ ऐसैं क्रमकरि पहला अवसर्पिणीकाल छह भेद संयुक्त है। बहुरि दूसरा उत्सर्पिणी काल इसतैं विपरीत अनुक्रम करि छह भेद संयुक्त है। तहां अति दुःषम १ दुषम १ दुःषम सुषम १ सुषम दुःषम १ सुषम १ सुषम सुषम ऐसा क्रम जानना ॥ ७८० ॥

आगैं प्रथमादि कालनिका स्थिति प्रमाण कहैं हैं;—

चदुतिदुगकोडकोडी बादालसहस्सवासहीणेक्कं।
उदधीणं हीणदलं तच्चियमेत्तट्ठिदी ताणं ॥ ७८१ ॥
चतुस्त्रिद्विककोटिकोटिः द्वाचत्वारिंशत्सहस्रवर्षहीनैकम्।
उदधीनां हीनदलं तावन्मात्रा स्थितिः तेषां ॥ ७८१ ॥

अर्थ—तिन छहौं कालनिकी क्रमतैं स्थिति सुषम सुषमकी च्यारि कोड़ा कोड़ी सागर, सुषमकी तीन कोड़ाकोड़ी सागर सुषम दुःषमकी दोय कोड़ा कोड़ी सागर दुःषम सुषमकी च्यारि कोड़ाकोड़ी सागर सुषमकी तीन कोड़ाकोड़ी सागर, सुषम दुषमकी दोय कोड़ाकोड़ी सागर दुःषम सुषमकी बियालीस हजार वर्ष घाटि एक कोड़ाकोड़ी सागर, दुषमकी घटाया प्रमाण ४२००० का आधा इकईस हजार वर्ष, अतिदुःषमकी भी इकईस हजार वर्ष प्रमाण जानना ॥ ७८१ ॥

आगैं छह काल संबंधी जीवनिका आयु प्रमाण कहैं हैं;—

तत्थादि अंत आऊ तिदुगेक्कं पल्लपुव्वकोडी य।
वीसहियसयं वीसं पण्णरसा होंति वासाणं ॥ ७८२ ॥
तत्रादौ अंते आयुः त्रिद्विकैकं पल्यं पूर्वकोटिः।
विंशाधिकशतं विंशं पंचदश भवंति वर्षाणां ॥ ७८२ ॥

अर्थ—तहां इन कालनि विषै प्रथम कालके आदि विषै जीवनिका आयु तीन पल्य है। ताके अंत विषै दोय पल्य है। बहुरि सोई दोय पल्य आयु द्वितीय कालके आदि विषै है ताके अंत विषै एक पल्य है। बहुरि सोई एक पल्य आयु तृतीयकालके आदि विषै है ताके अंत विषै कोटि पूर्व वर्ष प्रमाण है। बहुरि सोई कोटि पूर्व वर्षका आयु चतुर्थ कालका आदि विषै है ताके अंत विषै एक सौ बीस वर्ष प्रमाण है। बहुरि सोई एकसौ बीस वर्षका आयु पंचम कालके आदि विषै है ताके अंत विषै बीस वर्षका आयु है। बहुरि सोई बीसवर्षका आयु षष्ठम कालका आदि विषै है ताके अंत विषै पंद्रह वर्ष प्रमाण आयु है ॥ ७८२ ॥

ऐसैंही मनुष्यनिकी उचाईका प्रमाण कहै है —

तिदुगेक्ककोससुदयं पणसयचावं तु सत्तरदणी य।
दुगमेक्कं पय रदणी छक्कालादिम्हि अंतम्हि ॥ ७८३ ॥
त्रिद्विकैककोशसुदयं पंचशतचापं तु सप्तरत्नयः च।
द्विकमेकं च रत्नि षट्कालादौ अंते ॥ ७८३ ॥

अर्थ—मनुष्यनिके शरीरकी उचाई प्रथम कालकी आदि विषै तीनकोश ताके अंत विषै
ा सोई दूसरा कालकी आदि विषै दोय कोश ताके अंत विषै एक कोश सोई तृतीय कालकी
षै एक कोश ताके अंत विषै पांचसै धनुष सोई चतुर्थ कालकी आदि विषै पांचसै धनुष
सात हाथ सोई पंचम कालकी आदि विषै सात हाथ अंतविषै दोय हाथ सोई षष्ठम
आदि विषै दोय हाथ अर अंत विषै एक हाथ प्रमाण है। ऐसें छह कालनिका आदि अंत
ष्यनिका उत्सेध जानना ॥ ७८३ ॥

आगैं छह काल वर्ती मनुष्यनिका वर्णका अनुक्रम कहैं है;—

उदयरवी पुण्णिंदू पियंगुसामा य पंचवण्णा य ।
तुरुखसरीरावण्णे धूमसियामा य छक्काले ॥ ७८४ ॥

उदयरवयः पूर्णेंदवः प्रियंगुश्यामाश्च पंचवर्णाश्च ।
रूक्षशरीरावर्णाः धूमश्यामाः च षट्काले ॥ ७८४

अर्थ—प्रथम काल विषै मनुष्य उदय होता सूर्यके समान वर्ण युक्त हैं। दूसरे काल विषै
मा समान वर्ण युक्त है। तीसरे काल विषै हरित श्याम वर्ण संयुक्त हैं। चौथा काल विषै
। संयुक्त है। पांचवां काल विषै कांति करि हीन दूधा मिश्र रूप पांच वर्ण संयुक्त हैं।
। विषै धुवांवत् श्याम वर्ण संयुक्त हैं। ऐसें छह कालनि विषै वर्णका अनुक्रम
। ७८४ ॥

आगैं तिनके आहारका अनुक्रम कहै है;—

अट्ठमचउत्थछट्ठेणाहारो पदिदिणेण पायेण ।
अणिहारेण य कमसो छक्कालणरा हवंतिमे ॥ ७८५ ॥

अष्टमचतुर्थषष्ठेनाहारः प्रतिदिनेन प्रायेण ।
अनिहारेण च क्रमशः षट्कालनरा भवंतीमे ॥ ७८५ ॥

अर्थ—प्रथम काल विषै अष्टम भक्तका करिए तीन दिनके आंतरे आहार की है। बहुरि
ल विषै चतुर्थ भक्तका करिए दोयदिनके आंतरे आहार की है। बहुरि तीसरा काल विषै
षष्ठ करिए एक दिनके आंतरे आहार की है। बहुरि चौथा काल विषै प्रति दिन करिए
एक बार आहार की है। बहुरि पांचवां काल विषै प्रायेण करिए बहुतनिकै आहार की
छठा काल विषै अनशनका करिए अति प्रचुर वृष्टि करि कालका आहार की है।
[illegible] अनुक्रम है ॥ ७८५ ॥

[illegible] प्रमाण करै है,—

[illegible]
[illegible] ॥ ७८६ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ ७८६ ॥

अर्थ—सुषम सुषमादि तीन कालनि विषै उत्कृष्टादि तीन भोग भूमिके उपजे मनुष्य क्रमतैं बदरीफल अर अक्षफल अर आंवला प्रमाण कल्पवृक्षनिकरि दीया दिव्य आहार ग्रहण करै हैं। बहुरि ते मंद कषायी हैं। बहुरि मल मूत्रादि नीहार करि रहित हैं ॥ ७८६ ॥

आगैं तिन भोगभूमियानिके कल्पवृक्षनिका प्रमाण कहै हैं;—

तूरंगपत्तभूसणपाणाहारंगपुप्फजोइतरू ।
गेहेगा वत्थंगा दीवंगेहिं दुमा दसहा ॥ ७८७ ॥

तूर्यांगपात्रभूषणपानाहारांगपुष्पज्योतिस्तरवः ।
गेहांगा वस्त्रांगा दीपांगैः द्रुमा दशधा ॥ ७८७ ॥

अर्थ—वाजित्रनिके दाता तूर्यांग अर पात्रनिके दाता पात्रांग अर आभूषणनिके दाता भूषणांग अर पीवनेकी वस्तुके दाता पानांग अर आहारके दाता आहारांग अर फूलनिके दाता पुष्पांग अर उद्योतमई ज्योतिरंग अर मंदिरनिके दाता गृहांग अर वस्त्रनिके दाता वस्त्रांग अर दीपकोनेके दाता दीपांग कल्प वृक्ष हैं। ऐसैं कल्प वृक्ष दश प्रकार हैं ॥ ७८७ ॥

आगैं भोगभूमिका स्वरूप कहैं हैं;—

दप्पणसम मणिभूमी चउरंगुलसुरसगंधमउगतणा ।
खीरेच्छुतोयमहुघदपूरिदवावीदहाइण्णा ॥ ७८८ ॥

दर्पणसमा मणिभूमिः चतुरंगुलसुरसगंधमृदुतृणा ।
क्षीरेक्षुतोयमधुघृतपूरितवापीह्रदाकीर्णा ॥ ७८८ ॥

अर्थ—दर्पण जो आरसा तीह समान मणिमई भोगभूमि जाननी। बहुरि सो च्यारि अंगुल ऊंचे भला रस गंधसहित कोमल तिणानि करि संयुक्त है। अर दुग्ध वा मिष्ट रस वा जल वा मधु समान रस वा घृतकरि पूर्ण ऐसी बावड़ी वा द्रह तिन करि व्याप्त है ॥ ७८८ ॥

आगैं भोगभूमियानिके उपजनें मरणेका विधान गाथा तीन करि कहै है;—

जादजुगलेसु दिवसा सगसग अंगुट्ठलेहरंगिदए ।
अथिरथिरगदि कलागुणजोवणदंसणग्गहे जंति ॥ ७८९ ॥

जातयुगलेषु दिवसाः सप्तसप्त अंगुष्ठलेहे रंगिते ।
अस्थिरस्थिरगत्योः कलागुणयौवनदर्शनग्रहे यांति ॥ ७८९ ॥

अर्थ—माताके गर्भतैं युगपत स्त्री पुरुष युगल उपजै है। तिनके उपजि दिननी स्वरूप सात दिन पर्यंत अनुक्रमतैं अंगूठाका चाटना बहुरि ऊभा वा नीचा होना बहुरि डिगता चलना बहुरि स्थिर रूप नीकैं चलना बहुरि कला गुणका ग्रहण होना बहुरि यौवनका ग्रहण होना बहुरि परस्पर दर्शनका ग्रहण होना हो है। ऐसैं गुणसात दिननि करि संपूर्णता हो है ॥ ७८९ ॥

तदंपदाणमादिमसंहदिसंठाणमप्पणामजुदा ।
गुल्लेसुवि णो णिल्ली तेसिं पंचक्खविगएसु ॥ ७९० ॥

तद्दंपतीनामादिमसंहतिसंस्थानं आर्यनामयुताः ।
सुलभेषु अपि नो तृप्तिः तेषां पंचाक्षविषयेषु ॥ ७९० ॥

अर्थ—तिन दंपति कहिए स्त्री पुरुष जुगलनिके आदिका संहनन संस्थान हो है। वज्र वृषभ नाच संहनन हो है समचतुरस्र संस्थान हो है। बहुरि ते मंद कषायी हैं तातैं आर्य ऐसे नाम धरै हैं। बहुरि तिनकै सुलभ पाए हैं पंच इन्द्रीनिके विषय तौभी तिन विषै तृप्ति न है। भावार्थ यह जो विषयनिस्यौं अरुचि न हो है ॥ ७९० ॥

चरिमे खुदजंभवसा णरणारि विलीय सरदमेघं वा ।
भवणतिगामी मिच्छा सोहम्मदुजाइणो सम्मा ॥ ७९१ ॥

चरमे क्षुतजृंभवशात् नरनार्यौ विलीय शरन्मेघं वा ।
भवनत्रिगामिनः मिथ्याः सौधर्मद्वियायिनः सम्यंचः ॥ ७९१ ॥

अर्थ—आयुका अंत विषै पुरुष तौ छींक करि, स्त्री जंभाई करि मरण पाइ शरद कालका बत विलय हो हैं। तिनके शरीरका अंश भी पड़ा न रहै। बहुरि ते मरिकरि मिथ्यादृष्टि तौ न वासी व्यंतर ज्योतिष्क विषै उपजै हैं। अर सम्यग्दृष्टी सौधर्म ईशान विषै उपजैं हैं अन्यत्र ी उपजैं हैं। ऐसे प्रथम कालकी आदि विषै उत्कृष्ट भोग भूमि है। बहुरि क्रमतैं घटि द्वितीय ालकी आदि विषै मध्य भोगभूमि है। बहुरि क्रमतैं घटि तृतीय कालकी आदि विषै जघन्य ा भूमि है। क्रमतैं घटि अंत विषै कुलकरादि होइ कर्मभूमि हो है ॥ ७९१ ॥

सो कर्मभूमिके प्रवेशका अनुक्रम अर तहां तिष्ठते कुलकरनिका स्वरूप तीन गाथानि करि ापादन करैं हैं;—

पल्लट्ठमं तु सिट्ठे तदिए कुलकरणरा पडिस्सुदिओ ।
सम्मदि खेमंकरधर सीमंकरधर विमलादिवाहणओ ॥ ७९२ ॥

पल्याष्टमे तु शिष्टे तृतीये कुलकरनराः प्रतिश्रुतिः ।
सन्मतिः क्षेमंकरधरः सीमंकरधरः विमलादिवाहनः ॥ ७९२ ॥

अर्थ—तृतीय काल विषै पल्यका आठवां भाग अवशेष रहे कुलकर मनुष्य उपजैं हैं। कौन ? प्रतिश्रुति १ सन्मति १ क्षेमंकर १ क्षेमंधर १ सीमंकर १ सीमंधर १ विमलवाहन १ ७९२ ॥

चक्खुम्म जस्ससी अहिचंदो चंदाहओ मरुदेओ ।
होदि पसेणजिदंको णाभी तण्णंदणो वसहो ॥ ७९३ ॥

चक्षुष्मान् यशस्वी अभिचंद्रः चंद्राभः मरुदेवः ।
भवति प्रसेनजितांकः नाभिस्तन्नंदनो वृषभः ॥ ७९३ ॥

अर्थ—चक्षुष्मान १ यशस्वी १ अभिचंद्र १ चंद्राभ १ मरुदेव १ प्रसेनजित १ नाभि १ । चौदह कुलकर हो हैं। तिन नाभिकुलकरका नंदन वृषभनाथ प्रथम तीर्थंकर है ॥ ७९३ ॥

वरदाणदो विदेहे बद्धणराऊय खइयसंदिट्ठी।
इह खत्तियकुलजादा केइज्जाइस्मरा ओही ॥ ७९४ ॥
वरदानतो विदेहे बद्धनरायुषः क्षायिकसंदृष्टयः।
इह क्षत्रियकुलजाताः केचिज्जातिस्मरा अवधयः ॥ ७९४ ॥

अर्थ—समीचीन पात्रके दान देनेके फलतैं बांधी है मनुष्यायु जिनि अर पीछै क्षायिक सम्यग्दृष्टी भए ऐसे जीव आइ कुलकर उपजैं हैं। ते इहां क्षत्रिय कुल विषै उपजे हैं। यद्यपि कुलादिककी प्रवृत्ति अब हीन भई पर होनहार विषै हुएका उपचार करि इनके कुलकै क्षत्रिय हौं, हिंगे तातैं इनकों क्षत्रिय कुल विषै उपजे कहे। बहुरि ते कुलकर केई तौ जातिस्मरण संयुक्त हैं, केई अवधिज्ञान संयुक्त हैं ॥ ७९४ ॥

आगैं कुलकरनिका शरीरका उत्सेध कहै हैं;—

अट्ठारस तेरस अडसदाणि पणुवीसहीणयाणि तदो।
चापाणि कुलयराणं सरीरतुंगत्तणं कमसो ॥ ७९५ ॥
अष्टादश त्रयोदश अष्टशतानि पंचविंशतिहीनानि ततः।
चापानि कुलकराणां शरीरतुंगत्वं क्रमशः ॥ ७९५ ॥

अर्थ—अठारहसै धनुष १८०० तेरह सै धनुष १३०० धनुष आठसै धनुष ८०० तातैं पीछै पचीस पचीस घाटि धनुष ७७५।७५०।७२५।७००।६७५।६५०।६२५।६००।५७५।५५०। ५२५। प्रमाण प्रतिश्रुत आदि कुलकरनिके शरीरका उदय अनुक्रमतैं जानना ॥ ७९५ ॥

आगैं तिनका आयु कहै हैं;—

आऊ पल्लदसंसो पढमे सेसेसु दसहि भजिदकमं।
चरिमे दु पुव्वकोडी जोगे किंचूण तण्णवमं ॥ ७९६ ॥
आयुः पल्यदशांशः प्रथमे शेषेषु दशभिः भक्तक्रमः।
चरमे तु पूर्वकोटिः योगे किंचिदूनं तन्नवमं ॥ ७९६ ॥

अर्थ—पहला कुलकरका आयु पल्यका दशवां भाग प्रमाण है। द्वितीयादि कु०१. नेका आयु क्रमतैं दश दश गुणां भाग पल्यकौं दीजिए तीह प्रमाण है। प१÷१००। प१÷१०००। प१÷१०००० प१÷१ ला० प१÷१ ला० प१÷१ को० प१÷१० कोडि। प१÷१०० को०। प१÷१००० को० प१÷१००००० को०। प१÷लक्ष को० प१÷१० पू० को०। बहुरि अंतका नाभिकुल करका आयु पूर्व कोडि वर्ष प्रमाण है सो पूर्व कोडि वर्षका आयु नां और कुलकरनिका आयुकौं समछेद विधान करि मिलाइए तब पल्यके दशलक्ष कोडिका भाग जिये ऐसा होइ प१११११११११११११-१०००००००००००० । बहुरि सूक्ष्म अद्धापल्य नेके अर्थि यामें पल्यका निवे लक्ष कोडिका भाग प्रमाण ऋण मिलाइए तब प१० विंदी १३ समछेद करनेके अर्थि पूर्वराशिके भाग भागहारकौं नव गुणां किए ऐसा होइ ९०००००००. ९९९९९९९-९ विंदी १३ या विषै ऋण प्रमाण जोड़े ऐसा होइ। ९÷० विंदी १३ बहुरि

भाज्यकों तेरह बिंदीनि करि भाग हारकी तेरह बिंदीनिका अपवर्तन किएं एक पल्यका नवम भाग आया प १ बिंदी १३÷९ बिंदी १३। बहुरि यामैं पूर्वै जो ऋण मिलाया था ताकूं त्यूं घटाइ दिएं एक पल्यका नवमां भागमें पल्यका निर्वे लाख कोड़िवां भाग घट्या ऐसैं सबनिका जोड किंचिदून पल्यका नवमां भाग प्रमाण हो है। अब याका जोड़का विधान करण सूत्र करि साधै है। अंत धणं गुण गुणियं आदि विहीणं रूऊणुत्तर भजियं। अंतका धन पल्यका दशवां भाग ताकौं गुणकार दशकरि गुणें पल्य भया। यामैं आदिका प्रमाण पल्य दशका लक्ष कोडिवां भाग समछेद करि घटाएं ऐसा होइ प ९९९९९९९९९९९९९÷१ बिंदी १३ याकौं एक घाटि गुणकारका प्रमाण नवका भाग दीजिये तब ऐसा होइ प९९९९९९९९९९९९÷९ बिंदी १३ इहां पूर्वोक्त प्रमाण ऋण मिलाएं ऐसा होइ प१ बिंदी १३÷९ बिंदी १३ याका अपवर्तन किएं पल्य प१÷९ बिंदी १३ का नवमां भाग भया यामैं। पूर्वै मिलाया था ऋण सो घटाएं किंचिदून पल्य हो है। अब याका विधान अंक संदृष्टिविषै दिखावै हैं। राशिविषै ऋण घटाइ अवशेषकौं भाग दिएं जो पावै सोई तिस राशिविषै भागहारकौं अधिक करि भाग दिएं पावै। सो इहां राशि साठिका चौथा भाग $\frac{१५}{६०}$ तामैं बीसका चौथा भाग प्रमाण ऋण घटाएं चालीसका चौथा भाग रहै ताकौं अपना भागहारका भाग दिएं जो दश पाए सोई तिस राशि साटिका चौथा भाग विषै भागहारविषै दोय अधिक करि भाग दिएं साठिका छठा भाग होइ सो इहां भी भाग दिए दश ही पाए। भागहार विषै अधिकका प्रमाण कैसें जानिएं? ऋण राशिकौं पाया राशिका भाग दिएं जानिएं सो इहां ऋण राशि बीसकौं पाया राशि दशका भाग दिएं दोय पाए सोई भागहारविषै अधिकका प्रमाण जानिएं। बहुरि जो ऋणका प्रमाण न जानिएं तौ भागहारविषै जेता अधिक होइ तीह करि लब्ध राशिकौं गुणें ऋणका प्रमाण जानिएं। इहां अधिक दोयकौं लब्ध दश करि गुणें ऋण राशि बीस जाननां। सो इहां राशि पल्यका नवमां भागमैंसौं पूर्वोक्त ऋण घटाइ अवशेषकौं भाग दिएं जो पावै सोई पाया राशिका भाग ऋण राशिकौं देइ जो पावै तितना अधिक भागहारका भाग राशिकौं दिएं पावै ऐसा प्रयोजन जानना ॥ ७९६ ॥

आगैं तिन कुलकरनिका अंतरालका काल कहैं है;—

पल्लासीदिमभंतरमादिममवसेसमेत्थ दसभजिदा।
जोगे बावत्तरिमं सयलजुदे अट्ठमं हीणं ॥ ७९७ ॥

पल्यासीतिमभंतरमादिममवशेषमत्र दशभक्तं।
योगे द्वासप्ततिः सकलयुते अष्टमो हीनः ॥ ७९७ ॥

अर्थ—पूर्व कुलकरका मरण भएं पीछैं पिछला कुलकर जितनें काल गएं जनम धरै सो इहां अंतर काल जानना। सो चौदह कुलकरनिके तेरह अंतराल हैं। तिन विषै पहला अंतर पल्यका असीवां भाग प्रमाण है। प्रथम कुलकर भएं पीछैं पल्यका असीवां भाग भएं दूसरा कुलकर उपज्या है। ऐसैंही अवशेष बारह अंतर दश दश गुणा भागहार करि भाजित पल्य प्रमाण जानने। प १÷८०। प १÷८०००। प १÷८०००००। प १÷८००। प १÷८०।

१।८ को। प १-८० को। प १÷८०० को। प १÷८००० को। प १÷८ लको। प
÷८० लको। इनकों पूर्वोक्त प्रकार समछेद करि मिलाएं प १११११११११११११-८०००-
०००००००० होइ यातैं सुगमता आवनेकैअर्थि पल्या का बहत्तरि लाखकोडिवां भाग
आवना तहां समछेद करनेके अर्थि पूर्वराशिके भाज्य भागहारकौं नव गुणां किएं ऐसा प
९९९९९९९९९९९÷१ बिंदी १३ यामैं ऋणराशि मिलाइए प १ बिंदी १३÷७२ बिंदी
१३ बहुरि तेरह बिंदीनिका अपवर्त्तन करिए तब पल्यका बहत्तरिवां भाग होइ यामैंसों पूर्व
आया था ऋण सो ज्यूंका त्यूं घटाएं सर्व अंतरनिका जोड़ किंचिदून पल्यका बहत्तरिवां भाग
मात्र हो है। अब इस ही कौं अंत धणं गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तरभजियं इत्यादि कारण सूत्र
करि साधैं हैं। अंतका धन पल्यका असीवां भाग ताकौं गुणकार दश करि गुणि प १०÷८०
के आदि धन पल्यका असी हजार कोडिवां भाग प १ ÷ ८ बिंदी १३ समछेद करि प १ बिंदी
१ ÷ ८ बिंदी १३ तामैं घटाइए। प ९९९९९९९९९९९९९÷८ बिंदी १३। बहुरि याकौं
किंचिदून घाटि गुणकार नव ताका भाग दीजिए प ९९९९९९९९९९९९९ ÷ ७२ बिंदी १३ यामैं
ऋणरूप प्रमाण ऋण प १÷७२ बिंदी १३ मिलाइ अपवर्तन किएं पल्यका बहत्तरिवां भाग होइ यामैं
ऋण ऋणकौं ज्यूंका त्यूं घटाएं किंचिदून पल्यका प १ बिंदी १३÷७२ बिंदी १३ बहत्तरिवां भाग
मात्र बहुरि सर्व आयुका जोड़ किंचिदून पल्यका नवमा भाग प १÷९ अर सर्व अंतरनिका जोड़ कि
ंचिदून पल्यका बहत्तरिवां भाग प १÷७२ इनकों आठका समछेद करनेके अर्थि आयुके जोड़का
भाज्य भागहारनिकौं अठ गुणां किएं ऐसा प ८÷७२ ताकौं जोड़ि प ९÷७२ नव करि अपवर्तन
करैं किंचिदून घाटि पल्यका आठवां भाग प्रमाण काल हो है ॥ ७९७ ॥

आगैं कुलकरनि करि किया हुवा दंड वा तिनके शरीरका वर्णकौं कहैं हैं;—

हा हामा हामाधिकारा पण पंच पण सियामलया।
चक्खुम्मदुग पसेणाचंदाहो धवल सेस कणयणिहा ॥ ७९८ ॥

हा हामा हामाधिकाराः पंच पंच पंच श्यामलो।
चक्षुष्मद्विकं प्रसेनचंद्राभौ धवलौ शेषाः कनकनिभा ॥ ७९८ ॥

अर्थ—आदिके पांच कुलकर अपराधीनिकौं हा ऐसा वचन कहि करि दंडै हैं याका अर्थ यहु
तैं बुरा किया इतनी उलाहना मात्र दंड दे हैं। बहुरि तहां पीछे पांच कुलकर हामा ऐसा वचन कहि
है। याका अर्थ यहु हाय मति करै इतनां उलाहना वा वर्जना मात्र दंड देहैं। बहुरि तहां पीछे
भी देव सहित पाच कुलकर हामा धिक ऐसा वचन कहि दंडै हैं। याका अर्थ यहु हाय मति करै
तोकौं धिक्कार हो इतनां उलाहनां वर्जना खिजनां मात्र दंड दे हैं। बहुरि चक्षुष्मान १ यशस्वी
ए दोय कुलकर श्याम वर्ण हैं। बहुरि प्रसेन जित १ चंद्राभ १ ए दोय धवल वर्ण हैं।
शेष कुलकर सुवर्ण समान वर्ण धरै हैं ॥ ७९८ ॥

आगैं तिन तिनके काल विषै तिन कुलकरनि करि किया कार्यकौं गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

इणससिनारासावदविभयं दंडादिसीमचिण्हकदिं।
तुरगादिवाहणं सिसुमुहदरसणणिब्भयं वेंति ॥ ७९९ ॥

इनशशितारात्रापदविभयं दंडादिसीमचिह्नकृतिं ।
तुरगादिवाहनं शिशुमुखदर्शननिर्भयं ब्रुवंति ॥ ७९९ ॥

अर्थ—पहला कुलकर है सो प्रजानिकै ज्योतिरंग जातिके कल्प वृक्ष मंद होतैं सूर्य चंद्रमा दीखनें लागा तातैं उपजा जो भय ताकूं निवारै है । बहुरि दूसरा कुलकर तारा दीखनेंतैं उपज्या भयकौं निवारै है । बहुरि तीसरा कुलकर जे मृग आदि जीव क्रूर भए तिनका घेरनेंका उपाय करि भयकौं निवारै है । बहुरि चौथा कुलकर मृग आदि जीव अति क्रूर भए तिनका दंडादिक उपाय करि भयकौं निवारै है । बहुरि पांचवां कुलकर कल्प वृक्ष थोड़ा फल देनें लगे तहां प्रजानिकै परस्पर झगड़ा देखि सीमा जो अपनी अपनी मर्यादा ताकौं करै है । बहुरि छठा कुलकर कल्प वृक्ष बहुत मंद फल देनें लगे तहां प्रजानिकै तिस मर्यादा भएं भी झगड़ा होतैं ते तिससीमा विषै चिह्न जो सहनानी ताकौं करै हैं । बहुरि सातवां कुलकर गमन करनेंविषै घोड़ा आदि वाहनकौं करै है । बहुरि आठवां कुलकर बालकका जन्म भएं पीछैं भी किछू काल माता पिता जीवनें लगे तहां बालकनिका मुख देखनेंतैं भया जो भय तातैं निर्भयपणांकौं कहै हैं ॥ ७९९ ॥

आसीवादादिं ससिपहुदिहिं केलिं च कदिचिदिणओत्ति ।
पुत्तेहिं चिरं जीवण सेदुवहित्तादि तरणविहिं ॥ ८०० ॥
आशीर्वादादिं शशिप्रभृतिभिः केलिं च कतिचिद्दिनांतम् ।
पुत्रैः चिरं जीवनं सेतुवहित्रादिभिः तरणविधिम् ॥ ८०० ॥

अर्थ—नवमां कुलकर बालक जनम भएं पीछैं माता पिता बहुत काल जीवनें लगे तहां बालनिकै तोई आशीर्वादादिक देना शिखावै हैं । बहुरि दशवां कुलकर बालक जनम भएं पीछैं केतेइक दिन पर्यंत माता पिता जीवनें लगे तहां बालकनि सहित चंद्रमा दिखावना आदि केलि क्रीड़ाकौं सिस खावै हैं । बहुरि ग्यारहवां कुलकर बालक जन्म भएं पीछैं माता पिता बहुत घनें काल जीवनें लगे ताका प्रजानिकै भय भया ताकौं निवारै है । बहुरि बारहवां कुलकर मेघवृष्टि होनेतैं नदी आदि जल स्थान भएं तिनके तरनेका विधान निहान नाव आदि बतावै हैं ॥ ८०० ॥

सिक्खंति जराउछिदिं णाभिविणासिंदचावतडिदादिं ।
चरिमो फलअकदोसहिमुत्तिं कम्मावणिं तत्तो ॥ ८०१ ॥
शिक्षयति जरायुछिदिं नाभिविनाशं इंद्रचापतडिदादिं ।
चरमः फलाकृतौषधिमुक्तिं कर्मावनिस्ततः ॥ ८०१ ॥

अर्थ—तेरहवां कुलक जरा सहित बालकनिका जनम होनें लगा तहां जरायुके छेदनेकौं सिखावै हैं । बहुरि अंतका कुलकर नाल सहित बालकनिका जनम होनें लगा तहां नाभि छेदनेकौं शिखावै है । अर इन्द्र धनुष बीजुरी इत्यादि होनें लगे तिनके देखनेतैं प्रजानिका उपज्या भयकौं निवारै हैं । अर वृक्षानिके फलनिकी आकृति विषै यहु औषध है, यहु भोजन योग्य है, इत्यादि सिखावै हैं । बहुरि इहांतैं परैं कर्मभूमि प्रवर्तै है ॥ ८०१ ॥

पुरगामघडणादी लोयिगसत्थं च लोयववहारो ।
धम्मो वि दयामूलो णिद्दिट्ठो आदिबम्हेण ॥ ८०२ ॥

पुरग्रामघटनादि· लौकिकशास्त्रं च लोकव्यवहारः ।
धर्मोऽपि दयामूलः निर्दिष्टः आदिब्रह्मणा ॥ ८०२ ॥

अर्थ—नगर ग्राम पत्तन आदि रचना अर लौकिक कार्य संबंधी शास्त्र अर असि मसि आदि लौकिक व्यवहार अर दया है मूल जाका ऐसा धर्म सो आदि ब्रह्मा श्री वृषभ तीर्थंकर देव प्रगट कीया है ॥ ८०२ ॥

आगै चौथा काल विषै उपजे जे शलाका पुरुष तिनकी निरूपै हैं;—

चउवीसबारतियणं णिच्चयरा छक्खिखंडभरहवई ।
तुरिए काले होंति हु तेवट्ठिसलागपुरिसा ते ॥ ८०३ ॥

चतुर्विंशतिः द्वादश त्रिजनः तीर्थंकराः षट्त्रिखंडभरतपतयः ।
तुर्ये काले भवंति हि त्रिषष्टिशलाकापुरुषास्ते ॥ ८०३ ॥

अर्थ—चौबीस तीर्थंकर अर बारह षट्खंड भरतका पति चक्रवर्ती अर तीनका वर्ण सहित तीन खंड भरतका पति तहां नव नारायण नव प्रतिनारायण नव बलभद्र ऐसैं ए तरेसठि शलाका पुरुष चौथे काल विषै हो है ॥ ८०३ ॥

आगैं तीर्थंकरनिका शरीरका उत्सेध कहै हैं;—

पण तणुतुंगो णित्ये पण्णासं पण्ण दसपणूणकमं ।
अट्ठसु पंचसु अट्ठसु पासदुगे णवयसत्तकरा ॥ ८०४ ॥

अग्रे तनुतुंगः तीर्थे पंचशत् पंचाशद्दशपंचोनक्रमः ।
अष्टसु पंचसु अष्टसु पार्श्वद्विकयोः नव सप्तकराः ॥ ८०४ ॥

अर्थ—तीर्थंकरनिके शरीरकी उचाई क्रमतैं ऐसैं धनुष प्रमाण है । पहला तीर्थंकरके पांचसै धनुष तिनादि आठ कै पचास पचास घाटि ४५० । ४०० । ३५० । ३०० । २५० । २०० । १५० । १०० । बहुरि दशवां आदि पांचकै दश दश घाटि ९० । ८० । ७० । ६० । ५० । बहुरि पंद्रहां आदि आठकै पांच पांच घाटि ४५ । ४० । ३५ । ३० । २५ । २० । १५ । १० । धनुष प्रमाण शरीर ऊंचा है । बहुरि पार्श्वद्विक विषै पार्श्व जिनका नव हाथ वर्द्धमान जिनका सात हाथ शरीर ऊंचा है ॥ ८०४ ॥

आगै तीर्थंकरनिका आयु गाथा दोय करि कहै हैं,—

तियाऊ चुलसीदीविहत्तरीसट्ठि पणसु दसहीणं ।
बिगि पुव्वलक्खपेत्तो चुलसीदि विहत्तरी सट्ठी ॥ ८०५ ॥

त्रीण्यायु· चतुरशीतिद्वासप्ततिषष्टि पंचसु दशहीन ।
द्वयक पूर्वलक्षमात्र चतुरशीति द्वासप्तति षष्टि ॥ ८०५ ॥

अर्थ—तीसरा कालका तीन वर्ष आठ महीना एक पक्ष अवशेष रहें वृषभ देव भए। बहुरि चौथा कालका सोई तीन वर्ष आठ मास एक पक्ष अवशेष रहें वीर जिन बहुरि पहला पहला तीर्थंकरका अंतर विषै उत्तर उत्तर तीर्थंकरका आयु प्रमाण ऐसा जाननां। पहला अंतर वृषभ देवका तीर्थकाल है। तामैं उत्तर अजित जिनका आयु संयुक्तपना जाननां। ऐसैं ही अन्य जाननां। वीर जिन मुक्ति होनैंका कालतैं चतुर्थ कालक तीन वर्ष आठ मास एक पक्ष सो पार्श्व तिनका अंतर विषै मिलाएं अढाईसै वर्ष होइ सर्व अंतर मिलाएं संते एक कोड़ा कोड़ि सागर प्रमाण हो है ॥ ८१३ ॥

अब जिनधर्म उच्छेद होनेका काल कहैं हैं;—

पल्लतुरियादि चय पल्लंतचउत्थूण पाद परकालं ।
ण हि सद्धम्मो सुविहीदु संतिअंते सगंतरए ॥ ८१४ ॥

पल्यतुर्यादिः चयः पल्यमंतं चतुर्थोनं पादपरकालं ।
न हि सद्धर्मः सुविधितः शांत्यंते सप्तांतरे ॥ ८१४ ॥

अर्थ—पल्यका चौथा भाग आदि अर तितनांही चय प्रतिस्थान बधनेका प्रमाण लिये एक पल्य तांई पर चौथाई चौथाई पल्य घाटि यावत चौथाई पल्य अंतरविषै होइ इस कालविषै सुबुधि जो पुष्पदंत तातैं लगाय शांतिनाथपर्यंत सात अंतरविषै वक्ता श्रोता आचारांगादिके अभावतैं समीचीन जैनधर्म नास्तिरूप हो है। भावार्थ—नवमां पुष्पदंत तीर्थ अंतरविषै पाव पल्य शीतल श्रेयोका अंतरविषै आध पल्य श्रेयो वासपूज्यका अंतरविषै पौण वासपूज्य विमलका अंतरविषै एक पल्य विमल अनंतका अंतरविषै पौण पल्य अनंत धर्मका अंतरविषै आधिपल्य धर्मशांतिका अंतरविषै पाव पल्यप्रमाण कालविषै जिनधर्मका अभाव भया है ॥ ८१४ ॥

चक्की भरहो सगरो मघव सणकुमार संतिकुंथुजिणा ।
अरजिण सुभोममहपउमा हरिसेणजयव्वदत्तरया ॥ ८१५ ॥

चक्रिणः भरतः सगरः मघवा सनत्कुमारः शांतिकुंथुजिनौ ।
अरजिनः सुभौममहापद्मौ हरिषेणजयब्रह्मदत्ताख्याः ॥ ८१५ ॥

अर्थ—भरत १ सगर १ मघवान् १ सनत्कुमार १ शांति जिन १ कुंथुजिन १ अरजिन १ सुभौम १ महापद्म १ हरिषेण १ जय १ ब्रह्मदत्त १ ए बारह चक्रवर्ती हैं ॥ ८१५ ॥

इनका कर्मभूमिकाल सत्ता दोय कहि करै हैं;—

भरहद्द सगरदुकाले मघवदु पढमद्धभंतरे आदा ।
तिजिणा सुभोमपहरी अरमल्लिजिणंतरे होंदि ॥ ८१६ ॥

भरतद्वये सगरद्विके मघवति धर्मार्धभंतरे आत्मा ।
त्रिजिना सुभौमपहरी अरमल्लिजिनांतरे भवंति ॥ ८१६ ॥

अर्थ—भरत सगर ए दोय सौ क्रमतैं वृषभ अर अजित जिनके काल विषै भए। बहुरि मघवान् अर सनत्कुमार ए दोय धर्म्म शांति जिनके बीचि अंतर काल विषै भए। बहुरि शांति कुंथु अर ए तीन आप ही तीर्थंकर भी भए तातैं जिनांतर कहना न आवै। बहुरि सुभौमचक्री अर मल्लि जिनके बीचे अंतर काल विषै भए ॥ ८१६ ॥

मल्लिदुमज्झे णवमो मुणिसुव्वयणमिजिणंतरे दसमो।
णमिदुविरहे जयक्खो बह्मो णेमिदुगअंतरगो ॥ ८१७ ॥
मल्लिद्रुममध्ये नवमो मुनिसुव्रतनमिजिनांतरे दशमः।
नमिद्वितिरहे जयाख्यो ब्रह्मो नेमिद्व्यंतरगः ॥ ८१७ ॥

अर्थ—मल्लि मुनिसुव्रतके मध्य अंतर विषै नवमां महापद्मचक्री भया। बहुरि मुनिसुव्रत नमि जिनका अंतर विषै दशवां हरिषेण चक्री भया। बहुरि नमि नेमि जिनका अंतर विषै जयनामा चक्री भया नेमि पार्श्वका अंतर विषै ब्रह्मदत्त चक्री भया है ॥ ८१७ ॥

आगैं चक्रवर्तिनिका शरीरका वर्ण उचाई तिनका आयु गाथा तीन करि कहै हैं;—

सव्वे सुवण्णवण्णा तरेहुदओ धणूण पंचसयं।
पण्णासूणं सदलं बादालिगिदालयं तालं ॥ ८१८ ॥
सर्वे सुवर्णवर्णा तरेहोदयो धनुषां पंचशतं।
पंचाशदूनं सदलं द्वाचत्वारिंशदेकचत्वारिंशत् चत्वारिंशत् ॥ ८१८ ॥

अर्थ—सर्व ही चक्रवर्ती सुवर्ण समान वर्ण संयुक्त हैं। बहुरि तिन भरतादि चक्रीनिके शरीरकी उचाई क्रमकरि पांचसै अर पचास घटी ताका साढा बयालीस अर आधा सहित बियालीस अर आधा सहित इकतालीस अर चालीस अर ॥ ८१८ ॥

पणतीस तीस अट्ठवीसं पण्णरसगाउ चुलसीदि।
बावत्तरिपुव्वाणं पणतिगिवासाणमिह लक्खा ॥ ८१९ ॥
पंचत्रिंशत् त्रिंशदष्टविंशतिः पंचदशकमायुः चतुरशीतिः।
द्वासप्ततिपूर्वाणां पंचत्रिकैकवर्षाणामिह लक्षाणि ॥ ८१९ ॥

अर्थ—पैंतीस अर तीस अर अठाईस अर बाईस अर बीस अर पंद्रह अर सात धनुषप्रमाण है। तातैं परैं तिनका आयु क्रमतैं कहिए है। चौरासी लाख पूर्व अर बहत्तर लाख पूर्व अर पांच लाख अर तीन लाख अर एक लाख वर्ष प्रमाण। बहुरि ॥ ८१९ ॥

सेवट्ठरा सहस्सा पणणउदी चउरसीदि सट्ठी य।
तीसं दसयं तिदयं सत्तसया वरिसलक्खस्स ॥ ८२० ॥
सप्तसप्ततिः सहस्राणि पंचनवतिः चतुरशीतिः षष्टिश्च।
त्रिंशत् दशकं त्रयं सप्तशतानि वर्षलक्षस्य ॥ ८२० ॥

अर्थ—तिहत्तरि हजार अर पंचानवै हजार अर चौरासी हजार अर साठि हजार अर तीस हजार अर दस हजार अर तीन हजार वर्ष अर वर्षलक्षके सातसै वर्ष प्रमाण आयु है ॥ ८२० ॥

आगैं तिन चक्रवर्तीनिकै नवनिधि हो हैं तिनके नाम कहैं;—

कालमहकालमाणवपिंगलणेसप्पपउमपांडु तदो ।
संखो णाणारयणं णवणिहिओ देंति फलभेदं ॥ ८२१ ॥

कालमहाकालमाणवकपिंगलनैसर्पपद्मपांडुस्ततः ।
शंखः नानारत्नः नवनिधयः ददति फलमेतत् ॥ ८२१ ॥

अर्थ—काल १ महाकाल १ माणवक १ पिंगल १ नैसर्प १५ पद्म १ पांडु १ शंख नाना रत्न १ ए नव निधि हैं । ते ए आगैं कहिए है फल ताकौं देवै हैं ॥ ८२१ ॥

आगैं नवनिधिनिकरि दिया हुवा फलकौं कहै हैं;—

उडु जोग्गकुसुमदामप्पहुदिं भाजणयमाउहाभरणं ।
गेहं वत्थं धण्णं तूरं बहुरयणमणुक्कमसो ॥ ८२२ ॥

ऋतुयोग्यकुसुमदामप्रभृति भाजनायुधाभरणं ।
गेहं वस्त्रं धान्यं तूर्यं बहुरत्नमनुक्रमशः ॥ ८२२ ॥

अर्थ—ते कालादिक निधि अनुक्रमतैं ऋतु योग्य पुष्पमाल आदि वस्तुकौं बहुरि भाजनकौं बहुरि आयुधकौं बहुरि आभरणकौं बहुरि मंदिरकौं बहुरि वस्त्रकौं बहुरि धान्यकौं बहुरि बाजित्रकौं बहुरि बहुत प्रकार रत्नकौं देवै हैं । **भावार्थ**—निधि आठ पर्या सहित गाड़ीके आकारि हैं तिनमैं ए वस्तु निकासिए हैं ॥ ८२२ ॥

आगैं तिनके चौदह रत्ननिका संज्ञा पूर्वक उपजनेका स्थान कहै हैं;—

सेणावइगाहवदि पुरहो गयदयपुत्थी हवंति चेयट्टे ।
सिरिगेहे कागिणिमणिचम्माउहगेसिदंडछत्तमरो ॥ ८२३ ॥

सेनापतिगृहपतिः पुरोधा गजो हयो युवतिः भवंति त्रिजयार्धे ।
श्रीगेहे काकिणीमणिचर्मायुधके असिदंडछत्तमराः ॥ ८२३ ॥

अर्थ—सेनापति सेनाका नायक अर गृहपति भंडारी अर पुरोधा पुरोहित अर गज हाथी अर हय घोड़ा अर युवति स्त्री ए सप्त त्रिजयार्ध पर्वत विषै उपजै हैं । बहुरि श्रीगृहविषै तिष्ठै सप्त निधिनैं आदिकौं कारण काकिणी रत्न अर मणि तिष्ठै उद्योत आदिकौं कारण चर्मरत्न अर सेनाकौं कोटशत्रु कृत उपद्रवादिनिवारण आदिकौं कारण खड्ग ए सप्त श्रीगृहविषै उपजै हैं । बहुरि असि रत्न अर दंड तिष्ठै छत्र उद्धारण आदिकौं कारण अर छत्र दुर्लंघ्य प्रदेश तिरावण आदिकौं कारण अर चक्र रत्न वैरीनिका अनादरकौं कारण ए आयुधशालाविषै उपजै हैं ॥ ८२३ ॥

आगैं तिनके [illegible] कहै हैं,—

दसं सयसहस्सा सयसहस्सं सुवीस वरहा य ।
सयसहस्सं पत्ता सोलस लेसहस्सरा ॥ ८२४ ॥

सणक्कुमार सणक्कुमारं सुभौमो बम्भत्थ ।
सत्तमपुढवीं पत्ता मोक्खं सेसाट्ठचक्कधरा ॥ ८२४ ॥

अर्थ—सणत्कुमार ए दोय तौ सनत्कुमार नामा स्वर्गकौं प्राप्त भए। बहुरि सुभौम ब्रह्मदत्त ए दोय सातवीं नरक पृथ्वीकौं प्राप्त भए। बहुरि अवशेष आठ चक्री मोक्ष पदकौं प्राप्त भए ॥ ८२४ ॥

अब अर्द्ध चक्री नारायण तिनके नाम कहैं हैं:—

तिविट्ठदुविट्ठसयंभू पुरिसुत्तमपुरिससीहपुरिसादी ।
पुंडरियदत्त णारायण किण्हो अद्धचक्कहरा ॥ ८२५ ॥

त्रिपृष्टद्विपृष्टस्वयंभूः पुरुषोत्तमः पुरुषसिंहः पुरुषादिः ।
पुंडरीकदत्तः नारायणः कृष्णः अर्धचक्रधराः ॥ ८२५ ॥

अर्थ—त्रिपृष्ट १ द्विपृष्ट १ स्वयंभू १ पुरुषोत्तम १ पुरुषसिंह १ पुरुष पुंडरीक १ पुरुष दत्त १ नारायण (लिखमन) १ कृष्ण १ ए नव अर्द्ध चक्री हैं। इहां प्रसंग पाइ बलभद्र नारायणनिके आयुध रत्न कहिए है। असि १ शंख १ धनुष १ चक्र १ मणि १ शक्ति १ गदा १ ए सात नारायणके आयुध रत्न है। बहुरि रत्ननिकी माला १ हल १ मुसल १ गदा १ ए च्यारि बलभद्रके आयुध रत्न हैं ॥ ८२५ ॥

आगै तिन नारायणनिका वर्तनाकाल कहै है। जो नारायणनिका वर्तनाकाल सोई बलभद्र वा प्रतिनारायणका वर्तना काल क्रमतैं जाननां;—

सेयादिपणसु हरिपण छद्दरदुगविरह मल्लिदुगमज्झे ।
दत्तो अट्ठम मुव्वयदुगविरहे णेमिकालजो किण्हो ॥ ८२६ ॥

श्रेयोऽादिपंचसु हरिपंच षष्ठः अरद्विकविरहे मल्लिद्विकमध्ये ।
दत्तः अष्टमः मुव्रतद्वयविरहे नेमिकालजः कृष्णः ॥ ८२६ ॥

अर्थ—श्रेयो जिन आदि पाच तीर्थंकरनिविषै क्रमतैं त्रिपृष्ट आदि पांच नारायण भए हैं। बहुरि छठा पुरुष पुंडरीक नारायण अरहनाथ तीर्थंकरनिका अंतरविषै भया है। बहुरि पुरुषदत्त है सो मल्लि मुनिसुव्रतके मध्य अंतरविषै भया है। बहुरि आठवैं नारायण मुनिसुव्रत नमि जिनका विरहकाल जे अंतर तीहविषै भया है। बहुरि कृष्ण है सो नेमीश्वर जिनका कालविषै उपज्या है ॥८२६॥

आगै बलभद्र प्रतिनारायणनिका नाम गाथा दोय करि कहैं हैं;—

बलदेवा विजयाचलसुधम्मसुप्पहसुदंसणा णंदी ।
णो णंदिमित्त रामा पउमा उवरिं तु पडिसत्तू ॥ ८२७ ॥

बलदेवा विजयाचलसुधर्मसुप्रभसुदर्शना नंदी ।
तता नंदिमित्र राम पद्म उपरि तु प्रतिशत्रव ॥ ८२७ ॥

अर्थ—विजय १ अचल १ सुधर्म १ सुप्रभ १ सुदर्शन १ नंदी १ नंदिमित्र १ राम १ पद्म १ ऐसे ए नव बलदेव हैं ॥ ८२७ ॥

बहुरि यातैं उपरि तिन नारायण बलिभद्रनिके प्रतिशत्रु जे प्रति नारायण ते कहिए हैं;—

अस्सग्गीओ तारय मेरयय णिसुंभ कइडहंत महु ।
बलि पहरण रावणया खचरा भूचर जरासंधो ॥ ८२८ ॥

अश्वग्रीवः तारकः मेरकश्च निशुंभः कैटभांतो मधुः ।
बलिः प्रहरणः रावणः खचराः भूचरो जरासंधः ॥ ८२८ ॥

अर्थ—अश्वग्रीव १ तारक १ मेरक १ निशुंभ १ मधुकैटभ १ बलि १ प्रहरण १ रावण १ ए आठ सौ विद्याधर हैं। अर जरासिंध भूमि गोचरी है। ऐसें ए नव प्रतिनारायण हैं ॥८२८॥

आगै बलदेव आदि तीनोंका उत्सेध समान है सो कहैं हैं;—

देहुदओ चापाणं सीदी तिसु दसयहीण पणदालं ।
णवदुगवीसं सोलं दस बलकेसव ससत्तूणं ॥ ८२९ ॥

देहोदयः चापानां अशीतिः त्रिषु दशहीनं पंचचत्वारिंशत् ।
नवद्विकविंशतिः षोडश दश बलकेशवानां सशत्रूणां ॥ ८२९ ॥

अर्थ—शत्रु जो प्रतिनारायण तिन सहित बलिभद्र अर नारायण तिनका समान शरीरका उत्सेध प्रथमादिकका क्रमतें असी धनुष बहुरि तीन विषैं दश दश घाटि ताके सत्तरि साठि पचास धनुष बहुरि पैंतालीस गुणतीस बाईस सोला दश धनुष प्रमाण है ॥ ८२९ ॥

आगैं नारायण वा प्रतिनारायणनिका समान आयु है ताको कहैं हैं;—

सम चुलसीदि बहत्तरि सट्ठी तीस दस लक्ख पणसट्ठी ।
वत्तीसं बारेक्कं सहस्समाउस्ससद्धचक्कीणं ॥ ८३० ॥

समा चतुरशीतिः द्वासप्ततिः षष्टिः त्रिंशत् दश लक्षाणि पंचषष्टिः ।
द्वात्रिंशत् द्वादशैकं सहस्रं आयुष्यमर्धचक्रिणाम् ॥ ८३० ॥

अर्थ—अर्ध चक्री जे नारायण वा प्रतिनारायण तिन प्रथमादिकका आयु क्रमतें चौरासी लाख वर्ष बहत्तर लाख वर्ष साठि लाख वर्ष तीस लाख वर्ष दश लाख वर्ष पैंसठि हजार वर्ष बत्तीस हजार वर्ष बारह हजार वर्ष एक हजार वर्ष प्रमाण है ॥ ८३० ॥

आगैं बलदेवनिका आयु कहैं हैं;—

सगसीदि दुगुणं सगतीसं सत्तरससमा लक्खया ।
सगसट्ठीसहियं सत्तर सहस्स बारसयमाउ बले ॥ ८३१ ॥

सप्तशीतिः द्वयोः दशोनं सप्तत्रिंशत् सप्तदश समा लक्षाणि ।
सप्तषष्टिः त्रिंशत् सप्तदश सहस्रं द्वादशशतमायुः बले ॥ ८३१ ॥

अर्थ—बलदेवनिका आयु प्रथमादिकके क्रमतें तिहत्तरी लाख बहुरि दोयविषै दश घाटि सत्तरि लाख अर सतसठि लाख बहुरि पैंतीसलाख सतरह लाख सतसठि हजार पैंतीस हजार सतरह हजार बारहसै वर्ष प्रमाण है ॥ ८३१ ॥

आगै नवमादिक तीन तिन तीनिकी प्रथम अर तीसरी आयु दोय कहै हैं;—

पढमो सत्तमिमण्णे पण छट्ठी पंचमिं गदो दत्तो।
णारायणो चउत्थीं कसिणो तदियं गुरुयपावा ॥ ८३२ ॥

प्रथमः सप्तमीमन्ये पंच षष्ठी पंचमीं गतो दत्तः।
नारायणः चतुर्थीं कृष्णः तृतीयां गुरुपापात् ॥ ८३२ ॥

अर्थ—पहला त्रिपृष्ट सातवीं नरक पृथ्वीको प्राप्त भया द्वितीयादि पांच नारायण छठी पृथ्वीको प्राप्त भए। पुरुषदत्त पांचवीं पृथ्वीको प्राप्त भया नारायण चौथी पृथ्वीको प्राप्त भया। कृष्ण तीसरी पृथ्वीको प्राप्त भए। ऐसे ए नारायण महत पापतैं नरक पृथ्वीको प्राप्त भए हैं ॥ ८३२ ॥

णिरयं गया पडिरिवो बलदेवा मोक्खमट्ठ चरिमो दु।
बह्मं कप्पं किण्हे तित्थयरे सोवि सिज्झेदि ॥ ८३३ ॥

निरयं गताः प्रतिरिपवो बलदेवा मोक्षं अष्ट चरमस्तु।
ब्रह्म कल्पं कृष्णे तीर्थंकरे सोपि सेत्स्यति ॥ ८३३ ॥

अर्थ—इनके प्रतिवैरी प्रतिनारायण तेऊ तिस नारायणकी प्राप्त भई जो जो नरक पृथ्वीतिनिको प्राप्त भए हैं। बहुरि बलदेव आदिके आठ सौ मोक्ष पदकों प्राप्त भए हैं। अंतका सौमा पद्म नामा बलिभद्र ब्रह्म स्वर्गको प्राप्त भया। सोभी कृष्ण नारायणका जीव तीर्थंकर होसी तिस समय सिद्ध पदकों पासी ॥ ८३३ ॥

आगैं नारदनिके नामादिक गाथा दोय करि कहैं हैं;—

भीम महाभीम रुद्दा महरुद्दो कालओ महाकालो।
तो दुम्मुह णिरयमुहा अहोमुहो णारदा एदे ॥ ८३४ ॥

भीमो महाभीमः रुद्रो महारुद्रो कालो महाकालः।
ततो दुर्मुखो निरयमुखः अधोमुखो नारदा एते ॥ ८३४ ॥

अर्थ—भीम १ महाभीम १ रुद्र १ महारुद्र १ काल १ महाकाल १ दुर्मुख १ नरक मुख अधोमुख १ ऐसें ए नव नारद हैं ॥ ८३४ ॥

कलहप्पिया कदाई धम्मरदा वासुदेवसमकाला।
भव्वा णिरयगदिं ते हिंसादोसेण गच्छंति ॥ ८३५ ॥

कलहप्रिया कदाचिद्धर्मरता वासुदेवसमकालाः।
भव्या नरकगतिं ते हिंसादोषेण गच्छंति ॥ ८३५ ॥

अर्थ—ए नारद कलह जिनको प्यारा ऐसे हैं। बहुरि कदाचित धर्मविषै भी रत हैं। ए नारायणादि होते ए हा हैं। जाने नारायण समान है वर्तनाकाल जिनका ऐसे हैं। बहुरि ए भव्य हैं। परंपरा मुक्तिगामी हैं। बहुरि ते नारद हिंसादोष करि नरक गति ही कों प्राप्त होय हैं ॥ ८३५ ॥

अब रुद्रनिकी संज्ञा पूर्वक संख्या कहैं हैं,—

भीमावलि जिदस रुद्द विसालणयण सुप्पदिट्ठचला ।
तो पुंडरीय अजिदंधर जिदणाभीय पीढ सच्चइजो ॥ ८३६
भीमावलिः जितशत्रुः रुद्रः विशालनयनः सुप्रतिष्ठोऽचलः ।
ततः पुंडरीकः अजितंधरो जितनाभिः पीठः सत्यकिजः ॥ ८३६ ॥

अर्थ—भीमावलि १ जितशत्रु १ रुद्र १ विशाल नयन १ सुप्रतिष्ट १ बल १ अजितंधर १ जित नाभि १ पीठ १ सत्यक्यतनय ऐसैं ए ग्यारह रुद्र हैं ॥ ८३६ ॥

आगैं तिनका वर्त्तनाकाल कहैं हैं;—

उसहजुकाले पढमदु सत्तण्णे सत्तसुविहिपहुदीसु ।
पीढो संतिजिणिंदे वीरे सच्चइसुदो जादो ॥ ८३७ ॥
वृषभाद्यिकाले प्रथमद्वौ सप्तान्ये सप्तसुविधिप्रभृतिषु ।
पीठः शांतिजिनेंद्रे वीरे सत्यकिसुतो जातः ॥ ८३७ ॥

अर्थ—वृषभ अजित जिननिके कालनि विषै क्रमतैं पहला अर दूसरा रुद्र भया। पीं अन्य तृतीयादि सात रुद्र ते पुष्पदंतादि सात तीर्थंकरनिका कालनिविषै क्रमतैं भए। रुद्र शांति जिनेंद्रका काल विषै भया ॥ ८३७ ॥

आगैं तिनके शरीरका उत्सेध कहै हैं;—

पण्णसय पण्णुणसयं पंचसु दसहीणमट्ठ चउवीसं ।
तक्कायधणुस्सेहो सच्चइतणयस्स सत्तकरा ॥ ८३८ ॥
पंचशतं पंचाशदूनशतं पंचसु दशहीनं अष्ट चतुर्विंशतिः
तत्कायधनुरुत्सेधः सत्यकितनयस्य सप्तकरः ॥ ८३८ ॥

अर्थ—तिन रुद्रनिके शरीरका उत्सेध क्रमतैं पांचसै धनुष अर ते पचास घाटि पं सै पचास धनुष बहुरि सौ धनुष बहुरि पांच विषै दश दश घाटि तीन निषै अ सातसै पचास धनुष बहुरि अठाईस धनुष चौवीस धनुष, बहुरि सात्यकितनयका सात है ॥ ८३८ ॥

आगैं तिन रुद्रनिका आयु कहै हैं;—

तेसीदिगिसट्ठि तिण्णि सत्तपुव्वाणि वासलक्खाओ ।
चुलसीदि सट्ठि दसु दसहीणदलिंमि वस्सणवसट्ठी ॥ ८३९
द्व्यशीतिरेकषष्टिः त्रीणि सप्तपूर्वाणि वर्षलक्षाणि ।
चतुरशीतिः षष्टिः दश दशहीनदलेन वर्षनवषष्टिः ॥ ८३९ ॥

अर्थ—तिन रुद्रनिका आयु क्रमतैं तिरासी लाख वर्ष एक कोडिपूर्व लाख पूर्व, तीन कोडिपूर्व, सात कोडिपूर्व, चौरासी लाख वर्ष, साठि लाख वर्ष दश दश घाटि तीन पचास लाख वर्ष बहुरि साढ़ा बारह लाख वर्ष बहुरि एक लाख वर्ष बहुरि पचहत्तरि वर्ष ए ॥ ८३९ ॥

आगैं तिन रज्जनि करि प्राप्त भई गतिकौं कहै हैं;—

पढमदु माघविमण्णे पण मघविं अट्ठमो दु रिट्ठमहिं।
दो अंजणं पवण्णा मेघं सच्चइतणु जादो ॥ ८४० ॥
प्रथमद्वौ माघवीमन्ये पंच मघवीमष्टमस्तु अरिष्टमहीं।
द्वौ अंजनां प्रपन्नौ मेघां सत्यकितनुर्जातः ॥ ८४० ॥

अर्थ—तिन रज्जनि विषै पहला दूसरा तौ माघवी नामा सप्तम नरक पृथ्वीकौं प्राप्त भए तृतीयादि पांच मघवी छठी पृथ्वीकौं प्राप्त भए। आठवां अरिष्टा पांचवी पृथ्वीकौं प्राप्त भया। पर नवमां दशवां ए दोय अंजना चौथी पृथ्वीकौं प्राप्त भए। सत्यकितनय मेघा तीसरी पृथ्वीकौं प्राप्त भया है ॥ ८४० ॥

आगैं तिन रज्जनिका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

विज्जाणुवादपढणे दिट्ठफला णट्ठसंजमा भव्वा।
कदिचि भवे सिज्झंति हु गहिदुज्झियसम्ममाहिमादो ॥ ८४१ ॥
विद्यानुवादपठने दृष्टफला नष्टसंयमा भव्याः।
कतिचिद्भवेषु सिध्यंति हि गृहीतोज्झितसम्यमहिम्नः ॥ ८४१ ॥

अर्थ—ते रज्जु विद्यानुवाद नामा पूर्वका पठन होतैं इह लोक संबंधी फलके भोक्ता भए। संयम नष्ट भया है अंगीकार किया हुवा संजम जिनका ऐसे हैं। बहुरि भव्य हैं ते ग्रहि करि छोड्या जो सम्यक्त्व ताके महात्म्यतैं केते इक पर्याय भएं सिद्ध पद पावहिंगे ॥ ८४१ ॥

आगैं चमरी अर्द्ध चमरी रज्जु इनका वर्त्तना कालकौं बहुरि रचना विशेष करि युगपत पांच गाथा करि कहैं हैं;—

जिणसमकोट्ठट्ठविदा समकाले सुण्णरेहिये रचिदा।
उहयजिणंतरजादा सण्णेया चमिहारिरज्जा ॥ ८४२ ॥
जिनसमकोष्ठस्थापिताः समकाले शून्यशलते रचिताः।
उभयजिनांतरजाता संज्ञेया चमिहारिरज्जाः ॥ ८४२ ॥

अर्थ—जिनदेवनिका समान कोठानि विषै स्थापित किए चमरी अर्द्ध चमरी रज्जु ते तिनके वर्तन काल विषै भए जाननें। बहुरि शून्यके नीचें स्थापे ते दोय जिननिके अंतर विषै भए जाननें। भावार्थ—च्यारि पंक्ति करि एक एक पंक्ति विषै चौंतीस चौंतीस कोठे करिए। तहां प्रथम पंक्ति विषै जैसें करिए है तैसें क्रमतैं जिनका वा शून्यका स्थापन करना सो जिस कोठ विषै जिन स्थापन ताके नीचें तीन पंक्ति कोठानि विषै जो चमरी अर्द्ध चमरी रज्जु स्थापन किए तेसी चमरी तिन जिननिके काल विषै भए जाननें। बहुरि जो नीचले कोठानि विषै शून्य स्थापन करी सो चमरी तहां अभाव जाननां बहुरि जिस उपरला कोठा विषै शून्य स्थापन किया ताके नीचे चमरी आदि स्थापे तो तिन दोऊ आगिला दोय जिननिका बीचि अंतर काल विषै ते चमरी भए जाननें। बहुरि जो शून्य स्थापन किया तो तहां तिनका अभाव जाननां ॥ ८४२ ॥

आगैं तिन कोटनिके स्थापनेका क्रम कैसे है सो कहैं हैं;—

पण्णर जिण खदु तिजिणा सुण्णदु जिण गगणजुगल जिण खदुगं
जिण खं जिण खं दुजिणा इदि चोत्तीसालया णेया ॥ ८४३ ॥
पंचदश जिनाः खद्वयं त्रिजिनाः शून्यद्वयं जिनाः गगनयुगलं जिनः खद्वयं ।
जिनः खंजिनः खं द्विजिनो इति चतुस्त्रिंशदालया ज्ञेयाः ॥ ८४३ ॥

अर्थ—वृषभादि पंद्रह जिन तातैं आगैं दोय शून्य तातैं आगैं तीन जिन आगैं शून्य दो आगैं जिन आगैं शून्य दोय आगैं जिन आगैं शून्य आगैं जिन आगैं शून्य आगैं दोय जिन ऐसे क्रम करि चौंतीस कोठे प्रथम पंक्ति विषै जाननां ॥ ८४३ ॥

ताके नीचे दूसरी पंक्ति विषै कहा सो कहैं हैं ।

चक्किदु तेरस सुण्णा छच्चक्की गयणतिदय चक्की खं ।
चक्की णमदुग चक्की गयणं चक्कहर सुण्णदुगं ॥ ८४४ ॥
चक्रिद्वौ त्रयोदश शून्यानि षट्चक्रिणः गगनत्रितयं चक्री खं ।
चक्री नभोद्विकं चक्री गगनं चक्रधरः शून्यद्वयं ॥ ८४४ ॥

अर्थ—चक्री दोय तातैं आगैं तेरह शून्य तातैं आगैं छह चक्री आगैं शून्य तीन आगैं चक्री आगैं शून्य आगैं चक्री आगैं शून्य दोय आगैं चक्री आगैं शून्य आगैं चक्री आगैं शून्य दोय ऐसैं क्रम करि द्वितीय पंक्ति विषै कोठे जाननें ॥ ८४४ ॥

दसगयणपंचकेसवछस्सुण्णा पउमणाभणभविण्हू ।
गयणाणि केसव सुण्णदु मुरारि सुण्णत्तियं कमसो ॥ ८४५ ॥
दशगगने पंचकेशवाः षट्शून्यानि पद्मनाभनभोविष्णुः ।
गगनत्रयं केशवः शून्यद्वयं मुरारिः शून्यत्रयं क्रमशः ॥ ८४५ ॥

अर्थ—तीसरी पंक्तिविषै दशशून्य तातैं आगैं पांच नारायण आगैं एक शून्य आगैं एक नारायण आगैं शून्य आगैं नारायण आगैं शून्यतीन आगैं नारायण आगैं शून्यदोय आगैं नारायण आगैं शून्य तीन ऐसैं क्रमकरि कोठे स्थापन करनें ॥ ८४५ ॥

खदुगं छस्सुण्णा सग हरा गयणजुगलमीसाणो ।
पण्णर जमाणि णवो गयहरगयणो महावीरे ॥ ८४६ ॥
[illegible]

अर्थ—[illegible]

[illegible]

पउमप्पहवासुपुज्जा रत्ता धवला हु चंदपहसुविही।
णीला सुपासपासा णेमीमुणिसुव्वया किण्हा ॥ ८४७ ॥

पद्मप्रभवासुपूज्यौ रक्तौ धवलौ तु चंद्रप्रभसुविधी।
नीलौ सुपार्श्वपार्श्वौ नेमिमुनिसुव्रतौ कृष्णौ ॥ ८४७ ॥

अर्थ—पद्मप्रभ वासुपूज्य ए दोय रक्त वर्ण हैं। बहुरि चंद्रप्रभ पुष्पदंत ए दोय श्वेत वर्ण हैं। बहुरि सुपार्श्व पार्श्व ए दोय नील वर्ण हैं। बहुरि नेमि मुनिसुव्रत ए दोय कृष्ण वर्ण हैं ॥८४७॥

सेसा सोलस हेमा वासुपुज्जो मल्लिणेमिपासजिणा।
वीरो कुमारसवणा महवीरो णाहकुलतिलओ ॥ ८४८ ॥

शेषा षोडश हेमा वासुपूज्यो मल्लिनेमिपार्श्वजिनाः।
वीर कुमारश्रमणा महावीरो नाथकुलतिलकः ॥ ८४८ ॥

अर्थ—अवशेष सोलह तीर्थंकर सुवर्ण समान वर्ण धरे हैं। बहुरि वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व वर्द्धमान ए पांच तीर्थंकर कुमार श्रमण हैं। जिन विवाह किए दीक्षा ग्रहण किया है। अवशेष उगणीस तीर्थंकर विवाह राज भए पीछे दीक्षा ग्रहण किया है। बहुरि महावीर सो नाथ वंशके तिलक हैं ॥ ८४८ ॥

पासो हु उग्गवंसो हरिवंसो मुव्वओ वि णेमीसो।
धम्मजिणो कुंथु अरा कुरुजा इक्खाउया सेसा ॥ ८४९ ॥

पार्श्वस्तु उग्रवंशः हरिवंश मुनिव्रतोपि नेमीशः।
धर्मजिनः कुंथुः अरः कुरुजाः इक्ष्वाकवः शेषाः ॥ ८४९ ॥

अर्थ—बहुरि पार्श्वजिन उग्रवंशी हैं। मुनिसुव्रत नेमि हरिवंशी हैं। धर्म कुंथु अर जिन कुरुवंशविषै उपजे हैं। अवशेष सतरह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंशविषै उत्पन्न हैं ॥ ८४९ ॥

अब शक अर कल्कीकी उत्पत्ति कहैं हैं;—

पणछस्सयवस्सं पणमासजुदं गमिय वीरणिव्वुइदो।
सगराजो तो कक्की चदुणवतियमहियसगमासं ॥ ८५० ॥

पंचषट्शतवर्षं पंचमासयुतं गत्वा वीरनिर्वृतेः।
शकराजो ततः कल्की चतुर्णवत्रिकमधिकसप्तमासं ॥ ८५० ॥

अर्थ—श्री वीरनाथ चौवीसवां तीर्थंकरको मोक्ष प्राप्त होनेतैं पीछे छसै पांच वरष पांच मास सहित गए विक्रम नाम शक राजा हो है। बहुरि तातैं उपरि च्यारि नव तीन इन अंकनि करि तीनसै चौराणवे वर्ष अर सात मास अधिक गए कल्की हो है ॥ ८५० ॥

अब कल्कीका कार्य गाथा छह करि कहै है,—

सो उम्मग्गाहिमुहो चउम्मुहो सट्ठिवासपरमाऊ।
चालीस रज्जो जिदभूमी पुव्वुद्द समंतिगणं ॥ ८५१ ॥

॥ उन्मार्गाभिमुखः चतुर्मुखः सप्ततिवर्षपरमायुष्यः ।
चत्वारिंशत् राज्यः जितभूमिः पृच्छति स्वमंत्रिगणं ॥ ८५१ ॥

अर्थ—सो कल्की उन्मार्ग जो विपरीत आचरण तीह विषै सन्मुख है । बहुरि चतु जाका नाम है । बहुरि सत्तरि वर्ष प्रमाण जाका परम आयु है । तीह विषै चालीस वर्ष प्रमाण कौ है । बहुरि सो कल्की जीता है पृथ्वी जानै ऐसा होत संता अपनें मंत्रीके समूहकों ऐसैं है ॥ ८५१ ॥

अम्हाणं के अवसा णिग्गंथा अत्थि केरिसायारा ।
णिद्धणवत्था भिक्खाभोजी जहसत्थमिदिवयणे ॥ ८५२ ॥
अस्माकं के अवशा निर्ग्रंथाः संति कीदृशाकाराः ।
निर्धनवस्त्रा भिक्षाभोजिनः यथाशास्त्रमिति वचने ॥ ८५२ ॥

अर्थ—हमारे वश नाहीं ऐसा कौन है ? तब मंत्री कहे हैं । निर्ग्रंथ जैन गुरु अवश हैं तब बहुरि कल्की पूछै है । ते कैसे आकारि हैं ? तब मंत्री कहे है धन वस्त्र रहित हैं । ॥ अनुसारि भिक्षा वृत्ति करि भोजन करैं हैं । ऐसा मंत्रीका प्रतिवचन सुणि ॥ ८५२ ॥

कहा सो कहे हैं;—

तप्पाणिउडे णिवडिद पढमं पिंडं तु सुक्कमिदि गेज्झं ।
इदि णियमे सचिवकदे चत्ताहारा गया मुणिणो ॥ ८५३ ॥
तत्पाणिपुटे निपतितं प्रथमं पिंडं तु शुल्कमिति ग्राह्यं ।
इति नियमे सचिवकृते त्यक्ताहारा गताः मुनयः ॥ ८५३ ॥

अर्थ—तिन निरग्रंथनिका पाणिपात्र विषै स्थापित किया पहला पिंड ग्रास सो ॥ है हांसिल है । ऐसैं करि सो प्रथम पिंड ग्रहण करना ऐसैं राजाकै मंत्रिनि सहित नियम कि संतें आहार समय तैसैं ही करनें करि छोड्या है आहार जिनिनैं ऐसैं होते संते मुनि वनवा विषै गए हैं ॥ ८५३ ॥

तं सोदुमक्खमो तं णिहणदि वज्जाउहेण असुरवई ।
सो भुंजदि रयणपहे दुक्खग्गाहेक्कजलरासिं ॥ ८५४ ॥
तं सोढुमक्षमः तं निहंति वज्रायुधेन असुरपतिः ।
॥ भुंक्ते रत्नप्रभायां दुःखग्राह्येकजलराशौ ॥ ८५४ ॥

अर्थ—तिस अपराध सहनेकों समर्थ न भया ऐसा असुर कुमारनिका स्वामी चमर नामा इन्द्र सो वज्र आयुध करि तिस कल्की राजाकों हने है । सो कल्की मरि रत्नप्रभा नाम नरक भूमि विषै दुःख करि ग्रहण रूप एक सागर प्रमाण आयुकौं भोगवै है ॥ ८५४ ॥

तम्भयदो तस्स मुदो अजिदंजयसण्णिदो गुरारिं तं ।
सरणं गच्छइ चेट्ठपसण्णाए सह समाहिए ॥ ८५५ ॥

तद्भयतः तस्य सुतः अजितंजयसंज्ञितः सुरारिं तं ।
शरणं गच्छति चेलकासंज्ञया सह स्वमहिलया ॥ ८५५ ॥

अर्थ—तीह असुरपतिके भयतैं तिस कल्की राजाका अजितंजय नामा पुत्र सो चेलका नी अपनी स्त्री सहित तिस अपनें पिताका वैरी चमर देवेन्द्रनके शरण प्राप्त हो है ॥ ८५५ ॥

सम्मद्दंसणरयणं हिययाभरणं च कुणदि सो सिग्घं ।
पच्चक्खं दट्ठूणिह सुरकयजिणधम्ममाहप्पं ॥ ८५६ ॥
सम्यग्दर्शनरत्नं हृदयाभरणं च करोति स शीघ्रं ।
प्रत्यक्षं दृष्ट्वा हि सुरकृतजिनधर्ममाहात्म्यं ॥ ८५६ ॥

अर्थ—बहुरि सो अजितंजय प्रत्यक्ष जिनधर्मका माहात्म्यकों देखि शीघ्र ही जैनश्रद्धानरूप म्यग्दर्शनकौं अपनें हृदयका आभरण करै है ॥ ८५६ ॥

आगैं अंतके कल्कीका स्वरूप गाथा पांच करि कहै हैं;—

इदि पडिसहस्सवस्सं वीसे कक्कीणदिक्कमे चरिमो ।
जलमंथणो भविस्सदि कक्की सम्मग्गमंथणओ ॥ ८५७ ॥
इति प्रतिसहस्रवर्षं विंशतौ कल्कीनामतिक्रमे चरमः ।
जलमंथनो भविष्यति कल्की सन्मार्गमंथनः ॥ ८५७ ॥

अर्थ—ऐसैं हजार हजार वर्ष प्रति एक एक कल्की होइ । कल्कीनिकै बीचि बीचि एक उपकल्की होइ इतना विशेष अन्य ग्रंथतैं जाननां सो बीस कल्की अतिक्रम भएं अंतका सर्वा जलमंथन नामा कल्की भले मार्गका मथनेवाला विनासनेवाला होसी ॥ ८५७ ॥

इह इंदरायसिस्सो वीरंगद साहु चरिम सव्वसिरी ।
अज्जा अग्गिल सावय वरसाविय पंगुसेणावि ॥ ८५८ ॥
इह इंद्रराजशिष्यो वीरांगदः साधुश्चरमः सर्वश्री. ।
आर्या अग्निलः श्रावकः वरश्राविका पंगुसेनापि ॥ ८५८ ॥

अर्थ—तीह कालविषै इन्द्रराजा नामा आचार्यका शिष्य वीरांगद नामा अंतका साधु होसी। सर्वश्री नामा अर्जिका होसी। बहुरि अग्निल नामा श्रावक होसी। बहुरि पंगुसेना नामा श्राविका होसी ॥ ८५८ ॥

पंचमचरिमे पक्खछमासतिवासावसेसए तेण ।
मुणिपढमपिंडगहणे सण्णसणं करिय दिवसतियं ॥ ८५९ ॥
पंचमचरमे पक्षाष्टमासत्रिवर्षे अवशेषे तेन ।
मुनिप्रथमपिंडग्रहणे संन्यसनं कृत्वा दिवसत्रयं ॥ ८५९ ॥

अर्थ—ते मुनि आदि ग्यारयों पंचमाकालके अंति एक पक्ष आठ मास तीन वर्ष अवशेष रहैं कल्की राजाकरि पूर्वोक्त प्रकार मुनिका पहला ग्रास ग्रहण करत सैं तीन दिन पर्यंत सन्यास करि ॥ ८५९ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

सोहम्मे जायंते कत्तियअमवास सादि पुव्वण्हे ।
इगिजलहिठिदी मुणिणो सेसतिए साहियं पल्लं ॥ ८६० ॥

सौधर्मे जायंते कार्तिकामावस्यायां स्वातौ पूर्वाह्णे ।
एकजलधिस्थितयो मुनयः शेषत्रयः साधिकं पल्यं ॥ ८६० ॥

अर्थ—तहां मुनि तौ कार्तिक मास अमावास्या तिथि स्वाति नक्षत्र पूर्वाह्न समयविषै मरिकरि एक सागर आयुके धारी सौधर्म स्वर्गविषै उपजैं हैं। बहुरि अवशेष आर्जिका श्रावक श्राविका ए तीन तहां ही सौधर्म स्वर्गविषै साधिक पल्य आयुके धारी उपजैं हैं ॥ ८६० ॥

तव्वासरस्स आदीमज्झंते धम्मरायअग्गीणं ।
णासो तत्तो मणुसा णग्गा मच्छादिआहारा ॥ ८६१ ॥

तद्वासरस्य आदिमध्यांते धर्मराजाग्नीनां ।
नाशः ततो मनुष्या नग्ना मत्स्याद्याहाराः ॥ ८६१ ॥

अर्थ—तीन दिनका आदि मध्य अंतविषै क्रमतैं धर्मका अर राजाका अर अग्निका नाश हो है। तातैं परैं मनुष्य हैं सो नग्न वस्त्रादि रहित अर मछली आदिका है आहार जिनके ऐसे होंगे ॥ ८६१ ॥

आगैं धर्मादिकका नाशका कारण कहैं हैं;—

पोग्गलभारुक्खादो जलणे धम्मे णिरासएण हदे ।
अणुरयणा णरिंदे सयलो लोओ हवे अंधो ॥ ८६२ ॥

पुद्गलनिर्गमात् ज्वलने धर्मे निराश्रयेण हते ।
अनुरत्ना नरेंद्रे सकले लोको भवेत् अंधः ॥ ८६२ ॥

अर्थ—[illegible] पुद्गल द्रव्य अग्निरूप भावरूप परणया तातैं अग्निका नाश भया बहुरि दुष्टनिकरि धर्मका अभाव भया तातैं धर्मका नाश भया। बहुरि अनुकूल प्रवर्ते ऐसे प्रजा पुरुष राजाका नाश भया। ऐसैं नाश होते पीछैं समस्त लोक अंधा हो है ॥ ८६२ ॥

[illegible] ऐसे है;—

पच्छा मूढा णिरयदुगं णिरयतिरक्खाउ जणयमेत्थ हवे ।
सोयणवहाउ मेहा भू णिस्सारा जल विसा ॥ ८६३ ॥

[illegible]

[illegible]

न्यका न हो है । बहुरि इस काल विषै मेघ हैं ते लोक जलके देनें वाले हो हैं । पृथ्वी रत्नादि
रवस्तु रहित हो है । मनुष्य तीव्र कषायादि युक्त हो हैं ॥ ८६३ ॥

अब अति दुःषम कालका अंत विषै जो वर्ते है ताका अनुक्रम गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

संवत्तयणामणिलो गिरितरुभूपहुदि चुण्णणं करिय ।
भमदि दिसंतं जीवा मरंति मुच्छंति उट्ठंते ॥ ८६४ ॥
संवर्तकनामानिलः गिरितरुभूप्रभृतीनां चूर्णनं कृत्वा ।
भ्रमति दिशांतं जीवा म्रियंते मूर्छंति पट्टांते ॥ ८६४ ॥

अर्थ—छठा कालका अंत विषै संवर्तक नामा पवन सो पर्वत वृक्ष पृथ्वी आदिकका चूर्णकौं
रि स्वक्षेत्र अपेक्षा दिशानिका अंत प्रति भ्रमण करै है । बहुरि तहां निकटे जीव तीव्र पवन करि
र्छाकौं पावे हैं बहुरि मरै हैं ॥ ८६४ ॥

खगगिरिगंगदुवेदी खुद्दबिलादिं विसंति आसण्णा ।
णेंति दया खचरसुरा मणुस्सजुगलादिबहुजीवे ॥ ८६५ ॥
खगगिरिगंगाद्वयवेदी क्षुद्रबिलादि विशंति आसन्नाः ।
नयंति दयाः खचराः सुरा मनुष्ययुगलादिबहुजीवान् ॥ ८६५ ॥

अर्थ—विजयार्द्ध पर्वत अर गंगा सिंधुनदी अर इनकी वेदी अर तिनकै क्षुद्र बिल आदिक
न प्रति तिनहीके निकट वर्ती प्राणी प्रवेश स्वयमेव करै हैं । बहुरि दयावान विद्याधर वा देव हैं
मनुष्य युगल आदि देकरि बहुत जीवनिकौं तिस बाधा रहित स्थानकौं प्राप्त करै हैं ॥ ८६५ ॥

छट्ठमचरिमे होंति मरुदादी सत्तगत्त दिवसवही ।
अदिसीदखारविसपरुसग्गीरजधूमवरिसाओ ॥ ८६६ ॥
षष्ठचरमे भवंति मरुदादयः सप्तसप्त दिवसावधि ।
अतिशीतक्षारविषपरुषाग्निरजोधूमवर्षाः ॥ ८६६ ॥

अर्थ—छठा कालका अंत विषै पवन आदि सात वर्षा सात सात दिन पर्यंत हो है । ते
ौन । पवन १ अत्यंत शीत १ क्षार रस १ विष १ कठोर अग्नि १ धूलि १ धुआं १ इन रूप
प परिणए पुद्गलनिकी वर्षा गुणचास दिन विषै हो है ॥ ८६६ ॥

तेरिसो सेसजणा णस्संति विसग्गिवरिसदड्ढउरी ।
इगिजोयणमेत्तमधो चुण्णीकिज्जादि हु कालवसा ॥ ८६७ ॥
तेऽपि शेषजनाः नश्यंति विषाग्निवर्षदग्धमही ।
एकयोजनमात्रमधः चूर्णीक्रियते हि कालवशात् ॥ ८६७ ॥

अर्थ—तिन वर्षानितै अवशेष रहे मनुष्यादिक ते भी नष्ट हो है । बहुरि विष अर अग्नि-
ो वर्षानि करि दग्ध भई पृथ्वी सो एक योजन मात्र नीचा ताईं कालके वशतै चूर्ण हो है ॥ ८६७ ॥

अब उत्सर्पणी कालके प्रवेशका अनुक्रम रूप तीन गाथा करि कहै हैं;—

उस्सप्पिणीयपढमे पुक्खरखीरघदमिदरसा मेघा ।
सत्ताहं वरसंति य णग्गा मत्तादिआहारा ॥ ८६८

उत्सर्पिणीप्रथमे पुष्करक्षीरघृतामृतरसान् मेघाः ।
सप्ताहं वर्षंति च नग्ना मृत्तिकाहाराः ॥ ८६८ ॥

अर्थ—उत्सर्पिणीका अति दुःषम नामा प्रथमकाल विषै आदि ही मेघ १ क्षीर १ अमृत १ रसानिकौं क्रमतैं सात सात दिन पर्यंत वर्षै है । बहुरि ि जीव ते वस्त्रादि रहित नग्न हैं । बहुरि मृतिका आदिका आहार जिनिके भैसे

उण्हं छंडदि भूमी छविं सणिद्धत्तमोसहिं धरादि ।
वल्लिलदागुम्मतरू वड्ढेदि जलादिवरसेहिं ॥ ८६९

उष्णं त्यजति भूमिः छविं सस्निग्धत्वमौषधिं धरति ।
वल्लिलतागुल्मतरवो वर्धंते जलादिवर्षैः ॥ ८६९ ॥

अर्थ—जलादिकनिकी वर्षानिकरि पृथ्वी है सो पूर्वं भया था जो क करि उष्णपणा ताकौं छांडे है । बहुरि छवि जो शोभा ताकौं धरै है । बहुरि धरै है । बहुरि अन्न आदि औषधिकौं धरै है । बहुरि वेलि आदि बधै हैं । मंडपविना फैले ताकौं वेलि कहिए । वृक्षका आश्रय करि जो फैले ताकौं लता क स्थूल पेडकौं जे न प्राप्त होइ तिनकौं गुल्म कहिए । स्थूल पेड रूप होने योग्य ज कहिए । जलादिकनिकी वर्षानि करि ए बधै हैं ॥ ८६९ ॥

णदितीरगुहादिट्ठिया भूसीयलगंधगुणसमाहूया ।
णिग्गमिय तदो जीवा सव्वे भूमिं भरंति कमे ॥ ८

नदीतीरगुहादिस्थिता भूशीतलगंधगुणसमाहूताः ।
निर्गत्य ततो जीवाः सर्वे भूमिं भरंति क्रमेण ॥ ८७० ॥

अर्थ—गंगासिंधु नदीके तीर वा विजयार्धकी गुफा आदि विषै पूर्वं प्राप्त भये भया जो पृथ्वी विषै शीतल सुगंध गुण तीह करि बुलाए हुए सर्व ही तहांतै करि पृथ्वीकौं भरै हैं । बहुरि इहांतै क्रमसौं आयुकायादिक जीवनिके क्रमतैं बधै

अब उत्सर्पिणीका दूसरा काल आदि विषै वर्तनाका अनुक्रम कहै हैं;—

उस्सप्पिणीयविदिए सहस्ससेसेसु कुलयरा कणयं ।
कणयप्पहरायद्धयपुंगव तह पालिण पउम महपउमा

उत्सर्पिणीद्वितीये सहस्रशेषेषु कुलकराः कनकः ।
कनकप्रभराजध्वजपुंगवा तथा नलिन पद्म महापद्म ॥ ८

अर्थ—अति दुःषम प्रथम काल पूर्ण भए पीछे दूसरा दुःषम नामा तामैं एक हजार वर्ष अवशेष रहे सीतह कुलकर हो है । बहुरि ते कनक १ क

पुंगव १ पद्म १ पद्म प्रभ १ पद्म राज १ पद्म ध्वज १ पद्म पुंगव १ महा पद्म १ ऐसे नाम धारक सोलह कुलकर हो हैं ॥ ८७१ ॥

आगैं तिनका कार्य वा तृतीय काल विषै तिष्टते तेरसठि शलाका पुरुष तिनकी गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

तस्सोडसमणुहिं कुलायाराणलपक्कपहुदिया होंति।
तेवट्ठिणरा तदिए सेणियचर पढमतित्थयरो ॥ ८७२ ॥
तत्षोडशमनुभिः कुलाचारानलपक्वप्रभृतयो भवंति।
त्रिषष्टिनरास्तृतीये श्रेणिकचरः प्रथमतीर्थकरः ॥ ८७२ ॥

अर्थ—तिन सोलह मनुभि: कहिए कुलकरनि करि क्षत्रियादि कुलके आचार अग्नि करि अन्नादि पचावनेका विधान इत्यादि कार्य शिखाए हुए प्रवर्तें हैं। बहुरि तहां पीछे तीसरा दुःषम सुखमा नामा काल प्रवर्तें है। तीह विषै तेरसठि शलाका पुरुष हो हैं। तहां श्रेणिक नामा राजाका जीव तौ प्रथम तीर्थंकर देव हो है ॥ ८७२ ॥

महपउमो सुरदेवो सुपासणामो सयंपहो तुरियो।
सव्वप्पभूद देवादीपुत्तो होदि कुलपुत्तो ॥ ८७३ ॥
महापद्मः सुरदेवः सुपार्श्वनामा स्वयंप्रभः तुर्यः।
सर्वात्मभूतो देवादिपुत्रो भवति कुलपुत्रः ॥ ८७३ ॥

अर्थ—महापद्म १ सुरदेव १ सुपार्श्व १ स्वयंप्रभ चौथो १ सर्वात्मभूत १ देव पुत्र १ कुल पुत्र ॥ ८७३ ॥

तित्थयरुदंक पोट्ठिल जयकित्ती मुणिपदादिसुव्वदओ।
अरणिप्पावकसाया विजओ सिद्धत्थणिम्मलओ ॥ ८७४ ॥
तीर्थकर उदंकः प्रोष्ठिलः जयकीर्तिः मुनिपदादिसुव्रतः।
अरनिष्पापकषाया विपुलः कृष्णचरो निर्मलः ॥ ८७४ ॥

अर्थ—उदंक तीर्थंकर १ प्रोष्ठिल १ जयकीर्ति १ मुनिसुव्रत १ अर १ निष्पाप १ निःकषाय १ विपुल १ कृष्ण नारायणका जीव निर्मल तीर्थंकर १ ॥ ८७४ ॥

चित्तसमाहीगुत्तो सयंपु अणिवट्टओ य जय विमलो।
तो देवपाल सच्चइपुत्तयरोऽणंतवीरियंतो ॥ ८७५ ॥
चित्रसमाधिगुप्तः स्वयंभूरनिवर्तकश्च जयो विमलः।
ततो देवपाल सत्यकिपुत्रचरोऽनंतवीर्यांत ॥ ८७५ ॥

अर्थ—चित्र गुप्त १ समाधि गुप्त १ स्वयंभू १ अनिवर्तक १ जय १ विमल १ देवपाल १ सत्यकिनाम रुद्रका जीव अनंतका अनंत वीर्य १ ऐसे नाम धारक चौबीस तीर्थंकर हो हैं ॥ ८७५ ॥

आगै तहां प्रथम श्रेणिक तीर्थंकरनिका आयु प्रमाण कहै हैं;—

पढमजिणो सोलससयवस्साऊ सत्तहत्थदेहुदओ ।
चरिमो दु पुव्वकोडीआउ पंचसयधणुतुंगो ॥ ८७६ ॥

प्रथमजिनः षोडशशतवर्षायुः सप्तहस्तदेहोदयः ।
चरमः ॥ पूर्वकोट्यायुः पंचशतधनुस्तुंगः ॥ ८७६ ॥

अर्थ—पहला महापद्म जिन एकसौ सोलह वर्ष प्रमाण आयु सात हाथ [illegible] धरै है । बहुरि अंतका अनंत वीर्य जिन कोडि पूर्व वर्ष प्रमाण आयु पांचसै धनु उदय धरै है ॥ ८७६ ॥

आगै चक्री अर्द्धचक्री बलिभद्रनिके नाम गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

चक्की भरहो दीहादिमदंतो मुत्तगूढदंता य ।
सिरिपुण्णसेणभूदी सिरिकंतो पउम महपउमा ॥ ८७७ ॥

चक्रिणः भरतः दीर्घादिमदंतो मुक्तगूढदंतौ च ।
श्रीपूर्णसेनभूती श्रीकांतः पद्मो महापद्मः ॥ ८७७ ॥

अर्थ—प्रथमही चक्रवर्ती कहिए है । भरत १ दीर्घ दंत १ मुक्त दंत १ गूढ दंत १ श्रीषेण १ श्रीभूति १ श्रीकांत १ पद्म १ महापद्म १ ॥ ८७७ ॥

तो चित्तायिमलवाहण अरिट्ठसेणो बलो तदो चंदो ।
महचंद चंदधर हरिचंदा सीहादिचंद परचंदा ॥ ८७८ ॥

ततः चित्रायिमलवाहनौ अरिष्टसेनः बलः ततः चंद्रः ।
महाचंद्रः चंद्रधरः हरिचंद्रः सिंहादिचंद्रो वरचंद्रः ॥ ८७८ ॥

अर्थ—तहां दोई चित्र वाहन १ निमल वाहन १ अरिष्ट सेन १ ए बारह बलभद्र भए तिनके अर बलिभद्र कहिए है । चंद्र १ महाचंद्र १ चंद्रधर १ हरिचंद्र १ सिंहचंद्र १ वरचंद्र १ ॥ ८७८ ॥

तो पुण्णचंदसुहचंदा सिरिचंदो य केसवा णंदी ।
णंदिमित्तोसेणा णंदी भूदी यबलणामा ॥ ८७९ ॥

ततः पूर्णचंद्रः सुभचंद्रः श्रीचंद्रः च केशवाः नंदी ।
नंदिमित्रोषेणो नंदिभूतिश्चाबलनामा ॥ ८७९ ॥

अर्थ—[illegible] पूर्ण चंद्र १ सुभचंद्र १ श्रीचंद्र १ ए तीन बलभद्र [illegible] बलभद्र के अनंतर न करिए है । नंदी १ नंदिमित्र १ नंदिषेण १ नंदिभूति १ अबल १ ए

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अर्थ—महाबल १ अतिबल १ त्रिपृष्ट १ द्विपृष्ट १ ऐसें ए नव वासुदेव हो हैं। याते पूर्व तिनके प्रतिशत्रु जे प्रतिनारायण ते कहिए है। श्रीकंठ १ हरिकंठ १ अश्वकंठ १ सुकंठ १ शिखिकंठ १ अश्वग्रीव १ हयग्रीव १ मयूर ग्रीव ऐसें ए नव प्रतिवासुदेव हो हैं॥ ८८०॥

अब कहे जु ए अर्थ तिनका उपसंहार कहै हैं;—

एसो सव्वो भेओ परूविदो विदियतदियकालेसु।
पुव्वं व गहीदव्वो सेसो तुरियादिभोगमही॥ ८८१॥

एषः सर्वो भेदः प्ररूपितः द्वितीयतृतीयकालयोः।
पूर्वमिव गृहीतव्यः शेषः तुर्यादिभोगमही॥ ८८१॥

अर्थ—यहु सर्व ही भेद उत्सर्पिणीके दूसरे तीसरे कालनिका प्ररूपण किया बहुरि अवशेष चतुर्थ आदि कालनि विषै भोगभूमि है ऐसा पूर्वोक्त प्रकार ग्रहण करना। तहां अनुक्रमतें आयु कायादि करि वृद्धि रूप चतुर्थ सुषम दुःषमकाल विषै जघन्य भोगभूमि है। पंचम सुषम काल विषै मध्य भोगभूमि है। षष्ठम सुषम सुषम काल विषै उत्कृष्ट भोग भूमि है॥ ८८१॥

ऐसें भरत ऐरावत क्षेत्रनि विषै कहे जे छह काल तिनकों अन्य क्षेत्र विषै जोड़नेंकों गाथा तीन कहै हैं;—

पढमादो तुरियोत्ति य पढमो कालो अवट्ठिदो कुरवे।
हरिरम्मगे य हेमवदेरण्णवदे विदेहे य॥ ८८२॥

प्रथमतः तुर्यांतं च प्रथमः कालः अवस्थितः कुर्वोः।
हरिरम्यके च हैमवतैरण्यवतयोः विदेहे च॥ ८८२॥

अर्थ—पहला कालतें लगाय चौथा काल पर्यंत नियम कहिए हैं। तहां पहला काल तौ देवकुरु उत्तर कुरु विषै अवस्थित है। भावार्थ—पहला सुषम सुषम कालकी आदि विषै जो वर्तना है सो वर्तना देव कुरु उत्तर कुरु विषै सदा काल पाइए है। बहुरि ऐसें ही दूसरा काल हरि अरम्यक क्षेत्र विषै अवस्थित है। बहुरि तीसरा काल हैमवत अरु हैरण्यवत क्षेत्र विषै अवस्थित है। बहुरि चौथा काल विदेह क्षेत्र विषै अवस्थित ही है॥ ८८२॥

भरह इरावद पण पण मिलेच्छखंडेसु खयरसेढीसु।
दुस्समसुसमादीदो अंतोत्ति य हाणिवड्ढी य॥ ८८३॥

भरतैरावतः पंच पंच म्लेच्छखंडेषु खचरश्रेणिषु।
दुःषमसुषमादितः अंत इति च हानिवृद्धी च॥ ८८३॥

अर्थ—भरत ऐरावत संबंधी पांच पांच म्लेच्छ खंड अरु विजयार्द्धकी विद्याधर रहनेंकी तीन तिन विषै दुःषम सुषम कालका आदितै लगाय नाहीका अंत पर्यंत हानि वृद्धि हो है। सो अवसर्पिणी विषै तो चौथा कालकी आदितै लगाय अंत पर्यंत आर्यखंडवत् अनुक्रमतें आयु आदिककी हानि हो है। तहां पांचवां छठा काल नाहीं प्रवर्ते है। भावार्थ—जो आर्य खंड विषै अवसर्पिणीका चौथा कालकी अन्तविषै वर्तना है सोई आर्यखंडविषै अवसर्पिणीका पांचवां छठा अर

उत्सर्पिणीका पहला दूसरा काल प्रवर्तैं भी तहां एकरूप वर्तना है। बहुरि उत्सर्पिणीका कालका आदि तैं न्याय नाहींका अंत पर्यंत आयु आदिककी वृद्धि हो है । तहां चौथा छठा काल नांही वर्त्तै है । भावार्थ-इहां आर्य खंड विषैं उत्सर्पिणीका चौथा पांचवां छठ सर्पिणीका पहला दूसरा तीसरा काल प्रवर्तैं भी उत्सर्पिणीके तीसरा कालका अंत वि वर्त्तना पाइए सो तहां एकरूप वर्तना है ॥ ८८३ ॥

पढमो देवे चरिमो णिरए तिरिए णरेवि छक्काला ।
तदियो कुणरे दुस्समसरिसो चरिमुवहिदीवद्धे ॥ ८८४ ॥
प्रथमः देवे चरमः निरये तिरश्चि नरेपि षट्कालाः ।
तृतीयः कुनरे दुःषमसदृशः चरमोदधिद्वीपार्धे ॥ ८८४ ॥

अर्थ—देव गतिविषै प्रथम काल वर्त्तै है । नरक गतिविषै अंतका छठा काल वर्त्तै भावार्थ—इहां अति सुख अति दुखकी अपेक्षा पहला छठा कालका वर्त्तना कह्या है । आयु अपेक्षा न कह्या है । बहुरि ऐसैं ही तिर्यंच गति अर मनुष्य गतिविषै छहौं काल वर्त्तै है । बहुरि मनुष्य भोगभूमि समुद्रनिविषै हैं । तहां तीसरा काल वर्त्तै है । बहुरि आधा स्वयंभू रमण द्वीप सर्व स्वयंभूरमण समुद्रविषै दुःखम समान सर्वकाल वर्त्तै है ॥ ८८४ ॥

ऐसैं जंबूद्वीपके वर्णनकों समाप्त करि लवण समुद्रके वर्णनकों आरंभ करत संता दोऊनिके बीचि तिष्ठता जो कोट ताका स्वरूप निरूपणके मिस करि समस्त द्वीप समुद्रनिके विषै पाइए हैं जे प्रकार तिनकी गाथा दोयकरि प्ररूपै हैं;—

चउगोउरसंजुत्ता भूमिमुहे बार चारि अट्ठदया ।
सयलरयणप्पया ते वेकोसवगाढया भूमिं ॥ ८८५ ॥
चतुर्गोपुरसंयुक्ता भूमौ मुखे द्वादश चत्वारः अष्टोदयाः ।
सकलरत्नात्मकास्ते द्विक्रोशावगाढा भूमिं ॥ ८८५ ॥

अर्थ—च्यारि गोपुर जे द्वार तिन करि संयुक्त हैं । बहुरि भूमौ कहिए नीचै बारह यो चौड़े हैं । मुखे कहिए उपरि च्यारि योजन चौड़े हैं । आठ योजन ऊंचे हैं । बहुरि सब नाना प्रकार रत्नमई हैं ऐसैं ते प्राकार हैं । बहुरि ते दोय कोश भूमिकों अवगाहि करि तिष्ठै हैं भावार्थ—पृथ्वी विषै दोय कोश इनकी नींव हैं ॥ ८८५ ॥

वज्जमयमूलभागा वेदुरियकयाइरम्मसिहरजुदा ।
दीवोवहीणमंते पायारा होंति सव्वत्थ ॥ ८८६ ॥
वज्रमयमूलभागा वैडूर्यकृतातिरम्यशिखरयुताः ।
द्वीपोदधीनामंते प्राकारा भवंति सर्वत्र ॥ ८८६ ॥

अर्थ—वज्रमई तिनका मूल भाग कहिए नींव है। बहुरि वैडूर्य रत्न करि निर्मापित अति रमणीक शिखरनि करि संयुक्त हैं । ऐसे प्राकार कहिए वेदिका दिवाल सो द्वीपनिका वा समुद्रनिका अंत विषै परिधिरूप सर्वत्र हैं ॥ ८८६ ॥

आगै तिन प्राकारनिकै उपरि तिष्टती जु वेदिका ताकौं निरूपै हैं;—

पायाराणं उवरिं पुह मज्झे पउमवेदिया हेमी।
वेकोसपंचसयधणुतुंगा वित्थारया कमसो ॥ ८८७ ॥

प्राकाराणामुपरि पृथक् मध्ये पद्मवेदिका हैमी।
द्विक्रोशपंचशतधनुस्तुंगविस्तारा क्रमशः ॥ ८८७ ॥

अर्थ—तिन प्राकारनिके उपरि मध्य विषै पृथक पृथक पद्म वेदिका कांगुरेनिकी पंक्ति हैं। सो सुवर्णमई हैं दोय कोश ऊंची हैं पांचसै धनुष चौडी हैं ॥ ८८७ ॥

आगैं तिस पद्म वेदिकाके माही अर बाहरि दोऊ तरफां तिष्टते जु वनादिक तिनकौं गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

तिस्से अंतो बाहिं हेमसिलातलजुदं वणं रम्मं।
बावी पासादोवि य चित्ता अत्थंति तहिं वाणा ॥ ८८८ ॥

तस्या अंतर्बहिः हेमशिलातलयुतं वनं रम्यं।
वाप्य प्रासादा अपि च चित्रा आसते तत्र वानाः ॥ ८८८ ॥

अर्थ—तिन वेदिकानिके माही बाहरि पैली वा वैली दोऊ तरफां सुवर्णमय शिलातल करि संयुक्त रमणीक वन हैं। तहां चित्र नाना प्रकार बावडी वा प्रासाद कहिए मंदिर हैं। तहां मंदिरनि विषै वान व्यंतर देव तिष्टै हैं ॥ ८८८ ॥

वरमज्झजहण्णाणं वावीणं चाव विसद वित्थारा।
पण्णासूणं कमसो गाढा सगवासदसभागो ॥ ८८९ ॥

वरमध्यजघन्यानां वापीनां चापाः दिशते विस्ताराः।
पंचाशदूनं क्रमशो गाधः स्वकव्यासदशमभागः ॥ ८८९ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य बावडीनिका विस्तार जो चौडाईका प्रमाण दोयसै अर पचास घाटि क्रमतैं है सो दोयसै उणीसै एकसौ योजन प्रमाण है। बहुरि तिनका गाध जो ऊंडाईका प्रमाण सो अपने व्यासके दशवें भाग है। से क्रमतैं बीस पंदरह दश योजन प्रमाण जानना ॥८८९॥

वासुदयादीहत्तं जहण्णपासादयस्स चावाणं।
पण्णपणसदरिसयमिह दारे छव्वार चउ गाढो ॥ ८९० ॥

व्यासोदयदीर्घत्वं जघन्यप्रासादस्य चापानां।
पंचाशत्पंचसप्ततिशते इह द्वारे षट् द्वादश चतुर्गाढः ॥ ८९० ॥

अर्थ—जघन्य प्रासादनिकी चौडाई उचाई लंबाईका प्रमाण क्रमतैं पचास पिचहत्तरि एकसौ धनुष प्रमाण है। बहुरि इनके द्वारनिविषै चौडाई उचाई छह अर बारह धनुष प्रमाण है अर गाध जो अवकाश रूप इनकी नींव सो च्यारि धनुष प्रमाण है ॥ ८९० ॥

मज्झिमउक्कस्साणं तिगुणा तिगुणा कमेण वासादी।
दोदोदारा माणिमय णट्टणकीडादिगेहावि ॥ ८९१ ॥

मध्यमोत्कृष्टानां द्विगुणा त्रिगुणाः क्रमेण व्यासादिः ।
द्विद्विद्वाराः मणिमया नर्तनक्रीडादिगेहा अपि ॥ ८९१ ॥

अर्थ—मध्यम अर उत्कृष्ट प्रासादनिका व्यासादिक जघन्य प्रासादनिके व्यासादिकतैं क्रमतैं दूणे अर तिगुणे हैं। अर तिनके द्वारनिके भी तैसें ही जघन्य प्रासादनिके द्वारनितैं दूणे अर तिगुणे व्यासादिक हैं। बहुरि ते जघन्य व्यासादिक घरैं प्रासाद दोय दोय द्वारनि करि संयुक्त हैं। तहां मणिमई नर्तन गेह क्रीडा गेह आदि रचना पाइए है। तहां मध्य प्रासादनिकी चौड़ाई उचाई सौ ब्यौदसै दोयसै योजन, उत्कृष्ट प्रासादनिकी ब्यौदसै सवादोसै तीनसै योजन प्रमाण है। बहुरि मध्य प्रासादनिके द्वारनिकी चौड़ाई उचाई गाथ बारह चौईस आठ धनुष है, उत्कृष्ट प्रसादनिके द्वारनिकी चौईस छत्तीस बारह धनुष प्रमाण है ॥ ८९१ ॥

अब अधिकार भूत प्राकारनिके द्वारनिके नाम वा तिनके व्यासादिक कहैं हैं;—

विजयं च वैजयंतं जयंतमपराजियं च पुव्वादी ।
दारचउक्काणुदओ अडजोयणमद्धवित्थारो ॥ ८९२ ॥
विजयं च वैजयंतं जयंतमपराजितं च पूर्वादि ।
द्वारचतुष्काणामुदयः अष्टयोजनानि अर्धविस्तारः ॥ ८९२ ॥

अर्थ—विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित १ ऐसें नाम धारक तिन प्राकारनिके पूर्वादि दिशानि विषै द्वार हैं। तिन च्यारि द्वारनिका उदय आठ योजन है, विस्तार तातै आधा च्यारि योजन है ॥ ८९२ ॥

आगैं तिन द्वारनिके ऊपरि रचनाका स्वरूपकी आदि दै कहि वर्णन गाथा तीन करि कहे हैं;—

तोरणजुददारुवरिं दुगवास चउक्कतुंग पासादो ।
बारसहस्सायदद्धवासं विजयपुरमुवरि गयणतले ॥ ८९३ ॥
तोरणयुतद्वारोपरि द्विव्यासः चतुष्कतुंग प्रासादः ।
द्वादशसहस्रायतार्धव्यासं विजयपुरमुपरि गगनतले ॥ ८९३ ॥

अर्थ—तिन तोरण संयुक्त द्वारनिके ऊपरि दोय योजन चौड़ा च्यारि योजन ऊंचा प्रासाद है। तिनके ऊपरि आकाश तल विषै बारह हजार योजन लंबा तातैं आधा छह हजार योजन चौड़ा विजय नाम नगर है ॥ ८९३ ॥

एवं सेसदिसासु विजयादिदिदी दु णादिव्वं पदे ।
अणदीयूणे वासम दाराणि अट्ठोण णिग्गमणं ॥ ८९४ ॥
एवं शेषदिक्षु विजयादिदिदी तु ज्ञातव्यं पदे ।
अनतीयूने व्यासम द्वाराणि अष्टोन निर्गमनं ॥ ८९४ ॥

अर्थ—अवशेष तीन दिशा विषै भी ऐसे ही प्रासाद वा वैजयंतादि नाम नगर । बहुरि तिनि नगरनि विषै तिनके [illegible] आधा प्रमाण है। बहुरि

जगती जो जंबूद्वीपकी वेदी ताके मूल विषै सीता सीतोदा बिना अवशेष बारह नदी निकसनेके बारह द्वार है। सीता सीतोदा पूर्व पश्चिम द्वार करि ही समुद्र विषै प्रवेश करे है। तातैं इनके जुदे द्वारनिका अभाव है ॥ ८९४ ॥

पायारंतब्भागे वेदिजुदं जोयणद्धवास वणं।
दारूणपरिरिदुरियो विजयादीदारअंतरयं ॥ ८९५ ॥
प्राकारांतर्भागे वेदीयुतं योजनार्धव्यासं वनं।
द्वारोनपरिधिचुर्यो विजयादिद्वारांतरं ॥ ८९५ ॥

अर्थ—तिस प्राकारके मांहिली तरफ वेदिका सहित आध योजन चौड़ा पृथ्वी उपरि वन है। बहुरि तिस प्राकारके चारयौं द्वारनिका व्यास सोलह योजन सो जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि प्रमाण ३१६२२८ विषै घटाइ अवशेष ३१६२१२ के च्यारि भाग किएं गुण्यासी हजार तेरपन योजन प्रमाण विजयादिक द्वारनिकौ परस्पर अंतराल है। ऐसें ही अन्यत्र जानना। ऐसें द्वीप अर समुद्रके बीचि तिष्ठता जो प्राकार ताका वर्णन सहित जंबूद्वीपका वर्णन समाप्त भया ॥ ८९५ ॥

आगैं लवण समुद्रके अभ्यंतरवर्ती जे पाताल तिनका स्थान वा तिनकी संख्या वा तिनके व्यासादिकका परिमाण कहै हैं;—

लवणे दिसविदिसंतरदिसासु चउ चउ सहस्स पायाला।
मज्झुदयं तलवदणं लक्खं दसमं तु दसमकमं ॥ ८९६ ॥
लवणे दिशाविदिशांतरदिशासु चत्वारि सहस्रं पातालानि।
मध्योदयः तलवदनं लक्षं दशमं तु दशमकमं ॥ ८९६ ॥

अर्थ—लवण समुद्रके मध्यभाग परिधिविषै च्यारि दिशानिविषै अर च्यारि विदिशानिविषै अर इन आठनिके बीचि आठ अंतर दिशा विषै अनुक्रमतैं च्यारि च्यारि एक हजार पाताल हैं। गर्त खाड़ा ताका नाम पाताल है। तहां दिशासंबंधी च्यारि पाताल तिनका उदयका मध्य भागविषै व्यास एक लाख योजन है। बहुरि उदय जो उचाई ताका प्रमाण तैसेंही एक लाख योजन है। नीचे ही नीचे तल व्यास ताका दशवां भाग दश हजार योजन है। उपरि मुख व्यास तैसें ही दश हजार योजन है। भावार्थ—ए पाताल ऊभा मृदंगके आकारि हैं। सो समभूमितैं नीचेका जो उंडाईका प्रमाण सौ उचाई जाननी। ताका मध्यविषै तौ व्यास अधिक है। अर ताके उपरि वा नीचैं क्रमतैं घटता घटता नीचें वा नीचें अर उपरि समभूमिविषै समान व्यास है। इहां प्रश्न जो लक्ष योजन पर्यंत उंडाई कैसें संभवै? ताका समाधान—रत्नप्रभा पृथ्वी एक लाख असी हजार योजन मोटी है। तहां खरभाग पंकभाग पर्यंत ते पाताल ऊंडे जाननें। बहुरि विदिशासंबंधी च्यारि पातालनिकै दिशासंबंधी पातालनितैं दशवां भागका अनुक्रम जानना सो मध्य व्यास दश हजार उदय दश हजार तल व्यास एक हजार मुख व्यास एक हजार योजन प्रमाण है। बहुरि अंतर दिशा संबंधी हजार पातालनिका विदिशा संबंधी पातालनितैं दशवां भागका अनुक्रम जानना। सो मध्य व्यास हजार तल व्यास एकसौ मुख व्यास एकसौ योजन प्रमाण है ॥ ८९६ ॥

आगैं दिशा संबंधी पातालनिका नामादिक कहैं हैं;—

वडवामुहं कदंवगपायालं जूवकेसरं वट्टा ।
पुव्वादिवज्जकुड्डा पणसयवाहल्ल दसय कमा ॥ ८९७ ॥

वडवामुखं कदंवकं पातालं यूपकेशरं वृत्तानि ।
पूर्वादिवज्रकुड्यानि पंचशतवाहल्यं दशमं क्रमात् ॥ ८९७ ॥

अर्थ—वड़वामुख १ कदंवक १ पाताल १ यूपकेसर १ ऐसें पूर्वादि दिशा संबंधी पातालनिके नाम हैं । बहुरि ते सर्व पाताल वृत्त कहिए गोल हैं । बहुरि वज्रमई कुड्यकरि संयुक्त है । तहां दिशा संबंधी पातालनिके कुड्यका बाहुल्य जो मोटाईका प्रमाण सो पांचसै योजन है । बहुरि याका दशवां अंश पचास योजन विदिशा संबंधी पातालनिका कुड्य बाहुल्य है ॥ ८९७ ॥

आगैं तिन पातालनिके अभ्यंतर वर्ती जल अर पवन तिनके प्रवर्तनेका क्रम कहैं हैं;—

हेट्ठुवरिमतियभागे णियदं वादं जलं तु मज्झम्हि ।
जलवादं जलवड्ढी किण्हे सुक्के य वादस्स ॥ ८९८ ॥

अधस्तनोपरिमत्रिभागे नियतः वातो जलं तु मध्ये ।
जलवातः जलवृद्धिः कृष्णे शुक्ले च वातस्य ॥ ८९८ ॥

अर्थ—तिन पातालनिकी उचाईका तीन भाग करिए तहां दिशा संबंधी पातालनिका तीसरा भाग तेतीस हजार तीनसै तेतीस योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है । विदिशा संबंधीनिका तीन हजार तीनसै तेतीस योजन एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है । अंतर दिशा संबंधीनिका तीनसै तेतीस योजन एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है । तहां नीचला तीसरा भाग विषै तौ केवल पवन ही पाइए है । बहुरि उपरिका तीसरा भाग विषै केवल जल ही पाईए है । बहुरि मध्यका तीसरा भाग विषै जल पवन मिश्ररूप पाईए है । तहां कृष्णपक्ष विषै तीह मध्यका तृतीय भाग विषै तिष्टता जलकी हानि हो है । बहुरि शुक्ल पक्ष विषै तहां ही तिष्टता पवनकी वृद्धि हो है ॥ ८९८ ॥

अब तिस हानि वृद्धिके प्रमाण कौं कहैं हैं;—

तम्मज्झिमतियभागे लवणसिहा चरिमपणसहस्से य ।
पण्णरदिणेहिं भजिदे इगिदिण जलवादवड्ढि जलवड्ढी ॥ ८९९ ॥

तन्मध्यमत्रिभागे लवणशिखा चरमपंचसहस्रे च ।
पंचदशदिनैः भक्ते एकदिने जलवातवृद्धिः जलवृद्धिः ॥ ८९९ ॥

अर्थ—तिन पातालनिका मध्य तृतीय भागका पूर्वोक्त प्रमाण ताकौं पंद्रह दिनका भाग दिएं जो प्रमाण होइ । दिशा ३३३३३ १-३ विदिशा ३३३३३ १-३ अंतर दिशा ३३३ १/३ तितना मध्य तृतीय भाग विषै एक एक दिन प्रति । दिशा २२२२ २/३ विदिशा २२२२ १/३ अंतर दिशा २२२ १/३ कृष्णपक्ष विषै जलकी वृद्धि अर शुक्ल पक्ष विषै पवनकी वृद्धिका प्रमाण हो है । पातालनिका मध्य तृतीय भाग विषै नीचे पवन ऊर्ध्व बढ़ है सो दिन दिन प्रति कृष्णपक्ष विषै

घनकी जायगा जल होता जाय है। अर शुक्ल पक्ष विषै जलकी जायगा पवन होता जाय है ऐसा भाव जानना। बहुरि लवण समुद्रकी जो शिखा सममूमितैं ऊंचा जलका प्रमाण ताका अंतका जो पांच हजार योजन साढ़े पंद्रह दिननिका भाग दिएं तीनसै तेतीस योजन एक तृतीय भाग आया सो लवण समुद्रकी शिखा विषै दिन दिन प्रति जल बधनेका प्रमाण हो है। सममूमितैं ग्यारह हजार योजन ऊंचा जल है ताके ऊपरि शुक्ल पक्ष विषै इतना इतना जल ऊंचा चढि पूर्णमाके दिनि सोलह हजार योजन ऊंचा जल हो है। कृष्णपक्ष विषै तैसैं ही घटि तितना ही आनि रहै ऐसा भाव जानना। अब इस ही अर्थको बर्नै हैं। पंद्रह दिननिकों तेतीस हजार तीन सै तेतीस योजन एक तृतीय भाग घटनें बधनें रूप हानिचय होय तौ एक दिन कै केता होइ। ऐसैं त्रैराशिक करि समछेद विधानतैं अंशी ९९९९९÷३ अंश १ निकों मिलाय १००००÷३ भागहार तीनकों गुणकार राशि रूप पंद्रहका भाग हार करि गुणें पैंतीस होइ १०००००÷४५ इस भागहारका भाग दिएं दोय हजार दोय सै बाईस योजन भए अर अवशेष १०÷४५ कों पांचकरि अपवर्तन किएं दोय नवमां भाग भया सो इतना मध्य तृतीय भाग विषै दिन दिन प्रति जल पवन घटै बधै है। ऐसैं ही लवण समुद्रकी शिखा विषै वा विदिशा अंतर दिशा संबंधी पातालनि विषै क्रमकरि जलवानका शिखाका हानि वृद्धिका अनुक्रम जानना॥ ८९९॥

ऐसैं हानि वृद्धि युक्त जो लवण समुद्र ताकौ भूमुख व्यास कहै है;—

पुण्णदिणे अमवासे सोलेकारससहस्स जलउदओ।
वासं मुहभूमीए दसयसहस्सा य वेलक्खा॥ ९००॥

पूर्णदिने अमावास्यायां षोडशैकादशसहस्रं जलोदयः।
व्यासः मुखभूम्योः दशसहस्रं च द्विलक्षं॥ ९००॥

अर्थ—पूर्णिमाके दिन तौ सोलह हजार योजन लवण समुद्र विषै जल ऊंचा हो है। बहुरि अमावस्याकै दिन ग्यारह हजार योजन जल ऊंचा हो है। भावार्थ—लवण समुद्रका मध्य भाग विषै अमावस्याकै दिन सममूमितैं ग्यारह हजार योजन जल ऊंचा रहै है। बहुरि दिन दिन प्रति तीन तेतीस योजन अर एक तृतीय भाग प्रमाण जलकी उचाई बधै सो पूर्णमासीकै दिन सोलह हजार योजन होइ तहा पीछैं दिन प्रति तितनी ही घटै ऐसैं जलकी उंचाईकी हानि वृद्धि है। ऐसैं सोलह हजार योजनकी उचाई विषै मुख व्यास दश हजार योजन है। अर भूव्यास दोय लाख योजन है। भावार्थ—सममूमितैं उपरि सोलह हजार योजन जल उंचा है। तहां तिस जलकी उंचाईका प्रमाण दश हजार योजन है सो मुख व्यास जानना। बहुरि सममूमि विषै दोय लाख योजन समुद्रकी चौड़ाई है सो भूव्यास जानना। बहुरि सोलह हजार योजनकी उचाई घटै एक लाख तिरेसी हजार योजन चौड़ाईका प्रमाण घट्या तौ पांच हजार योजनकी उचाई विषै केता घट्या ऐसे अपवर्तन करि गुणे ९५०००० अपना भागहारका भाग दिएं गुणसठि हजार सै पिचहत्तरि योजन भए। या विषै मुख व्यास दस हजार जोड़ें ग्यारह हजारकी उंचाई विषै व्यास हो है। भावार्थ—सममूमितैं ग्यारह हजार योजन ऊंचा जल है। तहा तिसकी

पीछें जो पिच्यानवे योजनका सोलह्वां भागमात्र तटतैं परैं जल एक योजन ऊंचा होइ तौ पूर्व वेदिकाका अंतराल ३०४९७६÷६१ मात्र तटतैं परैं जल केता ऊंचा होइ ऐसैं त्रैराशिक करि प्रथम राशिरूप भागहारके छेद लवनिकौं पलटि परस्पर गुणें ऐसा ४८७९९६१६÷५७२५ भया। इहां भागहारका भाग दिएं चौरासीनै बीस योजन अर सत्तावनसै सोलहका सत्तावनसै पिच्यानवेंका भाग ८४२०।५७१६÷५७९५ मात्र लवण समुद्रसंबंधी सूर्यनिकै निकटि लवण समुद्रका जल ऊंचा है इहां जलके बांचि सूर्यादिक विचरै हैं ऐसा जानना ॥ ९०१ ॥

अब पातालनिका अंतराळकौं निरूपै हैं;—

मज्झिमपरिधिचउत्थं विवरमुहं तंवि मज्झमुहमद्धं ।
सयगुणपण्णधणहीणं तं सयछव्वीसभाजिदे विरहं ॥ ९०२ ॥
मध्यमपरिधिचतुर्थं विवरमुखं तदपि मध्यमुखमर्धं ।
शतगुणपंचघनहीनं तत् शतषड्विंशभाजिते विरहं ॥ ९०२ ॥

अर्थ—लवण समुद्रका मध्यम सूची व्यास तीन लाख योजन ताका स्थूल परिधि नवलाख बेंतालीस हजार योजन ताका चौथा भाग दोय लाख पचीस हजार योजन मात्र दिशा संबंधी एक पातालके मुखका अंत पर्यंत क्षेत्र है। यामैं पातालका मध्य व्यास एक लाख योजन घटाएं तीन पातालनिकी उंचाईका मध्य विषै परस्पर अंतराल एक लाख पचीस हजार योजन मात्र हो है। अर तामैं पातालका मुख व्यास दश हजार योजन घटाएं तिन पातालनिके मुखनिका बीचि अंतराल दोय लाख पंद्रह योजन मात्र हो है। बहुरि यामैं विदिशा संबंधी पातालका मुखव्यास हजार योजन घटाइ अवशेष २१४००० का आधा दिएं दिशा संबंधी पाताल अर विदिशा संबंधी पातालनिका मुखनिके बीचि अंतराल एक लाख सात हजार योजन हो है। बहुरि तिनैं मुखा पत्रका घन बावन हजार पांचसै तिनकौं घटाइ अवशेष ९४५०० को एकसौ एकतीसका भाग दिएं दिशा विदिशा संबंधी पातालनिके बीचि जे पाताल हैं तिनका मुखनिके बीचि परस्पर अंतराल सर्वत्र पचास योजन मात्र हो है ॥ ९०२ ॥

अब लवणोदक समुद्रके पातालनि विषै नागकुमार देव तिनके विमाननिकी संख्याकौं तथा तिनकी आयुकौं कहै है,—

वेदंधर भूदगविमाणाणं लक्खमाणि बारिहि गिरहे ।
अंते बावत्तरि अद्धीणं बादालमद्धं आउगं ॥ ९०३ ॥
वेदंधर भूदकविमानानां लक्षमानि बाह्ये विरहे ।
अंते द्वासप्ततिरर्धानां द्विचत्वारिंशदर्धमायुष्कं ॥ ९०३ ॥

अर्थ— [illegible] ॥ ९०३ ॥

दुतडादो सगसयं दुकोसअहियं च होइ सिहरादो।
णवराणि हु गयणतले जोयणदसगुणसहस्सवासाणि ॥ ९०४ ॥
द्विसटात् सप्तशतं द्विक्रोशाधिकं च भवति शिखरात्।
नगराणि हि गगनतले योजनदशगुणसहस्रव्यासानि ॥ ९०४ ॥

अर्थ—लवण समुद्रके दोऊ तटतैं सातसै योजन अर ताके शिखरतैं दोयकोस अधिक सातसै योजन जोडि ऊपरि जाइ आकाशविषै दश हजार योजन व्यास लीएं नगर हैं। भावार्थ—लवण समुद्रका बाह्य अर अभ्यंतर जो तट ताके ऊपरि सातसै योजन जाइ अर लवण समुद्रकै जल ऊंचा है ताके ऊपरि सातसै योजन अर दोय कोश जाइ वेलंधर जातिके नागकुमार देवनिके नगर हैं। ए नगर आकाशविषै जलतैं ऊपरि जानने। तिनका प्रत्येक व्यास दश हजार योजन मात्र जानना ॥ ९०४ ॥

आगै दिशा संबंधी पातालनिके दोऊ पार्श्वनिविषै तिष्टते पर्वतनिकों अर तहां वास करते देवादिक तिनकी गाथा च्यारि करि कहै हैं;—

वडवामुहपहुदीणं पासदुगे पव्वदा हु एक्केक्का।
पुव्वे कोत्थुभसेलो इय विदियो कोत्थुभासो दु ॥ ९०५ ॥
वडवामुखप्रभृतीनां पार्श्वद्वये पर्वता हि एकैकाः।
पूर्वस्यां कौस्तुभशैलः इह द्वितीयः कौस्तुभासस्तु ॥ ९०५ ॥

अर्थ—वडवा मुख आदि जे दिशा संबंधी पाताल तिनके दोऊ पार्श्वनिविषै एक एक पर्वत है। तहां पूर्वदिशा संबंधी पातालकी पूर्व दिशाविषै कौस्तुभ नामा पर्वत है बहुरि इहां दूसरा पूर्वदिशा विषै कौस्तुभास नामा पर्वत है ॥ ९०५ ॥

तहिं तण्णामदुवाणा दक्खिणदो उदगउदगवासणगा।
इह सिवसिवदेवसुरा संखमहासंख गिरिदु पच्छिमदो ॥ ९०६ ॥
तत्र तन्नामद्विवासौ दक्षिणद्वये उदकउदकवासनगौ।
इह शिवशिवदेवसुरौ शंखमहाशंखौ गिरिद्वयौ पश्चिमद्वये ॥ ९०६ ॥

अर्थ—तिन पर्वतनिकै ऊपरि तिन पर्वतनिकै समान नामके धारक दोय व्यंतर देव वसै बहुरि दक्षिण दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविषै उदग अर उदक वास नामा पर्वत तिनकै ऊपरि शिव अर शिवदेवनामा व्यंतर देव वसैं हैं। बहुरि पश्चिम दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविषै शंख अर महाशंख नामा पर्वत हैं ॥ ९०६ ॥

तप्पुदयुदवासमरा दगदगवासद्दिजुगलमुत्तरदो।
लोहिल्लोहिदअंका तहिं वाणा विविहवण्णणया ॥ ९०७ ॥
तत्प्रोदकोदवासाख्यौ उदकउदकवासाद्रियुगलमुत्तरद्वये।
लोहितलोहिताका तत्र वाणा विविधवर्णनकाः ॥ ९०७ ॥

अर्थ—तिन पर्वतनिके ऊपरि उदक अर उदकवास नामा व्यंतर देव वसै हैं। बहुरि उत्तर दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविषै दक अर दकवास नामा पर्वत युगल है। तिनके ऊपरि

लोहित अर लोहितांक नामा व्यंतर वसें हैं। ते सर्व व्यंतर विविध नाना प्रकार वर्णना जो विभूषादिक ताकरि संयुक्त हैं ॥ ९०७ ॥

घवला सहस्समुग्गय सव्वणगा अद्धघडसमायारा।
उभयतडादो गत्ता बादालसहस्समत्थंति ॥ ९०८ ॥

धवलाः सहस्रमुद्गताः सर्वनगाः अर्धघटसमाकाराः।
उभयतटात् गत्वा द्वाचत्वारिंशत्सहस्रमासते ॥ ९०८ ॥

अर्थ—ते सर्व पर्वत धवल वर्ण हैं। अर जदतैं हजार योजन ऊंचे हैं। अर आधा घड़ाके समान इनका आकार है। बहुरि बाह्य तटतैं उरैं अर अभ्यंतर तटतैं परैं ऐसैं उभय तटौं बियालीस हजार योजन जाइ तिष्ठै हैं ॥ ९०८ ॥

आगैं लवण समुद्रके अभ्यंतर जे द्वीप हैं तिनकौं अर तिनके व्यासादिकौं गाथा पांचि करि कहै हैं;—

तडदो गत्ता तेत्तियमेत्तियवासा हु विदिस अंतरगा।
अडसोलस ते दीवा बट्टा सूरक्खचंदक्खा ॥ ९०९ ॥

तटतः गत्वा तावन्मात्रव्यासा हि विदिक्षु अंतरकाः।
अष्टषोडश ते द्वीपा वृत्ताः सूर्याक्षचंद्राख्याः ॥ ९०९ ॥

अर्थ—उभय तटनितैं जितने ही योजन जाइ तितनेही व्यासके धारक विदिशा अर अंतर दिशानिविषै आठ अर सोलह सूर्य नामा अर चंद्रनामा द्वीप वृत्ताकार हैं। भावार्थ—अभ्यंतर तटौ दोऊ अर बाह्य तटतैं उरैं बियालीस हजार योजन जाइ बियालीस हजार योजन माप आठ करि संयुक्त विदिशा अर अंतर दिशानिविषै द्वीप हैं। तहां च्यारयो विदिशानिके दोऊ पार्श्वनिविषै आठ सूर्यनामा द्वीप हैं। अर दिशा विदिशानिके बीचि जे आठ अंतर दिशा तिनके दोऊ पार्श्वनिविषै सोलह चंद्रनामा द्वीप हैं। ते सर्व द्वीप गोल आकार हैं। इहां द्वीपनका व्यास जानना ॥ ९०९ ॥

तडदो बारसहस्सं गंतूणिह तेत्तियुदयवित्थारो।
गोदमदीओ चिट्ठदि वायव्वदिसम्हि वट्टत्तो ॥ ९१० ॥

तटतः द्वादशसहस्रं गत्वेह तावदुदयविस्तारः।
गौतमद्वीपः तिष्ठति वायव्यदिशीति वर्तुलः ॥ ९१० ॥

अर्थ—इस लवण समुद्रके अभ्यंतर तटतैं बारह हजार योजन जाइ [illegible] ॥ १२००० अर [illegible] १२००० व्यासका धारक गोल आकार लिए गौतम द्वीप [illegible] ॥ ९१० ॥

बहुरम्मणवणसंडा वणवेदीसहिय तेसु दीवेसु।
[illegible] गंगादीवणामा मे ॥ ९११ ॥

[illegible] तेषु द्वीपेषु।
[illegible] ॥ ९११ ॥

अर्थ—ते ए सर्व द्वीप वन अर वेदिकानि करि सहित हैं। तिनविषै बहुत वर्णना करि संयुक्त मंदिर हैं। बहुरि तिनही द्वीपनिके स्वामी वेलंधर जातिके नागकुमार हैं। ते अपनें अपनें द्वीपके नाम समान नामके धारक हैं ॥ ९११ ॥

मागहतिदेवदीवा चिदयं संखेज्जजोयणं गत्ता।
तीरादो दक्खिणदो उत्तरभागेवि होदित्ति ॥ ९१२ ॥
मागधत्रिदेवद्वीपा अपि तथा संख्यातयोजनं गत्वा।
तीरात् दक्षिणतः उत्तरभागेपि भवंतीति ॥ ९१२ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रविषै जो समुद्रका दक्षिण तट तातैं परैं संख्यात योजन परैं जाइ मागध अर वरतनु अर प्रभास नाम धारक जे तीन देव तिनके तिनही नाम धारक तीन द्वीप हैं। भावार्थ—भरत क्षेत्रकी दोय नदीके प्रवेश द्वार अर एक जंबूद्वीपका द्वार इन तीनौं द्वारनिके सनमुख देते इक योजन जाइ मागधादिक देवनिके द्वीप हैं। इनकौं चक्रवर्ती साधै है। बहुरि तैसेही ऐरावत क्षेत्रका उत्तर भागविषै भी तीन द्वीप हैं ॥ ९१२ ॥

अब लवणोदक समुद्र कालोदक समुद्रके अभ्यंतर तिष्ठते छिनवे कुमनुष्यनिके द्वीप तिनकौं कहै है;—

दिसिविदिसंतरगा हिमरजदाचलसिहरिरजदपणिधिगया।
लवणदुगे पल्लट्ठिदी कुमणुसदीवा हु छण्णउदी ॥ ९१३ ॥
दिशाविदिशांतरकाः हिमरजताचलशिखरिरजतप्रणिधिगताः।
लवणद्विके पल्यस्थितयः कुमनुष्यद्वीपा हि षण्णवतिः ॥ ९१३ ॥

अर्थ—लवण समुद्रकी दिशानि विषै च्यारि अर विदिशानि विषै च्यारि अर दिशा विदिशानिके मांहि जे अंतर दिशा तिन विषै आठ अर हिमवन कुलाचल भरत संबंधी वैताढ्यशिखरी कुलाचल ऐरावत संबंधी वैताढ्य इन पर्वतनिके दोऊ अंतनिके निकटि दोय तिनके मिले हुए आठ इनें सर्व मिलि लवण समुद्रका अभ्यंतर तट विषै चौंईस द्वीप हैं। बहुरि बाह्य तट विषै भी ऐसें ही चौंईस हैं। मिलिकरि अठतालीस भए। ऐसेंही कालोदक समुद्रके दोऊ तटनि विषै अठतालीस द्वीप हैं। ऐसे सर्व मिलि छिनवे कुमनुष्यनिके द्वीप जाननें। बहुरि तहां तिष्ठते मनुष्य एक पल्य प्रमाण आयुके धारक हैं ॥ ९१३ ॥

आगैं दोऊ तटनि विषै तिनका अंतराल अर तिनका विस्तारकौं क्रम करिकहै है;—

दसगुण पण्णं पण्णं पणवण्णं सट्ठिमुवरिमाहिगम्म।
सय पणवण्णं वण्ण पणुवीसं वित्थडा कमसो ॥ ९१४ ॥
दशगुण पंचाशत् पंचाशत् पंचपंचाशत् षष्टिरुपरिमाधिगम्य।
शते पंचपंचाशत् पंचविंशानि विस्तार क्रमशः ॥ ९१४ ॥

अर्थ—ते द्वीप क्रमतैं दश गुणा पचास अर पचास अर पचावन अर साठि योजन तटिनतैं समुद्र विषै जाइ सो पचास पचास पचावन साठि पचीस योजन विस्तार संयुक्त क्रम जानने। भावार्थ—अभ्यंतर

तटतैं परैं अर बाह्य तटतैं उरैं दिशा संबंधी द्वीप पांचसै योजन विदिशा संबंधी द्वीप पांचसैं योजन अंतर दिसा संबंधी पांचसै पचास योजन पर्वत निकटवर्त्ती छसै योजन जाय समुद्र विषै द्वीप हैं। तहां दिशा संबंधी सौ योजन विदिशा संबंधी पचावन योजन अंतर दिशा संबंधी पचास योजन पर्वत निकटवर्त्ती पचीस योजन प्रमाण विस्तार धरैं गोल आकार द्वीप जानने ॥ ९१४ ॥

आगैं तिन द्वीप रूप पर्वतनिका जलतैं उपरि वा नींचैं उच्चत्व कहैं हैं;—

इगिगमणे पणणउदिमतुंगो सोलगुणमुवरि किं पयदे ।
दुगजोगे दीउदओ सवेदिया जोयणुग्गया जलदो ॥ ९१५ ॥

एकगमने पंचनवतितुंगः षोडशगुणमुपरि किं प्रकृते ।
द्विकयोगे द्वीपोदयः सवेदिका योजनोद्गता जलतः ॥ ९१५ ॥

अर्थ—इहां ऐसा जाननां सम भूमिकी बरोबरि तौ लवण समुद्रके जलका व्यास दोय लाख योजन है। अर क्रमतैं घटता घटता सम भूमितैं नींचैं एक हजार योजन ऊंडा जल है। तहां जलका व्यास दश हजार योजन है अर सम भूमितैं उपरि सोलह हजार योजन ऊंचा जल है। तहां जलका व्यास दश हजार योजन है सो हानिचयका प्रमाण स्याइ जहां ए द्वीप हैं तहां सम भूमितैं नींचेकों जो जलकी उंडाईका प्रमाण होइ सो तौ जलका नींचैं उच्चत्व जाननां। अर सम भूमितैं उपरि जो जलकी ऊंचाईका प्रमाण होइ सो जलका उपरि उच्चत्व जाननां सो कहिए है। सम भूमिकी बरोबरि जल व्यास दोय लाख योजन सो तो भूमि अर घटता घटता नींचैं जलव्यास दश हजार योजन सो मुख भूमितैं मुखकों घटाइ अवशेष १९०००० कौं एक पार्श्व ग्रहण करनेकी आधा किएं पिच्याणवै हजार योजन भए। बहुरि पिच्याणवै हजार योजनकी जलव्यास विषै हानि होनैं हजार योजन जलकी नींचैतैं उचाई होइ तौ एक योजनकी हानि विषै केती होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं तटतैं एक योजन गएं सम भूमितैं नींचैं जलकी उंचाईका प्रमाण एक योजनका पिच्याणवैवां भाग आया १÷९५ बहुरि तटतैं एक योजन गएं जो एक योजनका पिच्याणवैवां भाग मात्र जलकी उचाई होइ तौ पांचसै वा साढा पांचसै वा छहसै योजन तटतैं गए केती उचाई होइ। ऐसैं त्रैराशिक किएं तहां प्रमाण राशिरूप भागहारका भाग दिएं अर अवशेष छेदरूप रहे तिनका पाच करि अपवर्तन किएं तटतैं पांचसै आदि योजन गएं तहां सम भूमितैं नींचैं जलका उदय क्रमतैं पांच योजन पांच उगणीसवां भाग अर पांच योजन पांच उगणीसवां भाग अर पांच योजन पंद्रह उगणीसवां भाग अर छह योजन छह उगणीसवां भाग प्रमाण आवै है। सो दिशा संबंधी आदि द्वीपनिके निकटि इतनां तौ सम भूमितैं नींचै जलका उच्चत्व जाननां। बाह्य पर्व तहां इतना उच्च जल है। अब सम भूमितैं उपरि [illegible] समभूमिकी बरोबरि जल व्यास दोय लाख योजन सो भूमि [illegible] भूमितैं मुख घटाइ अवशेषकी आधा [illegible] विषै पिच्याणवै [illegible]

किएं पिच्याणवैका सोलहां भाग प्रमाण आया। बहुरि तटतैं पिच्यानवैका सोलहां भाग मात्र जल परैं भएं एक योजन जल ऊंचा होइ तौ तटतैं एक योजन परैं भएं जल केता होइ ऐसें त्रैराशिक किएं तटतैं एक योजन परैं जल है सो सोलहका पिच्याणवैवां भाग मात्र ऊंचा जलका प्रमाण आया। बहुरि तटतैं एक योजन परैं जल भएं सोलह गुणां पिच्याणवैवां भाग जल ऊंचा होइ तौ पांचसै वा साढा पांचसै वा छसै योजन तटतैं परैं जल केता ऊंचा होइ ऐसें त्रैराशिक किएं अर पांच करि अपवर्तन किएं ऐसा। १६००-१९ १६००÷१९ १७६०÷१९ १९२०÷१९ इहां भागहारका भाग दिएं पांचसै आदि योजन तटतैं परैं जलकी उंचाई क्रमतैं चौरासी योजन बारि उगणीसवां भाग अर चौरासी योजन चार उगणीसवां भाग अर बाणवै योजन बारह उगणीसवां भाग अर एकसौ एक योजन एक उगणीसवां भाग मात्र जाननी। दिशा विदिशा संबंधी द्वीपनिके निकटि समभूमितैं जल इतना ऊंचा है। बहुरि समभूमितैं नीचें अर ऊपरि जो जलकी उंचाई सो-कों मिलाएं जलका अवगाह प्रमाण तिस तिस द्वीपकी उंचाई जाननी अर वेदिका करि सहित ते द्वीप जलतैं उपरि एक योजन ऊंचे हैं। तटतैं एक योजन भी जल विषै प्राप्त उंचाई तिसे मिलाएं। भूमि तलतैं दिशा संबंधी द्वीपनिका तिसे योजन नव उगणीसवां भाग अर विदिशा संबंधीनिका तिसे योजन नव उगणीसवां भाग अर अंतर दिशा संबंधीनिका तिम्याणवै योजन आठ उगणीसवां भाग अर पर्वत सनमुखनिका एक सौ आठ योजन सात उगणीसवां भाग मात्र उदय जाननां ऐसें कह्या सर्व विधान सो कौस्तुभ आदि पर्वत द्वीपनि विषै भी जाननां। तटतैं जितनैं योजन दूर कहे हैं ताकै अनुसारि यथा संभवते उंचाईका वा अपने उंचाईका प्रमाण अपवर्त्त ॥ ९१५ ॥

अब तिन कुभोगभूमिनि विषैं उपज मनुष्यनिकी आकृतिका स्थान पांच गाथानि करि कहै हैं;—

एगुरुगा लंगलिगा वेसणगाभासगा य पुव्वादी।
सक्कुलिकण्णा कण्णप्पावरणा लंबकण्ण ससकण्णा ॥ ९१६ ॥
एकोरुकाः लांगलिका. वैषाणिका अभाषका च पूर्वादि।
शष्कुलिकर्णाः कर्णप्रावरणा लंबकर्णाः शशकर्णाः ॥ ९१६ ॥

अर्थ—एकोरुका कहिए एक ही ओपवाले अर लांगुलिका कहिए पूंछ सहित अर वैषाणिका कहिए सींग युक्त अर अभाषका कहिए न बोलने वाले गूंगे ऐसे ए क्रमतैं तो पूर्वादि दिशा संबंधी द्वीपनि विषैं वसै हैं। बहुरि शष्कुलिकर्णा कहिए शष्कुलि समान है कान जिनके अर कर्ण प्रावरणा कहिए कान है सो ही ओढ़ना है कान जिनके अर लंबकर्ण कहिए लंबा है कान जिनके अर शशकर्ण कहिए शशक समान है कान जिनके ऐसे विदिशानि विषैं ॥

[illegible]

सिंहाश्वगजवानरहरिखरमुखाः श्यामशूकरकपिवदनाः ।
कङ्काखेटगोमुखमेषमुखाः पिङ्गदंष्ट्रभरदनाः ॥ ९१७ ॥

अर्थ—बहुरि घोडा कुत्ता भैंसा सूवर बंदेरा घूघू बांदरा समान है मुख जिनका ऐसे सिंह गज मुख अर सूवर मुख अर महिष मुख अर वराह मुख अर श्याम वदन अर शूकर वदन अर कपि वदन हैं । ते ए आठ भए । बहुरि मीन काछ भीडा गरुड मेष चौंरी आदि इनसमान है मुख जिनका ऐसे शंख मुख अर गोमुख अर मेष मुख अर पिङ्गदंत अर दीर्घ वदन अर इन वदन हैं तेभी आठ भए । इहां विशेष कहा आकारनी अन्य सर्व आकार मनुष्य समान ॥ ९१७ ॥

अभिसिंहादी सक्कुलिकण्णादी सिंहदंतगयवयमुहा ।
पयूकगमकुलिमुहिसदुदीणं अंतरे णेया ॥ ९१८ ॥
अभिसिंहादिषु शष्कुलिकर्णादय. सिंहदंतगजमुखाः ।
एकोरुकशष्कुलिप्रभृतीनां अंतरे ज्ञेयाः ॥ ९१८ ॥

अर्थ—अभिसिंहादिक जे सिंहादि जिन विषै कर्णौ शष्कुलि कर्ण आदि कहे है । बहुरि जिन वदन मुख कहया आदि आठ अन्तर एकोरुक शष्कुलिकर्णादिका अंतरालादि आठ अंतर विषै कहे है तेऊ जानने ॥ ९१८ ॥

णिसिगयवयकण्णीसा पुव्वुत्ता सगणगस्स पुव्वदिसे ।
वक्खा अणिदा पच्छिमभागे भणंति ते कमसो ॥ ९१९ ॥
निशिगजवकर्णीशाः पूर्वोक्ता स्वकनगस्य पूर्वदिशि ।
वक्षारा अनिंद्याः पश्चिमभागे भणंति ते क्रमशः ॥ ९१९ ॥

अर्थ—निशिगज अर भाग वैशाख अर शिखरी अर वैडूर्य वैशाख इन आदि ईशानदिशा आदि विषै जिन कुलाचल आदि जानने । तहां क्रमतें कहया मूल आदि आठों कूटनि विषै अपने अपने पर्वतकी पूर्वदिशा विषै जिन जिन है । तिनकी ते जिन वक्षार पर्वत आठ आठ जिन है ॥ ९१९ ॥

वर्षधरगा सुदाम वर्धनि भद्रेति मित्रकीर्तिश्च ।
ज्ञेया देवकुरूणां कनकपद्मिनीनयोर्वी ॥ ९२० ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ९२० ॥

[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ ९२१ ॥

चतुर्विंशं चतुर्विंशं लवणद्वितीययोः कालद्वितटयोरपि।
द्वीपाः तावदेतत्व्यासाः कुनरा अपि तन्नामानः ॥ ९२१ ॥

अर्थ—लवण समुद्रके दोय तीरनि विषै चौबीस चौबीस द्वीप हैं। बहुरि कालोदक समुद्रके दोय तटनि विषै भी चौबीस चौबीस द्वीप हैं। इहां दिशा विदिशा अंतरदिशा संबंधी द्वीप तौ अभ्यंतर तीरनिकी दिशा विदिशा अंतरदिशानि विषै हैं ही। बहुरि पर्वत संबंधी द्वीप लवण समुद्रके अभ्यंतर तट विषै तौ जंबूद्वीप संबंधी पर्वतनिके दोऊ अंतनिविषै स्थित हैं। अर लवण समुद्रके बाह्य तट विषै अर कालोदकके अभ्यंतर तट विषै धातुकी खंड संबंधी पर्वतनिका एक एक अंत विषै स्थित हैं ऐसा जानना। बहुरि द्वीपनिका तटनै अंतराल अर व्यास लवण समुद्रवत् जिनमें ही दुगुना प्रमाण जानना। बहुरि जिन द्वीपनि विषै वसते कुमनुष भी जिस जिस दीप नाम सहित हैं नाम तिनका ऐसे हैं ॥ ९२१ ॥

आगें तिन कुभोग भूमि रूप कुमनुषनिके द्वीपनि विषै जे उपजै हैं तिनकी संख्या कहै हैं;—

जिणलिंगे मायावी जोइसमंतोवजीविणो धणकंखा।
अइगउरवसण्णजुदा करंति जे परविवाहंपि ॥ ९२२ ॥
जिनलिंगे मायाविनो ज्योतिर्मंत्रोपजीविनः धनकांक्षिणः।
अतिगारवसंज्ञायुताः कुर्वंति ये परविवाहमपि ॥ ९२२ ॥

अर्थ—जे जीव जिन जिस थलि तीर जिन जिस विषै कपट संयुक्त भाषी है। वा जिस जिस विषै ज्योतिष मंत्र वैद्य आदि करि आहारादिरूप कपट आजीविका करै है। वा जिस जिस विषै धन चाहै है। वा जिन जिस विषै ऋद्धि यश साता रूप गारव करि संयुक्त है। वा जिस जिस विषै आहार भय मैथुन परिग्रहरूप संज्ञानि करि संयुक्त है। वा जिन जिस विषै अन्य इत्यादिक परस्पर विधि मिलाइ विवाह करै है ॥ ९२२ ॥

दंसणविरादिया जे दोसं आलोचयंति दुरणया।
पंचग्गितवा मिच्छा तेसं परिदरिय भुंजंति ॥ ९२३ ॥
दर्शनविरताद्या ये दोषं नालोचयंति दुरनयाः।
पंचाग्नितपसः मिथ्या तेषां परिहृत्य भुंजते ॥ ९२३ ॥

अर्थ—जे जिन जिस विषै सम्यग्दर्शनके विराधक है। जे जिस जिस विषै करे हुए दुष्ट पापको भी गुरुनिके निकटि आलोचना न करै है। जे जिस जिस विषै अन्य अज्ञानीके द्वारा अन्याय [illegible] जे मिथ्यादृष्टी पंचाग्नि [illegible] करै है [illegible] ॥ ९२३ ॥

दुब्भाव असुहमुहडुप्पडणाउहकरा [illegible]
[illegible] ॥ ९२४ ॥

अर्थ—खोटे भावकरि वा अपवित्रताकरि वा मृतादिकका सूतक करि वा पुष्पवती स्त्रीका संसर्ग करि वा परस्पर विपरीत कुटनिका मिलनें रूप जो जातिसंकर ताको आदि देकरि संयुक्त दे दान करै हैं। बहुरि जे कुपात्रनिं विषै दान करै हैं ते ए जीव कुमनुष्यनि विषै उपजै हैं जातैं ए जीव मिथ्यात्व पाप सहित किंचित पुण्य उपार्जन करैं हैं ॥ ९२४ ॥

अब धातुकी खंड अर पुष्करार्ध द्वीपनि विषै रचना विषेका एक विधान है तातैं आगै करिए हैं जे क्षेत्र तिनके विभागकौं कारण भूत ऐसे जे तिन द्वीपनिके दोऊ पार्श्वनि विषै तिष्ठते इष्वाकार पर्वतनिकौं कहै हैं;—

चउरिसुगारा हेमा चउकूड सहस्सवास णिसहुदया।
सगदीववासदीहा इगिइगिवसदी हु दक्खिणुत्तरदो ॥ ९२५ ॥
चतुरिष्वाकारा हेमाः चतुःकूटाः सहस्रव्यासा निषधोदयाः।
स्वकद्वीपव्यासदीर्घा एकैकवसतयः हि दक्षिणोत्तरतः ॥ ९२५ ॥

अर्थ—धातकी अर पुष्करार्ध विषै मिलाए हुए चारि इष्वाकार पर्वत हैं ते सुवर्ण मय हैं। अर च्यारि च्यारि कूटनि करि युक्त हैं पूर्व पश्चिम विषै हजार योजन चौडे हैं। निषध कुलाचल समान च्यारिसै योजन ऊंचे हैं। दक्षिण उत्तर विषै अपनें अपनें द्वीपका व्यास समान च्यारि लाख आठ लाख योजन लंबे हैं। एक एक क्षेत्रादि रचना रूप वसती लीएं हैं। ऐसैं इष्वाकार तिन दोऊ द्वीपनिकी दक्षिण अर उत्तर दिसानि विषै तिष्ठै हैं ॥ ९२५ ॥

आगैं तिन दोऊ द्वीपनि विषै तिष्ठते कुलाचल आदि तिनका स्वरूप निरूपैं हैं;—

कुलगिरिवक्खारणदीदहवणकुंडाणि पुक्खरदलोत्ति।
अवगाधोसेधसमा दुगुणा दुगुणा दु वित्थिण्णा ॥ ९२६ ॥
कुलगिरिवक्षारनदीद्रहवनकुंडानि पुष्करदल इति।
अवगाधोत्सेधसमा द्विगुणा द्विगुणाः तु विस्तीर्णाः ॥ ९२६ ॥

अर्थ—धातकी खंडनें लगाय पुष्करार्ध पर्यंत तिस एक एक द्वीप विषै तिष्ठते दोऊ मेरु संबंधी कुलाचल बारह बहुरि गजदंतनि करि सहित वक्षार चालीस बहुरि गंगा सिंधु आदि अर विभंगा अर कर्मादि विदेह संबंधी दोय दोय मिलाई हुई नदी एकसौ असी। बहुरि कुलाचलनिके ऊपरि तिष्ठते अर भोग भूमि भद्रसालनिके मध्य तिष्ठते मिले हुए द्रह बावन बहुरि पूर्व नदी आदिनिके पार्श्व विषै तिष्ठते वन संख्याते अर गंगादिकनिके पडनेके अर विभंगा विदेह नदीनिके उपजनेके मिले हुए कुंड एकसौ असी ए सर्व उंडाई ऊंचाई इत्यादि करि तो मेरु द्वीप विषै तिष्ठते कुलाचल आदिकनिके समान जानने। अर इनका विस्तार जो चौडाईका प्रमाण सो मेरु द्वीप संबंधीनितैं दूणा दूणा है। बहुरि द्वीप संबंधी कुलाचलादिकनिका विस्तार तौ धातुकी खंडसंबंधीनितैं दूणा है। धातकी खंड संबंधीनितैं पुष्करार्ध संबंधीनिका दूणा है ॥ ९२६ ॥

आगैं इष्वाकार [illegible] अर इष्वाकारनिके आकारकौं निरूपै हैं;—

मयदुट्टणिभा वस्सा इसुहुदीवद्धिहत्थ संखाभो।
अब अक्कमुहा गुरुपव्वयंतरणया वाहि ॥ ९२७ ॥

इगिसीदिसया पण्णं इगिछक्केक्क तत्थ दोण्ण ।
खेत्तं अकट्टिमाणं इगिसंखाणवा कहिं ॥ ९२७ ॥

अर्थ—एक सौ इक्यासी सौ सत्तर आधा पुष्कर ऐसे स्थान कहिए जे क्षेत्र ते तो धातकी-खंडका सो इक्यासी सौ इकहत्तर आधा पुष्कर ऐसे जानने अर जहां क्षेत्र ते कुलाचल ते अभ्यंतरविषै तो अकृत्रिम है अर बाह्यविषै कृत्रिम जानना कहिए है। सो इनका आकार ऐसा जानना। इहां धातकी खंडकी पुष्करार्द्धकी रचना ऐसी जाननी ॥ ९२७ ॥

आगे धातकी खंड पुष्करार्द्धविषै विषै पर्वतनिके क्षेत्रादिकका आकारकी रचना करि रोक्या हुवा क्षेत्रकी संख्या जिनकी परिधिनिकी व्यारै है;—

दुगचउरट्ठछसगइगि दुकट्ठा चउरट्ठछपंचपणतिण्णि ।
चउरट्ठछसगइगिदुगा जाणादिममज्झचरिमपरिरिहिं च ॥ ९२८ ॥
दिचदुअट्ठछसगिं दिकटे चदुरट्ठछपंचपंचतीणि ।
चदुरट्ठछसगइगिदुगा जाणीहि आदिमध्यचरमपरिधीन् च ॥ ९२८ ॥

अर्थ—दोय व्यारि आठ आठ सात एक इनके अंकनि करि एक लाख अठहत्तरि हजार आठसै बियालीस योजन अर एक योजनके उगणीस भागनिविषै दोय कला इतना तो धातकी खंडका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र है। बहुरि व्यारि आठ छह पांच पांच तीन इनके अंकनि करि पैंतीस लाख इक्यावन हजार एक सौ चौरासी योजन अर उगणीस भागनिविषै व्यारि कला इतना पुष्करार्द्धका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र है। बहुरि तिन द्वीपनिविषै भरतादि क्षेत्रनिका व्यास जाननेके अर्थ तिनकी आदि परिधि मध्य परिधि अंत परिधि है तिनि तू जानि। इहां पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र ल्यावनेका विधानको प्रारंभ करै है। धातकी खंडविषै क्षेत्रनिका विस्तार तो विषमरूप है। अर पर्वतनिका विस्तार जंबूद्वीप संबंधीनितै दूणा ही है। तातैं जंबूद्वीप संबंधी पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र करि इन द्वीपसंबंधी पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र कहिए है। भरत आदि क्षेत्रनिकी शलाका तो क्रमतै एक व्यारि सोलह चौसठि सोलह व्यारि एक सौ मिलाई हुई एकसौ छह भई अर हिमवन आदि पर्वतनिकी शलाका क्रमतै दोय आठ बत्तीस आठ दोय सौ मिलाई हुई चौरासी हुई। सर्व पर्वत सर्व क्षेत्रनिकी शलाका मिलाइए सो मिश्र शलाका कहिए है। सो मिश्र शलाका एकसौ निवै भई। प्रथमविषै शलाकाका नाम विभंग है। ऐसैं इन एकसौ निवै मिश्र शलाकानिका पर्वतनिका मिल्या हुवा क्षेत्र एक लाख योजन होइ तो क्षेत्र रहित शुद्ध पर्वत शलाका चौरासी इनका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक किए जंबूद्वीपविषै पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र चौरासी गुणा [illegible] शलाका एकसौ निवै भाग दीजिए इतना भया १ ल ८४–१९० बहुरि एक शलाका [illegible] धातकी खंडविषै दूणा विस्तार होइ तो इतने १ ल ८४–१९० शलाका क्षेत्रका कितना [illegible] ऐसैं त्रैराशिक किए [illegible] धातकी खंडका एक मेरु संबंधी एक भागविषै पर्वतनि करि [illegible] भया। बहुरि एक भागविषै इतना २ ल ८४–१९० [illegible] ऐसैं त्रैराशिक किए जेता होइ ऐसा दूणा ऐसा

अभ्यंतर आयाम पांच लाख नव हजार पांचसै सत्तरि योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै दोयसै अंश प्रमाण हो है ॥ ९३१ ॥

अब कच्छादिक देशनिका मध्यविषै आयाम अर अंतविषै आयाम ल्यावनेंकों व्याख्यान गाथा दोय करि कहैं हैं;—

विजयावक्खाराणं विभंगणदिदेवरण्ण परिहीओ ।
विण्णिसयबारभजिदा वत्तीसगुणा तहिं वड्ढी ॥ ९३२ ॥
विजयवक्षाराणां विभंगनदीदेवारण्यानां परिधयः ।
द्विशतद्वादशभक्ता द्वात्रिंशद्गुणा तस्मिन् वृद्धयः ॥ ९३२ ॥

अर्थ—विदेहनिके देश अर वक्षार पर्वत अर विभंगा नदी अर देवारण्य बन इन च्यारिनिके जे परिधि तिनकों बत्तीस करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं तहां तहां आयामविषै वृद्धिका प्रमाण हो है ॥ ९३२ ॥

सगसगवड्ढी णियणियपढमायामम्हि संजुदा मज्झे ।
दीहो पुणरवि सहिदो तिरिए णियचरिमदीहत्तं ॥ ९३३ ॥
स्वस्ववृद्धयः निजनिजप्रथमायामे संयुता मध्ये ।
दीर्घः पुनरपि सहितः तिर्यक् निजचरमदीर्घत्वम् ॥ ९३३ ॥

अर्थ—देश आदि कहे जे च्यारि तिनका अपनां अपनां आयामविषै जो जो वृद्धिका प्रमाण ताकों आप आपकै पहलैं जो था ताका आयामविषै जोड़ें अपना अपना मध्यविषै आयाम प्रमाण हो है । बहुरि तिस तिस मध्य आयामविषै वृद्धिप्रमाण जोड़ें तहां तहां अपनां अंतविषै आयाम प्रमाण हो है । सो इन दोऊ गाथानिके अर्थकों कहें हैं । धातकी खंडका व्यास च्यारि लाख योजन तामैं मेरु अर दोय भद्रसालनिका व्यास दोय लाख पचीस हजार एकसो अठावन योजन घटाएं विदेहका भद्रशालनिके परै पूर्व पश्चिम विषै अंतका क्षेत्र एक लाख बहोत्तरि हजार आठसै बियालीस योजन प्रमाण हो है । याकों आधा किएं एक तरफका आधा अंतक्षेत्र छिन्यासी हजार च्यारिसै इकईस योजन प्रमाण हो है । पूर्व पश्चिम विषै भद्रशालकी वेदीतैं परै समुद्र पर्यंत जेता विदेहनिका इतनां क्षेत्र है तामैं च्यारि वक्षारनिका व्यास च्यारि हजार योजन अर तीन विभंगा नदीनिका व्यास साढा सातसै योजन अर देवारण्यका व्यास अठावनसै बावन योजन इनकों मिलाइ १०५९४ घटाएं अवशेष छिहत्तरि हजार आठसै सत्ताईस योजन प्रमाण विदेहका एक तरफ पर्वतादि सहित देश संबंधी शुद्ध क्षेत्रका व्यास हो है । याकों धारि बहुरि आठ देशनिका शुद्ध क्षेत्र इतना ७६८२७ भया तो एक देशका कितनां होइ । ऐसैं त्रैराशिक करि कच्छ नामा देशका पूर्व पश्चिमविषै व्यास नव हजार छसै तीस योजन अर योजनके तीन भागनि मैं [illegible] हो है । [illegible] अंश अठी मिलाएं छिहत्तरि हजार आठसै सत्ताईस [illegible] [illegible] [illegible]

इहां भागहारका भाग दिएं कच्छा देशके व्यासका परिधि तीस हजार तीनसै अडसठि योजन अर आधा योजन प्रमाण भया। इहां अंश असीतिनिकों समच्छेद करि मिलाएं साठि हजार सातसै सैंतीसका आधा ६०७३७÷२ भया। बहुरि धातकी खंडका एक भाग विषै कच्छा देशका व्यासकी इतनां ६०७३७÷२ परिधि भया सो दोय मेरु संबंधी दोऊ भागनिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि दोय करि गुणें ऐसा ६०७-३७।२÷२ भया। बहुरि पीछैं पर्वतनिका तौ समान व्यास है तातैं वृद्धिका अभाव जानि पर्वतनिकी एकसौ अडसठि शलाकानिकों धातकी खंडकी सर्व मिश्र शलाका तीनसै असीतिमैं घटाइ अवशेष क्षेत्र शलाका दोयसै बारह रही सो दोयसै बारह शलाकानिका पूर्वोक्त ऐसा ६०७३७।२ वृद्धि क्षेत्र होइ तौ चौसठि विदेहकी शलाकानिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि चौसटि करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं ऐसा ६०७३७।२।६४÷२।२१२ विदेहका सर्व वृद्धि क्षेत्र प्रमाण भया। बहुरि नदीनिका दक्षिण उत्तर तट रूप दोय प्रांतनिविषै इतनां ६०७३७।२।६४÷२१२।२ वृद्धिक्षेत्र होइ तौ एक प्रांत विषै कितनां होइ ऐसैं त्रैराशिककरि तातों दोयका भाग दिएं भद्रशालकी वेदीका आयामतैं कच्छा देशका अंत विषै आयामका वृद्धि प्रमाण क्षेत्र ऐसा ६०७३७।२।६४÷२१२।२।२।२ भया। बहुरि मुखभूमिसमासार्द्ध मध्यफल इस न्यायकरि आदितैं अंत विषै वृद्धिका जो यह प्रमाण भया ताकों आधा करनेंकों दोयका भाग दिएं ऐसा ६०७३७।२।६४÷२१२।२।२।२ भया। इहां पाया योग्य अपवर्तन किएं साठि हजार सातसै सैंतीसका आधा प्रमाण जो कच्छा देशके व्यासका परिधि ताकों बत्तीस करि गुणिए अर दोयसै बारहका भाग दीजिए इतनां ६०७३७।३२÷२१२।२ वृद्धिका प्रमाण आया याप्रकार गाथा विषै कह्याथा जो देशके व्यासका परिधिकों बत्तीस गुणा करै दोयसै बारहका भाग दिएं वृद्धि प्रमाण होइ सो सिद्ध भया। बहुरि इस कच्छा देशका वृद्धिप्रमाणके बत्तीसका गुणकारकों दोयका भागहारकरि अपवर्तन किएं सोलहका गुणकार भया ताकरि गुणें ऐसा ९७१७९२÷२१२ इहां भागहारका भाग दिएं देश संबंधी वृद्धि क्षेत्र पैंतालीससै तिरासी योजन अर दोयसै बारह अंशनि विषै एकसौ छिनवै अंश प्रमाण आया। याकौ भद्रसालका अंत आयाम समान जो पूर्वोक्त कच्छा देशका अभ्यंतर आयाम ऐसा ५०९५३०।२००÷२१२ यामैं जोड़ें कच्छा देशका मध्य विषै आयाम पांचलाख चौदह हजार एकसौ चौवन योजन अर एकसौ चौरासी अंश प्रमाण हो है। बहुरि यातैं पूर्वोक्त देश संबंधी क्षेत्र वृद्धि प्रमाण जोड़े पांचलाख अठारह हजार सातसै अड़तीस योजन अर एकसौ अडसठि अंश प्रमाण कच्छा देशका अंत विषै आयाम हो है। बहुरि अब बत्तीस पर्वतका व्यास हजार योजन ताका विष्कंभवर्गदहगुण इत्यादि सूत्र करि करणिरूप परिधि किएं ऐसा १०००००० ताका वर्गमूल छहैं बत्तीस व्यासका परिधि इकतीससै बासठि योजन भया। बहुरि एक भाग विषै इतनां ३१६२ परिधि भया तौ दोय भाग विषै कितनां होइ ऐसैं ताका दुणां भया ३१६२।२ बहुरि दोयसै बारह शलाकानिका ऐसा ३१६२।२ वृद्धिक्षेत्र होइ तौ विदेहकी चौसटि शलाकानिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिक विदेह विषै प्रांत परिधिका वृद्धि क्षेत्र ऐसा ३१६२।२।६४ २१२ भया। बहुरि नदीके तट रूप दोय प्रांत क्षेत्र विषै इतनां ३१६२।२।६४ २१२ ५४ भया तौ एक प्रांत विषै केता होइ ऐसैं त्रैरा केता

ऐसा ५२८९८० । ९६÷२१२ यातैं विभंगाका वृद्धि प्रमाण जोड़े विभंगाका अंत विषै आयाम ऐसा ५२९०९९ । १४८÷२१२ यातैं पूर्व महा कच्छा आदि देशनिका आयाम अर वक्षारनिका आयाम अर विभंगानिका आयाम पूर्व पूर्व विषै अपना अपना वृद्धि क्षेत्र जोड़नें करि स्यावनें। बहुरि देवारण्यका व्यास आवनेंकी चक्रवीस योजन तातैं विष्कंभ वर्गादहगुण इत्यादि सूत्र करि कराणे परिधि ऐसा २४१५२३३६० यातैं वर्गमूल लेहें देवारण्यका परिधि अठारह हजार च्यारिसै असी योजन प्रमाण हो है । बहुरि द्वीपका एक भाग विषै इतनां १८४८० क्षेत्र भया तौ दोऊ भागनि विषै केता होइ ऐसे त्रैराशी करनां १८४८०।२ बहुरि दोयसै बारह शलाकानिका इतनां १८४८०।२ क्षेत्र होइ तो चौसठि शलाकानिका केता होइ ऐसैं तातैं चौसठि करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं विदेह क्षेत्र विषै प्राप्त देवारण्यका वृद्धि क्षेत्र प्रमाण ऐसा १८४८०। २।६४÷२१२ बहुरि नदीके तट रूप दोऊ प्रांतनिविषै इतनां १८४८०।२।६४÷२१२ वृद्धि क्षेत्र प्रमाण आया तौ एक प्रांत विषै केता होइ ऐसैं तातैं दोयका भाग दिएं ऐसा १८४८०। २।६४÷२१२।२ देवारण्यका आदितैं अंत विषै वृद्धि प्रमाण आया । बहुरि मुखभूमिसमासार्द्ध मध्यफल इस न्यायकरि ताका आधा किएं ऐसा १८४८०।२।६४÷२१२।२।२ इहां यथायोग्य अपवर्तन किएं देवारण्यका परिधि अठारह हजार च्यारिसै असी योजनकौं बत्तीस करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण गाथोक्त सिद्ध भया । इहां गुणकार बत्तीस करि गुणें ऐसा ५९१३६० – २१२ भागहारका भाग दिएं सताईससै निन्यासी योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै बाणवे अंश प्रमाण देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण आया । बहुरि पुष्कलावती नामा देशका जो बाह्य आयाम सोई देवारण्यवनका आदि आयाम पांच लाख चौरासी हजार च्यारिसै सैंतालीस योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै सौ । अंश प्रमाण । इस प्रमाण स्यावनेका विधान कहैं हैं । नदीका एक तट विषै आठ देश च्यारि वक्षार तीन विभंगा हैं । बहुरि आदितैं मध्य विषै अर मध्यतैं अंत विषै ऐसैं एक एक विषै दोय दोय बार अपना अपना वृद्धि प्रमाण वर्ध है तातैं देश वृद्धिका प्रमाण ऐसा ४५८३।१९६ – २१२ यातैं द्विगुणा करि गुणें ऐसा ७३२२८ । ३१३६ ÷ २१२। बहुरि वक्षार वृद्धिका प्रमाण ऐसा ७७।६० ÷ २१२ यातैं आठ करि गुणें ऐसा १८१६।४८० ÷ २१२ बहुरि विभंगा वृद्धि प्रमाण ऐसा ११९।५२ ÷ २१२ यातैं छह करि गुणें ऐसा ७१४।३१२ ÷ २१२ इहां जे सौ अंश हैं तिन सर्व अंशनिकौं जोड़ि तिनमें कच्छा देशका आदि आयाम विषै जे दोयसै अंश कहे थे तिनकौं जोड़ें सर्व अंश इकतालीससै अठाईस भए इनकौं दोयसै बारहका भाग दिएं उगणीस योजन पाए अर अब शेष सौ अंश रहे । तातैं देवारण्यका आदि आयाम विषै सौ तौ अंश जाननें । बहुरि उगणीस तौ ■ योजन अर वृद्धिनिके योजन अर कच्छा देशका आदि आयामके पांच लाख च्यासीहजार च्यारिसै सैंतालीस योजन इन सबनिकौं जोड़ें देवारण्यका आदि आयाम विषै पांच लाख सित्यासी हजार च्यारिसै सैंतालीस योजन जाननें । बहुरि इस देवारण्यका आदि आयाम विषै ५८७४४७। ००० ÷ २१२ देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र ऐसा २७८९।९२–२१२ जोड़ें देवारण्यका मध्य

आयाम ऐसा ५९०२३६।१९२÷२१२ यातैं बहुरि तिस देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र जो कालोद समुद्रके निकटि देवारण्यका बाह्य आयाम ऐसा ५९३०२६।७२ ÷ २१२ हो है। इस प्रकार जैसें सीता नदीका उत्तर तट विषै वर्णन किया तैसें ही सीताका दक्षिण तट विषै देश वक्षार विभंगा देवारण्यनिका व्यास अर परिधि अर वृद्धिक्षेत्र अर आयाम तहां तहां स्यारें। बहुरि जैसें यह मेरुकी पूर्व दिशा विषै अधिक अधिक अनुक्रम करि कथन किया है तैसें मेरुकी पश्चिम दिशा विषै सदृशाल्पें हीन हीन अनुक्रमकरि वर्णन जानना। तहां हानि प्रमाण इहि प्रकारकरि जानना। बहुरि यही प्रकार पुष्करार्ध विषै भी देश वक्षार विभंगा देवारण्यनिके व्यास व्यासनिका परिधि स्याइ द्वीपका दोऊ भागनिके प्रमाण निमित्ति गुणकार दोय करि दूणे दोयसै बारह क्षेत्र शलाकाका भाग देइ चौसठि विदेह शलाकाका भाग देइ एक प्रमाण जो विदेह वृद्धि क्षेत्र ताकौं दोयका भाग दिएं जो एक प्रांत संबंधी वृद्धि क्षेत्र भया ताकौं गुणकारी इस व्याय करि आयाकरि अपवर्तनकरि तहां तहां लब्ध भाग वृद्धि क्षेत्रका प्रमाण जानना। तातैं अपना अपना आदि आयाम विषै जोड़ें अपना अपना मध्य आयाम हो है। बहुरि अपना अपना मध्य आयाम विषै अपना अपना वृद्धि क्षेत्र जोड़ें अपना अपना बाह्य आयाम हो है। बहुरि पूर्व पूर्वका बाह्य आयाम सोई उत्तर उत्तरका आदि आयाम जानना। मेरुकी पश्चिम दिशा विषै हीन क्रम जानना ॥ ९३३ ॥

आगैं धातकी खंड पुष्कर द्वीपनि विषै किछु विशेष है तातैं गाथा दोयकरि कहै है,—

धादइपुक्खरदीवा धादइपुक्खरसरिच्छि संजुत्ता।
णेया य वण्णणा पुण जंबूदुमवण्णणं व हवे ॥ ९३४ ॥

धातकीखण्डपुष्करद्वीपौ धातकीपुष्करसदृक्षौ संयुक्तौ।
ज्ञेया च वर्णना पुनः जम्बूद्रुमवर्णनेव भवेत् ॥ ९३४ ॥

अर्थ—धातकी खंड द्वीप अर पुष्कर द्वीप क्रमतैं धातकी वृक्ष अर पुष्कर वृक्ष करि युक्त है। बहुरि तिन वृक्षनिका वर्णन जंबूद्वीप विषै जैसें जंबू वृक्षका कह्या तैसें जानना ॥ ९३४ ॥

धादइसंमाणाओ दिसगिरिदहणगवरि इट्ठं आदिं।
आणयणविहीसहिया चउगुणं जंबू व पुक्खरे दुगुणं ॥ ९३५ ॥

धातकीसमानात् दिग्गिरिदहनगवरि इष्टं आदिं।
आनयनविधिसहिता चतुर्गुणं जम्बूवत् पुष्करे द्विगुणं ॥ ९३५ ॥

अर्थ—[illegible]

ऐसैं पुष्करार्द्ध पर्यंत जो मनुष्यलोक ताका व्याख्यान करि यातैं बाह्य जो तिर्यग्लोक ताकौं प्रतिपादन करत संता ही प्रथम ही मनुष्यलोक वा तिर्यग्लोक विषै तिष्ठते पर्वत अर समुद्र तिनका अवगाहकौं जनावै है;—

मेरुणरलोयबाहिरसेलोगाढं सहस्सपरिमाणं।
सेसाणं सगतुरियं सव्वुवहीणं सहस्सं तु ॥ ९३६ ॥

मेरुनरलोकबाह्यशैलावगाधं सहस्रपरिमाणं।
शेषाणां स्वकतुर्यं सर्वोदधीनां सहस्रं तु ॥ ९३६ ॥

अर्थ—मेरु गिरिनिका अर मानुषोत्तर बिना सर्व मनुष्य लोकके बाह्य तिष्ठते जे पर्वत तिनका सौ अवगाध हजार योजन प्रमाण जाननां। बहुरि मनुष्य लोकके अभ्यंतर तिष्ठते जे अवरोध हिमवत आदि पर्वत तिनका अवगाध अपनें अपनें उचाईका प्रमाणके चौथा भाग प्रमाण जाननां। इहां जैसें मंदिरकैं नींव हो है तैसें पृथ्वीके मध्य जो उंडाई ताका नाम अवगाध जाननां। बहुरि सर्व जे समुद्र तिनका अवगाध जो उंडाईका प्रमाण सो हजार योजन जानहु। तहां लवण समुद्र विषै आदि मध्य अंत विषै विशेष पूर्वै कह्या है सो जाननां। अन्य समुद्र सर्वत्र समान अवगाह युक्त हैं ॥ ९३६ ॥

अब मानुषोत्तर पर्वतका स्वरूप गाथा तीन करि कहैं हैं;—

अंते टंकच्छिण्णो बाहिं कमवड्ढिहाणि कणयणिहो।
णदिणिग्गमपहचोद्दसगुहाजुदो माणुसुत्तरगो ॥ ९३७ ॥

अंतः टंकच्छिन्नो बाह्ये क्रमवृद्धिहानिकः कनकनिभः।
नदीनिर्गमपथचतुर्दशगुहायुतः मानुषोत्तरः ॥ ९३७ ॥

अर्थ—पुष्कर द्वीपके मध्य मानुषोत्तर नामा पर्वत तिष्ठै है। सो अभ्यंतर मनुष्य लोककी तरफ तौ टंकछिन्न है। नीचैंतैं लगाय उपरि पर्यंत भी तिस समान एकसा है। बहुरि बाह्य तिर्यंक लोककी तरफ शिखरतैं लगाय क्रमतैं बधता अर मूलतैं लगाय क्रमतैं घटता है। ताका आकार ऐसा जाननां। बहुरि सो मानुषोत्तर पर्वत सुवर्ण सारिखा वर्णयुक्त है। बहुरि नदी निकसनेके मार्ग ऐसे चौदह गुहा द्वार तिन करि युक्त हैं। भावार्थ—मानुषोत्तरके चौदह गुफारूप द्वार हैं। तिन द्वारनि करि चौदह महा नदी निकसि बाह्य जाय है। ऐसा मानुषोत्तर जाननां ॥ ९३७ ॥

माणुसुत्तरउदयभूमुहमेगिगिवीसं सगसयं सहस्सं च।
बावीसहियसहस्सं चउवीसं चउसयं कमसो ॥ ९३८ ॥

मानुषोत्तरोदयभूमुखमेकैकविंशं सप्तशतं सहस्रं च।
द्वाविंशाधिकसहस्रं चतुर्विंशानि चतुःशतानि क्रमशः ॥ ९३८ ॥

अर्थ— मानुषोत्तर पर्वतका [illegible] योजन प्रमाण है। १७२१ । बहुरि भूमि [illegible] योजन प्रमाण है। १०२२। बहुरि [illegible] योजन प्रमाण है ४२४ ॥ ९३८

तण्णगसिहरे वेदी चावाणं चदुस्सहस्सतुंगजुदा ।
सोहइ वलयायारा चरणण्णिदकोसवित्थारा ॥ ९३९ ॥
तन्नगशिखरे वेदी चापानां चतुःसहस्रतुंगयुता ।
शोभते वलयाकारा चरणान्वितक्रोशविस्तारा ॥ ९३९ ॥

अर्थ—तिस मानुषोत्तरका शिखर विषै उपरि च्यारि हजार धनुष ऊंचाई करि युक्त अर सवा कोस चौडी ऐसी जैसैं पर्वत वलयाकार है तैसैं ताके उपरि वलयाकार वेदी सोभै है ॥९३९॥

आगैं इस पर्वत उपरि तिष्ठते कूटनिकौं कहैं हैं;—

णइरिदिवायव्वदिसं वज्जिय छस्सुवि दिसासु कूडाणि ।
तियतियमावलियाए ताणब्भंतरदिसासु चउवसई ॥ ९४० ॥
नैऋतिवायव्यदिशं वर्जयित्वा षट्स्वपि दिशासु कूटानि ।
त्रिकत्रिकमावल्या तेषामभ्यंतरदिशासु चतुष्कवसत्यः ॥ ९४० ॥

अर्थ—नैऋती अर वायवी इन दोय दिशानिकौं वर्जि करि अवशेष छह दिशानि विषै पंक्ति रूप तीन तीन कूट हैं । पर्वतकी परिधि विषै तिनकी पंक्ति जाननी । बहुरि तिन कूटनि अभ्यंतर मनुष्य लोककी तरफ च्यारि दिशानि विषै जिन मंदिररूप च्यारि वसतिका हैं ॥ ९४०

आगैं तिन कूटनि विषै वसते जे देव तिनकौं कहैं हैं;—

अग्गीसाणछकूडे गरुडकुमारा वसंति सेसे दु ।
दिग्गयबारसकूडे सुवण्णकुलदिक्कुमारीओ ॥ ९४१ ॥
आग्नेशानषट्कूटे गरुडकुमारा वसंति शेषेषु तु ।
दिग्गतद्वादशकूटेषु सुवर्णकुलदिक्कुमार्यः ॥ ९४१ ॥

अर्थ—आग्नेय दिशा अर ईशान दिशा संबंधी जे छह कूट तिन विषै तौ गरुड कुमार देव वसै हैं । बहुरि अवशेष दिशा संबंधी बारह कूट तिन विषै सुपर्ण कुमार देव अर दिक्कुमार देवांगना वसैं हैं ॥ ९४१ ॥

आगैं मानुषोत्तरका स्थानादिक कहैं हैं;—

पणदालल्लक्खसमाणुससेत्तं परिवेढिऊण सो होदि ।
उदयचउत्थोगाढो पुक्खरवरिदियद्धपढमम्हि ॥ ९४२ ॥
पंचचत्वारिंशल्लक्षमानुषक्षेत्रं परिवेष्टय स भवति ।
उदयचतुर्थावगाढः पुष्करद्वितीयार्धप्रथमे ॥ ९४२

अर्थ—पैंतालीस लक्ष योजन व्यास प्रमाण जो मनुष्य क्षेत्र ताकौं वेढि करि पुष्कर द्वीपका दूसरा आधा ताका प्रथम भाग जो आदि क्षेत्र तीहि विषै मानुषोत्तर है । ताका अवगाढ जो पृथ्वी विषै उंडाईका प्रमाण सो उचाईका चौथा भाग मात्र हो है । सो ग्यारसै तीस योजन अर चौथा योजन प्रमाण जानना ॥ ९४२ ॥

आगैं कुंडल गिरि अर रुचक गिरि तिनका उदय भूव्यास मुखव्यास कहैं हैं;—

कुंडलगो दसगुणिओ पणसदरिसहस्स तुंगओ रुजगे।
चउरासीदिसहस्सा सव्वत्थुभयं सुवण्णमयं ॥ ९४३ ॥
कुंडलगो दशगुणितो पंचसप्ततिसहस्रं तुंगो रुचके।
चतुरशीतिसहस्राणि सर्वत्रोभयौ सुवर्णमयौ ॥ ९४३ ॥

अर्थ—मानुषोत्तरका भू व्यास मुख व्यासतैं कुंडल पर्वतका भू व्यास मुख व्यास दस गुणा है। भावार्थ—कुंडल गिरि मूल विषै दस हजार दोयसै बीस योजन चौड़ा है। शिखर विषै प्यारि हजार दोयसै चालीस योजन चौड़ा है। बहुरि तिस कुंडल गिरिका उच्चत्व प्रमाण पचहत्तरि हजार योजन है। बहुरि रुचक पर्वत सर्वत्र उचाई विषै वा भूव्यास मुखव्यास विषै समानरूप चौरासी हजार योजन प्रमाण है। बहुरि ए दोऊ कुंडल गिरि अर रुचक गिरि सुवर्णमय हैं ॥ ९४३ ॥

अब कुंडल गिरिके उपरि जे कूट तिनकों गाथा तीन करि कहे हैं;—

चउ चउ कूडा पडिदिसमिह कुंडलपव्वदस्स सिहरम्हि।
ताणब्भंतरदिग्गय चत्तारि जिणिंदकूडाणि ॥ ९४४ ॥
चत्वारि चत्वारि कूटानि प्रतिदिशमिह कुंडलपर्वतस्य शिखरे।
तेषामभ्यंतरदिग्गतानि चत्वारि जिनेंद्रकूटानि ॥ ९४४ ॥

अर्थ—इस कुंडल पर्वतका शिखरविषै एक एक दिशा प्रति प्यारि प्यारि कूट परिधिविषै पंक्तिरूप हैं। तिनके अभ्यंतर मनुष्य लोककी तरफ दिशानिविषैं प्राप्त प्यारि जिनेन्द्र कूट हैं। ऐसें बीस कूट हैं ॥ ९४४ ॥

वज्जं तप्पह कणयं कणयप्पह रजदकूड रजदाहं।
सुमहप्पह अंकंकप्पह मणिकूडं च मणिपहयं ॥ ९४५ ॥
वज्रं तत्प्रभं कनक कनकप्रभं रजतकूटं रजताभं।
सुमहप्रभं अंकमंकप्रभं मणिकूटं च मणिप्रभं ॥ ९४५ ॥

अर्थ—बहुरि वज्र १ वज्रप्रभ १ कनक १ कनक प्रभ १ रजतकूट १ रजताभ १ सुप्रभ १ महाप्रभ १ अंक १ अंकप्रभ १ मणिकूट १ मणिप्रभ १ ॥ ९४५ ॥

रुजगरुजगाह हिमवं मंदरमिह चारि सिद्धकूडाणि।
अवसेसि सेसि कूडे कूडवखसुरा कदावासा ॥ ९४६ ॥
रुचकरुचकाभे हिमवत् मंदिरमिह चत्वारि सिद्धकूटानि।
अवशेषेषु कूटेषु कूटाख्यसुरा कृतावासाः ॥ ९४६ ॥

अर्थ—रुचक १ रुचकाभ १ हिमवत १ मंदर १ ए सोलह कूट जानने। इनतैं अन्य प्यारि सिद्धकूट हैं। तिनविषै चैत्यालय हैं। अर अवशेष सोलह कूट तिनविषै कूट समान नामके धारक देव वास करते संते तिष्ठै हैं ॥ ९४६ ॥

अब रुचक पर्वतके उपरि जे कूट तिनकों अर तहां वास करणी देवांगना तिनकों अर तिनके देवांगनानिका कार्यको तेरह गाथानि करि कहे हैं,—

पुव्वादिसु पुह अट्ठ अट्ठ अंते चउ चारि चारि कूडाणि।
रुजगे सव्वब्भंतरचत्तारि जिणिंदकूडाणि ॥ ९४७ ॥
पूर्वादिषु पृथक् अष्टौ अष्टौ अंतः चतसृषु चत्वारि चत्वारि कूटानि।
रुचके सर्वाभ्यंतरचत्वारि जिनेंद्रकूटानि ॥ ९४७ ॥

अर्थ—रुचक गिरिविषै पूर्व आदि च्यारि दिशानिविषै प्रथक् प्रथक् परिधिविषै पंक्तिरूप आठ आठ कूट हैं। बहुरि तिनकै अभ्यंतर मनुष्य लोककी तरफ च्यारि दिशानिविषै एक बार च्यारि कूट हैं। बहुरि तिनकै अभ्यंतर एक बार च्यारि कूट हैं। बहुरि तिनकै भी अभ्यंतर एक बार च्यारि कूट हैं। ऐसैं एक एक दिशा विषै तीन तीन कूट ए भए ऐसैं चवालीस कूट भए। बहुरि तिन सबनिकै अभ्यंतर वर्ती जे च्यारि कूट कहे ते जिनेन्द्र कूट हैं। चैत्यालय युक्त हैं। इनिका ऐसैं स्थान जानना ॥ ९४७ ॥

कणयं कंचण तवणं सोत्थियकूडं सुभद्दमंजणयं।
अंजणमूलं वज्जं तत्थेदा दिक्कुमारीओ ॥ ९४८ ॥
कनकं कांचनं तपनं स्वस्तिककूटं सुभद्रमंजनकं।
अंजनमूलं वज्रं तत्रेता दिक्कुमार्यः ॥ ९४८ ॥

अर्थ—कनक १ कांचन १ तपन १ स्वस्तिककूट १ सुभद्र १ अंजनक १ अंजन मूल १ वज्र १ ए पूर्व दिशाविषै आठ कूट हैं। तहां ए आगैं कहिए हैं दिक्कुमारी ते बसै हैं ॥ ९४८ ॥

विजयाय वइजयंती जयंति अवरादिया णंदोत्ति।
णंदवदी णंदुत्तर णामातो णंदिसेणेत्ति ॥ ९४९ ॥
विजया वैजयंती जयंती अपराजिता नंदा इति।
नंदवती नंदोत्तरा नाम्न्यो नंदिषेणा इति ॥ ९४९ ॥

अर्थ—विजया १ वैजयंती १ जयंती १ अपराजिता १ नंदा १ नंदावती १ नंदोत्तरा १ नंदिषेणा ए आठ दिक्कुमारीनकी देवांगना बसैं हैं ॥ ९४९ ॥

रुचिरं रजदं च कुमुदं णलिणं पउमं सतीय वेसरणं।
वेडुरियं देवीओ इच्छापदमा समाहारा ॥ ९५० ॥
रुचिकं रजतं च कुमुदं नलिनं पद्मं शतिं वैश्रवणं।
वैडूर्यं देव्यः इच्छापद्मा समाहारा ॥ ९५० ॥

अर्थ—रुचिक १ रजत १ कुमुद १ नलिन १ पद्म १ शति १ वैश्रवण १ वैडूर्य १ ए आठ दक्षिण दिशाविषै कूट हैं। इनिविषै वास करणी देवांगना कहिए है। इच्छा १ समाहारा ॥ ९५० ॥

सुप्पणाय जसोहर लच्छी सेसवदि चित्तगुत्तेत्ति।
चउरिम वसुंधरादेवी अमोघसर सोत्थियं कूडं ॥ ९५१ ॥
सुप्रणिधि यशोधरा लक्ष्मी शेषवती चित्रगुप्ता इति।
चतस्रो वसुंधरा देव्य अमोघ स्वस्तिकं कूटं ॥ ९५१ ॥

अर्थ—सुप्रकीर्णा १ यशोधरा १ लक्ष्मी १ शेषवती १ चित्रगुप्ता १ वसुंधरा १ ऐसैं आठ देवी बसै हैं। बहुरि अमोघ १ स्वस्तिक कूट १ ॥ ९५१ ॥

तो मंदर हेमवदं रज्जं रज्जुत्तमं च चंदमणि।
पच्छिम मुदंसणं पुण इलादियाय सुरादेवी ॥ ९५२ ॥

ततो मंदरं हैमवतं राज्यं राज्योत्तमं च चंद्रमणि।
पश्चिमं सुदर्शनं पुनः इलादिका सुरादेवी ॥ ९५२ ॥

अर्थ—तहां पीछैं मंदर १ हैमवत् १ राज्य १ राज्योत्तम १ चंद्र १ सुदर्शन १ ए आठ पश्चिम दिशा विषै कूट हैं। इहां तिष्ठती देवी कहिए हैं। इलादेवी सुरादेवी ॥ ९५२ ॥

पुदवी पउमावदी इगिणासो देवी य णवमिया सीदा।
भद्दा तो विजयादीचउकूदं कुंडलं रुचगं ॥ ९५३ ॥

पृथ्वी पद्मावती एकनासा देवी च नवमिका सीता।
भद्रा ततो विजयादिचतुष्कूटानि कुंडलं रुचकं ॥ ९५३ ॥

अर्थ—पृथ्वी १ पद्मावती १ एकनासा देवी १ नवमिका १ सीता १ भद्रा १ ए आठ देवी बसै हैं। बहुरि तहां पीछैं विजय १ वैजयन्त १ जयंत १ अपराजित ए च्यारि कूट अर कुंडल १ रुचक १ ॥ ९५३ ॥

तो रयणवंत सव्वादीरयणं उत्तरे अलंभूसा।
विदिया दु मिस्सकेसी देवी पुण पुंडरीगिणि सा ॥ ९५४ ॥

ततो रत्नवत् सर्वादिरत्नं उत्तरे अलंभूषा।
द्वितीया तु मिश्रकेशी देवी पुनः पुंडरीकिणी सा ॥ ९५४ ॥

अर्थ—तहां पीछैं रत्नवत् १ सर्व रत्न १ ए आठ उत्तर दिशा विषै कूट हैं। इन विषै तिष्ठती देवी कहिए हैं। अलंभूषा १ मिश्रकेशी देवी १ पुंडरीकिणी १ ॥ ९५४ ॥

वारुणि आसा सत्ता हिरि सिरि पुव्वगयदिक्कुमारीओ।
भिंगारं घरिदूणिह दक्खिणदेवीओ सुहुरंदं ॥ ९५५ ॥

वारुणी आशा सत्या ह्रीः श्रीः पूर्वगतदिक्कुमार्यः।
भृंगारं धृत्वा इह दक्षिणदेव्यो सुहुरंदं ॥ ९५५ ॥

अर्थ—वारुणी १ आशा १ सत्या १ ह्री १ श्री १ ए आठ देवी बसै हैं इन विषै पूर्व देशा संबंधी दिक्कुमारी हैं। ते भृंगार जो झारी ताकौं धारिकरि अर दक्षिण दिशा संबंधी दिक्कुमारी सुहुरंद जो आरसो ताकौं धारि करि ॥ ९५५ ॥

पच्छिमगा रुप्पतयं उत्तरगा चामरं पमोदजुदा।
तित्थयरजणणिसेवं जिणजणणिघरे पकुव्वंति ॥ ९५६ ॥

पश्चिमगा रूप्यतयं उत्तरगा चामरं प्रमोदयुताः।
तीर्थंकरजननीसेवां जिनजननिघरे प्रकुर्वंति ॥ ९५६ ॥

अर्थ—पश्चिमदिशा संबंधी देवी तीन छत्रनिकौं धारि करि अर उत्तर दिशा संबंधी देवी चामरनिकौं धारि करि महा प्रमोद करि संयुक्त होती ते सर्व देवी तीर्थंकरका उत्पत्ति काल विषै तीर्थंकरकी जो माता ताकी सेवा करैं हैं ॥ ९५६ ॥

पुव्वे विमलं कूटं णिच्चालोयं सयंपहं अवरे ।
णिच्चुज्जोदं देवी कमसो कणया सदादिदहा ॥ ९५७ ॥

पूर्वयोः विमलं कूटं नित्यालोकं अपरयोः ।
नित्योद्योतं देव्यः क्रमशः कनका शतादिह्रदा ॥ ९५७ ॥

अर्थ—रुचक पर्वतके अभ्यंतर कूटनि विषै पूर्व दिशा विषै तो विमलकूट दक्षिण दिशा विषै नित्यालोककूट पश्चिम दिशा विषै स्वयंप्रभकूट उत्तर दिशा विषै नित्योद्योत कूट ऐसैं च्यारि कूट हैं । इहां तिष्ठती देवी क्रमतैं कनका १ शतह्रदा १ ॥ ९५७ ॥

कणयादिचित्त सोदामणि सव्वदिसप्पसण्णदं देंति ।
तित्थयरजम्मकाले कूलं वेलुरियरुजगमदो ॥ ९५८ ॥

कनकादिचित्रा सौदामिनी सर्वदिशाप्रसन्नतां दधते ।
तीर्थकरजन्मकाले कूटं वैडूर्यं रुचकमतः ॥ ९५८ ॥

अर्थ—कनकचित्रा १ सौदामिनी १ ऐसैं ए च्यारि देवी बसै हैं ते तीर्थंकरका जन्म काल विषै सर्व दिशानिकौं प्रसन्न धारै हैं निर्मल करैं हैं । बहुरि इनतैं अभ्यंतर पूर्वादि दिशानि विषै वैडूर्य १ रुचक १ ॥ ९५८ ॥

मणिकूडं रज्जुत्तममिह रुजगा रुजगकीत्ति रुजगादी ।
कंता रुजगादिपहा जिणजादयकम्मकदिकुसला ॥ ९५९ ॥

मणिकूटं राज्योत्तममिह रुचका रुचककीर्तिः रुचकादिः ।
कांता रुचकादिप्रभा जिनजातककर्मकृतिकुशलाः ॥ ९५९ ॥

अर्थ—मणिकूट १ राज्योत्तम १ ए च्यारि कूट है । इहां तिष्ठती रुचका १ रुचक कीर्ति १ रुचक कांता १ रुचक प्रभा १ ए च्यारि देवी हैं । ते तीर्थंकरका जन्म विषै जात कर्म करनेविषै कुशल हैं ॥ ९५९ ॥

आगैं कुंडल रुचक संबंधी कूटनिका व्यासादिक कहै हैं;—

सव्वेसिं कूडाणं जोयणपंचसय भूमिवित्थारो ।
पणसयमुदओ तद्दलमुहवासो कुंडले रुजगे ॥ ९६० ॥

सर्वेषां कूटानां योजनपंचशतं भूमिविस्तारः ।
पंचशतमुदयः तदर्धमुखव्यासः कुंडले रुचके ॥ ९६० ॥

अर्थ—कुंडल गिरि अर रुचक गिरिविषै कहे जे ए कूट तिन सबनिका पांचसै योजन तो भूमि विस्तार कहिए मूलविषै चौड़ाईका प्रमाण है । अर उदय जो उंचाईका प्रमाण सोभी पांचसै योजन है । अर तिनका मुख व्यास जो उपरि चौड़ाईका प्रमाण सो ताका आधा अढ़ाईसै योजन है ।

इहां जैसें पुष्कर द्वीपके मध्य वलयाकार मानुषोत्तर पर्वत है तैसें ही कुंडल द्वीपके मध्य कुंडलगिरि अर रुचक द्वीपके मध्य रुचक गिरि वलयाकार जानना ॥ ९६० ॥

आगें द्वीप समुद्रनिके जे देव स्वामी है तिनकों पांच गाथानि करि कहैं हैं;—

जंबूदीवे वाणो अणादरो सुट्ठिदो य लवणेवि ।
धादइखंडे सामी पभासपियदंसणा देवा ॥ ९६१ ॥
जंबूद्वीपे वानो अनादरः सुस्थितश्च लवणेपि ।
धातकीखंडे स्वामिनौ प्रभासप्रियदर्शनौ देवौ ॥ ९६१ ॥

अर्थ—जंबू द्वीप अर लवण समुद्रविषै तौ स्वामी अनादर अर सुस्थित नामा व्यंतर देव हैं। धातकी खंडविषै स्वामी प्रभास अर प्रियदर्शन देव हैं ॥ ९६१ ॥

कालमहकाल पउमा पुंडरिया माणुसुत्तरे सेले ।
चक्खुमसुचक्खुम्मा सिरिपहर पुक्खरुवहिम्हि ॥ ९६२ ॥
कालमहाकालौ पद्मः पुंडरीकः मानुषोत्तरे शैले ।
चक्षुष्मत्सुचक्षुष्मांगौ श्रीप्रभधरौ पुष्करोदधौ ॥ ९६२ ॥

अर्थ—कालोदक समुद्रविषै स्वामी काल महाकाल देव हैं। पुष्करार्द्ध अर मानुषोत्तरविषै स्वामी पद्म अर पुंडरीक देव हैं। पुष्कर द्वीपका बाह्य दूसरा अर्धविषै स्वामी चक्षुष्मान अर सुचक्षुष्मान हैं। पुष्कर समुद्रविषै स्वामी श्रीप्रभ अर श्रीधर हैं ॥ ९६२ ॥

वरुणो वरुणादिपहो मज्झो मज्झिममुरो य पंडुरओ ।
पुप्फादिदंत विमला विमलप्पह सुप्पहा महप्पहओ ॥ ९६३ ॥
वरुणो वरुणप्रभो मध्यः मध्यमसुरः च पांडुरः ।
पुष्पादिदंतः विमलो विमलप्रभः सुप्रभः महाप्रभ ॥ ९६३ ॥

अर्थ—वारुणी द्वीपविषै स्वामी वरुण अर वरुणप्रभ है। वारुणी समुद्रविषै स्वामी मध्य अर मध्यम देव हैं। क्षीर द्वीपविषै स्वामी पांडुर अर पुष्पदंत है। क्षीर समुद्रविषै स्वामी विमल अर विमलप्रभ हैं। घृत द्वीपविषै स्वामी सुप्रभ अर महाप्रभ है ॥ ९६३ ॥

कणय कणयाह पुण्णा पुण्णप्पह देवगंधमहगंधा ।
तो णंदी णंदिपहो भद्दसुभद्दा य अरुण अरुणपहा ॥ ९६४ ॥
कनकः कनकाभः पुण्यप्रभो देवगंधमहागंधौ ।
ततो नंदी नंदिप्रभः भद्रसुभद्रौ च अरुण अरुणप्रभः ॥ ९६४ ॥

अर्थ—घृत समुद्र विषै स्वामी कनक अर कनकप्रभ है। क्षौद्र द्वीप विषै स्वामी पुण्य अर पुण्य प्रभ है। क्षौद्र समुद्र विषै स्वामी देव गंध अर महागंध है। तहां पीछे नंदीश्वर द्वीप विषै स्वामी नंदि अर नंदिप्रभ है। नंदीश्वर समुद्र विषै स्वामी भद्र अर सुभद्र है। अरुण द्वीप विषै स्वामी अरुण अरुणप्रभ है ॥ ९६४ ॥

सयुगंध सव्वगंधो अरुणसमुद्दम्हि दोण्णि दो दो ।
दीवसमुद्दे पडिदो दक्खिणभागम्हि उत्तरे दिदिदो ॥ ९६५ ॥

समुगंधः सर्वगंधः अरुणसमुद्रे इति प्रभू द्वौ द्वौ ।
द्वीपसमुद्रे प्रथमः दक्षिणभागे उत्तरे द्वितीयः ॥ ९६५ ॥

अर्थ—अरुण समुद्र विषै नायक समुगंध अर सर्वगंध देव हैं । ऐसैं ही द्वीप अर स विषै दोय दोय स्वामी व्यंतर देव हैं । तहां दोय दोय विषै जाका नाम पहलैं कह्या सो दक्षि भाग विषै अर जाका पीछैं नाम लिया सो उत्तर भाग विषै स्थित जानना ॥ ९६५ ॥

अब नंदीश्वर द्वीपकौं विशेष रूप प्रतिपादन करत संता आचार्य प्रथम ताका वलय व्य कहै है;—

आदीदो खलु अट्ठमणंदीसरदीववलयविक्खंभो ।
सयसमहियतेवट्ठीकोडी चुलसीदिलक्खा य ॥ ९६६ ॥
आदितः खलु अष्टमनंदीश्वरद्वीपवलयविष्कंभः ।
शतसमधिकत्रिषष्टिकोटिः चतुरशीतिश्च ॥ ९६६ ॥

अर्थ—आदिका जंबूद्वीपतैं लगाय आठवां नंदीश्वर द्वीप है । ताका विलय विष्कंभ वलयाकार विषै चौड़ाई सो सौ अधिक तेरसठि कोडि चौरासी लाख योजन प्रमाण है । कैसैं कहिए हैं । नंदीश्वर द्वीप सहित यातैं पहलैं द्वीप वा समुद्रनिकी संख्या पदरह है सो पंदरहका करि रूऊणाहियपदं इत्यादि पूर्वोक्त सूत्र करि एकसौ तेरसठि कोडि चौरासी लाख योजन प्र व्यास आवै है ॥ ९६६ ॥

आगैं इस द्वीप विषै ब्यारयौं दिशानि विषै तिष्टते पर्वत तिनके नाम अर संख्या स्थानकौं निरूपै हैं;—

एक्कचउक्कट्ठंजणदहिमुहरइयरणगा पडिदिसम्हि ।
मज्झे चउदिसवावीमज्झे तव्वाहिरदुकोणे ॥ ९६७ ॥
एकचतुष्काष्टांजनदधिमुखरतिकरनगाः प्रतिदिशं ।
मध्ये चतुर्दिग्वापीनमध्ये तद्बाह्यद्विकोणे ॥ ९६७ ॥

अर्थ—एक एक दिशा प्रति मध्य विषै अर ब्यारि दिशा संबंधी वावड़ीनिके मध्य अर वावड़ीनिका बाह्य दोय दोय कोणादि विषै क्रमतैं एक ब्यारि आठ संख्या लिए अंजन दधिमुख र नामा पर्वत नंदीश्वर द्वीप विषै जानने । भावार्थ—नंदीश्वरकी चारौं दिशा तहां एक एक दि विषै बीचि तौ एक अंजन गिरि है । तिस अंजन गिरिकी ब्यारौं दिशानि विषै ब्यारि वावड़ी तिन वावड़ीनिके बीचि ब्यारि दधिमुख पर्वत हैं । बहुरि तिन वावड़ीनिके दोय कोण तौ अं गिरिकी तरफ अर दोय कोण दूसरी तरफ तहा दूसरी तरफ जे दोय दोय बाह्य कोण तिनके नि आठ रतिकर पर्वत हैं । ऐसैं एक दिशा विषै तेरह पर्वत ब्यारि वावड़ी भई । ब्यारौं दिश विषै बावन पर्वत सोलह वावड़ी जाननी ॥ ९६७ ॥

आगैं तिन पर्वतनिका वर्ण वा परिमाणकौं कहै है -

अंजणदहिकणयणिहा चुलसीदिदहेक्कजोयणसहस्सा ।
बट्टा वासुदएण य मूले वावण्णसेलाओ ॥ ९६८ ॥

अंजनदधिमुखनिभा: चतुरशीतिसहस्रयोजनमहत्ता: ।
वृत्ता: प्राक्तनोदयेन सदृशा: द्वार्पद्वादशैक्या: ॥ ९६८ ॥

अर्थ—अंजन गिरि तो अंजन भी काजल लोह समान श्याम वर्ण है। दधिमुख दही समान श्वेत वर्ण है। रतिकर लाल सुवर्ण समान रक्तता लिए पीत वर्ण है। बहुरि अंजन गिरिका प्रमाण चौरासी हजार योजन दधिमुखका दश हजार योजन रतिकरका एक हजार योजन है। बहुरि ते सर्व वृत्त हैं। गोल आकारि हैं। श्याम दर्पणकी समान हैं। अंजनादिक चौरासी दश एक हजार योजन प्रमाण ऊंचे हैं। अर इतना ही मूल विषै वा उपरि समान चौड़े हैं। ऊर्ध्व डोलकै आकार सर्व श्याम रूप हैं। ऐसे सर्व दिशै हुए वावन पर्वत हैं ॥ ९६८ ॥

आगे तिन वापडीनिके नाम गाथा दोय करि कहैं हैं;—

णंदा णंदवदी पुण णंदुत्तर णंदिसेण अपराजिदा ।
अवरावीदसोगविजया वइजयंती जयंती य ॥ ९६९ ॥
नंदा नंदवती पुनः नंदोत्तरा नंदिषेणा अपराजिते ।
अपरावीतशोकाविजया वैजयंती जयंती च ॥ ९६९ ॥

अर्थ—नंदा १ नंदवती १ बहुरि नंदोत्तरा १ नंदिषेणा १ ए च्यारि पूर्व दिशाविषै हैं। बहुरि अपराजा १ विजया १ अवरावीतशोका १ वीतशोका ए च्यारि दक्षिणविषै हैं। बहुरि विजया १ वैजयंती १ जयंती १ ॥ ९६९ ॥

अवराजिदा य रम्मा रमणीया सुप्पभा य पुव्वादी ।
रयणतडा सव्वदोभद्दा चरिमा पुण सव्वदोभद्दा ॥ ९७० ॥
अपराजिता च रम्या रमणीया सुप्रभा च पूर्वादितः ।
रत्नतटा. सर्वतोभद्रा. चरमा पुनः सर्वतोभद्रा ॥ ९७० ॥

अर्थ—अपराजिता १ ए च्यारि पश्चिमदिशा विषै हैं। बहुरि रम्या १ रमणीया १ सुप्रभा १ अंत विषै सर्वतोभद्रा १ ए च्यारि उत्तरविषै हैं। ऐसे ए सर्व वापडी रत्नमय तट युक्त हैं लक्ष योजन प्रमाण हैं। ते पूर्वादिक दिशानिविषै क्रमतैं जाननी ॥ ९७० ॥

अब तिन वापडीनिका स्वरूप कहै हैं;—

सव्वे समचउरस्सा टंकुक्किण्णा सहस्सयोगाढा ।
वेदियचउवणजुत्ता जलयरउम्मुक्कजलपुण्णा ॥ ९७१ ॥
सर्वा समचतुरस्रा टंकोत्कीर्णाः सहस्रमवगाढाः ।
वेदिकाचतुर्वनयुक्ता जलचरोन्मुक्तजलपूर्णाः ॥ ९७१ ॥

अर्थ—ते सर्व वापी समचतुरस्र हैं। लाख योजन लंबी अर इतनी ही चौड़ी समचौकोर आकार युक्त हैं। बहुरि टंकोत्कीर्ण हैं। च्यारि नीचे एकरूप हैं। बहुरि एक हजार योजन ऊंडी हैं। बहुरि वेदिका अर च्यारि दिशानिविषै च्यारि वन तिन करि संयुक्त हैं। बहुरि जलचर आदिनि करि रहित जल करि संपूर्ण भरी हैं ॥ ९७१ ॥

आगैं तिन बावडीनिके वननिका स्वरूप कहैं हैं;—

वावीणं पुव्वादिसु असोयसत्तच्छदं च चंपवणं ।
चूदवणं च कमेण य सगवावीदीहदलवासा ॥ ९७२ ॥

वापीनां पूर्वादिषु अशोकसप्तच्छदं च चंपवनं ।
चूतवनं च क्रमेण च स्वकवापीदीर्घदलव्यासानि ॥ ९७२ ॥

अर्थ—तिन एक एक वापीनिकी पूर्वादिक दिशानिविषैं अनुक्रम करि अपनी अपनी बावडी समान एक लाख योजन लंबे अर तातैं आधे पचास हजार योजन चौडे ऐसे अशोक सप्तछद अर चंपक अर आम्र वन हैं । ऐसैं नंदीश्वर द्वीपविषै सर्व चौंसठि वन जाननें ॥ ९७२

अब अंजनादि पर्वतनिकैं उपरि प्रत्येक एक एक चैत्यालयकौं कहत संता आचार्य सो चैत्यालयनिविषै चतुर्णिकाय देवनि करि काल विशेष विषैं किया हुवा पूजा विशेष ताकौं कहै अर्थि पांच गाथानिकरि कहैं हैं;—

तव्वावण्णणगेसुवि वावण्णजिणालया हवंति तहिं ।
सोहम्मादी वारसकप्पिंदा ससुरभवणतिया ॥ ९७३ ॥

तद्द्वापंचाशन्नगेष्वपि द्वापंचाशज्जिनालया भवंति तेषु ।
सौधर्मादयो द्वादशकल्पेंद्राः ससुरभवनत्रिकाः ॥ ९७३ ॥

अर्थ—तिन बावन पर्वतनिविषै उपरि बावन जिन मंदिर हैं । तिनविषै अन्य कल्पवासी देव अर भवनत्रिक देव तिन करि सहित सौधर्म आदि बारह स्वर्गनिके इन्द्र हैं ॥ ९७३ ॥

ते कहा करैं हैं ते कैसे हैं सो कहैं हैं;—

गयहयकेसरिवसहे सारसपिकहंसकोकगरुडे य ।
मयरसिहिकमलपुप्फयविमाणपहुदिं समारूढा ॥ ९७४ ॥

गजहयकेसरिवृषभान् सारसपिकहंसकोकगरुडान् च ।
मकरशिखिकमलपुष्पकविमानप्रभृतिं समारूढाः ॥ ९७४ ॥

अर्थ—हस्ती १ घोटक १ सिंह १ वृषभ १ सारस १ कोकिला १ हंस १ चकवा १ गरुड १ माछली १ मोर १ कमल १ पुष्पक विमान इत्यादिकनि ऊपरि समारूढ हैं । भावार्थ—सौधर्मादिक बारह इंद्रनिके हस्ती आदि मुख्य वाहन हैं । तिन उपरि चढे हैं ॥ ९७४ ॥

बहुरि कैसे हैं;—

दिव्वफलपुप्फहत्था सत्थाभरणा सचामराणीया ।
वहुपयतूरारावा गत्ता कुव्वंति कल्लाणं ॥ ९७५ ॥

दिव्यफलपुष्पहस्ता शस्त्राभरणा सचामरानीका ।
बहुपदतूर्यारावा गत्वा कुर्वंति कल्याणं ॥ ९७५ ॥

अर्थ—दिव्य फल पुष्प आदि पूजन द्रव्य हस्त विषै धरे हैं । बहुरि प्रशस्त आभरण पहरे हैं । चामरनि करि सहित सनायुक्त हैं । बहुत भक्ति अर बाजित्रनिके शब्द करि संयुक्त हैं । ऐसे

होत भए अपने स्थाननिते तहां नंदीश्वर द्वीपविषै जाइ ऐंद्रध्वज आदि जो जिन पूजनरूप कल्याण ताहि करे है ॥ ९७५ ॥

पदिवरिसं आसाढे तह कत्तियफग्गुणे य अट्ठमिदो।
पुण्णदिणोत्ति यभिक्खं दो दो पहरं तु सयुरेहिं ॥ ९७६ ॥
प्रतिवर्षमाषाढे तथा कार्तिके फाल्गुने च अष्टमीतः।
पूर्णदिनांतं चाभीक्ष्णं द्वौ द्वौ प्रहरौ तु स्वयुरैः ॥ ९७६ ॥

अर्थ—वर्ष वर्ष प्रति आषाढ मास विषै अर तैसें ही कार्तिक मास विषै अर फाल्गुन मास विषै अष्टमी तिथितें लगाय पूर्णिमा दिन पर्यंत अभीक्ष्ण कहिए निरंतर दोय दोय पहर अपनें अपनें देवनि करि सहित ॥ ९७६ ॥

कौन कहा करे है सो कहे है;—

सोहम्मो ईसाणो चमरो वइरोयणो पदक्खिणदो।
पुव्ववरदक्खिणुत्तरदिसासु कुव्वंति कल्लाणं ॥ ९७७ ॥
सौधर्म ईशानः चमरो वैरोचनः प्रदक्षिणतः।
पूर्वापरदक्षिणोत्तरदिशासु कुर्वंति कल्याणं ॥ ९७७ ॥

अर्थ—प्रथम स्वर्ग युगलके इन्द्र सौधर्म अर ईशान बहरि असुर कुमारनिके इन्द्र चमर अर वैरोचन ए ग्यारवी प्रदक्षिणा रूप पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानि विषै कल्याण जो जिन पूजन ताहि करे है। पूर्ववाला दक्षिण जाइ तब उत्तरवाला पूर्वकों आवै ऐसें प्रदक्षिणारूप महोत्सव युक्त पूजन करे है ॥ ९७७ ॥

अब तीन श्लोक विषै तिष्टते जु अकृत्रिम चैत्यालय तिनका सामान्य करि व्यासादिक कहे है;—

आयामदलं वासं उभयदलं जिणघराणमुच्चत्तं।
दारुदयदलं वासं भाणिदाराणि तस्सद्धं ॥ ९७८ ॥
आयामदलं व्यासं उभयदलं जिनगृहाणामुच्चत्वं।
द्वारोदयदलं व्यासः भणितद्वाराणि तस्यार्धं ॥ ९७८ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट आदि चैत्यालयनिका जो आयाम ताका आधा तो तिनका व्यास है। बहुरि आयाम अर व्यास दोउनिका मिलाय ताका आधा जिन मंदिरनिका उ [illegible] है—ऐसा अर्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिकी लंबाई क्रमतें सौ पचास पचीस योजन [illegible] ताका आधा पचास पचीस साढा बारह योजन प्रमाण तिनकी चौडाईका [illegible]। बहुरि लंबाई चौडाईको मिलाइ १५०।७५।३७½ २ आधा किए [illegible]। उगणीस योजन प्रमाण तिनकी उंचाईका प्रमाण कह्या है। बहुरि तीन चैत्य [illegible] की उंचाईतें आधा द्वारनिका व्यास प्रमाण है। आधार्थ उत्कृष्ट म [illegible] बड़े द्वारनिकी उंचाई सोलह आठ व्यास [illegible] ताका आधा [illegible] तिनकी चौडाईका

जाननां । बहुरि अन्य छोटे द्वार ते तिस बड़े द्वारतैं आधा प्रमाण उदय व्यास संयुक्त हैं । भावार्थ- उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिके छोटे द्वारनिकी उचाई आठ च्यारि दोय योजन है । चौड़ाई च्यारि दोय एक योजन है ॥ ९७८ ॥

इस ही कहे अर्थकों विशेषतैं गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

वरमज्झिमअवराणं दलकमं भद्दसालणंदणगा ।
णंदीसरगविमाणगजिणालया होंति जेट्ठा हु ॥ ९७९ ॥

वरमध्यमावराणां दलक्रमं भद्रशालनंदनकाः ।
नंदीश्वरकविमानगजिनालया भवंति ज्येष्ठा हि ॥ ९७९ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिका व्यासादिक क्रमतैं आधा आधा जानहु । बहुरि भद्रशाल अर नंदनवन अर नंदीश्वर अर दीप वैमानिकनिके विमान इन विषै प्राप्त जे जिनालय हैं ते तौ व्यासादिक करि उत्कृष्ट हैं ॥ ९७९ ॥

सोमणसरुचगकुंडलवक्खारिसुगारमाणुसुत्तरगा ।
कुलगिरिजा वि य मज्झिम जिणालया पांडुगा अवरा ॥ ९८० ॥

सौमनसरुचककुंडलवक्षारेष्वाकारमानुषोत्तरगाः ।
कुलगिरिजा अपि च मध्यमा जिनालया पांडुगा अवराः ॥ ९८० ॥

अर्थ—सौमनस वन अर रुचक कुंडल वक्षार इष्वाकार मानुषोत्तर पर्वत अर कुलाचल इन विषै प्राप्त जिनालय हैं ते मध्यम हैं । पांडुक वन विषै प्राप्त जिनालय हैं ते जघन्य हैं ॥ ९८० ॥

आगै जघन्यादि उत्कृष्ट जिनालयनिका आयाम अवगाह द्वारनिका उदयत्व कहैं हैं;—

जोयणसय आयामं दलगाढं सोलसं तु दारुदयं ।
जेट्ठाणं गिहपासे आणिद्दाराणि दो दो दु ॥ ९८१ ॥

योजनशतमायामः दलगाढः षोडश तु द्वारोदयः ।
ज्येष्ठानां गृहपार्श्वे आणुद्वारे द्वे द्वे तु ॥ ९८१ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट जिनालयनिका आयाम सौ योजन प्रमाण है । अर आध योजन अवगाह कहिए पृथ्वी माहीं नींव है । बहुरि सोलह योजन तिनके द्वारनिका उदयत्व है । बहुरि यह द्वार तौ सन्मुख दिशा विषै है । अर जिन मंदिरनिके दोऊ पार्श्वनि विषै दोय दोय छोटे द्वार हैं । एकैको द्वार है नाहीं ॥ ९८१ ॥

आगै उत्कृष्ट आदि विशेष रहित जे भवनिका कहिए जिनालय तिनका आयाम दिखावै है सो कहै हैं;—

वेयड्ढतरुगामलिजिणभवणाणं तु कोस आयामं ।
सेसाणं मणजोग्ग आयामं होदि जिणदिट्ठं ॥ ९८२ ॥

विजयार्धतरुगामलिजिनभवनानां तु कोश आयामः ।
शेषाणां मनोयोग्य आयामो भवति जिनदृष्टः ॥ ९८२ ॥

अर्थ—विजयार्द्ध पर्वत जंबूवृक्ष शाल्मली वृक्ष इन विषै जिन मंदिरनिका आयाम जो लंबाई सो एक कोश प्रमाण है। अवशेष भवनवासीनिके भवन व्यंतरनिके आवास इत्यादिकनि विषै प्राप्त जे जिनभवन तिनका अपना अपना यथा योग्य आयाम जिन देव देखे हैं। बहुत प्रकार है तातैं इहां न कह्या है॥ ९८२॥

आगैं कहे जे जिन भवन तिनका परिवार गाथा सात करि कहैं हैं;—

चउगोउरमणिसाल्लति वीहिं पदि माणथंभ णवथूहा।
वणययचेदियभूमी जिणभवणाणं च सव्वेसिं॥ ९८३॥

चतुर्गोपुरमणिशाल्लत्रये वीथीं प्रति मानस्तंभा नवस्तूपाः।
वनध्वजाचैत्यभूमयः जिनभवनानां च सर्वेषां॥ ९८३॥

अर्थ—सर्व जिन भवननिके च्यारि द्वारनि करि संयुक्त मणिमई तीन कोट हैं। बहुरि वीथी जो द्वार होइ करि जानेकी गली तिन एक एक वीथी प्रति एक एक मानस्तंभ है। अर नव नव स्तूप हैं। बहुरि तिन तीन कोटनिके बीचि बीचि अंतराल तिन विषै बाहतैं लगाय पहला दूसरा कोटके बीचि वन हैं, दूसरा तीसरा कोटके बीचि ध्वजा हैं। तीसरा कोटके बीचि चैत्यालय चैत्यभूमि है॥ ९८३॥

जिणभवणे अट्ठसया गब्भगिहा रयणथंभयं तत्थ।
देवच्छंदो हेमो दुगअट्ठचउवासदीहुदओ॥ ९८४॥

जिनभवनेषु अष्टशतानि गर्भगृहाणि रत्नस्तंभवान् तत्र।
देवच्छंदो हेमः द्विकाष्टचतुर्व्यासदीर्घोदयः॥ ९८४॥

अर्थ—तिन जिन भवननि विषै एकसौ आठ गर्भ गृह हैं। जैसे वास करनेके योग्य गृहस्थान तैसैं गर्भ गृह जाननें। बहुरि तहां जिन मंदिरके मध्यविषै रत्ननिका स्तंभनि करि युक्त सुवर्ण मई दोय योजन चौड़ा आठ योजन लंबा च्यारि योजन ऊंचा देवछंद कहिए ऊपर मंडप॥ ९८४॥

सिंहासणादिसहिया विणीलकुंतल सुवज्जमयदंता।
विद्रुमअहरा किसलयसोहायरहत्थपायतला॥ ९८५॥

सिंहासनादिसहिता विनीलकुंतलाः सुवज्रमयदंताः।
विद्रुमाधराः किसलयशोभाकरहस्तपादतलाः॥ ९८५॥

अर्थ—सिंहासन छत्रादिक करि संयुक्त बहुरि विशेषपनैं नील हैं मस्तकादिविषै केश जिनके भले वज्रमई दंत जिनके अर विद्रुम जो मूंगा तिस सारिखे रक्त होठ हैं जिनके अर किसलय जो नवीन कूंपल तिस सारिखे हैं रक्तता लिए शोभा युक्त हस्त तल अर पाद तल जिनके ऐसी जिन प्रतिमा है। इहां केशादिकनिका आकार रूप पुद्गल परणाम है ऐसा जानना॥ ९८५॥

दसतालमाणलक्खणभरिया पेक्खंतेण इव वदेसा वा।
पुरुजिणतुंगा पडिमा रयणमया अट्ठभेयसया॥ ९८६॥

दशताल्मानलक्षणभरिताः प्रेक्ष्यमाणा इव वदंत इव ।
पुरुजिनतुंगाः प्रतिमाः रत्नमया अष्टाधिकशताः ॥ ९८६ ॥

अर्थ—दश ताल प्रमाण लक्षणनिकरि भरी हैं । तालका प्रमाण बारह अंगुल जानना ते प्रतिमा तीर्थंकर वत जानो कि चोवै हैं जानों बोलै हैं । बहुरि पुरुजिन जो पहला वृषभ कर तीह समान पांचसै धनुष ऊंची है । बहुरि रत्न मय हैं । ऐसी एकसौ आठ जिन प्रतिमा गर्भ गृहनि विषै एक एक विराज मान हैं ॥ ९८६ ॥

चमरकरणागजक्खगवत्तीसंमिहुणगेहि पुह जुत्ता ।
सरिसीए पंतीए गब्भगिहे सुट्ठु सोहंति ॥ ९८७ ॥
चमरकरनागयक्षगद्वात्रिंशन्मिथुनैः पृथक् युक्ताः ।
सदृश्या पंक्त्या गर्भगृहे सुष्ठु शोभंते ॥ ९८७ ॥

अर्थ—बहुरि ते प्रतिमा कैसी हैं ? चमर है हाथ विषै जिनकै ऐसे जु नागकुमारी यक्षनिके बत्तीस युगल तिनकरि संयुक्त जुदे जुदे एक एक गर्भ गृह विषै सदृश रूप धरोकरि भले प्रकार सोभें हैं । भावार्थ—बत्तीस नाग कुमार वा यक्षनिके युगल तिनके हस्त विषै चमर हैं तिन करि वीज्यमान हैं ॥ ९८७ ॥

सिरिदेवी सुददेवी सव्वाण्हसणक्कुमारजक्खाणं ।
रूवाणि य जिणपासे मंगलमट्ठविहमावि होदि ॥ ९८८ ॥
श्रीदेवी श्रुतदेवी सर्वाह्नसनत्कुमारयक्षाणां ।
रूपाणि च जिनपार्श्वे मंगलमष्टविधमपि भवति ॥ ९८८ ॥

अर्थ—तिन जिन प्रतिमानिके पार्श्व विषै श्री देवी अर सरस्वती देवी अर सर्वाह्न यक्ष सनत्कुमार यक्ष इनके रूप जे आकार ते लिखे हैं । भावार्थ—जिनप्रतिमाके निकटि इन यक्षादिकनिके प्रतिबिंब हो है । इहां प्रश्न—जो श्री तो धनादिक रूप है अर सरस्वती जिनवानी है । इनका प्रतिबिंब कैसे हो है । ताका समाधान—श्री अर सरस्वती दोऊ लोक विषै उत्कृष्ट हैं । तातै देवांगनाका आकार रूप प्रतिबिंब हो है । बहुरि दोऊ यक्ष विशेष भक्त हैं । तातै तिनके प्रतिबिंब हो हैं । बहुरि आठ प्रकार मंगल द्रव्य जिनप्रतिमानिके निकटि सोभे हैं ॥ ९८८ ॥

भिंगारकलसदप्पणवीयणयधयचामरादवत्तमहं ।
सुवइट्ठ मंगलाणि य अट्ठुत्तरसयाणि पत्तेयं ॥ ९८९ ॥
भृंगारकलशदर्पणव्यजनध्वजचामरातपत्रमहं ।
सुप्रतिष्ठं मंगलानि च अष्टोत्तरशतानि प्रत्येकम् ॥ ९८९ ॥

अर्थ—झारी १ कलश २ आरसा ३ बीजना ४ ध्वजा ५ चामर ६ छत्र ७ अर सुप्रतिष्ठ ८ ए आठ मंगल द्रव्य हैं । ते एक एक मंगल द्रव्य एकसौ आठ प्रमाण लीए हो हैं ॥ ९८९ ॥

आगे अन्य प्रकार करि मंगलकी संख्या प्रगट करि कहै है,—

पंचसयपुव्वगोहियदव्वसंदब्भ पुव्वदो पगदं ।
वण्णेण य वण्णसयट्ठसहस्साणि वण्णेमि ॥ ९९० ॥

मणिकनकपुष्पशोभितदेवच्छंदस्य पूर्वतो भव्ये।
वसत्यां रूप्यकांचनघटसहस्राणि द्वात्रिंशत् ॥ ९९० ॥

अर्थ—मणि अर सुवर्ण मय पुष्पनिकरि सोभित ऐसा जु देवछंद ताके पूर्व दिशे आगै वसती जो जिन मंदिर ताका मध्य विषै रूपा अर सोनामई बत्तीस हजार घंटे हैं ॥ ९९० ॥

महदारस्स दुपासे चउवीससहस्समत्थि धूवघडा।
दारबहिं पासदुगे अट्ठसहस्साणि मणिमाला ॥ ९९१ ॥
महाद्वारस्य द्विपार्श्वे चतुर्विंशसहस्रं संति धूपघटाः।
द्वारबहिः पार्श्वद्वये अष्टसहस्राणि मणिमालाः ॥ ९९१ ॥

अर्थ—महा द्वार जो बड़ा द्वार ताके दोऊ पार्श्वनि विषै दक्षिणी बाईं तरफ चौईस हजार धूपके घड़े हैं। बहुरि तिस महा द्वारके बाह्य दोऊ पार्श्वनि विषै आठ हजार मणिमय माला हैं ॥ ९९१ ॥

तम्मज्झ हेममाला चउवीस वदणमंडवे हेमा।
कलसामाला सोलस सोलसहस्साणि धूवघडा ॥ ९९२ ॥
तन्मध्ये हेममाला चतुर्विंशतिः वदनमंडपे हेमाः।
कलशमालाः षोडश षोडशसहस्राणि धूपघटाः ॥ ९९२ ॥

अर्थ—तिन मणिमय मालानिके बीचि चौईस हजार सुवर्णमय माला हैं। बहुरि तिस महा-द्वारके आगै सन्मुख मुख मंडप है तिस विषै सुवर्णमय कलश अर सुवर्ण मय माला सोलह सोलह हजार हैं। बहुरि तिसही विषै सोलह हजार धूपके घड़े हैं ॥ ९९२ ॥

मधुरझणझणणिणादा मोत्तियमणिणिम्मया सकिंकिणिया।
बहुविहघंटाजाला रएदां सोहंति तम्मज्झे ॥ ९९३ ॥
मधुरझनझननिनादाः मौक्तिकमणिनिर्मिताः सकिंकिणिकाः।
बहुविधघंटाजाला रचिताः शोभते तन्मध्ये ॥ ९९३ ॥

अर्थ—तिस ही मुख मंडपका मध्य विषै मीठा है झण झण शब्द जिनका अर मोती मणिनि करि निपजी किंकणी जे छोटी घंटा तिन करि सहित नाना प्रकार घंटानिके समूह अनेक रचना करि युक्त सोभै हैं ॥ ९९३ ॥

बहुरि तिस मंदिरके क्षुल्लक द्वारादिकका स्वरूप कहै है;—

वसईमज्झगदक्खिणउत्तरतणुदारगं तदद्धं तु।
तप्पुट्ठे मणिकंचणमालदचउवीसगसहस्सं ॥ ९९४ ॥
वसतिमध्यगतदक्षिणोत्तरतनुद्वारे तदर्धं तु।
तत्पृष्ठे मणिकांचनमाला अष्टचतुर्विंशतिसहस्राणि ॥ ९९४ ॥

अर्थ—वसती जो जिन मंदिर ताके दक्षिण उत्तर पार्श्वका मध्यविषै द्वार क्षुद्र द्वार है। तिसविषै मुख्य महा द्वारतैं अर्ध [illegible]

पुरतः प्रासादद्वयं स्फटिकाभिधशालद्वारपार्श्वद्वये ।
अभ्यंतरं शतोदयं दलव्यासं रत्नसंघटितम् ॥ १००७ ॥

अर्थ—तिस तोरणके आगें स्फटिकमय जो प्रथम कोट ताके अभ्यंतर कोटके द्वारका दोउ पार्श्वनि विषे सो योजन ऊंचे ताका आधा पचास योजन चौड़े रत्न निर्मापित दोय मंदिर हैं । ऐसें प्रथम कोट पर्यंत वर्णन किया ॥ १००७ ॥

जे परिमाणं भणिदं पुव्वगदारम्हि मंदवादीणं ।
दक्खिणउत्तरदारे तद्दुगमाणं गहीदव्वं ॥ १००८ ॥
यत् परिमाणं भणितं पूर्वद्वारे मंदपादीनाम् ।
दक्षिणोत्तरद्वारे तद्द्विकमानं ग्रहीतव्यं ॥ १००८ ॥

अर्थ—पूर्व द्वार विषै मंडपादिकनिका जो परिमाण कह्या तातैं आधा प्रमाण दक्षिण द्वार अर उत्तरद्वार विषै ग्रहण करना । अन्य वर्णन तीनों तरफा समान है ॥ १००८ ॥

वंदणअभिसेयणणसंगीयवलोयमंडवेहिं जुदा ।
कीडणगुणणगिरेहिं य विसालधरवट्टसालेहिं ॥ १००९ ॥
वंदनाभिषेकनर्तनसंगीतावलोकमंडपैः युतानि ।
क्रीडनगुणनगृहैश्च विशालधरपट्टशालैः ॥ १००९ ॥

अर्थ—बहुरि ते चैत्यालय सामायिकादि क्रिया करनेके स्थान वंदना मंडप अर स्नान करनेके स्थान अभिषेक मंडप अर नृत्य करनेके स्थान नर्तन मंडप अर संगीत साधन करनेके स्थान संगीत मंडप अर अवलोकन करनेके स्थान अवलोकन मंडप तिन करि संयुक्त हैं । बहुरि क्रीडा करनेके स्थान क्रीडन गृह शास्त्रादिक अभ्यासनेके स्थान गुणनाह तिन करि अर विशीर्ण उत्कृष्ट पट्ट विशाल आदि दिखावनेके स्थान पट्टशाला तिनकरि संयुक्त हैं ॥ १००९ ॥

अब पहला अर दूसरा कोटके बीचि जो अंतराल ताका स्वरूपको कहै है;—

सिंहगयवसहगरुडदसीहिंदिणहंसारविंदचक्कधया ।
पुह अट्ठसया चउदिसमेक्केक्के अट्ठसय संखा ॥ १०१० ॥
सिंहगजवृषभगरुडदशसिंहेंदुनहंसारविंदचक्रध्वजाः ।
पृथक् अष्टशतानि चतुर्दिशमेकैकस्मिन् अष्टशत संख्याः ॥ १०१० ॥

अर्थ—सिंह १ हस्ती १ वृषभ १ गरुड १ वस्त्र १ चंद्रमा १ सूर्य १ हंस १ कमल १ चक्र इन दशनिका आकार करि संयुक्त ध्वजा है ते पृथक् पृथक् एकसौ आठ हैं । ऐसे एक जिन मंदिरकी च्यारो दिशानि विषै है । ऐसें मुख्य ध्वजा च्यारि हैं । [illegible] बहुरि इहां एक एक मुख्य ध्वजा विषै एकसौ आठ क्षुद्रक होंगी

आगें दूसरा अर तीसरा कोटके बीचि जो क्षेत्र [illegible]

चउवण्णसयं
कणयमय

चतुर्वनमशोकसप्तच्छदचंपकचूतमत्र कल्पतरवः ।
कनकमयकुसुमशोभाः मरकतमयविविधपत्राढ्याः ॥ १०११ ॥

अर्थ—अशोक अर सप्तछद अर चंपक अर आम्र इन भई ध्यारि वन हैं । बहुरि इहां सुवर्ण मई फूलनि करि शोभित अर मरकत मणिमय नाना प्रकार पत्रनिकरि पूर्ण ऐसे कल्प वृक्ष हैं ॥ १०११ ॥

वेलुरियफला विद्दुमविसालसाहा दसप्पयारा ते ।
पल्लंकपाडिहेरग चउदिसमूलगय जिणपडिमा ॥ १०१२ ॥
वैडूर्यफला विद्रुमविशालशाखाः दशप्रकारास्ते ।
पल्यंकप्रातिहार्यगाः चतुर्दिशामूलगता जिनप्रतिमाः ॥ १०१२ ॥

अर्थ—बहुरि ते वैडूर्य रत्न मय फल संयुक्त हैं । बहुरि विद्रुम मूंगा मय डाली युक्त हैं । ऐसे कल्प वृक्ष भोजनांग आदि भेद लीएं दश प्रकार तिन वननि विषै हैं । बहुरि तिन वननिविषै चैत्यवृक्षनिकै निकटि पल्यंक आसन छत्रादि प्रातिहार्य संयुक्त च्यारों दिशानि विषै वृक्षनिका मूलकै निकटि प्राप्त ऐसी जिन प्रतिमा हैं ॥ १०१२ ॥

सालत्तयपीढत्तयजुत्ता मणिसाहपत्तपुप्फफला ।
तच्चउवणमज्झगया चेदिगरुक्खा सुसोहंति ॥ १०१३ ॥
शालत्रयपीठत्रययुक्ताः मणिशाखापत्रपुष्पफलाः ।
तच्चतुर्वनमध्यगताः चैत्यवृक्षाः सुशोभंते ॥ १०१३ ॥

अर्थ—तीन कोट तीन पीठ करि संयुक्त अर मणिमय डाली पांन फूल फल युक्त ऐसे च्यारयों वननिकै मध्य प्राप्त जिन बिंब सहित चैत्य वृक्ष भले प्रकार सोभै हैं ॥ १०१३ ॥

आगैं नंदादिक वापी अर मान स्तंभ तिनका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

णंदादीय तिमेहल तिवीढया भंति धम्मविहवावि ।
पडिमाधिट्ठियमुद्धा वणभूचउवीहिमज्झम्हि ॥ १०१४ ॥
नंदादिकाः त्रिमेखलाः त्रिपीठका भांति धर्मविभवा अपि ।
प्रतिमाधिष्ठितमूर्धानः वनभूचतुर्वीथीमध्ये ॥ १०१४ ॥

अर्थ—पूर्वै कही जे नदादिक सोलह बावड़ी ते तीन कटनीनि करि संयुक्त सोभै हैं । बहुरि वननिकी जु भूमि ताके निकटि द्वारनितैं आवनेका मार्गरूप जो वीथी तिनका मध्य विषै जिन प्रतिमाका स्थान भूत है मस्तक भाग जिनका ऐसे धर्म्म विभव अपि कहिए धर्म्म रूप विभव संयुक्त मानस्तंभ हैं तेऊ तीन पीठ युक्त सोभै हैं । ऐसैं जिनालयका वर्णन जानना ॥ १०१४ ॥

इतिश्री नेमिचंद्राचार्यविरचित त्रिलोकसारमें छठा
नरतिर्यग्लोकका अधिकार समाप्त भया ॥ ६ ॥

मूलग्रंथकारका वक्तव्य।

आगें ग्रंथका अंत विषे मंगल करनेकों सर्व जे सर्वज्ञके प्रतिबिंब तिनकों वंदना करै है;—

जिणसिद्धाणं पडिमा अकिट्टिमा किट्टिमा दु अदिसोहा।
रयणमया हेममया रुप्पमया ताणि वंदामि ॥ १०१५ ॥

जिनसिद्धानां प्रतिमा अकृत्रिमाः कृत्रिमास्तु अतिशोभाः।
रत्नमया हेममया रूप्यमया ताः वंदे ॥ १०१५ ॥

अर्थ—अकृत्रिम तो अनादि निधन अर कृत्रिम करी हुई ऐसी रत्नमय वा सुवर्णमय रूपामय जे अरहंतनिकी अर सिद्धनिकी प्रतिमा तिन बिंबनिकों मैं वंदौं हौं ॥ १०१५ ॥

बहुरि अंत संबंधी मंगलके ही अर्थि संख्या करि संयुक्त जे समुदायरूप जिन मंदिर तिनको नमस्कार करत संता सूत्र कहै है;—

कोडी छवरख सहस्सं अट्ठय छप्पण्ण सत्तणउदी य।
चउसदमेगासीदी गगणगए चेदिए वंदे ॥ १०१६ ॥

कोट्यः लक्षाणि सहस्राणि अष्ट षट्पंचाशत् सप्तनवतिः च।
चतुःशतमेकाशीतिः गगनगतानि चैत्यानि वंदे ॥ १०१६ ॥

अर्थ—आठ कोडि छप्पन लाख सत्याणवै हजार च्यारिसै इक्यासी लोकाकाशविषै प्राप्त जे चैत्यालय तिनकों मैं वंदौं हौं। यहु भवनवासी वैमानिक देव अर मेरु आदि मध्य लोकसंबंधी चैत्यालयनिकी संख्या जाननी। ज्योतिष्क व्यंतरसंबंधी चैत्यालय असंख्यात हैं तातैं गणना विषै न कहे ॥ १०१६ ॥

अब इस शास्त्रको समाप्त करता संता आचार्य अंतसंबंधी मंगलकै अर्थि त्रिलोकविषै प्राप्त जे अकृत्रिम वा कृत्रिम जिन मंदिर संबंधी वंदना करत संता गाथा सूत्र कहै है;—

तिहुयणजिणिंदगेहे अकिट्टिमे किट्टिमे तिकालभवे।
वणजुमरविंतरामरणरखेचरवंदिए वंदे ॥ १०१७ ॥

त्रिभुवनजिनेंद्रगेहान् अकृत्रिमान् कृत्रिमान् त्रिकालभवान्।
वानव्यंतरविद्युतांगामरनरखेचरवंदितान् वंदे ॥ १०१७ ॥

अर्थ—अकृत्रिम अर कृत्रिम अतीत अनागत वर्तमान त्रिकाल संबंधी जे ज्योतिष्क कल्पवासी मनुष्य विद्याधरनि करि वंदित त्रिभुवन विषै जिनेंद्र हौं ॥ १०१७ ॥

ग्रंथकर्ता [illegible] अपनी ग्रंथकर्तृता है

इदि णेमिचंदमुणिणा
रयणो तिलोयसारो

इति नेमिचंद्रमुनिना अल्पश्रुतेनाभयनंदिवत्सेन ।
रचितस्त्रिलोकसारः क्षमंतु तं बहुश्रुताचार्याः ॥ १०१८ ॥

अर्थ—इस प्रकार करि अल्प श्रुतज्ञानका धारी अर अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तीका वत्स शिष्य ऐसा नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य ताकरि यहु त्रिलोकसार नामा ग्रंथ रच्या है। ताकौं बहुश्रुत धारक आचार्य हैं ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करौ ॥ १०१८ ॥

संस्कृत टीकाकारका वक्तव्य ।

अब तिस त्रिलोकसारकौं अलंकार रूप जानैं किया ऐसा माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी अपनी लघुतताकौं त्यागै हैं;—

गुरुणेमिचंदसम्मदकादेवयगाहा तहिं तहिं रइदा ।
माहवचंदतिविज्जेणिणमणुसरणिज्जमज्जेहिं ॥ १ ॥

गुरुनेमिचंद्रसंमतकतिपयगाथाः तत्र तत्र रचिताः ।
माधवचंद्रत्रैविद्येनेदमनुसरणीयमार्यैः ॥ १ ॥

अर्थ—अपना गुरु नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती तिनके सम्मत लिएं उपदेश लिएं अथवा ग्रंथकरता नेमिचंद्र सिद्धांती देव तिनके अभिप्रायका अनुसार लिएं केती एक गाथा इस ग्रंथविषै माधवचंद्र त्रैविद्य देव करि भी तहां तहां रची हैं। ऐसा भी आर्य जे प्रधान आचार्य तिन करि अनुसारि जाननां ॥ १ ॥

अब ग्रंथका अलंकार रूप सोधनादि रूप कर्त्ता श्री माधवचंद त्रैविद्य देव सो भी अंतसंबंधी मंगल करतसंता अपनां अभीष्ट फलकी यांचा करै है;—

अरहंतसिद्धआइरियुवज्झयासाहु पंचपरमेट्ठी ।
इय पंचणमोकारो भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥ २ ॥

अरहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः पंचपरमेष्ठिनः ।
इति पंचनमस्कारः भवे भवे मम सुखं ददतु ॥ २ ॥

अर्थ—च्यारि घाति कर्म रहित अनंत चतुष्टय युक्त अरहंत, अर सर्व कर्म रहित कृतकृत्य दशाकौं प्राप्त सिद्ध, अर मुनि संघ विषै प्रधान आचार्य, अर ग्रंथाभ्यास अधिकारी उपाध्याय, अर सामान्यमुनि साधु ए पंच परमेष्ठी हैं। जीवाके सर्व प्रकार हितसाधक परम इष्ट हैं तातैं इनकौं परमेष्ठी कहिए। इस प्रकार इन पंच परमेष्ठिनिका नमस्काररूप जो पंच नमस्कार मंत्र है सो भव भव विषै मोकहूं सुख देहु। सुख नाम निराकुलताका है निराकुलता वीतरागभावनितैं हो है। तातैं परमवीतराग भावरूप शुद्धात्मस्वरूप जनित परम आनंदकी प्राप्ति करहु ॥ २ ॥

भाषाटीकाकारका वक्तव्य।

कवित्त—ग्रंथ त्रिलोकसारकी भाषाटीका पूरन भई प्रमान,
याके जानें जानतु है सब नानारूप लोक संस्थान।
तातैं ध्यावै धर्म ध्यानकौं पावै सकल प्रकाशक ज्ञान,
पाय त्रिलोकसार गुनमहिमा अविचल पद पईए निरवान ॥ १ ॥

चौपाई—वाचक शब्द वाच्य है अर्थ, इनिकै यहु संबंध समर्थ।
इनिका कर्ता नांही कोय, जानैं इनिको ज्ञाता होय ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा।

पृथ्वी शब्द पृथ्वी अर्थ इनकै संबंध ऐसो पृथ्वी शब्द जाननेंनैं पृथ्वी अर्थ जानिए,
ऐसैं साचे शब्द अर साचे अर्थ जगमाहि तिनिकै संबंध सो स्वभाव ही तैं मानिए।
तातैं इस ग्रंथ मांहि जेते शब्द जेते अर्थ तिनको नवीन कर्ता कोऊ नांहि मानिए,
तिनकौं जो जानैं अर भाषै जोरि शब्दनिकौं व्यवहारमात्र सो तौ कर्ता पहिचानिए ॥ ३ ॥
ऐसी परिपाटी मांहि इहां वर्धमान जिन भए तिनिहूनैं तिनिको स्वरूप जान्यौं है,
इच्छा बिन दिव्यध्वनि तिनकैं प्रगट भयी ताकरि स्वरूप किछू तैसो ही बखान्यौं है।
गोतम गणेश मुनि ऐसो उपकार कीनौं ताकौ अनुसार सब ग्रंथनिमैं आन्यौं है,
तिनिकरि ज्ञानवंत होइ छोटे ग्रंथ जोरि तिनिहूनैं नाना भांति अर्थ प्रमान्यौं है ॥ ४ ॥

इति श्रीपंडितवर टोडरमल्लजीकृत त्रिलोकसारकी भाषावचनिका समाप्त हुई ॥

इति नेमिचंद्रमुनिना अल्पश्रुतेनाभयनंदिवत्सेन ।
रचितस्त्रिलोकसारः क्षमंतु तं बहुश्रुताचार्याः ॥ १०१८ ॥

अर्थ—इस प्रकार कीरे अल्प श्रुतज्ञानका धारी अर अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तीका वत्स शिष्य ऐसा नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य ताकरि यहु त्रिलोकसार नामा ग्रंथ रच्या है। ताकौं बहुश्रुत धारक आचार्य हैं ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करौ ॥ १०१८ ॥

संस्कृत टीकाकारका वक्तव्य ।

अब तिस त्रिलोकसारकौ अलंकार रूप जानैं किया ऐसा माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी अपनी उद्धतताकौं त्यागै हैं;—

गुरुणेमिचंदसम्मदकादेवयगाहा तहिं तहिं रइदा ।
माहवचंदतिविज्जेणिणमणुसरणिज्जमज्जेहिं ॥ १ ॥
गुरुनेमिचंद्रसंमतकतिपयगाथाः तत्र तत्र रचिताः ।
माधवचंद्रत्रैविद्येनेदमनुसरणीयमार्यैः ॥ १ ॥

अर्थ—अपना गुरु नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती तिनके सम्मत लिएं उपदेश लिएं अथवा ग्रंथकर्ता नेमिचंद्र सिद्धांती देव तिनके अभिप्रायका अनुसार लिएं केती एक गाथा इस ग्रंथविषै माधवचंद्र त्रैविद्य देव करि भी तहां तहां रची हैं। ऐसा भी आर्य जे प्रधान आचार्य तिन करि अनुसारि जानना ॥ १ ॥

अब ग्रंथका अलंकार रूप सोधनादि रूप कर्त्ता श्री माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी ग्रंथसंबंधी मंगल करतसंता अपना अभीष्ट फलकी यांचा करै है;—

अरहंतसिद्धआइरियउवज्झयासाहु पंचपरमेट्ठी ।
इय पंचणमोकारो भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥ २ ॥
अरहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः पंचपरमेष्ठिनः ।
इति पंचनमस्कार भवे भवे मम सुखं ददतु ॥ २ ॥

अर्थ—घातिकर्म रहित अनंत चतुष्टय युक्त अरहंत, अर सर्व कर्म रहित कृतकृत्य दशाकौं प्राप्त सिद्ध, अर मुनि संघ विषै प्रधान आचार्य, अर ग्रंथाभ्यास अधिकारी उपाध्याय, अर सामान्यमुनि साधु ए पंच परमेष्ठी हैं। आमाके सर्व प्रकार हितसाधक परम इष्ट हैं तातैं इनकौं परमेष्ठी कहिए। इस प्रकार इन पंच परमेष्ठिनिका नमस्काररूप जो पंच नमस्कार मंत्र है सो भव भव विषै मोकहूं सुख देहु। सुख नाम निराकुलताका है निराकुलता वीतरागभावतैं हो है। तातैं परमवीतराग अवस्था सुद्धोपयोग [illegible] प्राप्ति करहु ॥ २ ॥

भाषाटीकाकारका वक्तव्य ।

कवित्त—ग्रंथ त्रिलोकसारकी भाषाटीका पूरन भई प्रमान,
याके जानें जानतु है सब नानारूप लोक संस्थान ।
तातै प्यावै धर्म ध्यानकौ पावै सकल प्रकाशक ज्ञान,
पाय त्रिलोकसार गुनमहिमा अविचल पद पईए निरवान ॥ १ ॥

चौपाई—वाचक शब्द वाच्य है अर्थ, इनिकै यहु संबंध समर्थ ।
इनिका कर्ता नाही कोय, जानें इनिको ज्ञाता होय ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा ।

पूर्व्वी शब्द पूर्व्वी अर्थ इनकै संबंध ऐसो पूर्व्वी शब्द जाननेतैं पूर्व्वी अर्थ जानिए,
ऐसैं सांचे शब्द अर सांचे अर्थ जगमाहि तिनिकै संबंध सो स्वभाव ही तैं मानिए ।
तातैं इस ग्रंथ माहि जेते शब्द जेते अर्थ तिनको नवीन कर्ता कोऊ नाहिं मानिए,
तिनकौं जो जानैं अर भाषै जोरि शब्दनिकौं व्यवहारमात्र सो सौ कर्ता पहिचानिए ॥ ३ ॥
ऐसी परिपाटी माहिं इहां वर्धमान जिन भए तिनिहूनैं तिनिको स्वरूप जान्यौं है,
इच्छा विन दिव्यध्वनि तिनकैं प्रगट भयी ताकरि स्वरूप किछू तैसो ही बखान्यौं है ।
गोतम गणेश मुनि ऐसो उपकार कीनौं ताको अनुसार सब ग्रंथनिमैं आन्यौं है,
तिनिकरि ज्ञानवंत होइ छोटे ग्रंथ जोरि तिनिहूनैं नाना भांति अर्थ प्रमान्यौं है ॥ ४ ॥

इति श्रीपंडितवर टोडरमल्लजीकृत त्रिलोकसारकी भाषावचनिका समाप्त हुई ॥

इति नेमिचंद्रमुनिना अल्पश्रुतेनाभयनंदिवत्सेन ।
रचितस्त्रिलोकसारः क्षमंतु तं बहुश्रुताचार्याः ॥ १०१८ ॥

अर्थ—इस प्रकार करि अल्प श्रुतज्ञानका धारी अर अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तीका वत्स शिष्य ऐसा नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य ताकरि यहु त्रिलोकसार नामा ग्रंथ रच्या है। ताकौं बहुश्रुत धारक आचार्य हैं ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करौ ॥ १०१८ ॥

संस्कृत टीकाकारका वक्तव्य ।

अब तिस त्रिलोकसारकौं अलंकार रूप जानैं किया ऐसा माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी अपनी उद्धतताकौं त्यागै हैं;—

गुरुणेमिचंदसम्मदकादिवयगाहा तहिं तहिं रइदा ।
माहवचंदतिविज्जेणिणमणुसरणिज्जमज्जेहिं ॥ १ ॥

गुरुनेमिचंद्रसंमतकतिपयगाथाः तत्र तत्र रचिताः ।
माधवचंद्रत्रैविद्येनेदमनुसरणीयमार्यैः ॥ १ ॥

अर्थ—अपना गुरु नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती तिनके सम्मत लिएं उपदेश लिएं अथवा ग्रंथकरता नेमिचंद्र सिद्धांती देव तिनके अभिप्रायका अनुसार लिएं केती एक गाथा इस ग्रंथविषै माधवचंद्र त्रैविद्य देव करि भी तहां तहां रची हैं। ऐसा भी आर्य जे प्रधान आचार्य तिन करि अनुसारि जाननां ॥ १ ॥

अब ग्रंथका अलंकार रूप सोधनादि रूप कर्त्ता श्री माधवचंद त्रैविद्य देव सो भी ग्रंथसंबंधी मंगल करतसंता अपनां अभीष्ट फलकी यांचा करै है;—

अरहंतसिद्धआइरियुवज्झयासाहु पंचपरमेट्ठी ।
इय पंचणमोकारो भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥ २ ॥

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः पंचपरमेष्ठिनः ।
इति पंचनमस्कारः भवे भवे मम सुखं ददतु ॥ २ ॥

अर्थ—च्यारि घाति कर्म रहित अनंत चतुष्टय युक्त अरहंत, अर सर्व कर्म रहित कृतकृत्य दशाकौं प्राप्त सिद्ध, अर मुनि संघ विषै प्रधान आचार्य, अर ग्रंथाभ्यास अधिकारी उपाध्याय, अर सामान्यमुनि साधु ए पंच परमेष्ठी हैं। आमाके सर्व प्रकार हितसाधक परम इष्ट हैं ताते इनकौं परमेष्ठी कहिए। इस प्रकार इन पंच परमेष्ठिनिका नमस्काररूप जो पंच नमस्कार मंत्र है सो भव भव विषै मोकहुं सुख देहु। सुख नाम निराकुलताका है निराकुलता वीतरागभावनितें हो है। ताते परमवीतराग भावरूप शुद्धात्मस्वरूप जानन परम आनंदकी प्राप्ति करहु ॥ २ ॥

भाषाटीकाकारका वक्तव्य।

दोहरा—देव त्रिलोकसारकी भाषाटीका पूरन भई प्रमान,
याके जाने जानतु है सब नानारूप लोक संस्थान।
ताते ध्यावे धर्म ध्यानको पावे सकल प्रकाशक ज्ञान,
पावे त्रिलोकसार गुनमहिमा अविचल पद पईए निरवान ॥ १ ॥

चौपाई—वाचक शब्द वाच्य है अर्थ, इनिके यहु संबंध समर्थ।
इनिका कर्ता कोई कोय, जानै इनिको ज्ञाता होय ॥ २ ॥

सवैया इकतीसा।

पृथ्वी शब्द पृथ्वी अर्थ इनकै संबंध ऐसो पृथ्वी शब्द जाननेतैं पृथ्वी अर्थ जानिए,
ऐसे साचे शब्द अर साचे अर्थ जगमांहि तिनिकै संबंध सो स्वभाव ही तैं मानिए।
ताते इस ग्रंथ मांहि जेते शब्द जेते अर्थ तिनको नवीन कर्ता कोऊ नांहि मानिए,
तिनको जो जानै अर भाषै जोरि शब्दनिको व्यवहारमात्र सो तो कर्ता पहिचानिए ॥ ३ ॥
ऐसी परिपाटी मांहि इहां वर्धमान जिन भए तिनिहूनैं तिनिको स्वरूप जान्यौ है,
इच्छा बिन दिव्यध्वनि तिनकै प्रगट भयी ताकरि स्वरूप किछू तैसो ही बखान्यौ है।
गौतम गणेश मुनि ऐसो उपकार कीनौ ताकौ अनुसार सब ग्रंथनिमैं आन्यौ है,
तिनिकरि ज्ञानवंत होइ छोटे ग्रंथ जोरि तिनिहूनैं नाना भांति अर्थ प्रमान्यौ है ॥ ४ ॥

इति श्रीपंडितवर टोडरमल्लजीकृत त्रिलोकसारकी भाषावचनिका समाप्त हुई ॥